कुइयाँजान

(उपन्यास)



सामयिक प्रकाशन

3320-21 जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग,

दरियागंज, नई दिल्ली—110002 (भारत)

फ़ोन : (011) 23282733 • टेलीफैक्स : (011) 23270715

कुइयाँजान

नासिरा शर्मा

ISBN : 81-7138-087-5

प्रकाशक :

सामयिक प्रकाशन

3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग

दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मूल्य : **400.00**

आवरण : गौरी त्रिपाठी

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : कल्याणी कम्प्यूटर सर्विसेज,

नई दिल्ली-110002

मुद्रक : अजीत प्रिंटर्स, दिल्ली-110053

KUIYAJAAN

by NASIRA SHARMA

Published By : **SAMAYIK PRAKASHAN**

3320-21 Jatwara, Netaji Subhash Marg,

Daryaganj, New Delhi - 110002 (INDIA)

Tel. : (011) 2328 2733, Fax : 2327 0715

Mob.: 09811607086

पद्मधर त्रिपाठी

को

सादर समर्पित

कुइयाँजान

नासिरा शर्मा

बताशेवाली गली में सुबह फूट चुकी थी, मगर उसका उजाला तंग गली में अपना दूधिया रंग अभी बिखेर नहीं पाया था। मंदिर की घंटी और दूधवाले की साइकिल की टनटनाहट से एक-दूसरे से सटे घर कुनमुना उठे। चंदन हलवाई दातून करता घर के बाहर बने पतले चबूतरे पर आकर बैठ गया। कुत्तों ने भी अंगड़ाई ले बदन सीधा किया और उसे देखकर अपनी दुम हिलानी शुरू कर दी; मगर चंदन उनसे बेगाना बना दातून चबाता रहा। उसकी आंखों से नींद का खुमार अभी उतरा नहीं था। कल रात शादी की पार्टी से लौटते-लौटते दो बज गए थे। एकाएक मद्धिम सुरों से रेंगती छमछम की आवाज चंदन की चेतना से टकराई। इतनी सुबह किसकी विदाई हो रही है? जब पायजनी का स्वर निरंतर पास आता चला गया तो उसने अपनी मिचमिचाई आंखें खोलीं और एकदम से झुंझला उठा।

"सत्यानाश! रंगीले, रसीले की जोड़ी कहां से आय मरी है। सारे दिन का अब भगवान ही मालिक है।"

कुत्तों ने दौड़कर रंगीले, रसीले को घेरा और उन्हें सूंघने लगे। रसीले ने हाथ में पकड़ी ढोलक पर थाप मारी। कुत्तों ने पीछे हटकर उन दोनों को घूरा, फिर अपना एतराज दर्ज कराते भौंक उठे।

"कहां जात हो रसीले, इतनी सुबह-सुबह?" भड़भूजन, जो लोटा भर-भरकर सिर पर डाल रही थी, एकाएक हाथ रोक पूछ बैठी।

"बनत तो ऐसे हो चाची, जैसे तोका खबर नहीं।" रंगीले ने बदन को झटका देते हुए जोर से ताली बजा, ठुमका लगाया।

"अरे, पन्नवा के घर कल रात बेटवा भवा है न!" पनवाड़िन अपने पोते का मुंह धुलाते हुए बोली।

"बूढ़े मुंह मुहांसा!" भड़भूजन कह हँस पड़ी।

झुंझलाया चंदन कुल्ली कर, मुंह पर छींटे डाल दुकान के तखते पर सोए पड़े लड़के को आवाज देने लगा। हलवाइन ने अंदर से आकर चाय का लोटा थमाया और दुकान जा, शीशे के केस से मोतीचूर के चार-पांच लड्डू उठा अंदर घर में चली गई।

बताशेवाली गली जैसे-जैसे जाग रही थी, जिंदगी के आसार बढ़ रहे थे। रामदीन धोबी का ट्रांजिस्टर रोज की तरह चालू हो गया था, जिसके गाने की आवाज में रिक्शे की घंटियां ही नहीं, बल्कि आस-पासवाले भी स्वर-से-स्वर मिला रहे थे। नल पर पानी भरने की जल्दी में अब औरतें अपना धैर्य खोने लगी थीं। सुरंग जैसी इस गली में नमी-भरी गंध हरदम तैरती रहती थी और दोनों तरफ बहती काली नालियां हमेशा चालू रहती थीं, जिनमें सूअर के नन्हे बच्चे अकसर फिसलकर गिर जाते, तब छौने के साथ सुअरनी की कें-कें से सबका जीना हराम हो जाता था।

धूप फैलने के साथ ही बताशेवाली गली में पन्नालाल सुनार के यहां लड़का पैदा होने की खबर गरमा गई थी। आखिर पूरे अट्ठारह वर्ष बाद बेटा हुआ था! बात तो आश्चर्य की थी ही। पन्ना सुनार की उम्र चालीस-पैंतालीस की होने को आई थी। उसके मित्रों के बच्चे जवान हो रहे थे। समय गुजरने के साथ पन्ना की आशा निराशा में बदलने लगी थी। अगर कोई ग्राहक खुश होकर बच्चा होने की दुआ दे बैठता तो पन्ना खौखिया जाता था। धंधे के चलते खून का घूंट पीकर रह जाता, मगर अंदर ऐसा बवंडर उठता कि मन करता, सामने वाले को काट खाए। जब गली में बच्चे शोर मचाते तो वह काम करते हुए सिर उठा उन्हें घूरता, फिर बेलाग हो मोटी-मोटी गालियां सुनाने लगता, जिसके चलते अकसर पड़ोसियों से उसकी झड़प हो जाती थी। वह कारीगर अच्छा था, मगर दिन-ब-दिन उसकी चिड़चिड़ाहट बढ़ती जा रही थी, जिससे लोग उससे कतराने लगे थे।

इस समय पन्नालाल दुकान के सामने पतले-से चबूतरे पर बैठा, मंद-मंद मुस्कराता घर के अंदर से गूंजते सोहर गीत को सुन रहा था। आज उसका कलेजा सौ गज का हो गया था कि उसने मर्दानगी का सुबूत दे दिया। जो भी आते-जाते उसे बधाई देता, वह उत्साह में भर उसे छठी पर आने का न्यौता दे बैठता था। अंदर जब रसीले की ढोलक की थाप और रंगीले का नाच खत्म हुआ तो वह घर में घुसा। बेटे का चेहरा देखने की लालसा कब से दबाए वह बाहर बैठा पत्नी की दर्द में डूबी चीखों को सुनता रहा था। उसकी तबीयत लगभग एक-डेढ़ बजे रात को खराब हुई थी। गली में रहने वाली इकलौती दाई या नाइन, जो भी कहो, रमजानी को वह जाकर बुला लाया था। सुबह चार बजे रमजानी ने बेटा होने की खबर दी थी। तब से अब तक उसने ये चार घंटे कैसे गुजारे हैं, यह उसका दिल ही जानता है।

"लेव, देखो बेटवा का मुंह और निहाल कर देव आज रमजानी को।" कहती हुई रमजानी पुरानी साड़ी में नंगा-सा काला-कलूटा बच्चा लिए खड़ी थी। पन्ना सुनार की बेकरार आंखें बेटे के मुंह पर पड़ीं और उसका दिल खुशी से नाच उठा।

"कितना सुंदर! कितनी मनमोहिनी सूरत है इसकी, जैसे स्वयं मुरली मनोहर साक्षात अंखियन के सामने आय गये हों।" गद्‌गद हो पन्ना मन-ही-मन बोल उठा।

उसके होंठ कांपे और आंखें नम हो गईं। उसने दोनों हाथ सीने पर जोड़ ऊपरवाले को धन्यवाद दिया।

पत्नी मालती का हाल अच्छा न था। वह नीमबेहोश-सी बिस्तर पर पड़ी थी। खून बहुत बह गया था। पन्ना ने अंदर जाकर उसके माथे पर हाथ रखा फिर उसके ठंडे पड़ते हाथों को सहलाया। तभी एकाएक रमजानी चीखी, "अरे लालाजी, तोहार यहां का काम, जो सोहर की कोठरिया में घुस आए? चलो, बाहर निकलो।"

शाम तक मालती की हालत काफी संभल चुकी थी। रमजानी सबकुछ समेटकर घर जा चुकी थी। गांव से आई बूढ़ी मौसी ही मालती की देखभाल कर रही थीं। पन्ना ने आज दुकान बंद रखी थी। उसी के सामने बने पतले चबूतरे पर वह आसन जमाए गली की बढ़ती रौनक को ताक रहा था। आज मलाई-बर्फवाले को देखकर शोर मचाते बच्चे उसे कांटों की तरह नहीं चुभे बल्कि उसने मलाई-बर्फवाले को बुलाकर सारे बच्चों को दोना बांटने को कहा और हिसाब कर पैसा खुद अदा किया। उछलते, बर्फ चाटते बच्चों की खुशी देख उसके दिल में संतोष की लहरें बन रही थीं कि एक दिन उसका कन्हैया भी इन्हीं के बीच उछले-कूदेगा।



बताशेवाली गली से ही मिली दाहिनी ओर पेंचदार गली थी। जिसके अंत में नीम के पेड़ों से घिरी एक पुरानी टूटी-फूटी मसजिद खड़ी थी, जिसमें जाने कब से बूढ़े मौलाना रहते थे। वही अजान देते, वही नमाज पढ़वाते और वही मरने-जीने की जिम्मेदारी भी निभाते थे। उस मसजिद में हांके-पुकारे के लिए एक लड़का भी रहता था, जिसका नाम बदलू था। अजान की जगह सुबह-सुबह उसके रोने की आवाज सुनकर मसजिद के पासवाले घर की छत से किसी ने पूछ लिया :

"कस बे बदलू, आखिर बात का है जो रोवत हो?"

"मौलवीजी उठ नहीं रहे हैं।" बदलू ने रोते-रोते कहा और मसजिद से बाहर निकला।

सामने से रोज आने वाले बुजुर्ग नमाजी लाठी टेकते एक-दूसरे का सहारा बने चले आ रहे थे।

मसजिद से लगी खस्ता कोठरी में अस्सी साल के मौलाना आंखें बंद किए साकित पड़े थे। चेहरे पर शांति छाई थी। एक नमाजी ने आगे बढ़कर नब्ज, फिर नाक के पास हाथ लगाकर देखा और घबराकर पूछा, "कब हुआ इंतकाल?"

"हमें कुछ पता नहीं। हमने सोचा कि सो रहे हैं। सुबह से बंदर बहुत परेशान कर रहे थे। हम उनको भगाने में लगे थे...देखें तो हौज के पानी में लोट-लोटकर

कैसा गंदा कर दिया है।'' बदलू ने आंसू पोंछते हुए कहा।

''कफन-दफन शाम तक हो जाता तो अच्छा था। गरमी का महीना है।'' दूसरे बुजुर्ग ने फिक्र-भरी आवाज में कहा।

''हां, बात मुनासिब है।'' तीसरे ने सोचते हुए कांपती आवाज में जवाब दिया।

''आज तो इधर का बाजार भी बंद है।''

''तौलियावाले शेखजी तो अपनी ही गली में रहते हैं। चलकर बात करते हैं। उन्हें छुट्टी के दिन दुकान खोलने में क्या एतराज हो सकता है! आखिर मौत सारा सुभीता देखकर थोड़े आती है।''

''पानी के साथ पानी भरने के बरतन का भी इंतजाम करना होगा।''

''अब तो कोरे मटके लाने होंगे, कौन अपना बरतन देगा! सबको पानी भरना होगा अपना-अपना।'' पहले ने इधर-उधर नजर दौड़ाते हुए कहा।

''बदलू, इधर आ। मौलाना साहब...मेरा मतलब है कि...रुपया-पैसा कहां रखते थे?'' पहले ने झिझकते हुए पूछा।

''सिरहाने, गुदड़ी के नीचे।'' बदलू ने आगे बढ़कर चादर के नीचे हाथ डाला और टटोलकर कुछ रुपये और रेजगारी निकाली।

''गिनो तो!'' दूसरा बोला।

''कुल छह सौ एक और पचहत्तर पैसे हैं।'' बदलू ने ठंडी सांस भरते हुए कहा।

''रकम इतनी कम और सामान की फेहरिस्त लंबी।'' दूसरे बुजुर्ग बड़बड़ाए।

तीनों बुजुर्गों के चेहरों पर चिंता उभर आई। उनके घरों में तो इस रकम का आधा भी न था। महीने का अंत था। जेब, कनस्तर सब खाली थे। चंदा भी दें तो किस बलबूते पर, बेटे-बहू के सामने हाथ फैलाएं तो कैसे, जबकि वही उन पर बोझ बने हैं। तीनों परेशान, बेबस-से कुछ पल खड़े एक-दूसरे को देखते रहे। मौलाना बरसों पहले अकेले यहां आए थे। उनका खानदान कहां था, यह किसी को पता नहीं था, जहां तक उन्हें याद आता है, बुजुर्गवार अकसर कहा करते थे कि इस फानी दुनिया में बदलू ही मुझ लावारिस का इकलौता सहारा है। इस जुमले से लोगों ने समझ लिया था कि मौलाना के 'आगे नाथ न पीछे पगहा', मगर मामला अब मौत का था, खर्चे का था!

पास के होटल से मौलाना खाना मंगवाते थे। सस्ते दामों में होटलवाला रोटी-शोरबा देकर यह समझता था कि वह बड़ा नेक काम कर रहा है। जन्नत में अपनी जगह बना रहा है। मौलाना की आमदनी तो कुछ थी नहीं, सिवाय उस 'फितरे' के जो दो-तीन घरों से उन तक पहुंचता था, जिससे उनका खर्च जैसे-तैसे चल जाता

था। तीनों पड़ोसियों ने यही उचित समझा कि उन्हीं साहेबान को मौलाना के इंतकाल की खबर दे देनी चाहिए। फिर वे जो सलाह देंगे उसी के मुताबिक इनके आखिरी सफर का बंदोबस्त कर दिया जाएगा।

धूप निकल आई थी और गरमी गजब की थी। लाश के खराब हो जाने का डर भी था। पता नहीं कब उनकी रूह बदन छोड़कर ऊपर परवाज कर गई हो, इसलिए बर्फ की सिल मंगवाकर लाश उस पर रख दी गई थी। तौलियावाले शेखजी ने आधे दाम पर दुकान खोल, कफन का चालीस मीटर कपड़ा फौरन नापकर फाड़ दिया। मटके खरीदकर बदलू ले आया था। समस्या अब पानी की थी। चौराहे के खंभे में आग लगने से तार जल गए थे। कल दोपहर से पूरे इलाके में बिजली नहीं थी, जो पानी आता। बचे हुए पानी से सबने किसी तरह अपना काम चला लिया था, मगर गुस्ले-मैयत के लिए तो घड़ों पानी चाहिए था। कुछ घरों में दो-तीन बाल्टी पानी मौजूद था, मगर वह पाक नहीं था। दोपहर का सूरज ढलने ही वाला था। लोगों की परेशानी बढ़ रही थी। इत्रवाले ने खबर मिलते ही उन लोगों की रुपयों से मदद कर दी थी, मगर घर दूर होने की वजह से पानी वहां से लाया नहीं जा सकता था। बदलू बौराया-सा घर-घर झांकता घूम रहा था

मोहल्ले के कुएं बरसों पहले कूड़े से पाट दिए गए थे। एक-दो घरों में हैंडपाइप थे, जो खराब पड़े थे। मसजिदवाली गली से मिली अंदरसेवाली गली थी। वहां पक्के बड़े-बड़े घर थे। उनके यहां भी पानी की हाय-तौबा मची थी। शिव मंदिर के पुजारी भी बिना नहाए परेशान बैठे थे। उन्होंने न मंदिर धोया था, न भगवान् को भोग लगाया था। उनके सारे गगरे-लोटे खाली लुढ़के पड़े थे। नल की टोंटी पर कई बार कौआ पानी की तलाश में आ-आकर बैठ-उड़ चुका था। गरमी ऐसी कि पसीना पानी की तरह शरीर से बह रहा था। पता नहीं किस आशा में पंडितजी बार-बार नल खोलते, फिर बंद कर बड़बड़ा उठते, "पग-पग रोटी, डग-डग नीर... मगर अब...ई शहर का कईसा हाल बनाय दिए हो भगवान्। न पानी है, न रोटी है!"

बदलू ने अभी अपनी हार नहीं मानी थी। वह चौड़ी सड़क पार कर दूसरी तरफ गया, जहां गली के नुक्कड़ पर बड़ा-सा घर खड़ा था। बदलू को आशा बंधी और वह सड़क पार कर तेजी से उस घर की तरफ बढ़ा जिसका दरवाजा बकरीवाली गली में खुलता था। उसने बेचैनी से दरवाजा पीटा।

"कौन हो तुम? का आफत पड़ी है, जो दरवाजा पीटे जा रहे थे?" एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला और गुस्से से बदलू को घूरा।

"हम बदलू...पुरानी मसजिद से आए हैं।" बदलू ने गुस्से की परवाह किए बिना बड़ी व्याकुलता से कहा।

"तो?" बूढ़ी ने कुछ इस तरह कहा कि बदलू बिदक गया।

"कुछ बोलबो या बुत बने खड़े रहियो?" बूढ़ी औरत ने कचोका।

'मसजिद के मौलाना साहब गुजर गए हैं...अब...बड़ी परेशानी है...आखिरी गुस्ल के लिए पानी नहीं है। आप तो जानती हैं कि हमारी तरफ लाइट कल से गई है तो अभी तक आई नहीं।" बदलू अटक-अटककर अपनी पूरी बात कह गया।

"फिर?" बूढ़ी औरत के तेवर गिरे!

"पानी चाहिए था।" बदलू ने जल्दी से कहा।

"लानत है ऐसे नलके पर! अपने तो कुएं-तालाब भले रहे, जो काम के बख्त धोखा तो नहीं देत रहे।" बूढ़ी औरत इतना कह मुड़ी।

"क्या है, बुआ?" पीछे से आवाज आई।

"दुलहिन बी, मसजिदवाली गली के मौलाना साहब गुजर गए हैं। पानी नहीं है जो..."

"इन्नाल्लिाहे व इन्नाइलाहेराजेउन...कौन आया है?" घर की मालकिन खुरशीदआरा यह सुन ऊपर से नीचे तक कांप गई।

"एक लौंडा है बीबी, अपना नाम बदलू बताय रहा है।" वही बूढ़ी बोली।

"अंदर बुला लो।" खुरशीदआरा ने कहा।

"चलो, आओ, बीबी से बात कर लो।" बुआ ने बदलू से कहा।

"सलामअलैकुम। वह...पानी, वह..." बदलू परेशानी में हकलाने लगा। फिर उसकी आवाज भर्रा गई। सूखे होंठ कांपने लगे।

"ठीक है, तुम जितना पानी चाहो, ले जा सकते हो।" खुरशीदआरा ने कहा।

"जी...जी...अभी मटका लेकर आते हैं।" बदलू की आंखें खुशी से भर आई। उसने हँसते हुए अपनी आंखें आस्तीन से पोंछीं और दरवाजे से निकल सरपट सड़क की तरफ भागा।

"कलियुग है बहिनी, कलियुग!" बुआ ने इतना कह दरवाजा बंद किया।

"बड़ी अजीब-ओ-गरीब बातें कभी-कभी सुनने को मिलती हैं। अल्लाह इज्जत से उठाना।" इतना कह खुरशीदआरा अधूरे खत को पूरा करने में कलम चलाने लगीं।

दस-पंद्रह मिनट बाद दरवाजा फिर खटका। बुआ ने दरवाजा खोला। सामने पांच-छह लोग, बदलू के अलावा, बड़े-बड़े कोरे मटके अपने कंधों पर रखे खड़े थे।

"आओ, भैया लोगन, आओ।" बुआ उन्हें बड़े प्यार से अंदर आंगन में हौज के पास ले गईं।

बरसों पहले खुरशीदआरा की सास ने सूखे कुए को आधा पटवाकर टंकी बनवा ली थी जिसमें वह बरसात का पानी जमा करती थीं, जो घर में शादी-ब्याह के समय मोटे काम-काज में बहुत काम आता था। जब से नलों में पानी आने का समय तय हो गया था तब से घर की सफाई, कपड़े की धुलाई में भी इसी हौज का पानी जरूरत पड़ने पर काम आता था। कभी-कभी नलके के पानी से भी टंकी भर दी जाती थी। अब लोग ही घर में कितने बचे हैं? कुल मिलाकर दो। कई बार समीना कह चुकी है कि अम्मी, इसकी सफाई वगैरह में बड़ी परेशानी होती है। अब इसे पटवा दीजिए। समीना की बात मान अगर मैं इसे बराबर करवा देती तो ऐसी मुश्किल की घड़ी में आज मरनेवाले, खुदा उन्हें जन्नत में जगह दे, के काम न आती। सच कहा है किसी ने—बुजुर्गों के हर काम में कोई दूरंदेशी जरूर रहती थी।



आज दो दिन बाद बिजली आई थी। उसी के साथ पानी भी आया था। अंधौरियों से भरे बदनवाले रोते बच्चों को मांओ ने पकडकर सबसे पहले नहलाया, फिर पानी भरा और खुद नहाई, तब जाकर चूल्हे पर चाय का पानी रखा। पानी न हो तो आदमी की जान एक-एक बूंद पानी के लिए तरस जाती है। सारा काम ठप हो जाता है। अब लादी-भर कपड़ा धोने को पड़ा है। जाड़ा तो है नहीं कि एक दिन का कपड़ा आदमी दूसरे दिन भी पहन ले। पसीने से भीगा कपड़ा तन से अलग होता है तो फिर से छूने का मन नहीं करता है।

ऐसे बुरे मौसम में पन्ना सुनार को बेटे की मन्नत पूरी करने अजमेर जाना था। रमजानी की हठ पर पिछले वर्ष मालती और पन्ना ख्वाजा साहब की दरगाह पर माथा टेक आए थे। उन्हीं की कृपा से यह दिन देखना इस उम्र में उन्हें नसीब हुआ था। बेटा अभी बीस दिन का था। अप्रैल माह में लू के थपेड़े मुंह पर चांटा मारते-से लग रहे थे। ऐसी भीषण गरमी में राजस्थान की यात्रा कितनी विकट होगी, सोच-सोचकर दोनों का दिल दहल उठता था। फिर इस खयाल से उन्हें हौसला मिलता था कि जिसने यह दिन दिखाया वही उस नन्हे जीव की रक्षा भी करेगा। सो मन कड़ा कर यात्रा की तैयारी कर ली। पियारे मियां दर्जी से सुनहरे धागे की कढ़ाई से मखमल की चादर पर काम भी बनवा लिया था। इस बार रमजानी भी उनके साथ जा रही थी। यह खबर वह घर-घर बांट आई थी, जिसको सुनकर पास-पड़ोस से ख्वाजा साहब के मुरीद 'पन्ना की यात्रा शुभ हो' की कामना करने सुबह से आ-जा रहे थे। कुछ ने अपनी भेंट भी दी है कि उनकी तरफ से ख्वाजा साहब के चरणों में चढ़ा दी जाए।

रमजानी की काली गरदन में सोने का हार दमक रहा था, जिसको पन्नालाल

ने उसे बेटे के निछावर की रस्म में दिया था। उसंने कान के झुमकों और हाथ की चांदी की चूड़ियों पर सोने का पानी चढ़वा लिया था। चांदी के अलावा सोना तो उसकी सात पुश्तों ने कभी अंग में नहीं डाला था। अब जो पहली बार गले में सोने का हार पड़ा तो सोना पहनने की हवस रमजानी में एकाएक बढ़ गई थी। वह तो पाजेब पर भी सोने का पानी चढ़वाने पर तुली थी, जिस पर पन्ना ने हँसकर कहा था कि दीवानी! पैर में सोना नहीं डालते हैं।

हाथों में मेहंदी, पांवों में चांदी की पाजेब और ऊपर से लाल कपड़ा पहन अधेड़ उम्र की रमजानी की बांछें खिली जा रही थीं। पान से रंगे होंठों के बीच बड़े-बड़े दांत बिजली की तरह चमक उठते थे। रमजानी पेशे से नाइन थी; मगर जब नाइन की जगह सबने नाखून अपने से काटना और पिसा मसाला खरीदना शुरू कर दिया तब से उसकी मांग न के बराबर रह गई थी। बच्चे भी अब कौन घर में पैदा करवाता है! सब अस्पताल की तरफ दौड़ते हैं। यह तो मालती की बात थी, वरना दाई का काम भी रमजानी विरले ही करती थी। अरसे बाद उसको भरपूर इनाम मिला था, इसलिए वह घर-घर जाकर पन्ना सुनार की दिलदारी का गुणगान कर रही थी। सुनने वालों को भी इस कहानी में गजब का चटखारा मिलता कि पूरे अठारह वर्ष बाद मालती की गोद भरी थी। कली-फुन्ने लगाने के चलते कोई आंखें मटका, गंदा मजाक कर बैठती, और उस पर ठट्ठा मारकर बाकी औरतें खिलखिला उठतीं तो रमजानी उन्हें आंख दिखाने लगती।

रमजानी की आधी उम्र गुजरने को आई थी, मगर वह अभी तक रेलगाड़ी में नहीं बैठी थी। उसकी सीटी और छुक-छुक की आवाज अलबत्ता दूर से सुनती आई थी। इस गली से वह चौक तक तो कभी गई नहीं थी। बहुत हुआ तो बताशेवाली गली से मसजिदवाली गली में घुस गई और काम पड़ा तो वहां से अंदरसेवाली गली में तैर गई। बस, यही तीन गलियां पैंतालीस साल की उम्र तक उसने तय की थीं। उसकी बौराहट अपनी जगह सही थी कि रिक्शे-तांगे पर बैठना तो दूर वह सीधे रेलगाड़ी पर बैठने जा रही थी! उसका दिल बल्लियों उछल रहा था। अपनी घबराहट को छुपाए वह तेजी से पान चबा रही थी। मौका पड़ने पर गरदन मटका और हाथ हिलाकर लोगों से बात कर रही थी ताकि वे उसकी गरदन में पड़ा लाल-हरे रंग के नगों से जड़ा नेकलेस देख लें। इस शोख हुलिया पर रास्ता चलते लोग मुड़-मुड़कर उसे देख रहे थे। औरतें मुस्करा उठतीं, जिससे रमजानी के कलेजे में ठंडक पड़ती यह सुख तो उसे जवानी में भी नहीं मिला था।

"यह उतार दे, रज्जो! गाड़ी में हर तरह के लोग चढ़ते हैं। कोई चोर-उचक्का चढ़ गवा और हार की लालच उसके दिल में समाय गई तो-समझो, मुफ्त मा तू अपना

हाथ-गोड़ कटवाएगी।" पड़ोसिन ने उसे समझाया।

"तुम्हरे कहने से उतार दें! ठंडे डिब्बे का टिकट कटाइन हैं लालाजी। वहां किसी की हिम्मत न पड़िह्य चोरी-चमारी की। सुना है पुलिसिया हमेशा राउंड पर रहत है।"

रमजानी चिढ़ाने वाले को दो-टूक जवाब दे मारती और आंख नचाकर, बड़ी अदा से गरदन हिलाकर कटाक्ष फेंकती, "इनके डराए से जैसे हम डर जइबे।"

रात की गाड़ी से पन्नालाल और मालती निष्ठा से भरे, बेटे को सीने से चिपकाए चल पड़े। पहले दिल्ली पहुंचकर निजामुद्दीन औलिया की चौखट पर सिर नवाएंगे, फिर आगे अजमेर की तरफ बढ़ जाएंगे। रमजानी बच्चे का सामान संभाले हड़बड़ाई-सी प्लेटफॉर्म पर चल रही थी। रेलगाड़ी देख उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इतने बड़े ठेले को लेकर भागेगा कौन? दिल चाहा कि पूछे, फिर मन मारकर रह गई।



मौलवी साहब की मौत के बाद बदलू की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, कहां जाए? इस मसजिद में ठहरे या फिर मजदूरी कर पेट पाले? वैसे भी अब मसजिद में इक्के-दुक्के लोगों का आना भी बंद हो गया था। जब से आंधी के चलते नीम की बड़ी-सी डाल टूटकर मसजिद की छत पर गिरी थी, आधी मसजिद धूप से भरी रहती थी। उसकी मरम्मत कौन कराए? सब एक-दूसरे पर टालकर रह जाते थे। आदत के अनुसार वह सुबह उठकर, झाड़ू दे, हौज में पानी भर देता था, फिर कुरान पढ़, वह चोखट पर सारे दिन बैठा, गली में आने-जानेवालों को तकता रहता था। पेट में भूख से चूहे कूदते तो वह पुराने होटल की तरफ बढ़ता, जिसका मालिक उसे नजरअंदाज कर देता था। एक दिन भूख से बिलबिलाकर खाना मांगा तो उसने शोरबे का करछुल पतीले पर मारकर कहा, "दाम कहां से देबो?"

मसजिद के पिछवाड़े अंधा कुआं था। उसी के पास थोड़ी-सी कच्ची जमीन थी। वहीं कब्र खोदकर मौलवी साहब को दफना दिया गया था। बदलू उनको लेकर बड़े कब्रिस्तान जाना चाहता था, मगर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता! इतनी गरमी में कौन लावारिस का जनाजा कंधे पर उठाए दो-ढाई कोस पैदल चलता? सबने बहाना ढूंढ़ा कि मौलाना पिछले कई सालों से यहां रह रहे थे, उनको यहीं दफन करना मुनासिब होगा। भूले-भटके लोग दुआ-फातिहा पढ़ देंगे, शबरात को चिराग जला देंगे, वरना दूर के कब्रिस्तान में गाड़कर उनको सब भूल जाएंगे। बदलू भी यह सब सुन सिर हिलाकर रह गया था। आज उसे लगता है कि जिसने भी सलाह दी थी, अच्छी दी थी, तभी तो वह सुबह-शाम अपने बाबाजी से मन की बात कर लेता है!

दोपहर की धूप नीम के पेड़ों पर बरस रही थी। शाखाओं के बीच से छनती

गरमी जमीन को भट्ठी बना रही थी। उसी भट्ठी में बदलू दो दिन से भूखा-प्यासा बैठा था। भूख से बिलबिलाते हुए उसने पेड़ से गिरी पक्की निमकौली उठाई और उसका खट-मिठ्ठा रस चूसा। निमकौली खाते हुए चींटे उसके बदन पर चढ़कर जब सरसराते तो वह हाथ से उन्हें झाड़ देता, फिर कब्र के पास बैठा-बैठा किसी सूखी शाख के टुकड़े से जमीन पर लकीरें खींचने लगता था। उसको बताया गया था कि उसकी मां सड़क किनारे उसे खड़ाकर पास की दुकान से कुछ लेने गई थी। एक बड़े ट्रक ने उसे ऐसा धक्का मारा कि वह उछलकर दूर जा गिरी और उसी पल दम तोड़ बैठी। मौलाना भीड़ में खड़े तीन-चार वर्ष के रोते उस बच्चे को पुचकारने लगे। कहते हैं, उन्हीं ने जैसे-तैसे उसे पाला था। जो उनके बस में था मोटा-झोटा, खिलाया-पिलाया और दीनी तालीम भी दी, ताकि आगे चलकर वह उनकी विरासत संभाले।

कुछ सोचकर बदलू अपनी जगह से उठा और गली-दर-गली लांघता सड़क पर आया। सड़क पार कर वह बड़े घर के नुक्कड़ पर लगे लैंपपोस्ट से टिक गया। चुपचाप खड़ा-खड़ा वह उस घर को ताकता रहा, फिर मन-ही-मन कुछ फैसला कर गली में दाखिल हुआ और घर के दरवाजे पर जाकर खड़ा हो गया। उसके अंदर एक तूफान मौज मार रहा था, मगर घंटी बजाने के लिए बढ़े उसके हाथ बीच में ही रुक जाते और वह छटपटाती नजरों से बंद दरवाजे को देखने लगता।

2

मई की तपती दोपहर में अंदरसेवाली गली में कुत्ते पानी की तलाश में बेचैन फिर रहे थे। बार-बार नाली के पास जाकर वह बहती गंदगी को हसरत से देखते, फिर सूंघते और मुंह हटा लेते। नाली में बहती गंदगी इतनी गाढ़ी थी कि उससे पानी अलग नहीं था जिसको वह सतह पर से चाटकर अपनी प्यास बुझा सकते। चिड़ियों के गोल मुंडेरों पर बैठे हांफ रहे थे। उनकी व्याकुल नन्ही-नन्ही आंखें आंगन, हौज और नलके को ताकते-ताकते थक चुकी थीं। जहां तक वे पानी की तलाश में उड़ सकती थीं, उड़ी थीं, मगर हर जगह सूखा था। पानी की एक बूंद तक उन्हें कहीं नजर नहीं आ रही थी। उनकी नन्ही-सी जबान उनके तालू से चिपक रही थी।

नीचे आंगन में पड़े खटोले पर बदन पर चादर लपेटे, दोनों हाथ ऊपर किए अनवरी बेगम बैठी थीं। उनकी बहू शमीमा परेशान-सी कभी दालान में निकल उन्हें देख माथा पीट अंदर लौट जाती या फिर वहीं बावर्चीखाने से आवाज देती।

"लिल्लाह, अम्मी! अपने ऊपर न सही, हमारे ऊपर रहम कीजिए। दो घड़ा

पानी रखा है, उससे साबुन छुड़ा लें, फिर आराम से शाम को नहा लीजिएगा।''

''न, मुझसे यह न होगा। बदन नजिस तो उससे छुई हर चीज नजिस, कहां तक गोता-तहारत करती फिरूंगी? तुम परेशान न हो, मैं यहां बिलकुल ठीक हूं।'' अनवरी बेगम का इत्मीनान-भरा जवाब सुनाई पड़ता।

''देख रही हैं कि गर्म हवा के झक्कड़ चल रहे हैं। ऊपर से नंगा बदन, अगर कहीं...मेरे मुंह में खाक! लेने के देने पड़ जाएंगे। अम्मी, अब मान भी जाइए! आपको मेरे सिर की कसम।'' शमीमा ने रुआंसी आवाज में कहा।

''बीबी, तुम तो लगता है, कब्र की फरिश्ता बन गई हो, जो सवाल-जवाब पर उतारू हो गई हो। कहा कि मैं ठीक हूं, मुझे नापाक पानी से गुस्ल नहीं करना है। मुझे क्या पता था कि दोनों बालटियां खाली पड़ी हैं। अंधेरे में कुछ सूझता भी तो नहीं।'' अनवरी बेगम ने बड़े संयत स्वर में कहा।

''यह तो आप मानेंगी नहीं कि आंख कमजोर हो गई है। मोतियाबिंद पक गया है। ऑपरेशन करा लें। घर में हर जगह भरी दोपहर में आपको अंधेरा छाया नजर आता है।'' शमीमा बोली।

''जैसी आई हूं, वैसी जाऊंगी। तुम लोगों के कहने से आंखों में चीरा नहीं लगवाने वाली।'' अनवरी बेगम ने पहलू बदला।

कुछ-कुछ देर बाद बावर्चीखाने और दालान के बीच इसी तरह का वार्त्तालाप चल पड़ता, फिर कुछ देर के लिए खामोशी छा जाती थी। लू के झोंके धूल से भरे आंगन में गोल-गोल नाचकर गूलर के पेड़ की शाखों में गुम हो जाते थे। धूप ढलने लगी थी। लू का जोर भी कम हो गया था। बहू मन-ही-मन दुआ मांग रही थी कि सास सही-सलामत रहे, वरना इस मुफलिसी में समझो, आटा गीला। डॉक्टर का कर्जा पिछली बीमारी का ही अभी तक नहीं उतरा है, जो अम्मी खुली चुनौती लू को दे रही हैं। बच्चों के आने का वक्त हो रहा था। उसने खाना तख्त पर बिछे प्लास्टिक के दस्तरख्वान पर लगा दिया और खुद मुंह-हाथ धोकर कमर सीधी करने को लेट गई। उसी में आंखें झपक गईं।

दरवाजा पीटने की आवाज सुन वह हड़बड़ाकर उठी।

''अम्मा, खाना दो, भूख लगी है।'' लड़के ने घर में घुसते ही बस्ता फेंक, जूता उतारते हुए कहा।

''अम्मा, दादी इस तरह क्यों बैठी हैं?'' लड़की परेशान-सी आंगन में खड़ी-खड़ी पूछने लगी।

''कितनी बार मना किया कि उनकी बालटियों को हाथ मत लगाया करो, मगर तुम लोगों को भी जैसे जिद है कि नहाओगे तो उसी बाल्टी के पानी से।'' शमीमा

ने गिलासों में पानी उड़ेलते हुए कहा।

"दादी के सिर पर जग का पानी जाकर डालता हूं।" लड़का जाने क्या सोच तिपाई से जग उठाने को दौड़ा।

"चलो, हाथ धोकर बैठो खाने पर। अगर बदतमीजी की तो..." शमीमा ने बेटे का कान उमेठा।

"रोज-रोज आप मेरे कान क्यों खींचती हैं?" लड़का पैर पटककर बोला।

"चुपचाप खाना खाओ।" शमीमा ने बेटे को घूरा।

"अम्मी, दादी ऐसे बैठी हैं तो मैं खाना कैसे खाऊं?" लड़की की आंखों में परेशानी थी।

"बस, पानी आते ही वह नहा लेंगी। तुम परेशान न हो।" शमीमा ने बेटी का सिर प्यार से सहलाया।

दोनों बच्चे खाना खा चुके थे। शमीमा ने सास की तरफ देखकर गहरी सांस ली, फिर जूठी रकाबियां उठा अंदर रसोई में गई। नल से सूं-सूं की आवाज आनी शुरू हो गई थी। बहू का चेहरा खिल उठा कि बस, अब टोंटी से पानी गिरने वाला है। उसने लपककर गुस्लखाने का नल खोल नीचे बाल्टी लगा दी और सास को तसल्ली देती बोल उठी, "बस, अम्मीजान, चंद मिनटों बाद टोंटी से पानी गिरने वाला है।"

सास ने गुस्लखाने में जाकर नहाना शुरू कर दिया। साबुन के फेन से भरा पानी जैसे ही गुस्लखाने से निकल आंगन की सूखी नाली में बहा वैसे ही चिड़ियो का गोल छज्जे, दीवार, मुंडेर से उड़ नीचे आया। अंदर पानी गिरने की छपाछप आवाज आ रही थी और बाहर बहते पानी में चोंच डाले चिड़ियां पंख फड़फडा-फड़फड़ाकर नहा रही थीं। इस बीच पेड़ से उतर तीनों गिलहरियां भी आ गई थीं। अंदर दुआओ की लय के साथ जब नल बंद हुआ और अनवरी बेगम बाहर निकलीं तो शमीमा अंदर घुस कपड़े धोने लगी। बेटी ने अपने छोटे-छोटे हाथों से खाली बोतलें भर ली थीं, मगर बेटा बिस्तर पर लेटा टी.वी. देखता रहा।

"सुबह पानी आ जाता तो इतनी परेशानी न होती, अम्मी।" बेटी मां को कपड़े फैलाते देख बोली। उसका नन्हा-सा दिल अभी भी दादी के लिए दुख रहा था।

"हां, यह तो है...अब तुम भी जाकर थोड़ी देर सो जाओ, फिर उठकर होमवर्क करना।" शमीमा ने इतना कह बावर्चीखाने से दो साफ प्लेटें उठाईं और दस्तरख्वान पर ले जाकर रखीं, फिर सास से बोली, "अम्मी, आइए।"

दोनो सास-बहू ने खाना खाया। सास का चेहरा पता नहीं साबुन ज्यादा लगाने से या फिर किसी और वजह से बिलकुल सफेद हो रहा था, जैसे खून की एक बूं

न हो। शमीमा की आंखों में भय का साया लहराया। उसने सिर झटका और चावल पर दाल डाली। उसे बड़ी कस के भूख लग रही थी। सास ने गिलास उठा दो घूंट भरा, फिर धीरे से बोलीं, "आज दाल तुमने बहुत मजेदार बनाई है। सूखी खटाई डाली है न?"

"जी।" सास के मुंह से तारीफ सुन शमीमा का चेहरा खिल उठा।

"तुम मेरी बातों का बुरा न माना करो, शमीमा।" वह थोड़ी देर बाद बोलीं।

"आप भी कैसी बात करती हैं, अम्मी।' शमीमा झट से बोल उठी।

"यह 'वसवास' की बीमारी हमारी खानदानी बीमारी है। गोता-तहारत, पाक-नापाक का खदशा हमारे घर में सबको रहा। अल्लाह बख्शें, मेरी नानी को भी यही वहम था और दादी को भी। मां का हाल उनसे बुरा था। हर काम के बाद हाथ धोना, वह भी साबुन से, जिसका नतीजा यह निकला कि उंगलियों के बीच में पस पड़ गया, मगर फिर भी आदत से मजबूर। अब हम गुजरे वक्त के लोग हैं। अपनी तरह से जीने के आदी...अच्छी-बुरी जैसी कट रही है मेरे साथ तुम्हारी, काट लो, फिर तो..."

"अम्मी, आप इस तरह की बातें आज क्यों कर रही हैं?" शमीमा ने सहमकर सास को देखा।

"बस...जो कहना था, कहा...जब हाथ खाली हो तो मेरे सिर में तेल दबा देना।" इतना कहकर सास उठीं और दर पर रखे लोटे से उन्होंने बेसन लगे हाथ को धोना शुरू किया। जब तक लोटा खाली नहीं हो गया रगड़-रगड़कर वह हाथ धोती रहीं। दूसरे लोटे से कुल्ली की और फिर पानी से तीन बार हाथ गोता कर उठीं।

बहू ने जूठे बरतन उठाए। पानी के रहते वह बरतन निबटाना चाहती थी। घंटे-भर बाद ही मियां के आने का वक्त हो जाएगा, फिर तो रात के खाने तक दम मारने की फुरसत नहीं मिलेगी।

बरतन धो उसने तेल की शीशी उठाई। सास की चंदिया पर चंद बूंदें टपका उसने मलना शुरू किया, फिर सारे सिर में तेल लगा वह धीरे-धीरे मालिश कर सिर दबाने लगी।

बिजली आ रही थी। यह कमरा भी कूलर की वजह से ठंडा था। सास गहरी नींद में डूब गई। उसने राहत की सांस ली। कमरे से जाते-जाते उनके चेहरे पर नजर पड़ी तो दिल पसीज गया। उसने मुहब्बत-भरी नजरो से सास को देखा और मिले हुए दूसरे कमरे में जाकर, टी.वी. बंद करके वह भी कुछ देर सुस्ताने के लिए लेट गई। कूलर से निकली ठंडी हवा उसके थके बदन को सहलाने लगी।



शाम घिर आई थी। दोनों बच्चे अपना-अपना होमवर्क कर रहे थे। हफ्ते-भर बाद उनकी छुट्टियां शुरू होने वाली थीं, तब गांव की तरफ जाना होगा। शमीमा ने दर्जी को कपड़े सिलने दे दिए थे। दो कमरों का यह किराये का घर उसकी देखरेख के चलते हरदम जगमगाता रहता था। उसकी इसी आदत के चलते वह सास की दुलारी बन गई थी।

"अरे, अरे! यह क्या कर रहे हो?" शमीमा बेटे की हरकत देख चकित रह गई, जो सोते से उठकर, आंगन में आकर खड़ा-खड़ा गमले में पेशाब कर रहा था।

"सूख रहा था न।" बेटे ने भोलेपन से कहा।

"नालायक! जानते हो कि जूठा पानी तक पेड़ में डालने को दादी मना करती हैं, फिर तुमने..." शमीमा ने आगे बढ़ बेटे का कंधा झिंझोड़ा।

"मगर सूखने से तो अच्छा है, अम्मी!" बेटे ने उसी स्वर में कहा।

"अरे बुद्धू, पेशाब अब इस पौधे को सुखा देगा।" शमीमा ने बेटे को हल्की तड़ी सिर पर जमाई।

"आपने मेरे सिर पर मारा...मैं दादी से जाकर कहता हूं कि सिर में कुरान पाक रहता है और अम्मा ने फिर वहीं मारा है।" एकाएक लड़का क्रोधित हो उठा।

"जब उन्हें तुम्हारी करतूत का पता चलेगा तो मुझ से भी ज्यादा जोरदार लप्पड़ पड़ेगा! खबरदार, जो आगे से यह हरकत फिर कभी दोहराई!" शमीमा ने बेटे को उंगली दिखाते हुए सावधान किया।

"बाहर सब यही करते हैं!" लड़का बुदबुदाता हुआ मुंह फुलाकर दालान के दर पर जाकर बैठ गया।

"जबान बहुत चलने लगी है। कोई जरूरी है, जो सब करते हों वह तुम भी करो?"

अजान की आवाज फिजा में गूंज गई। परिंदों के गोल आसमान पर उड़ते हुए घर लौटने लगे। गली में चहल-पहल बढ़ गई। उसने चाय का पानी गैस पर रखा। डिब्बे से निकालकर बिस्कुट प्लेट में सजाए और दो मग अलमारी से उठा ट्रे में रखे। नजर घड़ी पर डाली—छह बज रहे थे। उसने खौलते पानी में चाय की पत्ती डाली और भगोना ढक बाहर निकली। अब किसी भी पल दरवाजे की कुंडी बजने वाली होगी। उसकी काजल लगी आंखों में मुस्कान उभर आई। बच्चों ने अपने-अपने बस्ते बंद किए और लड़का बाहर खेलने जाने के लिए जिद करने लगा।

❖ ❖ ❖

शाम दबे पांव रात की तरफ बढ़ने लगी थी। झुटपुटे के सुरमई रंग में काला रंग घुलने लगा था। बत्तियां जल उठी थीं, मगर मियां की कुंडी नहीं खटकी। शमीमा की बेचैनी

बढ़ गई। सब्जी काटते हुए उसकी नजरें बार-बार दरवाजे की तरफ उठ जाती थीं। दिल हौल रहा था कि कहीं ऐसा-वैसा न कुछ हो गया हो। सास ने भी नमाज पढ़कर कई बार बेटे को पूछा। घर में फिक्र-भरी खामोशी धीरे-धीरे करके गहरी हो रही थी। जब घड़ी में सात बज गए तो शमीमा से नहीं रहा गया। वह उठकर आंगन में जा, दीवार के पास खड़ी हो पड़ोस में आवाज देने लगी।

"रत्ना! रत्ना!"

"क्या है, शम्मो?" उधर से फौरन जवाब आया।

"भाई साहब आ गए क्या?" शमीमा ने पूछा।

"नहीं। कोई काम था क्या?" रत्ना ने पूछ लिया।

"यह भी नहीं लौटे हैं अभी तक। मेरा दिल उलझ रहा था, सोचा, तुमसे पूछूं।" शमीमा ने अपनी परेशानी बताई।

"घबराने की बात नहीं है। बड़ेवाले चौराहे के पास जो नमकीनवाली गली है न, उसी में पानी के चलते मार-पीट हो गई है। अभी मुकेश आया है, वही बता रहा था कि पुलिस ने रास्ता रोक दिया है। कई लोग अस्पताल में भरती हुए हैं।" रत्ना इतना कह चुप हो गई।

"ओह! मैं तो...अच्छा, फिर वे आते होंगे।" शमीमा ने इतना कह इत्मीनान की सांस भरी।

"कर्बला की कहानी बिना किसी नेक वजह के इस शहर में बार-बार दोहराई जाती है, पता नहीं क्यों?" अनवरी बेगम ने रत्ना की बात सुनकर कहा और मन-ही-मन बेटे की सलामती से लौट आने की दुआएं करने लगीं।

शमीमा ने बावर्चीखाने में जाकर सब्जी छौंकी और दाल को घोंटकर बघार लगाया, फिर चावल चढ़ा वह आटा गूंधने लगी। उसे फिक्र थी कि खाना उनके घर आने से पहले तैयार हो जाए, ताकि नहाकर वह सीधे दस्तरख्वान पर बैठें। इस गरमी में सड़क किनारे खड़े रहना कितना तकलीफदेह है! थकन के मारे उनका बुरा हाल होगा। कहते तो हैं कि साइकिल चलाते-चलाते अब कंधे शल हो जाते हैं। तेल-मालिश के लिए कहूंगी तो राजी न होंगे कि इस सड़ी गरमी में तेल से घिन आती है। आटा गूंधकर उसने हाथ धोया और प्याज कतर, उस पर नींबू निचोड़, नमक छिड़का। गली की चहल-पहल मद्धिम पड़ गई थी। अब सिर्फ सुअर के बच्चों के किकियाने की आवाज तेज हो गई थी, जो कानों को बुरी तरह अखर रही थी।

"कहां रह गए थे?" दरवाजे की कुंडी जब साढ़े आठ बजे बजी तो उसने लपककर दरवाजा खोला और पहला सवाल मियां से जड़ दिया।

"अंदर तो आने दो पहले।" इतना कह मेहदी ने साइकिल उठाई।

"आइए!" वह दरवाजे से जरा हटकर खड़ी हो गई।

मेहदी ने अंदर आकर साइकिल आंगन में खड़ी की और मां के पास पहुंचा। माथे व गरदन पर बहते पसीने को रूमाल से पोंछते हुए मेहदी बोला, "नमकीनवाली गली है न, उसमें किसी ने गली के नीचे दबे पाइप में मोटर लगा पानी खींचना शुरू कर दिया था, जिससे बाकी घरों में पानी में कमी आई। आज जब वह पकड़ा गया तो पड़ोसियों ने जमकर उसकी धुनाई कर दी। बीच-बचाव वाले भी मना करते-करते उस मारपीट में बाकायदा शामिल हो गए। कई लोग जख्मी हो गए। भीड़ लग गई। पुलिस आ गई। रास्ता जाम हो गया। उसी में जाने कितने लोग फंस-फंसाकर रह गए।"

"उसने की तो बेजा बात थी। अरे जो है, मिल-बटोर के इस्तेमाल करो।" मां ने कहा और इत्मीनान की सांस ली कि बेटा सही-सलामत घर लौट आया।

"तौलिया गुस्लखाने में रख दिया है।" शमीमा ने कहा और खाना तख्त पर चुन वह गरम-गरम रोटी उतारने लगी। दोनों बच्चे आलथी-पालथी मारकर तख्त पर बैठ चुके थे।

खाने के बाद मेहदी खबर सुनने टी.वी. के सामने बैठ गया। तभी लाइट कट गई और घर में घुप अंधेरा छा गया। हाथ बढ़ाकर मेहदी ने मोमबत्ती की जगह टटोली, मगर वहां जगह खाली थी।

"यहां से मोमबत्ती और माचिस कहां गई?"

"वहीं तो रखी थी।" शमीमा बोली।

"भाई उससे खेल रहा था।" बेटी ने बताया।

"इस लड़के ने तो मेरा नातका बंद कर रखा है। कोई भी चीज इसकी वजह से अपनी जगह पर नहीं टिक पाती है।" शमीमा झुंझलाई।

"बहू, जरा हाथ का पंखा तो देना, मुझे मिल नहीं रहा है।" अंधेरे में टटोलती सास बोली।

"टॉर्च तो जरा उठाना।" मेहदी ने कहा।

"अरे, उसका बल्ब फ्यूज हो गया है। मैं सुबह बताना भूल गई।" शमीमा ने अंधेरे में टटोलते हुए कहा।

"क्या गरमी है! चलो, आंगन में पलंग डालते हैं।" मेहदी बोल उठा।

"इस अंधेरे में किसी चीज से टकरा न जाना। थोड़ी देर सब्र करो, शायद बिजली आ जाए।" अनवरी बेगम की आवाज उभरी।

"हां, इस शहर में रहना है तो सब्र करने की आदत हर बात पर डालनी पड़ेगी।"

मेहदी ने कटाक्ष-भरे स्वर में कहा।

"कौन-सा दूसरा शहर है, जहां हर तरह का आराम है?" शमीमा मियां की बात पर हँस पड़ी।

"तुम हर मुश्किल वक्त में हँस कैसे लेती हो?" मेहदी चिढ़कर बोला।

"इसलिए कि मुसीबत के अलावा रात-दिन मुझे दूसरा कुछ नजर नहीं आता। अब बिजली न आई तो समझो, बच्चों के यूनीफॉर्म पर इस्त्री भी न हो पाएगी।" इतना कह शमीमा तनाव-भरी हँसी हँस पड़ी।

"हां, अपने हाल पर हँसना बड़ी बात है।" मेहदी के यह कहते ही बिजली आ गई। बच्चों ने खुशी से ताली बजाई।

"अम्मी, यह रहा आपका पंखा। अब मोमबत्ती और माचिस ढूंढ़ती हूं।" कहती हुई शमीमा सास के कमरे से निकली।

"मैं, पलंग बाहर डाल लेता हूं। बिजली के आसार कुछ अच्छे नजर नहीं आ रहे हैं।"

बिजली वाकई धुक-धुक कर रही थी। उसकी हालत देख शमीमा दो-चित्ते में पड़ गई कि इस्त्री का प्लग लगाए या नहीं? जैसे ही उसने प्लग लगाना चाहा, बिजली फुर्र हो गई। कमरे से तकिया उठाए सब मोमबत्ती की रोशनी में बाहर निकले और आंगन में बिछे पलंग पर पसर पड़े। गरमी गजब की थी। कभी-कभार चलने वाली हवा भी गरम थी। हर आदमी पलंग पर बेचैनी से करवट बदल रहा था।

"शाम को आंगन में छिड़काव करने से जमीन की गरमी निकल जाती है।" मियां ने पंखा डोलाते हुए कहा।

"पानी बचे तब न...यहां तो बिना पानी के इस गरमी में पेड़ भी झुलस गए हैं।"

"पानी, पानी, पानी!" इतना कह मेहदी चुप हो गया। अंधेरे में उसकी आवाज आंगन में गूंजकर रह गई, मगर उसके अंदर आक्रोश बड़ी देर तक घुमड़ता रहा।

"अम्मा, पंखा झलो न!" बेटे ने मां को झिंझोड़ा।

"झल तो रही हूं।" ऊंघते हुए शमीमा ने पंखा फिर डोलाना शुरू कर दिया।

ऊपर आसमान साफ था। उस पर छोटे-बड़े तारे झिलमिला रहे थे। चांद भी घट रहा था। इस वक्त आधी रोटी की तरह तारों के बीच नजर आ रहा था। दूर कहीं टिटिहरी चीख रही थी। लू ने मच्छरों से मुक्ति दिला दी थी, मगर कभी-कभार चलने वाली गर्म हवा के संग धूल नथनों और सर के बालों में सरसरा रही थी। कहते हैं, नींद तो फांसी के फंदे पर भी आ जाती है तो फिर यह तो सिर्फ गरमी थी। थोड़ी

देर बाद एक-एक करके सब नींद में डूब गए। अभी कुछ ही देर गुजरी थी कि बिल्ली के रोने की आवाज आनी शुरू हुई, जो पल-पल तेज होती चली गई। सोने वाले नींद में कुनमुनाए, फिर करवट बदल ली; मगर जब गली के खारिशजदा कुत्ते ने लगातार भौंकना शुरू कर दिया तो सोने वालों की नींद हराम हो गई। एक मोटी गाली फिजा में उभरी और कुत्ते को डपटती वातावरण में डूब गई।

सुबह के लगभग हवा में गरमी कम हुई तो रात की बेचैनी नींद के साथ आंखों में घुल गई। अभी सोए हुए घंटा-भर भी नहीं गुजरा था कि दीवार के परली तरफ से आवाज आनी शुरू हो गई, "शम्मो! शम्मो!"

"कौन?" शमीमा कच्ची नींद से चकराई उठी।

"मैं रत्ना।" रुआंसी आवाज आई।

"क्या हुआ?" शमीमा ने आंख मली।

"तुम्हारे जीजाजी की तबीयत बहुत खराब है। आधी रात से लगातार उलटी-दस्त हो रहा है।"

"अच्छा, ठहरो! मैं इन्हें जगाती हूं। ऐ उठिए, रमेश भाई साहब की तबीयत खराब है। उठिए न...सुन रहे हैं?" शमीमा ने मियां को झिंझोडा।

"कौन, कहां...क्या है?" नींद में बौखलाया मेहदी हड़बड़ाकर उठा।

"रमेश भाई को आधी रात से कै पर कै हो रही है।" शमीमा ने जम्हाई लेते हुए बताया।

"क्या हुआ, बहू?" अनवरी बेगम की आवाज उभरी।

"कल शाम मेरे मना करने के बावजूद उसने पानीवाले बताशे मजे ले-लेकर खाए थे। इन गोलगप्पों का पानी कितना साफ रहता है, अल्लाह जानें!" मेहदी ने चप्पल ढूंढ़ते हुए कहा।

"वह मेरा चूरन लेते जाओ, दो चुटकी खिलाकर पानी पिला दो। सब ठीक हो जाएगा।" अनवरी बेगम ने कहा।

"जी।" शमीमा ने मोमबत्ती जला ताक पर रखी, शीशियों के बीच से चूरन की शीशी ढूंढ़ शौहर को थमाई।

"जरा माचिस देना। उनके दरवाजे के पास गड्ढा है, कहीं अंधेरे में पैर उसमें न पड़ जाए।" कहता मेहदी घर से बाहर निकला और पड़ोस के घर का दरवाजा थपथपाया।

"कौन?" रत्ना की घबराई आवाज आई, फिर उसने आगे बढ़कर दरवाजा खोला और साड़ी का आंचल आंख पर लगा रोने लगी।

"भाभी, आप परेशान न हों, यह चटोरा मानता भी तो नहीं है कि बाहर की चीज न खाए...है कहां?" मेहदी को रत्ना का इस तरह रोना अजीब लगा।

"इधर।" कहती हुई रत्ना आगे बढ़ी।

पौ फट चुकी थी। आंगन में मलगजा अंधेरा फैल चुका था, जिसमें रमेश नाली के पास दोनों हाथों से सिर थामे उकड़ूं बैठा था। मेहदी ने आगे बढ़ रमेश को उठाया। नाली के आस-पास कै की तीखी बदबू फैली हुई थी।

"यह चूरन थोड़ा-सा चाट लो! घरेलू दवा है, फौरन राहत मिलेगी।" मेहदी ने उसे पलंग पर बिठाते हुए शीशी से चूरन हथेली पर निकाला।

"नहीं।" रमेश ने इनकार किया।

"ठीक है, फिर मैं चाटवाले को बुलाता हूं, उसके पानी से भरे बताशे तुम्हें बड़ा मजा देंगे, क्यों?" मेंहदी ने चिढ़कर कहा।

"यार मेहदी, मजाक न कर...मेरा हाल बड़ा पतला है।" रुकते-रुकते रमेश बोला।

"इसको मुंह में रखिए तो।" इतना कह रत्ना ने चुटकी-भर चूरन जबरदस्ती रमेश के मुंह में डाला।

"अगर इससे आराम न मिला तो डॉक्टर को बुला लाऊंगा, वरना अस्पताल ले जाऊंगा।" मेहदी ने कहा।

सुबह हो गई थी। रमेश को एक-दो बार उबकाई जरूर आई, मगर फिर कै नहीं हुई। धीरे-धीरे उसकी आंख मुंदने लगी और वह गहरी नींद में डूब गया। चूरन की शीशी सिरहाने रख मेहदी उठा और घर के बाहर निकला। लाइट आ गई थी। म्युनिस्पैलिटी के नल पर चहकते लोगों की बरात अपने-अपने बरतनों के साथ खड़ी थी। कुत्ते हौज के पासवाली नाली से बहते पानी को सपड़-सपड़ पी रहे थे। चिड़ियां इधर-उधर खुशी से उड़ रही थीं और मुंडेर पर बैठा कौआ कांय-कांय कर रहा था। बिना जश्न के उत्सव का वातावरण गली में नल की मोटी धार के साथ फैला हुआ था।

3

खुरशीदआरा सुबह से परेशान थीं। उनके छोटे देवर ने बैठे-बिठाए अपने बचपन के खिलौने की फरमाइश कर दी थी, जो वह अपने बेटे को देना चाहता था। वह चाबीवाली

गाड़ी कहां पड़ी थी, उन्हें बिलकुल याद नहीं था। उसका बक्सा कहां किस सामान के नीचे दबा है, यह कैसे पता चले? पंद्रह-बीस साल पुराना सामान ढूंढ़ना कोई मुश्किल काम न था, मगर उन्हें फुरसत कहां मिली इस बीच कि वह सबकी चीजो को दोबारा से संभालें और घर के कोने-कुतरे में रखी चीजों को छांटें। इधर इकलौती ननद नाहीदा की शादी हुई, उधर छोटे देवर के बेटा पैदा हुआ। जब तक सोहर से निबटतीं, तब तक मझले देवर के बड़े बेटे की 'सुन्नत' पड़ गई। अभी घर लौटकर राहत की सांस भी नहीं ले पाई थीं कि समीना की शादी का चक्कर शुरू हो गया।

खुरशीदआरा ने स्टोररूम खोला और ठुसे हुए सामान को देख घबरा-सी उठी।

"कहां से छंटाई शुरू करूं?" अभी वह अपनी आंखें इधर-उधर घुमाकर कुछ फैसला करतीं कि फोन की घंटी घनघना उठी। वह चकराई-सी माथे पर छलक आए पसीने को साड़ी के पल्लू से खुश्क करती बाहर निकली। तब तक बुआ ने फोन उठा लिया था।

"मेहदी रजा के घर से अनवरी बेगम का फोन है।" बुआ ने फोन खुरशीद को थमाया।

"तसलीम आपा जान! आज चांद किधर से निकल आया, जो हमें याद किया आपने? मैं घर पर ही हूं, आइए...जी हां, फिर बातें होती हैं।" खुरशीदआरा ने फोन रखा और स्टोररूम की तरफ जा उसका दरवाजा बंद करती हुई बोली, "आज भी सफाई टल गई।"

"सब खैरियत तो है?" बुआ उत्सुकता से कमर पर एक हाथ रख दूसरे हाथ की अंगुली होंठों पर रखे वहीं खड़ी थीं।

"हां, वह लोग आ रहे हैं आधे घंटे बाद।"

"खाना तो खाएंगे?" बुआ ने खुरशीदआरा को टटोला।

"यह तो मैंने पूछा नहीं।" खुरशीदआरा को जैसे अपनी भूल का अहसास हुआ।

"ऐ बीबी, कोई साढ़े ग्यारह बजे तुम्हारे घर फोन करके आने को कहे तो उससे खाने को पूछना क्या, बल्कि खुद कहना था कि खाना हमारे साथ खाए।" बुआ हैरत-भरी नजरें तरेरते हुए बोलीं।

"कभी-कभी मेरे दिमाग को जाने क्या हो जाता है।" खुरशीदआरा ने माथा रगड़ते हुए परेशानी से कहा।

"खैर, मैं दो सब्जी और दाल बना लेती हूं। उनके आने के बाद चावल चढ़ाऊंगी और आटा गूंधूंगी।" कह बुआ आगे बढ़ गई।

"कोई होता तो दौड़ाकर कुरैशी के यहां से कुछ मंगवा लेती।" कहती हुई

खुरशीदआरा ने ड्राइंगरूम में जाकर कमरे की खिड़कियां खोलीं। सोफे पर डला कपड़ा हटाया और पंखा चला दिया, ताकि कमरे का हब्स खत्म हो। मगर बिजली न थी। बाहर से धूप का टुकड़ा आकर सोफे और कालीन पर बैठ गया था। तस्वीरों के शीशों पर जमी धूल चमक उठी थी। तस्वीरों पर कपड़ा फिराते-फिराते एकाएक खुरशीद रुक गईं। महसूस हुआ, पीछे जमीर आकर खड़े हो गए हैं और...वह उनके स्पर्श से सिहर उठीं। फिर शौहर की तस्वीर उठा बड़ी देर तक तकती रहीं।

"पति तो गजब का तूने पाया है।" अपनी सखी लता की आवाज उनके कानों में गूंजी।

"कद तो देखो।" फरहाना ने लता को टोहका देते हुए धीरे से कहा।

"इतना सुंदर जीवन-साथी पाकर यह हमें भूल जाएगी। चाहे शर्त बद लो।" सुमित्रा ने गरदन हिलाई।

"पता नहीं यार, हमारे भाग्य में जाने कैसा पति लिखा है, नाटा या मोटा!" चिंतित स्वर में लता ने कहा।

इस पर सभी सहेलियों का जोरदार ठहाका एक साथ फूट पड़ा था...

"आदाब, आंटी।" शमीमा ने कमरे में घुसते हुए कहा।

"जीती रहो।" खुरशीदआरा ने चौंकते हुए कहा, फिर तस्वीर मेज पर रख आगे बढ़ शमीमा को गले लगाया।

दोनों बच्चे कमरे में दाखिल हुए, फिर उनके पीछे अनवरी बेगम अपने बेटे मेहदी रजा का हाथ पकड़े दाखिल हुईं। खुरशीदआरा ने बच्चों का गाल थपथपाया और तेजी से आगे बढ़ अनवरी बेगम को आदाब किया, फिर हाथ पकड़ उन्हें सोफे पर लाकर बिठाया।

"खिड़की बंद कर दूं, आंटी? बड़ी गरम हवा आ रही है।" शमीमा ने कहा और अपनी जगह से उठी।

"पहले गला ठंडे पानी से तर करें, फिर चाय-शरबत जो कहेंगी, बनाकर लाती हूं।" बुआ गिलासों से भरी ट्रे लिए खड़ी थीं।

"तुम भी रहमत की मां, बड़ी वफादार निकलीं।" अनवरी बेगम ने ट्रे से गिलास उठाते हुए बुआ से कुछ इस तरह कहा, जिसे सुनकर बुआ कुछ बोलीं नहीं, बस उनकी आंखें छलछला उठीं।

खुरशीदआरा की ननद नाहीदा और शम्मो क्लासफेलो रही हैं। दोनों में बड़ा बहनापा था। इसी के चलते दोनों घर भी दोस्ती में बदल गए थे। इन दोनों की एक दोस्त रत्ला भी थी, जो अपने मामा के घर रहकर पढ़ रही थी। कभी-कभार घर पर

उसका आना भी होता था।

खुरशीदआरा को उसका खयाल आया तो वह पूछ बैठीं, "रत्ना की कुछ खबर है? घर ढूंढ़ रही थी, मिला?"

"हां, आंटी! हमारे पड़ोस में है रत्ना।" इतना कहकर शमीमा हॅस पड़ी।

"बड़ी सलोनी लड़की है। कहना, मैं उसे याद कर रही थी। कभी अपने शौहर और बच्चो के साथ आकर मिल जाए।"

"जरूर कहूंगी, आंटी। मगर शादी के पांच साल गुजर जाने के बाद भी उसके कोई बच्चा नहीं हुआ।" शमीमा ने धीरे से कहा।

"न होगा।" अनवरी बेगम एकाएक बोल पड़ीं।

"जी?" उनके इस दावे से खुरशीदआरा चौक पड़ीं और इतनी सख्त बात कहने पर वह ताज्जुब से अनवरी बेगम का मुंह ताकने लगीं।

"ठीक कह रही हूं, खुरशीद! उसके पेट और कमर के नीचे का हिस्सा बिलकुल सीधा है। जिन लड़कियों का बदन ऐसा सपाट होता है, मैंने देखा है, वे औरते ज्यादातर बांझ निकलती हैं।" अनवरी बेगम बोलीं।

"औलाद देने वाला तो ऊपरवाला है।" धीरे से खुरशीद ने कहा और खाली गिलास समेटे।

गरम चाय के साथ बिस्कुट आ गए थे। हलके-हलके घूंट सब भर रहे थे। शायद सभी के दिमाग में इस घर की यादों की पुरानी परछाइयां डोल रही थीं। बच्चे बिस्कुट कुतरते, धीरे-धीरे कमरे का चक्कर लगाते, बाहर निकल गए थे। चाय खामोशी से खत्म हुई। अनवरी बेगम ने रूमाल निकाल मुंह पोंछा, फिर धीरे से कहा—

"कुछ सुना तुमने, मेहदी रजा का ट्रांसफर हो गया है।"

"अच्छा, कहां हुआ है ट्रांसफर?" खुरशीदआरा को इस खबर से धक्का-सा लगा। यही एक घर था जहां से लोगों ने आना नहीं छोड़ा था, वरना तो जमीर की मौत के बाद धीरे-धीरे दोस्तों ने उन्हें भुला ही दिया था।

"लखनऊ हुआ है।" अनवरी बेगम बोलीं, फिर कुछ ठहरकर कहने लगीं, "यहां सबसे मेल-मिलाप हो गया था। बहू का मायका भी था। जब दिल घबराया, मां-बाप से मिल ली, मगर हमारे चाहने से सरकार ट्रांसफर करना छोड़ थोड़ी देगी।"

"हम तो आंटी, गांव जा रहे थे। मोहर्रम भी था। इरादा चहल्लुम करके आने का था, मगर अब तो..." शमीमा उदास स्वर में बोली।

"हां, शिया तो चाहे जहां भी रहें, मोहर्रम में अपने घर लौटते ही हैं।" खुरशीदआरा ने कहा।

"सुना तो बहुत कुछ लखनऊ की अजादारी के बारे में भी है, मगर जाएंगे तो हम सैयद सरावां ही। साल-भर बाद अपनों से मुलाकात हो जाती है। दिल की भड़ास निकल जाती है। बच्चों को भी खुली छूट मिल जाती है। सारे दिन बाग, खेत, मैदान दौड़ते-भागते हैं। यहां तो बस वही गली, वही आंगन।" अनवरी बेगम ने कहा।

"मुझे तो जल्दी ही ड्यूटी ज्वॉइन करनी होगी, इसलिए इनका टिकट भी परसों का कटवा दिया है।" मेहदी ने कहा।

"इतनी जल्दी?" खुरशीदआरा चौंक पड़ी।

"तभी मैंने सोचा कि आज का दिन खुरशीदआरा के साथ गुजारना है। तुमने भी बेटी, हम जैसे मुसाफिरों को बड़ा अपनापन दिया है। अब इस शहर से लखनऊ कोई दूर नहीं है, कभी आना।"

"जरूर।" खुरशीदआरा इतना कह चुप हो गई।

"आंटी, अब हम चलें, इजाजत है?" मेहदी रजा ने पूछा।

"खाना तैयार है, खाकर जाना। जरा मैं बावर्चीखाने में जाकर वहां की खबर तो लूं कि खाना लगाने में क्या देर है!"

"तुमने नाहक इस गरमी में यह तकल्लुफ किया। अपना घर समझकर जाने कितनी बार हमने यहां खाना साथ खाया है।" अनवरी बेगम बोलीं।

"आप भी कैसी बात कर रही हैं, आपा! घर में जो था वही हाजिर है।" कहती खुरशीदआरा उठ गई।

तभी बिजली आ गई।

खाना खाकर सब फिर ड्राइंगरूम में जाकर बैठ गए। कमरा ठंडा था। नींद का हलका खुमार उनकी आंखों में छाया हुआ था। गली में फेरीवाले की आवाज सुन, बुआ ने जूठे बरतन मेज पर रख, जल्दी से दरवाजा खोल आवाज दी।

"फालसेवाले! ओ फालसेवाले! इधर तो आना।"

"फालसा है, खिन्नी है!" फेरीवाला आवाज लगाता पीछे लौटा और दरवाजे पर आकर उसने अपनी टोकरी सिर से उतारी।

"इस बार फालसा कुछ पहले आय गवा है? का भाव है?" बुआ ने फालसे के नन्हे ढेर को टटोलते हुए पूछा।

"बीस रुपये पाव।" पसीना माथे से पोंछता हुआ वह बोला।

"निगोड़ा फालसा भी सोने का भाव हो गया! ठीक से बताओ।"

"लेना है तो बोलो, मोलभाव नहीं करना है।"

"अकड़त काहे हो? तौलो आधा किलो।"

"देखो अम्मा, इस लू-धूप में हम रोटी कमाय निकले हैं। बीमार पड़ जाएं तो कोय बूंद टपकाए वाला नहीं।" इतना कह उसने फालसा तौल, कागज में रख, बुआ को थमाया।

गली में आस-पास के छोटे-छोटे लड़के-लड़कियां फेरीवाले को घेरकर खड़े हो गए। बीस-बीस के दो नोट फेरीवाले ने कागज के नीचे रखे और नन्ही हथेलियों पर दस-बीस दाने फालसे के रख, नमक छिड़ककर उसने पच्चीस-पचास पैसे के हिसाब से थमाना शुरू कर दिया।

"अब चार बजे शरबत पीकर जाना। आज कितने दिनों बाद फालसेवाले ने गली में हांक लगाई है।" बुआ कमरे में जा बोलीं।

"मेहदी बेटे, तुम यहां दीवान पर आराम से लेट जाओ, आपा और शम्मो को मैं अपने कमरे में ले जा रही हूं।" इतना कह खुरशीदआरा उठ गई। दोनों बच्चों को शम्मो ने इशारा किया, मगर लड़का मचल गया कि वह पापा के साथ सोएगा।

तीनों औरतें बड़े बेडरूम की तरफ मुड़ गईं। खुरशीदआरा आपा का मिजाज जानती थीं। उसने फौरन अलमारी खोल धुली चादर निकाली और बिस्तर पर डाल, तकिया का गिलाफ बदल अनवरी बेगम से कहा, "अब आप आराम से लेटें।"

शम्मो तकिया पर सिर रखते ही सो गई। आज उसे अरसे बाद पका-पकाया खाना मिला था। काम करना नहीं पड़ा था। बदन की सारी थकान आरामदेह बिस्तर पर लेटते ही उतरने लगी। अनवरी बेगम और खुरशीदआरा की आंखों में नींद नहीं थी।

कुछ देर दोनों खामोश रहीं, फिर अनवरी बेगम ने धीमे से पूछा, "समीना के घर कोई खुशखबरी?"

"नहीं, आपा। अभी तो कोई खबर नहीं है।"

"अब तो शादी को कई साल गुजर गए हैं?"

"हां, हो रहे हैं तीन चार साल के लगभग!"

"फेमिली प्लानिंग का भूत तो नहीं सवार है?"

"मैंने आपा, पूछा नहीं। साल गुजरने के बाद ही फिक्र शुरू होनी चाहिए. अभी तो वे सैर-सपाटा कर रहे हैं।"

"हां, यह भी सही है। बेचारी शम्मो को देखो, तले-ऊपर के बच्चों के चलते हल्कान हो गई है। सारे दिन फिरकी की तरह घूमती रहती है।"

"अच्छा तो है, आपा। बच्चे जल्दी पढ़-लिख जाएंगे। बुढ़ापे के बच्चे बाद में

बड़ा दुःख देते हैं।''

''हां, उस नजरिए से बच्चे जल्दी होना अच्छा होता है।''

इसके बाद फिर खामोशी छा गई। दोनों औरतें अपनी-अपनी तरह सोचने लगीं। खुरशीदआरा ने दीवार पर लगी घड़ी की तरफ देखा—पूरे तीन बज रहे थे। धूप की तेजी ढलान पर थी। बिजली आज दोबारा गई नहीं थी। कई बार समीना इनवर्टर लगवाने की बात कह चुकी है, मगर लगता है कि यह सब चाव-चोंचला है, वरना जिस गरमी के साथ बचपन और जवानी बीती हो उससे बुढ़ापे में क्या घबराना!

''यह बताओ खुरशीदआरा, तुम्हारी अम्मा के घर का क्या हुआ?''

''उसी तरह बंद पड़ा है।''

''पहले बेचारी को अकेलापन खाए जाता रहा और अब मकान में चिराग भी नहीं जलता।''

''हां...मगर खानदानवाले आते-जाते रहते हैं।''

''यह सब तो जिंदगी-भर चलता रहता है, मगर रिश्तेदार कहीं औलादों का बदल हो सकते हैं। मेरी मानो तो उसका कुछ हलाभला कर दो, वरना कभी-कभी जाकर रह आया करो, आखिर तुम्हारी पैदाइश की जगह है।''

''कहती तो आप ठीक हैं, आपा, मगर मेरे हालात ही कुछ ऐसे रहे कि मैं चाहकर भी उनका खयाल नहीं रख पाई, न उस घर का...पहले देवरों और नाहीदा की जिम्मेदारी रही, फिर समीना और अब इस घर की। आखिर किस पर अकेला छोड़ूं? आप तो रोज ही सुनती होंगी कि यहां चोरी हुई, वहां डाका पड़ा। और तो और, कोई घुसकर बैठ गया तो एक और मुसीबत।''

''वह सब अपनी जगह है। अब देवर भी अपनी जिम्मेदारी संभालें, छुट्टी-छुट्टी आकर रहें, ताकि तुम निकल सको।''

''बच्चों की छुट्टियों में भाभियां मायके जाना चाहती हैं।''

''और तुम्हारे देवर जोरू के गुलाम ठहरे। मां जैसी भौजाई को छोड़ सास की मुहब्बत में गिरफ्तार हो चुके हैं। तुम बुरा न मानना, मुझे तुम्हारे देवरों का यह लापरवाह अंदाज कभी पसंद नहीं आया। मैंने देखा है कि अकसर इंसान की शराफत का कुछ लोग नाजायज फायदा उठाने लगते हैं।''

''अब क्या कहूं, आपा! उनके भाई जब से मरे हैं, मैंने तो उनकी जिम्मेदारियों में कोताही नहीं बरती है। अब उनके छोटे भाइयों का क्या फर्ज है, यह वे जानें।'' इतना कह खुरशीदआरा चुप हो गईं।

''यह मकान उठाकर बेचो, सबका हिस्सा उन्हें दे-दिला के छुट्टी करो और

खुद को आजाद करो। जाने कब से कैद में पड़ी घुट रही हो।"

अनवरी बेगम के इस तरह बोलने पर खुरशीदआरा ने कोई जवाब नहीं दिया, मगर उनकी आंखों के सामने मां का चेहरा तैर गया। उन्हें लगा कि किसी हद तक अनवरी बेगम की बातें सच हैं, मगर...

"शरबत लाएं?" बुआ कमरे में आ, वहीं पलंग के पास बैठ, दुपट्टे से गरदन पर बहते पसीने को पोंछती हुई बोलीं।

"अभी तो सब सो रहे हैं।" खुरशीद ने शम्मो की तरफ देखकर कहा।

"हां, तो रहमत की मां, अब हम तुम्हारा पड़ोस छोड़कर जा रहे हैं।" अनवरी बेगम ने उठते हुए कहा।

"जाओ-वाओ कहीं न, चैन से बैठो। ई शहर मा बड़ी बरकत है।" बुआ ने इतना कहा और अपना घुटना हाथों से दबाने लगीं।

"हां, यह तो बात तुम्हारी सही है, मगर सरकारी नौकरी है, जाना तो पड़ेगा।"

"ओकी बात अलग है।" इतना कह बुआ ने शमीमा की तरफ देखा, जो बेखबर सो रही थी।

कुछ देर कमरे में खामोशी छाई रही। घड़ी की टिक-टिक कमरे के सन्नाटे को तोड़ती हुई मिनट के घेरे को पार करती भागती रही। खुरशीदआरा को बेटी के फोन का सुबह से इंतजार था। एक बार दिल चाहा कि फोन मिलाकर कहें कि शमीमा आई हुई है, तुम भी आ जाओ। फिर यह सोचकर रुक गई कि अगर उसके पास वक्त होता तो वह खुद फोन करती। हो सकता है, कमाल के साथ किसी बस्ती में गई हुई हो। उस दिन कह भी रही थी—'अम्मी, गरमी से मरने वालों की तादाद बढ़ रही है। उनके घरों और गरीबी को देखकर सिर चकरा जाता है। पंखे की हवा में अपना बैठना भी गुनाह लगने लगता है...'

"मम्मी उठो।" शम्मो का लड़का जाग गया था, अब वह मां के पास आकर खड़ा था।

"सोने दो! मुझे बताओ, तुम्हें क्या चाहिए?" अनवरी बेगम ने पोते का हाथ हटाते हुए कहा।

"पापा बुला रहे हैं।" लड़के ने गुस्सा हो दादी को घूरा।

"कितनी बार समझाया है कि सोते में किसी को नोचकर नहीं जगाते हैं।" अनवरी बेगम ने कहा और पोते का हाथ पकड़ अपनी तरफ खींचा।

"आप तो हर बात को मना करती हैं।" लड़के ने हाथ छुड़ाकर कहा।

"तुम ज्यादातर उलटी-सीधी हरकतें जो करते हो!"

लड़का अनवरी बेगम की बात सुन कुछ बोला नहीं, मगर मां का दुपट्टा झटके से घसीटना नहीं भूला। शमीमा की आंख खुल गई, मगर वह करवट बदलकर फिर नींद में डूब गई।

"बीबी खरबूजा लाई रहीं, काटकर मेज पर रख दिया है।" बुआ ने कहा।

"अपनी दुलहिन बी को लेकर कभी निकलती भी हो या बस घर लेकर बैठी रहती हो?" अनवरी बेगम बोल उठीं।

"अब आपसे का बतावें?" बुआ के चेहरे पर बहुत-सी अनकही बातें तैर गईं।

"अरे अम्मी, चार बज गए!" एकाएक हड़बड़ाई-सी शम्मो नींद से उठी और दीवार पर लगी घड़ी देखकर बोली।

"तो कौन-सा जुर्म हो गया! चार तो रोज ही बजते हैं। हां, बस दो घड़ी तुम आज चैन से सो ली हो।" अनवरी बेगम ने बहू से कहा।

"पूरे दो घंटा सोई हूं।" इतना कह शम्मो उठी और बेटी को जगाकर मुंह-हाथ धोने बाथरूम की तरफ बढ़ी।

"समीना बिटिया आय जात हैं तो घर खिल उठत है। आज फोन करे का कहिन रहीं, मगर अभी तक फोन बजा नहीं।" बुआ जैसे अपने से बोलीं।

"शकरआरा तो पहले ही कम आती थीं।" अनवरी बेगम ने कहा।

"अरे, साल-साल होय जात हैं एक-दूसर का मुंह देखे। देखो न, शादी के बाद से न ऊ आई, न ई गई और अब तो गरमी ऐसी है कि बस, का कहें।"

"अम्मी, देखती हूं, यह उठे कि नहीं।" शम्मो बाथरूम से निकलकर बोली।

ड्राइंगरूम में सब बैठे फालसे के शरबत का मजा ले रहे थे।

खुरशीद बेगम का दिमाग बार-बार भटककर बेटी की तरफ चला जाता था—उसे फालसे का शरबत बहुत पसंद है।

"आंटी, नाहीदा को खत लिखिएगा तो मेरा जिक्र कर दीजिएगा।" शम्मो ने कहा।

"अच्छा, अब इजाजत दें, शाम होने को आई।" इतना कह मेहदी रजा ने खाली गिलास मेज पर रखा।

"अच्छा बेटी! तुमको पंजतन पाक के हवाले किया। खुश रहो, आबाद रहो...अब जाने कब मुलाकात हो।" अनवरी बेगम ने खुरशीदआरा को गले लगाते हुए भर्राई आवाज में कहा।

"जी आपा..." खुरशीदआरा की आवाज गले में फंसकर रह गई थी।

"आदाब!" शमीमा ने होंठ दबा, आंखों में आए आंसू को रोकते हुए कहा और खुरशीदआरा के गले लग गई।

"अपना खयाल रखना।" बहुत धीमी आवाज में खुरशीदआरा ने कहा और उसका माथा चूमा।

"मैं रिक्शा लेकर आ रहा हूं।" मेहदी रजा ने कहा।

वे लोग दरवाजे के बाहर जा चुके थे। खुरशीदआरा उन्हें गली में जाता देख रही थीं। बुआ डंडी ले कुत्ते को हंकाने बाहर निकलीं, जिससे शम्मो की लड़की डर रही थी। शाम ढल रही थी, मगर गरमी का वही हाल था। नुक्कड़ पर खड़ा रिक्शा उन्हें देखकर आगे बढ़ा। मेहदी ने मां को सहारा देकर रिक्शे पर चढ़ाया और शम्मो के बैठने के बाद खुद पीछे-पीछे चलने लगा।

'एक भरा-पूरा खानदान शायद इसी को कहते हैं।' खुरशीदआरा ने दिल-ही-दिल में कहा और अंदर आकर सन्नाटे पड़ गए घर को देखा, फिर खामोशी से ड्राइंगरूम में जा, ट्रे पर खाली गिलास रखने लगीं।

4

गरमी के मौसम में जिस तरह बिलों से हर तरह के जीव-जंतु बाहर निकल आते हैं वैसे ही गरमी की रातों में लोग तंग घरों को छोड़ खुली जगह पर टहलने निकलते हैं, ताकि दिन-भर की थकान से चूर उनका बदन ताजा हवा का मजा ले सके और वे भोर होने से पहले चारपाई पर गिर कुछ घंटों की नींद पूरी कर लें। मगर आज वैसा कुछ भी न था। वातावरण में आग-सी बरस रही थी, ऊपर से गंदे नाले से निकली बदबूदार गैस और तीखी हो उठी थी। नल में पानी भी नहीं था कि नहाकर बदन के ताप को कम कर लेते। और फिर नल का भी क्या भरोसा! पानी भी ऐसा उबलता गिरता है कि लगता है, चाय बनाने के लिए वाटरवर्क्स ने खास सुविधा प्रदान की हो। चौड़ी सड़क के फुटपाथ पर तंग गली से निकले लोग बिखरे थे। कुछ बैठे थे।

दुकानों के सामने चबूतरों पर लेटे मजदूर जब करवट बदल-बदलकर हार गए तो उठकर, बीड़ी सुलगाकर आपस में बातें करने लगे। कमाने शहर की तरफ निकले हैं। धूप-जाड़ा सभी सहना है, फिर गांव में कौन-सा चैन है? कभी बाढ़ डराती है तो कभी सूखा, तो कभी ठंड मार डालती है। यहां कम-से-कम रोटी तो पेट में जाती है और चार पैसे घरवाली को भी पहुंच जाते हैं—यही संतोष है, जिससे शरीर की गाड़ी बराबर खींचे चले जा रहे हैं।

बदलू भी परेशान-सा मसजिद से निकल सड़क पर बैठा इनकी बातें सुन-सुनकर सोच रहा था कि सब परेशान हैं, आखिर क्यों? मैं परेशान हूं कि मेरा कोई नहीं—न घर, न मां-बाप; मगर इनके पास सब कुछ है, तो भी...

गरमी गली को भट्ठी बनाए हुई थी। मकानों की कतार एक-दूसरे से चिपकी ऊपर आसमान की तरफ बढ़ रही थी। इस गली में पहले नीम, कटहल और पीपल के कई पेड़ थे। काटने और गिरने से उनकी जगहें खाली होती गई और उनके स्थान पर कोठरियां बनती चली गई। बड़ा पीपल तो सिर्फ इसलिए बच गया कि उसके चारों तरफ हीरा पहलवान ने गोल चबूतरा वनवाकर अपने उठने-बैठने की जगह बना ली थी। वहीं कसरत करता। उसके सारे दोस्तों की मंडली बैठती और जब वह नहीं होता तो इधर-उधर की कोठरियों से निकलकर औरतें गली के इस इकलौते पेड़ के नीचे बैठ ताजा हवा का मजा लेतीं। अब जव से पहलवान बीमार पड़ा है, पीपल के चवूतरे पर मूर्ति रख पूजा शुरू हो गई है। कुछ लोग इस गली को अब मंदिरवाली गली भी कहने लगे हैं।

वदलू पीपलवाली गली से बताशेवाली गली में आया, फिर मसजिदवाली गली में दाखिल हो वह अपने ठिकाने पर जाकर बैठ गया। गरमी के कारण उसने कमीज उतार रखी थी। बेचैन-सा वह इधर-उधर ताकने लगा। उसे प्यास बड़ी देर से लगी थी। उसने उठकर घड़ौची पर रखी झज्झर से पानी उड़ेला। आधे से भी कम कटोरा भर पाया। उसने दो-चार घूंट भरे। अगर सुबह बिजली नहीं आई तो पानी भी नहीं आएगा। उसकी चिंता बढ़ गई। हौज में पानी था, मगर ढक्कन न होने के कारण पानी की सतह पर धूल और पत्तियां जमा हो जाती हैं। इस वक्त भी उसे मटमैले अंधेरे में नीम की सूखी सींकें पड़ी नजर आ रही थीं।

सुबह अभी हुई नहीं थी, मगर घरों के दरवाजे खुलने-बंद होने लगे थे। अपने-अपने बरतन लेकर लोग नल की तरफ बढ़ रहे थे। जिनके घर नल था, उनके यहां भी अंधेरे में खटपट शुरू हो गई थी। बदलू की आंखों में नींद तैरने लगी। एक-दो झपकी के बाद वह यह सोचकर उठ खड़ा हुआ कि कुछ देर में ही उसे सफाई करनी पड़ेगी और पानी भरना पड़ेगा। उसने उठकर गली का चक्कर लगाया, फिर अनजाने में उसके पैर अंदरसेवाली गली की तरफ उठे और फिर चौड़ी सड़क पार कर वह गली के नुक्कड़ पर पहुंचा। लैंपपोस्ट से टिका वह उस खिड़की की ओर ताकने लगा, जहां से मलगीजी पीली रोशनी फूट रही थी—शायद अंदर शमा जल रही थी। कुछ देर वह बेमतलब खड़ा उस खिड़की को घूरता रहा, फिर जाने क्या सोचकर वह थका-थका-सा सड़क पर आया और अपनी गली की तरफ मुड़ा, जहां छाया मटमैला अंधेरा अभी खत्म नहीं हुआ था।



कमाल पिछले कई दिनों से रात-दिन मरीजों को देख रहा था जिसकी वजह से वह सो नहीं पाया था। समीना कहीं उसके साथ जाती तो कहीं वह अकेला जाता। गरमी और पानी की कमी ने आम आदमी को जैसे जलते तवे पर भूनकर रख दिया था। आज उसे बड़े पीपलवाली गली में हीरा पहलवान को देखने जाना था। सुना था कि उसकी हालत बहुत खराब है। उसने समीना से कह रखा था कि जब वह सुबह उधर जाएगा तब समीना छोटी अम्मी के पास हो लेगी।

पड़ोसी गांव से मरीजों को देख सुबह के लगभग कमाल घर लौटा। नहाकर उसने चाय पी और जाने की तैयारी करने लगा। हाशिम ने यह खबर जब शकरआरा को दी तो वह कुछ झुंझला-सी गई। हाथ में पकड़ी चाय की प्याली मेज पर रखकर उठीं और सीधे बेटे के कमरे में तनतनाती हुई पहुंचीं।

''शहर के सारे डॉक्टर क्या मर गए हैं, जो तुम अकेले हर जगह पहुंचते हो? खुदा न ख्वास्ता तुम्हें कुछ हो गया तो? अरे, अपनी सेहत देखकर डॉक्टरी करो। तुम तो जैसे अपने ही दुश्मन हो गए हो! और समीना, तुम भी बजाय उसे रोकने-टोकने के, जहां वह कहता है, उसके पीछे-पीछे चल पड़ती हो। मुझे तुम दोनों की ये हरकतें पसंद नहीं हैं।''

''अम्मी, अम्मी, थोड़ा सांस ले लीजिए।'' कमाल ने दिलासा देने वाले स्वर में कहा और मां से बच्चों की तरह लिपटने लगा।

''कई दिनों से चुप रहकर मैं इस घर में चलता यह तमाशा देख रही हूं! आखिर कब तक आदमी सांस रोके रहे?'' शकरआरा ने बेटे का हाथ परे हटाते हुए कहा।

''बीमारी के वक्त ही तो डॉक्टर की पूछ होती है, अम्मी।'' कमाल मां के गाल का प्यार लेते हुए हँसा।

''तुम्हारी इस बचपनवाली रिश्वत के फेर में अब मैं नहीं आने वाली हूं।'' अपनी मुस्कान दबाते हुए शकरआरा बोलीं।

''तो लीजिए, वड़ी रिश्वत लीजिए।'' इतना कह कमाल ने दोनों हाथों से मां को गोद में उठा लिया।

''छोड़ो, अरे अल्लाह! मैं गिर जाऊंगी! अरे, सुनते हैं, आकर मुझे छुड़ाइए।'' शकरआरा ने घबराकर कहा।

''देखा न, पड़ गई औलाद के सामने कमजोर।'' कहता हुआ कमाल मां को उठाए-उठाए दरवाजे की तरफ बढ़ा।

''मेरा सिर!'' चौखट से टकराने के डर से उन्होंने सिर नीचे झुकाया और बच्चों की तरह बेटे के सिर से लिपट गई।

"लीजिए, अपनी बेगम को संभालिए, अब्बू! बहुत शरारत करने लगी हैं। डॉक्टर से कहती हैं, वह मरीज देखेने न जाए। मैं चला बॉय-बॉय।" कमाल यह कहता, शकरआरा को गोद से नीचे उतार कमरे से बाहर निकला।

जमाल उसकी इस अदा पर कहकहा मारकर हँसे। आज कमाल ने शकरआरा की नकल की थी, जब बचपन में वह कमाल से तंग आकर उसे यों ही गोद में पकड़कर जमाल खां के सामने लाती थीं।

कमाल तेजी से बरामदे की सीढ़ियां उतर गैराज की तरफ बढ़ा। जब तक वह कार निकालता, समीना बैग उठाए कार तक पहुंच गई। दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा और हँस पड़े। यह मासूम हँसी वही बचपनवाली थी। सबके मना करने के बावजूद दोनों दोपहर में चुपके से एक-दूसरे का हाथ पकड़े बगीचे में निकल जाते और पेड़-पौधों, चिड़ियों, कीड़े-मकोड़ों को देखते घूमते रहते थे। बूढ़े माली से उनकी बड़ी दोस्ती थी। कभी-कभी दोनों माली बाबा की कोठरी में सो भी जाते थे। माली बाबा के मरने के बाद फिर न वह बगीचे में गए और न नए माली से उनकी दोस्ती हो पाई, जो इन्हें देखते ही घुड़कता—'चलो, अंदर जाओ।' वे दूसरे खेल खेलने लगे थे जैसे, लूडो, कैरम और गुस्सा होने पर बड़ों का कार्टून बनाना।

सुबह का वक्त था। सूरज निकल आया था, मगर धूप में ज्यादा गरमी न थी। दोनों कार में बैठे संगीत सुनने में मगन थे। सड़क अभी खाली थी। गली की भीड़ से बचने के लिए ही वह जरा जल्दी निकला था, ताकि आराम से जाकर लौट आए, वरना इन रास्तों पर कार चलाना मुश्किल हो जाता है। समीना को उसके घरवाली गली के सामने उतार कमाल आगे बढ़ा। बड़े पीपलवाली गली में जब वह पहुंचा तो हीरा पहलवान का घर ढूंढ़ने में जरा भी परेशानी नहीं हुई। उन्हीं का एक शागिर्द गली के मुहाने पर खड़ा मिल गया। उसने कटहल के पेड़ के नीचे आराम से गाड़ी पार्क करवाई और मोहल्ले के बच्चों और कुत्तों को झिड़कता, डपटता वह कमाल को लेकर आगे बढ़ा। सामने ही दरवाजा दिखा, जिस पर हीरा पहलवान के नाम की तख्ती लगी थी। शागिर्द ने किवाड़ के पट खोले और कहा, "आइए, डॉक्टर साहब, आइए।"

अंदर कोठरी में एक बड़े तख्त पर लंबा-चौड़ा आदमी लेटा कराह रहा था। कमरे में अंधेरे के साथ खास किस्म की बदबू भरी थी। दीवारें पोस्टरों से सजी थीं, जिसमें हनुमानजी, मुहम्मद अली क्ले और ब्रूस ली की तस्वीरें लगी थीं, जो समय के साथ धूमिल पड़ गई थीं। खुद हीरा पहलवान का बड़ा-सा चित्र फ्रेम-मढ़ा तख्त के ऊपर लगा था, जिसमें वह मुख्यमंत्री से सम्मानित हो रहे थे।

"डॉक्टर साहब आए हैं, उस्ताद।" शागिर्द ने झुककर उनसे कहा।

"राम-राम, डॉक्टर साहिब!" हीरा पहलवान ने लेटे-लेटे अपने हाथ जोड़ दिए।

उसी के साथ उनके चेहरे पर भिनकती मक्खियां उड़ीं।

"राम-राम! क्या हाल है आपका? कब नया दंगल लड़ने जा रहे हैं?" कमाल ने हँसकर पूछा।

"अब कहां, डॉक्टर साहिब! सब गुजरे कल की बात रही...अब तो हम उठै ही नही पाइत हैं, तो का दंगल, का कुश्ती! सब मिट्टी होय गई।" हीरा पहलवान की आवाज निराशा से भरी थी। कमरे में मच्छर चक्कर लगा रहे थे।

"अरे, आपको अखाड़े में न उतारा तो काहे की डॉक्टरी! लाइए, हाथ लाइए अपना।" कमाल ने इतना कह नब्ज देखी; आंख, जबान और सीना देखा।

"तकलीफ क्या रहती है आपको?"

"कूल्हे में जलन जैसी रहती है ओर सारे बदन के जोड़ों में ऐंठन-सी हरदम बनी रहती है। न चल पाते हैं और न बैठ। बदन अकड़ा रहता है।" शागिर्द बोला।

"करवट बदलें।" कमाल ने कहा। हीरा ने शागिर्दो की मदद से बड़ी मुश्किल से करवट ली।

"ओ माई गॉड! बेडसोर्स से तो नीचे का हिस्सा भरा पड़ा है!" कमाल के चेहरे पर परेशानी उभरी।

"क्या हुआ, डॉक्टर साहब?" दूसरे शागिर्द ने पूछा, जो अब तक चुपचाप खड़ा था।

"आप लोग उस्ताद को नहलाते-टहलाते नहीं हैं क्या?" कमाल की त्यौरी पर बल पड़ गए थे।

"बात दरअसल यह है कि जब से उस्तादजी को चलने में तकलीफ होने लगी तब से इन्होंने निकलना छोड़ दिया। हम कहते भी थे, मगर हर बार उस्ताद एक ही बात दोहराते थे कि इन टांगों के नीचे बड़ों-बड़ों को दबाकर चित किया है, अब लंगड़ाकर चलना हीरा के बस की बात नहीं है। हां, बदन पर मालिश बराबर करते रहे हैं हम लोग; लेकिन जब से बुखार हुआ वह भी महीने-भर से छूट गई है।" पहले ने बताया।

"नहाए कब से नहीं हैं?" कमाल ने पूछा।

"महीना से ऊपर हो रहा है। बुखार पहले पकड़े रहा, फिर पानी की परेशानी रही। आठ-दस बाल्टी ढोकर यहां तक लाने में हमें कष्ट न था, मगर यहां न बरतन ज्यादा हैं...और फिर हर बार नल पर पानी लेने के लिए नए सिरे से लाइन में खड़ा होना पड़ता था। इतनी देर में पानी ही चला जाता था।" दूसरा बेहौसला हो बोला।

"आप लोगों से बड़ी लापरवाही हो गई है। लंबी बीमारी वाले मरीज का बदन

भीगे तौलिया से पोंछते रहना चाहिए। उसे बराबर करवट बदलवाते रहना चाहिए। अब देखिए...यह घाव भरने में कितना समय लगेगा!'' कमाल ने दुःख से कहा, फिर परचे पर दवा लिखने लगा।

''उस्ताद ठीक हो जाएंगे न?'' पहले ने डरते-डरते पूछा।

''हम आए किसलिए हैं! यह दवा ले आना। घाव को स्प्रिट से खूब अच्छी तरह साफ कर पाउडर लगाना। यह मरहम दिन में दो बार लगाना। मैं कोशिश करता हूं कि इन्हें अस्पताल में भरती करा दूं, ताकि इनका पूरा चेकअप हो जाए, मगर तब तक इन घावों की तरफ से लापरवाही न बरतना और हां टायररिंग लाकर उसे फौरन नीचे लगाएं ताकि इन्हें राहत मिले।'' कहकर कमाल उठा और हीरा पहलवान से कहने लगा, ''चलते हैं उस्ताद! अपना हौसला बनाए रखिए। पहलवान आदमी थकता थोड़ी है। आप तो नौजवानों की उम्मीद हैं, फिर निराशा कैसी?''

कमाल की बात सुन हीरा पहलवान के फीके चेहरे पर मुस्कान दौड़ गई।

दोनों शागिर्दो के चेहरे पर भी खुशी के भाव छलके। एक ने आगे बढ़कर धीरे से पूछा, ''डॉक्टर साहब, आपकी फीस कितनी हुई?''

''वह तो मिल गई।'' कमाल ने कहा और बैग उठा बाहर निकला।

''जी!'' पहले ने हैरत से कहा और कमाल के हाथ से बैग लेकर साथ-साथ चलने लगा, फिर धीरे से बोला, ''मैं समझा नहीं!''

''तुम समझोगे भी नहीं।'' फिर कार का दरवाजा खोलते हुए कमाल ने कहा, ''पहलवान की खैरियत फोन पर देते रहना।''

कमाल का मन हीरा पहलवान को देखकर उदास हो गया था। बचपन में वह एक-दो वार उनकी तस्वीर अखबार में छपी और शहर की दीवारों पर लगी देख चुका था। अकेले कमरे में कमीज उतार, कई बार अपनी मुट्ठी कस, बाजू की मछलियां निकाल, हीरा की नकल में पोज देकर भी अपने को देख चुका था। आज उसके बचपन के हीरो का यह हाल था! पता नहीं माली हालत भी कैसी हो! चढ़ते सूरज के सभी प्रशंसक होते हैं, मगर ढलते सूरज के...कमाल ने सड़क पार की और गली के नुक्कड़ पर गाड़ी लगाई तथा गली में दाखिल हुआ। उसका दिमाग उलझा हुआ था कि किस अस्पताल में हीरा को दाखिल करे? हर जगह तो मरीजों की भरमार है। बेड कभी खाली मिलता नहीं। उसने हाथ उठा दरवाजे की तरफ देखा, ताकि घंटी बजाए। तभी उसे दरवाजे से चिपका एक लड़का नजर आया।

''क्या बात है? यहां ऐसे क्यों खड़े हो?''

''कुछ नहीं, साहब!'' बदलू डर के मारे रुआंसा हो उठा।

''कुछ तो बात होगी न...डरने की क्या बात है? जो तुमसे पूछा जा रहा है

उसका जवाब दो।'' कमाल ने नरमी से कहा।

''जी, काम ढूंढ़ रहे हैं।'' बदलू एकदम से बोल पड़ा।

''अच्छा, यहीं खड़े रहो, अभी अंदर बुलाते हैं।'' कहकर कमाल ने घंटी बजाई।

दरवाजा बुआ ने खोला था। सलाम कर कमाल अंदर गया तो पीछे से उसे बुआ की आवाज सुनाई पड़ी, जो बदलू को खड़ा देख उससे आने की वजह पूछ रही थीं। जब वह दरवाजा बंद कर अंदर आई तो कमाल ने पूछा, ''आप बुआ नानी, इसे जानती हैं?''

''हां, बदलू है। मसजिदवाली गली में मौलाना साहब के साथ रहता था।''

''अच्छा।'' कमाल ने कहा और अंदर जा छोटी अम्मी को आदाब किया।

खुरशीदआरा ने उठकर दामाद की बलाएं लीं और माथा चूमा।

''खुशबू काहे की है? बड़ी जानी-पहचानी-सी है!'' कमाल ने गहरी सांस ले कहा।

''पड़ोस के घर कुछ भुन रहा होगा।'' समीना ने बड़ी लापरवाही से कहा।

''और यहां मेरे मुंह में पानी आ रहा है। अजीब सी बात है न, समीना?'' कमाल ने कहा और आगे बढ़कर खाने की मेज पर रखा डोंगा खोला। उसी के साथ उसका चेहरा खिल उठा।

''छोटी अम्मी, यू आर द ग्रेट। आप मेरा कितना खयाल रखती हैं! आह, क्या खीर बनी है! इतनी लजीज खीर तो इस पूरी दुनिया में कोई नहीं बना सकता है, सिवाय मेरी छोटी अम्मी के।'' कमाल मुंह चलाता हुआ बोला।

''नदीदे के साथ तुम चापलूस भी बहुत बड़े हो।'' समीना ने उसकी तरफ देखते हुए कहा।

''मगर तुमसे कम। तुम तो डरपोक भी हो, जो मैं नहीं हूं।'' कमाल ने चिढ़ाया।

''अच्छा, बड़ों का अदब करना डरपोक होना होता है!'' समीना यह सुनकर चिढ़ गई।

''अरे, तोहरी अम्मा से डरै मा ही राहत है।'' धीरे-से बुआ ने कहा और सौंफ के शरबत का गिलास कमाल के आगे रखा।

''और लो न!'' खुरशीदआरा ने दामाद के प्याले मे खीर डाली।

''ओह, मैं तो भूल गया। बाहर बदलू नाम के लड़के को खड़ा कर आया हूं। काम चाहता है। उसे बुआ जानती भी हैं। उसे बाहर के काम के लिए रख क्यों नहीं लेतीं? बुआ नानी, जरा बदलू को बुलाइए तो।'' कमाल ने शरबत का घूंट भरा। दिमाग

तरोताजा हो उठा।

"अल्लाह आपका भला करे, जो इस भूखे को आपने खीर खिलाई।" कमाल ने फकीर के लहजे की नकल करते हुए कहा।

बदलू डरा-डरा-सा दाखिल हुआ—चेहरा उदास, होंठों पर पपड़ी जमी, कपड़े गंदे और पैर में घिसी चप्पल। उसने हाथ उठाकर सबको सलाम किया। कमाल ने उससे कुछ सवाल किए, फिर आखिर में पूछा कि वह तनख्वाह कितनी लेगा। पहले वह चुप रहा, फिर धीरे से बोला, "खाना और नहाने का पानी।"

उसकी इस मांग पर सबने चौंककर एक साथ उसे घूरा और फिर एक-दूसरे को देखा। कुछ पल खामोशी रही। किसी की समझ में नहीं आया कि लड़का बुद्धू है या चंट!

कमाल ने शरबत का घूंट भरकर पूछा, "अभी तक खाना कहां खाते थे?"

"मौलाना साहब के गुजर जाने के बाद...कोई दे देता है तो खा लेता हूं, वरना अल्लाह का मेहमान रहता हूं।"

"अच्छा।" कमाल शरबत का गिलास हाथों में पकड़े कुर्सी से उठा और बावर्चीखाने की तरफ जा उसने बुआ से कहा, जो बरतन धो रही थीं, "बुआ नानी, बदलू को जरा पेट-भर नाश्ता कराइए।" फिर आंगन की तरफ जा क्यारियों में लगे पेड़-पोधों को देखने लगा। जूही, चमेली की बेलें सूख-सी गई थीं।

खुरशीदआरा ने बदलू के पानी ले जाने का किस्सा उन्हें सुनाया। फिर तीनों बेडरूम में चले गए। कमाल कमरे में घुसते ही पलंग पर पसर गया और समीना से इशारा किया कि वह उसके जूते खोले। समीना ने गरदन हिला इनकार किया।

कमाल ने खुरशीदआरा से कहा, "देखा छोटी अम्मी, शौहर की नाफरमानी। बाईगॉड, ऐसी औरतो की दोजख में जगह है। मैं इसको सुधारते-सुधारते थक चुका हूं। सोचता हूं, दूसरा निकाह कर लूं। आप बुआ नानी से बात चलाएं न। क्या शरबत बनाकर पिलाया है! रोआं-रोआं मस्ती में डूब गया है।" कमाल ने कहा और समीना का दुपट्टा खींचा।

"बस, तुम अपने मजाक अपने पास रखो।" समीना ने अपना दुपट्टा छुड़ाया, तभी बुआ कमरे में दाखिल हुई। उन्हें देख कमाल को चुहल सूझी, "बुआ नानी, हमसे निकाह करोगी कि नहीं? तीन बार पूछूंगा, उससे पहले हां, कर दीजिएगा।"

"अरे भैया, तुम निकले बेवफा। बचपन मा वायदा हमसे करत रहे। जवान हुए तो हमार बिटिया ब्याह ले गए। अब दामाद से निकाह पढ़ाए के आखिरी वक्त मा अपनी आकबद खराब करें?" बुआ कब चुप रहने वाली थीं। मजाक का जवाब

मजाक मे देने की माहिर ठहरी।

सुनकर कमाल खिसिया गया और समीना ओर खुरशीदआरा हँस पडी।

"बुआ, फ्रिज मे तेल की बोतल रखी हे, ला दीजिए तो जरा सिर दबा दू।" खुरशीदआरा ने दामाद का सिर दुलार से सहलाया।

"अम्मी, आप हमेशा इसी का लाड करती हे।" समीना ठुनकत हुए बोली।

"देख लो .कई बार मेने तुमसे कहा हे कि तुम्हे कोई नही चाहता हे। मेरी तो बात ही अलग है। क्यो छोटी अम्मी?" कमाल ने खाला का चेहरा ताका।

"अरे, तुम दोनो मे फर्क क्यो करूगी भला।" खुरशीदआरा ने बेटी का फूला मुह देख खिलखिलाते हुए कहा ओर कमाल के बालो म उगलिया फिराई।

"अब तेल लगवाओगे या फिर चलोगे जमनापार?" समीना ने जलकर कहा।

"छोडो यार। इतने दिन बाद तो छोटी अम्मी के पास लेटने का मोका मिला है।" कहकर कमाल ने बचपनवाली आदत के मुताबिक खुरशीदआरा का दुपट्टा मुह पर डाला और आख बद कर ली।

"लेव तेल, दुलहिन बी।" बुआ तेल की शीशी थमा कमाल के पेताने बैठ गई ओर जूता उतार हलके-हलके उसका तलवा दबाने लगी। कमाल के बदन से कई दिनो की थकान फूटने लगी ओर आख मुदने लगी।

"बदलू ने नाश्ता कर लिया?" खुरशीदआरा ने धीमे से पूछा।

"हा, साबुन दे दिया हे। आगन म नहा रहा है।" बुआ ने जवाब दिया।

"कपडे तो उसके गदे थे, नहाकर वही पहनेगा क्या, बुआ?" समीना ने पूछा।

"एक पेट और कमीज पुरनकी दे दी हे। लडका सीधा हे। कहत रहा कि दो रोज मे खाना नही खाया है। बस, पानी पी-पीकर गुजारा चल रहा था।" बुआ ने बताया।

"ओह।" समीना ने हलके से कहा।

कमाल के कानो में ये शब्द पिघले शीशे की तरह दाखिल हुए। उसकी आंखो में डोलती नीद काफूर हो गई। वह हलके से कसमसाया ओर छोटी अम्मी का हाथ सिर से हटाकर उसे चूमा ओर उठ बैठा। दिल-ही-दिल मे कहने लगा कि आखिर आदमी कहां जाए जहां वह सुकून से सो सके। उसको यों एकाएक उठते देख तीनो औरतों ने उसे ताज्जुब से देखा, मगर कमाल अपना बचपना भूल चुका था। उसने गभीर स्वर मे समीना से कहा, "चलो, उस बस्ती मे जाना जरूरी है। अच्छा छोटी अम्मी, फिर आऊंगा। और बुआ नानी, तुम जरा बदलू का खयाल रखना।" इतना

कह वह तेजी से बाहर निकला।

"कमाल को अचानक यह क्या हुआ?" खुरशीदआरा ने ताज्जुब से पूछा।

"काम करने और फर्ज निभाने का दौरा।" समीना ने कह मां को प्यार किया और बैग उठा बाहर निकली। खुरशीदआरा व बुआ ने दरवाजे पर खड़े हो हाथ हिलाया।

5

जमना किनारेवाली झोपड़पट्टी में आग लग गई थी। जो कुछ भी उन बस्तीवालों का था, सब जलकर खाक हो गया था। धूप में औरतें बैठी विलाप कर रही थीं। उनके बच्चे जलती जमीन पर, चिथड़े पर पड़े सो रहे थे। धूप की तपिश में भी कुछ छोटे लड़के-लड़कियां रोज की तरह अपने खेल में मस्त थे। मर्द अलबत्ता जली झोपड़ियों में कुछ खोजबीन करते, ईंटें उठा-उठाकर एक तरफ रख रहे थे।

"यह क्या हुआ?" कार में बैठे-बैठे कमाल ने बस्ती की बरबादी देखकर धीरे से कहा।

"लगता है, आग कल रात किसी वक्त लगी होगी।" समीना ने धीमे-से कहा।

"इन बेचारों का तो कुछ भी नहीं बचा।" कमाल ने कहा और कार से उतरकर वह औरतों के झुंड की तरफ बढ़ा।

तभी किसी ने पुकारकर कहा, "डॉक्टरजी आए हैं।"

उसकी आवाज सुन मर्दों ने जली झोपड़ियों को खंगालना बंद किया और औरतों के झुंड की तरफ लौटे।

"हम तो लुट गए, माई-बाप!" एक बूढ़ा, जो वहीं लेटा था, रोते हुए बोला।

"यह हुआ कैसे?" कमाल ने पूछा।

"किसी को कुछ नहीं पता, बाबू। हम सब सोवत रहे। जब आग ने जोर पकड़ा तो गरमी से हमारी आंख खुल गई। फिर भगदड़ मची। जिसके पास जितना पानी था, डाला, मगर आग न बुझी।" एक औरत ने रोते हुए बताया।

"कोई जला तो नहीं?" कमाल के स्वर में इस बार चिंता थी।

"बस, यही भगवान् की कृपा भई, वरना तो..."

मर्द पास आ चुके थे। चेहरे से आहत थे। कुछ वहीं जमीन पर चुपचाप बैठ गए, कुछ वैसे ही सीने पर हाथ बांधे खड़े रहे। सब कुछ स्वाहा हो जाने के बाद इन्होंने

सुबह से कुछ खाया-पीया भी न होगा। पता नहीं पैसा भी होगा पास में या नहीं। सभी तो मजदूरी करते है। रोज का कुआं खोदना, रोज का पानी पीना। कुछ देर कमाल और समीना ठगे-से खड़े रहे। वे सोचकर कुछ आए थे और देखने को कुछ और मिला।

"कोई यहां पहुंचा अभी तक या नहीं?" समीना ने पूछा।

"बस, थाने से एक सिपाही और दरोगाजी आए थे। पूछताछ करके चले गए।" एक अधेड मजदूर ने कुंठित हो कहा।

"हम तो साहब, लुट गए।" एक मर्द ने बेहौसला स्वर मे कहा।

"अब क्या सोचा है तुम लोगो ने?" कमाल को जब कुछ समझ मे नही आया तो एकाएक उल्टा उन्हीं से सवाल कर बैठा।

"अब का बताएं।" एक औरत ने माथे पर हाथ मारकर कहा।

"पहला काम तो यह करो कि तुम लोग कुछ खा-पी लो।" समीना ने कहा।

उसके यह कहने पर एक औरत बोली, "कुछ बचा नही, चावल आग मा भुन गवा, तेल जल गवा...बस तसला, बाल्टी, पतीला बचा है, वह भी पहचान मा नही आवत।"

"देखो, हम जाकर तुम लोगों के लिए चाय, शक्कर, दूध और आटा लाते है। पहले बच्चों को कुछ दो, खुद खाओ, फिर सोचना।" इतना कह कमाल कार की तरफ मुड़ा।

"समीना, आग ओर पानी का मेल तुम्हें अजीब नही लगता?" कमाल ने लबी सांस ले गहरी सोच से उबरते हुए कहा।

"यू मीन...आग लगाई गई है?" समीना ने धीरे से कहा, जबकि उसे भी यही संदेह था।

"यस, यस, माई डियर।" कमाल इतना कह चुप हो गया।

ज़ब समीना के साथ खाने-पीने का सामान लेकर कमाल लौटा तो जली बस्ती की शक्ल काफी बदल चुकी थी। औरत-मर्दो ने मिलकर कुछ ही देर में ईटें छांट ली थीं। कुछ ने नदी किनारे जा बरतन की कालिख धो ली थी। गजब की उमंग उनमें नजर आ रही थी। कमाल ने सोचा कि इंसान के पास सबसे बड़ी दौलत उसकी जिजीविषा है। समीना ने बिस्कुट बच्चों में बांटे। दो औरतों ने ईटों से चूल्हा बना, जमा की लकड़ी से आग जलाई। तीन-चार ने मिलकर नमक डाल आटा गूंधा और मोटी-मोटी रोटी तवे पर डलने लगी। चाय का पानी खौल गया था, जिसमें शक्कर, दूध और चाय की पत्ती डाल दी गई थी। अब समस्या बरतन और गिलास की थी। जितने मिले थे उन्हीं में चाय उड़ेलकर एक-एक लाल, फूली, गोल, मोटी-मोटी रोटियां

औरतें मर्दों में बांटने लगीं। कुछ बूढ़ी औरतें भी उन्हीं के साथ बैठ गई। कमाल और समीना का दिल उनकी बेबसी देख पिघल रहा था।

इससे ज्यादा वे दोनों और क्या कर सकते थे! उन्हें उसी हालत में छोड़ दोनों सुस्त-से कार में बैठे और लौटने लगे। कमाल में दूसरों के लिए दर्द था, कुछ कर गुजरने का जोश था, इसीलिए वह अपने शहर की इन बस्तियों और गलियों में अकसर भटकता रहता था। उसे जाने किस चीज की तलाश थी।

रास्ते में दोनों में से कोई एक-दूसरे से नहीं बोला। वे दोनों गहरी सोच में डूबे थे। कमाल के मन में बार-बार एक सवाल उठ रहा था कि दूसरों की सहायता भी खाली हाथ से नहीं हो सकती है। थोड़ी-बहुत मदद तो सभी एक-दूसरे की करते रहते हैं, मगर बड़े पैमाने पर इससे जूझने के लिए दौलत चाहिए, एक प्रोग्राम चाहिए और एक ग्रुप भी। अकेले चना भाड़ नहीं फोड़ सकता है। इस तरह शौकिया मोहल्ले-मोहल्ले घूमना वास्तव में समस्या का हल नहीं है। मुझे अब कुछ करना पड़ेगा।

उधर समीना सोच रही थी कि मुझे 'मिस मेरी स्कूल' का वह ऑफर कुबूल कर लेना चाहिए, वरना बिना नौकरी के छोटी-छोटी जरूरतों के लिए मुझे बड़ी अम्मी के आगे हाथ फैलाना पड़ेगा। कमाल जो कमाते हैं वह मरीजों पर खर्च कर देते हैं। उन्हें मना करने का अर्थ है, नेकी से हाथ खींचना, जो मैं नहीं चाहती हूं; मगर इस समस्या को तो हल करना पड़ेगा। माली तौर से जब तक हम मजबूत न होंगे, किसी भी शख्स की मदद सही तरीके से नहीं कर पाएंगे। अधूरी सहायता से उस आदमी की स्थिति तो नहीं बदलती है, कुछ देर के लिए बस उसके आंसू पुंछ जाते हैं।

"देखो, ग्यारह बज रहे हैं। मैं क्लीनिक जाता हूं। तुम रिक्शा करके घर चली जाओ।" कमाल ने कहा।

"नहीं, तुम्हें मैं क्लीनिक छोड़कर एक-दो अपने काम निबटा लूंगी। फिर गाड़ी तुम्हारे पास छोड़, रिक्शा कर घर चली जाऊंगी।" समीना ने कहा।

"यह भी ठीक है।" कमाल ने खोए-खोए अंदाज से कहा।

समीना 'मिस मेरी स्कूल' जाते हुए रास्ते में सोच रही थी कि मेरे नौकरी करने पर बड़ी अम्मी नाराज तो नहीं होंगी या फिर कमाल को ही मेरा स्कूल में पढ़ाना पसंद न आए? जो होगा सो देखा जाएगा, अभी तो प्रिंसिपल से मिलना है। पता नहीं वह ऑफर स्टैंड भी करता है या कोई उस खाली जगह को भर गया है।

वह जब प्रिंसिपल के कमरे में पहुंची तो वे हँसकर बोलीं, "मुझे पूरा विश्वास था कि तुम हमारा ऑफर कुबूल करोगी। आखिर यह तुम्हारा पुराना स्कूल जो ठहरा।"

"हां, मैंने यही सोचा कि अपने पुराने स्कूल को छोड़ना नहीं चाहिए।" इतना

कहकर समीना मुस्करा पड़ी।



समीना के काम करने से सबसे ज्यादा खुशी खुरशीदआरा को हुई। शकरआरा ने कोई खास अहमियत इस खबर को नहीं दी, वैसे भी समीना कमाल के साथ ज्यादा वक्त घर से बाहर ही गुजारती थी, अब नौकरी के चलते सुबह से तीन बजे तक बाहर रहेगी, जिससे उनकी जिंदगी में कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। उनकी अपनी मसरूफियतें थीं, अपनी दोस्त ओर पार्टियां थीं। काम के लिए नौकर-आया घर मे थे। कमाल अलबत्ता चकित हुआ था, मगर कुछ बोला नहीं था। समीना ने स्कूल जाना शुरू कर दिया। उसे कमाल को यों अकेला छोड़ना अच्छा नहीं लगा, मगर वह यह नौकरी भी तो उसी के लिए कर रही थी, ताकि उसके कामों में अड़चनें न आए।

उधर कमाल को लगा कि उसे अपने से किया यह वायदा अपने लक्ष्य के लिए तोड़ना पड़ेगा कि वह जिंदगी-भर सिर्फ गरीबों का इलाज करेगा। जिस तरह के हालात हैं उसमें अगर प्राइवेट नर्सिंग होम में तीन दिन बैठने वाला ऑफर उसने कुबूल नही किया तो भविप्य में वह न तो गरीबों की मदद कर पाएगा ओर न ही उनका इलाज कर पाएगा। अब तो दिल मे तमन्ना उभरी हे कि खुद का अस्पताल ही क्यो न खोला जाए, जहां हीरा पहलवान जेसे कई अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का ठीक-ठाक इलाज वह कर सके। उसके हाथ में फन हे तो क्या, उसके हाथ फिर भी बंधे हुए है। सिर्फ बीमारी को पहचान लेना, नुस्खे लिख देना, हिदायत देना ही इस वर्ग के लिए काफी नहीं हे। अगर वे दवा खरीदने ओर इलाज कराने के काबिल ही होते तो इन खतरनाक बीमारियों से मरते ही क्यो?

कमाल के अदर अपना अस्पताल खोलने का ख्वाब हीरा पहलवान की बदहाली ने दिखाया, जो धीरे-धीरे जड़ पकड़ने लगा। उसे महसूस होने लगा कि उसके अरमानों और इरादो का केंद्र बस अस्पताल हे, जहा पर वह अपनी सारी इच्छाएं पूरी कर सकता है। इस ख्वाब को पूरा करने के लिए उसे पूजी चाहिए—पूजी! उसे कमाना होगा, रात-दिन मेहनत करनी होगी, तब कही जाकर उसे सुकून मिलेगा; वरना गाव-गाव भटकने, मोहल्ले-दर-मोहल्ले फिरने से वह मूल समस्या को गरदन से नहीं पकड़ पाएगा। बस धइया छू-छूकर आंख-मिचौली जिंदगी-भर खेलता रहेगा ओर भ्रम पाले रहेगा कि वह जन-मानस की सेवा कर रहा हे। डॉक्टर बनने का कर्तव्य निभा रहा है। यह सब बेकार है, भुलावा है, समय गुजारने जैसा है। मुझे तो अव समस्या की लगाम पकड़ना है और सेवा के घोड़े पर सवार हो सही दिशा में अपना फर्ज पूरा करना है।

"क्या बात है? तुम हरदम किसी सोच में डूबे रहते हो!" समीना ने कमाल से पूछा।

"तुम्हारे बारे में सोचता रहता हूं।" कमाल ने शरारत-भरे स्वर में कहा।

"मजाक छोड़ो। जो पूछा है उसका जवाब दो।" समीना उलझकर बोली।

"जो कहा उस पर यकीन नहीं, अब जो आगे कहूंगा उसे हँसी में उड़ा दोगी। तुम औरतें मर्दो का दिल लेकर उसका कचूमर बनाने में माहिर हो।" कमाल ने बात टालते हुए कहा।

"मुझे तुमसे बात नहीं करनी है।" समीना चिढ़ गई।

कमाल उसे खामोशी से देखता रहा, फिर बोल उठा, "समीना, मैं एक अस्पताल खोलने का प्लान बना रहा हूं और..."

"और क्या? रुक क्यों गए?" समीना ने चौंककर देखा फिर बेचैन हो पूछा।

"पहले कमाना पड़ेगा, फिर..." कमाल ने धीमे स्वर से कहा और लंबी सांस खींची। चेहरे पर शरारत की जगह गहरी मायूसी छा गई।

"प्लान तो तुम्हारा बहुत बढ़िया है। सच पूछो तो कई बार मेरे दिल में भी यह बात आई कि हम टुकड़े-टुकड़े में लोगों की मदद करने की जगह क्यों न कलेक्टिव वे में मदद का कोई ऐसा प्लान बनाएं जो अपने-आप चलता रहे।" समीना ने कमाल के पीछे आकर उसके कंधे पर हाथ रखा।

"तुम कभी-कभी बड़ी समझदारी की बात करने लगती हो, तब मुझे शक होने लगता है कि तुम समीना हो या...मेरी खोई बिलबहूटी।" कमाल ने उसे अपनी तरफ खींचा और गोद में बिठा उसे अपनी बांहों में भींचा।

"उफ, मेरा अल्लाह! छोड़ो, मेरा दम घुट रहा है।" समीना ने अपने को छुड़ाना चाहा।

"तुम मुझे इतनी प्यारी क्यों लगती हो? लिल्ली घोड़ी की तरह तुम्हारी यह घनी-घनी मुड़ी-मुड़ी पलकें कितना कुछ अपने अंदर छुपाए हैं!"—कमाल ने उसकी बंद पलकों पर अपनी उंगलियां फेरते हुए धीरे-धीरे कहा।



बदलू के आने से बुआ को बहुत आराम हो गया था। अब अपनी पसंद की ताजा तरकारियां घर आतीं, वरना तो ठेलेवाला जो लेकर आता वही खरीदनी पड़ती थीं। बदलू भी पेट-भर खाना खाने और रोज नहाने से बड़ी प्यारी सूरत का निकल आया था। दिन-भर वह खुरशीदआरा के घर रहता और रात को मसजिद में जाकर सोता। कई बार बुआ ने टोका भी, "तू डरता है क्या रे कि कहीं रात को बुआ तेरा गला न दबा दें?"

"नहीं, नहीं, असल में वहां मौलानाजी अकेले रहते हैं न।"

"अरे नासपीटे! उन्हें मरे हफ्तों गुजर गए हैं और तू उनको अभी तक जिदा समझ रहा है? कब्र की इबादत करना ठीक बात नहीं। जुमा-जुमा जाकर फातिहा पढ़ आया कर। समझे, मेरे गुदड़ी के लाल!" बुआ प्यार से फटकारतीं।

"जी।" बदलू ने सिर झुकाए-झुकाए इतना-भर कहा और बुआ के साथ बैठा प्याज काटता रहा तथा गिरते आंसू घुटने पर पोंछता रहा।

"हीरा पहलवान का सुना, हाल खराब है। दूधवाला कल बता रहा था।" बुआ ने छिले नेनवे को गोल-गोल काटते हुए कहा।

"हां, बुआ, उठ-बैठ नहीं सकते हैं।" बदलू बोला।

"दूसरन को उठा के पटखेवाला आज हाथ-पैर से मजबूर...वाह रे तेरी कुदरत।" इतना कह बुआ ने गरदन हिलाई और कटी प्याज लेकर उठीं।

"आ, यहां खड़ा होकर मेरा हंड़िया पकाना देख! सीख जाएगा तो कल तेरे ही काम आएगा।" इतना कह बुआ ने प्याज गरम तेल में डाली, फिर साबुत मिर्च दो टुकड़े कर डाला।

"जब प्याज सुनहरी हो जाए तो उसमें कटा नेनवा डालो, फिर नमक डालकर ढक्कन पतीली पर लगा दो। पानी, खबरदार, मत डालना। नेनवा खुद पानी छोड़ता है।" इतना कहकर बुआ ने दूसरे ऐले पर रखे तवे पर गोल बैंगन तेल लगाकर रखा।

खुरशीदआरा दालान में बैठी बुआ का कुकिंग क्लास चलता देख-सुन रही थी और सोच रही थीं कि बुआ को बदलू क्या मिल गया, वह मेरे पास भी आना भूल जाती हैं। उनका बस नहीं चलता, वरना वह बदलू को अपने हाथ से खाना खिलाए। सारा बचा दुलार किसी-न-किसी बहाने वह इस लावारिस लड़के पर निछावर करने के लिए बेचैन रहती है। चलो, अच्छा है, इस बहाने वह हँस-बोल लेती हैं। खुरशीदआरा अपनी जगह से उठीं और रैक पर लगी किताबों को देखती रहीं, फिर एक किताब निकाल उस में डूब गई।



पन्ना सुनार अजमेर से लौटकर अपने काम-धंधे में लग गया था। अब उसका मन पूर्ण रूप से बदल गया था। चिड़चिड़ा पन्ना अब मुस्कराता ही नहीं, मन खोलकर हँसता-बोलता था। उसे जब हीरा पहलवान की बीमारी का पता चला तो वह स्वयं उन्हें देखने गया और हीरा के इंकार के बावजूद वह उनके तकिये के नीचे नोट रखने से बाज नहीं आया। आखिर हीरा ने उनके मोहल्ले का नाम ऊंचा किया था। मुख्यमंत्री से उन्होंने 'रुस्तम-ए-उत्तरप्रदेश' का सम्मान पाया था। पन्ना सुनार के इस परोपकारी

व्यवहार ने जैसे बहुतों को सोते से जगा दिया था। कहां तो हीरा खैराती अस्पताल तक नहीं पहुंच पा रहे थे और अब उनके इलाज की सबने जिम्मेदारी उठा ली थी। दोनों शागिर्द आज कमाल से प्राइवेट नर्सिंग होम की बात करने पहुंचे थे।

"यह तो बड़ी अच्छी खबर है। मैं अभी फोन करता हूं, तुम जाकर एडवांस जमा कर देना।"

"जी, डॉक्टर साहब!"

कमाल को इस खबर ने खुशी के साथ विश्वास भी दिया कि लोग अभी एक-दूसरे को भूले नहीं हैं, बस किसी के द्वारा पहल करने की जरूरत पड़ती है। फिर तो लोग आते जाते हैं और काफिला बनता जाता है। उसके क्लीनिक में इस वक्त एक लड़की के जलने का केस आया था, जो पड़ोस में ही रहती थी। उबलती दाल की देगची पूरी-की-पूरी उसके बदन पर उलट गई थी। वह दर्द से कराह रही थी। कपड़ा जिस्म से चिपक गया था। बड़े-बड़े छाले उसे इस गरमी में कितना परेशान कर रहे होंगे—इस बात को वहां बैठे बाकी मरीज भी समझ रहे थे। कमाल ने उसकी फौरी देखभाल कर अपनी गाड़ी में अस्पताल भेजा, ताकि उसे इमरजेंसी केस मानकर जल्दी से राहत दी जाए।

क्लीनिक में भीड़ काफी थी। बिजली चले जाने से इनवर्टर ऑन हो गया था, मगर दो पंखे इतने मरीजों के लिए काफी न थे। पसीने की बदबू फैली हुई थी। वाटर कूलर में पानी भी खत्म हो गया था। अकसर लोग अपनी खाली बोतलें भर लेते थे। कंपाउंडर के लाख मना करने पर भी वे पुरानी हरकतों से बाज नहीं आते थे। कमाल के सिर में बड़ी जोर का दर्द हो रहा था। पिछले दो घंटे से वह चाय पीने की अपनी तलब को रोक रहा था। केस भी आज एक के बाद एक खतरनाक आ रहे थे, जिन्हें उसे फौरन ही देखना पड़ रहा था। उसने सिरदर्द की गोली निकाली और मुंह में डाल पानी पिया। खिड़की के बाहर नजर पड़ी तो झूमते पेड़ों को देखकर लगा कि लू के थपेड़े अपने पूरे वेग से जारी हैं।

"डॉक्टर साहब, मुंह मीठा करें। आपके आशीर्वाद से लड़की के घर बेटा हुआ है।"

"बधाई हो काका, अब तो तुम्हारी सारी चिंताएं दूर हुईं...खुश हो न?" कह कमाल ने बरफी का एक टुकड़ा मुंह में डाला और रोते हुए बच्चे को देखने में लग गया, जिसकी मां उसे लेकर कमरे में दाखिल हुई थी।

"डॉक्टर साहब! कल रात से एका पेट पिराय रहा है। चूरन, नेबू-पानी सब दिया, मगर..." मां ने आंसू पोंछते हुए कहा।

"घबराने की बात नहीं, बस ध्यान रखो कि पीने का पानी साफ हो। मैं दवा

दे रहा हूं।" सैंपल की आई दवाओं से उसने एक शीशी उठा मां को थमाई।

"डॉक्टर साहब! हमार बिटिया बुखार से फुंक रही है। देखें का बात है?"

"लू लगी है।" कमाल ने पांच साल की बेटी को देखकर कहा, जिसकी आंखें बुखार की तेजी से आधी मुंदी थीं, जिनके कोनों से पानी गिर रहा था। गाल तपकर लाल हो रहे थे।

मरीज धीरे-धीरे छंट रहे थे। घड़ी की सूई दो बजा रही थी। बिजली अभी आई नहीं थी। कमाल का सिरदर्द ठीक नहीं हुआ था। उसने चार बजे की अपनी मीटिंग कैंसिल कर दी और घर जाने का मन बना लिया। जब वह क्लीनिक से बाहर निकला तो गरम हवा ने उसे झुलसा दिया। कार तक जब पहुंचा तो उसके पास एक लड़का सामान बेचता हुआ आया।

"बिलकुल असली, बिच्छू लो, छिपकली लो, सांप लो...देखो, साहब! घर में कहीं सजाओ...बिलकुल असली लगेंगे।"

"बच्चों के खेलने का सामान है, यार। मैं तो बड़ा हो गया हूं।" कमाल ने उसे टाला और दरवाजा खोल कार में बैठा।

"बोहनी नहीं हुई है सुबह से। चलो, दाम कम कर देता हूं, साहब।"

"तुम तो एकदम चिपक ही गए हो। डॉक्टर पर बोहनी की जिम्मेदारी डाल रहे हो! लाओ, एक छिपकली दो।" कमाल ने पीछा छुड़ाने के लिए कहा।

"एक नहीं साहब, हर कीड़े का एक-एक मॉडल रखो। सब-के-सब लाजवाब हैं। पूरे मार्केट में ऐसी चीज नहीं मिलेगी।" लड़के ने रबर के कीड़े को मोड़ खींचकर दिखाया।

"अरे, भाग साले! कहां से आन मरा है इस गरमी में!" कंपाउंडर को गुस्सा आ गया था।

"यह लो और जाओ।" कमाल ने नोट निकाला और पैकेट हाथ में ले पासवाली सीट पर डाला। लड़के ने नोट माथे से लगाया। इस बीच गायों का एक झुंड कमाल की कार के सामने आकर खड़ा हो गया था।

"अब ये कहां से आ गई?" कंपाउंडर ने कहा और उन्हें भगाने के लिए मुंह से आवाज निकालने लगा। कमाल ने हॉर्न दिया, मगर वे नहीं हटीं। सामान बेचने वाले लड़के ने उनकी पीठ पर धप मारी और पीछे से धक्का दिया तो एक किनारे खिसकीं। कमाल ने कार निकाली और कहा, "यह गलत जगह इलाज कराने आ गई हैं भई, इन्हें इनके डॉक्टर का पता बताओ न!"

"ये सुबह से प्यासी घूम रही हैं।" लड़के ने कहा।

"हम सब प्यासे हैं। साला इस शहर मा चैन नहीं, कभी बिजली नहीं तो कभी पानी नहीं तो कभी रोटी नहीं।" कंपाउंडर ने कहा और पासवाले पनवाड़ी को इशारे से पान बनाने को कहा।

"आप इस शहर से बाहर निकलें तो पता चलेगा कि गांव का क्या हाल है!" लड़के ने कटाक्ष-भरे स्वर में कहा और आगे बढ़ गया। कंपाउंडर ने क्लीनिक में ताला लगाया और पान की गिलौरी मुंह में दबा, छाता खोले वह अपने घर की तरफ बढ़ा। अब गायों का वह झुंड चायवाले के पास मूक प्रहरी बना खड़ा था।



कमाल जब घर पहुंचा तो सब खाना खा चुके थे। उसने गरम चाय के लिए हाशिम से कहा और कमरे में जा कपड़े बदलने लगा। समीना सो रही थी। आज उसका हाफ-डे था। उसको बेखबर सोता देख कमाल को शरारत सूझी। उसने चाय खत्म की और पैकेट से छिपकली निकाल समीना की खुली हथेली के ठीक पास तकिये पर रख दी। उसका पोज कुछ ऐसा था कि समीना की आंख खुलते ही छिपकली उसे घूरती मिले।

कमाल के सिर का दर्द कुछ कम हो गया था। वह आंख बंद कर कुछ देर सो लेने की कोशिश कर रहा था, मगर दिमाग बार-बार भटककर अस्पताल पर टिक जाता था। अब्बू के पास इतना है कि वह एक अस्पताल खड़ा करवा सकते हैं, मगर तब उनका बुढ़ापा मेरा सहारा मांगेगा। अम्मी के शाहाना खर्च और यह शान-शौकत, जो अभी है, तब रहेगी या नहीं, कह नहीं सकता। अस्पताल के शुरू के दिन यकीनन संघर्ष के होंगे, तब अम्मी-अब्बू में बेकार की बहसें शुरू हो जाएंगी और घर का माहौल पहलेवाला हो जाएगा, जब दादी साथ रहती थीं। उसने घबराकर आंख खोल दी। उसके माथे पर पसीना छलक आया।

तभी समीना की आंख खुली। अपने इतने करीब छिपकली देखकर पहले तो वह कुछ समझ न पाई, फिर एक जोरदार चीख के साथ उछलकर बिस्तर से कूदी।

"क्या हुआ?" कमाल भूल चुका था कि उसने छिपकली रखी है। उसके दिमाग में शोर-शराबे से भरा बचपन का घर बसा था।

"छि...छिपकली..." समीना हांफ रही थी।

"क्या हुआ, छोटी बेगम?" हाशिम दौड़ता कमरे में घुसा। उसके पीछे बुआ और फिर अम्मी-अब्बू। सबके चेहरों से परेशानी टपक रही थी।

"अरे, कुछ नहीं...छिपकली से डर गई हैं।" कमाल ने माथे के बाल हटाए। सबकी नजरें तकिया पर जम गईं।

"माई गॉड! तकिया पर छिपकली! हाशिम, इसका मतलब है, तुम स्प्रे ठीक

से नहीं करते हो।'' शकरआरा गुस्से से बोलीं और डरकर दो कदम पीछे हट जमाल से सट गई।

''कैसी मोटाय रही है कमबख्त कीड़ा-मकोड़ा खाय-खाय के।'' आया हैरत-भरे स्वर में बोली।

''आप भी अम्मी...अभी भगाए देता हूं।'' कह कमाल ने हुश-हुश किया मगर छिपकली वहीं जमी रही।

''जाओ, हिट लाओ।'' शकरआरा चीखीं।

हाशिम बदहवास भागा।

''यह देखिए आपके बहादुर बच्चे का कमाल!'' यह कह कमाल ने छिपकली की दुम पकड़ी और दोनों औरतों को एक साथ उबकाई आई।

जमाल ने बेटे की हरकत देख बड़ी नागवारी से कहा, ''यह क्या?''

''भैया, ओकर जहर बड़ा खतरनाक है। काट ले तो बस...'' आया ने घबराकर कहा।

''मगर मैं इसको पालूंगा, क्या खूबसूरती है!'' कमाल के इस कहने पर समीना ने उसे पहले खूंखार नजरों से घूरा, फिर एकाएक फफककर रो पड़ी।

''अरे...अरे...रोओ मत। यह रबर की है। यह देखो!'' कमाल मजाक को संजीदा होता देख घबरा गया।

दोनों नौकर अपनी हँसी दबाए बाहर निकले।

जमाल खां के मुंह से निकला, ''लाहौल...''

समीना को सीने से लगा पुचकारती शकरआरा मुस्कराते हुए बोलीं, ''अब यह बचपना छोड़ तुम दोनों मम्मी-पापा बनने की सोचो।''

कमाल समीना को यों रोता देख हँसना भूल गया। उसको समीना की आंखों में आंसू कभी नहीं अच्छे लगे; मगर अब वह कर भी क्या सकता था! तीर कमान से निकल चुका था।

6

रत्ना को शमीमा का जाना जितना खल रहा था उससे ज्यादा राकेश को मेहदी रजा का जाना बुरा लग रहा था। दोनों सुबह साथ-साथ साइकिल पर बैठ गली से निकलते और कटरा में रुक, पान का एक-एक बीड़ा मुंह में दबा, ऑफिस तक का बाकी रास्ता

तय करते थे। ऑफिस भी तो छह मील दूर था। सड़क जहां सन्नाटी मिलती वहां आपस में बातचीत भी हो जाती। मौसम बढ़िया रहा तो किसी रोमांटिक गाने पर सीटी भी बजती। उसके जाने के बाद राकेश यह लड़कपन अब किसी और के साथ साझा नहीं कर सकता। यारी सबके साथ थोड़ी हो सकती है और न सबसे दिल मिल पाता है।

शमीमा के जाने के बाद रत्ना कई दिन तक उदास रही। खाना-पीना अच्छा न लगता। बेमन से खाना पकाती, घर की सफाई करती और चुपचाप पलंग पर लेट जाती। राकेश का मन भी भारी-भारी था। आज उसने ऑफिस से लौटते हुए सिनेमा के दो टिकट खरीदे, ताकि रत्ना का मूड बदले। घर पहुंचते ही उसने रत्ना को यह खुशखबरी दी कि आज वह खाना बाहर खाएंगे, इसलिए वह खूब सज-धज के तैयार हो जाए। रत्ना सब्जी काट चुकी थी। उसने मुकेश के लिए खाना बना दिया और नहाने चली गई। उसका मन भी अकेले घर में रहते-रहते ऊब गया था। शमीमा थी तो दोनों कभी-कभी साथ बैठ हँस-बोल लेती थीं। दीवार के आर-पार खड़ी हो एक-दूसरे के दुःख-सुख का समाचार ले लेती थीं। अब जाने उस घर में कौन किरायेदार आए और उसका स्वभाव भी कैसा हो? उससे बने, न बने, क्या पता!

दोनों सजे-धजे रिक्शे पर बैठ रेस्तरां पहुंचे और अपनी-अपनी पसंद का खाना ऑर्डर कर सड़क पर दौड़ते-भागते यातायात को शीशे के पीछे से देखने लगे। रेस्तरां ठंडा था। रत्ना को वहां बैठकर बड़ा सुख मिल रहा था। खाना भी स्वादिष्ट था। अब उसका मन कर रहा था कि यहीं खाट डाल वह सो जाए। राकेश ने घड़ी देख रत्ना से कहा "उठो, चलते हैं, समय हो रहा है।"

"रास्ते में मीठा पान खिलाना।" रत्ना ने बालों पर हाथ फेर साड़ी का आंचल संभाला और पर्स लेकर उठी।

"सड़क पर यों तुम्हारे साथ चलना बड़ा सुख दे रहा है।" राकेश बोला।

"हां, पुराने दिन याद आ गए। शादी के बाद तो हर दूसरे दिन हमारा सिविल लाइंस आना हो जाता था।"

"हां, वह भी क्या मस्ती-भरे दिन थे! मुकेश ने आकर सब चौपट कर दिया, क्यों?"

"तुम जानो, तुम्हारा भाई है।" रत्ना हँसी।

पान की दुकान आ गई थी। राकेश ने एक सिगरेट लेकर होंठों के बीच दबाई और पान बनाने को कहा।

"अच्छे लगते हो सिगरेट पीते हुए।" रत्ना बोली।

"पीने का आदी हो जाऊंगा तो गुस्सा करोगी।"

"वह तो है।"

"लीजिए, बाबू!" पानवाले ने बीड़ा बढ़ाया।

दोनों ने गिलौरी मुंह में दबाई और आगे बढ़े। सिनेमा हॉल अब नजर आने लगा था। भीड़ जमा हो रही थी। राकेश ने सिगरेट का गहरा कश ले धुआं रत्ना के मुंह पर फेंका। रत्ना शरमाकर हँस पड़ी।

"हमें कभी-कभी घर से निकलना चाहिए।"

"हां।" रत्ना राकेश से सट गई। कुछ कदम दोनों चिपके-चिपके चलते रहे, फिर अलग हो उन्होंने सड़क पार की। सिनेमाघर के दरवाजे पर पहुंचकर गेटकीपर को टिकट दिखा, वे अंदर जाकर सीट पर बैठ गए। दोनों का हाथ एक-दूसरे के हाथ में था।



शकरआरा को जब से बड़ी बेटी कामनी का खत मिला था, वह बड़ी बेचैनी से जमाल खां का इंतजार कर रही थी। उनकी छोटी बिटिया सफिया उसी के पास सऊदी गई हुई थी, अब माह होने को आया था। मझली लड़की यासमीन ने कोई लड़का पसंद किया था जो उसके देवर का दोस्त था। दिल्ली में नौकरी करता था। आजकल वहां आया हुआ था। उसे सफिया बहुत पसंद आई थी। अभी वह सोच में डूबी थीं कि फोन की घंटी घनघना उठी।

"हलो...यासमीन! कैसी हो, बेटी? हां, कामनी का खत अभी मिला। लड़के का फोटो भी देखा। हां, लड़का अपनी जगह ठीक है; मगर उसके खानदान के बारे में भी मालूम करना पड़ेगा...तुम्हारे अब्बू अभी घर पर नहीं हैं। आते ही बात छेड़ती हूं। कमाल और समीना से भी राय करती हूं, फिर तुम्हें रात को फोन करूंगी...मेरी तरफ से मेरे नवासों को चूमना और अपने दूल्हा को दुआएं कहना...अच्छा मेरी जिगर, अपना खयाल रखना।" शकरआरा ने फोन रखा और लिफाफे से लड़के का फोटो निकाल गौर से उसका चेहरा देखने लगीं।

'लड़का बुरा तो नहीं है, मगर गुलफाम भी नहीं।' उन्होंने दिल-ही-दिल में कहा और तस्वीर लिफाफे में वापस रख कमाल को फोन मिलाने लगीं।

"तुम लंच पर घर आ सकते हो तो आ जाओ, कुछ जरूरी बात करनी है।"

"ठीक है, अम्मी। पहुंचता हूं मैं।" कह कमाल ने मरीजों को देखना जारी रखा।

शकरआरा ने खत खोलकर एक बार फिर पढ़ा और लड़के की तस्वीर देखी, फिर उठकर बावर्चीखाने में गईं। आया से पूछा कि दोपहर के लिए क्या पकाया है।

वहां से निकलकर वह कमरे में गई और बिस्तर पर लेट गईं। आंखें बंद कर लीं। सफिया और समीना को दोनों लड़कियों ने सऊदी बुलाया था। समीना क्या जाती कमाल के बिना, हां, सफिया ने जिद बांध ली कि वह तो जाकर रहेगी। बाप की दुलारी सफिया को जमाल खां ने इजाजत दे दी, फिर अम्मी की कौन सुनता है! नए कपड़े सिले, सैंडिलें और पर्स खरीदे गए। अटैची कस सफिया जहाज पर बैठ गई। उसका जाना कितना अखरा था शकरआरा को। अच्छा हुआ, उससे दूरी की आदत बन गई, वरना शादी के बाद तो उसके बिना उन्हें ज्यादा बेकली होती। शकरआरा सोचते-सोचते सो गईं।

"अम्मी, खाना खाए बिना सो गईं?" कमाल उनके पास बैठा उनका बाजू हिला रहा था।

"बस, जरा झपकी-सी आ गई थी।" शकरआरा ने उठते हुए कहा।

"कहिए, क्या बात करनी थी?" कमाल बोला।

"तुम्हारे अब्बू आए?" शकरआरा ने पूछा।

"अभी नहीं।" कमाल ने जवाब दिया।

"लो, यह खत पढ़ लो।" खत कमाल को थमा शकरआरा ने जम्हाई ली।

"ठीक तो है, अम्मी! लड़का और उसका खानदान देख लेंगे। जरूरी छानबीन भी हो जाएगी।" कमाल ने खत पढ़ लड़के का फोटो देखा।

"ठीक है।" सुस्त-सी आवाज में शकरआरा ने कहा।

"आप कुछ फिक्रमंद लग रही हैं?" कमाल ने मां का चेहरा गौर से देखते हुए कहा।

"इतनी जल्दी सफिया की शादी मैं करना नहीं चाहती हूं। उसके जाने के बाद बिलकुल अकेली पड़ जाऊंगी।" उदास स्वर में शकरआरा ने कहा।

"अकेलेपन की कमी तो आपको दो साल बाद भी सताएगी।" कमाल हँस पड़ा।

"हां, मगर..."

"उसने बी.ए. कर लिया है। अब बेकार में घर बिठा उसकी उम्र बढ़ाने से तो कोई फायदा है नहीं।"

"अभी बच्ची है।" शकरआरा ने कहा।

"चलिए, मान लेते हैं। फिक्रमंद होने से अच्छा है, आप सीधे इनकार कर दें। कोई जोर-जबरदस्ती थोड़ी है।" कह कमाल कमरे से बाहर आकर आया से पूछने

लगा, "क्या पका है?"

"तुम इस वक्त घर में कैसे?" जमाल खां ने घर में दाखिल होते हुए पूछा।

"खुद तो आप घूमते रहते हैं। देखिए जाकर, अम्मी कितना परेशान हैं!" कमाल ने पिता को ताना।

"अच्छा! यह तो बड़ी हंगामाखेज खबर है कि वह आज घर में हैं। फिर तो परेशान होंगी ही।" जमाल खां कटाक्ष-भरे स्वर में बोले।

"समीना कहां रह गई? अगर पांच मिनट में नहीं पहुंची तो मैं खाना शुरू कर दूंगा। बड़ी जोर की भूख लग रही है।" कमाल ने बेचैनी से कहा।

"शुरू करो, बरखुरदार!" जमाल खां बोले।

कमाल ने खाना शुरू कर दिया। जमाल खां भी हाथ धोकर बैठे और खाना प्लेट में निकालने से पहले वह बोले, "कहां हो, भई? यहां कमाल सारा खाना खत्म किए दे रहा है!"

"पता नहीं मुझे घर में घुसते ही भूख क्यों लग जाती है!" कमाल ने कहा और काब से चावल निकाला।

"यहां खाने-पीने का माहौल है न।" जमाल खां ने बड़ी मीठी मुस्कान के साथ कहा।

"बिलकुल सही कहा आपने, क्लीनिक में तो कुछ हलक के नीचे उतरता ही नहीं है।" कमाल ने सिर हिलाते हुए कहा।

"मेरा इंतजार भी नहीं किया और बाप-बेटे ने खाना शुरू भी कर दिया।" शकरआरा ने कहा।

"आपकी बहू तशरीफ ले आई हैं। दोनों साथ खाना खाएं।" कहते हुए जमाल खां उठे।

"अम्मी! मुझसे खाना अभी नहीं खाया जाएगा। मतली-सी आ रही है, जी बिगड़ रहा है।" समीना ने पंखे के नीचे खड़े होते हुए कहा। वह पसीने में पूरी तर थी।

"नीबू दें नमक के साथ?" आया ने पूछा।

"नहीं, अभी कुछ नहीं।" समीना ने कहा और रूमाल से गरदन खुश्क की, फिर बालों से क्लिप निकाली।

शकरआरा की आंखों में अर्थपूर्ण भाव उभरा, मगर वह कुछ बोलीं नहीं।

"एक तो गरमी, ऊपर से रिक्शेवाले का पसीने में डूबा बदन। जब लू के थपेड़े चलते तो उसके बदन की बदबू सीधे मेरी नाक में घुसती। दिमाग चकरा गया, बड़ी

अम्मी!" समीना ने दीवान पर लेटते हुए कहा।

"बड़ी नाजुकमिजाज हो रही हो।" कमाल ने कहा।

"तुमको अंदाजा नहीं है, कमाल।" समीना ने इतना कह आंखें बंद कर लीं।

शकरआरा ने अपनी प्लेट में खाना निकाला। कमाल समीना के सिरहाने सोफे पर आकर बैठ गया और टी.वी. खोल दिया। समाचार था—

"गरमी से मरने वालों की संख्या दो सौ से बढ़कर ढाई सौ हो गई है। ये मौतें सूखे के कारण ज्यादा हुई हैं, क्योंकि पानी की कमी से ये सारे व्यक्ति अपने को कड़ी धूप से बचा नहीं पाए और..." इसी के साथ लाइट चली गई। टी.वी. बंद हो गया। कमाल उठकर अपने कमरे में चला गया।

"अब तबीयत संभल गई हो तो कुछ खा लो, वरना फिर गरमी में खाया भी न जाएगा।" शकरआरा ने कहा।

"आती हूं।" समीना ने उठकर वॉश बेसिन पर मुंह धोया और मेज की तरफ आकर कुर्सी पर बैठी।

खाने के बाद कमाल को छोड़कर तीनों शकरआरा के बेडरूम में जमा हुए। बड़ी का खत जमाल खां ने पढ़ना शुरू किया और फोटो देख कमाल की कही बातें ही दोहराई। समीना को लड़का पसंद आ गया था। उसका कहना था कि अगर कोई लखनऊ में ऐसा है, जो लड़के के खानदान का पता लगा सकता है तो उसे फौरन इत्तला कर दें।

"नकवी साहब तो हैं। मैं अभी फोन मिलाता हूं।" जमाल खां ने कहा।

"रहने दीजिए, अपने नकवी साहब तो एक दिन का काम साल-भर में पूरा करने वाले इंसान हैं। आप सीधे सूरज प्रकाश को फोन करें। वह तेज आदमी हैं। दो दिन में लड़के का शजरा हाजिर कर देंगे।" शकरआरा ने परफ्यूम पर्स से निकाल कान के पास लगाया।

"वह घामड़! अब तुम्हारा इसरार है तो फोन कर देता हूं।" जमाल खां ने शकरआरा को चिढ़ाने की गरज से कहा।

मगर शकरआरा लड़के की तस्वीर देखने में डूबी थीं। एकाएक चौंककर बोलीं, "समीना, देखो तो, इसका एक नथना बड़ा और एक छोटा है। कहीं साइनस की बीमारी तो नहीं है?"

"बड़ी अम्मी, आप भी!" इतना कह समीना खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"मेरी राय है कि इस लड़के की डिजिटल फोटो निकलवाओ या कंप्यूटर पर

डाल इसके चेहरे की हर चीज का एनलॉर्जमेट करा लो।'' जमाल खा मुस्कराते हुए बोले।

''क्या बात है?'' कमाल कमरे मे घुसा।

जमाल खा ने शकरआरा का शक बयान किया।

''तो ठीक है, अम्मी। मैं दिल्ली चला जाता हू। उसका पूरा चेकअप करा लूगा और खुद भी देख लूंगा।'' कमाल ने बड़ी सजीदगी से कहा। उसका लहजा कुछ ऐसा था कि खुद शकरआरा को हँसी आ गई।

''अम्मी, लड़के को रिजेक्ट करने की कोई सॉलिड वजह तलाश करें।'' कमाल ने धीरे से मां के कान में कहा।

शकरआरा कुछ बोलीं नहीं।

समीना और कमाल डबल बेड पर आड़े-तिरछे लेट गए। थोड़ी देर बाद वे तीनों सो गए। अधलेटी शकरआरा के सामने सफिया का बचपनवाला मासूम चेहरा उभर रहा था...

''मैं तो 'बुढ़िया के काते' वाले से शादी करूंगी।'' मिठाई का गोला खाते हुए सफिया ने कहा।

''कल तो तुम कह रही थीं कि आइसक्रीमवाले से शादी करूंगी।'' कमाल ने उसे याद दिलाया।

''तो मैं दोनों से शादी कर लूंगी, है न भेया।'' सफिया ने कमाल को इत्मीनान दिलाया।

''तब ठीक है।'' कमाल ने कहा और माचिस की डिब्बी में रखी अपनी बिलबहूटी को देखा...

शकरआरा का चेहरा बच्चों के बचपन की यादों से तरल हो उठा। वह बेचैनी से उठीं और सफिया के बचपन की तस्वीर निकालकर देखने लगीं।



खुरशीदआरा ने दिनों का हिसाब लगाया तो पता चला कि बदलू को उनके घर आए पूरे दस दिन गुजर गए हैं और आज पहली तारीख है, इसलिए बेहतर है कि उसको दस दिन की तनख्वाह दे दें। फिर पहली से तीस का हिसाब ठीक रहेगा। यह सब सोच, उन्होंने पर्स से नोट निकाल बदलू को पुकारा।

''यह लो अपनी तनख्वाह।''

''नहीं।'' बदलू ने इनकार में गरदन हिलाई।

''पकड़ो, अगर कम हैं तो बोलो।''

"हम पैसा नहीं लेंगे।" इतना कह बदलू आंगन की तरफ चला गया।

"नहीं लेता तो न ले। तुम बेकार परेशान हो रही हो, दुलहिन बी!" बुआ ने कहा और खरबूजे के सूखे बीजों को छीलने लगीं।

इस बात को कई दिन गुजर गए। एक दिन बदलू खुरशीदआरा के पास आकर खड़ा हो गया। खुरशीदआरा अपने काम में लगी रहीं। जब वह काफी देर खड़ा रहा तो उन्होंने पूछा, "क्या है?"

"हमारी तनख्वाह दे देतीं, बेगम साहब।"

"अच्छा, उस दिन तो बहुत बन रहा था।" बुआ ने उसे चौंककर देखा।

"काम है।" उसने धीरे से कहा।

"क्या काम है? बता तो!" बुआ अड़ गई।

"रहने दो, बुआ।" कहकर खुरशीदआरा ने पर्स से नोट निकाले।

"एडवांस मिल जाएगा?" बदलू ने धीरे से कहा।

'चींटी के पर निकलने लगे हैं।" बुआ चिढ़कर बोलीं और बदलू को घूरने लगीं।

खुरशीदआरा को भी उसके इस अंदाज से झटका-सा लगा; मगर वह कुछ बोलीं नहीं, खामोशी से रुपये थमाते हुए बोलीं, "यह लो!"

"जी, मैं दोपहर को बाजार जाऊंगा।" बदलू ने कहा।

"ठीक है।" खुरशीदआरा ने धीरे से कहा।

उसके जाने के बाद बुआ की बेचैनी शुरू हुई। उनको बदलू की आदत पड़ चुकी थी इसीलिए उन्हें डर लग रहा था कि बदलू लौटेगा या नहीं। जब दिल को यह भय कुछ ज्यादा ही घोंटने लगा तो वह बोल पड़ीं, "तुम भी, दुलहिन बी! हर एक पर एतबार कर लेती हो। मुझे तो यह लौंडा बड़ा घाघ लगता है, ऊपर से मनघुन्ना है। कैसी चालाकी से रुपये मार ले गया! अगर न लौटा तो फिर मैं भी कैसी खबर लेती हूं कि हमेशा याद रखेगा।"

बुआ की बात सुनकर खुरशीदआरा को हँसी आ गई। वह बुआ के दिल की कैफियत समझती थीं। उनके एक ही लड़का था, रहमत। उसको नौकरी दिलवा दी थी फौज में! छुट्‌टी-छुट्‌टी मां से मिलने आता जरूर था, मगर इससे ममता की प्यास थोड़े बुझती है। अल्लाह ने दो-दो पोते दिए हैं। बहू उन्हें लेकर साल-दो साल में बुआ से मिलने आ जाती है। ऐसी हालत में बुआ को बदलू में अपने पोते नजर आते हैं।

शाम के लगभग बदलू घर लौटा। उसके कपड़े धूल से अटे थे। उसकी हालत देख बुआ ने कमर पर हाथ रखा और उसे घूरने लगीं, फिर बड़े कटखने स्वर में बोलीं,

"क्यों, किसी से कुश्ती लड़कर आया है क्या?"

बदलू सिर झुकाए खड़ा रहा।

खुरशीदआरा को भी उसका हुलिया अजीब-सा लगा, मगर कुछ बोलीं नहीं।

बुआ ने आगे बढ़कर बदलू का बाजू हिलाया, "मुंह में जबान है या काटकर बेच आया है?"

"अब बुआ, उस पर यों गुर्राओगी तो डर के मारे उसकी बोलती बंद हो जाएगी।" खुरशीदआरा ने कहा।

बदलू ने मुंह खोला, फिर बंद कर लिया; फिर एकाएक बोल पड़ा, "तीन बाल्टी पानी चाहिए।"

"ले लो।" खुरशीदआरा इतना कह वहां से हट गई।

बदलू बाल्टी भर-भरकर गली के उस पार ले जाने लगा। बुआ दरवाजे पर खड़ी उसे आते-जाते देखती रहीं। बदलू का यह तौर-तरीका उन्हें कुछ समझ में नहीं आया। बदलू ने नहाकर कपड़े बदले और बावर्चीखाने में बिखरे बरतन खामोशी से समेटने लगा। बुआ का दिमाग चारों दिशाओं में दौड़ने लगा। वह बदलू से नाराज हो अपनी चारपाई पर जाकर लेट गई। बदलू डरा-डरा-सा वहीं जमीन पर बैठ गया। पंखे की घिर-घिर खामोश पड़े घर में गूंज रही थी।



सुबह-सुबह उठकर बदलू फिर चार-पांच बाल्टी पानी हौज से निकालकर बाहर ले गया। बुआ से न रहा गया तो उन्होंने खुरशीदआरा से कहा, "बीबी, तुम तो पूछ के देखो। मुझे तो निगोड़ा कोई जवाब ही नहीं देता है।"

"पूछती हूं।" खुरशीदआरा की भी जिज्ञासा जाग उठी थी। आखिर उन्हें पता तो होना ही चाहिए कि घर से इतना पानी कहां जाता है!

नाश्ते के बाद उन्होंने सिलाई की मशीन निकाली और बदलू के लिए नया कुरता-पाजामा सिलने लगीं। बेटों को खोने का गम आज भी उनके दिल के कोने में कभी-कभी टीस उठता है। बुआ दोपहर का खाना पकाकर उन्हीं के पास आकर बैठ गई थीं। बदलू घर की सफाई में व्यस्त था। दोपहर गरम थी। लू के झक्कड़ खिड़कियों के पल्लों को झंझोड़ रहे थे। बाहर गली में मलाई-बर्फवाला हांक लगा रहा था। थोड़ी देर बाद खरबूजेवाले की आवाज गूंजी तो बुआ अपनी जगह से उठ दरवाज़े पर गई। ठेलेवाला भीगी तौलिया सिर पर डाले हांक लगा रहा था।

"बोलो अम्मा, कितना किलो तौलूं?"

"मीठा है या फिर..."

"लो, एक फांक चक्खो तो।" खरबूजेवाले ने पहले से कटे हुए फल से एक फांक काट बुआ की तरफ बढ़ाई।

"रहने दो। तुम्हारा ईमान तुम्हारे साथ। पांच किलो तौल दो।" खरबूजा लेकर बुआ ने दरवाजा बंदकर लिया। गरम हवा ने उनके सारे बदन में चिनचिनी-सी दौड़ा दी थी।

"एक बज रहा है। खाना लगाएं?" बुआ ने पूछा।

खाना खाकर सब आराम करने लेट गए। आज दोपहर में बिजली गई नहीं थी। कमरा ठंडा था।

शाम-ढले खुरशीदआरा की आंख खुली। चाय पीकर उन्होंने खिड़की खोली और गली के नुक्कड़ का नजारा देखने लगीं। उन्हें अमलतास के पेड़ के नीचे ढेरों गायें और बकरियां खड़ी नजर आईं। उन्हें ताज्जुब हुआ। इससे पहले तो कभी ऐसा देखा नहीं। बदलू को पुकारकर कहा, "जाकर देखो तो जरा वहां इतने चौपाए क्यों जमा हो गए हैं?"

खुरशीदआरा के कहने पर बुआ भी खिड़की से झांकने लगीं।

"वहां पानी का हौदा रखा है न, सब पानी पीने जमा हुए हैं।" बदलू मुस्कराकर बोला।

इसका हँसता चेहरा पहली बार खुरशीदआरा ने देखा तो उन्हें बड़ा अजीब लगा। हैरत से पूछ बैठीं, "हौदा? हौदा किसने रखा?"

"मैंने।" बदलू की आंखें चमक उठीं।

खुरशीदआरा को पूरी बात समझते देर न लगी। उन्होंने बुआ की तरफ देखा। बुआ ने बदलू को देखा और बड़बड़ाईं, "इसके पेट में दाढ़ी है। मैं कहती थी न कि यह नासपीटा आंख से काजल चुराने वाला है। मनघुन्ना कहीं का!"

बुआ का ताव देख बदलू सिर झुकाए खड़ा रहा। खुरशीदआरा ने उनके चेहरे से टपकता दुलार देखा, फिर बदलू का चेहरा जिस पर एक ताजगी-सी छा रही थी।

7

चंदन हलवाई की दुकान पर भीड़ जमा थी। आपस में कहा-सुनी चल रही थी। कल रात एक शादी पार्टी में शाम के नाश्ते का आयोजन चंदन के जिम्मे था। उसने आदत

के मुताबिक यार-दोस्तों में बैठ भांग-मिली ठडाई चढ़ा ली थी। काम करने वाले लड़के दबी जबान से उसे कई बार मना कर चुके थे, मगर टेंट के पीछे महफिल जमी रही। लड्डू, समोसा, कचौड़ी—जो अतिथियों के लिए तैयार हुई थी, उसे पांचो मित्रो ने खा-पीकर खत्म कर दिया और मजे से चिलबिल के पेड़ों की छांव में जाकर खर्राटे भरने लगे थे। जिसके घर शादी थी उसने मौके की नजाकत समझ बाजार से सामान मंगाकर अपना काम चला लिया था; मगर आज आकर वह एडवांस रुपये वापस मांग रहा था।

"साले, हमका ज्यादा चालबाजी न दिखाओ, वरना जानत हो।" शादी के घर से आया आदमी बोला।

"दे देंगे, जल्दी क्या है?" चंदन ने सहज-सा उत्तर दिया।

"देख बे, यह झांसापट्टी नहीं चलेगी। गिनकर पूरे हजार रुपये निकाल।" दूसरे ने आस्तीन चढ़ाई।

"मान भी जाओ। कहा न, अभी पास मा धेला नहीं है। पांच दिन बाद ससुरी दुकान खुली है। तब से बीमार पड़े रहे।" चंदन ने माथे का पसीना अंगोछे से पोंछा।

"समधियाने के सामने किरकिरी करत बख्त खयाल नहीं आवा कि मित्र-मंडली के साथ रंगरेली मनाए का आखिर अंत का होइए?" पहले ने गरदन हिला तेवर पर बल डाला।

"अरे, माई-बाप, बोहनी का समय है। कुछ कमाय देव, तभी तो कर्ज उतरी।" चंदन ने हाथ जोड़ा।

"कहे देत हैं, परसों तक पाई-पाई अदा न भई तो देख लेना।" चंदन के घर से उसकी औरत और बच्चे बाहर निकल आए थे। वे लोग उन्हें सामने देख कुछ नरम पड़ गए। औरत का चेहरा अपमान से धुआं-धुआं हो रहा था। वह कुछ देर खड़ी रही, फिर अंदर जाकर लौटी और दुकान के तख्ते पर खड़ी हो धीरे से बोली, "भैयाजी, आपका कितना बकाया है?"

"हजार रुपया।"

"यह पांच सौ थामें, बकिया भी परसों तक चुकता होइ जाई।"

वे लोग पांच सौ रुपये लेकर चले गए।

चंदन का चेहरा उतर गया था। दोनों कारीगर लड़कों ने तेजी से समोसे में मसाला भरना शुरू कर दिया। चंदन की औरत कुछ देर पति को खड़ी घूरती रही, फिर साड़ी का आंचल आंख पर रख अंदर चली गई। चंदन ने गहरी सांस ली और कचौड़ी गरम तेल में डालते हुए अपने को धिक्कारा—

'साले, कब सुधरबो चंदनवा! हर बार कहते हो कि ज्यादा न पीबै, मगर फिर...'

उनके जाते ही तमाशा देखने वाले छंट गए। चंदन ने गरम कचौड़ियां थाल में डालीं और समोसे तलने को उठाए। उसका मन खराब हो गया था। ग्राहक आने लगे थे। लड़कों ने समोसे-कचौड़ी का थैला उन्हें थमाना शुरू कर दिया था। आज इमरती नहीं बनी थी, सो कई ग्राहक निराश लौट गए।

शाम ढलते-ढलते उसका सारा सामान बिक गया। उसने अंदर जा मावा और मैदा बरफी के लिए गूंधना शुरू कर दिया। बल्ब जल उठा था। रोशनी के रहते वह यह काम निबटाना चाह रहा था। उसके सारे बदन से पसीना पानी की तरह बह रहा था। अंदर दुकान में पंखे का होना, न होना सब बराबर। लड़कों ने दूध पीने वालों को कुल्हड़ में मलाई-पड़ा मीठा दूध थमाना शुरू कर दिया था। रंगीला और रसीला भी दुकान के सामने पड़ी बेंच पर आकर बैठ गए थे। गरमी के कारण उनके चेहरे का मेकअप फैल चुका था, जिससे उनका चेहरा मसखरों-सा लग रहा था।

छोटे लड़के ने अपनी हँसी दबा उनसे पूछा, "क्या चाहिए?"

"मलाई मारकर चाय, फटाफट! बहुत थक गए हैं।" रसीले ने अपना गला साफ करते हुए कहा और ढोलक पानी की टंकी से टिका, उसने पैर उठा बेंच पर रख लिया। रंगीला ब्लाउज से पर्स निकाल रुपये गिनने लगा। मुड़े-तुड़े नोटों और रेजगारी से उसका बटुआ भरा था।

"पूरे दो सौ बीस रुपये हैं।" रंगीले ने कहा और रुपये को सलीके से तह कर मोड़ा और वापस बटुए में रखा।

"गरीबों की बस्ती में और क्या मिलना था!" रसीले ने चाय का घूंट भरते हुए कहा।

"जल्दी दे।" रंगीले ने अपना गिलास मांगा और फौरन होंठों से लगा, घूंट भरा।

"अब जान में जान आई है।"

कुत्ते रेंगते हुए पास आकर खड़े हो दुम हिलाने लगे। रंगीला ने पास खड़े कुत्ते को पुचकारा और झोले से निकालकर उनकी तरफ चंद कचौरियां फेंकीं। तीनों कचौरियों पर झपटे। रिक्शे की घंटी सुन कुत्तों ने अपना बदन समेटा। रिक्शा उसकी दुम बचाता, पहिया काटकर आगे बढ़ गया। बत्तखें नाली के पास से कतार बांधे कुत-कुत-कफत करती आगे बढ़ रही थीं, फिर ठहरकर उन्होंने नाली में चोंच डाल पानी पिया और अपने घर के पत्थर पर पंजे रख अंदर दाखिल हो गईं।

पेड़ पर बैठे बंदर गली की चहल-पहल बड़े गौर से देख रहे थे। पता नहीं उन्हें

क्या सूझा, उन्होने छत पर पड़े ईटों के छोटे टुकड़ों में से एक टुकड़ा उठा, निशाना बांध रंगीले के माथे पर दे मारा। रंगीले ने 'हाय' कर माथा सहलाया और ताका तो बंदर ने दांत निकाल, खों-खों कर उसे चिढ़ाया।

उसकी इस हरकत पर रंगीले को ताव आ गया। दांत पीसकर बोला, "मादर चो..."

उसकी इस अदा पर दोनों कारीगर लड़के मुंह दबाकर हँसने लगे। बंदर पेड़ से उतर मकान के छज्जे पर आया और हाथ में दोना लिए जाती औरत पर झपट पड़ा। औरत चीख पड़ी और खरोंच लगे अपने हाथ को सहलाने लगी। उसकी आंखों में आंसू छलछला आए थे। वह मलाई-बर्फ अपने बेटे के लिए लेकर जा रही थी। उसकी हालत देख रसीले ने बंदरों को बेभाव की गालियां देना शुरू कर दीं।

"चैन से बैठो, अगर बैठना है यहां पर; वरना वानर सेना तोहार गुस्सा हमारे दुकान पर उतरिहैं।" चंदन ने कहा और बरफी का मसाला टीन की ट्रे पर फैलाया।

"चलो यहां से।" रंगीला उठते हुए बोला।

रसीले ने पैरों में चप्पल डाली और ढोलक उठा चलने लगा। बत्ती जल गई थी। गली किनारे नल पर सुंदर मोची बदन मल-मलकर नहा रहा था। पानी आज तय समय के बाद भी नल में आ रहा था। उसकी मस्ती देख आस-पास बैठे मजदूरों ने भी साबुन की बट्टी और अंगोछा लेकर बारी लगा ली थी। धोबी का ट्रांजिस्टर चालू हो गया था। मौसम के तेवर तीखे होने के बावजूद बताशेवाली गली मे जिंदगी अपनी पूरी गहमागहमी के साथ चालू थी।



लखनऊ से खबर आ गई थी कि लड़के का खानदान ठीक-ठाक है और लड़का भी बड़ा होनहार है। अब सवाल सफिया का था कि उसे लड़का पसद है या नहीं। सफिया उससे हँसती-बोलती थी। बहनों ने मा से कह दिया—सफिया को लडका पसद है। शकरआरा और जमाल ने तय कर लिया कि अब सफिया की डोली उठ जानी चाहिए। सो जब दिल्ली से लड़केवालों का पैगाम आया तो जमाल खां ने उसे हाथोहाथ लिया और अपनी रजामंदी जाहिर कर दी। इमाम जामिन की रस्म तो लड़के-लड़की के आने के बाद ही होनी थी, फिर भी दोनों खानदानों में फोन पर बातें अकसर होने लगीं।

शकरआरा ने जोड़े-जेवर, खाना-मेहमान सबकी लिस्ट बनाना शुरू कर दी थी। रात के खाने के बाद गई रात तक शादियों की बातें होतीं या फिर सफिया की शादी के इंतजाम पर चर्चा चलती। घर में एक खुशी-भरा माहौल छा गया था। शादी किस महीने में हो, इस पर बहस चलती। अगला मौसम बरसात का था। उसमें शादी का मतलब था, अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारना। इस तरह की बातें रोज होतीं, मगर दोहराई

जाने पर भी इन बातों से कोई नहीं थकता था। घर की मरम्मत और सफाई-पुताई अंदर-अंदर शुरू हो गई थी।

सफिया अगले माह की दो तारीख को आने वाली थी। लड़केवाले तीन को पहुंचने वाले थे। उनके आने से पहले शकरआरा घर को नया लुक देना चाह रही थीं। सोफे के कवर, परदे और कुशन बदल दिए गए थे। दर्जी घर पर ही काम कर रहा था। ऐसे मौके पर राबिया की अम्मा को बुला लिया गया था। वह घर से निकला बेकार का सामान अपने घर ले जाने और दर्जी पर नजर रखने के लिए बुलाई गई थीं। समीना उनसे चिढ़ने लगी थी—समीना के देखते ही वे बच्चा होने की दुआएं उसको देने लगती थीं।

"ऐ आया! चार बजने को आए, सिर दर्द से फटा जा रहा है। चाय तो पिला दो।" राबिया की अम्मी बड़ी अदा से कहतीं।

"आधा घंटा पहले ही तो दी थी!" आया की आंखें फैल जातीं।

"अरे, वह सब ठीक है, मगर शाम की चाय की बात ही कुछ और होती है।" इतना कह वह जम्हाई लेतीं और दर्जी को घूरकर कहतीं, "मशीन की बखिया ठीक काम कर रही है?"

"कपड़े सीते तीस साल गुजर गए हैं।" इतना कह दर्जी चुप हो जाता। उसे बड़ी बी की अहमियत का अंदाजा था। कुछ कहकर वह रोजी पर लात नहीं मारना चाहता था। मगर हाशिम को कोई डर न था। उसे जब मौका मिलता, वह डंक माने से बाज नहीं आता था।

शकरआरा घर पर थीं नहीं। राबिया की अम्मा ने झोले से कपड़ा निकाला और साबुन की टिकिया झोले में ढूंढ़ने लगीं। फिर परेशान-सी हाशिम से बोलीं, "भैया, जरा साबुन देना, नहाना है।"

"कल ही तो दिया था न!" हाशिम ने ताज्जुब से कहा।

"घर भूल आई। वही तो ढूंढ़ रही थी।" राबिया की अम्मा ने झोला उलटकर झाड़ा।

"दे देते हैं, मगर हिसाब देने के टाइम भूल मत जाना।" हाशिम ने चिढ़कर कहा।

"इतने बड़े घर में साबुन की बट्टी का हिसाब तुमसे कौन मांगेगा?" राबिया की मां हँसकर बोलीं।

"अच्छा, यह बताओ, तुम घर से नहाय के काहे नहीं चलतीं?" हाशिम ने सवाल पूछा।

"रास्ते मे पसीना निकलता है। अब क्या बदबूदार कपड़े पहनकर दिन गुजारू?" राबिया की अम्मा बोल उठीं।

"हां, मौज-मस्ती है तुम्हार' रहो चैन से, मगर कल साबुन नही मिलेगा, यह कहे देत हैं।" हाशिम ने रूखे स्वर से कहा और बाहर निकल गया।

"कहने को नौकर है, मगर रोब ऐसे गांठता है जैसे इस कोठी का मालिक हो।" राबिया की अम्मा बगीचे की तरफ बने गुस्लखाने की तरफ बढ़ गईं।



बदलू जब सब्जी खरीदकर बाजार से लौटा तो उसका चेहरा लटका हुआ था। सब्जी धोकर उसने पानी निथरने के लिए जाली के झाबे में रख दी, फिर वह बोतलों को समेटने लगा। पानी आने में अभी देर थी।

बुआ ने उसका उदास चेहरा देखकर कहा, "काहे सूखे पपीता बने खड़े हो? बाजार में किसी से लड़ाई-झगड़ा हुआ का?"

"नहीं...दो हौदा लाए थे। सड़क के परली तरफवाला कोई उठा ले गया।" बदलू रुआंसा हो उठा।

"आस-पासवालों से पूछेव कि कौन हरामखोर है, जो चौपायो का हिस्सा उठा ले गवा?"

"कोई कुछ बताता नहीं।" बदलू ने कहा।

"दिल छोटा न करों। हम ऐसी तरकीब बताएंगे कि गामा पहलवान भी हौदा न उठा पईहैं।" बुआ ने कहा और सब्जी काटने बैठीं। मुंह-ही-मुंह में वह कुछ बड़बड़ा रही थी।

पानी नल से गिरने लगा तो बदलू ने पानी भरने का काम शुरू कर दिया। रबर लगाकर क्यारियों में पानी दिया। फिर मुंह-हाथ धोकर चाय का पानी गैस पर रखा।

बदलू की और अपनी चाय प्याली में निकाल बुआ ट्रे ले कमरे में गई और खुरशीदआरा से बोलीं—

"खन्नाजी को फोन कर देव, दुलहिन बी, कि कल एक मिस्त्री भेज दें।"

"क्या फिर नाली टूट गई?" खुरशीदआरा ने किताब बंद करते हुए पूछा।

"न, बदलू जो दो हौदा लावा रहा, एक कोई रात के अंधेरे में उठा ले गया। अब सीमेंट लगाकर इकहरी ईट से मिस्त्री घेरा बना देगा तो हौदा अपनी जगह से हिलिए न।" बुआ ने कहा।

"यह तो अच्छा नहीं हुआ।" खुरशीदआरा ने कहा और केतली से चाय उड़ेली।

"हम अभी आते हैं।" कहकर बुआ बावर्चीखाने में गई और चाय की प्याली में चमचा डाल हिलाने लगीं। कुछ देर बाद उन्होंने पुकारा, "बदलू!"

दोनों ने चाय पी। बुआ अपने काम में लग गई। बदलू दो बाल्टी पानी गली के सामनेवाले हौदे में डाल आया। मैना का जोड़ा पंजों के बल चलता आया और उसने चोंच हौदे के किनारे डाल पानी पिया, फिर दोनों उड़कर अमलतास के पेड़ पर बैठ सड़क का नजारा देखने लगे। बीच में चीं-चीं करके जोड़ा शोर भी मचाता, जैसे सूचना दे रहा हो कि आओ, यहां पानी है। गौरैयों का झुंड उतरा। पहले नहाया, फिर पानी पीकर उड़ गया। कौआ कांव-कांव करता आया। उसने बड़ी सावधानी से अपनी आदत के अनुसार इधर-उधर ताका, फिर चोंच पानी में डुबोई और घूंट भरा। बकरियां अपने बच्चों के साथ गरदन हिलाती गली से निकलीं और हौदे के पास रुक गई। मुंह डाल सबने प्यास बुझाई और लौटकर जहां से आई थीं वहीं चली गई। कुछ देर हौदा खाली रहा, फिर गायों का झुंड रंभाता हुआ एक-दूसरे के पीछे सड़क पार करता आया और पानी पी वहीं सुस्ताने बैठ गया। सड़क पर गाड़ियां दौड़ रही थीं। वे उनकी रफ्तार देखती बैठी रहीं। शाम ढलकर रात के गले मिलने लगी तो वे उठीं और अपने-अपने ठिकाने को लौटने लगीं।



सफिया का जहाज दिल्ली उतरने वाला था। जमाल खां बेटी को लेने दिल्ली पहुंचे थे। शकरआरा का भी जाने का इरादा था, मगर वह घर के इंतजाम में लगी थीं। कल ही तो समधियानेवालों को आना था। सफिया को अपनी शादी की खबर कानोकान न थी। जब घर पहुंची तो उसे पता चला। पैर पटक-पटककर उसने घर सिर पर उठा लिया।

"मुझे अभी शादी नहीं करनी है। मुझे पढ़ना है।"

"ठीक है। शादी एम.ए. करने के बाद करना। अभी तो सिर्फ बात आई है; फिर तुम्हें लड़का पसंद भी तो है!" शकरआरा बोलीं।

"कौन लड़का?" सफिया ने ताज्जुब से आंखें झपकाई।

"सलमान, जो तुमसे सऊदी में मिला था।" समीना बोली।

"वह अहमक!" सफिया ने माथा पीटा।

"क्यों, अहमक कैसे? सुना, वहां तो खूब गप्पें मारती थीं।" शकरआरा बोलीं।

"अम्मी, आप भी कमाल करती हैं। किसी से बात करना और उसे पसंद करना,

इन दोनों बातों में काफी फर्क होता है।''

''ठीक है, लेकिन कल उसके घरवाले आ रहे हैं। उनको इस तरह मना करना अब मुनासिब नहीं है।'' जमाल खां ने कहा और परेशान-से उठकर अंदर चले गए।

''तुमने तो हमें बड़ी मुश्किल में डाल दिया है।'' शकरआरा परेशान हो बोलीं।

''मुझसे तो पूछा होता! मैं तो वहीं थी।'' सफिया रुआंसी हो बोली।

''एक बार फिर सोचना सलमान के बारे में। कोई जबरदस्ती थोड़े है कि शादी उसी से करो।'' समीना ने प्यार से उसके गाल थपथपाए।

घर में अनचाहा तनाव फैल गया। एकाएक खुशी फुलझड़ी की तरह जलकर बुझ गई थी। कमाल रात को जब घर लौटा तो बहन से बातें करने लगा। मां-बाप को भी उसने समझाया, ताकि वे अपना धैर्य न खोएं। यह गलती बहनों की थी, जो यह बात सफिया से छुपाई। एकाएक जब उसे पता चला तो उसकी प्रतिक्रिया सहज थी। उसकी जगह कोई और होता तो वह भी सकपका जाता कि जिस लड़के के साथ वह रोज मिल रही है उसके बारे में बहनों के ये खयालात हैं।

रात के खाने तक सफिया काफी नॉर्मल हो चुकी थी। उसने सऊदी की बातें बताना और खरीदा सामान दिखाना शुरू कर दिया था।

शकरआरा ने खुदा का शुक्र अदा किया और कल शाम के इंतजाम में लग गई।

''चंदन से कहना, समोसे में किशमिश जरूर डालेगा और सोंठ की चटनी लाजवाब बननी चाहिए। कल दोपहर तक बंगाली मिठाई और बिस्कुट जमाल सिविल लाइंस से लेकर आ जाएंगे...और हाशिम, तुम ध्यान रखना—क्रॉकरी चमकती रहे। एक धब्बा भी मैं गिलास पर पड़ा नहीं देखना चाहती हूं।''

''जी, बड़ी बेगम!'' हाशिम ने गरदन हिलाई।

''आया, शामी कबाब का मसाला खूब महीन पीसना, यखनी पुलाव बनना है। और हां, चंदन से दही के लिए भी कहना है, वरना वक्त पर मंगाओ तो अकसर दही खतम हो जाता है उसके यहां। मीठे में जर्दा ही पकेगा...पूड़ी नहीं, बल्कि रूमाली रोटी रसूल के यहां से आ जाएगी।'' शकरआरा अपना इंतजाम ठोंक-बजा रही थीं।

''तुम सूट कौन-सा पहनोगी, सफ्फो?'' समीना ने सफिया का वार्डरोब खोलते हुए कहा।

''पता नहीं, भाभी। अभी कुछ सोचा नहीं है।''

''मेहंदी के रंगवाला सूट तुम पर बहुत अच्छा लगता है।'' समीना ने सूट का

हैंगर निकालते हुए कहा।

"ठीक है, वही पहन लूंगी। वैसे तो गुलाबी भी अच्छा है।" सफिया ने धीरे से कहा।

"तो ठीक है, गुलाबी पहन लेना।" समीना ने हरा सूट अलमारी में टांग गुलाबीवाला निकाला।

"इस्त्री मैं कर लूंगी।"

"नहीं, मैं करती हूं। तुम आराम से लेटी रहो।"

"भाभी, आपने एकाएक पढ़ाना कैसे शुरू कर दिया है?"

"बस यों ही।"

"यह आपने बहुत अच्छा किया। सारे दिन आप घर में बोर होती थीं।" सफिया ने कहा।

"अपना जेबखर्च निकल आएगा।" समीना ने सूट पर आयरन घुमाया।

"भाभी, अपनी पहली तनख्वाह से आप मुझे क्या खरीदवाएंगी?" सफिया बच्चों की तरह खुश हो बोली।

"जो तुम कहोगी।"

"सोच के बताऊंगी!"

दोनों ननद-भावज काफी देर तक घुल-मिलकर बातें करती रहीं। सफिया और समीना के बीच खालाजाद बहनों का रिश्ता जब था तब भी सफिया को समीना बहुत प्यारी लगती थी। अब तो इकलौते भाई की वह पत्नी है। भावज के रूप में उसे पाकर सफिया को लगा था कि मुंहमांगी मुराद मिल गई है।



छुट्टी में जब रहमत घर लौटा तो मां से मिलने आया। बुआ ने उसके चेहरे की बलाएं ले उसे छाती से लगाया और चंद मिनट तक आंसू बहाती रहीं। रहमत का भी दिल भर आया था। भावना में भर वह सदा से दोहरानेवाला जुमला आज भी दोहरा बैठा, "अम्मा, घर चलो। कब तक पोतों-बहू से दूर रहोगी?"

"मैं यहीं ठीक हूं।" बुआ ने दुपट्टे से आंसू पोंछ कहा। उनके चेहरे पर कई तरह के भाव अपना जाल बुन रहे थे।

"सच अम्मा, अब इस घर की तुमने बहुत खिदमत कर ली। बहुत हुआ।" लड़का बोला।

"आखिरी खिदमत तो अभी बाकी है।" कहकर बुआ ने गहरी सांस ली और

बक्सा खोल नोटों की गड्डी बेटे को थमाई, जो उनकी साल-भर की कमाई थी।

"बच्चों की पढ़ाई में कमी न करना।" बुआ धीरे से बुदबुदाई।

"वह सब ठीक है, अम्मा, मगर तुम हमेशा मेरा मुंह रुपये देकर बंदकर देती हो। मैं इतना कमा लेता हूं कि बच्चों को पढ़ा सकूं। तुम्हें शायद यकीन नहीं आता।" उदास हो बेटा बोला और नोटों की गड्डी सामने रख दी।

"बुरा न मानो। मेरा मतलब यह नहीं था कि तुम्हारी कमाई में तंगी है, मगर ये रुपये भी हमेशा की तरह तुम्हारे ही हैं। इतने सालों में मां बदल थोड़ी जाती है।" इतना कहकर बुआ ने प्लास्टिक का एक थैला निकाला और बेटे को थमाया।

"यह क्या?"

"दुलहिन बी बाजार गई थीं, दोनों पोतों के लिए लाई हैं।"

"अम्मा, एक बात कहूं, बुरा तो नहीं मानोगी?"

"बोलो।"

"तुम इस घर के अहसान तले दबी हुई हो। सांस लेते भी डरती हो; मगर यह नहीं सोचतीं कि तुमने पूरी जिंदगी इन्हें दे दी।"

"तू उलटी-सुलटी बात कर रहा है। ये न होते तो मैं सड़क पर होती और तू भीख मांग रहा होता। इनके अहसान मेरे ऊपर हैं। इज्जत से रखा...वरना तेरे बड़े अब्बा ने जिस तरह मुझे दर-ब-दर किया था खेत के लालच में, उस वक्त मैं इतनी बड़ी दुनिया में कहां भटकती? तू पढ़ पाया, फौज में अच्छी नौकरी कर रहा है। तेरे बड़े अब्बा के तीनों लड़के क्या निकले? कहीं पहुंच न पाए। इसलिए बेटा! दुलहिन बी को अकेला छोड़कर मैं तुम्हारे घर आ जाऊं, यह इंसाफ न होगा।"

"इसका मतलब है कि इस जिंदगी में अहसानों का हिसाब बराबर न होगा।"

"हां, उनका पल्ला सदा भारी रहेगा। अब तेरे पास पक्का घर है, खेत और बाग हैं, दो बेटे हैं। मेरी खेती तो लहलहा उठी।"

"तुम्हारी बहू तुम्हें बहुत याद करती है।" लड़के ने उदास स्वर में कहा।

"जब तक दूर हैं, वह याद करेगी; मगर जिस दिन पास रहने लगूंगी, बरतन आपस में टकराएंगे, तब उसे शिकायत होने लगेगी।" बुआ ने इतना कहा और चुप हो गईं।

रहमत लेटा-लेटा सोचता रहा कि मां ने कितनी मेहनत से उसे पढ़ाया-लिखाया, शादी की और अपनी कमाई से मकान बनवाया। इस उम्र में भी अम्मा मुझे अपनी खिदमत का मौका नहीं दे रही हैं। वह मेरे बारे में नहीं सोचतीं कि उन्हें सुख देकर

मैं कितना निहाल हो जाऊंगा! मेरे भी कुछ अरमान हैं, कुछ सपने हैं। एक प्यास है जो कभी पूरी नहीं होती कि अम्मा के साथ एक छत के नीचे रहूं। आखिर यह प्यास कभी बुझेगी?

8

सलमान के घरवाले दो दिन ठहरकर लखनऊ लौट गए थे। सलमान की मां सफिया की भोली-भाली सूरत पर बुरी तरह फिदा हो चुकी थीं। उनका बस चलता तो वह इन्हीं दो दिनों में सफिया को रुखसत करा साथ ले जातीं।

शकरआरा को लड़के के मां-बाप में कोई नुक्स नजर नहीं आया। सीधे-सादे मिलनसार लोग थे। इत्तफाक ऐसा कि वे लोग भी रायबरेली से ही ताल्लुक रखते थे। अभी वहां उनका मकान मौजूद था जिसमें उनकी बूढ़ी मां रहती थीं। जमीन एक हो तो रिश्ते अपने-आप बन जाते हैं। वही हाल इन दोनों परिवारों का हुआ। पुराने मिलने-जुलनेवालों का बातों ही बातों में सिलसिला शुरू हुआ तो संबंध अपने-आप अपनी जड़ें तलाश करने लगा। सफिया को भी अपनी होने वाली सास अच्छी लगीं, मगर वह शादी के नाम पर भड़क जाती थी। इसलिए उससे किसी ने यह बात नहीं बताई कि इसी माह के अंत में शादी तय हुई है। उनके जाने के बाद सफिया अपने दोस्तों में मस्त हो गई। मगर जब उसकी सहेली की मां ने एक दिन उसे गले लगाकर कहा—

"बड़ी अच्छी किस्मत पाई तुमने, बेटी! इधर बी.ए. का इम्तहान दिया और उधर शादी तय। खुदा करे, मेरी सलमा की तकदीर भी बुलंद हो और उसके सेहरे के फूल खिलें।"

"किसकी शादी, आंटी?" सफिया ने चौंककर पूछा।

"तुम्हारी और किसकी! देखो तो कैसी भोली है मेरी चंदा!" सहेली की मां हँस पड़ीं और उन्होंने सफिया को गले लगाया। बाकी सखियां उसकी जान को आ गईं। उनको सफिया की बातों पर जरा भी विश्वास नहीं हो रहा था।

जब सफिया घर पहुंची तो गुस्से से भरी हुई थी। वह सीधे मां के कमरे में पहुंची और शकरआरा से सवाल किया—

"आपने मेरी शादी तय कर दी! शहर में यह बात हर जगह फैल गई और मुझे बताया गया कि बात टाल दी गई है!" सफिया का चेहरा तमतमाया हुआ था।

"अरे मेरी जान, ऐसा खानदान रोज-रोज नहीं मिलता। जो कहोगी वह पूरा

होगा। एम.ए. करना चाहती हो न, वे इस बात पर राजी हैं।'' शकरआरा ने दुलार-भरे स्वर में कहा।

''जाइए, मैं आपसे नहीं बोलती, आप मुझसे झूठ बोली हैं।'' सफिया मां को पल-भर देखती रही, फिर इतना कहकर मुड़ गई। उसकी आंखें छलक पड़ी थीं। सारा गुस्सा बेबसी बन आंखों से बहने लगा।

शकरआरा उठीं, फिर यह सोचकर बैठ गई कि जो भी गुस्सा उसके अंदर घुमड़ रहा होगा वह आंसुओं के रास्ते निकल जाएगा। अब सच तो वह जान ही गई है। बच्ची है। अपना अच्छा-बुरा नहीं समझती है। इसी शहर में पी-एच.डी. किए लड़कियां नौकरी तलाश कर रही हैं। न शादी हो रही है और न घर बसा पा रही हैं। बस घर में बैठे-बैठे डिग्रियों में फफूंद लग रही है। मैं पढ़ाई के खिलाफ नहीं हूं। यह काम तो शादी के बाद भी जारी रह सकता है—अगर दिल में उमंग हो, आगे बढ़ने की तमन्ना हो। आखिर कामनी ने अपना एम.ए. मेरे पास रहकर ही तो पूरा किया था, जब शादी के बाद उसका शौहर सऊदी लौट गया था। फिर वीजा मिला तो चली गई। यास्मीन को ज्यादा पढ़ने का शौक न था। वह घर-गृहस्थी में रच-बस गई। औरतें चाहें तो बहुत कुछ कर सकती हैं। इस बात को सफिया नहीं समझती है। अभी बच्ची है, नादान है।

सफिया से छुपाकर शादी की जो तैयारी पिछले कई दिनों से चल रही थी, अब वह धूम-धड़ाके से खुलेआम होने लगी। कमाल के सिर पर से भी जिम्मेदारी का बोझ उतर गया कि उसे बहन को शादी के लिए मनाना है। कई दिनों तक सफिया रूठी-रूठी रही, फिर धीरे-धीरे पहले की तरह हो गई। उसने अपनी किसी दोस्त के कान में बुंदे देखे थे, जो उसे बहुत पसंद आए थे। यह जानकर उसे ताज्जुब हुआ कि वह सुनार छोटी खाला के घर से कुछ दूरी पर रहता है। शकरआरा का लेन-देन तो सीधे काशी ज्वेलर्स से था, मगर कोई जेवर पसंद आ गया तो नए सुनार से भी जेवर बनवा लेती थीं। हाशिम को भेजकर उन्होंने पन्ना सुनार को बुलाया।

वह शाम को अपनी डिजाइनवाली किताब लेकर पहुंच गए।

''ये झुमके कैसे लग रहे हैं?'' शकरआरा ने किताब के पन्ने पर उंगली रखी।

''अच्छा है। जरा आगे पलटिए, देखें तो और क्या-क्या डिजाइनें हैं?'' सफिया ने कहा और गौर से झुमके देखने लगी।

''अम्मी, मुझे वही डिजाइन चाहिए जो मुझे पसंद आया है, बस, लाल नग नहीं लगवाने हैं।''

''दूसरों की पसंद आई चीज की हू-ब-हू नकल करना कोई अच्छी बात नहीं है।'' शकरआरा बोलीं।

''यह कैसा है?'' एकाएक सफिया ने एक झुमका पसंद किया और मां को दिखाया।

''फर्स्ट क्लास डिजाइन है, बहू रानी! मैं डिट्टो इसकी नकल बना दूंगा, आप चिंता न करें।'' पन्ना सुनार ने गरदन हिलाई।

''लें, शरबत लें।'' शकरआरा इतना कह डिजाइन देखने लगीं।

''बस कृपा है आपकी। चलते हैं, धन्यवाद।'' पन्ना सुनार उठ गया।

''कमाल है, पन्नालालजी! शादी का घर और बिना मुंह मीठा किए जा रहे हैं! कम-से-कम यह मिठाई तो लें।'' शकरआरा ने प्लेट आगे बढ़ाई।

''मैं जी, बाहर कहीं खाता-पीता नहीं हूं। आप बुरा न मानें, मगर मैं आदत से मजबूर हूं।'' पन्नालाल के चेहरे पर संकट-भरे भाव उभरे। उन्होंने दोनों हाथ जोड़ दिए।

''कोई बात नहीं, मगर शादी में जरूर आइएगा।'' शकरआरा ने कहा।

''नमस्ते, धन्यवाद!'' पन्नालाल इतना कहकर उठे और किताब बगल में दबाए कुछ तेज चाल से आगे बढ़े।

''मेरे झुमके बहुत अच्छे बनाइएगा!'' सफिया की बात सुन पन्नालालजी जाते-जाते ठहरे, फिर मुस्करा उठे और धीरे से गरदन हिलाई।

हाशिम पन्नालाल के साथ गेट से बाहर निकला और आगे बढ़कर उसने फेरीवाले को रोका तथा उससे मोल-भाव करने लगा। जैसे ही राबिया की अम्मा का रिक्शा गेट पर जाकर रुका, हाशिम की आंखें चमक उठीं, चेहरे पर शरारत नाच उठी।

सौदा लेकर वह तेजी से मुड़ा और राबिया की अम्मा के पास जाकर बोला, ''बहुत दिन बाद आई?''

''जब आती थी तो आंख की किरकिरी बन गई थी। न आने पर जाने क्यों मेरी याद सता रही है!'' राबिया की मां ने रिक्शेवाले को पैसे देते हुए कहा।

''रोज आने वाला आदमी एक दिन न आए तो उसकी कमी खलती तो है।'' हाशिम बोला।

''ऐ, जबान संभालकर बात करो। मैं रोज आनेवालियों में से नहीं हूं। जब बड़ी बेगम खासतौर से बुलाती हैं, तभी आती हूं। आज तो दिल घबराया, सो खैरियत लेने आ गई; मगर तोहार कलेजा काहे बरत है?'' राबिया की मां झुंझला पड़ीं।

''हमार कलेजा काहे बरे लगा? हम तो उलटा तुमका देखकर खुश होत हैं कि राबिया की अम्मा आय गई हैं, अब घर का बेकार का सामान किनारे लग जाई।''

इतना कह हाशिम तेजी से गेट खोल, बरामदे की सीढ़ियां चढ़, अंदर गायब हो गया।

राबिया की अम्मा ने खूनी नजरों से उसे जाते देखा और कचकचाकर कोसा, "तेरी जवानी माटी मा मिले! जनाजा उठे तो कोई तोका कांधा दे वाला न मिले! जैसे मुझ बेवा का दिल दुखाता है वैसे तेरी मां का दिल दुखे।"

राबिया की अम्मा कुछ पल बरामदे की सीढ़ी पर बैठ सोचती रहीं कि इस मुरदार हाशिम की शिकायत सीधे बड़ी बेगम से आज कर ही दें या सब्र कर मौके का इंतजार करें और ऐसा मजा चखाएं कि सारी जिंदगी कमबख्त भूल न पाए। उन्हें सब्र करना ही ठीक लगा। चेहरे पर छा गई खिसियाहट को उन्होंने काबू किया और लौंग-छालिया मुंह में डाल मुस्कराती हुई घर में दाखिल हुईं।

"बड़ी बेगम साहिबा! मैं राबिया की अम्मा..." ऊंची आवाज में वह इत्तला दे, बावर्चीखाने के सामने पड़े मोढ़े पर जाकर बैठ गई।

आया ने उन्हें देख मुंह बनाया फिर मसाला पीसने लग गई।

"अरे राबिया की अम्मा, आप कब आईं?" सफिया ने उन्हें बैठा देख पूछा, फिर ऊपर छत पर जाने वाले जीने पर चढ़ने लगी, जहां समीना-कमाल पहले से बैठे थे। सफिया ने ऊपर जाकर समीना को बताया कि 'चटरबाकस' आ गई हैं। सुनकर समीना के चेहरे पर नागवारी उभरी। दोनों को यह औरत आफत की पुड़िया लगती थी, मगर शकरआरा के आगे दोनों मजबूर थीं।



बदलू की दिनचर्या में कोई फर्क नहीं पड़ा था, मगर पानी की तलाश में आती गायों ने जरूर ट्रैफिक में विघ्न डालना शुरू कर दिया था। जब तक वे सड़क पार न कर लेतीं तब तक लोगों को अपनी सवारी रोकनी पड़ती थी। दिन में यह रुकावट दो-तीन बार होती। गरमी थी। जानवरों को प्यास लगना जरूरी था। यह सिलसिला आराम से चल रहा था। बस, एस.एस.पी. साहब की गाड़ी जाने कैसे ब्रेक लगाते-लगाते एक बछड़े को कुचलते-कुचलते रह गई। साहब की कालर लगी गर्दन में झटका लगा तो उनके तेवर खिंच गए। बाकी गायों को चोट नहीं आई, मगर सिपाही डंडा घुमाता इन गायों के मालिक की खबर लेने पहुंच गया, जिसने चौपायों को सड़कों पर स्वतंत्र छोड़ दिया था।

पता लगाते-लगाते सिपाही को यह भी खबर मिली कि यह सारी कारस्तानी बदलू नामक लड़के की है जिसने पानी का हौदा रखकर इन गायों को भटकाया है। पहले वे मोहल्ले में रहकर केवल गलियों के चक्कर काटती थीं। वहीं घूमती-फिरती थीं। चरना और प्यास बुझाना सब अपने ठौर पर करती थीं; मगर उस छोकरे ने सभी

चौपायों को बरबाद कर दिया है। सिपाही को सबने अपनी जान छुड़ाने के लिए ऐसी पट्टी पढ़ाई कि वह डंडा घुमाता पहुंच गया बकरीवाली गली की तरफ। इत्तफाक कहिए कि उसी समय बदलू हौदे में पानी डाल रहा था। आस-पास बकरियां में-में करती खड़ी थीं। एक गधा भी जाने कहां से भटकता हुआ आज उधर पहुंच गया था। हौदा भर चुका था। बदलू ने प्यार-भरी आवाज मुंह से निकाली—च-च-च।

सिपाही कमर पर हाथ रखकर दृश्य देख रहा था। बकरी, गधा और चिड़ियां हौदे से पानी पीने लगे। सिपाही कुछ सोचकर आगे बढ़ा और बदलू के पास जाकर खड़ा हो गया। धूप सीधी इन दोनों के सिरों पर पड़ रही थी। पसीना माथे से गरदन की तरफ बह रहा था। सारा बदन चींटियों के काटने जैसा चुनचुना रहा था। सिपाही ने आव देखा न ताव, सीधे गरमी बदलू पर निकाली। उसका कॉलर पकड़ झिंझोड़ा।

"क्यों बे, यह हौदा तूने रखा है? तेरा ही नाम बदलू है?"

"जी।" बदलू इस अचानक हमले के लिए तैयार न था सो भौंचक हो सिपाही को ताकने लगा।

"जानता है, तेरे कारण एस.एस.पी. साहब की कार लैंपपोस्ट से टकरा गई थी!" इतना कह सिपाही ने बदलू के कूल्हे पर डंडा जमाया।

"मगर...हम..." बदलू उसका यह अंदाज देख चकरा गया था। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि किस बात की सजा उसे मिल रही है।

"बोल, यहां हौदा रखेगा? किसकी इजाजत से यहां हौदा रखा है?" सिपाही डंडे बरसा रहा था और अपना सवाल दोहरा रहा था।

बदलू डर गया। दर्द से बिलबिला उठा। यह सब देख बेचारी बकरियां अपने बच्चों के संग भागीं। उनके पीछे ढेचूं-ढेचूं करता गधा भी। चिड़ियां पंख फड़फड़ाकर उड़ गईं। राहगीर यह तमाशा देख रुक गए। कुछ बीच-बचाव करने आगे बढ़े।

मोहल्ले के बच्चे गोली खेलना बंद कर बदलू को कुछ पल पिटता देखते रहे, फिर दौड़कर गली में गए और दरवाजा पीट-पीटकर उन्होंने सारा माजरा बुआ को कह सुनाया। बुआ बदहवास-सी दरवाजा खुला ही छोड़ सड़क की तरफ भागीं तो देखा, बदलू जमीन पर गिरा रो रहा है, बाल्टी औंधी पड़ी है और सिपाही डंडा दिखाकर बदलू को चेतावनी दे रहा है।

"साले, फिर यह काम किया तो अच्छी खबर लूंगा। चला है धर्मात्मा बनने!"

"ऐ सिपाहीजी! इसे क्यों मारा?" बुआ की आंखें अंगारे बरसा रही थीं।

"तुम उसकी कौन लगती हो?" सिपाही ने भौहें सिकोड़ीं।

"लगूं, तभी बोलूं! पहले यह बताओ, तुमने इस पर हाथ क्यों उठाया?" बुआ

ने बदलू के कपड़े झाड़ते हुए पूछा।

"इसकी इस हरकत से यहां गौशाला बन रहा है। ट्रैफिक जाम हो जाता है और दुर्घटना घटने लगी है। किसी की मौत हो गई तो?" सिपाही का स्वर ऊंचा था।

"तेरे मुंह में खाक! मरने वाले अपनी मौत से मरते हैं। किसी को पानी पिलाने से नहीं। जाकर पूछो उन जालिमों से कि चौपाये रख लिए, दूध निकालते हैं, मगर चारा-पानी के लिए हंका देते हैं बाहर। वाह रे वाह! धोबी पर बस न चले, गधे का कान उमेठो।" बुआ का दिमाग भन्ना उठा था।

खिड़की से खुरशीदआरा ने झांका, मगर जब कुछ न दिखा सिवाय बुआ के चिल्लाने के तो वह दरवाजा खोलकर बाहर निकलीं। भीड़ जमा हो गई थी। उन्हें देखकर कुछ लोग पीछे हटे। वह आगे बढ़ीं तो देखा, सिपाही के सामने बदलू के साथ बुआ खड़ी हैं।

सब कुछ जानकर खुरशीदआरा का भी पारा चढ़ गया। सिपाही को फटकारती हुई बोलीं, "अभी मैं एस.एस.पी. साहब को फोन करके पूछती हूं कि एक लड़के को इस तरह मारने का ऑर्डर उन्होंने दिया था?"

इतना कह खुरशीदआरा मुड़ीं। उन्हीं के पीछे बुआ और बदलू भी। सिपाही समझ गया कि आज गलत फंसे। चाय पिला और पान का बीड़ा खिला ग्वालों ने उसकी शामत बुला दी है। वह परेशान-सा आगे बढ़ा और पैंतरा बदल बोला, "सुनिए मैडम! मेरी मजबूरी थी। ड्यूटी भी तो मुझे करनी पड़ेगी या नहीं?"

"आप ड्यूटी के बहाने आम लोगों पर कितना जुल्म करते हैं, कभी सोचा है? वे बेचारे डरकर चुप हो जाते हैं, मगर मैं खामोश नहीं रहूंगी। एक नेक काम करने वाले लड़के को शाबाशी देने के बजाय आपने उसकी पीठ पर नील डाल दिए।" खुरशीदआरा ने कहा।

"सॉरी मैडम! मेरे भी बाल-बच्चे हैं। मैं अपनी गलती मान रहा हूं, माफी मांग रहा हूं। अब किस्सा यहीं खत्म करें।" सिपाही गिड़गिड़ाता घर तक पहुंच गया। वह समझ चुका था कि उसने गलत आदमी पर हाथ डाला है। बड़े घर का नौकर है...लड़के का तो सचमुच कोई अपराध न था। अब गया मैं धारोधार!

"छोड़ दीजिए, बीबी।" तहमत बांधे एक अधेड़ ने कहा।

"माफी तो मांग रहे हैं सिपाहीजी।" पैंट-कमीजवाला बोला।

"हटाएं, किस्सा खत्म करें।" बुजुर्ग-से एक सज्जन ने कहा।

इस तरह की आवाजें आस-पास खड़े लोगों के बीच से उठने लगीं, जो गली के पीछे रहते थे। बात को बढ़ता देख खुरशीदआरा ने भी पिंड छुड़ाना बेहतर समझा,

सो दरवाजे में दाखिल होने से पहले बोलीं, "जाइए, मगर याद रखिए! फिर किसी बेगुनाह पर यूं डंडे न बरसाइएगा।"

"धन्यवाद मैडम!" सिपाही ने हाथ जोड़ा और माथे का पसीना पोंछा।

"बड़े लोग हैं, माफ कर दिया। अब सिपाहीजी, सरपट भागो ई गली से।" किसी ने कहा और इसी के साथ भीड़ छंटने लगी।

बुआ ने अंदर आकर गैस जलाया और कपड़े का फाहा बना बदलू की चोट-खाई पीठ को सेंकने लगीं। बदलू के आंसू खुश्क हो गए थे, मगर चोटों में टीस उठ रही थी। बुआ जब पीठ सेंक चुकीं तो क्रोध में बोलीं, "देखना, इसके हाथ में कोढ़ होगा। बेगुनाह को सताना अच्छी बात नहीं है।"

"इनका खुदा कुछ नहीं बिगाड़ता।" हँसकर खुरशीदआरा ने कहा और खुद बावर्चीखाने में जा दूध गरम कर, उसमें हल्दी मिलाकर बदलू को पीने के लिए दिया।

"इस शहर में नेकी का काम करना अब गुनाह हो गया। पहले हौदा चोरी गया, दूसरे, गधे की लादी की तरह लड़के को पीट दिया।"

"अब गुस्सा थूक दो, बुआ! जो होना था सो हो गया।" खुरशीदआरा उनकी बड़बड़ाहट से उकताकर बोलीं।

"गरीब तो बोल-बतिया के ही अपनी भड़ास निकालता है, दुलहिन बी!" बुआ इतना कह बदलू का बिस्तर ठीक करने लगीं। उनका गुस्सा देख खुरशीदआरा को उन पर हँसी आने लगी कि यह औरत कब से लगातार दूसरों को प्यार बांटती आई है। खुदा ने इसे मुहब्बत का कौन-सा खजाना बख्शा है, जो अभी तक खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा है। अब बदलू पर प्यार निछावर हो रहा है।



रत्ना की तबीयत आज सुबह से कुछ ठीक नहीं थी। दोपहर तक तो उसका हाल बेहाल-सा हो गया। गरमी के मारे सिर चकरा रहा था। नल में पानी न था। गगरा-बाल्टी सब सूखे पड़े थे। बिजली कल रात से गई हुई थी। उसी के चलते पानी भी बंद था। रत्ना को घर बड़ा उजाड़-सा लग रहा था। पानी नल से नहीं गिरता तो लगता है, हर तरफ सूखा पड़ गया है। दोपहर तो उसने बिना कुछ खाए गुजार दी थी, मगर रात के लिए कुछ न सही तो दाल-भात तो उबालना ही था। कुछ सोचकर उठी और पड़ोस का दरवाजा खटखटा उनसे आधी बाल्टी पानी मांगा।

पड़ोसिन उसकी मांग पर अजीब तरह से हँस पड़ी।

"आज तो सोने से भी ज्यादा मूल्यवान् जल होय गवा है...देखती हूं।" इतना कह वह अंदर गई, फिर पीतल का छोटा-सा गगरा उठाए रसोई से बाहर निकली।

रत्ना का सिर चकरा रहा था। वह वहीं दरवाजे के पास बैठ गई।

"का भवा! जी अच्छा नहीं है का?" उसने गगरे का पानी बाल्टी में डालते हुए पूछा।

"चिंता की कोई बात नहीं, चाची। बस जरा चक्कर-सा आ गया था।"

"इस गरमी में स्नान किए बिना तो यह हाल होइओ करी। लाओ, हम बाल्टी पहुंचाए देते हैं।" पड़ोसिन ने हमदर्दी से कहा और आंचल से चेहरे, गरदन का पसीना पोंछा।

"नहीं चाची, हम चले जाएंगे। सुबह तो जैसे-तैसे परांठा-सब्जी बना दी थी। रसोई भी तब से जूठी पड़ी है। अब सोच रहे हैं कि दाल-चावल तो उबाल लें।" रत्ना ने दीवार का सहारा ले उठते हुए कहा।

"ध्यान से।" पड़ोसिन इतना कह रत्ना को उसके घर की चौखट तक छोड़ने आई।

रत्ना बाल्टी आंगन में छोड़ चकराती-सी पलंग पर आकर लेट गई। काफी देर तक बेसुध पड़ी रही। धूप की तेजी कम हुई। कमरे में हल्की-सी छाया फैल गई, जिससे रत्ना अपनी सुध में लौटी। बिजली अभी तक नहीं आई थी। उसने आंगन में जाकर बाल्टी उठाई और रसोई में आकर, दाल धोकर चढ़ा दी और चावल बीनने बैठ गई। उसके फेंके धान के दानों को चुगने गौरैया आ गई थीं, उन्हें देख वह हॅस पड़ी—कैसे इन्हें खबर लग जाती है? उसने बचे पानी से चावल धोया एवं हरी धनिया उठा सिल की तरफ बढ़ी और निराश हो उठी। रात को उसने हाथ-पैर में लगाने के लिए मेहंदी पीसी थी और राकेश के पुकारने पर वह जूठी सिल उसी तरह छोड़ उठ गई थी। इस समय उस सिल को धोने के लिए पानी कहां से लाए? उसने नल की तरफ देखा, वह वैसे ही सूखा मुंह लिए खड़ा था। झुंझलाई-सी रत्ना उठी और उसने उफनती हांड़ी का ढक्कन जरा-सा सरका दिया।

दरवाजे की कुंडी बज उठी। रत्ना ने मन-ही-मन कहा—इस समय कौन हो सकता है? जाके दरवाजा खोला तो सामनेवाले घर की लड़की भगौना लिए खड़ी थी, "भाभी, पानी होगा? चाय बनानी है, मेहमान आए हैं।"

"पानी?" रत्ना का मुंह उतर गया। उसने इनकार में सिर हिला दिया।

"अब और किसके घर जाएं?" लड़की परेशान हो जैसे अपने आपसे पूछने लगी।

तभी एक लड़का उसके घर से निकलकर उसे पुकारने लगा, "कुट्टी, आ जा, पेप्सी मंगा ली है।"

"आई!" वह तेजी से गली पार कर भागी।

रत्ना को इस समय पानी का न रहना अखर गया। मन खराब हो उठा। उसने दुखते माथे को सहलाया और दरवाजा बंद कर वापस लौट ही रही थी कि कुंडी खड़क उठी। उसने आगे बढ़ दरवाजा खोला। मुकेश पसीने से नहाया सामने खड़ा था।

"ऑफिस से निकला था, भाभी, यह सोचकर कि घर जाते ही नहाऊंगा; मगर मुहल्ले में घुसते ही पानी की हाय-हाय सुनाई पड़ गई।"

"मेरा भी सिर घूम रहा है।" रत्ना ने कहा और सोचने लगी कि अगर देवर ने चाय या पानी मांग लिया तो वह कहां से देगी।

"भैया अभी नहीं लौटे क्या?" मुकेश ने पसीने से भीगे कपड़े उतारते हुए कहा।

"नहीं।" रत्ना ने दाल को घोंटते हुए कहा।

"दरवाजा बंद कर लो।" मुकेश ने कहा।

"कहां चल दिए?" रत्ना ने पूछा।

"पानी की बोतल खरीदकर लाता हूं।" मुकेश ने जवाब दिया।

"स्टेशन तक जाओगे? फिर बोतल महंगी कितनी पड़ेगी!" रत्ना ने इतना कहा जरूर, मगर उसका मन खुद साफ, ठंडा पानी पीने के लिए मचल उठा। उसे लगा, उसका गला सूख रहा है।

"महंगी हो या सस्ती पड़े, आखिर गला तो तर करना पड़ेगा।" इतना कह मुकेश बाहर निकल गया।

गली में अंधेरा बढ़ रहा था। दुकानदारों ने कुछ-न-कुछ जला रखा था, जिससे गली में टिमटिमाहट-सी नजर आ रही थी।

रत्ना ने चावल चढ़ा दिया और चारपाई को आंगन में घसीट लाई। कुछ देर सुलगते आंगन में बैठी रही, फिर बढ़ते अंधेरे को देख रसोई में जाकर मोमबत्ती जला आई। चावल बन चुका था। उसने गैस बुझाई और अखबार उठा हवा करने लगी। सारी पीठ अंधौरी से भर गई थी। उसके सिर का दर्द बढ़ रहा था। कान के पास बड़ी तेज टपकन हो रही थी। अंधेरे में कमजोर-सी बिल्ली की म्याऊं सुनाई पड़ी। रत्ना ने फटे दूध का भगोना लाकर नाली के पास उलट दिया। बिल्ली महक पाते ही पहुंच गई और सपड़-सपड़कर दूध चाटने लगी। उसका मन कर रहा था कि राकेश आएं और वह फत्तू चायवाले के यहां से चाय मंगाकर पिए।

राकेश से पहले मुकेश आ गया।

"लो भाभी, जितने गिलास पानी के चाहो, पियो।" उसने चार बोतलें झोले से निकालते हुए कहा।

"कितनी ठंडी है!" रत्ना ने बोतल अपने चेहरे पर लगाई। उसे सिर की टपकन कम होती महसूस हुई।

मुकेश पानी पीकर आया था, इसलिए आराम से पलंग पर लेट गया।

'ऐसा सुख हमें रोज क्यों नहीं मिलता?' रत्ना ने मन-ही-मन कहा और बोतल खोल घूंट भरा। उसका सारा शरीर तरावट से भर गया। एक ताजगी-सी अपने चारों तरफ फैलती महसूस हुई। उसने चुल्लू में पानी ले सिर पर डाला। बालों के बीच से रेंगते पानी ने एक सिहरन-सी बदन में दौड़ा दी। दूसरा चुल्लू भर उसने मुंह पर छींटा मारा। ठंडा पानी जलते चेहरे से गिर गरदन से होता हुआ सीने पर बहा। सुख की असीम अनुभूति से उसका अंग-अंग पुलक उठा। उसने बिना सोचे-समझे बाकी बचा पानी गरदन के आगे-पीछे उड़ेल लिया। उसे लगा कि वह ठंडे पानी से भरी किसी नदी में तैर रही है। पानी की लहरें उसके बदन से टकराती बन-बिगड़ रही हैं और उसका रोम-रोम अपनी प्यास बुझाता उस नदी के जल में अठखेलियां कर रहा है।

9

अंदरसेवाली गली में फत्तू चायवाले की दुकान पर आज कई दिनों बाद रौनक थी। दरअसल, यह चायखाना मोहल्ले के रिटायर बूढ़ों का अड्डा था, जहां बैठकर समाचार बांचा जाता और अहम मुद्दों पर धुंआंधार बहसें होती थीं। इसलिए इधर-उधर से कुछ जवान भी आकर बैठक लगाते, ताकि बिना पढ़े दुनिया-जहान की खबर रखें। इस समय सरकारी स्कूल के रिटायर अध्यापक नदियों को आपस में मिलाने के विषय पर भाषण दे रहे थे, जिसको सब बढ़े ध्यान से सब सुन रहे थे।

"भई, मैं कहता हूं कि सड़क का जाल पूरे भारत में फैलाया जा सकता है तो इन बड़ी नदियों को आपस में क्यों नहीं जोड़ा जा सकता? सर आर्थर कॉटन, जो पेशे से इंजीनियर थे, उन्हीं की यह जोरदार योजना थी। दूसरे इंजीनियर भारत के ही हैं डॉ. के.एल. राव, जो यह मानते थे कि इससे कम जलवाले क्षेत्र भी सींचे जा सकते हैं। इस योजना पर छप्पन हजार करोड़ रुपये खर्च आने का अनुमान है या इससे भी थोड़ा ज्यादा, तो महाशय, हमारे गांव-बस्तियां फिर से लहलहा उठेंगी और सबको जल का समान वितरण मिलेगा। मैं तो कहता हूं, सरकार को कल की जगह आज ही काम शुरू करवा देना चाहिए।"

"बाबूजी, पानी जाने वाला है। आयके नहा लो!" उनके बेटे ने छत से उन्हें पुकारा।

''आ रहे हैं, भई। मैं नहाना भी तो नहीं टाल सकता हूं। आखिर पूरे चार दिन बाद पानी आज आया है।'' यह कह वह कहकहा मारकर हँस पड़े और बैठे लोग विचारमग्न हो उठे कि क्या वास्तव में नदियों का जाल पूरे देश में बिछ सकता है और तब जगह-जगह पानी उचित मात्रा में मौजूद होगा?

''हमका तो मास्टरजी की बात पर विश्वास नहीं हुआ। दुइ नदियन के इ शहर मा पानी की किल्लत देखो।'' खिलौनेवाले ने कहा और चाय के पैसे अदा कर अपनी साइकिल की तरफ बढ़ा, जिस पर आगे-पीछे खिलौनों की पूरी दुकान सजी थी। उसकी बात सुन कुछ ने गरदन हिलाई और बाकी सोच में डूब गए।

गली में इस समय उत्सव-सा व्याप रहा था। औरतें नहा-धोकर, आंगन, चबूतरे पर बैठी पैरों में आलता लगा रही थीं। मांएं बेटियों के सिरों में कंघी कर उनके चिल्लाने के बावजूद कस-कस के चोटियां गूंथ रही थीं। धुले कपड़े छत-आंगन की अलगनी पर फैले फरफरा रहे थे। आज हफ्ते-भर बाद जमादार भी बड़े मन से नालियों से कूड़ा निकालकर गली-किनारे जमा कर रहा था। बत्तखें कूड़े के ढेर में चोंच मार कुछ ढूंढ़ने की कोशिश कर रही थीं। ऊपर डाल पर बैठा बंदर बड़ी देर से मनसा की नई-नवेली बहू को ताक रहा था, जो अलग-अलग कोण से अपना मुखड़ा शीशे में निहार रही थी। बंदर सहसा दबे पांव नीचे उतरा और मनसा की बहू के हाथ से आइना छीन ऊपर छत पर चढ़ गया, जो मांग मे सिंदूर भरने ही जा रही थी। अचानक हुए इस हमले से घबराकर वह चीख पड़ी। बंदर ऊपर जा, उसी की नकल करता अपना चेहरा निहारने लगा। फिर जाने क्या सिर में समाई कि आइना उठा बीचोबीच गली में पटक दिया। स्कूल जाते बच्चों के सामने शीशा जो एकदम तड़ाक की आवाज के साथ गिरा तो वे अचकचा के उछल पड़े। कुत्ता, जो बीच गली में खड़ा किसी दार्शनिक की तरह पूरे माहौल का जायजा ले रहा था, चौकन्ना हुआ और गिरे दर्पण के चूरे के पास जाकर पहले उसे सूंघता रहा, फिर जोर-जोर से भौंकने लगा। गेहूं के बोरों से लदा ठेला उधर से गुजरा तो कुत्ते को वहीं जमकर खड़ा देख ठेलेवाले ने झिड़का, ''हट, हट! रास्ता छोड़। बे-मतलब साला भौंकत है।''

बूढ़ा अंधा फकीर घर-घर भीख मांगता घूम रहा था। जिसके पास जो था वह उसके कटोरे में डाल रहा था। उसके हाथ में पकड़ी लाठी उसका सहारा थी, जो उसको पहचाने रास्तों पर सुरक्षित पिछले कई दहाइयों से चला रही थी।

''संभल के बाबा, आगे गड्ढा है।'' रमजानी ने उसे टोका और सहारा दे दूसरी तरफ पहुंचा दिया।

''यहां कल तक तो सब ठीक था?'' अंधे फकीर ने लाठी से रास्ता टटोलते हुए धीरे-से कहा।

''ठीक तो अभी भी है, मगर कल शाम खंभा गड़े के चलते यह गड्ढा खुदा

रहा; मगर अब काम निकल गवा तो भरवाए कौन!" रमजानी ने चिढ़े हुए स्वर में कहा।

"तुम भरवाय देव न!" अपना तहमत घुटनों के ऊपर उठाते हुए ननकू रिक्शेवाला बोला।

"जे खुदवाइस है ऊ भरवाए। हमका तुम निरी बावली समझे हो का, जो करे दूसर, भरें हम?" रमजानी चटख गई।

"हम अकेले थोड़ी समझत हैं, सारा मोहल्ला तोका बावली समझत है।" ननकू ने धीरे से कहा और बीड़ी का सिरा दांत से कुतर होंठों में दबा उसने बीड़ी सुलगाई।

रमजानी उसी तरह झटकती-पटकती चाल से चंदन हलवाई की दुकान पर जा खड़ी हो गई। गरम-गरम जलेबी कड़ाही से निकलकर शीरे में तैर रही थी। जलेबी खाने और खरीदने वालों की भीड़ लगी थी। रमजानी जाकर बेंच पर बैठ गई।

कुछ पल में ही खरीदार छंट गए तो चंदन उसकी तरफ देखे बिना बोला, "कैसी हो, रमजानी?"

"अच्छी हूं, तुम बताओ? पीने की लत छोड़े हो कि नहीं?"

"आदत कभी छूटै के लिए लागत है?" चंदन हँसा, फिर छन्ना डाल शीरे से जलेबी थाली में डाल बोला, "कितनी तुलवाएं?"

"आधा किलो जलेबी, पाव-भर दही।" कह रमजानी ने जंफर के गले मे हाथ डाल छोटा-सा पर्स निकाला और पैसे गिने।

"अरे रमजानी, कैसी हो? बहुत दिनों बाद दिखी। सब कुशल-मंगल?" सोना महाराजिन सिर पर पल्लू संभालते हुए रुककर बोली।

"सब भला-चंगा है। तुम सुनाओ सोना, कैसी गुजरत है?" थैली पकड़ रमजानी सोना के करीब पहुंचकर बोली।

"मझली के घर बिटिया भई है। आओ किसी दिन, आशीर्वाद दे जाओ न।" सोना बोली।

"यह भी कहे की बात है! हमारे तरफ से बधाई, जुग-जुग जिए। हम आवेंगे बिटिया से मिलने, आवेंगे।" रमजानी ने कहा और तेजी से कदम बढ़ाती आगे बढ़ी।

सामने से गधेवाला पांच-छह गधों को हांकता चला आ रहा था। सबकी पीठ पर ईंटें लदी थीं। सामने से आती मोटर साइकिल की आवाज से गधे बिचके और तंग गली में छितर गए। रास्ता बंद हो गया। रमजानी एक कोने में बिदककर खड़ी हो गई। कुछ राहगीर भी टक्कर से बचने के लिए नाली पर रखे पत्थर पर चढ़कर खड़े हो गए।

"का आन्हर भंइसा की तरह चले आय रहे हो? ई का बात हुई, पूरी गली छेंक लिए हो। अब आदमी जाए तो किधर से जाए?" रमजानी खीजकर बोली।

"लेव, जाओ।" गधेवाले ने सोंटा लहराया। गधे एक के पीछे एक हो लिए। धीरे-धीरे रास्ता साफ हो गया।

गली की रौनक धीरे-धीरे घटने लगी। स्कूल और दफ्तर जाने वाले अपने-अपने काम पर निकल गए थे। घरों के दरवाजे बंद हो गए थे। धूप आड़ी-तिरछी हो तंग गली में घुसने की कोशिश में लगी हुई थी। ट्रांजिस्टर पर गाने का फरमाइशी कार्यक्रम खत्म होकर अब खबर आनी शुरू हो गई थी, जिसको सुनने वाला गली में कोई नहीं बचा था, सिवाय धोबी के, जो मेज पर फैले कपड़े पर तेजी से इस्त्री चला रहा था कि बिजली के रहते-रहते वह अधिक-से-अधिक कपड़ों को निपटा दे।

"कई जिलों में पानी की जांच से पता चला है कि नलकूप से आने वाला पानी पीने लायक नहीं है। भोजपुर जिले में पानी में आरसेनिक (संखिया) की मात्रा बहुत अधिक पाई गई है, जिसका सेवन स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। अब सारे नलकूप सील कर दिए गए हैं और उस इलाके मे टैंकर की सहायता से जनता को सरकार जल उपलब्ध करवा रही है।"

"ई भोर से कांय-कांय करत है, अब तो एका बंद करो।" धोबन ने अंदर कोठरी से हांक लगाई, मगर उसकी आवाज धोबी तक नहीं पहुची। उसके दिमाग में इस समय ग्राहकों के हिसाब का जोड़-घटाव चल रहा था। रेडियो से समाचार प्रसारित होता रहा—

'बताया गया है कि रासायनिक खादों का अत्यधिक प्रयोग इसका कारण है, जिसने मिट्टी में नीचे तक अपनी पैठ बना ली है और धरती के अंदर के पानी में घुल-मिलकर पानी को जहरीला बना दिया है। इस पानी का प्रयोग हानिकारक है। यह भी शोध से पता चला है कि अत्यधिक सिंचाई और एक वर्ष में तीन-तीन फसल उगाने की लालच के कारण मिट्टी में लवण की मात्रा बराबर बढ़ रही है और कोई आश्चर्य की बात नहीं कि कल यह भूमि फसल उगाने के काबिल ही न रह जाए।'

"कान में तेल डाल के बैठे रहो!" धोबन ने बाहर निकलकर रेडियो बंद किया और कोठरी में जा आटा गूंधने लगी। धोबी उसी तरह कपड़ों पर इस्त्री चलाता रहा।



बकरीवाली गली के पीछे कस्साबों की कई दुकानें एक के बाद एक पड़ती थीं। मक्खी भगाने के लिए सभी ने अपने दरवाजों पर चिक डाल रखी थी। दो-दो पंखे आमने-सामने लगा रखे थे, मगर मक्खियों को नहीं रोक पाए थे, जो गलियों और घरों के आंगन सें गुजरती, हर जगह मौजूद रहती थीं। आज सभी की दुकानें पानी आने से धुल-धुलाकर

चमक रही हैं। पंखे भी चल रहे हैं। दोपहर होने को आई, मगर लू के थपेड़े नहीं चले। मौसम शांत है। दूसरे दिनों के देखते आज गरमी कुछ कम है। सामने बने पार्क में घास का नाम न था। सुअरों ने अपनी थूथनी से जमीन खोद डाली थी। बस, एक-दो पेड़ खड़े थे। उस पार्क की रेलिंग पर यहां से वहां तक रंग-बिरंगे छोटे-बड़े कपड़े फैले हुए हैं।

''एक दिन पानी ठीक से आया, सारा काम निपट गया; मगर पता नहीं क्या हिसाब है—गरमी में सूखा, बरसात में बाढ़।'' 'कुरैशी फ्रेश मीट' के मालिक ने चाय का घूंट भरते हुए कहा।

''हां, अखबार उठाओ तो जी खराब हो जाता है। जगह-जगह मार-काट, बम विस्फोट और भ्रष्टाचार।'' पड़ोस की दुकानवाले लाला ने कहा।

''पानी की ऐसी किल्लत हमारे बचपन में नहीं थी।'' कुरैशी ने याद किया।

''इसलिए कि तब आबादी कम थी और उसी के साथ थोड़े-बहुत कुएं-तालाब बचे हुए थे। जब से नल और वाटर वर्क्स से हमारा रिश्ता जुड़ा है, पानी का राशन शुरू हो गया। पहले टाइम बांधा, फिर तीन टाइम से दो टाइम हुआ और अब पानी बिजली पर निर्भर है। यह कोई बात हुई! बिजली का हाल यह है कि हर गांव में खंभे खड़े हैं, तार खिंचे हैं, मगर कनेक्शन नहीं। जहा कनेक्शन है वहां पर बिजली शाम को छह बजे जाती है और रात को साढ़े दस बजे आती है। गांव जाओ तो वहां भी पानी-बिजली रामभरोसे है। इस देश की व्यवस्था कुछ समझ में नहीं आती। हम तो अब, कुरैशी, जाने वाले हैं, मगर इस नई पीढ़ी का क्या होगा जिसके सामने समस्याएं-हीं-समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं? कभी-कभी गांव में सुना बचपन का एक गाना कान में बज उठता हे, 'फिरंगी नल मत लगवाय दियो...' आज घर के अंदर पानी की इस सुविधा ने हमको सामाजिक मेलजोल से भी काट दिया है। न पनघट पर औरतें जमा होती हैं, न घाट पर बैठ कपड़ा-बरतन धो अपना दुःख-दर्द कह पाती हैं।'' लाला ने लंबा श्वास भरकर चाय का खाली गिलास लड़के को थमाया।

''मुझे तो अंधेरा-ही-अंधेरा नजर आ रहा है। आज सुबह खबर सुन रहा था। उसमें तो बहुत बेचैन कर देने वाली खबरें सुनने को मिलीं। कुछ सूखे इलाकों में हैंडपाइप लगे, मगर उसमें से लाल रंग का पानी गिरता है, जो धोने-नहाने तक के लिए बेकार है।'' कुरैशी चिंता से बोला।

''हमने धरती से पानी तो खूब लिया, मगर उसे जो देना था वह नहीं दिया। इस धरती पर हुए हमारे अत्याचार ही हमें आज इस दुर्दशा में डाले हुए हैं, फिर भी हम होश में नहीं आ रहे हैं। पहले धर्म को लेकर धर्म-युद्ध होते थे, फिर सीमा को लेकर तलवारें खिंचती थीं, और अब देखना, कुरैशी भाई, जल को लेकर प्रांतों के बीच

युद्ध छिड़ेगा। ताज्जुब नहीं कि यह गृह-युद्ध एक दिन विश्व-महायुद्ध में बदल जाए!'' लाला ने चश्मा ठीक कर दूरदर्शिता-भरे स्वर में कहा।

''आप तो लालाजी, हमसे कहीं ज्यादा पढ़े-लिखे हैं। दूर तक की सोच लेते हैं, मगर हम छठी पास भी जो कुछ समझ पाते हैं उससे बहुत डर लगता है।'' कुरैशी ने अपने कान पर उगे बालों को सहलाते हुए कहा।

''क्या पढ़ना-लिखना! बाप ने बी.ए. कराया था, इस विचार से कि सरकारी नौकरी करूंगा; मगर भाग्य में लिखा था नोन, तेल, लकड़ी बेचना, सो बाप की दुकान पर बैठा हूं। इसी कारण मैंने बेटे को लेकर कोई सपना नहीं देखा है। जैसी स्थितियां बनेंगी, वही उसका रूप गढ़ेंगी। फिलहाल तो भविष्य को लेकर जवान भी परेशान है। कभी सुना है, बच्चों और जवानों को शक्कर और ब्लड प्रेशर की बीमारी? मगर आज तो फूल-से बच्चे गंदी-से-गंदी, खतरनाक-से-खतरनाक बीमारी से जूझ रहे हैं।'' लाला ने लंबी सांस खींची।

''हां, जिन बीमारियों का कभी नाम नहीं सुना, वे अब देखने-सुनने में आ रही हैं।'' कुरैशी ने गहरी सोच में डूबते हुए कहा।

''एक तरफ सरकार वृक्षारोपण की बात करती है तो दूसरी तरफ जंगलों की अनैतिक रूप से कटाई की ओर से आंखें बंद किए है। गन्ने और धान में पानी की आवश्यकता अधिक पड़ती है, मगर कम पानी वाली फसलों के किसान भी पानी-पानी की दुहाई दे रहे हैं। ये सारे किसान खुशहाल हैं। और अब चुटकी बजाते ही धनवान बन जाना चाहते हैं। एक वर्ष में कई-कई फसल उगाकर तिजोरी भरना चाहते हैं। डालते हैं फर्टिलाइजर बिना सोचे-समझे। इश्तहार दिखा-दिखाकर इस तरह का बलात्कार करने की जो प्रेरणा हम किसानों को दे रहे हैं वह भूमि के लिए बहुत हानिकारक है।'' लालाजी का स्वर उत्तेजित था।

''इसीलिए लालाजी! अब तरकारियों और फलों में पहलेवाला मजा नहीं मिलता। एक दिन की रखी सब्जी दूसरे दिन मुरझा जाती है। ऐसी पैदावार से लाभ क्या जो जबान का स्वाद ही खत्म कर दे!'' कुरैशी ने अपना अनुभव बयान किया।

''इस सबकी जड़ बाजार है। बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।'' लालाजी इतना कहकर हँसे और दुकान पर आए ग्राहक की ओर मुखातिब हुए। कुरैशी अपनी दुकान की तरफ गया और बंधी चिक उसने खोल दी। उसके चेहरे पर चिंता उभर रही थी कि सुबह से अब तक कोई ग्राहक उसकी दुकान पर नहीं आया था। घड़ी पर नजर डाली—बारह बज रहे थे। उसने सुबह आया समाचार-पत्र खोला और अटक-अटककर पढ़ने लगा।



बदलू को इस बात का दुःख था कि आधी गिरी मसजिद के पीछे, नीम के वृक्षों की छांव में ठीक मौलवी साहब की कब्र के पास, मोहल्ले के आवारा लड़कों ने कुछ दिनों से अपना अड्डा बना लिया था। ताश खेलना, नशा करना और मार-पीट तथा गाली-गलौज करना उनका रोज का शगल था। जब खुद मोहल्लेवालों को इस बात की चिंता न थी तो बेचारा बदलू क्या कर सकता था? टोकने पर या तो पिटता या फिर पेट में चाकू घोंपवाता। उसने मौलवी साहब की याद को दिल में बसाकर उधर जाना ही छोड़ दिया। अब उसका सारा समय घर में गुजरता था। जब खुरशीदआरा टी.वी. खोलतीं तो बुआ के साथ जाकर उनके कमरे में बैठ जाता और परदे पर भागती-बोलती तस्वीरें देख लेता। सुबह-शाम हौदे में पानी डाल देता। अब जानवर उसको पहचानने लगे थे। उसके आने पर भागते-उड़ते नहीं थे।

एक दिन बदलू जब पानी दे रहा था तो एक गाय ने प्यार से उसका मुंह चाटा, फिर हाथ। बदलू की आंखें-भर आई। उसने गाय का मुंह चूमा और बड़ी देर तक उसका बदन प्यार से सहलाता रहा। उसके लिए यह पहला अनुभव था जब किसी जीव ने उससे प्यार का इजहार किया था। वह कई दिनों तक अपने गाल को अगुलियों से सहलाता रहा था। उसको मां ने जरूर बचपन में चूमा होगा, मगर बड़े होकर चुंबन का यह अनुभव उसे आज तक महसूस नहीं हुआ था। इस घर में आकर उसे पहली बार रिश्तों का ताना-बाना समझ में आया था। औरतों को उसने दूर से आते-जाते जरूर देखा था, मगर उनकी छाया में कितनी ठंडक, कितनी सुरक्षा मिलती है, इसका सुख उसे अब जाकर मिला था। उसका मन करता कि कोई उसे सीने से चिपकाकर प्यार करे, जैसे दुलहिन बी अपनी बेटी समीना को करती हैं।

कुछ दिनों से बदलू ने खाने के समय एक रोटी मोड़कर जेब में रखनी शुरू कर दी थी। एक दिन बुआ ने देख लिया, मगर कुछ बोलीं नहीं। जब यह रोज की बात हो गई तो एक दिन उन्होंने बदलू को रंगे हाथों पकड़ लिया और फटकारते हुए बोलीं, "यह नदीदापन मुझे जरा भी नहीं भाता है। जब भूख लगे, मांगो, देंगे। मगर यूं जेब में छुपाना अच्छी आदत नहीं है।"

"वह...वह..." चोरी पकड़े जाने पर बदलू एकाएक घबरा उठा था। कुछ जवाब न दे सका।

"वह, वह क्या? फिर यह हरकत न दोहराना। लाओ, रोटी इधर दो!" बुआ ने जेब में रखी रोटी निकलवा ली। बदलू का चेहरा उतर गया।

"अब लू लगे आम की तरह यूं मुंह काहे लटकाए खड़े हो?" बुआ ने उसकी उदासी देख, चिढ़कर पूछा।

"बुआ, वह गाय है न, मुझे बड़ा प्यार करती है। यह रोटी मैं उसी के लिए ले जाता हूं। वह मेरी राह देखेगी।" बदलू ने सिर झुकाए कहा।

"ओ हो, तो चरबी चढ़ गई है। खुद खाओ, दूसरों को खिलाओ! खूब बेटा, खूब! अब तुम्हारे पर निकल आए, क्यों?" बुआ ने कमर पर हाथ रखकर उलाहना-भरे स्वर में कहा।

"अब कभी नहीं दूंगा, बुआ अम्मा।" बदलू ने कान पकड़ते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर बुआ ने सिर हिलाया और रोटी पिटारी में रखी।

उदास बदलू चुपचाप बरतन धोने लगा, फिर जमीन साफ कर वह अपने बिछावन पर जाकर लेट गया। बार-बार उसे ग्लानि हो रही थी कि उसको गाय को रोटी देनी ही थी तो बुआ अम्मा को बता देता। ठीक है, मैं अपने हिस्से की रोटी देता था तो भी...तो भी...मेरी कोई गलती नहीं है। मैं भूखा रहकर अपना हिस्सा देता था। फिर बुआ अम्मा क्यों गुस्सा हुई? अच्छे-बुरे, गलत-सही के सवालों में उलझा-उलझा बदलू सो गया।

शाम ढली। चाय पीकर जब वह हौदा भरने बाहर निकलने लगा तो बुआ ने उसे पुकारा। वह बाल्टी वहीं रख उनके पास गया। उनके बूढ़े चेहरे पर अजीब तरह की चमक थी। आंखों में नाचती शरारत और हाथ में रोटियां थीं। उसने ताज्जुब से बुआ अम्मा को, फिर उन रोटियों को ताका।

"इतने दिन से हमारे पास है, लांडुरे, हमें जान नहीं पाया? अरे! हम पर मुए यकीन करना सीख। ले ये रोटियां। जी भरकर खिला। यहां न दिल तंग है, न हाथ। हमारे बहाने चौपाए कुछ खा लें, यह तो अच्छी बात है।" यह कह बुआ ने उसे तीन-चार ताजा रोटियां थमा दीं।

"जी, बुआ अम्मा!" बदलू के चेहरे पर खून दौड़ गया। वह मुस्करा उठा और मगन हो रोटी पकड़, बाल्टी उठा बाहर निकला। उसे आज यह गरम शाम बड़ी सुहावनी लग रही थी। उसने बड़े मन से रोटियां गाय के अलावा अन्य चौपायों को भी टुकड़ा-टुकड़ा खिलाईं और हँस-हँसकर जो मन में आया, उनसे बतियाने लगा। वह आज बहुत खुश था। उसे मैना की चों-चों आज बुरी नहीं लग रही थी, बल्कि उनकी आपसी लड़ाई को वह प्यार-भरी झड़प समझ रहा था। कौओं का बिजली के तार पर लाइन में बैठना उसे बड़ा लुभावना लग रहा था। बकरियों के बच्चों को गोद में ले उन्हें सहलाता हुआ वह सोच रहा था कि यह दुनिया कितनी सुंदर है! अंधेरा बढ़ने लगा था। उसने बाल्टी उठाई और दौड़ता हुआ गली में दाखिल हुआ। उसका दिल चाह रहा था कि वह दूर तक बस दौड़ता चला जाए, कहीं न रुके।

10

इतवार का दिन था। मास्टरजी नहा-धोकर बड़े मस्त, आइने के सामने कंघी करते गुनगुना रहे थे। वह खुश होते भी क्यों न, सारी रात बिजली आई। कूलर की फर-फर हवा में लेटे वह रात-भर स्वर्ग का आनंद लेते रहे। भरपूर नींद लेकर जब वह भोर में उठे तो नल से पानी गिर रहा था। शिवमंदिर से आरती की आवाज आ रही थी। मन प्रसन्न हो उठा। श्रीमतीजी भी तरोताजा चेहरे से उन्हें गरम-गरम चाय की प्याली थमा गई। घूंट भरते हुए वह गुनगुना उठे—

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।।

स्नानघर में जब चंदिया पर नल की मोटी धार गिरी तो मन से आवाज आई, सबसे बड़ा सुख क्या है—गरमी की सुबह ठंडे-ठंडे पानी से जी-भर नहाना। सारा दिन चित्त प्रफुल्लित रहता है। तन-मन में स्फूर्ति-सी दौड़ती रहती है। वाह रे तेरी माया' बहुमूल्य उपहार जल के रूप में देकर तूने हमें धन्य किया है। जलपान कर वह कुछ देर अखबार देखते रहे। संपादकीय पन्ने पर एक लेख था—'जल ही जीवन है'। वह उसको पढ़ने में डूब गए। जैसे-जैसे वह पढ़ते जाते वैसे-वैसे उनकी आंखें खुलती जाती थीं। लेख में लिखा था :

'आज विश्व में आंकड़ों द्वारा ज्ञात होता है कि लगभग एक अरब से ज्यादा लोगों को साफ पानी पीने के लिए उपलब्ध नहीं है। दो अरब लोगों को नहाने-धोने के लिए पानी नहीं मिल पाता, जिससे लोग अनेक तरह के रोगों का शिकार हो रहे हैं। मृत्यु-दर दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। भारत में गांव, कस्बों, शहरों में लोग कुआं, तालाबों और नदियों से पानी लेते हैं जो अधिकतर गंदा और कीटाणु-युक्त होता है। उसमें प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले संखिया की मिलावट होती है। सारे विश्व में 261 प्रमुख नदियां एक से अधिक देशों से होकर गुजरती हैं। दुनिया के कुल नदी-जल-प्रवाह का 80 प्रतिशत इन्हीं में है और जिन देशों से होकर ये गुजरती हैं उनमें संसार की 40 प्रतिशत जनसंख्या रहती है। पानी के कारण सामाजिक, आर्थिक, राजनीकि तनाव पनपते हैं; जैसे—भारत और पाकिस्तान, भारत और बंगलादेश, भारत और नेपाल, सीरिया और तुर्की के बीच और स्वयं भारत में कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच कावेरी नदी को लेकर तनाव की स्थिति पनप चुकी है।"

लेख में आगे लिखा था :

'जोहानिसबर्ग शिखर सम्मेलन में इस मुद्दे पर हुई बातचीत में यह तय हुआ

था कि सन् 2015 तक अधिक-से-अधिक लोगों तक स्वच्छ जल पहुंचाया जाए। उसी वर्ष जापान में आयोजित विश्व जल मंच में यह सोचा गया कि इस पर आने वाला खर्च 80 अरब डॉलर से बढ़ाकर 180 अरब डॉलर कर देना चाहिए। मगर प्रश्न है कि इतना पैसा आएगा कहां से? क्या यह केवल फाइलों में बंद आंकड़े हैं जो केवल सम्मेलनों में चर्चा तक ही सीमित रहेंगे?'

इतना पढ़ने के बाद मास्टरजी का सिर दुखने लगा। उन्होंने चश्मा उतार उंगलियों से आंखें मलीं और कुछ पल खिड़की के बाहर हवा में झूमती टहनियों को निहारते रहे फिर लंबी सांस खींच लेख पर नजरें गड़ा दीं :

'इराक युद्ध के लिए अमेरिकी कांग्रेस ने राष्ट्रपति बुश को बिना देर किए 75 अरब डॉलर देने की घोषणा कर दी; मगर ऐसी कोई तत्काल घोषणा उसने जल-समस्या पर नहीं की और ऐसा ही कुछ हाल हमारे अपने देश का है। यहां पर जन-मानस से जुड़ी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जगह परमाणु बम निर्माण और परीक्षण पर धन खर्च करना उसे ज्यादा तर्कसंगत लगता है। सबसे खतरनाक मुद्दा जो आज हमारे सामने है, वह है समस्या के हल का निजी क्षेत्र में देखा जाना, जिससे निजी क्षेत्र अपने मुनाफे की बात कर सके। उनका विचार है कि बिक्री योग्य वस्तु बना देने से पानी का संरक्षण सुचारु रूप से हो पाएगा। विश्व बैंक कह ही चुका है कि पानी की कीमत तय करो, बाजार में बिक्री के लिए उसे रखो और बाजार को उसका भविष्य तय करने दो। ध्यान रहे कि पानी एक 'मानवीय आवश्यकता' है, न कि 'मानवीय अधिकार' भर है। इसी कथन को जब हम आगे देखते हैं तो यह षड्यंत्र समझ में आता है कि विश्व बैंक और मुद्रा कोष के समर्थन से कई बहुराष्ट्रीय निगमों ने कई देशों में जल की आपूर्ति एवं उसके हल का काम अपने जिम्मे ले लिया है। इस तरह मनमाने ढंग से उन्होंने पानी की कीमत बढ़ा दी है। इन 'स्वच्छ जल' देने के ढकोसलों का लक्ष्य वास्तव में मध्य वर्ग एवं उच्च वर्ग की मानसिकता से खेलकर धन उगाही है। बच्चों व जवानों में केवल ढक्कन-बंद बोतल ही नहीं बल्कि कोकाकोला, पेप्सी, नेस्ले व अन्य कई तरह के पेय बहुत लोकप्रिय हो चुके हैं। अमेरिकी पत्रिका 'फॉर्चून' के अनुसार, पानी उद्योग से मिलने वाला मुनाफा तेल-क्षेत्र के मुनाफे की तुलना में 40 प्रतिशत हो गया है। इसलिए बहुराष्ट्रीय निगम जल-आपूर्ति से मिलने वाले मुनाफे से प्रसन्न होकर बड़े पैमाने पर पाइप लाइन बना रहे हैं, जिसके द्वारा गरीब देशों का पानी अमीर देशों तक पहुंचाया जाएगा। विश्व बैंक तेल की तरह ही इसकी आयात-व्यवस्था पर जोर दे रहा है। यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि छत्तीसगढ़ में भिलाई के पास शिवनाथ नदी की 22 कि.मी. की पट्टी को एक निजी कंपनी के हाथ में देकर वहां के लोगों के लिए नदी में प्रवेश पर रोक लगा दी गई है। इस तरह से हम देखते हैं कि नदियों के अस्तित्व पर खतरे के बादल

मंडरा रहे हैं। वह दिन बहुत दूर नहीं है जब हमें अपनी ही नदियां पराई लगने लगेंगी।'

लेख खत्म कर मास्टरजी सन्नाटा खींच गए।

'मैंने तो कभी इतने बड़े भावी खतरे पर सोचा ही न था। इसका मतलब है कि बाजार के लिए हमारी सरकारें कुछ भी समझौता आपस में कर लेती हैं!' उन्होंने चश्मा उतारा और अखबार तह कर एक तरफ रख दिया।

उन्हें यों गुमसुम, उदास बैठा देखकर कमरे में आई उनकी श्रीमती बोलीं, "ऐसे काहे बैठे हो, जी तो ठीक है? आज कहीं घूमने-टहलने भी नहीं निकले?"

"बस यों ही।" वह कुछ बुझे स्वर में बोले।

"एक चक्कर फत्तू की दुकान तक लगाय आओ, वरना बेकार में सोफा पर बैठे-बैठे पेट में गैस बनिहै...जी अलग बोल-बतिया के बहिल जाई...हम तनिक पड़ोस के घर होइके आइत है।" इतना कह श्रीमतीजी कमरे से बाहर निकलीं और जाते-जाते बोलीं, "बहू, कपड़ा सूख गवा होई, प्रेसवाले को भेजै न भुलइयो।"

दरवाजा खुला और जोर की आवाज के साथ बंद हुआ। मास्टरजी चौंक पड़े। थके-थके-से उठे और खिड़की के पास जाकर खड़े हो गए। नीचे गली में बच्चे ऊच-नीच खेल रहे थे। उनकी निश्छल हँसी उन्हें एकाएक भयानक चीत्कार में बदलती महसूस होने लगी। भगवान का दिया प्रसाद जल अब संखिया बन उनकी धमनियों में फेलता नजर आने लगा, जिससे वह फेफड़े, लीवर और गुरदे की बीमारी से ग्रस्त हो एक-एक करके दम तोड़ रहे थे। उनके शव उठाए रोते मां-बाप हर गली-कूचे से निकल रहे थे। घर बच्चों से खाली होते जा रहे थे और सड़क पर कोई जवान आता-जाता नहीं दिख रहा था। जाने कितने भाग्यहीन बुजुर्ग अपने जवान बेटों की अरथी कंधे पर उठाए श्मशान की तरफ बढ़ रहे थे, जहां पूरा श्मशान एक बड़ी चिता में सुलगता नजर आ रहा था। जिधर देखो उधर लपटें-ही-लपटें और एक दिन ऐसा आ गया जब बुजुर्ग का पिंडदान करने वाला कोई इस धरती पर नहीं बचा...कोई नहीं बचा...

"बाबूजी, चाय-शरबत कुछ चाहिए?" बहू ने आकर पूछा। मगर वह अपने विचारों में उड़ते रहे। जब बहू ने दोबारा पूछा तो उन्होंने मुड़कर देखा, मगर उन्हें जैसे विश्वास नहीं हुआ कि कोई उनके सामने खड़ा है। उनकी आंखों की पुतलियां थिरक रही थीं, जिनमें आश्चर्य था।

"आपकी तबीयत तो ठीक है, बाबूजी?" बहू ने परेशान हो पूछा और तेजी से कमरे से निकल पति के पास पहुंची और बोली, "जरा बाबूजी को जाकर देखो, मुझे ठीक नहीं लग रहे हैं।"

"अब उन्हें क्या हुआ? सुबह तो अच्छे-भले थे?" लड़का लेटे-लेटे आलस से बोला।

"मुझे नहीं पता, मगर उनकी आंखें मुझे बड़ी विचित्र-सी लग रही थीं, जैसे वह मुझे पहचान ही नहीं रहे हों! चाय-शरबत को पूछा तो कुछ जवाब नहीं दिया। उठो, जाकर देखो तो!" बहू चिंतित स्वर में बोली।

"देखता हूं। अब बुढ़ापा है। कुछ-न-कुछ तो होगा ही।" कहता हुआ लड़का उठा और मास्टरजी के पास पहुंचा।

मास्टरजी तख्त पर आंख बंद किए लेटे थे। लड़का उनके पास जाकर उन्हें पहले गौर से देखता रहा, फिर माथे पर हाथ रखा और धीरे से बोला, "बाबूजी।" मास्टरजी वैसे ही चित लेटे रहे। लड़का यह सोचकर कि वह सो रहे हैं, वापस लौटा और पत्नी से बोला, "वह आराम से सो रहे हैं। अब तुम मेरे लिए कॉफी बनाओ।"

"लाती हूं, पहले छत पर से कपड़े उतार लाने दो।" पत्नी ने कुछ चकराकर कहा।

"बच्चों को भी आवाज दे लेना। बहुत खेल हो चुका, सूरज सर पर आ गया है।" पत्नी से कह उसने पैर फैलाए। एक दिन छुट्टी का मिला है, वह इसमें पूरा आराम करना चाह रहा था।

जून का महीना शुरू हो गया था। कुछ दिनों बाद मानसून आने का इंतजार शुरू हो जाएगा। मौसम विभाग का कहना है कि इस बार मानसून यू.पी. में देर से पहुंचेगा। वैसे भी इस बार गरमी मार्च से ही शुरू हो गई थी। लगता है, अब जाड़ा, बरसात केवल दो-दो माह के होंगे और बाकी आठ माह गरमी पड़ेगी। लू के थपेड़े चलेंगे, वनस्पतियां सूखेंगी, नदियों में पानी कम हो जाएगा। लोग बीमार पड़ेंगे। कुछ लू लगने से चल बसेंगे। शायद इस तरह जनसंख्या घटने लगेगी। आखिर प्रकृति भी तो अपनी तरह न्याय पर उतर आती है!

यह सब सोचते-विचारते मास्टरजी गहरी नींद में डूब गए थे। पढ़ा लेख सपने में एक नई संरचना के रूप में उनके मस्तिष्क में उभर रहा था। नदियां एक-दूसरे से मिलाई जा रही थीं। जिसके चलते गांव, बस्तियां, जंगल उजड़ रहे थे। पहाड़ काटे जा रहे थे। जंगल के कटने से दूर-दूर तक खाली मैदान फैल गए थे। उजड़ी बस्तियों के लोग परेशान इधर-उधर भटक रहे थे। कुछ स्थानों पर पानी ने दलदल बना दिया और लाखों लोग बरबाद हो गए। जल-स्तर नीचे हो जाने के कारण प्रांतों के बीच पानी बराबर न पहुंचने से तनाव और नदियों का समुद्र में जाकर न मिलने से मीठे पानी की कमी से करोड़ों मछलियों एवं समुद्री जीवों का तड़प-तड़पकर मरना आरंभ हो गया। वह गंदगी, जो लवणों एवं विषैले पदार्थों के रूप में नदी घाटी से अपने

साथ ले जाकर समुद्र में डालती थी, अब उसका जगह-जगह भराव और उससे बने बड़े-बड़े टीले नजर आने लगे थे। सड़े-गले पदार्थों को समुद्री जीवों तक न पहुंचा सकने से उनका धरती पर रहने वाले जीवों के लिए ऑक्सीजन पैदा न कर सकने से दम घुट के मरने वालों की बढ़ती संख्या से प्रदूषण का संकट पैदा हो गया था। आसमान का रंग बदल गया। बादलों ने घुमड़ना-बरसना छोड़ दिया और यहां से वहां तक न कोई चिड़िया चहचहा रही थी, न कोई इंसान दिख रहा था...

सपने ने सारे शरीर में व्याकुलता-सी भर दी थी। मास्टरजी ने सोते में तेजी से बदन खुजाया और करवट बदली।

...ग्लेशियर सिकुड़ रहे थे। बर्फीली चोटियां बर्फ-रहित हो रही थीं। समुद्र का गर्भ मचलती मछलियों और तरह-तरह के जीवों से खाली हो चुका था। नदियों का जाल पानी से भरा वीरान मैदानों में फैलता जा रहा था। फिर एकाएक नदियों का फैलाव सिमटने लगा और वे लकीरों में बदल गई, फिर वे बारीक लकीरें भी धरती पर से मिट गई और मरुस्थल फैल गए। यहां से वहां तक बालू-ही-बालू, टीले-ही-टीले पानी की कमी और गरमी से उनके हलक में कांटे चुभने लगे और वे लू के थपेड़ों में बंजर धरती पर 'पानी...प्यास...पानी...' पानी कहते घूम रहे थे। शरीर झुलस रहा है, पैर जल रहे हैं, धूप तेज है, मगर पानी की एक बूंद भी उन्हे कहीं नजर नहीं आ रही है। कहीं किसी पेड़ की छांव नहीं, कहीं किसी घर का साया नहीं। उन्हें लगता है कि उनका दम बस कुछ देर में निकलने वाला है और मूर्च्छित होने से पहले वह आंख खोलकर आखिरी बार कहते हैं—'पानी!' इसके बाद उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। चारों ओर गिद्ध-ही-गिद्ध उड़ रहे हैं। उनके पंख टकराने से जो आवाज निकल रही है वह है सिर्फ 'पानी...पानी' की...

"अब उठो न, पानी मांग रहे थे। लेके खड़े हैं इतनी देर से। आंखें खोलकर देखते हो फिर बंद कर लेते हो...उठो!" श्रीमतीजी ने इतना कह उनका बाजू जोर से हिलाया।

मास्टरजी नींद से जागे और हड़बड़ाकर उठ बैठे। इधर-उधर उन्होंने परेशान नजरों से देखा, फिर पत्नी ने पानी का गिलास बढ़ाया, जिसे पकड़कर वह पल-भर उसमें भरे पानी को एकटक देखते रहे, फिर पूरा-का-पूरा गिलास अपने ऊपर उलट लिया।

श्रीमती ने पति को चकित हो देखा और बोली "सठिया गए हो क्या? पिए का पानी सिर पर उलीच लियो?"

मास्टरजी कुछ बोले नहीं। प्यास से उनका गला सूख रहा था, मगर गले से आवाज नहीं निकल रही थी कि पीने के लिए पानी मांगें। बत्ती जा चुकी थी। पत्नी

ने वहीं बेठ हाथ का पंखा डुलाना शुरू कर दिया। आंचल से पति के चेहरे-गरदन पर से टपकता पानी पोंछा और मन-ही-मन सोच मुस्करा पड़ीं—सच कहा है किसी ने कि बूढा-बच्चा एक समान होत है।

मास्टरजी फिर लेट गए। सपने का खुमार अभी उतरा नहीं था।

"मां, थाली यहीं लगाएं?" बहू ने पूछा।

"देखो तो अपने बाबूजी को, फिर लेट गए। खाना खाबो कि नाहीं? उठो, जरा मुंह पर छींटे डालो। देखो घड़ी की ओर, दुइ बजत हैं।"

इतना कह मास्टरनी खाली गिलास लेकर रसोई में गई और पति के लिए थाली सजाने लगीं। दोनों बच्चे और बेटा खाना खाकर उठ गए थे। वे दोनों थालियां सजाकर वहीं बैठक में ले आई। मास्टरजी बाथरूम से निकलकर चैतन्य हो गए थे। कढ़ी-चावल और तले आलुओं की सब्जी बनी थी। उनकी पसंद का खाना, सो बड़े चाव के साथ अचार-चटनी के साथ खाया और हाथ-धो मुंह में पान का बीड़ा दबाया। मन-तन हलका-हलका लग रहा था। बुखार उतरने के बाद मरीज जैसा महसूस करता है वही हाल उनका था। परिदृश्य साफ था। सारी सच्चाइयां पारदर्शी हो उनके सामने आ खड़ी हुई थी, जिनमें महत्त्वाकांक्षी योजनाओं का कोई जाला उनके दिमाग पर नहीं तना था। वह बड़ी आरामदेह मुद्रा में गावतकिये का सहारा ले, पान चबाते हुए सोच रहे थे कि सिर पर घिर आए इस संकट से निकलने का क्या उपाय हो सकता है और उस विकल्प मे उनका कितना योगदान होगा?



जब से सफिया सऊदी से लौटी थी, अभी तक वह अपनी छोटी खाला से मिलने नहीं जा पाई थी। कुछ घर लौटने की खुशी और कुछ शादी की खबर का गुस्सा, ऊपर से जब वह तैयार होती जाने को तो शकरआरा टोक देतीं कि इस धूप में कहां जाओगी, चुपचाप बैठो; जब मौसम बदलेगा तो जाकर मिल आना। आखिर फोन पर तो कई बार बात कर ली न तुमने। आज सफिया के दिमाग में जो जुनून चढ़ा तो उसने मां की एक भी नहीं सुनी और कमाल से कहा कि वह शाम को क्लीनिक जाते हुए उसे छोटी खाला खुरशीदआरा के यहां छोड़ दे। रात वह वहीं उनके पास रहेगी। सुबह कोई घर से आकर ले जाएगा। लड़की की हठ के आगे शकरआरा हार गई। सफिया भाई के साथ चली गई।

सफिया जब लैंपपोस्ट के पास कार से उतरी तो उसे सामने का दृश्य बड़ा दिलचस्प लगा। गली और सड़क के बीच खड़ी दीवार से सटा पानी का हौदा रखा था। हौदे के सामने कच्ची जमीन पर कई गायें बैठी थीं। उन्हीं के बीच बकरी के नन्हे-नन्हे बच्चे उछल-कूद मचा रहे थे। उनकी माएं पानी में मुंह डाल प्यास बुझा

रही थीं। एक लड़का खड़ा चिड़ियों को दाना डाल रहा था। उसके कंधे पर आकर एक तोता बैठा और उसके कान पर चोंच मार, टांय-टांय करता पेड़ की शाखा पर जा बैठा। आखिर उस लड़के ने रोटी का टुकड़ा हाथ में ले उसे दिखाया, पहले वह घूरता रहा, फिर जब उसे लेने उड़ा तो बीच में कौआ टुकड़ा झपटकर ले उड़ा। गुस्से में तोता जोर से चीखा—टांय, टांय, टांय! यह देख लड़का खिलखिला पड़ा और बोला, "तभी तो तुमसे कहता हूं, नीचे उतरो। अच्छा लो, यह रहा तुम्हारा हरा-हरा मिर्चा।" मिर्चा दिखा लड़के ने उसे जेब में रख लिया। तोता शाख से उड़कर उसके कंधे पर आ बैठा, फिर उसके कान के पीछे गुदगुदी कर वह जेब में चोंच डाल, मिर्चा ले उड़ गया। लड़का कान सहलाता हँसता रहा।

सफिया मुसकराती हुई मुड़ी और गली में दाखिल हुई। कमाल कार मोड़कर वहीं खड़ा रहा। जैसे ही बदलू बाल्टी ले मुड़ा, कमाल को देख उसकी आंखें खुशी से चमक उठीं। भागकर कार के पास जा सलाम किया।

कमाल ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, फिर हँसकर कहा, "तो बदलू मियां, आप फिट हो गए!"

"जी।" बदलू शरमाकर इतना ही कह पाया।

"जियो।" कह कमाल ने हाथ हिलाया और कार को फुटपाथ के बीच से सड़क पर मोड़ा।

सफिया को एकाएक घर में देख खुरशीदआरा ताज्जुब में पड़ गई। भानजी को गले लगा उसका माथा चूमा और हैरत से पूछा, "इतनी दूर अकेले आई हो?"

'भाई छोड़कर गए हैं। कल दोपहर में आकर ले जाएंगे।' सफिया बोली।

"अच्छा, अच्छा। घर में सब कैसे हैं?" खुरशीदआरा ने उसे अपने पास बिठाते हुए पूछा।

"ठीक हैं। मैं तो जिस दिन से आई थी, आपसे मिलने आना चाह रही थी; मगर...छोटी खाला, आप कभी हमारे घर क्यों नहीं आतीं?" सफिया ने शिकायत की।

"अरे, मेरी गुड़िया! आऊंगी तेरे ब्याह में गीत गाने, रतजगा मनाने, दुल्हन बनाने।" कहकर खुरशीदआरा ने सफिया के गुलाबी पड़ते चेहरे की बलाएं लीं।

"आप भी!" शरमाकर सफिया उठ गई और कमरे में रखी तस्वीरों को देखने लगी।

खुरशीदआरा कैसे अपने दिल का दुःख उससे कहतीं कि लड़के के घरवाले आकर चले गए, मगर उन्हें नहीं बुलाया गया, न शादी की तारीख तय करने में उनसे कोई सलाह-मशवरा लिया गया। बस, फोन पर खबर दे दी थी कि फलां-फलां तारीख

को सफिया का निकाह है।

सफिया कमरे की हर चीज को उलट-पलटकर देख रही थी।

''तुम जरा भी नहीं बदलीं। बचपन में जब आती थीं तो मेरा सारा कमरा बिखेर जाती थीं। बेचारी कामनी, यासमीन चीखती रहती थीं—छुटकी यह मत करो, रखो सामान वहीं, जहां से उठाया है...''

''और समीना भाभी क्या करती थीं?'' सफिया ने उत्सुकता से पूछा।

''वह तेरे फूले-फूले गालों को खूब नोचती थी। और जोर से लिपटाकर प्यार करती थी। उम्र में तुम लोगों के बीच ज्यादा फर्क तो था नहीं, कभी-कभी तुम और समीना मिलकर दुपट्टे की साड़ी पहनतीं और पर्स लेकर शॉपिंग करने निकलतीं। बुआ दुकानदार बन जातीं या फिर नाहीदा।'' खुरशीदआरा ने कहकहा लगाया।

''खाला अम्मी! नाहीदा फूफी कैसी हैं?''

''अपने घर खुश हैं। जब कभी आती हैं तो तुम्हें बहुत याद करती हैं।'' खुरशीदआरा बोलीं।

''हां, उनसे मिले कई साल गुजर गए। भैया-भाभी की शादी में उन्हें देखा था। उनकी तबीयत तब कुछ ठीक नहीं थी।'' सफिया बोली।

''बच्चा होने वाला था न!'' खुरशीदआरा ने लिफाफे से तस्वीरें निकालते हुए कहा।

अभी बातें चल ही रही थीं कि कमरे में बदलू दाखिल हुआ। उसे देखकर सफिया चौंकी कि यह यहां कैसे? बदलू ने शरबत की ट्रे मेज पर रख दी और चिप्स की प्लेट उठा सफिया की तरफ बढ़ाई।

सफिया ने चिप्स उठा पूछा, ''तुम सड़क के किनारे क्या कर रहे थे?''

''जी, वह पानी देने जाता हूं।'' शरमाई आंखों से कुछ मुस्कराकर बदलू बोला।

''तुम्हें जानवरों से बहुत प्यार है?'' सफिया ने पूछा।

''जी, वे बेजबान अपने-से लगते हैं।'' बदलू बोला और ट्रे पर प्लेट वापस रख कमरे से बाहर चला गया।

रात को खाने के बाद खाला-भानजी एक ही बिस्तर पर लेट गईं। सफिया उनको बता रही थी कि अम्मी ने उसके लिए कौन-कौन-से जेवर बनवाए हैं। किस रंग के जोड़े खरीदे हैं। अब वह खरीदारी और फोन करने में उलझी रहती हैं और समीना भाभी स्कूल से लौट मेहमानों और घरदारी में मसरूफ रहती हैं। वह जाने कब यह सब बताते-बताते सो गई, मगर खुरशीदआरा की आंखों से नींद उड़ गई थी। वह

अंधेरे में जाने क्या ढूंढ़ती-टटोलती काफी रात गए तक जागती रहीं।



कमाल सुबह से इंटरनेट पर बैठा था। उसने अभी नाश्ता भी नहीं किया था। समीना स्कूल जा चुकी थी। कई बार क्लीनिक से कंपाउंडर का फोन आ चुका था। वह हर बार यह कहकर फोन रख देता था कि बस निकल रहा हूं। कमाल को सूखे इलाकों के दौरे पर जाने वाली टीम के साथ जाना था। उन जगहों पर जाने से पहले उसे एक लेख भी पूरा करना था, जो बीकानेर में आयोजित एक सभा में पढ़ना था। लेख था पानी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों के बारे में, जिसके कारण उसे कई तरह की मालूमात भी जमा करनी थीं।

उसको इतना व्यस्त देख जमाल खां ने तय कर लिया कि वह सिविल लाइंस से लौटते हुए बेटी को अपने साथ ले आएंगे और जबानी तौर पर साली को शादी में शिरकत करने की दावत भी दे आएंगे। वैसे तो यह काम खुद शकरआरा को करना चाहिए था, मगर वह अपनों से ज्यादा गैरों के बीच उलझी रहती हैं और उन्ही की संगत में उन्हें सुख मिलता है। इस समय भी वह डिप्टी कमिश्नर के यहा गई हैं और दोपहर का खाना खाकर लौटेंगी।



जमाल खां जब पहुंचे तो शकरआरा बहनोई को अपने घर देख निहाल हो उठीं। उनका बस नहीं चल रहा था कि क्या पावें, जो बहनोई के आगे रख दें। अरसे बाद वह आए थे। उनकी आंखें छलछला उठीं, यह सोचकर कि जब से जमीर उनसे जुदा हुए, एक-एक करके उनके अपने उनसे दूर होते चले गए। वह जब छुट्टियों मे लौटते तो घर मर्दो की आवाजों से गूंजता रहता था।

''मेरी आखिरी बेटी का निकाह है। आप हफ्ते-भर पहले से आकर रहिएगा। आप रहेंगी तो मुझे भी हिम्मत बंधी रहेगी और शकर को भी हौसला मिलेगा।'' जमाल खां ने चलते वक्त कहा।

''यह भी कोई कहने की बात है।'' खुरशीदआरा ने खुलूस-भरे स्वर में जवाब दिया।

''तो फिर सामान बांधिए और चलिए मेरे साथ।'' जमाल खां कह

''अभी से?'' खुरशीदआरा हैरत से बोलीं।

''क्यों, एक हफ्ता हमारी तरफ से, दूसरा आपकी तरफ से! हो गए न चौदह दिन और छह दिन बाद शादी।'' जमाल खां कहकहा लगा के बोले। उनकी हँसी

में इस बार खुरशीदआरा और सफिया भी शामिल थीं।

"चलिए! उठकर तैयार हो लें, खाला!" सफिया मचली।

"आज नहीं, बेटे। जरा घर का इंतजाम कर लूं, फिर निकलती हूं।" खुरशीदआरा ने भानजी के गाल थपथपाते हुए कहा।

"आप बड़े लोग अपने छोटों की बात कभी नहीं मानते हैं। हमेशा अपनी बात डरा-धमकाकर या प्यार-दुलार से मनवा लेते हैं।" सफिया रुआंसी होकर बोली।

"कह तो रही हैं, आएंगी! फिर जिद कैसी?" जमाल खां ने कहा जिस पर खुरशीदआरा ने नजरें उठाकर बहनोई को ताका। उन दोनों के दिलों में डर था कि खुरशीदआरा को एकाएक देखकर जाने शकरआरा को कैसा लगे। सच तो सामने था ही। अगर उन्हें बुलाना होता तो वह कब का बहन को आकर ले जातीं।

दोनों को दरवाजे से विदा कर खुरशीदआरा कुछ देर चौखट पर खड़ी उन दोनों को जाते देखती रहीं, फिर दरवाजा बंदकर वह कमरे में जा गुमसुम-सी बैठ गई। यह मकान गली की दीवार बनने से पहले इस इलाके का सबसे शानदार घर हुआ करता था। अकसर सड़क से गुजरनेवाले उस पर नजर डालना नहीं भूलते थे, मगर समय के साथ जहां सड़क चौड़ी हुई, फुटपाथ बना, वहीं सुरक्षा को नजर में रख यह बाउंडरी बना दी गई और उनके घर तक पहुंचने का रास्ता गली से गुजरने लगा। इस गली ने भी उनके सामाजिक जीवन का दायरा कम करने में अहम भूमिका निभाई है। फिर आस-पास की बढ़ती अपनी तरह की आबादी जैसे पुरवा और कस्साबों के घर जरा ज्यादा तादाद में होने के कारण लोगों ने इसे 'बकरीवाली गली' कहना शुरू कर दिया, वरना पहले इसका नाम 'नूर मियां का मोड़' था। नूर अब्बास जमीर के वालिद थे। जब यह घर बना था उस समय यह बस्ती का सबसे ऊंचा पक्का मकान था, जिसने बाकी घरों को छुपा लिया था। आज बाउंडरीवाल ने उस शानदार मकान के वजूद को अपने कद द्वारा ढक लिया है।

11

समीना सुबह से कमाल का इंतजार करते करते थक गई थी कि कब वह कंप्यूटर पर से अपनी नजरें हटाए और वह उससे बाजार चलने को कहे। आखिर सफिया की फरमाइश भी तो उसे पूरी करनी है! मगर कमाल पर इन दिनों दूसरा ही भूत सवार है। कभी कभी समीना चकराकर रह जाती है कि आखिर कमाल करना क्या चाहता है? हाथ में 'शिफा' है। जिस मरीज का इलाज करता है वह ठीक हो जाता है, फिर

यह भटकन कैसी? उससे कमाल का यूं कमरे में घुसकर बैठना जब अच्छा नहीं लगा तो वह सीधे कमाल के पास पहुंची। ऐसे मौके पर कमाल को मेहमानों के बीच रहना जरूरी था तो वह अपने कमरे में जमा हुआ था। समीना को उसका यह बर्ताव बहुत अखर रहा था। वह टाल रही थी मगर आज बोल ही दी।

"तुम्हें क्या हो गया है पिछले तीन दिनों से, कमाल?" समीना ने उसके कंधे पर हाथ रख झुकते हुए पूछा।

"ठहरो, बताता हूं, जुमला तो पूरा कर लेने दो।" कमाल ने कंप्यूटर पर झुके-झुके कहा।

मगर समीना ने उसका हाथ पकड़ लिया, "पहले मेरी बात का जवाब दो कि तुम एक साथ कितनी नावों पर सवार होना चाहते हो?" समीना बेहद गंभीर थी।

"मैं समझा नहीं तुम्हारी 'लिटरेरी लैंग्वेज' को।" कमाल ने पीछे खड़ी समीना के दोनों हाथ पकड़ अपनी तरफ खींचा।

समीना ने अपनी ठुड्डी कमाल के सिर पर रखते हुए कहा, "तय तुम्हें करना है कि तुम डॉक्टर हो, समाज-सुधारक हो, समाज-सेवी हो या फिर समाज-आलोचक? कभी नब्ज देखते हो तो कभी लोगों को घर-घर सामान बांटने चल देते हो और अब पानी के चक्कर में पिछले कई दिनों से बहुत बड़े स्कॉलर बने हुए हो। आखिर, कमाल..."

उसकी बात बीच में काटते हुए कमाल बोल उठा, "यह तो तुम भी जानती हो कि मैं बाई प्रैक्टिस डॉक्टर हूं। मेरा काम मरीजों को देखना, उन्हें सेहत देना है, ठीक है न? मगर, वह डॉक्टर उन वजहों से आंखें तो मूंद नहीं सकता है जिसके कारण ये बीमारियां इंसानी जिस्म में दाखिल होती हैं। अगर वह कारण नहीं बताएगा तो लोग कैसे अपना बचाव करेंगे? तीसरी अहम बात यह है कि डॉक्टर भी एक इंसान है। उसके दिल में भी कई तरह के जज्बात होते हैं। उन अहसासात को वह गोली और खुराक पिलाकर मुतमईन तो कर नहीं सकता है। उस अहसास को बयान करने के लिए वह इंसानी हरकत ही तो करेगा? इसलिए ये तीनों-चारों चीजें एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं और, यार समीना! अपने ऊपर मुझे बड़ा फख्र महसूस होता है, जब मैं सोचता हूं कि एक समाज-सुधारक, आलोचक और...और तुमने क्या कहा था, सेवी हां, समाज-सेवी कभी डॉक्टर की भूमिका समय पड़ने पर नहीं अदा कर सकता है; मगर मैं, माबदौलत इल्मे-हिकमत का वारिस, अदना-सा डॉक्टर होकर भी ये सारे रोल बखूबी अदा कर सकता हूं यानी कि सीरिंज और कलम एक साथ पकड़ सकता हूं...अब आप यह बताइए कि आपको एतराज क्यों है मेरी इस चौमुखी प्रतिभा पर?" कमाल ने नहले पर दहला मारते हुए कहा।

"जी, डॉक्टरों के डॉक्टर! इस बंदी की यह जुर्रत कहां कि आपसे सवाल-जवाब करे; मगर डरती हूं कि आप पर आपकी वालदा माजदा बड़ी बेगम के गुस्से की बिजली कहीं न गिरे, जिसे आप संभाल नहीं पाएंगे। अगर आपको याद हो कि आपकी हमशीरा की शादी में सिर्फ दो हफ्ते रह गए हैं और आप अपनी जिम्मेदारियों की गर्द झाड़, मजनू बने पानी की तलाश में सहरा-सहरा घूम रहे हैं।" समीना ने हकीकत का आइना दिखाया।

"यार समीना, मजाक छोड़ो। शादी-ब्याह तो चलता रहता है। अब उसकी वजह से मैं जरूरी और अहम बातें छोड़कर सुहाग गीत गाने बैठूं, यह मुझसे नहीं होगा। रहा अम्मी का सवाल, उन्होंने सारा बंदोबस्त कर लिया है, खरीदारी और..." कमाल ने बड़े तेवर से कहा।

"मैं इसलिए कह रही हूं कि पिछले कई दिनों से बड़ी अम्मी आपको..." समीना बोली।

मगर उसका जुमला पूरा होने से पहले ही कमाल कुछ तेज स्वर में बोल उठा, "देखो, मेरी मां जनाबा शकरआरा बेगम ने जमाल खां आई.ए.एस. का शिकार अपने निकाह के दूसरे दिन कर लिया था। इस हकीकत को सब जानते हैं। मैं भी अपनी पैदाइश के बाद से उस शिकार का चश्मदीद गवाह हूं, इसलिए उन्हें मैं अपना शिकार हरगिज करने नहीं दूंगा। शुरू से अगर आप ध्यान फरमाएं, मैं उनके हर हुक्म के खिलाफ अपना फैसला देता आया हूं।"

"बड़ी अम्मी के लिए तुम कैसी बातें करने लगते हो कभी-कभी।" समीना चौंक उठी।

"हां, मैं उनका बेटा हूं। मैं उनको बहुत प्यार करता हूं, वह मुझे। मगर मैं एक डॉक्टर हूं, मर्ज को पहचानना मेरा काम है। जरूरत पड़ी तो कैंची-चाकू से जख्म पर चीरा भी लगाता हूं। इसका यह मतलब नहीं कि मैं मरीज का दुश्मन हूं...मैं जानता हूं, मेरी मां मरीज हैं। उनका इलाज मेरे बाप के पास था, मगर वह डॉक्टर नहीं बन पाए। खुद खून व मवाद पीते रहे और आज..." कमाल ने कड़वे स्वर में कहा।

"मगर..." समीना ने उसका हाथ आहिस्ता से सहलाया, ताकि कमाल की उत्तेजना का पारा चढ़े न।

लेकिन उसकी बात सुनने से पहले कमाल बोल उठा, "मैं कल हफ्ते-भर के लिए राजस्थान और बुंदेलखंड के सफर पर निकल रहा हूं और मैं किसी के रोके रुकने वाला भी नहीं हूं। मैं जानता हूं, मुझे किस वक्त क्या करना है?" कमाल ने फैसलाकुन स्वर में कहा।

"तुम कभी-कभी तानाशाह लगने लगते हो।" समीना ने अपना हाथ खींचा।

"और तुम मेरे जुल्म व सितम की जिंदा तस्वीर।" कमाल ने तेजी से मुड़ते हुए कहा।

"कमाल, प्लीज मजाक छोड़ो! वक्त की नजाकत समझो। सारी जिम्मेदारी मुझ पर आन पड़ी है और यही हफ्ता इंतजाम की नजर से अहम है।" समीना झुंझलाए स्वर में बोली।

"तो करो न! दिखाओ अपना जौहर! आखिर इसी धरती पर झांसी की रानी, चांद बीबी, रजिया सुल्तान ने राज किया है और तुम...तुम एक अदना-से घर को नहीं संभाल सकती हो? समीना! तुम औरत होकर कमजोरी का यह कैसा नाटक खेल रही हो मेरे सामने? तुम पर मुझे नाज था। इस तरह की बातें तुम पर शोभा नहीं देतीं, समीना खानम! खादिम जिंदा या मुरदा, ठीक हफ्ते-भर बाद आपके चरणों का स्पर्श करने पहुंच जाएगा। तन-मन-धन से आपकी और आपके परिवार की सेवा करेगा। अब आज्ञा दो, ताकि मैं इस संसार के जंजाल से मुक्त हो अपने ध्यान में लगूं और अपना यह आर्टिकल पूरा कर डालूं..." कमाल ने सर झुकाकर कहा।

"यू आर इंपॉसिबिल।" समीना ने अपनी हँसी रोक दिखावटी गुस्से से कहा और अलमारी खोल कुछ निकालने लगी।

जब वह बाहर जाने लगी.तो कमाल ने कंप्यूटर पर नजर गाड़े-गाड़े कहा, "कॉफी प्लीज!"

"यस सर!" कहती समीना कमरे से निकली और हाथ में पकड़े कपड़ों को बाहर पड़ी कुर्सी पर रख वह किचन में कॉफी बनाने चली गई।

"टेलर मास्टर आ गए हैं।" हाशिम ने इत्तला दी।

"उन्हें बुला लो और कुर्सी पर रखे कपड़े दिखा दो, मैं अभी आती हूं।" समीना कॉफी का प्याला लेकर जब कमरे में गई तो कमाल को आंख बंदकर सोफे पर बैठा देखा।

"यह क्या?" समीना ने हैरत से पूछा।

"तुमने ऐसा डिस्टर्ब किया कि मेरा मूड ही बदल गया। कभी-कभी तुम बिलकुल मेनका की-सी भूमिका अदा करती हो।" कमाल ने सिर के बालों को उंगलियों से पीछे करते हुए कहा। वह खासा तनाव में लग रहा था।

"मुझे तो पता था कि लिखना तुम्हारे बस की बात नहीं है।"

कमाल के और ज्यादा चिढ़ाने के लिए इतना कहकर समीना बाहर निकली। कॉफी का घूंट भरते हुए कमाल गहरी सोच में डूब गया। उसकी नजरों के सामने एक सूखा, वीरान भारत खड़ा था।



इस यात्रा में इलाहाबाद से जाने वालों में केवल कमाल था। रात को दिल्ली जाने वाली प्रयागराज एक्सप्रेस में लेटा-लेटा वह सोच रहा था कि इस पानी की समस्या में क्या सरकार को पूरी तरह दोषी मानना उचित है? इतनी बड़ी जनसंख्या, जो हर साल बढ़ती ही चली जा रही है, उसको पर्याप्त जल उपलब्ध कराना क्या बहुत सरल कार्य है? इस बात को वे मां-बाप नहीं समझते जो कुत्ते-बिल्लियों की तरह बच्चे पैदा करते चले जाते हैं और परिवार नियोजन को स्वीकार करने में झिझकते हैं। यह मूर्खता करते कुछ लोग हैं, मगर उनकी यह लापरवाही सारे देश को कितनी महंगी पड़ रही है।

कमाल के सामने अपने शहर के कई अस्पतालों के वे दृश्य उभर आए जब पानी की कमी से मरीजों की उचित देखभाल करना डॉक्टरों के लिए एक चुनौती बन गया था। अस्पताल की सफाई ठीक से न हो पाने के कारण बाथरूम और वार्ड में गंदगी ने कई ठीक होते मरीजों को दोबारा मौत के मुंह में धकेल दिया था। उसने दो वर्ष वहां काम किया था। कोई भी चीज वहां उपलब्ध नहीं रहती थी। जरूरत से ज्यादा मेहनत और रतजगा के कारण वह खुद सख्त बीमार पड़ गया था।

उस वक्त जमाल खां ने बेटे से कहा था, "मेरे पास तीन कमरे का छोटा मकान, बिना प्लास्टर का, चौक के पास मौजूद है, जिसका इल्म तुम्हारी मां को नहीं है। मैंने उसको तुम्हारी दादी के लिए बनवाना शुरू किया था, ताकि वह दूर ही सही, मगर इसी शहर में रहें। मैं उनसे सुबह-शाम मिल सकूंगा। फिर तुम्हारी छोटी अम्मी का घर भी पास था। अम्मा ने गांव जाने की जिद बांध ली थी। वहीं उनका इंतकाल भी हुआ। तब से वह मकान अधूरा-का-अधूरा रह गया। तुम मुनासिब समझो तो वहां क्लीनिक खोल सकते हो। गुंजान बस्ती है। आस-पास ऐसे लोग रहते हैं जिनकी खिदमत एक डॉक्टर को करनी चाहिए।"

कमाल को यह जानकर बहुत ताज्जुब हुआ था। साथ-ही-साथ अब्बू की कमजोरी पर भी ताव आया था कि आखिर वह अम्मी से इस हद तक क्यों दब गए? बड़े-बड़े ओहदों पर रहने वाला, गांव-शहर की व्यवस्था को संभालने वाला एक ईमानदार ऑफिसर अपने घर के इंतजाम को मजबूती से पकड़ न सका, आखिर क्यों? दादी का खयाल आते ही वह बहुत सारी मीठी यादों में खो गया। उसे याद है कि जब वह डॉक्टर-डॉक्टर खेलता था, दादी का झूठमूठ पेट खुलवा ऑपरेशन करता था, तो वह हँसकर कहतीं, "चल मुए डॉक्टर! जब सचमुच मुझे तेरी जरूरत पड़ेगी तो तू अपनी मां के पास होगा।"

हुआ भी वही। दादी के पास उस वक्त कोई न था। उसने अपने क्लीनिक

का नाम उन्हीं के नाम पर 'मसर्रत क्लीनिक' रखा था। उसका पूरा जोर इसी पर रहता था कि वह मरीजों को अपनी बातों से इतनी राहत पहुंचाए कि 'मसर्रत' शब्द सार्थक हो सके। इसलिए कमाल ने तनाव के समय भी ऐसी भाषा गढ़ ली थी जो हलकी-फुलकी थी। उसी के माध्यम से वह बड़ी-से-बड़ी मुसीबत के समय भी अपने को सहज दिखाने में कामयाब हो जाता था। सारा बचपन उसने तनाव में गुजारा था। घरेलू सियासत ने उसके दिल में मां की तरफ नफरत का बीज बोया था; मगर वह पनप न सका, क्योंकि मां ने उसको जरूरत से ज्यादा प्यार दिया था। उसके अंदर यह समझ पैदा हो गई थी कि उसे बुरी बातों से दूर रहना है, खासकर जो बातें बुरी लगती हैं, उनको दूसरों के साथ कभी नहीं दोहराना है।



दिल्ली पहुंचकर कमाल को इंसानी भीड़ का समुद्र देखने को मिला। जहां ठहरना था वहां पहुंचकर उसने मीटिंग में सही समय पर पहुंचने के चक्कर में सारा काम जल्दी निबटा लिया और लॉबी में आ बैठा। मीटिंग में सबका आपस में परिचय हुआ। नाम से कमाल अधिकतर लोगों को जानता था।

दिल्ली से बीकानेर की यात्रा ट्रेन से थी, जिसका लुत्फ बयान से बाहर था। चार-चार लोगों की टोली बन गई थी। जोरदार बहस जारी थी। पहले तो आस-पासवालों ने अपनी-अपनी सीट का परदा हटा अपना एतराज दर्ज किया; मगर उनकी नींद को उड़ना था। वह उड़ गई थी। अब वे बड़े ध्यान से नए तरह के यात्रियों की बातें सुनने में डूब गए थे।

''पामी...पानी का संकट मुझे पूरी नौटंकी लगती है। हमारे पास जल की अपार संपदा है; मगर हम उसकी व्यवस्था ठीक ढंग से नहीं कर पा रहे हैं।'' एक ने पहला शिगूफा छोड़ा।

''नेशनल वाटर ब्रदरहुड—एन.डब्ल्यू.बी.—ने बहुत बढ़िया काम किया है। सारे जमीन से जुड़े लोगों को इकट्ठा कर जल-संरक्षण और जल-संसाधनों की सुरक्षा और उसके प्रति जागरूकता बढ़ाने का काम शुरू किया है और मुझे पूरा विश्वास है कि समय रहते हम इस समस्या पर काबू पा लेंगे; वरना तो भगवान् ही मालिक है।'' दूसरे ने बड़े हौसले से कहा।

दूसरे ग्रुप में बोतलबंद पानी पर चर्चा चल रही थी। यह अलग बात थी कि बहस के दरमियान गला तर उन्हीं बोतलों से किया जा रहा था।

एक सज्जन बड़े जोश से बोल रहे थे, ''पानी की बॉटलिंग का धंधा अंततः पानी से वंचित करने का साधन बनता जा रहा है। इसका एक उदाहरण केरल के

पालक्कड जिले में प्लाचीमड़ा गांव का है, जहां कोकाकोला कंपनी ने पानी का 'बॉटलिंग संयत्र' लगाया था। इसके लिए कंपनी ने 300 से 600 फीट गहरे 30 बोरवेल खोदे और वह प्रतिदिन 15 लाख लीटर पानी जमीन से खींचने लगी। इसका नतीजा जानते हैं, क्या हुआ? सारे पोखर, कुएं, दो बड़े जलाशय और धान के खेत सूख चले हैं। इससे गांव के 300 आदिवासियों पर नया संकट आ घिरा है। अब बुनियादी सवाल यह है कि वहां के पानी पर गांव के लोगों का अधिकार है या फिर बहुराष्ट्रीय कंपनी का? नफा कहां गया और नुकसान किसके खाते में दर्ज हुआ?" आवाज के साथ इन साहब का सीना भी धौंकनी बना हुआ था।

"यह बड़ी खतरनाक समस्या हमारे सामने आ खड़ी हुई है। इसके प्रति आम लोगों में जागृति बहुत जरूरी है। वरना यहां पानी भी दूध के भाव बिकेगा और एक समय ऐसा आएगा जब अपनी ही नदियों का पानी पीना, वह भी खरीदकर, बहुत बड़ी ऐयाशी समझा जाएगा।" इस बार उठी आवाज में चिंता की गहराई थी।

तीसरा ग्रुप कुछ ज्यादा ही उत्तेजित हो रहा था। उनको लग रहा था कि हमने अंग्रेजों की जल-नीति को वैसे-का-वैसा स्वीकार कर अपनी भारतीय जल-व्यवस्था का बेड़ा गर्क कर दिया और कुएं-तालाब को आउटडेटेड करार देकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है। गुलामी हमारे खून से अभी गई नहीं है।

"सन् 1907 तक बहुत-से बड़े तालाब मध्य प्रदेश के दुर्ग और राजनांदगांव में बन रहे थे, जिनमे तांदुला नामक तालाब ग्यारह वर्ष की मेहनत के बाद बना। उससे निकाली जाने वाली नहरों-नालियों की लंबाई 513 मील तक थी।" यह साहब इतिहास की तरफ लौटे।

"कहते हैं, ऐसे लोगों को—जो अपनी परंपरा से जुड़े थे, उन्हें—अंग्रेजों की धमकियां मिलती थीं। इसी कारण सांसी, भील जैसी जातियों को—इस टकराव के चलते—अंग्रेजी राज ने ठग और अपराधी घोषित कर दिया। हमारे अभ्यस्त अनुभवी लोग गंवार बना दिए गए और उनकी जगह नई व्यवस्था लाई गई। अरे साहब, सन् 1800 में दीवान पूणैया मैसूर राज देखते थे। उस समय राज्य-भर में उनतालीस हजार तालाब थे। कहा जाता था कि वहां किसी पहाड़ी की चोटी पर एक कतरा पानी गिरे, आधा इधर, आधा उस तरफ बहे; क्योंकि दोनों तरफ इन बूंदों को संभालने वाले तालाब मौजूद थे। समाज के अलावा राज भी इन उम्दा तालाबों की देख-देख के लिए हर वर्ष धन देता था। ऐसे महारथी दूरंदेशी लोग अंग्रेजों के आते जाहिल करार दे दिए गए।"

चौथे ग्रुप का अंदाज भी जुदागाना था। उनका सारा क्रोध वनों के कटने और नदी में गाद के अतिरिक्त पशुपालन भी था, जिसने पर्यावरण को इस हद तक क्षति

पहुंचाई है कि शादाब इलाके भी बरबाद हो उठे हैं।-

"सारा कष्ट मुझे इस बात पर है कि बाढ़-सूखा योजनाओं पर जितना धन खर्च होना चाहिए उतना नहीं हो पाता है, जिसके कारण बचाव का काम मंद गति से चलता है और लाखों लोग हर वर्ष मुसीबतें झेलते हैं। राजस्थान के कुल सत्ताईस जिलों के चार हजार आठ सौ देहातों में से चार हजार दो सौ गांवों के लगभग तीन करोड़ से ज्यादा लोग सूखे की चपेट में आ चुके हैं। राज्य के बत्तीस जिलों में से चौबीस में भू-जल स्तर गिरा है। नागौर जिले की गिरावट 6.16 मीटर है। आप सोच सकते हैं कि हम किधर जा रहे हैं?" अपने ब्रीफकेस से दवाएं निकालते हुए एक साहब बोले और फिर दवा खाने लगे।

"महाराष्ट्र के पुणे और औरंगाबाद संभागों के सूखा के चपेट में आने का क्या कारण है, आप समझते हैं? तो सुनें, आप सब। असली कारण सह्याद्रि को बंजर बनाया जाना है। याद करें, कालाहांडी में कभी एक हजार तीन सौ मि.मी. वर्षा हुआ करती थी। यह सपना नहीं, पुस्तकों में दर्ज सच है; मगर जैसे ही वन काटे जाने लगे, सूखे के दैत्य सिरों पर मंडराने लगे। यही हाल दक्षिण भारत में तमिलनाडु के रामनाथपुरम, बुनियादीपुरम और मुतुरामलिंगन के ताल-पोखरों का हो गया है। सूख गए हैं, मगर इंसान को तो पानी चाहिए सो 'वाइगड' नदी के किनारे पानी के लिए रेत में गड्ढे बना पीने का पानी जमा कर रहे हैं।" दूसरे ने गहरी सोच में डूबते हुए कहा।

कमाल इनकी बातों को बहुत ध्यान से सुनता सोच रहा था कि हम मेडिकल वाले, इंसान के जिस्म का जिस तरह अध्ययन करते हैं ठीक उसी तरह हर क्षेत्र का आदमी अपनें विषय में गहरे उतरकर हर कोने की खबर रखता है और यह सूचनाएं दरअसल हम सबको आपस में साझा करनी चाहिए। इससे बहुत से भ्रम दूर हो जाते हैं। मैं भी तो हमेशा से यह मानकर चल रहा था कि तालाब, कुओं का पानी हाइजीनिक नहीं है, मगर जब इंजीनियर राय ने उस दिन बताया कि नलके का पानी भी कोई भरोसेमंद नहीं कि वह सद-दर-सद कीटाणुमुक्त हो। अपनी बात को साबित करने में उनकी दलील भी जरबदस्त थी कि नलके अकसर बीच से जब कभी रिसते हैं या उनमें किसी कारण से तोड़फोड़ होती है तो नल बंद होने के बाद पानी की वापसी के समय वे अपने साथ आसपास की गंदगी भी खींच लेते हैं और साफ पानी में उसे मिला देते हैं, जिससे स्टोर किया वाटरवर्क्स का पानी भी शुद्ध नहीं रह पाता है, लेकिन हम उसे शुद्ध समझकर इस्तेमाल करते रहते हैं।

"आप इस ओर भी तो ध्यान दें कि रोजी की तलाश में गांव से जो पलायन हो रहा है, उसने शहरों का जीवन संकटमय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उन

सबको पानी देना और जरूरत के अनुसार देना कितना कष्टकर होता जा रहा है! और उधर गांव मर्दो से खाली होकर अपनी स्थिति सुधारने की जगह अधिक बरबाद हो रहे हैं।" दूसरे ने उसी गहन-गंभीर आवाज में कहा।

इस बीच कुछ देर के लिए सन्नाटा छाया रहा। शायद बोलने वाले थक गए थे। सुनने वालों की चाह बढ़ गई थी। वह कुछ देर और भी नया सुनने के लिए व्याकुल रहे, फिर उनमें से एक ने धीरे से कहा, "आपकी परेशानी अपनी जगह, हमारी धरती पर किए गए अत्याचार अपनी जगह। आप लोग प्रबुद्ध हैं। परंतु मैं आपके सामने कह सकता हूं कि गांव-कस्बों में 'ठाकुर का कुआं' आज भी जीवित है! उन गांवों में जहां मीठे पानी से कुएं लबालब-भरे हैं, वहां दलितों को आज भी तीन रुपए घड़ा उसी गांव का आदमी बेचता है, आप इस समस्या का समाधान कैसे ढूंढ़ेंगे? यहां तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों की समस्या नहीं है, जो हमारी नदी के जल और धरती के गर्भ में छुपे जलाशय पर अधिकार जमा रही हों!"

इस आदमी का लहजा तीखा और तल्ख था। उसने सबको घूरा, मगर उसको कोई जवाब कहीं से नहीं मिला।

कंपार्टमेंट में खामोशी लंबी और गहरी हो उठी। ट्रेन उसी गति से आगे बढ़ती रही। कुछ ने लाइट बुझा अपनी सीट का परदा बराबर किया। उसकी देखा-देखी अन्य लोगों ने भी सोने की तैयारी शुरू कर दी।

यह देख वह आदमी जोर से कहकहा मारकर हँस पड़ा और बोला, "यानी आप लोगों के पास इसका कोई जवाब नहीं है, तभी सबकी बोलती बंद हो गई है।"

बहस करने वाले सब कुछ जानकर भी क्या बोलते! आखिर यह एक बहुत बड़ा सच था। उसके विरोध में लिखते-बोलते सदियां गुजरी जा रही हैं, मगर कहीं कोई बदलाव नहीं। इंसान प्राकृतिक स्रोत के प्रति ही नहीं, बल्कि अपनों के प्रति भी बड़ा मगरूर है। जिसका इतिहास हर काल में अपने को दोहराने बैठ जाता है—किसी-न-किसी बहाने।

12

नींद के खुमार में समीना को लगा, बारिश की हलकी फुहारें आंगन के पौधों पर गिर रही हैं। एक तरावट-सी उसके दिमाग में छा गई। जब वह उठेगी तो सारा आंगन नहाया मिलेगा। इस खयाल के आते ही उसके चेहरे पर हलकी मुसकान तैर गई और मगन हो वह करवट ले गहरी नींद में डूब गई। सोते में भी वह बारिश की बूंदों

से नहाई गौरैयों को देख हँस रही थी। काले-सुरमई मेघ अपने लहराते दुपट्टे के आंचल को निचोड़ते आगे बढ़ रहे थे। खिड़कियों के शीशे पर पड़ी बूंदें और बहती धारें एक अलग तरह की पेंटिंग बना रही थीं। गड्ढे भर गए थे और रास्ते छोटी-छोटी नदियों में बदल गए थे। समीना गहरी नींद में डूबती चली गई। नम हवा उसे थपकियां देने लगी।

"लिल्लाह, समीना! दस बजने को आए, अब तो उठो!" खुरशीदआरा ने बेटी का बाजू हलके से सहलाया। समीना उसी तरह नींद में डूबी रही।

यह देखकर मां ने इस बार जरा जोर से बाजू हिलाया, "अब उठो न!"

"अम्मी, मुझे परेशान न करें...सोने दें...इतनी अच्छी बारिश..." बाकी शब्द समीना के मुंह में ही रह गए, फिर वह करवट बदल गहरी नींद में डूब गई।

"अब उठो भी, तीसरी बार चाय आई है। ठंडी होने से पहले पी लो। तुम्हारी सास आकला बेगम के भी कई फोन आ चुके हैं सुबह से। बारह बजे उन्होंने सुनार को घर आने को कह रखा है!" इतना कहकर खुरशीदआरा बेटी के पास से उठीं और कुर्सी पर पड़े, रात के उतारे, समीना के कपड़ों को तह करने लगीं। तभी फोन की घंटी बज उठी। समीना हड़बड़ाकर उठ बैठी। बड़ी दिलकश मुस्कान के साथ उसने खुमार-भरी आंखों से सामने खिड़की की तरफ देखा और अंगड़ाई लेते-लेते बीच में ही रुक गई।

"अम्मी! बारिश...?" इतना कह समीना ने पलकें झपकाईं।

"बारिश कहां? सुबह भी न्यूज में था कि मानसून इस बार लेट है!" इतना कह खुरशीदआरा कमरे से बाहर निकलीं।

"फिर मुझे कैसे गुमान हुआ कि बारिश हो रही है?" बाहर छिटकी धूप देख झुंझलाई-सी समीना बाथरूम की तरफ बढ़ी।



समीना जब ससुराल पहुंची तो बरामदे में टंगी घड़ी ने टन-टन करके बारह बजाए। वह सीढ़ियां चढ़ती तेजी से सास के कमरे की तरफ बढ़ी, जो सऊदी से आई अपनी बेटियों के संग गप्पें मारने में मसरूफ थीं। उसको देखकर तीनों एक साथ चहक उठीं। समीना आगे बढ़, सास के गले लग, उनके गाल का चुंबन ले, अपनी दोनों बड़ी ननदों को सलाम कर, उनके गले मिली; फिर सामने रखे सोने के सेटों के खुले डिब्बों पर उसकी नजर पड़ी।

"क्या डिजाइन है!" समीना ने तारीफ की।

"एक सेट आपके लिए भी है, समीना। अम्मी और आप पसंद कर लें। फिर

सफिया का चुनाव अपने-आप हो जाएगा।'' बड़ी ननद कामनी ने मेकअप से पुते चेहरे पर मुस्कान लाते हुए कहा।

''कायदे से पहले सफिया को पसंद करने का हक बनता है। क्यों बड़ी अम्मी, ठीक कहा न मैंने?'' समीना ने एक सेट को उठाते हुए कहा।

''जैसा सोना कभी हमारे घरों में था, खालिस! रंग में सुनहरा पीला। अब तो मिलावट के जोर ने असली-नकली का भी फर्क मिटा दिया है।'' शकरआरा बोलीं।

''आपके सिर की कसम, अम्मी! मैं तो कल बाजार जाकर दंग रह गई। चांदी के जेवरों पर सोने का पानी, ऊपर से डिजाइनें ऐसी कयामत की कि बस लगता था, सब खरीद लो!'' मझली ननद यासमीन ने अपनी गरदन हिलाते हुए कहा।

''हाय मझली आपा, आपके कानों के बुंदे तो गजब के हैं!'' समीना चहकी।

''पसंद हो तो ले सकती हैं।'' यासमीन ने कान की तरफ हाथ ले जाते हुए कहा।

''न-न बेटी! समीना के पास ढेरों हैं। तुम पहनो, तुम्हें मुबारक हो, यह तो बस जो पसंद करेगी, फिर पहनने की जगह वह लॉकर में कैद हो जाएगा।'' शकरआरा बीच में बोल पड़ीं।

''आप भी अम्मी!'' इतना कह मझली रुक गई।

''अब जेवर क्या पहनें आपा, यहां के हालात बदल चुके हैं। सोना पहनना चोर को घर का रास्ता दिखाना है!'' समीना ने झेंपी आवाज में कहा।

''जेवर को छोड़ो, तुम तो जी भरकर सिंगार भी नहीं करतीं। जब देखो, मुई समाज-सेविका की तरह सिर झाड़, मुंह पहाड़ बाहर जाने को तैयार हो जाती हो।'' शकरआरा ने रूठे स्वर में कहा।

''अरे अम्मी, समीना तो नमक की ढेली है। उसको सजने की क्या जरूरत!'' बड़ी ने छोटी भाभी की ठोड़ी पर उंगली लगा उसे चूमते हुए कहा।

''सजे तो हीरे की खान लगेगी...खैर, छोड़ो ये बातें। अब सेट पसंद करो, वरना चुन्नीलाल सर्राफ आते होंगे छड़ी टेकते।'' शकरआरा ने कहा और हँस पड़ीं।

''हमें तो अम्मी, वहां सजना और मेकअप करना जरूरी है। सऊदी में हर औरत कोहनी तक चूड़ी पहने, गले में एक-से-एक डिजाइन की चेन लटकाए, फुल मेकअप में घर में काम करती नजर आती है। महफिलों की बात तो छोड़िए।'' बड़ी ननद ने कहा।

''आपा, तुम तो आजकल उम्र छुपाने के चक्कर में कुछ ज्यादा ही गहरा मेकअप करती हो!'' मझली बड़की के चेहरे को गौर से देखती-देखती एकाएक बोल पड़ी।

"चल जलकुकड़ी! बचपन की तेरी आदत अभी गई नहीं। अपना चेहरा देख। मेकअप करना, न करना पता ही नहीं चलता है। रंग भी लिपस्टिक के ऐसे पसंद करती हो कि लगता है, होंठों पर कत्था मल के आई हो।" बड़ी ननद इतना कहकर उठी और पर्स से आइना निकालकर चेहरा देखने लगी।

इस बात पर समीना व मझली मुस्कराए बिना न रह सकीं।

"बारह से एक बज गए, न चुन्नीलाल का पता है, न नई दुल्हन का। शादी को हफ्ता बाकी है, मगर घूमना-फिरना, आना-जाना नहीं छूट रहा है...तुम लोग आई हो तो गहने-कपड़े में डूबी रहती हो, यह नहीं कि बहन को पकड़ मांझे में बिठा दो।" शकरआरा ने हल्की डिजाइन का डिब्बा बंद करते हुए कहा।

"अब समीना, तुम उठाओ न।" बड़ी ने कहा।

"मैं तो अपनी पसंद के तीन सेट लाई हूं, पसंद न आने पर भी कुछ दिन जरूर पहनिएगा!" इतना कहकर मझली ने एक-एक डिब्बा मां और भाभी की तरफ बढ़ाया।

"तीसरा तो दिखाओ।" बड़की ने व्याकुलता से कहा।

"नहीं, वह छोटी खुद देखेगी...आप लोग अपना सेट तो देखें न!" मझली बोली।

"ओह!...यह तो बड़ा आर्टिस्टिक है! क्या बारीक काम है!" शकरआरा ने डिब्बा खोलते हुए कहा। उनकी आंखों की चमक देख जहां मझली का चेहरा खिल गया वहीं पर बड़ी का चेहरा मुरझा गया।

"इस तरह की चीजें बाजार में भरी थीं, मगर मैं सस्ती की जगह महंगी चीजें खरीदना चाह रही थी।" धीरे-से बड़ी ने कहा, जिसकी तरफ किसी ने कान नहीं धरा और सब समीना के सेट के डिजाइन को देखने में लग गए। समीना को अपना सेट पसंद आया था। बड़ी को बुरा न लगे, इसलिए वह चुप रही, मगर हँसती आंखों से उसने मझली को 'शुक्रिया' कहा और हार को गले में डाला।

"जी, चुन्नीलाल आय गए हैं।" आया ने इत्तला दी।

"उनको दालान में बिठाओ, पानी पिलाओ, हम लोग आते हैं!" कहती हुई शकरआरा ने दोनों मखमली डिब्बे उठाए और सेफ खोल उसमें रख दिए।

"अम्मी, चाहे जितने जेवर दुनिया-जहां में देख लो, मगर आपके जड़ाऊ झुमके और गुलूबंद का कोई जवाब नहीं है।" मझली इतना कहकर उठी और आखिरी बचा डिब्बा उठाकर कमरे से बाहर निकल गई।

मां ने बड़ी बेटी के उतरे चेहरे को देखकर कहा, "तुम्हारा लाया सेट मैं 'रतजगा' के दिन पहनूंगी। काही रंग की कामदार साड़ी है, उस पर गजब से फबेगा। अब

उठो, बहन के लिए आए जेवर देखो। सच पूछो तो सभी नए जेवर हैं, मगर उसकी जान पुराने डिजाइन के सतलड़े और कंगन में अटकी थी। हिंदुआनी डिजाइन थी, इसलिए खास तौर से चुन्नीलाल को बुलाया, ताकि अपनी उस्तादी दिखाएं। अभी तक कोई सुनार उनकी टक्कर का इस शहर में दूसरा तो पैदा हुआ नहीं। उनकी आंखें भी जवाब दे रही हैं। मशीन की बारीकी के आगे अब हाथ की कारीगरी का कोई मोल भी तो नहीं रह गया। उनके बेटों ने सीधे मशीन से रिश्ता जोड़ लिया है।" शकरआरा ने कहा।

"अब अम्मी, जमाने के साथ इंसान को बदलना तो पड़ता है, वरना पिछड़ जाने का दर्द झेलना पड़ता है!" बड़ी ने कहा और बड़ा-सा पर्स उठा मां के पीछे हो ली।

"अब बड़ी बाजी का मूड कई दिन तक बिगड़ा रहेगा।" समीना ने गहरी सांस भरी और धीरे-से कहा।

आजकल घर में दोनों बेटियों की पसंद का खाना बन रहा था। साल में एक फेरा दोनों का लग जाता है, मगर इस बार मायके से बुलावा गया था बहन की शादी में शिरकत करने के लिए, इसलिए वह मेहमान थीं और इस बार उनकी खातिर हर बार से ज्यादा होनी चाहिए थी। दोनों दामाद अभी पहुंचे नहीं थे। शादी से एक दिन पहले उन्हें आना था और बेटियों को लेकर वापस चले जाना था। शकरआरा को जरा भी उम्मीद न थी कि उनको इतने अच्छे खानदान के पढ़े-लिखे लड़के मिल जाएंगे। उस वक्त उन्हें एक ही बात चुभ रही थी कि कहने को दोनों इंजीनियर हैं, मगर गैर-मुल्कों में बसे हुए हैं। बड़े दामाद ने तो पिछले साल अपने मां-बाप को भी अपने पास बुला लिया था। मझली की सास को मरे बीस साल गुजर गए और अब इस बुढ़ापे में बाप ने तीन बच्चों की मां से निकाह कर लिया है, जिससे मझली का मियां अपने बाप से बड़ा खफा रहता है। उसने तो साफ कह भी दिया है कि इस चालाक औरत के तीनों बच्चों का कोई हक जायदाद में नहीं होगा। शादी आपने की है, खानदानी रिवायत ने नहीं। इसके चलते वह हर साल आता है और लखनऊ में पंद्रह दिन रुककर आस-पास के इलाकों में फैले अपने बाग, खेत और इमारतों की देखभाल खुद करता है। बाप बीच में बोल देते हैं तो फिर एक लंबी बहसनुमा लड़ाई शुरू हो जाती है। कई बार जमाल खां ने कहा भी, "अमां, काहे के झंझट में पड़ रहे हो! इस जायदाद से कहीं ज्यादा कमा रहे हो। लानत भेजो इन सब पर।"

"बात उसूल की है।" मझले दामाद ने जवाब दिया और उस पर मझली बेटी ने लुकमा दे दिया।

"अरे अब्बी! अपनी जायदाद है, भला क्यों गैरों के हवाले करें?"

दोनों लड़कियां इंटर पास हैं, मगर अपने शौहरों को इस तरह काबू में कर रखा है कि अकसर उनकी हमजोलियां कह बैठती हैं कि हमें भी वह जादू-टोना सिखा दो न, ताकि हमारे मियां हमारे कहने पर चलें। मझली उनकी बाते सुनकर कहकहा लगाती, फिर कहती, "यह तो हमारी अम्मी का गुन है, जो दूध में घुला-मिला हमने पिया है!"

बड़ी भी मुस्कराकर कह उठती, "खून की उस तासीर को तुम्हें कैसे बताएं, यह तो विरासत की बात है!"

शकरआरा की कभी अपनी सास से नहीं पटी थी। ऐसा कोई दिन नहीं गुजरता था जब सास-बहू में तकरार न होती हो। तंग आकर जमाल ने अपना ट्रांसफर करवा लिया था। मां के खत आने पर भी मियां-बीवी में तल्खी हो जाती थी, मगर किस्मत ऊंची लिखवाकर आई थीं। अब बहू समीना बेटियों से बढ़कर उनका खयाल करती है और दोनों बेटियों के ससुरालवाले जब मिलते हैं, शुक्रिया कहना नहीं भूलते कि आपने बेटियों को बड़ी अच्छी तालीम दी है। बेटियों ने मां के बरताव को कभी पसंद नहीं किया। शायद इसीलिए वह दादी के बहे आंसुओं का कफफारा अदा करना चाहती थीं। तभी हर बार छुट्टियों में वह दादी के पास दस-बारह दिन रहने चली जातीं। उनके इस बरताव से जमाल खां के दिल को बड़ी ढाढ़स बंधती थी कि बहू न सही, बेटियां तो दादी की खिदमत कर देती हैं। वही आदत दोनों ने ससुराल में निभाई।

अकसर जमाल खां दोनों बेटियों के सिर पर हाथ रखकर कहते, "मुझे तुम दोनों पर नाज है।"

दोनों बेटियों से छोटा बेटा कमाल था। उससे छोटी बेटी सफिया थी, जिसकी अब शादी होने वाली थी। खुदा ने शुरू-शुरू में उनकी जिंदगी में जितनी कड़वाहट दी थी, अधेड़ उम्र में उतनी ही मिठास बख्शी, जिसका नमूना ये चार औलादें हैं, जो मां पर नहीं पड़ी थीं। कमाल अगर समीना को बचपन से पसंद न करता और अंत तक अपनी बात पर अड़ा न रहता तो शकरआरा बेगम अपनी सहेली की बेटी को कब की ब्याह लातीं। तब इस घर का नक्शा कुछ और होता। इतने आराम से आकर लड़कियां महीना-पंद्रह दिन मायके में न रह जातीं और न कमाल अपने क्लीनिक से दस बजे रात को लौट पाता। तब रोज एक मुकदमा होता, उसकी पेशी होती और फैसला सुनाने वाला जज और बहस करने वाला वकील अपने हक में न्याय देता। जमाल खां को यकीन है, उनकी तीसरी बेटी भी उनका सिर बुलंद रखेगी, जो कि मां की तरह तुनकमिजाज है, मगर उसका यह गुस्सा किसी बड़ी लड़ाई में तब्दील नहीं होता और वह कुछ देर बाद हँसने लगती है।

"मैं ब्यूटी पार्लर होकर आती हूं, तब तक तुम दोनों सफफो के जोड़े लगा

डालना।'' शकरआरा ने बैग उठाते हुए कहा।

''अरे अम्मी, मुझे खुद फेशियल करवाना था। भौंहें नहीं देख रही हैं?'' बड़ी ने फौरन अपनी भौंहों पर हाथ फेरते हुए कहा।

''चलो! मझली, तुम भी चलो, समीना सब देख लेगी।'' इतना कहकर तीनों बाहर निकल गई। समीना हकबकाई-सी खड़ी उनका मुंह देखने लगी—शादी का घर घंटे-दो-घंटे बाद कोई-न-कोई मेहमान आता-जाता रहता है!

समीना ने जोड़ा लगाना शुरू कर दिया! इस बीच सफिया भी भाभी का हाथ बंटाने लगी। यह देखकर समीना न-न करती रही, मगर सफिया का एक ही जवाब था कि ''भाभी, मैं बोर हो रही हूं। मांझे का नाम दे आप लोगों ने मुझे सारे दिन कमरे में बंद कर रखा है। मेरी तो सांस घुट रही है।''

अभी दो ही जोड़े लग पाए थे कि राबिया की अम्मा आ गईं। पहले गौर से नाक पर उंगली रखे खड़ी ननद-भावज को देखती रहीं, फिर एकाएक बोल उठीं, ''क्या जमाना लग गया है! दुल्हन अपने जोड़े खुद लगा रही है! अरे दुल्हन, का हम मर गए थे। अरे, किसी से कहला भेजतीं कि राबिया की अम्मा, आकर जोड़ा लगाओ और गाना-बजाना करो। सुहाग का जोड़ा न हुआ...तोबा! तोबा! मेरे मुंह में खाक!'' इतना कह राबिया की अम्मा कमरे से बाहर निकलीं।

तभी सफिया बोल पड़ी, ''सारे टैगोर टाउन में इस बात का ढिंढोरा पीटकर लौटेंगी।''

पंद्रह मिनट बाद राबिया की मां, अपनी तरह की कई औरतों के संग ढोलक उठाए लौटीं। दो औरतों ने कमरे के कोने में तेज नुकीले स्वर में सुहाग गीत गाने शुरू कर दिए, बाकी चार ने जोड़े बनाने। यह देखकर समीना तेजी से उठी और बुआ से चाय-नाश्ते का इंतजाम करने को कहकर लौटी तो देखा, सफिया बुरा-सा मुंह बनाए बैठी है। जोड़ा उनकी तरह से सज रहा था। समीना कुछ बोली नहीं, मगर ननद के गुस्से को समझ जरूर गई। परेशान तो वह भी हुई थी इन अनजान औरतों को देख, मगर कुछ सोचकर वह चुप थी।

''आप लोग टांकने का काम करें मैं जोड़ा सजाती हूं, ताकि काम जल्द निबट जाए!'' कुछ देर बाद समीना ने कहा।

''ठीक है!'' इतना कह औरतें सुई में तागा डालने में जुट गईं और समीना कपड़े तह कर, एक-दूसरे पर रख, बांकड़ी और लचके की डिजाइन उस पर बनाकर जोड़ा आगे बढ़ाने लगी। जब तक चाय-नाश्ता आता, कई जोड़े लगकर खत्म हुए। हँसी-मजाक चल ही रहा था कि शकरआरा भी बड़ी-मझली के साथ घर लौट आईं। राबिया की अम्मा महाचापलूस औरत थी। अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से शकरआरा

को अपने चंगुल में कर रखा था। इस समय भी वह अपनी वाहवाही कराना चाह रही थी, मगर शकरआरा बेटियों के साथ किसी दूसरे ही मूड में थीं। औरतों के जाने के बाद तीनों छोटी के बिस्तर पर आड़ी-तिरछी लेट गई।

"मेरी तो आंखें बंद हुई जा रही हैं!" बड़ी ननद ने सिर के नीचे तकिया रखते हुए कहा।

"मेरा भी यही हाल है। वैसे थके बदन को ब्यूटी पार्लर जाकर कितना आराम मिलता है!" मझली बोली।

"अरे समीना रानी! एक गरम खुशबूदार चाय की प्याली मिल जाती, वह भी तुम्हारे अपने हाथ की बनी, तो क्या बात थी!" बड़ी ने लेटे-लेटे बदन तोड़ा।

"अभी लीजिए!" इतना कह समीना कमरे से बाहर निकली।

"अप्पी, तुम जब से आई हो, किसी काम में हाथ नहीं बंटाती हो। यही हाल बज्जो का है। देखतीं नहीं, भाभी पर सारे काम का बोझ है!" सफिया तेज लहजे में बोली।

"सूप तो सूप, चलनी भी लगी बोलने!" बड़ी को सफिया का यह तेवर देख हँसी आ गई। दुलार से उसका गाल नोच बोली, "गपल्लो!"

"मजाक छोड़िए...या फिर मुझे उनका हाथ बंटाने दीजिए।" सफिया ने फैसला सुनाया।

"अरे छुटकी, वहां सारा काम खुद से करना पड़ता है, यहां तो आराम करने दे मेरी हमशीरा।" मझली भी खिलखिला उठी।

"अच्छा! रोब तो तुम दोनों ऐसा जमाती हो जैसे दुनिया का हर आराम, हर चीज तुम्हारे पास हो। आज कह रही हो कि..." सफिया ताव में खड़ी हो गई।

"चीजें हैं न, मगर उन्हें चलाना तो पड़ता है, जैसे बरतन धोने की मशीन, बिजली की झाड़ू।" बड़ी को छोटी बहन के तेवर देख जाने क्यों हँसी आई जा रही थी।

"माफ करना...यह सब यहां भी मौजूद है। ज्यादा रोब न जमाया करें आप दोनों हम पर।" इतना कह सफिया मां के पास आकर बैठ गई।

"काहे बहनों से लड़ रही हो? चार दिन बाद रुखसत होने वाली हो। मीठी-मीठी कह और सुन, यह दिन फिर लौटकर नहीं आने वाले हैं।" शकरआरा ने बेटी का सिर सहलाते हुए कहा।

दोनों बहनें चुप हो गईं और सफिया उदास! कमरे में खामोशी छा गई। तीनों औरतों को शायद अपनी-अपनी विदाई याद आ गई थी।

सफिया तीनों के उदास चेहरे देख एकाएक बोल उठी, "मुझे शादी नहीं करनी है...अम्मी, आप और भाभी अकेली हो जाओगी। मुझे नहीं जाना है यह घर छोड़कर! शादी के लिए मना कर दो।"

उसके इस बचपने पर उदास मां-बहनें एकाएक हँस पड़ीं। समीना चाय की ट्रे लेकर दाखिल हुई तो उसको कमरे का मौसम बिलकुल बदला हुआ महसूस हुआ। सफिया रो रही थी, बाकी सब हँस रहे थे। बिन बादल के बूंदें टपक रही थीं, साथ ही बिजली भी कौंध रही थी।

13

गाड़ी डूंगरगंज स्टेशन पर रुकी तो वहां अतिथियों का स्वागत करने संस्था के लोग, जो वहीं रहते थे, सवार हुए। चूंकि सेमिनार का आयोजन बीकानेर में था, इसलिए वे सब बीकानेर स्टेशन पर एक साथ ट्रेन से उतरे। कमाल ने गहरी नजरों से अपने चारों तरफ देखा और महसूस किया कि हर शहर का कोई हिस्सा किसी न किसी अन्य शहर के मोहल्ले से समानता जरूर रखता है। जैसे एक मां-बाप के बच्चे जो भले ही नाम और नैन-नक्श, कद-काठी से अलग-अलग हों मगर उनमें कहीं न कहीं से मां-बाप की झुनक आ ही जाती है। रहने का इंतजाम होटल में था। हरियाली से भरे उस होटल के मालिक की रुचि साहित्यिक थी। कवि कल्याण सिंह राजावत की कविता के बोल सुनाते हुए होटल के मालिक ने उनका स्वागत किया :

म्हारौ राजस्थान रंगीलौ, इण री मीठी भासा।
इण रै रंग में सभी रंगीजे, प्रेम, प्रीत, परिभासा।

कमाल के मन में राजस्थान को लेकर एक उत्साह था! जिज्ञासा थी। उसके सौंदर्य को देखने की लालसा थी, परंतु चाहने के बावजूद इस इलाके में वह कभी नहीं आ पाया था।

कमरे में सामान रख उसने चाय मंगाई। साढ़े दस बजे सेमिनार इसी होटल के सभागार में शुरू होना था। अभी पूरे दो घंटे शेष थे। उसने मोबाइल जेब से निकाला ताकि समीना को अपने पहुंचने की इत्तला दे दे, मगर घंटी जाती रही, फोन नहीं उठा। चाय आ गई थी। उसने चाय का घूंट भरते हुए, ब्रीफकेस से निकालकर अपने लेख को उलट-पलटकर देखना शुरू कर दिया।

सेमिनार के पहले चाय का इंतजाम था। स्थानीय लोग धीरे-धीरे जमा हो रहे थे। परिचय के साथ बातचीत का सिलसिला आरंभ हो गया। तालाबों पर काम करने

वाले सज्जन ने कमाल से बातें करते हुए बताया कि यहां पर बहू से घी का घड़ा टूट जाए तो उसे सास से इतनी जली-कटी नहीं सुनने को मिलती थी जितनी पानी की गगरी के फूट जाने पर...पानी की किल्लत ने उसको इस हद तक महत्त्वपूर्ण बना दिया था कि राजस्थानी पड़ोसी को घी खुशी-खुशी दे देता मगर पानी नहीं...

उनकी बात पर कहकहा लगा, पास खड़े होटल के मालिक बोले, "शंकरदान साभोर कह गए हैं :

"पाणी रौ कांई पिवै, रगत पियोड़ी रज्ज।

संके मन में आसमझ, घण न बरसै गज ।।"

अर्थात्—वीरों का भरपूर रक्त पी चुकी यह भूमि पानी क्या पिएगी, यही संकोच करते हुए इस पर बादल अधिक नहीं बरस पाते हैं।

"इसका मजा तो वही ले सकता है जो बीकानेर का इतिहास जानता हो, अपने डाक्टर साहब की तो यह पहली यात्रा है...बार-बार आएं तो इस धरती को जाने।" किसी ने फब्ती कसी।

कमाल ने चेहरा घुमाकर कहने वाले को देखा।

चाय खत्म कर लोग कुर्सियों की तरफ बढ़ रहे थे। भूमिगत सभागार ठंडा था मगर कमाल को सीलन-भरी घुटन का अहसास हो रहा था। उसने मन-ही-मन तय कर लिया था कि भ्रमण का जो कार्यक्रम शाम को रखा गया है उसमें वह एक-दो गांव देखने की अपनी इच्छा रखेगा। केवल एक-दूसरे के अनुभवों, बौद्धिक विवेचना एवं स्थानों के भौगोलिक विवरण तक वह अपने को सीमित नहीं रखेगा! जब आया है तो क्यों न स्थिति को खुली आंखों से देखकर लौटे। सेमिनार के बाद कुछ मुद्दों पर चर्चा चली, फिर भीड़ छंटने लगी। दोपहर के खाने पर उसका आग्रह आयोजकों ने मान लिया और तय पाया कि कल सुबह आसपास के एक-दो गांवों को देख लिया जाएगा। गरमी काफी थी। कमाल ने कमरे में पहुंच टी.वी. ऑन किया। कोई फिल्म आ रही थी। घर फोन लगाया तो गाने और ढोलक के शोर में समीना से कोई बात न हो सकी सिवाय उसके 'हलो, हलो' के! कमाल थका हुआ था सो उसकी आंख लग गई।



गांव की तरफ कार दौड़ रही थी। दोनों तरफ नंगी धरती फैली थी। कुछ वृक्षों के झुंड भी बीच में पड़ते और कहीं-कहीं खेत भी। एकाएक ड्राइवर हँस पड़ा और पास बैठे तिवाड़ी से कुछ कहने लगा। वह भी हँसे फिर कमाल के लिए उन्होंने राजस्थानी

में सुना हुआ हिंदी में बयान किया।

"यहां अगर कोई खेत में काम कर रहा हो और रास्ते से गुजरने वाले ने कहीं पूछ लिया कि चौधरीजी नमस्ते, क्या हाल हैं, तो चौधरी फौरन पूछेगा 'प्यासे हो क्या?"

जाने क्यों कमाल को इस सच पर हँसी नहीं आई। पास बैठे दूसरे सज्जन खिलखिला उठे और कमाल को महसूस हुआ कि उसे हँसना न सही, मुस्कराना तो चाहिए था।

गर्म रेत में कार धंसकर खड़ी हो गई। कार की ठंड से निकल कमाल को एक जोर का झटका लगा—बाहर आग बरस रही थी। तिवाड़ीजी ने बताया कि इस गांव का नाम 'बच्छासर' है। सामने एक छोटा-सा बिना दरवाजे वाला कमरा था जिसमें दो-तीन खाटें पड़ी थीं। वहीं कोई लेटा-बैठा था और चारों तरफ रेत-ही-रेत थी। शायद आबादी कहीं अंदर चंद पेड़ों के पीछे हो। बातें राजस्थानी में चल रही थीं। कमाल को लगा—जो दिखाना होगा, उसका इंतजाम चल रहा है। अंदर खाट पर बैठते ही सफेद लोटों में ठंडा-ठंडा पानी आ गया। कुछ और लोग भी आकर बैठ गए। पता चला कि वे लोग यहीं हमारे सवालों के जवाब देंगे! तिवाड़ीजी इंटरप्रेटर बन गए।

जो सज्जन बोल रहे थे वह मेधावाल थे यानी बुनकर, मगर बाजार की मार से उन्होंने अपना खानदानी पेशा तज दिया था। अब बूढ़े हो चले थे इसलिए नई-पुरानी बातों को मिलाकर बोल रहे थे।

"बेरोजगारी, भ्रष्टाचार है...शहर में कमाव, गांव में भूखे मरो...यह गांव भी क्या था? अब पंद्रह साल पहले यहां नलकूप लगने से पीने का पानी उपलब्ध हुआ है, मगर खेती के लिए वही सूखापन। यहां धरती तो उपजाऊ है बारिश हुई नहीं कि जमीन ने कल्ले फोड़े। फसल अच्छी हुई तो एक-दो वर्ष ठीक गुजार लेते हैं वरना...रही मजदूरी। पास में मोरंग की खान है वहीं जवान चले जाते हैं, मगर कितनों को मौत निगल लेती है जब कभी खान में कोई हिस्सा गिरता है...क्या बताएं बिपता? नेता वोट के समय भेड़ के बाल मूड़ने के लिए आते हैं, बातें बनाते हैं, मगर कुछ पूरा नहीं होता। कहते हैं, यहां तक नहर नहीं आ सकती है। नहर के लिए रास्ता ठीक नहीं।" बूढ़ा इतना कह चुप हो गया। बाल्टी में पानी और स्टील के छोटे-छोटे गिलासों में चाय आ गई थी।

"लो, पानी लो। मीठा है, ठंडा है।" एक लड़के ने शर्माते हुए कहा।

"उसी नलकूप का है जो यहां लगा है, मगर कहीं-कहीं तो इन नलकूपों से ऐसा पानी आता है कि जानवर भी छटपटा जाता है...हर दस किलोमीटर पर पानी की किस्म बदल जाती है, फिर नलकूप लगना, न लगना सब बराबर हो जाता है।" दूसरे बूढ़े ने कहा।

"समुंदर का पानी धरती में अंदर-अंदर जाकर गड्ढों में जमा हो जाता है और नलकूपों से निकल आता है।" तिवाड़ीजी ने सरल भाषा में व्याख्या की।

चाय का घूंट भरते हुए सब चुप थे। कोनेवाली खाट पर लेटा आदमी अभी भी बेसुध पड़ा था। पिए था या थका हुआ—उसके चेहरे से कुछ पता लगाना मुश्किल था। कमाल ने उधर से आंखें फेरीं और सामने जमा हो गए बच्चों की तरफ देखा। उन्हीं के पास एक मर्द आ, चौखट से पीठ लगाए, पलथी मारकर बैठ गया।

कमाल ने खाली गिलास रखते हुए कहा :

"चलो, नहाने-धोने का तो आराम हो गया।"

"हां, पहले तो कपड़ा धोने का रिवाज नहीं था। अब..." उसकी बात बीच में काट पालथी मारे आदमी बोल उठा, "आराम है, मगर शाम को लौटो तो इतनी थकान चढ़ी रहती है कि जी किसी चीज का नहीं चाहता!"

"मजदूरी में बचता क्या है? आने-जाने के किराये में सब..." तीसरे अधेड़ ने दोनों हाथ झाड़कर कहा। फिर बोला, "हम कर्ज लेकर 60-70 हजार लगा नहर बनावा भी लें तो बिजली कहां रहती है कि पानी नहर में बहेगा?" उसकी बात से फिर खामोशी छा गई।

"और तो और, आगोर सारे खराब हो गए हैं। बारिश के पानी के बहाव के रास्तों में घर बन गए हैं, जिससे पानी तालाब में गिरने की जगह इधर-उधर अपना रास्ता बना लेता है।" किसी की आवाज उभरी।

"समय बदला है, मगर इतना नहीं कि हम चैन से खा-पी सकें...आज से बीस वर्ष पहले यहां का हाल यह था कि खेत जोतते हुए अगर प्यास लगती तो गढ्ढे में कीड़ा-पड़ा पानी जिसमें जानवर का मूत भी मिला होता, उसमें 'बूर' डालकर हम पी लेते थे। बूर सुगंधित वनस्पति है उस घास से बास मर जाती थी।"

"अरे, घर भी लीपना होता तो हम जानवर के मूत्र में ही मिट्टी गूंधते थे।" दूसरा बूढ़ा बोला।

कमाल अंदर से हिल गया। ऊपर से अपने को सहज बनाए रखा और धीरे से पूछ बैठा, "इधर कौन कौन-सी बीमारी ज्यादा फैलती है?"

"औरीका और सिवड़।" अधेड़ ने जवाब दिया।

"टायफाइड और चेचक!" तिवाड़ीजी ने बताया।

"यहां सांप बहुत हैं।" एक जवान ने हिरन की तरह चौकन्नी आंखों को झपकाते हुए कहा।

"पेणा नाम का सांप सोए आदमी की छाती पर चढ़ उसकी सांसें गिनता है

फिर दुम मार, सोते को जगाकर जता भी जाता है कि मैंने अपनी फुंकार द्वारा तुम्हारे सांसों में जहर भर दिया है। इसका इलाज 'गोगाजी की मढ़ी' है, वही भगवान हैं जो जीवन देते हैं या फिर मृत्यु...दूसरा सांप गुरावा है जो जहरीला नहीं होता, मगर कुमारा नाम का पीला सांप बहुत जहरीला होता है।'' दूसरा जवान बोल उठा।

''बांडी, बहुत जहरीली जिव है। यहां-वहां छुपी रहती है। अनजाने में आने-जाने वालों पर उचककर काट खाती है। चूंकि वह मिट्टी खाकर दोबारा जीवित हो जाती है इसलिए उसे मारकर लोग सीधे उसे जला डालते हैं!'' पहले बूढ़े ने कहा और बदन पर लिपटी चादर संभाली।

''यहां औरतें नजर नहीं आ रही हैं?'' कमाल ने तिवाड़ीजी से पूछा।

''वह सामने देखें, जा तो रही हैं?'' साथ आए सज्जन बोले।

''उनसे भी कुछ बातें हो जातीं तो...'' कमाल ने तिवाड़ीजी के चेहरे पर नजरें गाड़ीं।

''वह बात करने ही जमा हो रही हैं...उधर साक्षरता का एक कमरा है...यह कोठरिया भी उन्हीं की है।'' तिवाड़ी के कहने पर कमाल ने दीवारों पर लगे पोस्टरों को दोबारा देखा।

धूप से तपती रेत को गर्म हवा उड़ा रही थी। कमाल ने खाट पर बैठने के चक्कर में जूते उतार लिए थे। सभी नंगे पैर थे। वह भी संकोचवश रेत पर आगे बढ़ा—लगा, उसकी मांसपेशियों में खौलती लहर दौड़ गई। जलती रेत पर झुलसते पैर रखता हुआ वह बड़ी सहिष्णुता से कुछ दूर पर बने कमरे में दाखिल हुआ। आधा कमरा बड़े-बड़े पानी-भरे मटकों से भरा था। उसी के पास कुछ औरतें घूंघट काढ़े बैठी थीं। एक बूढ़ी औरत मुंह उघाड़े थी, दूसरी अधेड़ औरत थी जो मुखर थी। उसका आंचल भी माथे को खाली ढके था। कमाल को लगा कि यहां के लोगों को बाहर से आए हर तरह के लोगों से बातचीत करने का अभ्यास पड़ चुका है, शायद इसके पीछे बदलाव की इच्छा की तीव्रता भी हो।

बातों-बातों में पता चला कि अब जवान बहुएं कोस दो कोस तो दूर, नलकूप तक से पानी लाने से इंकार करती हैं। उनमें पैसा बचाने की वह ललक नहीं है। अब दस रुपये में टंकी लगवा लेती हैं, पानी भरने वाला पानी भर जाता है। यह एक अलग तरह की रस्म पड़ रही है। वहां भी पानी आने का संतोष था, मगर खेती के लिए पानी न होने का दुःख था। उसी अधेड़ औरत ने बताया—''पहले की बात ही अलग थी। कहते हैं, जैसलमेर क्षेत्र में प्रचलित कथानुसार एक नवविवाहिता सजावट भली प्रकार कर सके सो होली पर स्नान कर लिया, फिर दीवाली पर दुबारा नहा ली। उसकी सास को जब पता चला तो उसने इन शब्दों में उलाहना दिया :

"आई होली हिनान, आई दियाली हिनान्,

तू लुगाई है के जल-कूमड़ी!"

अर्थात्—

होली में नहाय, दीवाली में नहाय,

बहू लगे है जलमुर्गी।

इसके बाद औरत मंडली में दबी-दबी हँसी फैल गई। कमाल सोच रहा था कि हवस से भरे राजनेताओं के बीच यह भोले गांववाले एक हैंडपाइप के लग जाने-भर से कितना खुश हैं! बार-बार पानी को पूछ रहे हैं।

"यह बूढ़ी लावारिस है, इसका कोई नहीं बचा। कोई कुछ देता है तो खा लेती है। जहां ब्याही थी वहां बालानारू या जाने और कौन-सी बीमारी लग गई थी कि पहले पति, फिर देवर मर गया।"

"थ्रेड वार्म।" तिवाड़ीजी ने 'बालानारू' का अर्थ समझाया।

कमाल ने बूढ़ी के झुर्रियों से भरे-चेहरे को देखा। गंदे पानी को पीने से बाड़मेर और नोखा तहसील में यह बीमारी चल पड़ी थी। पैरों से पतले-पतले केंचुएनुमा लंबे-लंबे कीड़े बाहर निकलते थे जो पैरों की मांसपेशियों को शिथिल बना देते थे। इलाज से मर्ज ठीक भी हो जाता है, मगर संभवतः इसका पति और पति की तरह हजारों लोग दवा-दारू के काबिल अपने को नहीं पाते। कमाल ने गहरी लंबी सांस ली और उस बूढ़ी औरत की तरफ से नजरें हटा तिवाड़ी की ओर देखा।

"आप क्या करेंगे हमारे लिए? यहां आपकी तरह बहुत आते हैं। सब बातें पूछते हैं, मगर अभी तक हमारे लिए कुछ नहीं हुआ।" कुछ दुःखी हो वह अधेड़ औरत बोली जो दरअसल सबकी स्पोक्समैन थी।

कमाल को लगा जैसे उसके अंदर घुमड़ती बात को सहारा मिला हो। उसने झिझकते हुए पूछा, "क्या मैं इन्हें बच्चों को मिठाई के नाम से कुछ दे सकता हूं? यहां आकर लगा कि हमें खाली हाथ नहीं आना चाहिए था।"

"कुछ देना चाहें तो दे दें।" तिवाड़ीजी ने भी कुछ सोचती-सी मुद्रा में जवाब दिया।

"यह सब के लिए।" कमाल ने सौ-सौ के तीन नोट बढ़ाए। कुल पांच-छः औरतें थीं। उठते हुए बोला, "मां को कुछ ज्यादा दे देना!"

कमाल और तिवाड़ीजी कमरे से बाहर निकले। धूप उतनी ही चटकीली थी। राम-राम कर जब वे कार का दरवाजा खोल बैठने लगे तो वह बूढ़ी औरत नोट लिए आई और अपनी स्थानीय भाषा में बोली, "इसमें मेरा कितना हिस्सा है?"

"कम है शायद..." कहते हुए कमाल ने दो नोट बूढ़ी को और थमा दिए।

"यह क्या किया आपने? बहुत ज्यादा दे दिया!" तिवाड़ीजी केवल इतना ही बोल पाए।

कार लौट रही थी अब करमीसर गांव की तरफ, जो जाते हुए रास्ते में पड़ा था। अब कमाल के अंदर दूसरा गांव देखने की इच्छा मर चुकी थी। उसे तो महसूस हो रहा था कि वह खुद मर चुका है, जहां उसके देशबंधु इस तरह का जीवन काट रहे थे।

"चलना है न करमीसर?" ड्राइवर ने पूछा और उसी के साथ तीनों ने एक-दूसरे की तरफ देखते हुए सर हिला दिया। कमाल के सारे बदन में कुछ चुनचुना रहा था—पता नहीं वे गर्म रेत के कण थे या उसके अंदर घुमड़ते आक्रोश की चिनगारी।

"अकसर लोग आते हैं...मैं आपकी तरफ इशारा नहीं कर रहा हूं...वह पैसा देकर सोचते हैं, इनका भला किया है, मगर वह छोड़ जाते हैं इनके लिए कई वर्षो तक का हिसाब-किताब। अब रुपये के बंटवारे को लेकर एक लंबा संवाद इनके बीच चलता रहेगा।" तिवाड़ीजी ने कुछ गहरे स्वर में कहा।

"इसीलिए मैंने..." कमाल की बेचैनी शर्मीदगी के मिश्रण से तीखी हो उठी।

"नहीं नहीं, मैं एक बात कह रहा था...अच्छा होता यदि हम कुछ लेकर ही जाते।" तिवाड़ीजी ने बाहर फैले रेतीले मैदान को ताकते हुए कहा।

कमाल के अंदर की घुटन बढ़ गई थी। ऐसी स्थिति को देखकर वास्तव में एक इंसान को क्या करना चाहिए? यह सवाल उसे बरसों मथता रहा। अपने से लड़ता रहा कि क्या चंद पैसों की मदद किसी के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाने जैसी है या फिर उसके दुःख को अंश-भर बांटने जैसा है? उसे अंतिम तर्क ज्यादा भारी लगा था, इसलिए उसने दूसरों की मदद में कोताही नहीं बरती। आज भी वह अपने कर्तव्य से पूरा तो नहीं, मगर थोड़ा-बहुत मुक्त तो हुआ। भले ही उसके लिए यह रुपये अहम रहे हों, मगर इनकी जरूरतो से ज्यादा नहीं।

कुछ पल के बाद कमाल अपने को रोक नहीं पाया और धीरे-से बोल उठा : "इसी बहाने तिवाड़ीजी, उनके बीच कुछ जिंदगी की चहल-पहल तो उभरेगी।"

बाकी रास्ता गहरी खामोशी से कटा। साथ आए सज्जन नींद में डूबे थे। तिवाड़ीजी भी सुस्त थे। शायद इस झुलसाने वाली गर्मी ने बदन का सारा पानी सोख लिया था।



दिल्ली पहुंचकर भी कमाल का मन स्थिर नहीं था। मस्तिष्क कई तरह के सवालों से जूझ रहा था। दिन में उसने एक-दो अपने डॉक्टर दोस्तों से मिलने का समय रखा

था, मगर बहुत चाहने पर भी वह उधर जाने का मन नहीं बना पाया। सारे दिन होटल के कमरे में सोता-जागता पड़ा रहा। दोपहर का खाना भीं जाने किस आत्मग्लानि के कारण हलक से नहीं उतरा। जब आंखें बंद करता, अजीब तरह के दृश्य आंखों के सामने उभरने लगते थे।

रात की गाड़ी से उसे बुंदेलखंड की ओर जाना था। बीच में एक दिन झांसी भी रुकना था। उस के अंदर फैली जिज्ञासा अब उदासी में बदल चुकी थी। ट्रेन में भी उसको नींद नहीं आई। अजीब तरह की बेचैनी उसे मथ-सी रही थी। झांसी पहुंचकर भी वह सुस्त रहा, लेकिन ओरछा पहुंच, जब उसने पत्थरों के बीच से बहती हरी-हरी बेतवा नदी देखी तो मन जाने कैसे अपने-आप हलका हो उठा। बड़ी देर तक वह नदी किनारे बैठा बेतवा को बहता देखता रहा और सोचता रहा कि पानी भी क्या चीज है जिसके रहने और न रहने पर इंसान कितना बदल जाता है।

झांसी से बांदा की तरफ जाते हुए कई अन्य लोग भी कमाल के साथ थे जो पानी की समस्या पर ही काम कर रहे थे। रास्ता अच्छा कटा।

बांदा और हमीरपुर पथरीला इलाका था। बीकानेर से ज्यादा यहां गर्मी थी। पानी का स्रोत कोई नदी नहीं थी। कुएं थे, जिनमें पानी की सतह नीची होने के कारण पानी भी कम ही रहता। यहां पानी की कमी और बीमारियों की अपनी कथाएं थीं, जिन्हें सुन-सुनकर कमाल कुछ बोलने की स्थिति में अपने को नहीं पा रहा था। कहीं इंसानी लापरवाही थी तो कहीं कुदरत की बेइंसाफी थी।



हफ्ते-भर की यह यात्रा विचित्र अनुभवों से भरी हुई थी। कमाल जब घर पहुंचा तो उसे देखकर पहले हाशिम परेशान हुआ, फिर शकरआरा उसे देखकर ताज्जुब में पड़ गईं।

"तुम्हें हुआ क्या है? बीमार थे?"

"नहीं तो, मगर आप पूछ क्यों रही हैं?" कमाल ने हैरत से पूछा।

"चेहरे का क्या हाल हो गया है? जगह-जगह काले धब्बे, लाल चकत्ते। क्या किसी कीड़े ने काटा था?" शकरआरा ने परेशानी से पूछा।

"गरमी थी, अम्मी। जहां गया था वे सारे इलाके सूखे और बिना पानीवाले थे। वहां के लोगों पर क्या गुजरती है, यह सब देखने के बाद मैं भी वहां कैसे ठीक रह सकता था...हां मियां, हाशिम! जरा गरमागरम अच्छी-सी चाय पिलाएं, तब तक मैं नहा के आता हूं।" कमाल कमरे में गया। फोन मिलाकर उसने समीना को अपने आने की इत्तला दी और तौलिया लेकर सीधा बाथरूम की तरफ भागा।

शॉवर का ठंडा पानी उसके बदन पर गिर रहा था। बदन इतना प्यासा होगा, इसका उसे अंदाजा न था। पानी की क्या अहमियत हो सकती है इंसान की जिंदगी में, इसको कमाल ने एक हफ्ता बाहर रहकर महसूस किया था। इस समय भी उसके जेहन पर राजस्थान और बुंदेलखंड के वे सारे तपिश-भरे इलाके छाए हुए थे, जिन्हें पानी के ठंडे कतरे शॉवर से निकलकर भी बुझा नहीं पा रहे थे।

खाना खाकर कमाल आरामदेह बिस्तर और ठंडे कमरे में सो गया, मगर क्या वास्तव में वह सोया था? उसके जेहन में तो उन परेशान इंसानों की छवियां अंकित थी, जो अपने सूखे खेतों को बड़ी कातर दृष्टि से देखते, फिर जानवरों के खाली पड़े खूंटे को। उनके पास बचा भी क्या था जिसके मोह में वह पड़े थे? तो भी वे अपने को उस स्थिति से काट नहीं पा रहे थे। अपने दुःखों से कट भी जाते तो जाते कहां? कमाल की आंख अपने-आप खुल गई। ठंडी हवा गरम तमाचों की तरह चेहरे पर पड़ने लगी। आग की लपटों में जलता उसका बदन और जेहन उसको बेकरार कर रहा था। वह उठकर बैठ गया। फिर लेट गया और करवटें बदलने लगा। रह-रहकर एक सवाल उसे अंगारों पर भून रहा था कि इंसान कब इस नरक से निकल पाएंगे? कब इनको साफ पानी पीने को मिलेगा...आखिर कब?

कमाल केवल बदन से नहीं थका था, बल्कि वह दिल व दिमाग से भी थका हुआ था। उसने नंगे सच का स्पर्श किया था, जिसकी सोजिश ने उसकी उंगलियों के पोरों को जला दिया था। उस घाव की टपकन रह-रहकर उसे तड़पा रही थी। अपने घर का यह आराम किसी पाप की तरह उसे प्रताड़ित कर रहा था। वह अपने को गुनहगार महसूस कर रहा था। खाना-पानी हलक से उतरने से पहले उसे ग्लानि से भर देते थे। गांव के बच्चे उसके सामने आन खड़े होते थे। उनकी फैली, डबडबाई आंखें और पपड़िआए होंठ और नंगा बदन कमाल से अनेक तरह के सवाल करने लगते थे। कमाल अपने जहन में एक युद्ध लड़ रहा था। इसका अंदाजा किसी को नहीं था कि वह क्या देखकर लौटा है। बदन इतना संताप नहीं झेल पाया और टूट गया।

कमाल का शरीर तेज बुखार में तप रहा था। घर में शादी की तैयारी और उसका यूं बिस्तर पर पड़ जाना सभी को बदहवास बनाए हुए था। कमाल के जिम्मे जो काम थे, अब कुछ को समीना अंजाम देने की कोशिश में लगी थी, कुछ को जमाल खां ने संभाल लिया था। भाई को यों बीमार पड़ा देख सफिया के गाल फूल गए थे। भाई से जो भी प्रोग्राम तय हुए थे, सब खटाई में पड़ गए थे। घर में मचे हंगामे में कोई फर्क नहीं आया था, तो भी घरवालों का ध्यान बंट तो गया ही था। इन सब बातों से दूर कमाल बुखार की शिद्दत में अपने दुःख को जैसे तपा रहा था, जैसे कुम्हार भट्ठी में रख धीमी-धीमी आंच पर अपने कच्चे बरतनों को पकाता है।

14

शादी का घर मेहमानों से भरा हुआ था। चूड़ियों की खनक और पाजेबों की रुनझुन के बीच सुहाग गीत ढोलक की थाप के साथ ढलती रात में भी रौनक जमाए था। मिरासिन अपने लटके-झटके के साथ गांव से मय पूरे खानदान के आ चुकी थी। आज रतजगा था। अधूरे कपड़े भी सिले जा रहे थे। कोई दुपट्टे पर लचका लगा रहा था तो कोई ब्लाउज में हुक टांक रहा था। छोटे दालान में गांव से आई औरतें बालों में काली मेहंदी लगाए बैठी थीं। कुछ छालिया काट रही थीं तो कुछ आपस में हँस-बोल रही थीं।

"अल्लाह! खाला, आप यहां बैठी हैं? मैं सारा घर छान आई हूं। चलिए, जल्दी से उठिए, समीना आपको याद कर रही है।" मझली ने कहा और ख़ुद औरतों के बीच जाकर बैठ गई।

"अब इस खिजाब-लगे बालों से क्या जाऊं! बताओ तो बात क्या है? समीना को मेरी क्या जरूरत आन पड़ी?" खुरशीदआरा ने झेंपते हुए पूछा।

"अरे वाह बन्नो! तुम तो नई-नवेली की तरह शरमा रही हो! आजकल तो जवान लड़कियां बाल रंगने लगी हैं!" मुन्नी चची छालिया कतरना छोड़ दाहिने हाथ की कलमेवाली उंगली होंठों पर रखकर हँसी।

"कारस्तानी तो तुम्हारी है, मुन्नी! सबको परसों से बरगला रही थीं। मैं मना कर रही थी।" खिसियाई-सी खुरशीदआरा उठीं और सिर पर बंधे काले कपड़े पर दुपट्टा जमाती हुई चप्पल पहनने लगीं।

सिंगार कमरे में शीशेवाली अलमारी के सामने समीना कपड़े फैलाए बैठी थी। बाल खुले थे। चेहरे पर परेशानी थी। खुरशीदआरा बेटी की हालत देख पहले तो चौंकीं, फिर आगे बढ़कर बोलीं, "क्या है, सुम्मी? कपड़ा इस तरह फैलाए क्यों बैठी हो? खैरियत तो है या फिर कुछ चोरी हो गया?"

"यह क्या! आपने खिजाब लगाया है?" समीना मां को परेशान नजरों से देखती हुई बोली।

"मुन्नी ने जबरदस्ती पोत दिया। अब मेरी छोड़ो, अपनी कहो।" झुंझलाए स्वर में खुरशीदआरा बोलीं। उन्हें खुद अपनी हरकत पर शर्म आ रही थी कि जाने कैसे मुन्नी के चक्कर में पड़ गई।

"अम्मी, जोड़ा बनवा दें। मेरे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि किसको कौन-सा कपड़ा दूं?" समीना ने लंबी सांस खींची।

"तुम्हारी कलर मास्टर सास कहां हैं? उनसे नहीं पूछा?" खुरशीदआरा ने बेटी को छेड़ा।

"मेरी सास तो वह बाद में बनी हैं, पहले तो वह आपकी बहन हैं। आप ही की तरह कहीं महफिल जमाए होंगी।" कुछ चिढ़े स्वर में समीना ने जवाब दिया।

जवाब सुनकर खुरशीदआरा के चेहरे पर हलकी-सी मुसकान फैल गई। कालीन पर बैठ फैले कपड़ों को देखते हुए बोलीं, "कितने जोड़े देने हैं?"

"कम-से-कम पंद्रह...दूल्हा की तीन बहनें, मां, भाभी और..."

"समीना...अरे चांद, कहां हो तुम?" एकाएक शकरआरा की आवाज गूंजी।

"लीजिए, आपकी आकला बहन आ गई।" कहती हुई समीना उठी और दरवाजे के पास जाकर बोली, "बड़ी अम्मी, मैं यहां सिंगारखाने में हूं।"

"अरे बेटा, यह वक्त यूं बाल फैलाने का है? अच्छी-सी साड़ी पहनो, कान-गले में कुछ डालो। तुम तो...अय है, तुम यहां क्या कर रही हो, नन्ही? यह सिर पर काला कपड़ा क्यों बांध रखा है?" शकरआरा ने बहन की तरफ देखकर पूछा।

"ईट गिरने से सिर फूट गया, सो काला मरहम लगा पट्टी बांधी है।" खुरशीदआरा ने शोखी से कहा।

"खुदा खैर...मगर नन्ही, तुम थीं कहां जो ईट सिर पर गिरी?" शकरआरा ने परेशान हो पूछा।

"आप भी बड़ी अम्मी! मुन्नी चची ने सबके खिजाब लगा दिया है। कल से वह कुछ घोल-घाल रही थीं!" समीना ने कपड़ों को अलग करते हुए कहा।

"जब मैं ब्यूटी पार्लर चलने को कह रही थी तो तुम मेरी बात मजाक में उड़ा रही थीं। दो घंटे में रंगे, सूखे बाल चोटी या जूड़े में गुंथ जाते, मगर अब क्या कहूं तुमसे, जब बचपन में मेरी न सुनी तो अब क्या सुनोगी।" शकरआरा ने दुःख से गर्दन हिलाई।

"अब आप लोग छोड़िए ये बातें और बताइए कि किसको कौन-सा रंग देना मुनासिब होगा?" समीना ने खुले बालों को जूड़े में कसते हुए कहा।

"तुम्हारी सास आ गई है, इन्हीं से मशवरा लो।" कहती हुई नन्ही उठीं।

"मैं तो सिर्फ यह पूछने आई थी कि 'इमाम जामिन' बनकर आ गए या नहीं वरना..."

"वह तो कल ही आ गए थे बड़ी अम्मी, आपको दिखाना भूल गई थी। यह देखिए।"

"वाह, क्या नाजुक काम है! भई, तुम्हारी सहेली पूरी हरफनमौला है! लो देखो, नन्ही...अच्छा मैं जरा चाय के इंतजाम को देखती हूं, मेहमानों तक पहुंची या नहीं।" कहती हुई शकरआरा साड़ी का आंचल संभालती हुई कमरे से बाहर निकलीं।



बंगले के पिछवाड़े, शामियाने के नीचे अंगारों पर रखी देगों से पकवानों की सुगंध पहले ही दूर-दूर तक फैल चुकी थी। मरदाने में खाना लगना शुरू हो गया था! बाहर से आए रिश्तेदारों से गप मारने का सिलसिला भी अब थकन में बदलने लगा था। रात के दो बजने को आए थे। जूठन के इंतजार में इधर-उधर फिरते कुत्ते भी अब दरवाजे के पास मुंह डालकर ऊंघ रहे थे। जनानखाने में गीत की तरंगें अभी भी उठ रही थीं। पूरा मोहल्ला न सही तो आधा मोहल्ला रतजगा में शामिल होने के लिए शाम से जनानखाने में जमा था।

सुबह होते-होते खाना-पीना खत्म हुआ तो बावर्ची ने हलवे के लिए सूजी भूननी शुरू कर दी। अंदर जनाने में पिस्ता-बादाम तो कट ही रहा था। जूठे बरतन पानी आने के इंतजार में पड़े थे। ड्रम में भरा पानी दो बार चाय-नाश्ते के जूठे बरतन धोने में खत्म हो गया था। पांच बजे नल में पानी आता है। रबर टोंटी में लगाकर पाइप का सिरा मैदान में रखे ड्रम में डाल दिया गया था। हलवा बन गया, मगर पानी नहीं आया। पौ फट चुकी थी। अंदर-बाहर एक साथ कोहराम मच गया। पानी आने के इंतजार में जमा पानी खुले दिल से खर्च किया गया था। अब न फ्लश में पानी था और न ही सिंक के नल में कि खाली ब्रश कर, गरम चाय की प्याली का घूंट भर लिया जाए। इतनी सुबह पानी का इंतजाम भी कहां से किया जाए? मोहल्लेवालों ने एक-दो बाल्टी पानी दिया भी तो वह किस काम का? यहां तो अंदर-बाहर घर मेहमानों से भरा हुआ है।

"ऐ मुन्नी, तुमने किस झंझट मे डाल दिया, बहन? पानी न आया तो बाल धोने के लाले पड़ जाएंगे!" रज्जो फूफी ने झुंझलाकर कहा।

"मुन्नी, अब क्या होगा? कुछ ही घंटों बाद मेहमान आने शुरू हो जाएंगे।" खुरशीदआरा ने सिर का कपड़ा फेंकते हुए कहा।

"मैं तो बीबी, अपने घर जाती हूं। नहा-धोकर आती हूं। यह लो, छालिया भी कट-कटाकर खत्म हुई।" कहती हुई एक मिलनेवाली औरत उठते हुए बोली।

"हम तो बुरे फंस गए।" सुल्ताना ने आईने में अपना सिर देखते हुए परेशानी से कहा।

"आप सब उस वक्त तो खुशी-खुशी खिजाब लगाने और बूढ़ी से जवान बनने

के लिए राजी हो गई थीं। अब सारा इल्जाम मुझ पर थोप रही हैं। अरे, सब्र कीजिए, पानी आता होगा। नल में नहीं आएगा तो 'वाटर वर्क्स' से टैंकर आएगा। शादी का घर है, इंतजाम तो होगा ही न।" मुन्नी चची ने अपने बाल संवारते हुए कहा। वह कल रात ही नहा ली थीं। इन औरतों का खयाल था कि सुबह नमाज से पहले ताजा पानी से नहाएंगे। इसी लालच में रह गई।

"बतूल बहन, जरा ठहरो, हम भी तुम्हारे घर चलते हैं!" कहती हुई कई औरतें उठीं और बतूल के पीछे कपड़ों का बैग लेकर बाहर निकलीं।

धूप लॉन में फैल चुकी थी। चिड़ियों की चहचहाहट और कौओं की कांव-कांव के बीच एक-एक प्याला चाय तो सबको किसी तरह सुबह-सुबह नसीब हो गई थी। मगर जो नहीं पी पाए थे वह सिरदर्द से परेशान थे। देर से सोकर उठने पर पछता रहे थे। घड़ी ने नौ बजाए, मगर पानी नहीं आया। पता चला, वाटर वर्क्सवालों की हड़ताल है और सारे दिन यानी कि शाम को भी पानी की सप्लाई नहीं होगी। कल कब पानी आएगा, यह कल देखा जाएगा। मगर आज दोपहर के खाने और शाम की दावत का क्या बनेगा? शहर में कई शादियां थीं, सो मोल के पानी की भी कमी थी। इस समय चौगुने दाम पर भी उन्हें पानी खरीदना था, जिनके यहां ब्याह था, मगर जब पानी हो तभी तो सबकी जरूरत पूरी की जाएगी!

जमाल खां साहब के माथे पर पसीना छलछला आया था। शाम की चाय, शरबत और पानी का इंतजाम तो उन्होंने शहर के मशहूर होटल नटराज को दे रखा था, मगर इसके अलावा भी तो बाथरूम में नहाने-धोने के लिए पानी चाहिए था। मन-ही-मन वह सोच रहे थे कि अजीब अनहोनी हो गई। कल तक पानी की बहुतायत थी। ड्रम उबल रहे थे। नहाने के बाद भी नल से मोटी धार गिर रही थी। ऊपर टंकी भरी थी और आज...सच ही कहा है किसी ने—'सब दिन चंगे, त्योहार के दिन नंगे।'

"अरे, जमाल साहब से कहो कुछ इंतजाम करें, बच्चे बिना नहाए इस गरमी में हलकान हो रहे हैं।" अंदर शकरआरा परेशान इधर से उधर घूम रही थीं। मर्दों के देखते औरतें रात की थकन के चलते पड़ी अब भी खर्राटे ले रही थीं, वरना तो कर्बला का मंजर होता। फ्रिज की खाली शीशियां मेज पर जमा थीं। बर्फ भी पिघलाकर कुछ ने अपना काम चला लिया था। नाश्ते के समय से अब खाने का वक्त आ गया था।

"मेरी तो बड़ी भद्द हुई, समीना! इस शहर में मुंह दिखाने के काबिल न रही।" रुआंसी आवाज से शकरआरा ने बहू से कहा।

"अम्मी, कुछ कीजिए न। मेरे ससुरालवाले बस, अब सोकर उठने वाले हैं।" बड़ी बेटी कामनी ने उलझते हुए कहा।

"तुम्हारे ससुरालवाले तो कुछ ज्यादा ही ऊंची नाकवाले हैं। अब पानी की परेशानी कोई मेरी बनाई हुई तो है नहीं, कम्मो!" शकरआरा ने कुछ उखड़े लहजे से कहा।

"इसीलिए हम चाह रहे थे कि होटल में ठहरें।" धीमी आवाज में कामनी ने कहा और वहां से चली गई।

"लड़कियां भी ब्याह के बाद कितना बदल जाती हैं! मायके की इज्जत दांव पर लगी है और इसको ससुरालवालों के ताने का डर खाए जा रहा है!" शकरआरा ने दुःखी आवाज में कहा।

"बड़ी अम्मी, है तो परेशानी की बात। खुदा करे, कुछ इंतजाम जल्दी से हो जाए।" समीना ने घबराए स्वर में कहा।

"ये तो मर्दों के काम हैं, वही जानें!" शकरआरा इतना कहकर चुप हो गईं। उन्हें याद आ रहा है कि कल शाम को उनके कई बार टोकने पर भी गाने की महफिल छोड़कर दोनों काम करने वालियां शन्नो और राना नहीं उठ रही थीं। उनकी ढिठाई देखकर शकरआरा मेहमानों के सामने उन्हें डांट तो नहीं सकती थीं। कई बार आया से कहा कि पानी भर ले, मगर जब तक वह उठती, कोई-न-कोई मेहमान औरत उसे आवाज दे कोई काम बता देती, फिर वह भी कुछ देर बाद पानी की बात भूल जेवर-कपड़े रखने-उठाने में लग गई। जरा-सी भूल इतनी बड़ी मुसीबत बन जाएगी, इसका अंदाजा उन्हें कतई न था। यह एक नया अनुभव था। उन्होंने इस तरह की शर्मनाक स्थितियों का सामना अपनी जिंदगी में कभी नहीं किया था। इस वक्त उन्हें राबिया की मां का ध्यान बार-बार आ रहा था।

"अम्मी, यह नहाने को कह रहे हैं। कहीं से एक या दो बाल्टी पानी का इंतजाम ही हो जाता तो...' मझली ने परेशानी-भरी आवाज से कहा।

"देखो, देखती हूं...अरे हाशिम, जाकर राबिया की अम्मा को बुला लाओ। इस मुसीबत के वक्त वही काम आ सकती हैं। मैं तो इस मोहल्ले का हाल जानती हूं, सभी बंगलों में नल है मगर पीछे की बस्ती की तरफ मैं बहुत कम निकलती हूं। पता ही नहीं, किसके घर नल है और कहां हैंडपाइप है!" शकरआरा ने गहरी सांस ले बेटी के चेहरे को ताका।

गरमी भी झुलसाने वाली थी। कमाल खां ने प्यास बुझाने के लिए हर तरह की शरबत की बोतल का इंतजाम कर दिया था। दुकान-दुकान लोग घूमकर कोक और लिम्का की बोतलों से भरे कैरेट उठवा रहे थे। खाने का इंतजाम भी दो होटलों से हो गया था। बस अब बाथरूम में पानी का इंतजाम करना था। वह हुआ नहीं कि मुसीबत टली समझो। कुछ मेहमानों को होटलों में ठहराया गया था। माफी मांगने

के साथ घर में ठहरे मेहमानों को भी शाम ढलते-ढलते वहां नहाने के लिए भेज दिया गया। सात कमरे और बुक हो गए, ताकि शादीवाले दिन किसी तरह की झंझट न हो। पानी के न रहने से शादी की रस्मों का मजा बिगड़ गया था। मेहंदी-लगे हाथ भी पानी की कमी से तेल लगाकर मेहंदी छुड़ाने लगे, मगर सजने से पहले तो हर आदमी नहाना चाह रहा था। आखिर क्रीम से चेहरा-भर साफ किया जा सकता है, पूरा बदन थोड़ी न। इसी उधेड़बुन में परेशान जवान लड़कियां उदास चेहरा लेकर टहल रही थीं। दुल्हन के कमरे में जाने की इजाजत किसी को न थी। वहां पर छुपाकर दो-तीन बाल्टियां पानी से लबालब भरी रखी थीं। नाइन के तेवर पर बल थे कि इतने कम पानी से वह दुल्हन को कैसे रगड़कर नहला पाएगी। गरज कि इस नाजुक मौके पर शकरआरा की जान हलक में अटक चुकी थी। हर छोटा-बड़ा उन्हें तेवर दिखा रहा था। वह मुजरिम बनी अपने अपराधों को सुन रही थीं।



बारात बड़ी शान से आकर दरवाजे पर लगी। सजावट और इंतजाम में कोई कमी न थी। लड़केवालों की खातिर जमकर हुई। शाम को पानी आ जाने से कमाल के कमजोर चेहरे पर भी रौनक लौट आई थी और जमाल खां भी अपने मनमौजी मूड में आकर लतीफों पर लतीफे सुनाकर समधियानेवालों को कहकहे पर कहकहा लगाने पर मजबूर कर रहे थे। सहरा पढ़ा जाने लगा था। स्थानीय्र कवियों की पूछ बढ़ गई थी। निकाह के बाद मुबारक-सलामत का दौर चला और फिर खाना लग गया।

कमाल का बुखार उतर गया था, मगर तबीयत अभी ढीली ही थी।

अंदर जनानखाने में लखनऊ से आई समधिनें बड़ी नजाकत से नेवाले तोड़कर मुंह मे डाल रही थीं। उनकी नकल करने का दिल मिरासिन का चाह रहा था, मगर वह मौका देखकर चुप थीं। यह नजारा तो वह अगली किसी शादी में बीबियों के सामने बड़े ठस्से से दिखाएंगी औैर वाहवाही लूट नेग में मिले पैसे गिनेंगी। शकरआरा भी कम न थीं। बरात चाहे जहां से भी क्यों न आई हो, समधिनें लाख नखरेवाली हों, मगर उनकी अदाओं के आगे पानी भरने को तैयार थीं। कुछ देर बाद सभी पूछने लगीं कि उनके जेवर-कपड़े कहां से खरीदे गए हैं? बावर्ची कहां का है?

"ये छोटी बातें हैं!" एक बीबी ने दबी जबान से एतराज किया।

"यही आज की बड़ी बातें हैं, नानी! आपका जमाना लद गया। अब तो कोंच-कोंचकर यह सब पूछा जाता है। न पूछो तो भी बताने वाला जोर दे-देकर आपको बताएगा। यही आज की सोसायटी के एटिकेट्स कहलाते हैं, यानी कि हर बड़ा नाम आपके घर पर मौजूद होना चाहिए।" एक जवान औरत ने जलकर धीमे से कहा।

"हमारी शादियों में अम्मा ने सजावट का ऐसा बढ़िया इंतजाम नहीं किया था।"

बड़ी ने कुढ़े अंदाज से कहा।

"तब इतना कुछ होता कहां था, आपा?" मझली ने जवाब दिया।

"मैं तो अपने दिल के अरमान बेटी की शादी में निकाल लूंगी।" बड़ी ने एकाएक खुश होते हुए कहा।

"तुम खुशकिस्मत हो, आपा! मेरे तो बहुत चाहने पर भी तीनों लड़के ही हुए। अपना अरमान मैं भी तुम्हारी बेटी के ब्याह में निकाल लूंगी।" मझली ने कहा।

"कमाल के ब्याह को पूरे चार साल होने को आए, मगर समीना के पैर अभी तक भारी नहीं हुए...अम्मा को भी इसकी फिक्र नहीं है। तभी तो देखो, कभी स्लैक्स तो कभी जींस पहने घूमती है।" बड़ी बोली।

"मोटी होकर करना भी क्या है; मगर हां, बच्चा तो अब हो जाना चाहिए। वैसे आपा, बुरा न मानना, तुम्हारा पेट इन दिनों बहुत निकल आया है।" मझली ने कंधे पर आंचल संभालते हुए कहा।

"तेरा पेट कुछ कम बाहर निकला है क्या? चार बच्चों की पैदाइश के बाद क्या मेरा बदन पहले जैसा छरहरा रहेगा?" बड़ी हँस पड़ी।

"तुम कुछ करतीं क्यों नहीं? वहां पर हर तरह की सहूलियतें तो हैं!" मझली बोली।

"यह टोकते नहीं, मुझे फुरसत नहीं, बस और क्या! अच्छा पहनना, अच्छा खाना, चैन की नींद, ऊपर से लड़कियां कुछ करने नहीं देतीं। बैठे-बैठे और बुरा हाल है पेट का।" बड़ी ने बड़े अंदाज से कहा और साड़ी का पल्लू बराबर किया।

मझली सिर्फ मुस्कराकर रह गई।



दूसरे दिन रुखसती थी। दूल्हा की सलाम कराई के बाद आरसीमुसफ हुआ और हँसता-खेलता घर उदासी में डूबने लगा। सफिया दुल्हन बनकर बड़ी खूबसूरत लग रही थी। दूल्हा भी शक्ल-सूरत का ठीक था। रोते वक्त भी शकरआरा को अपने मेकअप का पूरा ध्यान था कि कहीं काजल गालों पर बहकर सुरमई लकीरें न खींच दे, सो बड़ी नजाकत से वह आंसू रूमाल में जज्ब कर रही थीं।

रुखसती के बाद घर में सन्नाटा छा गया, बस औरतों की सुबकियां और नाक सुड़कने से माहौल पर छाई खामोशी टूट जाती थी। गजरों से गिरे फूल इधर-उधर कालीन पर बिखरे थे। दुल्हन के जाने के बाद भी उसकी खुशबू बसी हुई थी।

रात के खाने तक माहौल बदल चुका था। बिखरा घर भी काफी हद तक सिमट गया था। शहरी मेहमान तो एक-एक करके दोपहर तक अपने-अपने घरों को चले

गए थे। कुछ बाहर के मेहमानों ने भी रात की गाड़ी से जाने के लिए बिस्तरबंद और अटैची कसनी शुरू कर दी थी।

समीना का गरमी और थकान से बुरा हाल था। सोने से पहले जब वह नहाकर बिस्तर पर लेटी तो उसको याद नहीं कि कब आंख लग गई। सुबह जब आंख खुली तो उसने देखा कि कमाल सोफे पर बेसुध पड़ा सो रहा है, क्योंकि बिस्तर पूरा-का-पूरा गिफ्ट और सामान से भरा था। वह तो कमर सीधी करने लेटी थी कि अभी उठकर ठीक करती है, मगर...वह कमरे से बाहर निकली। पूरा घर सोया पड़ा था। किचन में अलबत्ता आया रात के धोए बरतन समेट रही थी। उसने गैस पर चाय का पानी रखा और ट्रे पर प्यालियां सजाने लगी।

"बड़े साहब आज बड़ी जल्दी जग गए लगत है!" आया ने मोढ़े पर बैठते हुए कहा।

समीना कुछ नहीं बोली। चाय का मग आया को थमाकर ट्रे लिए वह आगे बढ़ी। एकदम से उसको लगा, जैसे सफिया अपने कमरे से आवाज लगा रही हो, 'भाभी, एक प्याली चाय मुझे भी!'

समीना की आंखें भर आई। उसने चाय की ट्रे बरामदे में पड़ी मेज पर रखी। दीवार की घड़ी ने सात बजने का ऐलान किया। थोड़ी देर बाद एक-एक करके सब खाली कुर्सी पर आकर बैठ गए। बड़ी और छोटी भी नींद-भरी आंखें लिए आई, फिर बड़ी किचन की तरफ मुड़ गई।

"क्या बात है, आपा?" समीना ने पूछा।

"चाय बनानी है।" बड़ी ने थकी-थकी आवाज से कहा।

"मेज पर रखी तो है।" इतना कह समीना हॅस पड़ी।

"मैं समझी, मैं सऊदी में अपने घर में हूं।" वह झेंपी-सी हॅसी हँस पड़ी। उसकी बात सुनकर सभी मुस्करा उठे।

"जिस दिन का महीनों से इंतजार था, आज वह पल-भर में गुजर गया।" जमाल खां ने उदास स्वर में कहा।

"हां, कैसी-कैसी तैयारियां कीं! महीने-भर से घर में रौनक, चहल-पहल थी। आज घर कैसा भांय-भांय कर रहा है!" शकरआरा ने आंखों में आए आंसुओं को पीते हुए कहा।

"सफिया कल-परसों तक आ जाएगी, अम्मी। चौथी की तैयारी कीजिए, दिल उदास न करें।" मझली ने चाय की प्याली भरते हुए कहा।

उसका मियां जुल्फी भी आ चुका था। पत्नी की बात को आगे बढ़ाते हुए बोला,

"कुछ इंतजाम करना हो तो बताएं। अभी मैं दो दिन तो हूं, फिर पांच दिनों के लिए लखनऊ निकल जाऊंगा।"

"इंतजाम तो सब पहले से किया हुआ है, बस पानी-बिजली ऐन मौके पर दगा न दे जाए।"

"हां, पहले लोग इंसानों से पाए धोखे का रोना रोते थे, अब पानी-बिजली का।" जुल्फी ने कहा।

"हां, यह नई अल्लाह थी। पानी के बारे में तो कभी ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि ऐसी मुसीबत में डाल देगा!" शकरआरा ने हैरत से आंखें घुमाकर कहा।

"बेहतर यही है कि सारे ड्रम वगैरह आज ही भरवा लें, ताकि मौके पर परेशानी न हो।" बड़ी के मियां सफदर ने कहा और खाली प्याली मेज पर रखकर उठ खड़ा हुआ।

सुबह की चाय के बाद घर की सफाई शुरू हुई। रस्म के मुताबिक बासी खाना घर-घर बांटने के बाद भी ढेरों बचा था। वही गरम करके खाया गया। हर एक की जबान पर एक ही बात थी कि खाना लाजवाब पका है। शादी के दिन तो ऐसा मजा आया नहीं था जो आज इस खाने में आ रहा है। सबकी बातें सुन रही आया से अब नहीं रहा गया। वह गरम शीरमाल देने जब मेज पर पहुंची तो धीमे से बोली, "मसल मशहूर है, बीबी कि शादी का खाना बासी ही स्वाद देता है।"



चौथी के बाद सफिया मियां के संग दिल्ली के लिए रवाना हो गई थी। उसके जाने के बाद घर सूना-सूना लगता। दोपहर काटे नहीं कटती थी। जमाल खां नाश्ते के बाद सिविल लाइंस की तरफ निकल जाते। कमाल क्लीनिक और समीना 'मिस मेरी' स्कूल पढ़ाने जाती। दोपहर का खाना शकरआरा को कभी-कभी अकेले भी खाना पड़ता जब जमाल खां भी किसी लंबी बैठक में फंस जाते। घर का यह हाल देख राबिया की अम्मा ने अपने हाथ-पैर फैलाना शुरू कर दिया।

"एक कमरे में, बेगम साहब, गुजर तो होय जात है। मैं ठहरी बेवा, बस जवान लड़की जब तक ब्याही नहीं जाती तब तक रौनक है, फिर तो हम हैं और हमार अकेलपन!"

"हां, कहती तो ठीक हो।" शकरआरा ठंडी सांस भरतीं। उन्हें सफिया याद आ जाती।

"अब घर भी छोड़े में हजार मुश्किल है। कहने को गरीब की गृहस्थी ही क्या? यहां आपके लगे रहते तो हरदम आपका दिल बहलाते, मगर का करें, बेगम साहब,

लौटकर अपने ठिकाने जाना ही पड़ता है।" राबिया की अम्मा चलते वक्त खाने की पोटली बांधते-बांधते कह उठतीं।

समीना ने एक दिन यह डायलॉग सुना तो उसके कान खड़े हो गए। राबिया की अम्मा का आना यानी कि पुराने नौकरों में फूट डलना था। जाहिर है कि इन बातों से घर का सुकून भी जाता रहेगा। राबिया की अम्मा की चुगलखोरी मशहूर है। बड़ी अम्मी को तो उसने शीशे में उतार रखा है। घर रहने लगी तो बड़ी अम्मी उसको घर की चाबियां तक थमा देंगी। इसलिए बड़ी समझदारी से राबिया की अम्मा का पत्ता काटना और उस खाली पड़े कमरे को किसी काम में लाना बहुत जरूरी है। एक दिन मौका देखकर समीना ने सास से कहा।

"बड़ी अम्मी, बाहरवाला कमरा खाली पड़ा है। अगर आप कहें तो उसमें ब्यूटी पार्लर खोल दिया जाए। आप थोड़ी सरपरस्ती कर देंगी तो मामला जम जाएगा।"

"हां, बात तो तुम्हारी वजन रखती है, मगर..."

"इस बहाने आपकी देख-रेख भी पाबंदी से होती रहेगी वरना तो आप...बस जब कहीं आना-जाना होता है तभी बालों और चेहरे का ध्यान रखती हैं। देखिए, बाएं गाल पर झांई बढ़ रही है!" समीना ने परेशानी से कहा।

"अय है...कहां? जरा आईना देना!" चौंक पड़ीं शकरआरा।

"लीजिए, देखिए...होठों के आस-पास कितनी लकीरें अपना जाल बिछा रही हैं?" समीना के चेहरे पर चिंता थी।

"अरे हां, सुम्मी! सही कह रही हो। जब से सफिया रुखसत हुई है, मैंने अपना चेहरा ढंग से देखा कहां? अब उम्र भी बढ़ रही है। बुढ़ापे में तो यह सब होता ही है।" शकरआरा ने दुःखी स्वर में कहा।

"बुढ़ापा? आजकल इस लफ्ज का कोई ताल्लुक औरतजाद से नहीं है, बड़ी अम्मी! उम्र पीछे धकेली जा सकती है, अगर औरतें बढ़ती उम्र के साथ अपनी सही देखभाल करें। देखतीं नहीं रोज टी.वी. में?" समीना हॅसकर बोली।

"अगर ऐसा है सुम्मी, तो तुम अपना खयाल क्यों नहीं करतीं, बेटी?" शकरआरा बहू के प्यार से सराबोर होकर दुलार-भरे स्वर में बोलीं।

"इसलिए, बड़ी अम्मी, क्योंकि मैं आपकी तरह हसीन नहीं हूं। आपकी स्किन कितनी मुलायम है। इसको ज्यादा जरूरत है देखभाल की...छूकर मेरी और अपनी देखिए! फिर, बड़ी अम्मी, स्कूल में ज्यादा मेकअप करके जाना मुनासिब नहीं लगता है। मेरी मजबूरी भी तो है..." समीना ने कहा।

"ठीक है! कोई लड़की है नजर में?" आईने से निगाह हटा शकरआरा बोलीं।

"सफिया की दोस्त पारुल है न!"

"अरे हां, खूब याद दिलाया। मैं आज ही उस कमरे को खुलवाती हूं। झाड़-पोंछ के बाद पुताई-पेंटिंग की जरूरत दिखी तो वह भी हो जाएगी।" इतना कह शकरआरा ने दोबारा छोटा आईना उठाया और हर अंदाज से अपने चेहरे का मुआयना करने लगीं।

समीना ने इत्मीनान की सांस ली और स्कूल जाने की तैयारी करने लगी। समीना की यही समझदारी कमाल को भाती है। उलझी से उलझी डोर वह बड़े प्यार से आहिस्ता-आहिस्ता करके सुलझा लेती है। खुरशीदआरा को बेटी का बहन के यहां ब्याहना जरा भी नहीं भा रहा था। कई तरह के खदशे थे जो उनको परेशान करते थे। वह अपनी बहन की तुनकमिजाजी को जानती थीं। ऊपर से वह खुदगर्ज भी बहुत हैं, यह भी किसी से छुपा न था। चूंकि शक्ल-सूरत की अच्छी थीं इसलिए जमाल खां उनके हर नखरे बरदाश्त कर लेते थे। उनकी सारी कड़वाहट उस वक्त धुल जाती जब शकरआरा सज-धजकर बिजली गिराती, उनके साथ पार्टी में निकलतीं। हर औरत-मर्द की निगाहें उन्हीं पर जम जातीं। ऐसा नहीं था कि बाकी औरतें देखने में अच्छी न थीं, लेकिन जो बनाव-सिंगार शकरआरा करके अपने हुस्न को चार चांद लगा देती थीं, वह हुनर उनके पास न था! ऊपर से लुभावनी अदाएं और मीठी आवाज, जिसके जादू से कोई नहीं बच पाता था।

खुरशीदआरा की तरह समीना को भी बड़ी अम्मी की कमजोरियों का पता था। यह भी मालूम था कि बड़ी अम्मी उसकी मां को हिकारत की नजर से देखती हैं, क्योंकि वह उनकी तरह देखने में न हसीन व जमील हैं और न बहुत बड़े घर ब्याही हैं जहां बंगला, गाड़ी, अरदली मौजूद हों। मगर कमाल मां पर नहीं गया है। वह समीना को बहुत प्यार करता है। इसी प्यार के चलते समीना हर तरह के खतरे मोल लेने को तैयार थी! मां को वह बार-बार यह कहकर समझाती कि अम्मी, वह आपकी बड़ी बहन हैं, मुझ पर कोई जुल्म थोड़ी तोड़ेंगी। आखिर वह मेरी खाला हैं। आप ने ही तो कहा था कि मेरी पैदाइश पर उन्होंने क्या कुछ नहीं किया था, फिर आपको मुझ पर भरोसा रखना चाहिए। मैं उनको अपनी खिदमत से मोह लूंगी। उनकी हां में हां मिलाकर उनका दिल जीत लूंगी। फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि कमाल मेरे साथ हैं।

बेटी के इस तरह दिए दिलासों ने खुरशीदआरा की परेशानियां खत्म तो नहीं हुईं, मगर हां, शादी के लिए वह राजी जरूर हो गई थीं। फिर भी यह शादी उन्होंने भारी दिल से अंजाम दी थी। उसका कारण भी था। समीना उनकी इकलौती औलाद थी। शादी के सात साल बाद ही मियां की मौत ने उनको दुःखों के घेरे में इस तरह बांधा था कि वह समीना में ही अपनी खुशी देखने लगी थीं। खाने-पीने की कमी

न थी। ननद-देवरों ने खूब साथ निभाया, मगर मियां का बदल तो वे हो नहीं सकते थे। इसलिए खुरशीदआरा का बुझे-बुझे रहना वाजिब था। वह नहीं चाहती थीं कि यतीम लड़की पर उनकी बहन रोब गांठें या फिर उन्हें नीचा दिखाने के लिए ताने तिनशे दें। यह भी खुदा का अजीब न्याय था कि शकरआरा को हुस्न दिया तो खुदशीदआरा को जहन दिया। पहली क्लास से बी.ए. तक उनका फर्स्ट डिवीजन रहा, जबकि शकरआरा बड़ी मुश्किलों से पास होती थीं। अकसर टीचरें शकरआरा के घमंडी मिजाज को देख कह उठती थीं कि चार दिन की चांदनी है, फिर अंधेरी रात! जिस हुस्न पर तुम इतरा रही हो वह हमेशा नहीं रहता, सदा रहने वाली चीज इल्म है। ध्यान दो पढ़ाई में, जैसे तुम्हारी छोटी बहन मेहनत करती है।

इन बातों के जहरीले तीरों का घाव शकरआरा को गहरे बेध जाता था। घर आकर वह बहन को तरह-तरह से तंग कर दिल की भड़ास निकाल लेती। यह देखकर मां अकसर कुढ़ती कि मुझे खुदा ने दो ही लड़कियां दीं, दोनों अपने-अपने रंग की, उसका शुक्र है कि उन दोनों में कोई-न-कोई खूबी है, मगर यह दुश्मनी, यह लड़ाई-झगड़ा यह तो इनके बीच नहीं होना चाहिए। वह जितनी कोशिश दोनों को मिलाने की करतीं, उतनी ही दूरी उनमें बढ़ती चली जाती थी! तंग आकर उन्होंने यह दुःख खुदा को सौंप दिया और यह सोचकर सब्र कर लिया कि अब वक्त ही कितना बचा है। एक-दो साल बाद इनके हाथ पीले हो जाएंगे। अपने-अपने घरों को चली जाएंगी, तब शायद इस दूरी के चलते उनके दिल में मोहब्बत का जज्बा बढ़े; मगर यह भी उनकी भूल थी। शादी के बाद शकरआरा का दिमाग सातवें आसमान पर पहुंच गया। बहन तो बहन, उसने मां-बाप की तरफ भी देखना छोड़ दिया। उसकी सारी दौलत और हुकूमत उसका हुस्न था, जिसकी वजह से उसको सब कुछ आसानी से मिल जाता था। ऊपर से तकदीर भी लिखवाकर लाई थी! बड़े घर शादी हुई। समाज में मियां के रुतबे और खानदानी दबदबे से उसको इज्जत मिलनी ही थी। मां-बाप को भूली, अपनी छोटी बहन को भूली। जमाल खां और उनकी मां रस्मेदुनिया निभाते रहे। ईद-बकरीद मिलना-मिलाना जारी रख दुःख-सुख में इत्तला देना नहीं भूले। ऐसे तनातनी के रिश्तों के बीच भी जाने कैसे कमाल और समीना की दोस्ती पनप गई!

शादी के साल-भर बाद तक खुरशीदआरा का दिल धड़कता रहता था कि जाने कब अटैची उठाए समीना घर की बेल बजा दे! मगर साल-भर तक ऐसी कोई घटना न घटी जिससे उनके धुकधुकाते दिल पर खराश तक लगती। समीना का गेहुंआ रंग खिलकर गुलाबी हो गया। आंखों की चमक बढ़ गई। खुरशीदआरा कभी-कभार बहन के घर जाकर सास-बहू का रिश्ता भी देख आई थीं। सो धीरे-धीरे करके उनके दिल पर छाए फिक्र के बादल छंटने लगे और रात को वह चैन की नींद सोने लगीं! मन-ही-मन बेटी की समझदारी की दाद देतीं कि एक मगरूर औरत को उसने किस

तरह अपना बना लिया है कि बात-बात पर बहू के लिए मुंह से 'चांद' तो कभी 'चंदा' का लफ्ज निकलता है। उसकी राय के बिना कोई फैसला नहीं होता है, यहां तक कि लड़कियों की भी नहीं चलती है। फिर वे दोनों शुरू से बाहर रहीं। मौका ही नहीं मिला कि मां के कान भरतीं या फिर भाई को भड़कातीं या फिर बाप से उलटी-सीधी शिकायतें लगातीं। अब तो खुरशीदआरा को बस एक ही फिक्र है कि किसी तरह बेटी की गोद भर जाए, मगर दामाद ने तय कर रखा है कि शादी के पांच साल तक कोई औलाद पैदा नहीं होगी, जब तक उसकी आमद का पूरा इंतजाम न हो जाए—यानी बाप की क्लीनिक जम जाए, समीना ससुराल में पूरी तरह रच-बस न जाए—तब तक खानदान बढ़ाना हिमाकत है!



रात को अपने प्लान की इत्तला समीना ने कमाल को दी। सारी बातें सुनकर कमाल कुछ देर चुप रहा। समीना मियां के मुंह को ताकती रही फिर धीरे से बोली, "क्या हुआ?"

"हुआ तो, यार सुम्मी, कुछ भी नहीं, मगर मैं सोच नहीं पा रहा हूं कि किताब की या फिर दवाई की दुकान खोलने के खयाल की जगह तुम्हें एकाएक ब्यूटी पार्लर का आइडिया कहां से आया? मैं उसके रूटकॉज को ढूंढ़ नहीं पा रहा हूं?" कमाल ने कहा।

"हां, बात आसान थी कि मैं किताब और दवा की दुकान खोलने का नुस्खा बड़ी अम्मी को थमाती, मगर जानती थी कि वह फौरन रद्द कर दिया जाता, यह कहकर कि क्या अब यही करने को बाकी है कि हम मोहल्ले में दुकानदारों से पट्टी लें, मगर ब्यूटी पार्लर खोलने की बात अम्मी कभी रद्द नहीं कर सकती थीं।" समीना हँस पड़ी।

"वह क्यों?" कमाल ने पूछा।

"क्योंकि वह अम्मी के फायदे की बात थी।" इतना कह समीना अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराई। उसकी चमकीली आंखों में शरारत नाच रही थी।

कमाल पल-भर देखता रहा फिर कुछ गंभीर हो बोला, "मगर यार! अब्बू एतराज करेंगे। मुझे भी यह बात कुछ भली नहीं लग रही है।"

"राबिया की अम्मा के घर में रहने से कहीं बेहतर है यह बात! फिर बड़ी अम्मी ने हां कर दी तो फिर उसको रद्द करने की किसकी मजाल?" समीना ने इतराकर कहा।

"हां, बात तो सही है, मगर...अगर मैं चाहूं तो पासा पलट सकता हूं।" कमाल

ने शरारती लहजे से कहा।

"बिलकुल नहीं, तुम्हें मेरी कसम! तुम राबिया की मां को नहीं जानते हो...हम बड़ी मुसीबत में पड़ जाएंगे।" समीना कॉपी पर कलम रख तेजी से उठ, कमाल के पास जाकर बोली।

"रिश्वत दो, तब तुम्हारे काम में खलल नहीं पड़ेगा, वरना..." कमाल ने कुछ सोचते हुए कहा।

"बोलो, रिश्वत में क्या चाहिए?" उत्तेजित हो समीना बोली।

"बेसन का हलवा और गरमागरम आलू की पकौड़ियां...चाय बाद में।" इतना कह कमाल हँस पड़ा।

"कभी तुम्हारी भी बारी आएगी, बच्चू! तब हिसाब बराबर करूंगी!" झटके से समीना बोली और कमरे से बाहर निकली!

15

एकाएक आसमान पर काले-काले बादल छाने लगे। जुलाई का आधा महीना गुजरने को है। एक-दो बार नाम की बूंदाबांदी हुई जरूर, मगर हवा घिर आए बादलों को जाने किधर उड़ा ले जाती थी। समीना बेसन भूनने में लगी थी, तभी आया चीखी।

"ए छोटी बेगम! आओ देखो, कैसी टपाटप बूंद पड़त हैं...अल्लाह मियां तनिक ठहरो तो, कपड़ा तो उठाय लें!" सूखते कपड़ों को जब तक आया उठाती तब तक बारिश तेज हो चुकी थी। समीना का दिल चाहा कि वह दौड़कर बाहर जाए और जी भरकर भीगे, मगर बेसन के कढ़ाई में लग जाने के डर से वह काम में लगी रही। बेसन और मिट्टी की सोंधी महक घर में भर गई थी। सभी मौसम की पहली मूसलधार बारिश देखने बाहर बरामदे में जमा हो गए थे!

"सम्मो आओ, बड़ी मजेदार बारिश हो रही है।" कमाल ने समीना को आवाज दी।

"इस बारिश ने मिजाज ही बदल दिया है। अब इस बारिश का लुत्फ तो उठाना चाहिए!" जमाल खां ने आंख पर लगी ऐनक को ठीक करते हुए कहा!

"मसालेदार चाय बनवाती हूं...आया!" शकरआरा ने मूड में आकर आया के लिए घंटी बजाई!

"देखिए, वह हाजिर है।" कमाल ने ताली बजा कहकहा लगाया।

"अरे चांद, तुम कैसे हमारे दिलों की बात जान लेती हो?" शकरआरा ने दुलार-भरी आंखों से बहू को ताका।

"सब मेरा कमाल है, अम्मी!" कमाल ने उठकर समीना के हाथ से ट्रे ले मेज पर रखी।

"वाह! क्या कहने हैं? हमारी साली साहिबा ने अपनी बेटी क्या दी है, हमारी जिंदगी जन्नत बना दी है।" जमाल खां ने पकौड़ी उठाते हुए कहा।

"तो क्या अम्मी ने जहन्नुम बना रखी थी, अब्बी!" कमाल ने हलवा मुंह में डाला।

"नालायक! बाप से मजाक करता है!" शकरआरा ने चाय बनाते हुए बेटे को प्यार से झिड़का।

"देखो भई शकर! बात तो सच है, तुम तो हूर हो, मगर जन्नत समीना है।" इतना कहकर जमाल खां ने चाय का घूंट भरा।

"आप भी अब्बी! हूर तो जन्नत में रहती है, आप हमेशा से जन्नत में रहते आए हैं, बस मुझे बनाने के लिए ऐसा कहते हैं।" रूठे अंदाज से समीना ने कहा और ससुर की प्लेट में गरम पकौड़ियां डालीं।

"बस भई, खाना नहीं खा पाऊंगा!" जमाल खां बोल उठे।

"बड़ी अम्मी, जरा ठहरें। आपके लिए गरम-गरम पकौड़ी छानकर लाती हूं।" इतना कहकर समीना तेजी से उठी।

"बस बेटी, तुम बैठो। बाक़ी आया तल लेगी। वह देखो, लेकर आ भी गई!" शकरआरा ने बहू का हाथ पकड़ उसे रोका।

बारिश की झड़ी लगी हुई थी। हवा मतवाली हो पानी की फुहारों को भी अपने साथ ला रही थी। सबके बालों पर पानी की नन्हीं-नन्हीं बूंदें हीरे की कनी की तरह चमक रही थीं। बादल घुमड़-घुमड़कर जाने कहां से चले आ रहे थे! बारिश की तेजी को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे अपने देर से पहुंचने की कमी को वह आज ही पूरा कर दिलों से सारे गिले-शिकवे धो डालना चाह रही हो। चाय खत्म हो गई थी। केन की कुरसियों पर बैठे सब बड़ी खामोशी से गिरती बारिश को देख रहे थे, जो भरे पानी में गिरकर बताशे फोड़ रही थी।

समीना और कमाल ने आंखों-ही-आंखों में क्या कहा-सुना और कब अपने कमरे की तरफ चले गए, पता ही न चला। शकरआरा को सफिया याद आ रही थी। वह होती तो इस बारिश में लाख मना करने पर भी जी भरकर नहाती। कल रात फोन आया था, कह रही थी कि यहां पर तीन दिन से बिजली नहीं है, जिसकी

वजह से पानी नहीं है। कल दोपहर को कॉलोनी में पानी की गाड़ी आई तो सबकी टंकियां भरीं, वरना तो सब बिना नहाए इस गरमी में हाय-हाय कर रहे थे। फ्लैट में वैसे ही दिल घुटता है, ऊपर से जगह कम, पानी भरने के लिए ड्रम रखने की कोई सहूलियत नहीं, सिवा बालटियों के...कुछ मोहल्ले तो ऐसे हैं जहां पर रात के तीन बजे से बरतनों की लाइनें सड़क पर लग जाती हैं। मेरा दिल यह सब देखकर बहुत घबराता है। अजीब-सा लगता है कि दिल्ली में यह सब भी देखने को मिलेगा! आप कब आ रही हैं, अम्मी? आप जब भी आएं जाड़े में आएं, ताकि आपको परेशानी न हो। आप तो गरमियों में दो वक्त नहाने की आदी हैं।

"नाम बड़ा और दर्शन छोटा।" शकरआरा ने होंठों ही होंठों में कहा।

"कुछ कहा तुमने?" चौंककर जमाल खां बीवी की तरफ मुड़े।

"नहीं, कुछ खास नहीं, बस कल रात कही सफिया की बातें याद आ रही थीं। बच्ची के कंधों पर जिम्मेदारी का एकाएक बोझ आ गया।" ठंडी सांस भरी शकरआरा ने।

जमाल खां ने उनको गहरी नजरों से देखा फिर धीरे-से कहा—

"हां...उसे वहां आराम भी बहुत है। अगर वहां की जिंदगी उसे भाती न तो कब की लौटने की बात किसी-न-किसी बहाने से कहती, मगर वह उलटा तुम्हें बुला रही है। इसका मतलब है कि वह वहां खुश है। फिर मियां के साथ अकेली है जिसकी हसरत तुम शादी के बाद अरसे तक पाले रहीं। उसे तो बिना मुंह-मांगे मुराद मिल गई। इसलिए मेरी परी बेगम, आप बेटी की फिक्र न करें।"

"बात तो कोई आपसे बनाना सीखे।" शकरआरा की भवें तनीं।

"मतलब?" चौंककर बोले जमाल खां।

"यही कि बेटी के बहाने मुझ पर ताने मार दिए!" शकरआरा ने कहा और उठने लगीं।

"बैठो, तुम्हें मेरी कसम! इस उम्र में भी तुम्हें अपनी बातों का खुलासा देना पड़ेगा?" जमाल खां ने मिन्नत-भरे स्वर में कहा!

"और नहीं तो क्या...कितनी बार कहा कि मेरी मिसाल देकर बातें न किया करें, मगर..." रूठे स्वर में शकरआरा बोलीं।

"चलो, छोड़ो इन बेकार की बातों को। यह बताओ इन संदली कलाइयों में इस बार हरी-हरी चूड़ियां क्यों नहीं हैं? सावन तो शुरू हो गया है।" जमाल खां ने लहजा बदलकर बेगम की कलाइयां पकड़ते हुए कहा।

"हां, सच है, इस बार 'करेली' पहनी ही नहीं। पता नहीं 'मासूमा' अभी तक

आई क्यों नहीं, वरना तो हर माह चूड़ियों से भरा झाबा लेकर खड़ी रहती है।" शकरआरा बोलीं।

"उसका बुढ़ापा है। बेहतर है, कल ही हाशिम को भेज उसकी खैरियत पुछवाएं और मदद की जरूरत हो तो उसका पूरा खयाल रखें...हमारी अम्मा को भी उसी ने सुहाग की चूड़ियां पहनाई थीं फिर फुफिया, बहनों और अब आपके बाद बेटियों को। अब ऐसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाले रिश्ते कहां मिलते हैं?" जमाल खां ने गहरी आवाज से कहा। उनकी आंखों में हलकी उदासी की परत छा गई। गिरती बारिश को देखने के बहाने जाने किस-किसको देखने लगे।

"अम्मी, हम लोग अभी आते हैं।" कमाल ने शकरआरा के कंधे पर हाथ रख प्यार से कहा।

"इस बारिश में? पिछली बार की तरह फिर कार कहीं फंस गई तो?" शकरआरा ने बेटे का हाथ थपथपाया।

"अब्बू लेने आ जाएंगे पिछली बार की तरह..." कमाल ने कहा और आगे बढ़ते हुए बोला, "आओ समीना, बारिश रुक गई तो ड्राइव का सारा मजा जाता रहेगा।"

"यह बारिश अब रुकने वाली नहीं है, चलेगी दो-तीन दिन तक यूं ही।" जमाल खां ने सिगार सुलगाते हुए कहा।

"खाने के वक्त तक आ जाना, दलभरी और शामी कबाब बनवाने जा रही हूं।" शकरआरा ने कुर्सी से उठते हुए कहा।

"मुझे बच्चा समझकर आप कब तक रिश्वत देती रहेंगी! हम आ जाएगे।" इतना कह कमाल ने समीना को बाएं हाथ से अपने करीब कर दाहिने हाथ से छतरी खोलकर दालान की सीढ़ियां पार कीं और गैराज की तरफ बढ़े।

जमाल खां उनको जाता देख बड़े अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराए, फिर मन-ही-मन बोले—'बड़े होकर बेटे बाप की ही नकल करते हैं। इस मौसम में मैं कब चैन से बैठता था। सच है, जवानी के जज्बे ही कुछ और होते हैं।'

गिरती बारिश में कार गैराज से निकल सड़क की तरफ मुड़ी। उसी लमहा बादल जोर से गरजा और आसमान पर बिजली तड़पकर रह गई। शकरआरा के बढ़ते कदम ठिठक गए। कान पर हाथ रखे वह पल-भर खड़ी रहीं फिर मुड़कर बोलीं, "कमाल की बचकाना हरकतें मुझे फिक्र में डाल देती हैं। अब इस तूफानी मौसम में...आपको रोकना चाहिए था न।"

"भूलो मत, शकर! उसके और मेरे पैरों के जूतों का नंबर एक हो गया है।'

"आप भी बस..." कहती हुई शकरआरा बावर्चीखाने की तरफ मुड़ीं।

"अरे जनाब, गरम चाय मंगवाइए और जरा देर हमारे पहलू मे आकर बैठें!

यह तनहाई और आप जैसा साथी, खुदा हमारे ऊपर हमेशा की तरह आज भी मेहरबान है!" जमाल खां ने सिगार का कश ले कहा!

उनकी बात सुन शकरआरा के चेहरे पर इस उम्र में भी खून दौड़ गया। झेंपते हुए बोलीं, "अभी आई।"

पानी बरस रहा था। जमाल के जहन में घर का आंगन उभर रहा था, जहां वह कागज की नाव नाली में तैराने के बहाने भीग रहे थे। ऊपर खिड़की से अम्मा की फटकार पड़ रही थी।

"मैं देख रही हूं, जामुन...मेरे सब्र का इम्तहान मत ले, बेटे...अंदर आ... जामुन!" आवाज दूर होते-होते गुम हो गई। मां का धुंधला चेहरा बारिश के बरसते परदों में कभी छुपता, कभी दिखता उन्हें बेचैन कर रहा था।



समीना और कमाल जब पुल के नीचे से गुजरे तो उन्हें लगा कि पुरानी मारुति आधी डूब चुकी है, बस कुछ ही देर में इंजन बंद होने वाला है, मगर बड़ी आसानी से कार पानी को चीरती ऊपर सड़क पर आई। दोनों ने राहत की सांस ली। बाईं तरफ गाड़ी मोड़कर कमाल ने हमेशा की तरह गली के मुहाने पर पार्क की और समीना को इशारा कर नीचे उतरा। रास्ता गंदगी से अटा था। कीचड़ में दोनों के पैर सन चुके थे! ढाल से पानी का बहाव नीचे की तरफ तेज था।

"कौन?" दरवाजा खटखटाने पर आवाज उभरी।

"समीना।" समीना ने चेहरे पर पड़ी पानी की बूंदों को दुपट्टे से साफ किया।

"खोलत हैं।" अंदर से आवाज आई।

अंदर का दृश्य बाहर से कम बिखराव का न था, बस फर्क इतना था कि यहां पर पानी टपक जरूर रहा था, मगर गंदगी नहीं थी। दोनों को देखकर औरत के चेहरे पर खुशी कौंध गई। उसने टीन की कुर्सी को पोंछकर आगे करते हुए कहा—

"बैठ जाएं...ऐसे तो बूंद-भर पानी को तरसत हैं और अब देखो, जल-थल एक कर दीहिन हैं नीली छतरीवाले!" यह कहकर वह हँस पड़ी।

"बैठेंगे नहीं, जल्दी से आस-पास से लड़कों को पुकारो, ताकि कार से सामान उतार लें।" कमाल ने छाता बंद करते हुए कहा।

"आपको हमारी चिंता जाड़ा, गरमी, बरसात लगी ही रहत है...जाने कउन जनम का ऋण उतारत हो।" उस अधेड़ उम्र की औरत के चेहरे पर भावना की तरलता छा गई फिर वह बाहर निकल पड़ोस की झुग्गी का किवाड़ पीटने लगी, "शामू... शामू, बिज्जू और काले को लेकर आ...डॉक्टर साहिब आए हैं!"

इस बीच समीना और कमाल कीचड़ में छपाछप करते कार की तरफ लौटे और डिक्की खोलकर सामान उठाने लगे—प्लास्टिक की शीट, खाने का समान, कुछ दवाएं और इसी तरह की कई और चीजें थीं। छोटी उम्र के लड़के सिर पर प्लास्टिक का थैला लगाए भागे-भागे आए और नमस्ते कर उनके हाथों से सामान ले वापस अपनी झोंपड़ी की तरफ लपके। उन्हीं के पीछे एक काले रंग की हट्टी-कट्टी औरत पानी से भरी बोतल पकड़े आई और समीना से बोली—

"भौजी, पैर तो धुलवाय लो। का गत बन गई है कपड़न की, देखो तो।"

"अरे ठीक है।" जब तक समीना यह कहती उसने समीना की कीचड़-भरी जींस की गोट और पैरों पर पानी डाला और कमाल की तरफ बढ़ी, कमाल ने तेजी से पैर पीछे किया तो वह मुड़कर बोली—

"कैलास रे, बाप को भेज दे! डॉक्टर साहब का जूता भी सना है कीचड़ मा।"

"बस, बस, अब चलते हैं। पानी कुछ थमा है, वरना पुल के नीचे पानी बढ़ने से परेशानी हो जाएगी।" इतना कह कमाल कार का दरवाजा खोल अंदर बैठ गया और कार स्टार्ट की। तब तक समीना भी पैर का पानी झटक पायंचे निचोड़कर सीट पर बैठ चुकी थी। कमाल ने हाथ हिलाया और कार आगे बढ़ाई।

"आज ही बरसाती और लांग बूट निकाल लेना।" कमाल ने धीरे-से कहा।

बारिश की झड़ी मद्धिम पड़ गई थी, मगर काले मेघों का काफिला चलना बंद नहीं हुआ था। बीच-बीच में गर्जन-तर्जन का स्वर भी झूमते, पानी झंटकारते पेड़ों के बीच से उभर रहा था। वाइपर ने सामने का शीशा साफ कर दिया था। कमाल बड़े आराम से कार चला रहा था। सड़कें खाली थीं। कहीं-कहीं कोई साइकिल-सवार पानी से सराबोर गुजरता नजर आ जाता था! ठेले, रिक्शे या तो अपने खटालों पर या किसी पेड़ के नीचे शरण लिए खड़े थे। पानी से भीगे परिंदे अब अपने पंख फड़फड़ाते उन्हें सुखाने में व्यस्त थे।

"यार समीना! इस बीमारी-भरे मौसम का दूसरा चेहरा कितना रूमानी है!" कमाल ने मीठी नजरों से समीना को ताका। नम हवा ने कमाल के माथे पर बाल बिखेर दिए थे। समीना ने अजीब सम्मोहन से कमाल को ताका, फिर माथे के बाल हटा उसका चुंबन ले अपना सर उसके कंधे पर रख दिया। कमाल ने उसकी मांग चूमी।

आठ बजते-बजते दोनों घर वापस आ गए थे। नहाकर अब गरम कॉफी की चुस्की ले रहे थे। बाहर बूंदाबांदी फिर से शुरू हो गई थी। बिजली रह-रहकर तड़प उठती थी। समीना को छींक-पर-छींक आए जा रही थी। सिर भी हलका-सा दुःख रहा था।

"बहुत वक्त से पहुंचे हम लोग, वरना तो..." कमाल ने कॉफी की खाली प्याली मेज पर रख अंगड़ाई लेते हुए कहा, फिर कंप्यूटर का स्विच ऑन किया।

"बाकी सामान कल रखवाऊंगी। अभी तो हाशिम अब्बी के कमरे में होगा।" समीना ने नाक के ऊपर विक्स मलते हुए कहा।

"कल तो वैसे भी हमारा निकलना नहीं हो पाएगा, छोटी अम्मी ने खाने पर बुलाया है। और मेरी मीटिंग ही साढ़े सात बजे तक चलेगी।" कमाल ने काम में डूबते हुए कहा।

"सुबह चलेंगे। तुम जल्दी उठ जाना! ज्यादा नखरे न करना, वरना मैं रोज की तरह कल जगाने वाली नहीं हूं...यह एलर्जी मेरा पीछा जल्दी तो छोड़ेगी नहीं।" इतना कह समीना ने दोहर खोली और ओढ़कर पलंग पर लेट गई। कमाल की तरफ से कोई जवाब नहीं आया। वह वर्ल्ड कॉनफ्रेंस की मेडिकल रिपोर्ट में उसी तरह डूबा रहा। अगली बैठक फ्रांस में होने वाली थी जिसके लिए उसे एक परचा लिखना था। यह बैठक जर्मनी में हुई बैठक का 'फॉलोअप' थी।



रत्ना का पड़ोस आबाद हुए अभी महीना भी नहीं हुआ था कि दोनों घरों में छोटी-छोटी झड़पें शुरू हो गई थीं। पहली खटपट तो गूलर के पेड़ को लेकर हुई थी जो दोनों घरों के बीच खिंची दीवार के कोने में खड़ा था, जिसकी जड़ रमेश-रत्ना के और उसकी आधी शाखाएं पड़ोस के आंगन में छतनार-सी बन फैल गई थीं। किरायेदार अपनी मर्जी का कोई पेड़ वहां लगाना चाहते होंगे या उन्हें धूप भरपूर न मिलती होगी सो उनका इसरार था कि रमेश पेड़ को छांट दे। रमेश चुप रहा, मगर मुकेश रोज-रोज के तकाजे से तंग आकर बोल उठा कि आप मकान मालिक से जाकर कहें। वह मुख्तार ठहरे, पेड़ काटें या डाली, हम काहे अपने ऊपर पाप चढ़ाएं? मगर आज की झों-झों कुछ ऐसी थी कि उनके बीच सुलह-सफाई की जगह झगड़ा पूरी गली में फैल गया जैसे सैलाब का पानी...

"ई साला! चबूतरा तो बनाय लिए हो, मगर हमरे घर में नाला काहे छोड़ दियो?" पड़ोसी ने जोर से चीखते हुए रमेश के घर की कुंडी बजाई।

"काहे चीखत हो, कुछ अनर्थ घट गवा का..." इतना कह रमेश ने दरवाजा खोला। पड़ोसी ने इशारा करके दिखाया और रमेश को खूनी नजरों से घूरा।

"कल रात गढ़े में मुकेश का पैर बिछल गया था और बिछलता भी क्यों न, पूरी गली में भरा पानी तो देख ही रहे हो!" रमेश कुछ परेशान-सा बोला। उसने आंगन-गली में पड़े अद्धों को भरकर गड्ढा बड़ी मुश्किल से पाटा था। ड्योढ़ी पहले से ऊंची हो गई थी, जिससे पानी पड़ोस की मोरी के रास्ते कमरे में घुस गया था।

"आओ देखो, भैया! हमार सारा कीमती कपड़ा गंदे पानी में भीग गवा।" रुआंसी-सी पड़ोसन बक्सा खाली करते-करते एकाएक दरवाजे पर रेशमी रंगीन कपड़े हाथ में उठाए आन खड़ी हुई, जिनमें से पानी चू रहा था।

"ईंट बक्सा के नीचे नहीं लगाए रहेव का?" रफूगर ने छत पर खड़े-खड़े पूछा।

"बक्सा में छेद होइए।" उसकी पत्नी सहानुभूति से बोल उठी।

"तोड़ो! फौरन तोड़ो चबूतरा, वरना..." पड़ोसी तैश में बोल उठा।

"इतना ऊंचा तो न बनाए का चाही।" लोटा हाथ में लिए जाते हुए मोची बुदबुदाया।

"लेव, देखो तो जरा, मिट्टी कटना शुरू होय गई।" रफूगर अपने घर के छज्जे पर खड़ा-खड़ा उनके फटे में फिर टांग अड़ाते हुए बोला।

रमेश और नए पड़ोसी में तू-तू मैं-मैं अभी चल ही रही थी कि गली में बढ़ते पानी ने मलबे के नन्हे-से उभरे टीले को सफाचट कर डाला। पीछे खड़ी रत्ना को यह देख एकाएक हँसी आ गई। उसने रमेश की कमीज पीछे से खींच धीरे से कहा, "अब बस भी करो, काहे अपना सर दुखा रहे हो!"

रमेश की नजर पड़ती इससे पहले गली में दबी-दबी हँसी उभरी, मगर पास की कच्ची गली से आती चीख-पुकार सुन गायब हो गई थी। सबका ध्यान उधर चला गया। दो दिन की मूसलाधार बारिश के बाद कुछ देर के लिए बारिश रुकी थी। रामअवतार तेली के पड़ोसी सुखनवा कुंजड़े ने ऊपर से आती अपनी नाली रामअवतार की नीचे बनी नाली से जोड़ ली थी, जिससे उनके घर के सामने कच्चे रास्ते पर बजबजाहट फैली हुई थी। ढाल के कारण नाली का पानी बह जाता, मगर अपने पीछे कूड़ा छोड़ जाता, जिसमें गू से लेकर जाने क्या अल्लम-गल्लम होता। अपनी नाली रामअवतार रोज अंगोछा बांध साफ करते, मगर दूसरे का कोढ़ काहे साफ करते! उनके एतराज में दम था कि चलो, पानी एक रास्ते से जाए, मगर साफ-सफाई तो सब का कर्तव्य है।

आसपास वाले सुखना को कायल करने लगे। पहले वह ढीठ बना सुनता रहा, फिर एकाएक उसने आव देखा न ताव गेती रामअवतार के हाथ से छीन बोल उठा, "इ रस्ता तोहरे बाप का है जो हम तोहार मर्जी चलै दें...लेव, हम खोद लेत हैं नई नाली! करो अब बात...साले चूतियापंथी करत हैं।"

"ऐ सुखना, तेरी मत मारी गई है...इस संकरे रस्ते में चलय की जगह तंग है और तुम नाली पर नाली खोदत हो, ऊपर से गाली-गलौज?" सामने वाले पड़ोसी का जवान बेटा अपने दरवाजे पर खड़ा-खड़ा दबंग आवाज में चीखा। उसके बाजू की

मछलियां बनियान से निकली दिख रही थीं।

"सारे दिन मरो-खपो, रोटी का जुगाड़ कर लौटो तो इन लाला लोगन की किचकिच सुनो...हमरी नाली गंदी रहे या साफ, केहू से मतलब?" सुखना गेती पूरे जोश से गीली जमीन पर चलाने लगा।

जहां-तहां बरसाती पानी जमा था, वह उछलकर जाते हुए वैद्यजी पर पड़ा जो कोई मरीज देखने जा रहे थे। खीजकर बोले, "राम, राम..."

इस बीच सुखना ने अपना काम जारी रखा। पड़ोसी के जवान बेटे का खून खौलने लगा। वह एकाएक तैश में आगे बढ़ा और दांत किचकिचाकर बोला, "आज साले इस कुंजड़े के बच्चे को..." फिर आगे बढ़कर उसने सुखना का हाथ पकड़, दो झापड़ मारकर कहा, "खोद के देखो! बच्चू कोंहड़े की तरह सर फोड़ देबय, हां!"

"सफाई की बात करना जैसे पाप होय गवा।" कहते रामअवतार ने झट अपनी गेती छीनी और झगड़े के बढ़ने के डर से घर में घुस, दरवाजा बंदकर कुंडी लगा ली।

"हां, अब बोल, काहे उस्तादी दिखा रहा था?" आसपास के घरों से भी जवान लड़के निकल आए थे। माहौल में गर्मी देख आसपास खड़े बुजुर्ग अपने-अपने घरों से बेटों को आवाज देने लगे, मगर उनकी सुनता कौन।

"हाथ लगा के देखो!" सुखना अपने को कमजोर पड़ता देख घबराया-सा बोल पडा। बस, फिर क्या था। घूंसा-थप्पड़ से सुखना की आवभगत शुरू हो गई। बीच बीच मे उसकी 'हाय मार डाला' की आवाज भी उभरती। घर से कुंजड़िन निकल गाली-कोसना करती बीच-बचाव करने लगी। यह नाटक एक दो पल और चलता अगर ऊपर से बादल बरस न पड़ते। सुखना अलबत्ता अपना मुंह पीटता, वहीं कीचड़-भरी जमीन पर बैठा, बेबसी से कुछ देर खीझता, गाली बकता रहा।

वातावरण में तीखी नमकीन गंध फैल गई थी। जगह-जगह नाली के टूटने और मलबे-कूड़े के जमाव से पानी का बहाव थम रहा था। ऊपर से गली का मुहाना भी बिजली के खंभा गडने से पट-पटाकर कुछ ऊंचा हो गया था जिसके कारण सड़क की तरफ के ढलान का पानी भी गली में भर रहा था। यह देखकर नुक्कड़ पर रहने वाले रिजवान जूतेवाले परेशान थे। घर के रास्ते में ईंटें डाल जो रास्ता बनाया था वह भी डूब चुका था। तंग आकर उन्होंने पैंट उतार कंधे पर डाली और जूता-मोजा दोनों हाथों में उठाए, घुटने तक की जांघिया पहने यह कहते घर से बाहर निकले, "जेका हॅंसे का है, हॅंसे, हमका दुकान तो खोलबै का पड़ी।"

पत्नी आंचल में मुंह छुपाए हॅंसती पति को घुटने-घुटने पानी में छप-छप करते खिड़की से देखने लगी। बारिश जो हलकी फुहार में बदली थी, उसने फिर वेग पकड़ लिया था। पत्नी हॅंसी भूल व्याकुल-सी कमरे से बाहर यह देखने निकली कि उनको

चढ़ाई पर कोई रिक्शा मिला या नहीं, मगर बारिश की भारी बौछार हवा के संग दाएं-बाएं डोलकर सड़क को धुंधला बना रही थी। कुछ देर वह बेमतलब चबूतरे पर खड़ी रही। जब कुछ न सूझा तो अंदर आकर घर की सफाई में लग गई। रात की चिता सर पर सवार थी कि क्या पकाए। 'बरसात में मांस-मछली वैसे छूट जाती है। सब्जी भी हरे साग वाली कौन छुए फिर बचता क्या है पकाने को। वही आलू...आज तो घर में वह भी खत्म है...न फेरी वाला आया, न निकलना हुआ...हमसे अच्छे तो लालाजी के घर वाले हैं जो मौसम का रुख देख महीना दुइ महीना उपवास-व्रत रख टायम काट लेत हैं।'



पीपलवाली गली में कच्चे गारेवाली कोठरियां बड़े बूंद की इस बारिश को न सह सकीं और तेवराकर गिर पड़ीं। बारिश में मूंगफली बेचने वाली बुढ़िया का रोना कौन सुनता, ऊपर से बेटे-बहू ने इस बिपता की सारी झुंझलाहट उस पर निकाली। रास्ता बंद होने से जगह-जगह गली में पानी भरने लगा। घरों में बर्तन तैरने लगे और परेशान संपोले मारे जाने के डर से छटपटाते-से इधर-उधर घुस अपनी जान बचाने में लगे थे। बारिश में भीगती बुढ़िया सनक में रोती आगे बढ़ रही थी, जिसे देख चंदन ने उसे बुला दुकान के पटरे पर बिठा, दिलासा दिया। एकाएक जो उसकी नजर ऊपर गई तो जान ही निकल गई—जब उसने अपने तंदूर की खपरैलिया छत पर लंबा डरावना सांप सुस्ताते देखा। भगावे तो डर है, नीचे गिरकर कहीं फिर तैरता हुआ अंदर घर की राह न पकड़ ले। वह कुछ देर सुन्न-सा बैठा रहा, फिर बुढ़िया को उसके भाग्य पर छोड़, कोठरी में कुंडी लगा, घर का दरवाजा खोल अंदर चारपाई पर पड़ गया। दुकान के दोनों लड़के दो दिन से आ नहीं रहे थे। बड़का छुट्टी लेकर घर गया था। छुटका बुखार में पड़ा था। अंदरसेवाली गली में पानी भरने का कोई मतलब न था, मगर जब दूसरी गलियां घुटने तक भर जाएं तो पानी अपना रास्ता आसपास बना ही लेता है।



मस्जिदवाली गली में कल रात से बारात का इंतजार हो रहा था। गाड़ियां ठप्प होने के कारण लड़कीवालों का मुंह सूखकर छुहारा हो गया था। खाना तो बिरादरी को खिलाना पड़ा, मगर लड़की बिना निकाह के दांतों पर मिस्सी मले, नाक में नथ डाले, खटाई बनी निकाह की आस में सूख रही थी। सहेलियां और भाभियां भी कब तक चिकोटी काट, हंसी-ठिठोली कर, माहौल को जिंदा बनाए रखतीं! वे सब भी खा-पीकर उल्टी-सीधी इधर-उधर पड़-पड़ाकर सो गई थीं। बाप, चचा का हाल बुरा था कि अब आगे क्या होने वाला है। मां दिल मसोसे बैठी बारिश के रुकने की मनौती पर मनौती

मांग रही थी। सुबह नाश्ते में रात का बचा खाना जैसे-तैसे चला दिया गया था, मगर दोपहर का खाना सवाल बन सामने खड़ा था। इस तूफानी बारिश मे मेहमान भी कैसे अपने घरों को लौटें, आखिर वह भी चंद घंटे को आए थे, क्या पता था कि इस मुसीबत में फस जाएंगे!

गाने-बजाने से गुल व गुलजार शादी का घर सोग में डूब गया था। लड़की-वालों को यह भय भी अंदर ही अंदर खाए जा रहा था कि जाने बरातियों पर क्या गुजर रही होगी। कहीं कोई अनहोनी तो नहीं घट गई? जाने बस कहां फंसी होगी या फिर...? किसी ने ट्रांजिस्टर ऑन किया तो खबरे सुनकर और दहशत फैल गई कि नदियां अपने खतरे के निशान को पार कर रही हैं। सड़कें पानी में डूबी हैं और कई जगहों पर पेड़ों के भारी मात्रा में गिरने से यातायात की गति अवरुद्ध हो चुकी है। कई स्थानों पर बसें उलटने की भी खबरें थीं। यह सब सुनकर लड़कीवालों का दिल बैठ-सा गया। बड़ी-बूढ़ियों ने जानमाज खोल, खुदा के आगे माथा टेक गिड़गिड़ाना शुरू कर दिया।

कितनी दुशवारियों के बाद लड़की की बात पक्की हुई थी। कर्जा लेकर सजावट और खाने का इंतजाम हुआ था। अब वैसा इंतजाम फिर से क्या हो पाएगा! और कहने को हो भी गया तो जाने बारात...इससे आगे दिल दहल जाता और कुछ सोचने-समझने की ताकत न बचती। बारिश ने कहर बरपा कर रखा था। उसमें फंसे लोग तौबा कर अपने गुनाहों की माफी मांग रहे थे।

16

सावन ने शहर में आकर जितनी भी हुड़दंग मचाई हो, मगर यह भी सच था कि जलती धरती और सुलगते बदन पर पानी की बूंदों ने रसों के गगरे भी छलकाए थे। प्रेम का पौधा भी तो इसी मौसम में बदन में झूमता है जब मन का आंगन चंपा, जूही, चमेली, बेला, रात की रानी और मधुमालती की मिली-जुली गंध से महका-महका रहता है। फुहारें चेहरे को स्पर्श कर मन की प्यास को जगा देती हैं। बिरह की लंबी काली रात भी हर करवट पर एक मीठी टीस दे जाती है। मिलन का उन्माद भी रोम-रोम में अजीब नशा भर देता है। कवि तो कवि आम आदमी का मन भी कोयल की तरह कूकने लगता है।

आसमान से गिरता झमाझम पानी देख मन संतोष से भर उठता है। उदासी भी छटककर दूर चली जाती है और मनमयूर बिना कारण नाचने लगता है। हॅसी

से चेहरे दमक उठते हैं और एक तरह की स्फूर्ति-सी पूरे शरीर में दौड़ती रहती है। आवाज मीठी हो या न हो, तानसेन बन सभी राग अलापने लगते हैं। ऐसे ही बरसते दिनों में मायके आने वाली लड़कियों में शमीमा भी थी। शादी के बाद पहली बार उसे अकेले मायके आने का मौका उसकी सास अनवरी बेगम ने दिया था।

शमीमा के आंगन में बड़ा-सा नीम का पेड़ था जिसकी मोटी डाल पर हमेशा सावन में झूला डलता था। पहले पूरा खानदान जमा होता था। तरह-तरह के पकवान बनते, मेंहदी लगती, गजरे गूंथे जाते और भर-भर हाथ चूड़ी पहनी जाती। अब वह सारी चहल-पहल यादों का हिस्सा बनकर रह गई है। चचाजाद, फूफीजाद, खालाजाद भाई-बहनों का ब्याह हुआ। नौकरी लगी और एक-एक कर सब गांव से शहर, फिर एक शहर से अनेक शहरों में जा बसे। सावन तो दूर अब उनका निकलना ईद-बकरीद पर भी नहीं हो पाता था। अब तो घर की चहल-पहल मोहल्ले-टोले की लड़कियों से हो गई थी जो खुद ही हठ कर, झूला डाल पेंगें लेतीं और फुलकी, बरे, दलभरी की जगह मैगी और पेस्ट्री से और सावन की कजरी की जगह फिल्मी गीत गा, सावन के मौसम को भी किसी बर्थ-डे पार्टी में बदल डालती थीं।

यह बातें अब यादों में ढलने वाली थीं क्योंकि पड़ोसी अपने आंगन में एक कमरा और बनवाना चाहते थे, जिसके कारण नीम की मोटी डाल काट दी गई थी। इससे पेड़ की खूबसूरती का जो सत्यानाश हुआ वह अपनी जगह, ऊपर से पेड़ का संतुलन भी बिगड़ गया था पिछली वर्षा में एक और डाल के टूट जाने से, इसलिए तय यही हुआ था कि पेड़ की इस इकलौती मोटी डाल को भी काट दिया जाए ताकि पेड़ दोबारा अपनी शक्ल ठीक से ले सके। सो यह आखिरी सावन था जिसमें डाल पर झूला पड़ना था। यह खबर शमीमा को जब लगी तो उसका दिल मचलने-सा लगा और उसने मायके आने की बात मन ही मन ठान ली थी, ताकि वह तनावर दरख्त को अंतिम बिदाई दे सके।

तभी रत्ना आंगन का दरवाजा खोल दाखिल हुई और खुशी से भर आगे बढ़ी। दोनों सखियां एक-दूसरी से लिपट गईं, फिर हाथ में हाथ डाल, पेड़ के नीचे बैठ बातें करने लगीं। मन में बहुत कुछ उमड़ रहा था। कहने को बहुत कुछ था। रत्ना ने अपने पड़ोसी की बददिमागी का रोना रोया और शमीमा ने लखनऊवालों की बनावट का। दोनों के दिल का गुबार जब हलका हुआ तो रत्ना ने शमीमा का हाथ देख कहा, "तेरे हाथ खाली कैसे? चल, दोनों चूड़ी पहनकर आते हैं?"

"चूड़ी तो बहाना है, तेरा मन चाट-पकौड़ों के लिए तड़प रहा है!" कहकर शमीमा हँसी।

दोनों रिक्शा कर सुहाग स्टोर पहुंचीं। भर-भर हाथ हरी चूड़ियां बांके कुमकुमों

के साथ पहनीं, फिर खूब जी भरकर बैगनी और दही-फुलकी खा घर लौटीं। मां ने शमीमा का दमकता चेहरा देखा तो उन्हें लगा, उनकी पुरानी शमीमा उन्हें मिल गई है, जो बीवी, बहू और मां के किरदारों के बीच दौड़ती हुई इन वर्षों में कहीं खो गई थी। दोनों सखियां अब साथ-साथ झूले की पेंग ले रही थीं। आसमान पर काले-काले मेघ छाए हुए थे। लगता था कि अब बारिश हुई, तब बारिश हुई, मगर मतवारी हवा उन्हें बहकाकर अपने साथ जाने कहां ले जा रही थी।

शमीमा का बिस्तर दालान में लगा था। शमीमा को पिछले दो दिन से बारिश का इंतजार था। बचपन से उसे हवा में उड़ती फुहारों का चेहरे को छूना बहुत भाता था। मगर सुबह से बारिश का कतरा भी आकाश से नहीं गिरा था। कल शाम मेहदी उसे लेने आने वाले हैं। मायके में आज उसकी आखिरी रात है। उसने तरसती आंखों से आसमान की तरफ देखा जहां बारिश तुली खड़ी थी, मगर बरस नहीं रही थी। इसी इंतजार में उसकी आंखें लग गई। रात के तीसरे पहर शमीमा को चेहरे पर कुछ चिपका-चिपका लगा। उसने नींद में चेहरे पर हाथ फेरा। पानी का स्पर्श पाते ही आंखें पट से खुल गई। महीन फुहारें पड़ रही थीं। वह हँस पड़ी।

रात-भर बारिश की झड़ी लगी रही। नीम की शाखें झूमती रहीं। ठंडी-ठंडी हवा उसके बदन में बड़ी मीठी-सी गुदगुदी पैदा कर रही थी। चौड़े पलंग पर वह खूब हाथ-पांव फैला किसी मछली की तरह मचल-मचलकर सोती रही। सुबह के लगभग तेज आवाज के साथ आंख खुल गई। बारिश ने जोर पकड़ लिया था, मगर यह आवाज कैसी है?

"क्या हुआ, शम्मो?" मां ने बेटी को बिस्तर पर बैठा देख पास आकर पूछा।

"यह शोर कैसा है, अम्मी?"

"अब क्या बतावें? जो नई दुकान खुली है उसका तिरपाल हटा टीन डल गई है। निगोड़ा कहीं बाहर का है।" मां ने शोर के कारण ऊंची आवाज से कहा।

"यह क्या मुसीबत है?' कनपटी दबाते शमीमा ने झुंझलाकर कहा।

"सभी को बुरा लगता है यह शोर...इस शहर का रिवाज भी नहीं है टीन-वीन डलवाना, मगर इस शहर में भी अब सब बदल रहा है।" मां बड़बड़ाई।

"बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद! कभी बरसात में भूसे के छप्पर में सोने का मजा उठाया हो तो जानें उजबक!" शमीमा के बाबा ने ऊंची आवाज में हँसते हुए कहा।

टीन पर पड़ती बूंदें ताशे की तरह बज रही थीं। शमीमा का फुहारों के मद्धिम झोंकों के संग सोने का सारा मजा जाता रहा। उसने बदन पर पड़ी चादर हटाई और बिस्तर से उतर पड़ी। दालान के खंभे से लिपट वह सामने नीम के पेड़ को भीगता देखती रही। मन में गहरे कहीं टीस थी कि अगली बार इन झूमती शाखों की जगह

ठूंठ देखने को मिलेगा, जाने उसमें कोपल फूटे या न फूटे? लंबी सांस भर वह बावर्चीखाने की तरफ बढ़ी ताकि अपने हाथों से बनी गर्मागर्म चाय का मजा मां-बाप को दे सके।

शमीमा ने मुंह धोते हुए जो नजरें उठा आइने में अपनी शक्ल देखी तो भौंचक-सी रह गई। दो दिन के आराम ने ही चेहरा बदलकर रख दिया था। उसके जहन में मेहदी के लफ्ज गूंजे जो यकीनन उसका दमकता चेहरा देख कहेंगे—"हमसे दूरी और यह नूर!"



हफ्ते-भर बरसे पानी ने शहर को तहस-नहस करके रख दिया था। कई इलाके पानी से घिरकर टापू बन चुके थे! रोज खाने-कमानेवालों का फाका शुरू हो गया था। बारिश ने भुट्टेवालों को भी दुबकाकर रख दिया था। फेरीवाले तो हाथ-पर-हाथ धरे बैठे थे। मजदूरों की भी छुट्टी हो गई थी। दुकानें कुछ खुलतीं, कुछ बंद रहतीं। हलवाई की दुकानों पर गरम समोसे-जलेबी की मांग होने पर भी सन्नाटा छा गया था। कई हलवाइयों की तो भट्ठियों तक में पानी घुस गया था।

गरमी से उकताए जो लोग बारिश की कामना कर रहे थे, वह इस सैलाब को देखकर अब घटा खुलने की दुआ मांग रहे थे। गरीबों की झुग्गी-झोंपड़ी तो पानी में डूबकर बरबाद हुईं, मगर कच्चे घर गिरकर गरीबी में आटा गीला कर गए थे। आसमान पर सूरज का कहीं पता न था। हरदम महसूस होता, जैसे झुटपुटे का समय हो, जब घड़ी देखो तो पता चलता कि दोपहर के बारह बज रहे हैं। इस सारी अबतरी में बीमारी का फैलना भी जरूरी था। जब गंदी नालियां और नाबदान अपनी गंदगी बरसात से भरी सड़कों-गलियों में मिला दें तो संक्रामक कीटाणुओं को रोकना मुश्किल हो जाता है।

शकरआरा को इस बीच कई बार राबिया की मां का ध्यान आया। एक बार हाशिम को भेजा तो पता चला कि घर में ताला बंद है और नगर महापालिका का नलका टूट गया है, जिससे उनकी गली में पानी उफन रहा है और घुटनों-घुटनों तक भर गया है। शकरआरा को समझते देर न लगी कि जरूर दुआ-तावीज के चक्कर में राबिया की मां कहीं अड्डा जमाए बैठी होंगी और इस बारिश में फंसकर निकल नहीं पा रही होंगी। राबिया का पंद्रहवां साल लग गया है। उसके ब्याह की चिंता हरदम मां को सताती रहती है। लड़की भी क्या है, बस आफत की परकाला है। स्कूल में जी न लगा तो पढ़ाई छूटी, सिलाई-कढ़ाई के स्कूल में नाम लिखवाया तो कहा कि आंख दुःखती है। बस मां के पल्लू से बंधी घर-घर पहुंचती है और घाट-घाट का पानी पीती है!

कई दिनों बाद जमादारिन आई तो शकरआरा ने उससे पहला सवाल किया।

"राबिया की मां का कुछ पता है? आखिर तुम्हारे ही पुरवा में तो रहती है।"

"हम का जानें उन छिनार का अता-पता।" इतना कह जमादारिन सिंक पर साबुन रगड़ने लगी।

"मतलब?" बिना कुछ समझे शकरआरा बोल पड़ीं।

"अरे बेगमजी, हम पुरवा के एक कोने पर, वह दूसरे कोने पर रहती है, फिर इस आफत-पानी मा हमका का पड़ी है अकारण ओकी खोज-खबर लेवे की।" वह उसी तरह काम में मगन रही।

कुछ झुंझलाकर शकरआरा ने टी.वी. खोल दिया। टी.वी. के खुलते ही जमादारिन अधूरी सफाई छोड़, खुले दरवाजे से टिककर, खड़ी हो परदे पर गुजरते रंगीन चेहरों को देखने लगी।

"क्या है रंगोली? काम में दिल नहीं लग रहा है आज?" शकरआरा ने पूछा।

"अपना टीविया काला-सफेद रहा, पानी के कारण खराब पड़ा है...मन तो करता है रंगीन खरीदें, मगर गांठ में इतना कहां..." कह रंगोली फिर बाथरूम में घुस गई मगर इस बार उसने दरवाजा बंदकर लिया—शायद अपनी बढ़ती इच्छाओं पर रोक लगाना उसे आता था।



बादल छंटने लगे थे। हरदम छाया सुरमईपन अब पौ फटने जैसी सफेदी में बदल रहा था। दोपहर होते-होते बेजान-सा सूरज किसी बीमार चेहरे की तरह आसमान पर दिखा। कुछ देर बाद ही सफेदी पीलेपन में बदल गई और सूरज की सुनहरी किरणें फीकी धूप के साथ धरती पर आड़ी-तिरछी लाइनें बनाने लगीं। शाम तक वातावरण साफ था। धूप हवा से नमी धीरे-धीरे करके सोख रही थी। घंटे-दो-घंटे बाद चिलचिलाती धूप में मौसम ऐसा हो गया जैसे कभी बारिश हुई ही न थी। मगर बरसात का रुका पानी अभी भी शहर को कई जगह गंदे तालाबों में बदले हुए था। मच्छरों और मक्खियों की भरमार हो गई थी। खांसी और बुखार से परेशान थे लोग।

सफिया का दिल्ली से फोन आया था कि वह अगले माह इलाहाबाद आने वाली है। कुछ दिन उसको अपनी ससुराल रायबरेली और लखनऊ भी रहना पड़ेगा, क्योंकि छोटे देवर का रिश्ता पक्का होने वाला है। इस खबर से कि वह आने वाली है, घर में खुशी की लहर दौड़ गई थी। शकरआरा अपनी बेटियों से सऊदी फोन पर बातें कर खैरियत ले लेती थीं। उनकी तस्वीर भी इंटरनेट के परदे पर देखने को मिल जाती थी। मगर ममता की प्यास जबानी बातों से कहां बुझती है? लड़कियां बड़ी होकर औलादें नहीं रह जातीं, 'हमजोली' बन जाती हैं! घर-गृहस्थी, बाजार-सामान, दुःख-सुख,

सगे-संबंधियों के बारे में जो बात करके उनसे मजा आता है वह तो बचपन में खाए चटखारेदार चूरन से कहीं ज्यादा होता है। अब उस कमी को सफिया भरेगी। बहन से तो उनकी कभी पटी नहीं जो दिल खोलती, कुछ उसकी सुनती, कुछ अपनी सुनाती।

समीना की शादी के बाद एक दिन जमाल खां ने शकरआरा से कहा था, "छोटी साली साहिबा को अब हमारे पास ही आकर रहना चाहिए। आखिर वहां अकेली रहती हैं, उनका दिल घबराता होगा!"

"हां, यहां इस घर में हर तरह का आराम है, आकर चैन से रहें...जब से बेवा हुई हैं, मैंने जाने कितनी बार कहा कि इस तकलीफ में मत रहो, नन्ही, चलो मेरे साथ, लेकिन वही हठ बचपनवाली—जो मैं कहूंगी उस पर कान नहीं धरना है...दरअसल उसको अपने इंटलेक्ट पर बड़ा घमंड रहा है। मगर क्लास में अव्वल आने के दिन गए, अब तो जिंदगी के इस नतीजे से सबक लो और चैन से आकर रहो। मगर वही मगरूरपना! उसे वह किसी तरह नहीं छोड़ती, जिससे मेरी जान जलती है।" शकरआरा उबल पड़ीं।

"जिसे, शकर, आप मगरूरपना कहती हैं शायद वह उनकी गैरत हो, फिर तब और अब में बहुत फर्क है। तब समीना साथ थी। छोटी ननद ब्याहनी थी। देवर साथ रहता था। अब सब अपने-अपने घर के हो गए। इबादत का उन्हें शौक है। यहां आकर करें, घर में बरकत होगी। तुमने कभी प्यार से कहा कि एक-दो दिन आकर रहें? फिर जब आएंगी तब आगे का मनसूबा रखा जाएगा।" जमाल खां ने पत्नी की तिनतिनाहट पर ठंडा फाहा रखा।

"तो फिर आप खुद क्यों नहीं कहते नन्हीं से! अदबी मजाक तो साली-बहनोई में खूब चलते थे।" शकरआरा इतना कह उठ गई।

जमाल खां को अपनी पत्नी की धारदार जबान का इल्म है। मीठी मगर जहरबुझी छुरी का वार उन्होंने खुद भी झेला है और मां को जख्मों से चूर तड़पते हुए भी देखा है। उन्हें पता है कि खुरशीदआरा उनके कहने का लिहाजकर एक-दो दिन आकर रह भी जाएं, मगर अपनी बहन के तेवर वह बरदाश्त नहीं कर पाएंगी और एक अनचाही कड़वाहट रिश्तों में आ जाएगी, जिसको अब तक दूरी बनाकर खुरशीदआरा ने बचा रखा है। इसलिए उनका यहां न आना ही ठीक है, वरना समीना का दिमागी तवाजुन बिगड़ेगा, जिससे कमाल और समीना की आपसी जिंदगी में फर्क आएगा। यह सब सोचकर जमाल खां ने लंबी सांस ली और दीवार पर लगी मां की तस्वीर को देखते हुए बरसों पुराना सवाल दिल-ही-दिल में दोहराया कि आदमी मां और बीवी में से किसे ज्यादा चाहता है? दो पाटों के बीच में पूरे तीस साल पिसने के बाद भी वह इसका जवाब तलाश नहीं कर पाए हैं, मगर मां की मौत ने उन्हें एक ऐसी जरूर दी है जो पके फोड़े की तरह उनके दिल व दिमाग में टपकन बनी हर पल

टीसती हुई उनसे एक ही सवाल करती है कि वह मां के आखिरी वक्त उनके पास क्यों नहीं थे?



राबिया की मां कानपुर से जिस दिन लौटीं, उसी शाम वह शकरआरा के बंगले पर पहुंच गईं। चूड़ीदार पाजामे पर मलमल का कुरता, ऊपर से सूती दुपट्टे से ढका सिर और मुंह में पान का बीड़ा, जिसे चबाती हुई वह पूरे विश्वास से दूसरों की मुश्किलों की आसान होने के कहानी-किस्से सुना, मौलाना असलम की तावीजों-गंडों और अमल का बखान करती हुई आखिर में यह कहना न भूलतीं, "ऊपरवाले की कसम, आपको इन बातों पर ईमान हो या नहीं मगर जरूरत पड़ने पर मौलाना असलम को याद करना न भूलिएगा। बंदी तो खिदमत में हरदम हाजिर है!" उनका यह बदला रूप शकरआरा के लिए ताज्जुबखेज था।

अंदर आंगन में राबिया की मां को खड़ी देख शकरआरा खुश हो गईं। कमरे से बाहर निकल बावर्चीखाने में गईं और आंगन की तरफ खुलने वाले दरवाजे से गुजर, किचन गार्डन में पड़ी अपनी कुर्सी पर बैठ गईं। आदाब कर राबिया की मां भी मोढ़ा खींचकर पास बैठीं, फिर हाथ में पकड़ा डिब्बा आगे बढ़ाते हुए बोलीं, "यह, बेगम साहिबा, आपके लिए है!"

"यह क्या है?" शकरआरा डिब्बा पकड़ते हुए कुछ झिझककर बोलीं।

"हम गरीबों का मान रखें, तोहफा देने की अपनी हैसियत कहां! बस पीरशाह की मजार का तबर्रुक है, इनकार की गुंजाइश कहां?" इतना कह वह होठों में मुस्कराईं और पहलू बदलकर, बटुए को खोल उन्होंने लौंग-इलायची शकरआरा की तरफ बढ़ाई।

"आया, चाय लाना और हां, यह तबर्रुक ले जाना।" कहती हुई शकरआरा ने डिब्बा दूसरी कुर्सी पर रखा और लौंग-इलायची ले मुंह में डाली।

"मैंने तो हाशिम को कई बार भेजा। रंगोली से पूछा, मगर हर बार यह खबर मिलती कि ताला बंद है!" शकरआरा ने कहा।

"उस मुई जमादारिन रंगोली से तब से नाता टूटा जब से अंग्रेजीनुमा पखाना बना है। अल्लाह के करम से मकान मालिक इमारा बड़ा खयाल रखते हैं। खुदा का उनके दिल में खौफ है। नेक बंदा है। जब से, बेगम साहिबा, मोहम्मद असलम मौलवीजी की ताबीज से उसकी खोई बकरी मिली है तब से वह उन पर लट्टू हो गया है। अब कह रहा है कि बड़ी बेटी के रिश्ते का जुगाड़ कर दो। मेरा भी क्या जाता है अगर उसके सेहरे के फूल खिल जाएं! चार पैसे इस बहाने से मुझे मिल जाएंगे और इनाम व इकराम मौलाना को। देखो बीबी, नेकी से नेकी बढ़ती है! मिल-बांट के खाने में ही बरकत और खुशी है।" नए बहुरूप के साथ उनकी बोली ने भी नया

मुहावरा पकड़ लिया था।

"वह तो है...लो चाय पियो।" शकरआरा बोलीं।

"मैं तो कहती हूं, बेगम साहिबा! एक बार दुल्हन की गोद-भराई के लिए आप मौलाना से मिलकर देखें। साल के अंदर घर में किलकारी न गूंजने लगे तो मेरा नाम बदल देना।" राबिया की मां ने उठकर अंजीर के बेल के पास नाली में पान थूका और कुल्ली कर, आकर मोढ़े पर बैठ, चाय की चुस्की लेने लगीं। कुछ देर खामोशी रही, बस बिस्कुट खाने और चाय सुड़कने की आवाज गूंजती रही।

इस आवाज से शकरआरा को सख्त नफरत थी। वह अपनी जगह पर बेचैन हो कसमसाई, फिर पूछने लगीं—

"राबिया की बात कहीं पक्की हुई?"

"लड़के तो आपकी दुआ से बहुतेरे हैं जिनका रिश्ता आया है, मगर निगोड़ी का दिमाग खराब है। कहती है, मैं शादी करूंगी तो किसी डॉक्टर-इंजीनियर से, तुम्हारे बताए लड़कों से नहीं, जो कहीं कुलीगीरी में लगे हैं तो कहीं चपरासगीरी में! मुझे तो उसकी बातें सुनकर हौल उठती है। खुद जाहिल-जपट, हुनर कोई हाथ में नहीं, मां लाखों तो दूर, कौड़ियों की मालिक नहीं है और बेटी...वही मसल है कि रहें झोपड़न मां ख्वाब देखे महलन का।" चाय पीकर उन्होंने फिर बटुवा खोला और बात जारी रखी।

"हमरी मानो, राबिया की अम्मा, तो मौलानाजी से लौंडिया को झड़ाय-फुंकाय दो। किसी भूत-प्रेत का साया लगत है!" आया ने जूठे बर्तन उठाते हुए चिढ़े स्वर में कहा, जिसको सुनकर राबिया की मां के चेहरे का रंग उड़ गया, मगर किसी तरह वह अपने ऊपर काबू पा उसी सहज अंदाज से पान चबाती, छालिया फांकती, मुस्करा उठीं।

"मौलाना का कहना है कि बड़ी किस्मतवाली है राबिया...जिस घर जाएगी राज करेगी...अब मुझ बेवा पर ऊपरवाला रहम करे, बेगम साहिबा! उसके हाथ पीले हो जाते तो मेरी भी मिट्टी सुआरथ हो जाती।" इतना कह राबिया की मां ने सूती दुपट्टे से आंखें दबाई और लंबी सांस भरी।

"बेगम साहिबा, आपका फोन।" हाशिम ने आकर कहा।

"अच्छा।" इतना कह शकरआरा अंदर की तरफ बढ़ीं।

"बाहर का बन रहा है, हाशिम?" उठते हुए राबिया की मां ने पूछा।

"क्यों? जाने बिना खाना हजम नहीं होय वाला है का?" हाशिम ने झिड़कते हुए कहा।

"अरे वाह, सीधी बात का टेढ़ा जवाब। मालिक से ज्यादा नौकर चरब-जबान..." मुंह ही मुंह में राबिया की मां बोलीं।

"कुछ समझत हो कि नहीं, हाशिम, आखिर तू काहे नहीं राबिया से ब्याह कर ओकी माई का बोझ हलका करत हो?" अचानक आया बोल पड़ी।

"राबिया से ब्याह...हमका बख्शो तुम।" कहता हाशिम तेजी से मुड़ा।

"तुझ निगोड़े पर तो मेरी राबिया थूकेगी भी नहीं।" कुछ गुस्से के भाव से राबिया की अम्मा ने सिर पर दुपट्टा जमाया और बुआ को घूरती हुई बाहर की तरफ चलने को मुड़ीं तो आया ने चुभती हँसी के साथ कहा, "हमसे पूछतीं तो हम बताते कि बाहर का होत है...बारिश मां गेट के सामने पानी भर जात रहा सो 'लेबिल' कराय रहे हैं छोटे साहिब...तुमका पीछे के दरवज्जे से आए मा जहमत होई न?"

"तोरी जबान में लगाम लगाए की जरूरत है रांड! एक बार इस घर में हम आ जाएं तो तोरी चुटिया काटे मा कितनी देर लगत है नासपीटी।' मुंह ही मुंह में पान चबाने के बहाने राबिया की मां ने किचकिचाकर कहा और बगीचे का दरवाजा खोल बाहर निकली।

"आई बला, गई बला..." जोर से आया ने खिड़की में मुंह डालकर कहा। पता नहीं राबिया की मां ने सुना या नहीं, मगर वह सारे रास्ते मुंह-ही-मुंह में कुछ बड़बड़ाती आगे बढ़ रही थीं। मोड़ पर कंचे खेलते लड़कों ने उन्हें देखकर चिढ़ाया।

"हज्जिन बुआ, सलाम!"

"जाके सलाम अपने मइया-बाबा को करो।" कहती राबिया की अम्मा उन्हें घूरकर आगे बढ़ गई। बूंदाबांदी शुरू हो गई थी। उन्होंने अपने कदम तेज कर दिए।



उधर फत्तू की चाय की दुकान में बारिश में फंसे तीन-चार लोग बैठे बतिया रहे थे। उन्हें घर जाने की कोई जल्दी नहीं थी। फत्तू अलबत्ता परेशान था। जीरो रोड बस अड्डे जाकर पता भी नहीं लगा सकता है कि सलोन वाली बस पहुंची या नहीं? आज उसके गांव से एक लड़का आने वाला था। बड़े विश्वास से फत्तू ने चाचा से कह दिया था कि उसे सुबह वाली बस में बिठा देना, हम यहां उतार लेंगे। ड्राइवर अपने जिले का है, परेशानी की कोई बात नहीं, मगर यह बात कल की थी। सुबह से चली बस शाम तलक नहीं पहुंची थी! कई बार पी.सी.ओ. के चक्कर लगाने के बावजूद गांव में फोन नहीं लग रहा था। दिल मसोसकर किसी तरह रात कट गई। सुबह से बारिश ने गदर मचा रखा है। कहने को तो बात आसान है कि रास्ता पानी के कारण जाम हो गया होगा या फिर बस के इंजन में पानी भर गया होगा या

फिर...मगर जिसे अपने यात्री की प्रतीक्षा करनी पड़ रही हो उसके लिए तो यह बात मामूली नहीं है कि दो दिन पहले चली बस अभी तक पहुंची न हो!

"अरे फत्तू, ऐसे बांके मौसम मा मुंह लटकाए काहे बैठा है! जरा दुइ प्याली चाय बना और साथ में हरा मिर्चा डाल फुल्की भी तल देव।" दो भीगे ग्राहक छाता किनारे रख अपना कुर्ता निचोड़ते बोले, फिर बगल में पकड़ा चमड़े का बैग साफ करने लगे।

"अभी लेव..." इतना कह फत्तू उठा और कटोरे में बेसन फेंटने लगा।

"मीटिंग तो ठीक ही रही?" एक ने बेंच पर बैठते हुए कहा।

"सुसरी मीटिंगय ठीक रहत है, योजनाएं आगे बढ़ें तो कोई बात बने!" दूसरे ने खिन्न स्वर में कहा। कुछ देर दोनों चुपचाप बाहर गिरती बारिश को देखते रहे फिर मेज पर रखी चाय के घूंट भरने लगे।

पास बैठे लोग बातें कर रहे थे जो बोली में बिहार के लग रहे थे—"अरे का कहतार, मुन्ना भाई! पहिले हम बाढ़ के जोहत रहनि कि कब बहत पानी आई और नया माटी बिछा के आगे बढ़ जाई, लेकिन अंग्रेज सन आके, गंगा के धारा के ख्याल कइले बिना सड़क, रेलवे लाइन बिछावत चल गईल सन ऊहों ऊंचाई पर, तो पानी के निकास बंद कर देला सन तो बाढ़ अइबे करी..." पहला आंख सिकोड़ बोला।

"कहत तो ठिके बाड़ा, अब तराई इलाका के ले ल, पहिले बाढ़ ऊपर से आवले सुखल माटी के पियास बुझावत निचला हिस्सा में जमा हो जावे। इ दलदली माटी में बनस्पति खूब होखे, लेकिन तराई को सुखा के खेती जबसे करे लागल लोग तबसे अंजाम उ इलाका में हमनि के सामने बा।" दूसरे ने खैनी हथेली पर मलते हुए कहा।

"चरवाई के कारण बहुत इलाका में चाहे एने के ले ल, चाहे ओने के ल, जमीन आपन उपजाऊपन खो देले बा। एकरा चलते जमीन बंजर हो गइल बा और बहत पानी जमीन चूसत नइखे..."

"एकरा एलावा और भी कारण बा...गंडक के देख ल, रास्ता बदल के हमरा गोपालगंज से बहता, जहां लोग रहत रहल और ओकरा छोड़ल जगह पर आज बाजार, सिनेमाहाल बा! और तो और हमार घर दुआर सब बा। अब माई फिर रास्ता बदलतारी, बुढ़-पुरनिया कहो लोग कि गंगा माई आपन कंगना खोजतारी।" हँसते हुए बोला।

"ई सब बात तो मानल बा, लेकिन लोगो केतना बदमास हो गइल बा। में देख, भैंसालोटन में, नेपाल ओने से कहता कि हम पानी छोड़तानी, तू लोग आपन सुरक्षा कर ल लोग, ऊ पईसा भी देता लेकिन ई साला नेता सब खा जातारे सन और

भोगे के पड़ता हमनि! गांव के गांव बहत जाता!" पहला बोला।

"अरे, बाढ़ के पानी में बड़ा जोर होला। एक बेर हम अपना गांव में देखले रहनि! हे भगवान! मुर्दन के गिनत-गिनत जिभ में दर्द हो गईल! चिरई, लईका, बूढ़, जवान, मेहरारू...बहुत कम लोग बचल रहे और तब से जे हम भगनी तो इलाहाबाद में आके दम लेहनि...आज दस-बारे साल हो गइल, लेकिन आजो जब ऊ सब याद अवेला तो देह सनसनाय लागेला।" इतना कहते-कहते दूसरे की आवाज से ज्यादा उसकी आंखों में दहशत उभर आई थी।

"सुना तुमने इनकी बातें?" नए आए ग्राहक में से एक ने फुलकी चटनी में डुबाते हुए कहा।

"हां, सुन रहा हूं और सोच रहा हूं कि जागरूकता हमारे यहां है, मगर मादर...बदलाव नहीं आता...आंख पोंछने के लिए कुछ काम जरूर हुआ है, मगर समस्याओं से पूर्ण रूप से मुक्ति नहीं मिल पाई है।"

"मिलेगी भी नहीं...बहुतों का धंधा ठप करवाओगे क्या? राहत कोष, रसद बांटना, बाढ़वाले इलाकों में सहायता के लिए चंदा-उगाही...साला, बेकारी के कारण ये नए धंधे कुकरमुत्ते की तरह उग आए। आखिर पेट जो पालना है!" स्वर में कड़वाहट थी।

"चलो, उठो। बारिश की तेजी में कमी है, अभी हम निकल चलते हैं, वरना कल खबर छप नहीं पाएगी!" दूसरे ने गली में टपकती वर्षा धीमी होते देख कहा।

"एनजीओज पर से अपना विश्वास तो कब का डोल गया है, मगर बार-बार मैं फंसता हूं यह सोचकर कि शायद यह ग्रुप निष्ठावान हो।" पहला बोला।

"छोड़ो जासूसी करना और अपने में रहो। खुद ईमानदार बने रहो! दूसरों का ठेका मत लो, वरना हर दूसरा आदमी तुम्हें बदहजमी का शिकार नजर आएगा! और यार, हम सब को सुधार तो नहीं सकते हैं।" दूसरा झुंझला उठा।

"मगर यह संस्था मुझे जाने क्यों निष्ठावान लगती है। मैं असल में अपने मन की बात कहने के लिए भूमिका बांध रहा था।" पहला हँसा।

"इसलिए कि आज के सारे भाषण विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) सतत विकास विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यू.ई.एफ.) के विरोध में थे और यह विरोध बड़े पैमाने में पश्चिम में भी उठ रहा है? यदि मैं कहूं कि यह उसी की नकल है तो?"

"तो भी मेरा मन कहता है कि अच्छी चीजों की नकल बुरी बात नहीं है।"

"चाहे उसका लक्ष्य जो हो, निष्ठा बनावटी हो, यह सरोकार दिखावे के हों?"

इसके बाद दोनों चुप हो गए। गली में बारिश के पानी का भराव बढ़ गया

था। कुछ देर वे चुपचाप खड़े गंदले पानी में तैरते कूड़े को देखते खड़े रहे, फिर फैसला ले आगे बढ़े और भरे पानी को काटते सड़क की तरफ बढ़े, जहां उन्हें पूरी उम्मीद थी कि कोई न कोई रिक्शावाला पेड़ के नीचे सर पर प्लास्टिक लगाए सवारी की बाट जोह रहा होगा।



चंदन की आंखों में कई दिनों से खुजली मच रही थी। आंखों में लाल-लाल डोरे पड़ गए थे। कुछ वैसी ही हालत घर में भी थी और गली में भी। सभी के मुंह में एक ही वाक्य था कि 'आंख आ गई है।' डॉक्टर का कहना था कि गंदे पानी के कारण इस बीमारी का फैल जाना मामूली बात है। चंदन का तो धंधा ही चौपट हो गया। बरसात में तो वैसे ही खानपान बदल जाता है। सारे व्रत इसी माह में पड़ते हैं, शायद उसका वैज्ञानिक कारण भी यही है। गरिष्ठ भोजन लेना और घर में बैठे रहना हजार बीमारियों की एक बीमारी है, सो पेट ठीक रहना जरूरी है। इसके चलते कच्चा खाना ही घर-घर पकता है। तले से परहेज। दुकान की रौनक खत्म हो गई। भट्ठी बुझी थी। कढ़ाव-पतीले लुढ़के पड़े थे। जेब भी खाली थी! पीने-पिलाने का सिलसिला तो दूर, दवाई के लाले पड़ गए। इस बार घरवाली की गांठ में भी कुछ दबा-गड़ा न था। अजीब बिपता में पड़ गया चंदन। मावेवाला आकर अपने पैसों का तकाजा कई बार कर चुका था। यह सब सोचता चंदन दवाखाने में बैठा था।

इस समय कमाल का क्लीनिक आंख पर पट्टी बांधे मरीजों से भरा हुआ था। इस भीड़ में खुद को भी उसे बचाना था। कई बार वह मरीजों से छुतही बीमारी ले चुका था। उसे अपने तो नहीं, मगर घरवालों के बीमार पड़ जाने पर दुःख जरूर होता था। एक मरीज ने ज़ब कार्ड के पांच रुपये की जगह एक झोला बढ़ाकर हाथ जोड़ दिए तो कंपाउंडर को अंदर जाना पड़ा। जैसा कि उसे पता था, कमाल उसे अंदर बुला लेगा, मगर वह खुद सोचने लगा कि डॉक्टर साहब धीरे-धीरे किसी रिमोट एरिया के डॉक्टर में जल्द ही बदलने वाले हैं! अपने को क्या, यह थैला तो डाक्टर साहब घर ले जाएंगे नहीं! उसी को आधा कोढा घर ले लाना पड़ेगा। क्लीनिक के बड़े कमरे में बच्चों के रोने का शोर बढ़ रहा था। उसी में दस्त और कै की खट्टी बदबू भी फैल रही थी जो फिनायल के पोंछे के बावजूद गंधा रही थी।

"तुम लोगों को कितना समझावें!" कुढ़ा हुआ कंपाउंडर बार-बार कान में खुंसी रूई को सूंघ रहा था जिसमें इत्र की गंध बची भी थी या नहीं। अगरबत्ती सुलगाने के बावजूद बदबू का रेला बदनों से उठ, भीगे कपड़ों से होता बच्चों के पेशाब की खराहिंद से भरे पोतड़ों से गले मिल रहा था। तंग आकर कंपाउंडर ने खिड़कियां खोल दीं। फुहारें हवा के संग अंदर आने लगीं, मगर दमघोट माहौल से छुट्टी मिली।

"साला! खिड़किया कउन खोल दीहिस है?" इतना कह कोई उठा और दोनों खिड़कियों के पल्ले बंद कर कंधे पर पड़े अंगोछे से चेहरे और बालों पर पड़ी बूंदें पोंछने लगा। नमकीन-सी बू पूरे दवाखाने में फैल गई—किसी बच्चे ने गंदगी की थी। मां की साड़ी खराब हो चुकी थी। वह अपने को कोसती झुंझलाई-सी बाथरूम की तरफ बढ़ी। गोद का बच्चा लगातार आंखें मलता रोए चला जा रहा था।

मरीजों से निपट कमाल जब देर रात क्लीनिक से बाहर निकला तो उसे महसूस हुआ, जैसे वह किसी भूमिगत कैदखाने से छूटा हो। बरसाती हवा ने उसका स्वागत किया। खुली हवा में उसने गहरी लंबी-लंबी सांसें भरीं। मौसम खासा मतवाला था, मगर कमाल के थके दिल व दिमाग पर कोई असर नहीं डाल पाया। वह सुस्त था। बदन में दर्द था। कुछ देर बाद रेडियो खोला ताकि ध्यान बंटे। खबर थी—बाढ़ की संभावना बढ़ती जा रही है! उसने झुंझलाकर रेडियो ऑफ कर कैसेट लगाया मगर गाने वाले की आवाज भी उसे जहन में सुई की तरह चुभती लगी तो उसने बटन घुमाया और लंबी सांस छोड़ी।

गंदे पानी से आज आंख की बीमारी फैली हुई है और कल हैंडपाइप के जरिये यही बाढ़ का पानी साफ पानी में मिलकर पेट और त्वचा की बीमारी जगह-जगह फैलाने वाला है।

कार गुंजान इलाके से गुजर रही थी। फुहार अब भी पड़ रही थी। जगह-जगह पानी जमा था। उसका दिमाग अब मच्छरों में उलझकर रह गया। उसके माथे पर सिलवटें जमा हुई, फिर जाने क्या सोचकर वह कहकहा मारकर हँस पड़ा और काफी देर तक रुक-रुककर हॅसता रहा। बात थी भी दिलचस्प—कुछ माह पहले किसी विवाह-समारोह में जाने का इत्तफाक हुआ था। सजावट के साथ वहां मच्छर भी गजब के थे। मेजबान अतिथियों को परेशान देख कुछ शर्मींदा हो बोले, "जितनी भी कोशिश करो जनाब, इलाहाबाद में मच्छर मरते नहीं हैं, बल्कि दुगनी रफ्तार से अपनी आबादी बढ़ा लेते हैं।"

"मैं जानता हूं इसकी दवा! अगर डॉक्टर कमाल इजाजत दें तो अर्ज करूं!" दवाओं का एक विक्रेता, जो अतिथि था, बोल पड़ा।

"नेकी और वह भी पूछ-पूछ..." कमाल मुस्करा पड़ा।

"देखिए जना़ब, मेरे पास जो दवा है उससे मच्छर हर हालत में मरेंगे, यह मैं गारंटी से कहता हूं, बस आपको इतना करना होगा कि मच्छर पकड़ उसकी दाहिनी टांग खींचनी होगी! इससे उसका मुंह खुल जाएगा और मौके से फायदा उठा, झट दवा आप उसमें डाल दें...एक तो रही यह तरकीब जो जरा मुश्किल है...ठहरें, मैं दूसरा हल बताता हूं...मेरे पास एक तावीज भी है। उसे बस आपको मच्छर के गले

में पहनाना होगा। इससे आपका काम बन जाएगा।" इतना कह वह तो चुप हो गया मगर बाकी लोगों का हँसते-हँसते बुरा हाल था।

मेजबान खिसियाकर बोल उठे, "बदरुद्दीन, तू बड़ा शैतान है...बड़ा शैतान है!"

कार गुंजान इलाके से निकलकर जब चौड़ी सड़क पर आई तो हवा में कई तरह की घुली-मिली खुशबू भी तरावट का अहसास दे गई। कमाल का तनाव कम हुआ तो उसका मूड भी हलका हो गया। आसमान पर काले बादल एक-दूसरे के पीछे दौड़ रहे थे। हवा में तेजी थी। बारिश ने रुक जाने का एलान कर दिया था। बड़े- बड़े दरख्त सड़क के किनारे खड़े एक-दूसरे को सहला रहे थे। स्पर्श की सिहरन उनकी पत्तियों की थिरकन में झलक रही थी। घर तक का रास्ता बहुत अच्छा गुजरा। जब वह घर पहुंचा तो किसी को अहसास नहीं हुआ कि कमाल एक भारी, बोझिल शाम गुजारकर घर में दाखिल हुआ है। उसके पहुंचते ही शरारतें और कहकहे घर में गूंज उठे।

तकिये पर सर रखते ही कमाल को नींद आ गई! सुबह के करीब जाने कैसे उसकी नींद टूटी। उसे महसूस हुआ कि वह भरपूर सोया और अब अपने को ताजा-दम महसूस कर रहा है। वह आहिस्ता से उठा। किचन में जाकर उसने कॉफी बनाई और छत पर जाने के लिए अभी वह आधी सीढ़ी ही तय कर पाया था कि नीचे से समीना बोली—

"चोरी पकड़ी गई।"

"जब चोर पकड़ ही लिया तुमने तो बेहतर है, चुपचाप मेरे पीछे चली आओ!" कहता कमाल बाकी सीढ़ियां भी चढ़ गया।

ऊपर लंबा-चौड़ा आसमान फैला था, जिसके सियाह सीने पर सफेदी का रंग घुलने लगा था। कमाल ने कॉफी का गर्म घूंट भरा। पानी की गंध से तर हवा नथनों में घुस अजीब सरसराहट-सी भर रही थी। बहुत रोकने पर भी कमाल को एक के बाद एक छींक आनी शुरू हो गई। उसने मन ही मन कहा—'हवा ठंडी है, मुझे खाली कुर्ते में छत पर नहीं आना चाहिए था।'

"हाय!" समीना सूती शाल कंधे के पीछे से डाल कमाल से लिपट गई।

"बड़ी जल्दी आईं?" कमाल हँसा और प्याला रख उसने समीना को बाहों के घेरे में बांधा और बेतहाशा उसकी आंखों, गालों, माथे का चुंबन लेने लगा। दोनों एक-दूसरे से लिपटे काफी देर तक खड़े रहे। एकाएक घुमड़ते बादलों को देख कमाल ने धीरे-से कहा, "सुम्मो! बरसात, मोहब्बत करने वालों का मौसम है। क्या-कुछ नहीं लिखा गया इस मौसम के हुस्न पर, हम दोनों ने भी इसको कितने-कितने रंगों में जिया भी है। आसमान से टपकती बूंदों को अपने अंदर गिरते महसूस किया, मगर

यह मौसम गरीबों की जिंदगी को कितना दूभर बना देता है, यह देखकर अकसर मैं ताज्जुब में पड़ जाता हूं। फिर जब कभी बिपता की बात वे करते हैं तो जाड़े और गरमी के मौसम को कोसते हैं, मगर बरसात को उतना नहीं। शायद हम सबके दिलों में पानी की लाख ज्यादतियों के बाद भी उसके लिए एक सॉफ्ट कॉर्नर है। उससे हम नफरत नहीं कर पाते हैं। आखिर ऐसा क्यों है?''

''शायद इसलिए, कमाल कि हम पानी को अपने हाथों में भर सकते हैं, उसका स्पर्श करते हैं, मगर जाड़ा या गरमी के संग हम इस तरह खेल नहीं सकते। ये दोनों मौसम इंसान से बेहद ताकतवर हैं। वे अपनी सत्ता का माहौल बनाते हैं मगर हमारे काबू से बाहर होते हैं, जबकि पानी को हम कहीं-न-कहीं अपने काबू में कर लेते हैं।'' समीना ने गुनगुनाते हुए कहा।

''पता नहीं, मगर इंसान का रिश्ता पानी से बिल्कुल अलग है...'' कमाल ने धीरे से कहा और समीना को जोर से सीने से लिपटाया और धीरे-से बोला, ''जैसे मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता हूं! तुम मेरे लिए शफाफ पानी की एक ऐसी नदी हो जो मेरे अंदर सदा बहती रहती है!''

17

खुरशीदआरा की पिछले दो दिन से तबीयत खराब है! तेज बुखार में तपती खुरशीद को न अपना होश था, न दुनिया का। उधर बदलू तेज बुखार में बेसुध पड़ा था। दो मरीजों के बीच बेचारी बुआ हलकान हो रही थीं कि आखिर बुखार कम क्यों नहीं हो रहा है! वह ठंडे पानी की पट्टी रख-रखकर हैरान थीं! फोन भी डेड था कि समीना को इत्तला दे देतीं! अल्लाह का नाम लेकर वह पल-पल गुजार रही थीं। तीसरे दिन बुखार उतरा तो खुरशीदआरा ने आंखें खोलीं। बुआ को सिरहाने बैठा देख उनकी आंखें भर आईं। गरदन मोड़कर उन्होंने आंसुओं को छुपाया।

''कुछ पियोगी, दुलहिन बी, तो लाएं?'' बुआ ने राहत की सांस ले पूछा। कुछ जवाब न पाकर वह खुद उठीं और बावर्चीखानें से गरम दूध ले आईं।

''तूतूही में लेकर आई हूं दुलहिन बी, जरा मुंह खोलो।'' बुआ खुरशीदआरा का चेहरा अपनी तरफ घुमाती हुई बोलीं।

''अभी नहीं, बुआ...जी मतला रहा है।'' खुरशीदआरा ने बड़ी कमजोर आवाज से कहा।

''अच्छा...मुंह धोओ तो सिल्फची लाऊं।'' बुआ बोलीं।

"नहीं, मैं बाथरूम जाऊंगी।" कहती हुई खुरशीदआरा उठीं और कांपते कदमों से बुआ का सहारा लेती हुई आगे बढ़ीं। उनको चक्कर आता महसूस हुआ।

"बिटिया को फोन करते मगर खराब पड़ा है।" बुआ ने बेबसी से कहा।

"अच्छा! बदलू कहां है?" खुरशीदआरा ने चेहरे पर छलक आए पसीने को पोंछा।

"वह भी बुखार मा पड़ा है।" बुआ ने धीमे से कहा!

बाथरूम से निकलकर खुरशीदआरा पलंग पर बैठ गईं। मुंह-हाथ धोने से कुछ ताजगी का अहसास हुआ। हाथ आगे बढ़ाकर फोन उठाया। वहां सिर्फ सन्नाटा था।

फोन रखकर उन्होंने बुआ से पूछा, "आपने कुछ खाया या नहीं?"

"अब आप बुखार में तपत रहीं तो फिर हमार हलक से पानी कैसे उतरत?"

"चाय-बिस्कुट लेते हैं।" खुरशीदआरा ने कमजोर आवाज से कहा और बिस्तर पर लेट गईं।

छत पर जाने क्या लिखा पढ़ते हुए खुरशीदआरा सोच रही थीं कि इस उम्र में वह अकेली हैं, मगर उनकी देखभाल के लिए बुआ हैं जो उनकी उम्र से बड़ी हैं। बस नमकहलाली का इम्तहान दिए जा रही हैं। दोनों को एक-दूसरे के बिना चैन कहां? इस शहर में नौकर ढूंढ़ने जाओ तो कोई काम करने वाली नहीं मिलेगी, वैसे गरीबी का रोना रोती औरतें नजर आएंगी। मेहनत करने से ही तो खुशहाली आएगी—यह जरा-सी बात उनके पल्ले नहीं पड़ती। उसकी जगह वह सारा दिन लड़ने-झगड़ने, कोसने-काटने में गुजार देती हैं। काम करने का दिल बना भी लेंगी तो चोरी इतनी करेंगी कि उनको निकालना जरूरी हो जाता है।

"उठो, दुलाहिन बी!" बुआ ने ट्रे मेज पर रखी!

"आप कुछ खा लें वरना मेरे हलक से कुछ नहीं उतरेगा।" खुरशीदआरा ने उठते हुए कहा।

"जैसी तोहार मर्जी, दुलहिन बी।" इतना कह बुआ ने मेज थोड़ा और आगे की और कमरे से बाहर निकलीं।

खुरशीदआरा ने सिरहाने के शेल्फ से रिमोट उठाया और टी.वी. का बटन दबाया। न्यूज खत्म होने वाली थी। उन्होंने चाय का घूंट भरा और तकिये का सहारा ले आंखें बंद कर लीं। कानों में इश्तहारों की आवाजें आ रही थीं! बदन में अजीब-सी सनसनाहट कमजोरी के कारण दौड़ रही थी। 'मुझे कुछ खाना चाहिए'—यह सोचकर खुरशीद ने चाय का दूसरा घूंट लिया फिर अरारोट का बिस्कुट चाय में भिगोकर खाया। इस बार अच्छा लगा। बदन में जान-सी आई। चाय पीकर उन्होंने फोन उठाया और

दिल-ही-दिल में हिसाब लगाते हुए कहा—'आज तीन रोज हो रहे हैं समीना को घर आए हुए। शायद आज आ जाए।'

अभी खुरशीदआरा सोच ही रही थीं कि दरवाजे की घंटी बज उठी। उनके चेहरे पर ताजगी दौड़ गई। झट फोन रख वह दरवाजा खोलने उठना ही चाह रही थीं कि बुआ ने दरवाजा खोल दिया और किसी से बात कर दरवाजा बंद कर दिया। खुरशीदआरा निराश-सी फिर लेट गई।

"डाकिया था।" कहकर बुआ ने दो खत उन्हें थमाए।

खुरशीदआरा ने चश्मा लगाकर लिफाफे के पीछे भेजने वाले का नाम पढ़ा फिर लिफाफा खोलकर खत पढ़ने लगीं। खत छोटे देवर का था। उसने बेटे के दाखिले की खबर देते हुए लिखा था कि बड़े भाई साहब को गजाला के लिए एक लड़का पसंद आ गया है। इलाहाबाद का ही खानदान है और लड़का वहीं नौकरी कर रहा है। खानदान की पूछताछ के सिलसिले में शायद वह खुद या फिर उनके बड़े साले इलाहावाद आएंगे। दूसरा खत नाहीदा का था। खत में खेरियत थी। उनका हालचाल पूछा गया था। खुरशीदआरा का उदास मन इन दोनों खतों को पाकर खुश हो गया।

"कहो तो पड़ोस के घर से फोन करवा दें समीना बिटिया को?" बुआ फिर कमरे में आकर पूछ रही थीं।

"नहीं बुआ! अब तो में ठीक हूं। एक-दो-दिन में आ ही जाएगी।" कहकर खुरशीदआरा ने ठंडी सांस भरी।

"फिर भी एक बार डॉक्टर आकर देख जाते तो..." बुआ बोलीं।

"अब उसकी शादी हो गई है, बुआ! उसकी अपनी जिम्मेदारियां हैं—घर, नौकरी और..." इतना कहकर खुरशीदआरा चुप हो गई।

"तुमरी बहिनी की बात भी, दुलहिन, हमरे समझ से बाहर है...बस, कहो कि कलयुग है। खून सफेद हो गवा है अपनों का..." इतना कह बुआ कमरे से निकल गई, मगर खुरशीदआरा के दिल पर कई घूंसे एक साथ पड़े। मायके के नाम पर एक बहन ही तो बची है। मां के इंतकाल के बाद जाने किस जज्बे के तहत वह कई बार बहन के पास पहुंची थीं। मगर उनका बरताव कभी इज्जत देने वाला नहीं लगा, हमेशा ताने-तिनशे और यह अहसास दिलाना कि माली हालत उनकी मुझ से कहीं बेहतर है। बार-बार एक ही बात अगर रिश्तों के बीच गूंजती रहे तो फिर रिश्ते का कोई मतलब नहीं रह जाता। वह सुख देने की जगह सदा नश्तर चुभोता है।

अगर मैं उन्हें फोन करूं तो जवाब में सुनने को मिलेगा—"अरे खुरशीद! मुझे तो पता था कि अकेला इंसान बिना सहारे के जी नहीं सकता चाहे, तुम जितनी भी

बहादुर क्यों न बनो। यह नहीं कि आकर हमारे साथ रहो, तब तुम्हारी नाक कटती है। वैसे बड़ी बहन को बदनाम करने में तुम्हें कोई शर्म महसूस नहीं होती है कि एक शहर में रहकर वह तुम्हारे पास नहीं आती...उन्हें यह पता नहीं कि तुम्हारी गली में कार का जाना नामुमकिन है...तुम तो रिक्शे पर चलने की आदी हो, बैठकर आ सकती हो, मगर नहीं...''

खुरशीदआरा का मन खराब हो उठा। थोड़ी देर पहले जो खुशी उन्हें जीने की ताकत दे रही थी, अब यह जली-कटी बातें याद आकर उन्हें अजीब तरह की बेबसी-भरी कमजोरी दे रही थीं। वह भी तो अपनी जिंदगी से कई बार सवाल करती हैं कि उनकी तकदीर में सारे दुःख क्यों किस्मत ने लिख दिए हैं? भरी जवानी में विधवा होना, दो बेटों की मौत और लगी-लगाई नौकरी का छूट जाना। एकाएक उन्हें पहले बेटे की पैदाइश याद आ गई...

''मुबारक हो बहू! हमारी गोद में तुमने चांद-सा पोता दिया।'' सास की आवाज उनको नीमबेहोशी की हालत में सुनाई पड़ी थी।

छठी के दिन दुल्हन बनी, बेटे को गोद में लिए खुरशीदआरा बैठी है। गाना, नेग, सदका, मेहमानों की मुबारक-सलामत में वह सारा दर्द भूल गई, जो बच्चे की पैदाइश में उसने झेला था। मरते-मरते बची थी। इस वक्त भी उसका सारा बदन थका-थका-सा है, मगर बेटे की नियामत गोद में है तो वह भूल बैठी है कि कल रात तक कमर और पैरों में बुरी तरह दर्द उठ रहा था।

''मुबारक हो खुरशीद, बेटे की पैदाइश!'' शकरआरा ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा था और सौ-सौ के कई नोट बेटे के सिर से उतारकर पास खड़ी नाइन के हाथ में थमा दिंया था।

''दुल्हन की बड़ी बहन है—शकरआरा बेगम!'' सास ने बताया।

''फूल-सी बच्चियां तुम्हारी हैं?'' लैस लगी फ्रॉकों से सजी बड़ी-मझली को देखकर किसी ने पूछा।

''जी।'' शकरआरा ने गुरूर से भरकर कहा।

''यही दो बिटियां हैं या बेटवा भी है?'' किसी बूढ़ी ने बेटियों की पीठ पर हाथ फेरते हुए सहज रूप से पूछा।

''अभी तो नहीं।'' शकरआरा का चमकता चेहरा एकाएक मंद पड़ गया।

''अल्लाह ने चाहा तो बहन की तरह तुम्हारी गोद में भी खानदान का वारिस खेलेगा।'' उसी बूढ़ी ने दुआ देते हुए कहा, मगर शकरआरा के दिल में कांटा चुभो दिया था। उसको अपनी बेइज्जती-सी लगी और वह बहन के पास से उठकर सीधी,

बिना खाना खाए, घर लौट आई! कई हफ्ते गुजर गए! बहन की खामोशी खुरशीद को अखरी तो उसने फोन किया। जवाब में शकरआरा ने खुलूस का जवाब पत्थर मारकर दिया।

"बहुत इतरा रही हो पहली औलाद जनकर! याद रखो, घर की रौनक लड़कियां होती हैं, लड़का नहीं! मां-बाप को पार वही लगाती हैं और सबसे बड़ी बात यह कि खुद हमारे रसूल की बेटियां थीं, बेटा नहीं।"

"आपा, आप इस तरह मुझे बातें क्यों सुना रही हैं?" खुरशीद ने घबराकर पूछा।

"बनो मत, उस बूढ़ी हर्राफा के सामने तो सिर झुकाए बेठी रहीं। लड़के की मां बनने पर इतरा जो रही थीं! तुम्हारे चेहरे से साफ झलक रहा था जेसे कि तुम मुझसे एक बार फिर वाजी मार ले गई हो। अपनी जीत पर फूली नहीं समा रही थीं। अब क्यों फोन किया! बहन की याद इतने दिनों बाद कैसे आई? उस वक्त तो किसी ने झूठे मुंह भी नहीं पूछा कि अरे, शकरआरा, बिना खाए-पिए कहां जा रही हो?" शकरआरा का स्वर कटखना था।

"खुदा की कसम, आपा, मेरा यकीन करें, मुझे इस बात का जरा भी इल्म नहीं था कि आप बिना खाए ही घर लौट गई। मैं तो दो हफ्ते से बीमार हूं। आज तबीयत कुछ संभली तो आपको फोन किया। अम्मा की मौत के बाद मायके के नाम पर तो आप ही बची हैं। लिल्लाह आपा! मुझ से ऐसी जली-कटी बातें न किया करें, मैं आपसे छोटी हूं, आपके प्यार और देखरेख की हकदार हूं। वह हक आप मुझसे हर बार छीन लेती हैं, जब मुझे उसकी शदीद जरूरत होती है। आखिर क्यों? मेरी खता क्या है?" इतना कहते-कहते खुरशीदआरा रो पड़ी थी।

"तुम हमेशा अपनी बड़ी बहन से टक्कर ले उसको नीचा दिखाना चाहती हो। तुम कभी छोटी बहन बनी हो? मेरी इज्जत की है? मेरा लिहाज किया है? हमेशा सीना तानकर दूसरों की नजर में ऊंचा उठने की कोशिश की है। वही हाल स्कूल में रहा तुम्हारा और वही हाल शादी के बाद...कभी मियां के हुस्न को ले तकब्बुर से भर जाती हो तो कभी लड़के की पैदाइश को लेकर मगरूर हो उठती हो! मैं अगर तुम्हारी छोटी बहन होती तो दिखाती कि बड़ों का लिहाज कैसे करते हैं। उनसे आजिजी और अदब से कैसे पेश आते हैं। उनकी ताजीम दूसरों के सामने कैसे करते हैं। तुमने न कभी इन बातों का लिहाज किया, न ही वह मोहब्बत दिखाई जो छोटों को बड़ों से होती है। मगर तुम कुछ भी कर लो, मेरे हुस्न और मेरे मियां के खानदान और धन-दौलत का मुकाबला कभी नहीं कर पाओगी...और सुनो, आइंदा यह दिखावा वगैरह मत करना। मुझे फोन पर लंबी ज्यादा बातें करना वैसे भी पसंद नहीं है!" शकरआरा ने फोन पटक दिया।

फोन बड़ी बहन ने पटका मगर छोटी बहन पर जैसे बिजली गिर गई। ऐसी खौफनाक बातें तो कभी उसने ख्वाब में भी नहीं सोची थीं। समीना के बाप जमीर अब्बास फौज में थे। उसी के हिसाब से उनका शानदार व्यक्तित्व ढला था। वरदी में तो वह ऐसा जमते थे कि एक बार उन्हें जो देखता था, देखता ही रह जाता था! उनके इसी व्यक्तित्व के चलते खुरशीदआरा के पिता ने पहली बार में हां कर दी, यह जानते हुए भी कि घराना उतना खुशहाल नहीं है जितना बड़ी बेटी का ससुराल है। जब शकरआरा मां से शिकायत करती कि आप लोगों ने खुरशीदआरा का दूल्हा ज्यादा हसीन चुना तो उस समय भी खुरशीद से यह कहते नहीं बना कि आपका घराना ज्यादा बड़ा है। यह सिर्फ उसकी अपनी नहीं, बल्कि मियां की बेइज्जती होगी। जिसके भाग्य में जो होता है वह उसको मिलता है। इसमें शिकायत कैसी?

वह दिन खुशहाली के थे। बहन की कड़वाहट को भूलने के दिन थे। बेटा बाप पर गया था। वही रंग-रूप, वही अंदाज। जब वह चार माह का था तभी खुरशीद दोबारा गर्भवती हो गई। भरा-पूरा घर था। सारा दिन चहल-पहल में गुजर जाता था। मियां की पोस्टिंग ऐसे इलाके में हुई थी कि इस हालत में वहां खुरशीदआरा के लिए लंबा अरसा गुजारना ठीक नहीं था, इसलिए दूसरे माह ही वह ससुराल लौट आई। सास उसके चाव-चोंचले में डूबी रहतीं। हर औरत का यही खयाल था कि दुल्हन को इस बार बेटा होगा। एक उमंग-सी घर में दौड़ती रहती थी। बेवा सास बड़े बेटे का ही मुंह ताकती थीं। वही कमाने वाला था। मझले की पढ़ाई का आखिरी साल था। छोटा तो अभी बारहवें में पढ़ रहा था। लड़की हाईस्कूल में। बाप की छोड़ी कच्ची गृहस्थी को बेटे ने ही सभाला है। सबकी जरूरतों को पूरा करना और मां की खुशी का खयाल रखना ही जैसे उसकी जिंदगी का मकसद था...

"खाने में मूंग की खिचडी पकाई है। दम पर है, जब भूख लगे बनाना।" इतना कहकर बुआ वहीं कमरे में बिछी चटाई पर बैठ गई। खुरशीद ने घड़ी की तरफ नजर डाली—एक बजकर दस मिनट हुए थे। कुछ सोचकर बोलीं।

"दो बजे तक खाना खा लूगी, बुआ।" इतना कहकर उन्होंने टी.वी. खोला और सीरियल देखने में डूब गई। तभी फोन की घंटी घनघना उठी।

"हेलो!"

"हां, आपका फोन ठीक है?"

"अभी-अभी ठीक हुआ है!"

"केबिल में पानी चला गया था। कल ही कंपलेन मिली थी।"

इतना कहकर फोन उधर से बंद हो गया। खुरशीद को समझते देर न लगी कि यह काम हमेशा की तरह समीना ने किया होगा। वह हलके से मुस्कराई। बुआ

उठते हुए बोलीं, "दुलहिन बी, जब तक तुम बिटिया को फोन करो, तब तक मे खाना लगाती हूं।"

खुरशीदआरा ने बेटी को फोन करना मुनासिब नहीं समझा। उन्हें लगा कि शाम तक वह खुद आएगी, वरना रात को दोनों जब ड्राइविंग को निकलते हैं तो अपने-आप इधर चक्कर लगा लेंगे। वह लेटे-लेटे टी.वी. पर फिसलते चेहरे देखती रहीं। यादों का सिलसिला दिमाग में उसी तरह सिलसिलेवार चलता रहा, शायद बुढ़ापे का यह वह खजाना है जो जिंदगी-भर का कमाया हुआ होता है, जो हर रोज खर्च करने के बाद भी खत्म होने का नाम नहीं लेता, बल्कि उसमें नई-नई कोपलें और फूल रोज फूटते-खिलते रहते हैं, जो एक नए नजरिए से गुजरे हुए दिनों को समझाते-दिखाते रहते हैं।

"घी अलग रखकर लाए हैं मगर अचार नहीं लाए, कहीं नुकसान न पहुंचे।" कहती हुई बुआ ने ट्रे मेज पर रखी।

"अरे! आप वहीं मेज पर रख मुझे आवाज दे लेतीं, बुआ! आपको अब आराम की जरूरत है।" कुछ शर्मिंदा-सी खुरशीदआरा बोलीं।

"काम के चलते, दुलहिन बी, दिल लगा रहत है, वरना भरा-पूरा घर खाली हो जाए, उस विराने में कैका दिल लगी।" ठंडी सांस भर बुआ ने गिलास भरा।

"अब आप खाना खा के आराम करें, मैं बरतन उठाकर रख दूंगी। बदलू का बुखार उतरा कि नहीं?" खुरशीदआरा ने पूछा।

"नहीं बीबी।" इतना कह बुआ ठहरीं फिर कह उठीं, "इतनी बीमारी झेले हो, अभी तो तुमका आराम की जरूरत है। हमार हाथ-गोड़ चलत है, हमार फिकर आप न करें।" कहती हुई बुआ कमरे का सामान सलीके से रखने-उठाने लगीं।

खाने के बाद खुरशीदआरा आखें बंदकर लेट गई। हल्की गुनूदगी उन पर छा रही थी! जहन में समीना के अब्बी का चेहरा उभरा—जमीर अब्बास खां! नाम की तरह ही रोबदार चेहरा जो अपने बेटे के चेहरे को देखते ही खिल उठता था! जब दूसरे बच्चे की पैदाइश के दिन करीब आए तो बड़े बेटे का वक्त ज्यादातर दादी के साथ गुजरता था। उम्र ही कितनी थी, साल-भर का ही तो था। दूसरे बेटे की पैदाइश के दौरान खुरशीदआरा बेहद सख्त बीमार हुई। सारा घर परेशान था। उसी में बड़ा बेटा जाने कैसे बीमार पड़ा। जब डॉक्टर को दिखाया गया तब पता चला कि उसको डबल निमोनिया हो गया है। घर में कोहराम-सा मच गया। जमीर अब्बास को फोन पर बताया गया। घर में एक तरफ पोता बेहाल तो दूसरी तरफ बहू मरने-जीने के बीच झूल रही थी। खुदा को जाने क्या मंजूर था—जब सारा घर नए बच्चे की आमद को लेकर बदहवास था, उस समय बड़े बेटे ने दम तोड़ दिया। घरवाले समझे, वह

आराम से सो रहा है, सो नए लड़के की पैदाइश की वजह से एक खुशी का माहौल घर पर छाया था, मगर...

बड़े बेटे की मौत को याद कर खुरशीदआरा की आंखें भर आई। बेचैनी से करवट बदली, फिर उठकर बैठ गई और सिरहाने की दराज से एलबम निकालकर देखने लगीं। बड़े बेटे का हँसता चेहरा तस्वीर में कैद था। उसके चेहरे पर उंगलियां फेरती खुरशीदआरा मंद-मंद मुस्कराती रहीं। उसकी किलकारियां उनके कानों में गूंजने लगीं। घर का हँसता-खेलता दृश्य आंखों के सामने नाचने लगा। अचानक खुरशीदआरा खिलखिलाकर हँस पड़ीं...फिर एकाएक बिलख-बिलखकर रोने लगीं—बड़े बेटे के छोटे-से बदन को कफन में लिपटा देख रही थीं। उसी के साथ छोटे का भी, जो...पांच दिन बाद ही दम तोड़ गया था। घर में सोग छा गया था! भरी गोद सूनी हो गई थी।

"मुझे अफसोस है, बहुत अफसोस है, नन्हीं..." पहली बार शकरआरा की आवाज फोन पर भर्राई हुई थी। वह पूरे दिन से थी, आ नहीं सकती थी। यह दर्द-भरी आवाज सुनकर खुरशीदआरा तड़प उठी थी। इसी प्यार को, इसी हमदर्दी को तो वह पाना चाहती थी!

उस रात शकरआरा सो नहीं पाई। हर करवट पर एक हूक-सी दिल में उठती कि मैंने ऐसा तो नहीं चाहा था। बहन से गुस्सा हो जाती थी, मगर उसका बुरा कभी नहीं चाहा, ऐ मेरे खुदा! यह कहर मेरी बहन पर क्यों तोड़ा तुमने? उसकी गोद क्यों खाली कर दी? उसकी तो जिंदगी वीरान हो गई। एकाएक शकरआरा के दिल में खयाल आया कि कहीं...कहीं उससे कोई गुनाह अनजाने में तो नहीं हो गया और खुदा ने उसकी बुराई भांप ली हो! मगर खुदा तो कभी किसी का बुरा नहीं करता, वह तो रहीम है। करीम है...ऐ मेरे माबूद, मुझ पर रहम करना...रात को आखिरी पहर उसकी तबीयत बिगड़ी और सुबह पांच बजे उसने कमाल को जन्म दिया! कमाल को पाकर शकरआरा खुशी से दीवानी हो गई थी। बार-बार सोचती, जैसे ही मैं बाहर निकलने के काबिल हुई सबसे पहले खुरशीदआरा के पास जाऊंगी और कमाल को उसकी गोद में डालकर कहूंगी कि संभालो अपने बेटे को, यह तुम्हारा है!

अस्पताल से लौटकर शकरआरा कुछ दिन तक वैसी ही रही, मगर जब छठी में खुरशीदआरा ने बेटे को गोद में लेना चाहा तो उसने जाने क्यों बहन के बढ़े हाथों को फैला ही रहने दिया और खौफजदा हो बेटे को सीने से चिपटा लिया था। खुरशीदआरा की आंखें भर आई थीं। उसने अपने को तेजी से समेटा और आंसू पीकर हँसते हुए बोली, "आप की गोद सदा यूं ही हरी-भरी रहे!"

उस घटना के बाद खुरशीदआरा की सास जब तक जिंदा रहीं, बहू की बहन

को कभी माफ न कर पाई। रात-दिन वह दोनों पोतों के चेहरों को याद कर-करके रोतीं और मरने से कुछ महीने पहले तो वह सनक गई थीं। गम ने उनके दिल व दिमाग पर बहुत बुरा असर डाला था, जो अंत मे उनकी जान लेकर गया। वह घर जो ससुर की मौत के बाद पनपा था, वह सास की मौत के बाद टूटकर जज्बाती तौर पर बिखर गया था। हर सदस्य अपनी जगह थका-हारा उदास रहता था! जमीर काफी लंबी छुट्टी लेकर आए थे।

एक दिन छुट्टी को खत्म होना था, सो खत्म हो गई। उनके जाने के बाद एक खामोशी वह भी दमघोंटू-सी घर में पसरकर बैठ गई थी।

खुरशीदआरा पर घर की जिम्मेदारी न होती तो गम में डूब जाती, मगर छोटे देवर और ननद का खयाल रखना पड़ता था। मझले को नौकरी मिल गई थी। सलाह हुई कि उसकी शादी कर घर का माहौल बदला जाए। उस फैसले का बहुत अच्छा असर पड़ा। नई दुल्हन ने एक तरफ घर में कदम रखा और दूसरी तरफ खुरशीदआरा फिर से उम्मीद से हुई। एक बार फिर घर में बहार ने दस्तक दी। जो हँसना भूल गए थे वे खिलखिलाने लगे। उम्मीद और भविष्य की बातें होने लगीं और एक दिन दोपहर को समीना ने इस दुनिया में आखे खोलीं। खुरशीद की गोद क्या भरी, गम के सारे सूखे पत्ते शाख से झरझराकर गिर गए...

एलबम बंदकर खुरशीद ने घडी की तरफ देखा, शाम के चार बज रहे थे। समीना अभी तक नहीं आई थी। एलबम पलंग पर रख वह उठीं और खिड़की का परदा हटा सामने गली को देखने लगीं, जहां बच्चे कंचे खेल रहे थे। दही-पकौड़ीवाला अपनी रेहड़ी लिए खड़ा था। उसी के पास फलवाला और कबाबवाला अपनी-अपनी बिक्री में व्यस्त थे। आसमान साफ था। धूप का कोण बदल चुका था। आने-जाने वालों में स्कूली बच्चे और दूध-सब्जी लेने वाली औरतें थीं, जिनके बीच समीना का चेहरा नहीं था। उन्होंने एड़ी ऊंची कर गली के नुक्कड़ पर लगे लैंपपोस्ट को देखा, वहां पर कोई कार नहीं खड़ी थी। निराश-सी लौट वह बिस्तर पर आकर लेट गई। कुछ देर तक आंखें बंद किए रहीं, फिर उठकर सोलाह सूरहः की किताब खोलकर पढ़ने लगीं!

"चाय," बुआ कहकर वहीं बैठ गई।

खुरशीदआरा ने सूरहः खत्म कर दुआ मांगी और घड़ी की तरफ देखा—शाम के पौने छह बज रहे थे। समीना अभी भी नहीं आई थी। एकाएक दरवाजे की घंटी बज उठी। बुआ ने जाकर दरवाजा खोला। उनके कान दरवाजे पर लगे थे। आने वाला कोई पड़ोसी था। उसको पेंचकस चाहिए था। खुरशीदआरा ने बेकरार दिल को समझाया।

'खुरशीद, वह अब खाली तेरी लख्तेजिगर और आंखों क़ा नूर नहीं रह गई है, बल्कि वह तो किसी और घर की रौनक है। वहां की खुशी और जिम्मेदारी उसका पहला फर्ज है। इसलिए अपने दिल को संभाल! लड़कियां पराये घर की होती हैं, क्या इतना भी तुझे याद नहीं रह गया है, नादान?'

18

कमाल का क्लीनिक इस समय मरीजों से भरा था, क्योंकि डॉक्टर कमाल आठ से दस बजे रात तक मरीजों को मुफ्त देखते हैं और अपने पास से दवाएं देते हैं। मगर यह सुविधा सबके लिए नहीं है बल्कि समाज के एक विशेष वर्ग के लिए है। 'खुदा के बाद जिनका कोई नहीं, उनका है डॉ. कमाल'—यह मुहावरा अकसर लोग दोहराते सुनाई पड़ते हैं। कुछ दिनों से महंगा इलाज भी करते और तगड़ी फीस भी लेते हैं, आखिर रहना तो उनको इसी दौर में है। जमाने के साथ न चले तो पिछड़ जाएंगे। इसलिए ऊंचे वर्ग और पैसेवाले लोगों के बीच भी कमाल का नाम सोने के खरे सिक्के की तरह खनकता रहता है! उसके हाथ में 'शिफा' है, जिसकी नब्ज पर हाथ रखा, उसकी आधी बीमारी अपनी मुस्कराहट से दूर कर दी। हर एक से हालचाल पूछना, घर-परिवार के बारे में जानना डॉ. कम़ाल अपना कर्तव्य समझता है, इसलिए बूढ़े लोगों और बच्चों की भीड़ के साथ औरतें भी बड़ी संख्या में नजर आती हैं।

"बरसात में हमेशा हलका खाना खाना चाहिए।" डॉ. कमाल ने मरीज से कहा।

"डॉक्टर बाबू, जो मिलेगा वही खाएंगे...परिवार बड़ा है! आप तो सब जानत हैं।" कहता हुआ बूढ़ा रुआंसा हो उठा।

"परेशानी की कोई बात नहीं!" डॉ. कमाल हँसा।

"जब तक कमावत रहे, कभी अपने बेटवन का बासी-तिबासी नहीं खिलावा, मगर बहू का राज है! बचा-खुचा दे देत हैं। भगवान् का शुकर अदा कर खाय लेत हैं।" बूढ़े के रुके आंसू गालों पर लुढ़क पड़े।

"बाबा, हिम्मत से काम लो...और हां अपने बेटे का नाम और घर का पता कंपाउंडर को लिखा देना...सब ठीक हो जाएगा...अरे, हम हैं तो फिर काहे की फिकर?" कमाल ने बूढ़े का हौसला बढ़ाया।

"अच्छा प्रणाम!" कहता बूढ़ा उठा।

और जो दूसरा रोगी उसकी जगह बैठा उसकी कहानी भी कोई कम दर्दनाक

नही थी। रोज इसी तरह के किस्सो के बीच डॉक्टर कमाल खुद मुस्कराना और दूसरों को हँसाना नहीं भूलता है।

साढे दस बजे के करीव क्लीनिक जब बद होने लगी तो एक जवान दवाखाने में दाखिल हुआ। कमाल कार मे बेठ चुका था। कंपाउडर ने बूढ़े के लड़के के आने की खबर दी।

"राम-राम डॉक्टर साहब, पिताजी ने बताया कि..." एक हँसमुख जवान सामने खड़ा था।

"हां, मैं तुमसे मिलना चाहता था। तुम्हारे हाव-भाव से लगता है, तुम्हें असलियत का पता नहीं हे।" गहरी नजरो से कमाल ने उसे घूरा।

"हम कुछ समझे नहीं जी।" वह एकाग्क गभीर हो उठा।

"कितने वच्चे हैं?" कमाल ने सीधा सवाल किया।

"दो, तीसरा अगले माह होय वाला है।" कुछ झिझकते हुए वह बोला।

"तुम्हारी उम्र क्या है?" इस बार कमाल सजीदा था।

"बाईस साल।" वह बोला।

"फेमिलीप्लानिंग पर विश्वास रखते हो ..मेरा मतलब है परिवार नियोजन?"

"हा, साहव।" वह चहका।

"फिर।" कमाल ने घूरा।

"आपरेशन कराया था, सफल नही हुआ और तीसरा...।" अचकचाकर वह जवान बोला। उसकी आखों में भय-मिश्रित कौतूहल बढ़ रहा था।

"तीन के बाद..." गहरी नजरों से कमाल ने घूरा।

"कभी नहीं।" थूक निगलते हुए उसने कहा और हाथ जोड़ दिए।

"तुम अपने पिताजी का ध्यान रखते हो?" कमाल का स्वर नरम था।

"हां, जी साहब। वह हमारे..." उसने बड़े अंदाज से कहा।

"खाना-पीना क्या देते हो?" बीच में ही कमाल पूछ बैठा।

"में तो सात बजे सुबह ड्यूटी पर चला जाता हूं, फिर रात को लौटता हूं। पीछे पत्नी उनकी देख-रेख करती है। मैंने उनके लिए आधा पाव दूध भी बांध रखा है।" जवान ने बताया।

"तुम्हें विश्वास है, पत्नी दूध देती है तुम्हारे पिताजी को?" कमाल ने सीधे उमकी आंखों में देखा।

"काहे नहीं...मगर बाबूजी, आप यह सब काहे पूछत हैं? साफ-साफ बोलें!" लड़का शरीफ था, मगर बेवकूफ नहीं।

"तुम्हारे पिताजी की बीमारी बढ़ सकती है, अगर उन्हें पौष्टिक खाना न मिला और वह बासी और गरिष्ठ भोजन करते रहे। बिना लड़े जरा पिता के खान-पान का पता लगाओ, तब हम समझेंगे कि तुम अहिंसा पर विश्वास रखते हो, वरना तो सब बेकार..." हँसते हुए कमाल ने बड़े दोस्ताना अंदाज से कहा। वह लड़का भी मुस्कराए बिना नहीं रहा।

कार आगे बढ़ गई।

घर लौटते हुए लड़का डॉ. कमाल की कही बातों पर विचार करता रहा। क्या मेरे पीछे...नहीं, ऐसा मुझे नहीं सोचना चाहिए। फिर डॉक्टर साहब की यह पूछताछ? शायद वह सब मात्र दिखावा ही हो जो पत्नी पिता की आवभगत मेरे सामने करती नजर आती है! मगर मैं सच्चाई का पता कैसे लगा सकता हूं? रात को थका लौटता हूं, भोर में निकल जाता हूं। इसी उधेड़बुन में उलझा लड़का जब घर पहुंचा तो पिताजी चारपाई पर लेट चुके थे। रसोई निबटाकर पत्नी उसका बिस्तर लगा रही थी। रात के सवा ग्यारह बज रहे थे। उसने चुपचाप कपड़े बदले और बिस्तर पर लेट, आंखें बंद कर लीं। दिमाग में जाला तना था! उसको साफ करने के लिए वह छटपटा रहा था।

सुबह को वह समय से पहले यह कहकर निकल गया कि आज कोई जरूरी काम है। मोहल्ला तो मुंह-अंधेरे ही जाग जाता है। नलके पर नहाने वालों की भीड़, सड़क-गली में दूध, अंडे, पावरोटी वालों की साइकिल के साथ बच्चों की रोने और औरतों के चीखने-चिल्लाने की आवाज में चिड़ियों की चहकार तक कभी-कभी सुनाई नहीं पड़ती है। लड़का आगेवाली गली की चाय की दुकान पर जाकर बैठ गया। गरम चाय के साथ समाचार-पत्र के पन्ने उलटने-पलटने लगा, फिर घड़ी की तरफ देख उसने पैसा चुकता किया और धीरे-धीरे घर की तरफ लौटने लगा। अंदर से पत्नी की आवाज गली तक सुनाई पड़ रही थी—

"अरे, कउन-सा रोग लग गवा है जो डॉक्टर की फीस मा पैसा बहाय रहा है बूढ़ा! अब कहत है, बासी न खाबे, डॉक्टर मना किए हैं। तो रहो भूखे! हमार का जात है..."

लड़के को सहसा अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ कि यह उसकी पत्नी बोल रही है। जब वह आगे बढ़ा तो उसने देखा—पिताजी रात की बची रोटी मोहल्ले के कुत्ते को बड़े प्यार से खिलाते हुए चाय का घूंट भर रहे हैं। उसको अपने सामने खड़ा देख हड़बड़ा गए।

"कहो लल्ला, सब ठीक तो है?"

"कैसे लौट आए जी?" कहती पत्नी अंदर से निकली। उसे देखकर लड़के की आखों में हिंसा उभरी। होंठ फड़फड़ाए, मगर फौरन ही अपनी दशा पर काबू पा वह अंदर आया। कुछ देर चुप रहा जैसे अंदर मचे तूफान को छांट रहा हो, फिर एकाएक पूछ बैठा, "पिताजी, आपने दूध पिया?"

खामोशी।

"सुनती हो, पिताजी को दूध पिला दिया?"

सन्नाटा।

"नाश्ते में क्या खाया आपने, पिताजी? क्या दिया था तुमने बनाकर?"

गहरा सन्नाटा।

"बस यही देखने लौटा था।" इतना कहकर लड़का अपनी जगह से उठा और सीधे हलवाई की दुकान पर पहुचा। गरम दूध का कुल्हड़ हाथ में लेकर लौटा और बाप को थमाते हुए बोला—"ग्वाले को कल से दूध लाने के लिए मना कर देना, पिताजी खुद जाकर दूध पी लेंगे। हिसाब महीने-महीने मैं करूंगा और अगर तुम्हें ताजा रोटी डालने मे अलकस होती है तो उसका भी बंदोबस्त हो जाएगा!"

औरत का चेहरा अपमान से काला पड़ गया था। वह रंगे हाथों पकड़ी गई थी। उसकी आखे गीली हो उठी थीं। वह बुरी ओरत नही थी, मगर जिस समाज में बूढ़े बोझ समझे जाने लगे हों, उन्हे बेकार की वस्तु समझकर एक किनारे डालने का चलन बढ़ रहा हो, वहां पर यह औरत सबसे अलग क्यों व्यवहार करेगी? अगर यहा बूढ़े का बेटा सुलझी तबीयत का समझदार लड़का न होता तो वह भी डॉक्टर कमाल की बातों को एक कान से सुनता और दूसरे कान से उड़ा देता, या फिर वह डॉक्टर के बुलावे या पिता के कहने के बावजूद क्लीनिक जाना टालता रहता और उसकी पत्नी भी शर्मिदा होने की जगह कैकेयी कांड का दृश्य उत्पन्न कर बूढ़े के जीवन के बाकी दिन नरक से भी बदतर बना देती। मगर ऐसा नहीं हुआ। उनके व्यवहार में बदलाव आया, क्योंकि उनमें बदलने का गुण मौजूद था। अपना कर्तव्य डॉक्टर कमाल बखूबी जानता था। भाषणबाजी, दिखावा और किसी आंदोलन के माध्यम से समाज में लाए जाने वाले बदलाव पर फिलहाल उसका कोई विश्वास नहीं था। इसलिए उसने नियम बना रखा था कि गलत बात पर खामोश नहीं रहना है, बल्कि उसका अहसास दूसरे को कराना है। बदलना-न-बदलना यह उसका काम है और वही अंत में अपने व्यवहार के प्रति इस समाज और उस दुनिया में जवाबदेह होगा।

डॉक्टर कमाल अकेला इंसान नहीं था, जो पेशे के जरिये इंसानियत बचाने का काम कर रहा था, बल्कि उसकी तरह असंख्य लोग थे, जो अपने-अपने कार्यक्षेत्र

में अपने जीवन को बड़े अर्थपूर्ण ढंग से जीने की कोशिश कर रहे थे। अपने पेशे की मर्यादा के साथ उसके प्रति लोगों में विश्वास जगाने का भी काम कर रहे थे। क्योंकि वे जानते थे कि बिना विश्वास के इंसानी जीवन बगैर रीढ़ की हड्डी के समान लुंजपुंज है। विश्वास है तो ओज है, शक्ति है, प्रेम है, दया है। उसी से जीवन का लक्ष्य वजूद में आता है। इंसान अपने सपने को साकार करता है। जिजीविषा न रहे तो फिर इस जीवन का कोई अर्थ नहीं रह जाता। सारा जोश ही पहले धक्के से दम तोड़ जाए और इंसान थककर उसी नाकामी को अपना अंत समझ ले। दरअसल, सफलता अपने में कुछ नहीं है, मगर उसको प्राप्त करने की चाह में इंसान का जो विकास होता है वही उसकी असली 'सफलता' होती है।

डॉक्टर कमाल से जलने वालों की इस शहर में कमी न थी। अकसर डॉक्टर उसको डॉक्टर दोगले के नाम से पीठ पीछे पुकारते थे, जी भरकर मजाक उड़ाते थे। अवसर मिला तो मुंह पर ही कोई तेज-तर्रार जुमला कस दिया—'कहो कमाल, गरीबों के नाम पर बहुत कमा रहे हो?' या फिर 'तुम्हारी फीस भी हर बाजार में अलग-अलग है!' इन सारे कटाक्षों का कमाल के पास ही जवाब होता कि 'अरे यार! तुम भी तो आजाद हिंदुस्तान में सांस ले रहे हो। किसने तुम पर रोक लगाई है? जो दिल में आए, करो।'

उसकी इस सहजता से ज्यादातर डॉक्टर अंदर से तिलमिलाए-से रहते थे, मगर उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाते थे। हर स्थिति में वह इतना 'परफेक्ट' उतरता था कि मन-ही-मन वे भी दाद दिए बिना नहीं रह पाते थे। एक बार सीनियर प्रोफेसर डॉ. पांडेय ने कहा था कि कमाल इसलिए तुम सबसे अलग दिखता है क्योंकि हम अकसर अपने प्रोफेशन के जरिये अच्छे जीवन-स्तर की तलाश करते हैं, मगर कमाल को पता है कि वह अपने प्रोफेशन में जैसे-जैसे आगे बढ़ेगा, उसके लिए वह सारी सुविधाएं अपने-आप उपलब्ध होती जाएंगी, जिनकी कामना हम-आप करते हैं! और यह सच विश्व-स्तर का एक ऐसा यथार्थ है जिसको झुठलाया नहीं जा सकता।

अकसर डॉक्टर कंधा उचकाकर कह उठते कि कमाल को एक ऐसा परिवार मिला जिसमें रहकर उसको बुनियादी जीवन की जरूरतों के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा। हम तो उस उम्मीद पर पढ़ाए-लिखाए जाते हैं कि हमको इसका ऋण उतारना है। चाहे पाप करके या पुण्य कमाकर, मां-बाप की आशाओं पर पूरा उतरना है। उससे सहमत साथी चुप हो जाते और कभी-कभी कोई तेज दिमाग एक शोशा छोड़ बैठता—

"अकसर ऐसा भी तो होता है कि कमाल या कमाल की तरह संपन्न परिवार से आने वाले अधिक चतुर अपने वर्ग के प्रति सचेत होते हैं और इसलिए...वह अधिक खतरनाक साबित हो सकते हैं। उनके शोषण में सौंदर्यबोध की ऐसी भव्यता होती है कि उससे आम आदमी भय खाने लगता है और इस हद तक प्रभावित हो उठता

हे कि स्वयं अपने शोषण के रास्ते पर चल पड़ता है। उदाहरण के रूप में डॉक्टर वचानी, डाक्टर अली और जाने कितने नाम हमारे सामने से गुजरते चले जाते हैं। जिन्होंने केवल व्यक्तिगत लाभ पर नजर रखी, मगर उन्हीं की जगह डॉ. राय, डॉ. सुबोध और डॉ. गांगुली को लो, जो जीवन-भर रोगियों की सेवा के लिए जिंदा रहे! डॉक्टर काजिम ने तो अपना सारा फंड ही कैंसर अस्पताल को दान दे दिया था! वह भी तो बड़े घराने से थे!''

''इसका मतलब है कि वर्ग या परिवार जो भी हो, स्वयं इंसान की अपनी रुचि का भी दखल होता है, वरना एक मां के बच्चे एक ही रंग के होने चाहिए, क्योंकि परिवेश उनका एक था! मगर उसी गोद मे पलकर बढ़े बच्चे अलग-अलग संस्कारवाले होते हैं। उनकी सोच, दृष्टिकोण, शक्ल, अंदाज ज्यादातर अपने बहन-भाइयों से नहीं मिलता है। यह अपने में आश्चर्य हे मगर सच भी है।''

इस सारी बहस से दूर कमाल अपने बनाए रास्ते पर बड़े आराम से चल रहा था। अकसर वह अपनी किस्मत पर नाज करता कि उसको समीना जैसी जीवन-संगिनी मिली, जो उसके साथ हर जगह कदम-से-कदम मिलाकर चलती है, वरना अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए उसको परिवार से कटना पड़ता, जो उसके लिए किसी भी तरह उचित न होता; क्योंकि हर इंसान को एक खुशहाल खानदान की दरकार होती है, जो सोख्ता बन उसकी हर अच्छाई-बुराई को अपने में सोखकर उसे बाकी समाज के लिए संतुलित वनाता हे!

आज कमाल ने अपने साथी डॉक्टरों को रात के खाने पर बुला रखा था। उसमें सबसे काबिल डॉक्टर गायत्री थीं, जो वच्चों की विशेषज्ञ थीं। डॉ. चित्तरंजन न्यूरोसर्जन थे, जो अपने काम में खूब शोहरत कमा चुके थे। डॉ. कविता गायनी की और उन्हीं की तरह डॉक्टर फिरोज बख्त भी स्त्री-रोग विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते थे। हड्डियों के स्पेशलिस्ट डॉक्टर आर.के. सिंह थे। उमा पंत और खालदा रिजवी दोनों डेंटिस्ट थीं और अभी चंद वर्षो से इस क्षेत्र में महारत हासिल कर रही थीं। ये एक मिजाज़ के डॉक्टर थे, जिनमें से कुछ अस्पतालों में और कुछ प्राइवेट नर्सिंगहोम से संबंधित थे। कमाल इनके बीच बैठ एक अस्पताल खोलने की संभावना पर विचार कर रहा था, जो कोऑपरेटिव वेसिस पर सबका साझी हो और जिसमें लावारिस बूढ़ों, बच्चों और औरतों का इलाज मुफ्त किया जा सके। योजना महत्त्वाकांक्षी थी। उसके लिए धन की दरकार थी। इतना धन तो फिलहाल किसी के पास न था कि वह चंदा देकर बजट को पूरा कर सकता, तो भी मिलने-मिलाने के बहाने इस अस्पताल पर भी बातचीत हो ही जाती थी।

कमरे में हलके संगीत की धुन आहिस्ता-आहिस्ता रेंग रही थी। शैंपेन, वाइन और ताजा संतरे के जूस के अधभरे गिलास उनके हाथों में थे। कुछ चाय की चुस्कियां

भी ले रहे थे। हलके-फुलके मजाक भी जारी थे। एक खुलापन छुट्टी के दिन यूं भी उन्हें ताजगी दे जाता है जो छह दिन जमकर काम करते हों। और उस समय तो यह ताजगी और भी खिल उठती है जब अपनी तरह के लोगों का साथ हो। लजीज खाना हो और समय की कोई पाबंदी न हो।

"मिसेज रुद्रा का क्या किस्सा था?" उमा पंत ने पूछा।

"कोई खास नहीं।" खालदा रिजवी बोली।

"कोई खास कैसे नहीं? सारा अस्पताल सिर पर उठा लिया था!"

"हां, उनका आपरेशन होने वाला था। केस डॉक्टर बत्रा का था। वह किसी व्यक्तिगत कारण से कानपुर चले गए। उनके स्थान पर डॉक्टर सुबोध अकसर उनके केस हैंडिल कर लेते थे, मगर जाने क्यों इस आपरेशन को करने से उन्होंने इनकार कर दिया। बाद में पता चला कि कुछ दिनों पहले दोनों डॉक्टरों के बीच अनबन-सी हो गई थी। उसी घटना को सुबोध ने इगोप्रॉब्लम बना लिया था।" खालदा ने खुलासा किया।

"अजीब बात है! डॉक्टरी का पेशा कब से इन बेकार की बातों से प्रभावित होने लगा है? रियली रेडीकुलस!" उमा पंत कड़वाहट से हँसी।

"देखते जाओ बच्चू! हमारा प्रोफेशन मोस्ट मनी ओरिएंटेड होता जा रहा है। उस शपथ को अब कोई याद नहीं रखता है जो हर डॉक्टर डिग्री लेते समय लेता है!" उधर चित्तरंजन फिरोज बख्त से कह रहे थे।

"सब थोड़ी ऐसे हैं।" फिरोज ने प्रतिवाद किया।

"ज्यादातर ऐसे ही हैं!" चित्तरंजन अपनी बात पर अड़ गए।

"आप हैं? मैं और यह सब हैं? जब यह सब नहीं हैं तो फिर बेकार के लोगों की तरफ इशारा कर आप इस सच को सबका सच क्यों मनवाने पर तुले हैं!" फिरोज को आग लग गई।

"अपना अस्पताल खोलो...मदर टेरेसा बन जाओ!" कमाल ने कहक़हा लगाकर वातावरण की गरमी कम करनी चाहिए।

"हां, हां...अच्छा जोक मारा है!" इतना कह आर.के. सिंह ने तीसरा पेग भरा और बड़े तरंग में बोले, "बहको...खूब जमकर बहको। नशे की आड़ में सब कुछ बक डालो।"

"यार सिंह, बोर मत करो...इतना पी लेते हो तुम कि अपने पर काबू ही नहीं रख पाते।" चित्तरंजन बोले।

"तुम चुप रहो..." सिंह चीखे।

''शांति...एक किस्सा सुनाता हूं। जानते हो तुम लोग कि मैंने अभी-अभी प्राइवेट नर्सिंगहोम 'मदर एंड चाइल्ड' को ज्वॉइन किया है। एक लेडी मुझे दिखाने आई। उसी वक्त मेडिकल से फोन आ गया। मैंने उसे बैठने का इशारा किया और बातों में लग गया। कुछ पल बाद वह ओरत इशारे से अभिवादन करती उठ खड़ी हुई और चलने लगी! मैंने इशारे से बताया कि वस बात खत्म हो ही रही है, मगर वह रुकी नहीं!'' फिरोज बख्त कहने लगा!

''बैठिए...'' इतना कह मैंने बाद में फोन करने की बात कह फौरन फोन काट दिया।

''आप दिखाने आई हैं, फिर जा क्यों रही हैं?'' मैंने उसकी फाइल खोलते हुए पूछा।

''मुझे अब नहीं दिखाना है, डॉक्टर साहब!'' वह मुस्कराकर बोली।

''क्यों?'' मैंने चौंककर पूछा।

''डॉक्टर पर विश्वास न हो तो उससे इलाज करवाना बेकार है!'' उस औरत के यह कहने पर मैं चौंक पड़ा, कुछ बुरा भी लगा।

''आपने अभी इलाज कराया कहां हें जो...'' मुझसे नहीं रहा गया तो बोल पड़ा।

''जो डॉक्टर अपने मरीज की इज्जत नहीं कर सकता वह इलाज क्या खाक करेगा? आपका कनसर्न पेशेंट होना चाहिए, मगर तीन सौ रुपये फीस जमा करवाने के बाद, आधा घंटा इंतजार के बाद, जब मरीज आता है तब डॉक्टर मशीन की डीलिंग की बात लाखों और करोड़ों में किसी व्यापारी की तरह कर रहा हो तो...'' वह हँस पड़ी।

''आइ ऐम सॉरी! वह काम जरूरी था। आप आएं, बैठें प्लीज।'' मेरे इस तरह कहने पर वह बैठ गई, मगर कुछ तनी-तनी-सी रही।

नुस्खा उठाते हुए बोली—

''माफ करिएगा, डॉक्टर साहब! मैं भी बाई प्रोफेशन 'राइटर' हूं। अगर मैं अपनी लेखनी के प्रति ईमानदार नहीं तो फिर लिखने का फायदा क्या? आप तो डॉक्टर हैं, खुदा के बाद जिंदगी देने वाला एक इंसान। अगर वह मरीजों में विश्वास न जगा सका तो...मेरे इस बरताव के लिए मुझे माफ करेंगे, मगर आप जैसों को झिंझोड़ना मैं जरूरी समझती हूं।''

इतना कहकर वह चली गई।

''जानते हो, उसके जाने के बाद एक खालीपन मेरे दिल व दिमाग पर छा गया!

मगर सवाल यह है कि सिर्फ डॉक्टर से सारी उम्मीदें लगा लेना भी ज्यादती है। प्रोफेसर रंजन का फोन था। तुम तो जानते हो, प्रोफेसर रंजन को! उस दिन फोन काटने के बाद वह मुझसे आज तक नाराज हैं!"

"उनको ठीक करने की एक ही तरकीब है कि उस 'लेडी राइटर' को एक बार उनके पास भेज दो!" कमाल ने तरकीब सुझाई।

इस जुमले पर जोरदार कहकहा लगा, फिर एकाएक खामोशी छा गई। वे कुछ सोचते हुए बैठे रहे। बीच-बीच में वे एक-दूसरे पर नजर डाल लेते थे। उनके अंदर कई तरह के सवाल-जवाब चल रहे थे! गिलास खाली हो गए थे। समीना ने उन्हें भरते हुए कहा।

"दूर और करीब से डॉक्टरों को जो मैंने देखा है, उससे एक ही नतीजे पर पहुंची हूं कि डॉक्टर का निज कुछ नहीं होता है। जो है, उसका 'मरीज' होता हे। यदि कुरबानी आप नहीं दे सकते तो शौकिया डॉक्टर भी मत बनिए या फिर अपने को शादी-ब्याह से मुक्त कर लें! और अगर यह भी न कर पाएं तो फिर जिंदगी में बैलेंस लाएं, जब मरीज के सामने हैं तो सिर्फ उसके और जब परिवार में हैं तो केवल उसके।"

"यह दूसरा मामला, कुछ गड़बड़ है, भाभी। तब भी डॉक्टर परिवार का नहीं रह जाता, जब कोई 'इमरजेंसी केस' आ जाता है और उसको मोत, जन्म, त्योहार, जश्न—सब कुछ उसी पल छोड़कर जाना पड़ता हे!" फिरोज बख्त बोल उठा।

"जाना चाहिए, बिलकुल उसे जाना चाहिए, मगर उसके जाने से यह तो साबित नहीं होता कि वह परिवार का नहीं है! एक मां भी तो अर्जेसी महसूस करती हुई सारा काम छोड़, पहले रोते बच्चे को उठाती है। इससे यह अर्थ बिलकुल नहीं निकलता कि उसे शौहर की या अपनी सास की परवाह नहीं है!"

"मगर अकसर घरवाले इस बात को समझ नहीं पाते हैं।" चित्तरंजन पर चढ़ गई थी। उसने हठ वाले स्वर में कहा।

"समझना तो उन्हें पड़ेगा। वरना उन्हें समझाया इस तरह से जाए कि वह समझ सकें!" डॉ. कविता ने कहा और इशारे से उनको शराब न देने को कहा।

"यार! मेरा तो तलाक ही इस कारण हुआ?" डॉक्टर चित्तरंजन के इस तरह कहने पर वे सब चौंके, फिर चुप हो गए। यह उनके लिए सनसनीखेज खबर थी, क्योंकि वे उन्हें अभी तक 'क्रानिक बेचलर' समझे हुए थे।

"मुझे अपनी पत्नी से बहुत प्यार था! वह बला की खूबसूरत थी! लेकिन वह मुझे बाहर से जितना लुभाती थी अंदर से उतना ही तोड़ती थी। उसकी आत्मा उसके

चेहरे की तरह सुंदर न थी, इस सच को जानने के बाद भी मैं उसके मोह से मुक्त नहीं हो पा रहा था। एक समय ऐसा आया कि मुझे प्रेम और प्रोफेशन के बीच किसी एक को चुनना था। उसको भूलना, छोड़ना मेरे लिए नामुमकिन था। डॉक्टरी का पेशा छोड़ना भी असंभव था। पूरे एक वर्ष अपने-आपसे लड़ते गुजारा और अंत में यही सोचकर कल्पना को छोड़ दिया कि जो प्यार इतना 'पॉजेसिव' हो, उसके साथ जीना मुझे कहां ले जाकर छोड़ेगा? पांच साल गुजर गए। धीरे-धीरे उसकी याद बेजान होती चली गई। ताज्जुब तो मुझे तब हुआ जब मैंने पिछले सप्ताह उसे शिमला में उसके पति के साथ देखा। दिल व दिमाग में कोई बेचैनी नहीं उभरी। बिलकुल ठंडापन मेरे अंदर छाया रहा। मुझे खुद अपनी इस तब्दीली पर ताज्जुब हुआ, मगर सच यह है कि जो रिश्ते बड़े सरोकारों से जुड़ते नहीं, वह बहुत जल्द मर जाते हैं...मुरदा रिश्तों के साथ जीना बेकार है...बिलकुल बेकार कोशिश।'' इतना कह डॉक्टर चित्तरंजन ने जोरदार कहकहा लगाया! बाकी लोग सिर्फ अर्थपूर्ण मुसकान के साथ उन्हें देखते रहे, खुद उनकी आंखों में अलबत्ता एक बेकरारी नजर आ रही थी। माहौल में सवालिया खामोशी छा गई, मगर संगीत उसी तरह दबे पांवों कमरे का चक्कर लगाता रहा।

19

दो नदियों के शहर इलाहाबाद में बरसाती पानी ने जगह-जगह तालाब बना दिए थे। नदियां तो पहले ही गंदे नालों को अपने आगोश में जगह देकर साफ-सुथरी नहीं रह गई थीं। ऊपर से इन पानी-भरे गड्ढों ने 'सोने पर सुहागा' कर दिया! मच्छरों, कीड़ों और तरह-तरह के कीटाणुओं ने इस ठहरे पानी में रहकर बीमारी फैला दी। रोज किसी-न-किसी इलाके में होती मौतों की खबर छपने लगी थी। साफ पानी की कमी थी। जगह-जगह से नल टूटने और सड़क धंसने से शहर के कुछ रास्ते बंद पड़े थे। बारिश के चलते मरम्मत का काम एक दिन चलता दो, दिन बंद रहता था। गंदे कपड़े धुल न पाते और धुले कपड़े सूख न पाते, जिसके कारण झोपड़ी और कोठरी में अजीब गंध-सी भरी रहती थी।

बाजार आम से पटा पड़ा था। अरसे बाद आम की फसल बढ़िया हुई थी जिससे लोगों को सस्ता आम जी भरकर खाने को मिल रहा था। सड़क की पटरियों पर जहां आम के ढेर नजर आते, वहीं पर जगह-जगह चुसनी आम के छिलके और गुठलियों के ढेर दिखते, जिस पर मक्खियां सैकड़ों की तादाद में भिनभिनाती रहती थीं। सफाईवाले कर्मचारी गायब थे। पेड़ धुल-धुलाकर जितने शादाब हो उठे थे, जमीन उतनी ही गंदगी से भर गई थी। अस्पतालों का भी बुरा हाल था। उनके सामने भी

घूरों के बड़े-बड़े पहाड़ जमा थे, जिन पर सुअर और कुत्ते खाने की चीजें ढूंढ़ने के चलते कूड़ा दूर-दूर तक बिखेर देते थे, जिसकी दुर्गंध वार्ड तक हवा अपने साथ ले जाती थी। नालियां तो हमेशा कूड़े और गंदगी से उबलती रहती हैं और इस बरसात में तो वे सब सैलाब का शिकार हो चुकी थीं।

ऐसी हालत में राबिया की अम्मा भी कहां बचने वाली थीं! एक-दो दिन घरेलू दवा-दारू से काम चलाती रहीं, फिर जब मजबूर हो गई तो राबिया को शकरआरा के घर भेजा ताकि डॉक्टर साहब से हाल कहकर दवा ले आए। राबिया पहले तो जाने को तैयार न हुई, फिर अपने को सजाने-संवारने में लग गई।

बन-ठनकर जब मटकती हुई वह शकरआरा के घर पहुंची तो बरामदे की सीढ़ियां चढ़ते ही उसकी मुठभेड़ समीना से हो गई जो माली से कुछ कहने बाहर निकली थी। राबिया की इठलाहट देखकर समीना अंदर तक सुलग उठी और रूखे लहजे में पूछ बैठी, "कैसे आना हुआ? तुम्हारी मां कहां हैं?"

"भाभी, वह तो बीमार पड़ी हैं। परसों से कै-दस्त लगा है। दवाई मंगाई है, वही लेने आई थी।" राबिया समीना के रूखेपन से सहमकर बोली।

"ठीक है। तुम यहीं खड़ी रहना। मैं अंदर से लाकर दवा देती हूं।" इतना कहकर समीना अंदर चली गई। जब दवा लेकर लौटी तो राबिया बरामदे में मौजूद नहीं थी। समीना के तेवर पर बल पड़ गए। कुछ देर गुस्से में भरी खड़ी रही फिर आगे बढ़ माली को आवाज देने लगी।

"जी, छोटी बेगम!" माली खुरपी लिए भागा-भागा आया। उसके हाथ-पेर मिट्टी में सने थे।

"पौध आप कब लगाएंगे जब बरसात गुजर जाएगी?" समीना ने पूछा।

"पौध ले आए हैं। आज ही, लगा देंगे!" माली समीना के उखड़े लहजे को सुनकर सहम गया।

"ठीक है।" इतना कहकर समीना मुड़ी तो उसे पिछले कमरे से हाशिम निकलता दिखा। एक बार दिल चाहा कि पूछे कि राबिया को देखा है क्या? फिर कुछ सोचकर रुक गई।

अंदर जाते हुए उसने शकरआरा की आवाज सुनी। समीना सास के कमरे में दाखिल हुई। जहां राबिया दांत निकाले, आंखें मटका-मटकाकर कुछ बोल रही थी। समीना को देख वह स्टैचू बन गई, समीना का दिल चाहा कि राबिया से फौरन कहे—गेट आउट...मगर सास का लिहाज कर चुप रह गई।

"यह लो दवा...और तुम चली कहां गई थीं? मैंने तो तुमसे वहीं रुकने को

कहा था?" तेज नजरों से राबिया को घूरती समीना बोली।

"अब भाभी, बिना बेगम साहब को सलाम किए लौटते तो अम्मा डांटती न?" राबिया ने इतराकर दुपट्टे को उंगली में लपेटते हुए जवाब दिया।

"अच्छा ठीक है, अब तुम जाओ।" समीना का रूखापन देख शकरआरा ने बहू की तरफ नजरें घुमाई। समीना का यह लहजा उन्होंने पहली बार सुना था।

"जी, शुक्रिया।" राबिया ने दवा ली और बड़े फिल्मी अंदाज से झुककर आदाब किया और बाहर निकल गई।

"मुझे यह लड़की जरा भी नहीं भाती है।" समीना अपने को रोक नहीं पाई।

"अरे, ठीक है...इन्हें भी अपने को दिखाने का बड़ा शौक रहता है। कुछ उम्र का तकाजा है।" इतना कहकर शकरआरा हँस पडीं। उनकी हँसी में कुछ ऐसे संकेत थे कि समीना भी गुस्सा भूल मुस्करा पड़ी।

"आज छुट्टी है क्या तुम्हारी?" शकरआरा ने पूछा।

"नहीं बड़ी अम्मी, बस आधे घंटे में निकलती हूं।" समीना ने जवाब दिया।

"यह मौसम तो अदरसे खाने वाला है। आज हाशिम को चौक की तरफ भेजती हूं।" शकरआरा ने रॉकिंग चेयर पर झूलते हुए कहा।

"फिर बड़ी अम्मी, उससे चादर और तकिया गिलाफ भी लाने को कह दीजिएगा।" समीना ने जाते हुए कहा।

"इस बार कोन-सी बेल कढ़वाई?" शकरआरा ने पूछा।

"हरी पत्तियों की।" समीना ने बताया।

"सफेद चादर पर खूब खिलेगी!" शकरआरा ने अनुमान लगाया।

"पत्तियों की लहर भी उसने गजब की डाली है। नमूने की कॉपी में सबसे बढ़िया वही डिजाइन मुझे लगी थी!" समीना ने उत्साह से कहा।

"चलो, इस बहाने उसकी दुकान खूब चल निकली, वरना कढ़ी चादरों और तकिया-गिलाफ का फैशन अब कहां रह गया है।" शकरआरा बोलीं।

"मैंने तो यह बीमारी स्कूल में सबको लगा दी है, अम्मी! स्कूल की हर लेडी टीचर मास्टर पियारे मियां की दुकान के चक्कर लगाती है। अगले साल उसकी बेटी को स्कूल में दाखला भी मिल जाएगा।" समीना मुस्करा पड़ी।

"तभी तो कह रही हूं, मास्टर पियारे के दिन फिर गए हैं!" कहकर शकरआरा ने मेज पर रखा पर्स उठाया और शीशा निकाल अपना चेहरा देखने लगीं।



खुरशीदआरा की तबीयत आज कुछ बशाश-सी थी। सुबह उन्होंने उठकर खुद नाश्ता तैयार किया। बदलू को अपने हाथों जाकर दिया। उसका बुखार उतर गया था। कमरे का सामान जा-ब-जा किया। कुशन कवर बदले और फिर नहाने के बाद बिस्तर पर लेट टी.वी. देखने लगीं! औरतों की सजावट को देखते हुए सोच रही थीं कि बाजार ने 'हुस्न' को भी दुकान में बदल डाला है। पहले हलकी-सी सजावट कयामत ढाती थी, अब औरत की गरदन हारों का शो केस बनती जा रही है! एकदम से उनके जहन में मां का चेहरा कौंध गया। आपा तो अम्मा का साया-भर हैं। उनके हुस्न का तो कोई मुकाबला खानदान तो दूर, कई मोहल्लों में न था। उनके पास कुंदन का सेट था। जब भी वह पहनती, खुरशीदआरा मां को देखती ही रह जाती थी। वह सेट उसको बहुत पसंद था मगर अम्मा ने उसे आपा को दिया। अपना असली मोतियोंवाला सेट उसे देते हुए बोली थीं—'तेरे सांवले रंग पर सफेद मोती बहुत जंचेगा!'

सचमुच उनका कहना सही निकला। जब वह मोतियोंवाला सेट पहनती तो सभी टोकते थे, "आज भाभी बहुत जंच रही हैं।"

जमीर अब्बास को भी वह सेट बहुत पसंद था। उस दिन उन्होंने वही सेट पहना था और गुलाबी रंग की बनारसी साड़ी, जब...

"...पाकिस्तान-हिंदुस्तान के बीच दूसरी लड़ाई में जमीर अब्बास दुश्मनों को हराने में कामयाब हुए, मगर खुद शहीद हो गए..."

उस दिन घर में सुबह से कुछ ज्यादा ही चहल-पहल थी। मंझले देवर की बेटी की सालगिरह थी। घर में तरह-तरह के पकवानों की महक फैली हुई थी। मेहमानों का तांता बंधा हुआ था। समीना अपनी फूली लेसदार फ्रॉक पहने गुड़िया की तरह उछल-कूद रही थी। शाम को केक काटने के बाद सब बच्चे खेल रहे थे। जोरदार कहकहे लगा रहे थे। उस शोर-शराबे में ही यह इत्तला मिली थी। मंझले देवर ने फोन उठाया था। वह इस खबर को पी गया था। जश्न चलता रहा। खाना जब जल्दी लगा तो खुरशीदआरा ने एतराज किया, "यह क्या, अभी तो आठ ही बजे हैं! अभी से खाना?"

"इस पार्टी को अब जल्दी खत्म हो जाना चाहिए।" इतना कह मंझले देवर ने मुंह फेर लिया, ताकि भाभी उसकी भीगी आंखें न देख सकें।

दस बजे तक पार्टी खत्म हो गई, जिसे रात बारह बजे तक चलना था। फिर आतिशबाजी का प्रोग्राम रखा गया था। उसको तो रुकवा दिया गया। जिससे देवरानी का मूड बेहद बिगड़ गया था।

"देखा भाभी? रामपुर से सालगिरह मनाने इलाहाबाद आए। पिछले एक से जान खाए थे कि सारे बचपन के दोस्तों को बुलाऊंगा, एक बार फिर सबसे मिलूंगा! और अब देखिए...सच कहती थीं मेरी चची कि यह सारे मर्द उलटी खोपड़ी के होते हैं!"

"बस, बस! अब बाकी मजा तुम मियां से लड़कर मिट्टी में मत मिला देना। गुस्सा थूक दो, बेटी की सलामती की दुआ मांगो।" खुरशीदआरा ने आग पर ठंडे पानी के छींटे मारते हुए कहा।

"जरा इधर आना।" कहता हुआ मंझला देवर कमरे की तरफ बढ़ा।

"अब क्या है? रंग में भंग डालकर मेरी याद आपको क्यों सता रही है?"

"मे..." इतना कह देवर चुप हो गया। मियां की आंखों में आंसू देख देवरानी बौखला उठी। गुस्सा काफूर बन जाने कहां उड़ गया। दिल बल्लियों उछलने लगा कि अम्मी की तबीयत ठीक हो। उन्हें मियादी बुखार ने जकड़ रखा था, जिसकी वजह से अम्मी-अब्बा इस मौके पर आ नहीं पाए थे।

"क्या हुआ? सब खेरियत तो है?"

"नही।" गर्दन हिला दी।

"रो क्यों रहे हैं? कुछ तो बोलिए!"

"क्या बताऊं...यह खबर किस मुह से दूं?"

"लिल्लाह! कुछ खुलकर बताइए, वरना कलेजा बैठ जाएगा।"

"भाई साहब नहीं रहे।"

"या अल्लाह! यह आप क्या कह रहे हैं?"

"सही कह रहा हूं!"

"बेचारी भाभी जान, कैसे सहेंगी यह सदमा?"

दोनों मियां-बीबी सिर पकड़े बैठे रहे। फैसला नहीं कर पा रहे थे कि यह खबर अभी दें या सुबह दें। दिल में उठता गम का गुब्बार कह रहा था कि सच बता दो और जी भरकर रो लो। अक्ल कह रही थी कि रात गुजर जाने दो, सुबह की सुबह देखी जाएगी। इसी उलझन में जाने कब दोनों की आंख लग गई।

सुबह खुरशीदआरा की सिसकियों की आवाज सुन बाकी घर जाग उठा। जंगल की आग की तरह इस खबर को घर-मोहल्ले में फैलते देर न लगी। जो लोग कल मुबारकबाद देकर गए थे, वही आज पुरसा देने पहुंच रहे थे। घर-बाहर सभी जगह लोग सिटपिटाए हुए थे! कुछ घंटों के गुजरने में क्या यूं आफत का पहाड़ गिरता है? जमीर ने भाई से वायदा किया था कि वह बेटी की पांचवीं सालगिरह पर जरूर शिरकत करेगा, मगर जंग के बादलों ने पहले वायदा निगला, फिर वायदा करने वाले को। किसी ने सच ही कहा है कि मौत एक बेखबर साथी है। खुरशीदआरा बार-बार बेहोश हो रही थीं। उनकी यह हालत देख न किसी में हिम्मत थी और न ही किसी

को होश था कि वह खुरशीदआरा के हाथों की कामदार गुलाबी चूड़ियों को तोड़, उनके कानों और गले से मोतियों के जेवर उतारता। जब शकरआरा कांपती-सी बहन के पास पहुंची तो औरतों को जैसे फर्ज याद आया!

"बहन की चूड़ी तोड़ डालो, बिटिया!"

इन आवाज़ों से परे शकरआरा बहन को सीने से लगाकर फफक रही थी। इस वक्त वह बहन नहीं औरत थी, जो दूसरी औरत के इस दुःख को समझ रही थी कि शौहर का भरी जवानी में मरना क्या मतलब रखता है। पूरी जिंदगी सुनसान...शकरआरा के सामने दुल्हन बनी खुरशीदआरा का चेहरा बार-बार उभर रहा था। कोई जैसे मुट्ठी में भींचकर उनका कलेजा मसल रहा था।

"बिटिया अपने को संभालो और बहन की चूड़ी बढ़ा दो।" एक बूढ़ी बोली।

"देर न करो!" दूसरी बुजुर्ग महिला ने दुनियादारी बताई।

'यह मुझसे न होगा...कभी न होगा।'—मन-ही-मन कहती शकरआरा ने मुट्ठी बांध ली।

"लेव हम करे देत हैं, रस्म पूरी!" इतना कहकर बूढ़ी नाइन उठी और खुरशीदआरा के भरे-भरे हाथों को आगे कर उसने कांच की चूडियां तोड़ी।

"कभी इ हाथ में सुहाग की शहाना चूड़ी रही, अरे हम ही तो जचगी नहलावा और..." इतना कह नाइन भी रो पड़ी।

यह दृश्य औरतों के दिलों को जख्मी कर गया। एक साथ सबकी आंखें भर आईं। खुरशीदआरा बेहोश हो गई। नाइन ने जल्दी से कान और गले के जेवर भी उतारे। छोटी ननद ने पानी के छींटे डाले। मनुहार कर घूंट-भर पानी पिलाया, फिर बिस्तर पर लिटाकर धीरे-धीरे माथा सहलाने लगी।

शकरआरा उस रात बहन को छोड़कर घर नहीं गई। बार-बार समीना को कलेजे से लगाकर उसका मुंह चूमतीं और भर आई आंखों को पोंछतीं। दूसरे दिन तीनों बच्चे भी जमाल खां के साथ चले आए। उनका दिल था कि शकरआरा घर चलकर आराम करतीं, आखिर सातवां महीना है। हर लिहाज से नाजुक, उस पर इतना बड़ा सदमा! मगर दूसरी रात भी बहन को छोड़ने पर शकरआरा राजी न हुई। खुरशीदआरा तो नीमबेहोश-सी थी। लाश तो आई नहीं थी जो कफन-दफन का मसला होता। वह तो बमबारी में उड़कर या जलकर खत्म हो गई थी। अब तो बस, दीन के मुताबिक चलना था। कल सैवुम था। उसी की तैयारी में दोनों भाई लगे थे।

"अपना खयाल रखना, दवाएं वक्त से लेना। अब मैं चलता हूं, कल फिर आऊंगा!" जमाल खां ने शकरआरा की सूजी आंखों को देख परेशान होते हुए कहा।

"ठीक है। अगर समीना कमाल के साथ जाने पर राजी हो तो लेते जाइएगा। मासूम का चेहरा कल से कुम्हलाकर रह गया है। बिन बाप की बच्ची..." इतना कहकर शकरआरा फिर रोने लगीं।

"अपना नहीं तो उस मासूम का खयाल करो जो तुम्हारे पेट में पल रहा है। उस पर जुल्म करने का तुम्हें कोई हक नहीं है, शकर...अपने को संभालो!" जमाल खां की आवाज बहुत जब्त करने के बाद भी भर्रा गई थी। इस नागहानी जवान मौत ने उन्हें हिलाकर रख दिया था।

समीना कमाल के साथ जाने लगी तो मझले देवर की बिटिया भी मचल गई। दोनो को लेकर जमाल खां जब घर पहुंचे तो खबर मिली कि अम्मा की तबीयत ठीक नहीं। उन्होंने पोते और बेटे का मुंह देखने की ख्वाहिश जाहिर की है। इस खबर से जमाल खां बौखला गए। लड़कियों को किस पर छोड़ें और बेटे को साथ लेकर कैसे मा तक पहुंचें। कुछ पल गुमसुम-से बैठे रहे फिर डॉ. अंसारी को फोन मिलाया।

"डॉ. साहब, अम्मा की तबीयत ज्यादा खराब है! आपसे गुजारिश है कि आप जितनी जल्दी हो सके खुद उन्हें जाकर देखें!"

"अच्छा ठहरो! जरा मैं अपनी डायरी देखता हूं कोई जरूरी केस तो नहीं है!" अंसारी ने कहा।

"जी।" जमाल खां इतना कह चुप हो गए।

"तुम चल रहे हो। साथ ही निकलेंगे न?' डॉ. अंसारी ने पूछा।

"नही, डॉक्टर साहब! आप फौरन चल पड़ें, मैं गाड़ी भेज रहा हूं...दरअसल मेरे हमजुल्फ के इंतेकाल की खबर कल ही हमें मिली...जी वही आर्मीवाले...शकर और बच्चों का इंतजाम करने में कुछ घंटो का फर्क पड़ सकता है। फिलहाल, बहन की दिलजोई के लिए उन्हीं के पास है।" कहते-कहते जमाल की आंखों में आंसू भर आए, मगर फौरन ही उन्होंने अपने पर काबू पा रूमाल से बहते आंसू पोंछ लिए।

"अरे, अरे...यह क्या बचपना है...बड़ी बेगम सेहतमंद होंगी। बस तुम्हें देखने का दिल चाहा होगा...तो मैं चलने की तैयारी करता हूं।" इतना कह डॉ. अंसारी ने फोन रख दिया।

जमाल खां का दिल कह रहा था कि अम्मा की बिदाई का वक्त आ गया है। उनके आंसू लाख रोकने पर भी आंखों से टपके जा रहे थे। गाड़ी भेजकर उन्होंने साली के घर फोन किया और हालात से शकरआरा को आगाह किया।

सब कुछ सुनकर शकरआरा एकदम से बोल पड़ी।

"उन्हें भी आज ही बीमार होना था!"

"कभी तो अपनी जबान पर काबू रखना सीखो, शकर!" जमाल खां को बीवी का यह अंदाज बहुत बुरा लगा बल्कि, पहली बार दिल चाहा कि जोर से शकरआरा को डांटकर कहें कि यह सब कुछ तुम्हारी वजह से हुआ है, वरना आज अम्मा हमारे साथ होतीं! तुम्हारी इसी जबान ने उन्हें गांव जाकर रहने पर मजबूर किया। कुछ सोचकर उन्होंने लहू का घूंट पिया और यह भी नहीं कहा कि इस वक्त तुम्हारा रहना भी वहां जरूरी है।

जब तक जमाल खां कमाल के साथ पहुंचते, बड़ी बेगम ने आंखें मूंद लीं। गांव उनका था। सोग चारों तरफ छा गया। अपनों के बीच रहकर भी वह अपने सगों से दूर रहीं—इसकी खलिश हमेशा जमाल खां को मथती रहती थी। आज भी वह अपने को गुनहगार समझते हैं। दूध बख्शाने तक की उन्हें खुदा ने मोहलत न दी। अपने गुनाहों की माफी मांगते हुए मां के जनाजे के सामने दो जानू बैठे जमाल खां बुरी तरह टूट गए! उसी दिन, रात को दफनाकर सुबह तक इलाहाबाद लौटे, ताकि जमीर अब्बास के सैवुम में शिरकत कर वह उसी रात फिर गांव लौट आएं। उनका बदन उनके बस में नहीं रह गया था। उनका यह हाल देख नन्हा-सा कमाल परेशान था कि हरदम हँसने वाले पापा रो क्यों रहे हैं ओर दादी आंखें बंदकर सो क्यों रही हैं?

सास की मौत की खबर सुन शकरआरा सन्नाटे में आ गई। आखिर वह भी इंसान थी। लाख घमंडी सही, तीखी जबानवाली सही, मगर थी तो औरत ही, कोई डायन नहीं। आंखें बरस पड़ीं। शकर के आंसू देख जमाल खां के दिल से सारा गिला-शिकवा जाता रहा और वह सोचने लगे कि आखिर शकर जबान की कड़वी सही, मगर दिल की तो साफ है। बहन को भी रंज पहुंचाकर परेशान तो रहती है। खुरशीद के दोनों बेटों के मरने पर महीनों वह रात को उठकर टहलती थी। अपने किए की माफी मांगती थी, जबकि कुसूर उसका नहीं था। मौत और जिंदगी तो ऊपरवाले के हाथ में है। जमाल खां के आने के बाद घर में पुरसेदारी शुरू हो गई। अखबार में दोनों खबरें छपी थीं। छोटे शहर में घरों में आना-जाना न भी हो तो बातें छुपती कहां हैं?

जमाल खां मां को दफनाकर जमीर अब्बास के फातिहे में शरीक हो गए। वहां खबर तो पहुंच ही गई थी। उसी महफिल में शकरआरा की मुलाकात राबिया की अम्मा से हुई थी, जो घर के काम में हाथ बंटाने आई थीं। वक्त मिलते ही वह शकरआरा के चारों तरफ चक्कर लगाते हुए पूछती, "बीबी, कुछ काम हो तो बताओ। तुम्हें देखकर जाने क्यों तुम्हारी तरफ दिल खिंचता है!"

उसकी चिकनी-चुपड़ी बातें सुनकर शकरआरा के दिल को बड़ा सुकून मिलता। वह दर्द न होने पर भी पैर दबाने या सिर सहलाने को कहकर अपनी तारीफें सुनतीं। जाते हुए वह पर्स से दस या पांच का नोट निकालकर राबिया की मां के हाथ में

रख देतीं, आखिर गोद में दूधपीती बच्ची थी। मियां मुरदार बेकार था। अकेली औरतजात खुद अपना ओर अपने खसम का पेट पालती थी, उस पर भी खुशमिजाजी में कमी न थी। बातों-बातों में राबिया की अम्मा ने शकरआरा के घर का पता समझ लिया था। आने का वायदा भी किया था।

फातिहे के फौरन बाद जमाल खां मां के तीजे के लिए गांव की तरफ रवाना हो गए और शकरआरा घर वापस जाने की तैयारी में लग गई। पुरसा देने वालों का भी सिलसिला था, तीनों बच्चे घर में अकेले थे। यही सब खुलासा करती शकरआरा ने खुरशीदआरा की देवरानी से चलने की इजाजत मांगी और बहन से मिलने उसके कमरे में पहुंचीं। जहां सफेद साड़ी पहने खुरशीदआरा पलंग पर चुपचाप लेटी थीं! शकरआरा ने बहन का हाथ सहलाते हुए कहा।

"अच्छा! अब मैं चलती हूं। कल फिर आऊंगी। हां, अपना खयाल रखना।"

"आइएगा जरूर, आपा! अब मुझे नहीं भूलिएगा...देखिए, अब मेरे पास ऐसा कुछ नहीं रह गया हे जिस पर मैं गुरूर कर सकूं...न बेटे, न हसीन शौहर। मेरी मांग और कोख दोनों उजड़ चुकी हैं...सच, आपा। आपकी बहन आपसे हार गई। अब मुझे अपनी शिफकत से महरूम न करिएगा! आपके प्यार की मुझे हमेशा जरूरत रही है।" इतना कहकर खाली-खाली आंखों से खुरशीदआरा ने बहन की तरफ देखा।

"बस...बस, खुरशीदआरा, इस दिल को यूं न खरोंचो! मैं बहुत शर्मिंदा हूं।" इतना कहकर शकरआरा ने बहन के माथे को चूमा और रूमाल से आंखें पोंछीं और धीरे से कहा, "अपना खयाल रखना, नन्हीं।"

20

डॉक्टर कमाल के बाग का लोहेवाला गेट बजाते हुए किसी संस्था से चंदा मांगने आए लड़के ने आवाज लगाई, मगर जवाब नहीं मिला। पास से गुजरते हुए किसी ने कहा—

"आगे बढ़ो भैया, इस धर से चंदा-वंदा नहीं मिलने का।"

"क्यों?" रजिस्टर संभाले लड़के ने जिज्ञासा-भरे स्वर में पूछा।

"यह ठहरे नास्तिक लोग!" वह बात घुमा-फिराकर बोला।

"हर घर से कुछ-न-कुछ मिला है, फिर यह क्यों नहीं देंगे?" उसकी भवें सिकुड़ीं।

"तुम पहली बार यहां आए लगते हो, तभी इनके बारे में कुछ नहीं जानते।" राहगीर हँस पड़ा।

"अजीब बात है...नाम बड़े और दर्शन छोटे...इतनी बड़ी कोठी और कंजूसी इतनी!" उसने घृणा से होंठ सिकोड़ कंधे उचकाए।

"ऐसा ही कुछ है, तुम आगे बढ़ो! वरना फटकार के साथ हो सकता है, तुम्हें इनेमिया भी लगा दें। यह लोग सीधे मदद करने पर विश्वास रखते हैं।" कहते हुए वह राहगीर सब्जी से भरा झोला उठाए आगे बढ़ गया।

वह जवान लड़का खार खाई आंखों से कोठी को घूरता रहा, फिर जमीन पर थूककर आगे बढ़ा। उसकी इस अदा पर पेड़ के नीचे भुट्टा भूनता लड़का हँस पड़ा। उसकी आंखों का शरारत-भरा संकेत पा आस-पास बैठे लड़के बगल में हाथ डाल आवाज निकालने लगे। एक ने जोर से सीटी बजाई और एक 'ताक धिना-धिन ताक...' कहकर कमर मटकाने लगा। भुट्टेवाले लड़के को चुहल सूझी तो वह अपने को रोक नहीं पाया और आवाज दे बैठा–

"ओय बाबू इस मतवाले, झूमते मौसम में एक भुट्टा तो हमारे हाथ का खाते जाओ।"

"भुट्टा न सही, बरसाती अमरूद ही ले लेव...बोहनी तो कराओ!" अमरूद की छोटी-सी ढेरी के पीछे बैठा लड़का बोला।

"चुप बे!" चंदा मांगने वाला जवान झुंझलाकर डपटा और मुंह-ही-मुंह में गाली बकता अगले बंगले की तरफ बढ़ा, जहां उसके पहुंचने से पहले ही जंजीर में बंधा कुत्ता जोर-जोर से भौंकने लगा। वह बिचंका और पैर फिसलने से गिर पड़ा, इस पर लड़के जोर से 'हो...हो...हो...' करके हँस पड़े। खिसियाकर एकाध को लप्पड़ मारने के इरादे से आगे बढ़ा ही था कि पास से गुजरते किसी मजदूर ने पूछा, "बाबू, चोट तो नहीं लगी?"

"भाग बे।" जवान ने भीगा रजिस्टर उठाते हुए कहा। छोकरे बगलें बजा-बजाकर गा-नाच रहे थे–

ताक धिनाधिन ताक
ताक धिनाधिन ताक
जूता पॉलिश कर, आ मेरे काकू
पेट की खातिर तुम न कभी
हाथ फैलाना भालू
ओ मेरे मामू, बुरा न मानो चाचू
ताक धिनाधिन ताक
ताक धिनाधिन ताक

बादलों ने गरजना शुरू कर दिया था। बूंद पड़ते ही लड़के जोरों से नाचने-गाने लगे। भुट्टेवाला छोकरा भुने भुट्टे पर नमक-मसाला लगाता चीख रहा था—

ओ बाबू भोले-भाले!
भुट्टा तो खा ले।
बडा मिलेगा तीन रुपइय्या
छोटा मिलेगा दो रुपइय्या
ओ बाबू भोले-भाले!

बारिश तेज हो गई। भुट्टा खरीदते लोग भी लपककर दुकानों में घुस गए। चंदेवाला जवान भुट्टेवाले के पास जा तनकर खड़ा हो गया। फिर उसके सिर पर जोर की तड़ी जमाकर, पैर के जूते से जमीन पर पड़े अधजले कोयलों को लात मार बिखेर दिया और झोली में पड़े भुट्टों को आनन-फानन निकाल सड़क पर फेंककर वह तेजी से लपका और कुछ दूर खड़े स्कूटर पर बैठ, यह जा, वह जा। भुट्टेवाला छोकरा हक्का-बक्का रह गया। उसकी इस हरकत पर बाकी लड़के एक साथ चिल्लाते रह गए। कुछ उसके पीछे गाली देते भागे भी, मगर वह कब का आंखों से ओझल हो चुका था। भुट्टेवाला लड़का पेड़ के नीचे खड़ा गाल पर बह आए आंसुओं को पोछ रहा था। बाकी लड़कों के चेहरे भी उतर गए थे। बारिश तेज हो गई थी।



तेज बारिश की झड़ी में किसी ने दरवाजे की बेल बजाई। खुरशीदआरा ने जाकर दरवाजा खोला। सामने समीना पानी से सराबोर खड़ी थी। मां बेटी को देखकर खिल उठी। उसी हालत में गले लगाकर बोली, ''मेरी आंखें राह देखते-देखते थक गई थीं।''

''तो फोन कर लेतीं।'' समीना बोली।

''अरे, आंखें तुझे देखने को तरस रही थीं...चलो, बाल पोंछकर कपड़े बदल लो।'' बेटी को छोड़ वह जल्दी से तौलिया लेकर बेटी का सर पोंछते हुए बोलीं।

''घर से चली थी तो आसमान साफ था। बस, कार पार्क करके जैसे ही गली में दाखिल हुई, मोटी-मोटी बूंदें गिरने लगीं।'' समीना ने बताया।

''अब दोनो चैन से बतियाओ, हम चाय ले के आते हैं।'' बुआ ने कहा।

''सलाम! कैसी हैं बुआ नानी?'' समीना चहकी।

''मैं तो ठीक हूं बहिनी, तोहार अम्मा पूरे तीन दिन बुखार मा तपत रहीं!'' बुआ के पेट में घुमड़ती बात ज्यादा देर ठहर नहीं पाई।

''अच्छा, तो यह बात हमसे छुपाई गई।'' इतना कह समीना ने मां को नाराजगी

से देखा फिर वार्डरोब से कपड़े निकाले और बाथरूम की तरफ मुड़ी।

गरम-गरम चाय के साथ पकौड़े भी मेज पर रखे देख समीना ने भीगे कपड़े बाहर जाकर दालान में बधी अलगनी पर फैलाए और किचन में जाकर, बुआ के गरदन के चारों तरफ अपनी बांहें डालकर बड़े दुलार से अपना चेहरा उनके चेहरे से मिलाकर धीरे से कहा, "मेरी अच्छी बुआ नानी।"

"आओ समीना, चाय ठंडी हो रही है।" खुरशीदआरा ने पुकारा।

"चलो हटो! मुंहदेखी कहती हो।" बुआ ने कड़ाही से बची पकौड़ियां छानीं और प्लेट लेकर चलने को हुई।

"यह मुझे दें और आप आम की मीठी चटनी लाएं।" इतना कहती समीना प्लेट से एक गरम पकोड़ा उठा उसको कुतरती हुई खाने की मेज पर पहुंची।

"मैं भी कई दिन तक नजले-बुखार से डाउन रही। आप तो जानती हैं अम्मी, कमाल को, शहर के हर मोहल्ले में उनके चार-पांच घर निकल आते हैं। सामान पहुंचाने, उनको देखने के चक्कर में भीगी, कुछ थक भी गई थी पुराने सामान की छंटाई करने में...अम्मी आप भी सामान कुछ हलका कर लें, ताकि घर में ताजा हवा का गुजर हो।" समीना ने चाय का घूंट भरा।

'यहां इन कमरों में हर चीज का गुजर है। यहां रहते ही कितने लोग हैं?' खुरशीद ने दिल-ही-दिल में कहा।

"काम में न आने वाली चीजें बांट दें, कम-से-कम कोई इस्तेमाल तो कर लेगा।" समीना ने चाय का घूंट भरा।

"वाह बहिनी, इतने दिन बाद घर लौटीं तो सामान लुटाए की बात करत हो!" बुआ ने चटनी की शीशी मेज पर रखते हुए कहा।

"देखती हूं।" इतना कह खुरशीदआरा चुप हो गई। कैसे कहतीं कि इतना कुछ उनसे दूर चला गया है कि अब कुछ भी अपने से जुदा करते हुए वह डरती हैं। लगता है, वह तनहा होती चली जा रही हैं। घर सामान से भरा है तो लगता है, कुछ है जो अपनी जगह ठहरा हुआ है, वरना तो...

"कमाल के अस्पताल खोलने वाले प्रोग्राम का क्या हुआ?" खुरशीदआरा ने बात का विषय बदला।

"बातचीत तो हो रही है, अम्मी। बात फंड की है।" समीना बोली।

"हां, अपनी जिम्मेदारी पर बिना आमदनीवाला अस्पताल चलाना है तो मुश्किल काम, अल्लाह ने चाहा तो उसकी यह ख्वाहिश जरूर पूरी होगी। उसकी नेकियां उसकी मुश्किलों को जरूर आसान बनाएंगी।" खुरशीदआरा ने लंबी सांस खींची।

"आमीन।" बुआ ने झट से कहा।

"आप सबकी दुआए रहीं तो यह काम भी शुरू हो जाएगा।" समीना ने कहा।

"दुलहिन बी! बिटिया से पूछतीं काहे नहीं कि नवासा कब खिलाने को मिलिहे? हम तो कब्र मे पैर लटकाए बैठे हैं; फिर हमार गिनती भी का, आज मरे कल दूसर दिन।" बुआ बोल उठी।

"मरें आपके दुश्मन!" खुरशीद के मुंह से निकला।

"बुआ नानी, अब तुम खुट्टीवाली बात कर रही हो।" कुछ रूठे स्वर में समीना बोल उठी। अकसर यह सोचकर उसकी आखों की नींद उड़ जाती है कि कल बुआ न रहीं तो? क्या अम्मी कभी आकर उसके साथ रहना पसंद करेंगी? उस वक्त वह क्या करेगी...जब अम्मी मझले चचा के पास चली जाएंगी? फिर यह मकान? नहीं; अम्मी मकान छोड़कर कहीं नहीं जाएगी। कितना सब बुलाते हैं, मगर हँसकर टाल जाती हैं। बहुत जिद करने पर छोटे चचा से बोली थीं, "वह जहां छोड़कर गए हैं वहीं मैं रहूंगी। मुझ से ऐसी बातें न किया करो, जो मै मान न सकूं।"

कुछ देर कमरे में भय-भरा तनाव छाया रहा। सब अपनी भावनाओं में तैर रहे थे। सबको एक-दूसरे के छूटने का अनजान खौफ हरदम परेशान करता रहता है और जब यह सवाल सामने आन खडा हो जाता है तो उससे भागने का रास्ता भी किसी को नही सूझता।

इस सन्नाटे को खुरशीद ने तोडते हुए पूछा, "आपा कैसी हैं? अब तो उन्हें डिप्रेशन नहीं होता?"

"नहीं अम्मी! बड़ी अम्मी जिंदगी जीना जानती है। वह खुश रहना चाहती हैं इसलिए उसकी तरकीबें भी निकाल लेती हैं। आजकल उन्होंने क्लब जाना भी शुरू कर दिया है। अब्बी और वह लोगों से मिल-जुलकर जब घर लौटते हैं तो खुश नजर आते हैं!" समीना ने चाय की खाली प्याली रखते हुए कहा।

"हां, आपा हमेशा से जिंदगी का भरपूर मजा लेना जानती हैं। खुदा ने भी उन्हे खुशियां-ही-खुशियां दी हैं।" इतना कहकर खुरशीदआरा कुर्सी से उठीं और अंदर कमरे में गई।

"बुआ नानी, अब हम चलेंगे।" इतना कहकर समीना ने हाथ धोया।

"ठहरो, तनिक बदलू को अंदरसा लेने भेजा है।" बुआ बोलीं।

"अरे! जा रही हो क्या? कुछ देर और बैठतीं न?" खुरशीद ने बेटी की चलने की तैयारी देखकर कहा।

"अभी बारिश थमी है, मेरा निकल जाना ही बेहतर है। मैं जल्द ही फिर

आऊंगी। और हां, आप सामान छांटना न भूलिएगा।" इतना कह उसने मां के गाल का चुंबन लिया।

"ठीक है।" कहकर खुरशीद ने उसे गले लगाया, माथा चूमा। बुआ ने उसकी बलाएं लीं और गरम-गरम अंदरसे का लिफाफा थमाया, जो बदलू लेकर अभी-अभी घर में दाखिल हुआ था।

दोनों औरतें दरवाजे पर तब तक खड़ी गली में झांकती रहीं जब तक समीना ने रास्ता पार न कर लिया और उसकी कार की हेड लाइट चमककर सड़क की तरफ न मुड़ गई। लंबी सांस खींच खुरशीद अंदर आईं और बुआ ने दरवाजा बंद कर लिया।

घर में थोड़ी देर पहले जो जिंदगी उभरी थी वह फिर उदासी में डूब गई।

बारिश रुकने की वजह से सड़क पर काफी भीड़ थी। हर एक को घर जाने और काम निबटाने की जल्दी थी। कई वर्षो बाद इस तरह की बारिश हुई थी जिससे लोग खुश भी थे, मगर व्यावहारिक कठिनाइयों के चलते तंग भी हो रहे थे। सावधानी से गाड़ी चलाते हुए समीना घनी आबादी वाले इस इलाके से जल्द-से-जल्द निकलना चाह रही थी। हलकी फुहारें पड़नी शुरू हो गई थीं। ट्रैफिक भी बेकाबू-सी हो रही थी। पैदल और साइकिल वाले बदहवास-से सड़क पार कर रहे थे।

समीना जब घर पहुंची तो बरामदे की दीवारघड़ी ने उसको समय का ज्ञान करा दिया। वह पूरे डेढ़ घंटे में आधे घंटे का रास्ता तय कर पाई थी। वह थकन महसूस कर रही थी। घर में सन्नाटा था। इसका मतलब था कि बड़ी अम्मी और बड़े अब्बी अभी बाहर से लौटे नहीं हैं। आया मोढ़े पर बैठी मुंह खोले सो रही थी। गैस पर आलू उबल रहे थे। समीना ने आहिस्ता से जाकर गैस बुझाई और कमरे में पहुंचकर उसने सरदर्द की एक गोली मुंह में डाली। सेनफुनी का कैसेट लगा, रॉकिंग चेयर पर बैठ उसने आंखें बंद कर लीं। मां का चेहरा बार-बार आंखों के सामने कौंध रहा था। घर से लौटकर हमेशा उसका दिल उदास हो जाता है। इस घर में जितनी चहल-पहल है उतना ही उस घर में सन्नाटा है! और यह उदासी उसको बचपन के उन गलियारों में ले जाती है जहां उसने मां के मोटे-मोटे आंसू मोतियों की तरह उनके गालों पर लुढ़कते रात-दिन देखे थे।

"अरे आया, घर में अंधेरा क्यों कर रखा है? और हाशिम कहां है?" शकरआरा की आवाज लॉबी में गूंजी।

"जी, बेगम साहब...जरा-सी उंघाई आ गई थी।" आया हड़बड़ाकर उठी और गैस की तरफ लपकी, फिर स्विच ऑफ देख ट्रे में दो गिलास पानी लेकर बाहर निकली।

"हाशिम को बुलाना।"

"जी ओकि तबीयत जरा नरम रही, अपने क्वाटर मा है।" आया बोली।

''मौसम भी...खैर उसे बुलाइए, ताकि दवा या जो भी जरूरत हो उसको दी तो जाए। मलेरिया भी तो चारों तरफ फैला है।'' जमाल खां ने कहा और खाली गिलास रखा।

''खाने में क्या है?'' शकरआरा ने जूड़ा ढीला करते हुए पिनें निकाल मेज पर डालीं।

''आप आलू और पनीर के परांठे को कहे रहीं!'' इतना कह आया ट्रे उठा मुड़ी।

''हफ्ते में एक-दो दिन ही मैं तले या मसालेदार खाने का इंतजाम करवाती हूं, मगर कमाल को वह भी पसंद नहीं। आज खाने की मेज पर बैठते ही कहेगा, ओ नो, अम्मी, यह बरसात का मौसम है!'' शकरआरा यह कहकर उठीं और दीवार पर लगी टेढ़ी हो गई पेंटिंग को सीधा करने लगीं।

''समीना! कहां हो तुम? कमरे में अंधेरा क्यों कर रखा है?'' शकरआरा बहू के कमरे में झांकते हुए बोलीं।

''बड़ी अम्मी।'' समीना ने धीरे-से कहा।

''खैर तो है?'' शकरआरा ने कमरे में दाखिल हो बिजली जलाई।

''हां, बस बारिश में तो मजा नींद लेने का है।'' समीना ने आती हुई जम्हाई को रोका और खड़ी हो बोली, ''शाम कैसी गुजरी?''

''हमेशा की तरह अच्छी, बस आज नए आए डी.एम. की बीवी जरा...'' इतना कह शकरआरा मजाक उड़ाने वाले अंदाज से हँसीं।

''ट्रांसफर होकर आई कहां से हैं?'' समीना ने पूछा।

''जो उनकी हरकतें थीं, वे इतनी बनावटी और ओछी थीं कि किसी ने उनसे कोई बात ही ज्यादा नहीं की। बस, वह बैठे-बैठे हमें अपने मुखतलिफ पोज दिखाती रहीं। इत्तफाक से उनका फिगर सही था!'' शकरआरा खिलखिलाकर हॅस पड़ीं। फिर कमरे का जायजा लेती हुई बोलीं, ''यह तुम्हारे परदे कुछ पुराने नहीं लग रहे हैं?''

''नहीं अम्मी, बरसात की वजह से आपको फीके लग रहे हैं।'' समीना बोली।

''इन्हें बदलो, बड़ी डिप्रेसिंग लुक है इनकी...बरसात में तो रंग-बिरंगे फूलों या फिर कोई ब्राइट रंग के परदे होने चाहिए। यह गर्मियों के लिए ठीक है।'' शकरआरा ने कहा।

''मैंने तो कभी सोचा ही नहीं था, बड़ी अम्मी! रियली! इट मैटर्स। मैं अगली बरसात में जरूर परदे बदलूंगी!'' समीना बोली।

''कमाल को फोन करो कि घर लौटने में ज्यादा देर न करे, आज हम जल्दी सोना चाह रहे हैं।'' इतना कह शकरआरा कमरे से निकलीं।

समीना ने कमरे का दरवाजा बंद किया और बिस्तर पर लेट परदे पर एक नजर डाली।



खुरशीदआरा बेटी के जाने के बाद काफी देर तक चुप-चुप रहीं, फिर उठकर वार्डरोब की तरफ बढ़ीं। जमीर अब्बास के कपड़े खानों में सजे थे। उनके कद और चौड़े सीनेवाला कोई दूसरा भाई नहीं था। यह कपड़े उनके बदन पर पहनने से झूल जाते इसलिए वैसे-के-वैसे आज भी रखे हैं। कुछ देर गहरी सांस लेती खुरशीद अलमारी का पट खोले खड़ी रहीं, फिर भरे मन से पट बंदकर उन्होंने अपनी अलमारी खोली। रंगीन कीमती साड़ियां हैंगरों में टंगी थीं। सेफ खोला, उसमें कुछ हलके सेट रखे थे। नीचे खाने में सैंडिलें कतार से रखी थीं। दूसरे खानों में सलवार-सूट भरे हुए थे।

"इन्हें मैं छांट सकती हूं। समीना सच कहती है, ये कपड़े रखकर मैं क्या करूंगी!"

कपड़े फैला खुरशीद हर सूट के साथ पुरानी यादों के जाल में फंसती चली जा रही थीं। कुछ कपड़ों को सूंघती, उन पर हाथ फेरतीं जैसे जमीर अब्बास के लम्स को तलाश कर रही हों। रेशमी सूट, कामदानी से भरे दुपट्टे, कढ़े कुरते, देखकर दिल चाहा कि समीना से कहे, वह खुद इन कपड़ों को पहनकर सुआरथ करे, मगर बहन के तेवर से डरती थीं, इसलिए इस खयाल को जेहन से झटक दिया। दोनों देवरानियां भरे-भरे बदन की थीं। उन्हें यह कीमतीं सूट देना बेकार था। आखिर दिल पर पत्थर रख उन्होंने अपनी यादों की गठरी बनाई और कमरे के कोने में रख दी। अलमारी के कई खाने उनकी जिंदगी की तरह खाली हो चुके थे। उन्होंने अलमारी बंद की और बाथरूम में जाकर आंखों पर छींटें मारीं। कभी-कभी आंखें इतना जलने लगती हैं कि लगता है, राख हो जाएंगी।

कमरे की खिड़की का परदा उन्होंने हटाया। गली में सन्नाटा था। लैंप पोस्ट की रोशनी में बरसात का भरा पानी चमक रहा था। आसमान पर चांद था, मगर बादलों से आंख-मिचौली खेलता हुआ। काले, गहरे झीने बादलों से कभी उसका मुंह ढक-खुल रहा था। पेड़ों से पानी की बूंदें अभी भी गिरती रोशनी में चमकती कभी-कभी दिख जाती थीं। गली के कोने में दो पिल्ले एक-दूसरे से चिपटे कूं-कूं कर रहे थे। मां शायद खाने की तलाश में घूरे पर कुछ खंगालने गई होगी। काफी देर तक खुरशीदआरा खिड़की से लगी बाहर ताकती रहीं। उनके जेहन में घुमड़ती पुरानी यादों का सिलसिला मिटा नहीं था। इस वक्त भी वह जमीर अब्बास की मौत की खबर मिलने और उनके बगैर जीने के कसक में डूब-उतरा रही थीं।

जमीर अब्बास की मौत ने जहां सब कुछ छीना था, वहीं पर बहन की जबान

पर लगाम लगा दी थी। उस दिन के बाद से आज तक शकरआरा ने जान-बूझकर उनका दिल नहीं दुखाया था। अनजाने में आदत के चलते जबान फिसल जाती हो, जिसका अंदाजा उन्हें भी न हो, ऐसी बातों का मलाल खुरशीदआरा को नहीं होता था। उन्हें तो इस बात का पता चल गया था कि बहन को अपने कहे जुमलों का बहुत अफसोस रहा। अफसोस न होता तो वह सैवुम की रात दर्द से तड़पकर न गुजारतीं। उन्हें बेहद पशेमानी थी। उनके जिगर को सहलाने वाला मियां भी उस रात उनके पास न था। सास की मौत भी उन्हें गुनाह का अहसास दिला रही थी। इसी कैफियत में बाथरूम में उनका पैर फिसला और वह फर्श पर औंधी गिर पड़ीं और सातवें महीने ही सफिया दुनिया में आ गई थी। इस दर्दनाक हादसे के बारे में रो-रोकर उन्होंने खुद छोटी बहन के सामने इकरारे-जुर्म किया था और यह बात भी पहली बार जबान से निकाली थी कि जब अब्बा मेरी बेजा हरकतों पर गुस्सा करते थे तो अम्मा हमेशा उन पर बरस पड़ती थीं। काश! अम्मा उस वक्त मुझे मारतीं, मुझे सुधारतीं तो आज मैं इतनी घमंडी और खुदसर न होती।

उस तकलीफ से भरे दिनों में खुरशीदआरा बहन के लिए तड़प-तड़प उठती थीं, मगर 'इद्‌दत' में रहने की वजह से घर के बाहर कदम नहीं निकाल सकती थीं। उसी में दोनों भानजियों को खसरा निकल आई। खुदा ने आफतों का पहाड़ एक के बाद एक गिराकर शकरआरा को हिलाकर रख दिया था। जमाल खां मां का गम संभाले घर की परेशानियों को हल करने में लग गए। उस वक्त राबिया की मां ने घर को काफी हद तक जाकर समेटा था। सारे दिन अपनी दूधपीती बच्ची को छोड़, बड़की-मझली के सिरहाने बैठी, नीम की शाख हिलाती रहती थी। इस सेवा के इनाम में जमाल खां ने उसके मियां की नौकरी लगवा दी थी। 'इद्‌दत' के दिन पूरे हो जाने के बाद खुरशीद बहन के पास गई थीं। सफिया की हालत काफी सुधर गई थी। सतवांसी औलाद को पालने में शकरआरा को छठी का दूध याद आ गया था। उन दिनों वह तीन-चार दिन बहन के पास रही थीं। उनकी जी-जान से खिदमत की थी। ताकतवर चीजें पकाकर खिलाई थीं। जमाल खां भी साली से हँसी-मजाक कर अपने दिल का बोझ हलका कर लेते थे।

"अरे दुलहिन बी, रात के दस बज रहे हैं! अब तो बहिनी कुछ खाय लो?" बुआ ने खुरशीदआरा से कहा।

"भूख बिलकुल नहीं है, बुआ।"

"तुम्हारे यह लच्छन मोहे कभी न भाए...शुक्र करो लड़की शहर में ब्याही है जो हफ्ता-दस दिन में अपना मुखड़ा दिखाय जात है, अगर दिल्ली मा ब्याहतीं तो तरस जातीं...बजाय खुश होने के उसको देखकर हमेशा गम में डूब जात हो, एको कहते हैं नासुकरापन! चलो, कुछ खाय लो तो हम भी एक-दुइ लुकमा निगलें।" बुआ

ने खुरशीदआरा को समझाया।

बुआ की इस तरह की दुलार-भरी फटकार सुन खुरशीदआरा मुस्करा पड़ीं और खाने की मेज पर आकर बैठीं। अभी पहला लुकमा ही तोड़ा था कि एकाएक रुलाई आ गई। यह मेज कभी बैठने वालों के लिए छोटी पड़ती थी। आज वह अकेले बैठी रोटी-सब्जी खा रही हैं? उन्हें अपने दोनों गुजरे लड़कों के चेहरे याद आ गए। दुपट्टे से उन्होंने उबलते आंसुओं को रोका और कौर निगला। उसी वक्त बादल जोर से गरजा और बिजली चमकी।

"अल्लाह! कहीं बिजली गिरी है, दुलहिन बी!" बुआ ने कान पर हाथ रख कहा।

"हां!" किसी तरह खुरशीदआरा ने जवाब दिया। बाहर मूसलधार बारिश गिरने की आवाज आ रही थी। गली में किकियाते पिल्ले अब जोर-जोर से रो रहे थे।

21

आज धूप के कारण उमस गजब की थी। कई दिनों से बारिश नहीं हुई थी। बरसात से भीगी काई-लगी दीवारें चटक धूप में थोड़ा-थोड़ा सूखने लगी थीं। काई-जमे छज्जों पर छाए गुड़हल के पेड़ों पर खिले लाल फूल आंखों में चुभ-से रहे थे। सड़क और गलियों में घूमते आवारा छोकरों के मैल और धूल-जमे चेहरे बरसात में धुलकर अपने असली नैन-नक्श. दिखा रहे थे। जामुन खाने से उनके होंठ और जबान उन्नाबी रंग के हो रहे थे, जिसकी उन्हें परवाह न थी। उनका पेट भर रहा था।

उमस से परेशान दुकानदार माल बेचने में व्यस्त थे। मौसम के चलते कभी-कभी न चाहने पर भी ग्राहकों से भिड़ंत हो जाती थी। खासकर तब जब खरीददार राबिया की मां की तरह चर्बजबान हो और एक की जगह दस सुनाने वाला हो। मंगलू का मिजाज काफी बिगड़ा हुआ था। वह पीछे गद्दी पर जाकर बैठ गया और छोकरे से कहा कि वह ग्राहक निबटाए। सामने वाले खोखे से चाय आ गई थी। मंगलू चाय पीता हुआ सोच रहा था कि राबिया की मां से बहस में उलझने की उसको क्या जरूरत आन पड़ी थी? है तो वह कंकाला औरत! किसी की भी इज्जत भरे बाजार में उतारने में उसको मिनट-भर लगते हैं और उसकी लौंडिया! वह तो मां की नाक एक दिन काटकर रहेगी। मां के जाने के बाद सिंगार-पटार कर दुकान-दुकान बेमतलब घूमेगी या फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े हो दाएं-बाएं झांकेगी, जैसे किसी की बाट जोह रही हो। भगवान् करे किसी के साथ भाग जाए तो इस मोहल्ले का पाप कटे।

“कहो मंगलू उस्ताद, आज कैसे सुस्त बैठे हो?” पास से गुजरते रहमान बढ़ई ने जुमला उछाला।

‘तेरी माई की बाट जोह रहे हैं।’—मन-ही-मन मंगलू बोला मगर ऊपर से उसने खीस निपोरते हुए हाल-चाल पूछा।

“लगत है, केही से टक्कर बहुत धांसू होय गई है।” रेडीमेड कपड़ा बेचनेवाले सोहन ने बाईं आंख दबा धीरे से कहा और बीड़ी का कश लिया।

“काहे बोलकर अपनी जान सांसत मा डालत हो? अभी जो सुन लिहें लालाजी तो यहां खड़े भी न हो पइयो।” मोची ने टूटी चप्पल सिलते हुए कहा।

“थोड़ी छेड़छाड़ तो जीवन का नमक है रे!” रामू भड़भूजे ने बालू से भुने दाने चालते हुए कहा।

“वह देखो, सामने से आय रही है ‘नौटंकी’ साली!” कल्लू हलवाई के कहने पर सबकी आंख सामने की तरफ उठ गई।

“दोय घंटे की छुट्टी। अब मजे से बायस्कोप देखो!” सोहन ने जेब से कंघा निकाल बालों में फेरते हुए कहा।

मंगलू ने दूर से आती राबिया को देख मुंह बिचकाया और पिच से नाली में थूक दिया। राबिया ऊंची हील की सैंडिल पहने, पानी-कीचड़ से बचती-बचाती, बड़ी अदा से सर पर दुपट्टा बार-बार ठीक करती आगे बढ़ रही थी। पास से एक लड़का तेजी से साइकिल पर गुजरा और कीचड़ की छींटें उड़ीं, जिससे बचने के लिए राबिया बिचकी तो संतुलन बिगड़ा और सैंडिल की ऐड़ी मुड़ने से वह सीधे कीचड़-भरे गड्ढे में आन गिरी। उसका यह हाल देख एकाएक सारे दुकानदार उसे उठाने एक-साथ लपके, फिर एक-दूसरे को कनखियों से देख रुक गए। बेचारी राबिया एकाएक समझ नहीं पाई कि उसके साथ क्या घटा और अब वह इस कीचड़ से कैसे उठे। तभी एक रिक्शेवाला सवारी उतार खाली जा रहा था। राबिया को देख पूछ बैठा, “कहां जाए का है?”

राबिया ने खिसियाई नजरें उस पर डाली फिर उठने की कोशिश की। सारा कपड़ा.कीचड़ से लथपथ था। उसकी आंखों में आंसू आ गए, मगर वह किसी तरह रिक्शे पर बैठने के लिए पैर उठा ही रही थी कि रिक्शेवाला बोला, “महतारी, पहले किराया तय कर लेव...वैसे भी हमका रिक्शा धोवे का पड़ी सो किराया डबल लगी।”

“चल, रिक्शा आगे बढ़ा!” क्रोध से भनभनाती राबिया रिक्शे पर बैठ उसका हुड उठाने लगी।

“तुम बैठी रहो, हम उठावत हैं।” कहता हुआ रिक्शेवाला ब्रेक लगाकर मुड़ा और हुड उठाकर बोला, “किस मोहल्ले चलना है?”

"बस सीधे चलकर पहली बाईं गली में मुड़ जाना।" इतना कह राबिया ने कैसेटवाली दुकान पर बैठे लड़के की आंखों में नाचती हँसी देखी। उसके गाल तमतमा उठे।

"बस, बस, यहीं रोको।" कहती हुई राबिया अपने पायंचे झटकने लगी।

"किराया तो सच मानो रुपया भवा, मगर महतारी, हम लेबय पांच रुपइय्या। देखो गद्दी का कबाड़ा होय गवा, सुबह धोय-चमकाकर निकले रहे।" रिक्शेवाला बोला।

"ले मर।" कीचड़ से सने पर्स से दस का नोट निकाल राबिया ने कहा।

"छुट्टा तो न हुइए हमारे पास।"

"वह भी ले जा!" कहती हुई राबिया रिक्शे से उतर, घर के सामने पड़े पत्थर पर खड़ी हो पर्स से चाबी निकालने लगी। मोहल्ले के एक आवारा लड़के ने उसकी यह हालत देख आंख मारी तो राबिया ने खूंखार नजरों से उसे घूरा और ताला खोलकर, घर में दाखिल हो उसने दरवाजा दुगुनी आवाज से बंद किया।



राबिया की मां के दिमाग से कोठी में रहने का नशा अभी उतरा नहीं था। उन्हें विश्वास था कि बेगम साहिबा पर उसके अहसान थे, इसलिए उनके इंकार की गुजाइश न थी। सुबह-सुबह वह इसी नीयत के साथ घर से निकली थी कि कमरा लेकर रहेंगी। वहां रहने के दो फायदे थे—एक तो राबिया का किसी बड़े पैसेवाले घराने में ब्याहने का ख्वाब पूरा होगा और दूसरी तरफ, घर का खर्च न के बराबर हो जाएगा। ऊपर से आमदनी अलग होगी। बचत से वह मनमर्जी से जी पाएंगी।

यही सब सोचती जब वह बरामदे की सीढ़ियां चढ़ती बेगम साहिबा के कमरे की तरफ बढ़ने लगीं तो हाशिम ने उन्हें बीच में रोकते हुए कहा, "बेगम साहब बाजार गई हैं, घंटे-भर बाद आएंगी।"

"ठीक है। मैं यहीं बैठकर इंतजार करती हूं।"

"तुम्हारी मर्जी!" कहता हुआ हाशिम मेज-कुर्सी की डस्टिंग करने लगा। राबिया की अम्मा बरामदे के दर पर खंभे से पीठ लगाकर बैठ गईं और बटुआ खोल कत्था, डली और सौंफ निकाल फांकने लगीं। फिर चुनौटी खोल उंगली से चूना निकालकर चाटा।

"अब उगलदान समझ क्यारी में पीक की पिचकारी न मारना!" हाशिम ने उनकी यह बेतकल्लुफी देख चिढ़कर कहा।

"कोठी के कायदे-कानून हमें न सिखाओ। तुम यहां पर तीन साल से हो मगर हमारा बेगम साहब से नाता बरसो पुराना है। जब कमाल मियां कुल पाच-छः साल के थे।" राबिया की मां ने दोनों पैर सामने फैलाते हुए कहा।

"हां, हां, जानते हैं, सब। मगर अब कमर सीधी करने के बहाने सो न जाना। यह पंखा तो मैंने अपने लिए चलाया था। अब बद कर अंदर जा रहा हूं।" यह कह हाशिम गुनगुनाता हुआ अंदर चला गया।

उसकी इस बात को सुन राबिया की मा एकाएक कुछ जवाब न दे पाई, मगर खौलकर रह गई। पैर समेटकर उन्होंने मन-ही-मन इतना तो जरूर कहा—'बहुत जबानदराज नौकर है। इसकी छुट्टी तो अब इस घर से होनी बहुत जरूरी है।'

घड़ी ने ग्यारह बजाए। धूप बरामदे की सीढ़ियो तक पहुंच गई थी। उमस बढ़ गई थी। राबिया की अम्मा का गरमी के मारे बुरा हाल था। बार-बार माथे से पसीना पोंछती, आंचल से हवा करती वह गेट पर नजरें गड़ाए हुई थीं। लगभग दो घंटे बाद, बेगम साहिबा की कार अंदर दाखिल हुई। उस वक्त राबिया की अम्मा ऊंघ रही थीं। हॉर्न की आवाज सुन हड़बड़ा गई। बेगम को उतरते देखकर झटपट खड़ी हुई और सर पर दुपट्टा बराबर करती हुई सलाम करने लगी।

"अरे, राबिया की मां! तुम कब आई?" शकरआरा ने पूछा।

"यही दो-ढाई घंटे पहले।" राबिया की मां ने कहा।

"चाय-पानी कुछ पिया?" शकरआरा यह कहती आगे बढ़ीं।

"पंखा चलाने पर तो मियां हाशिम की पाबंदी थी, पानी की बात तो दूर रही, बेगम साहब...इस उमस में तो जी हलकान होकर रह गया।" मन का दुःख जबान पर आ गया।

"चलो, अंदर चलो...हाशिम, जल्दी से राबिया की मां के लिए नींबू का शरबत लेकर आओ...और सुनो...क्या कहने जा रही थी...भूल गई।" शकरआरा बेगम पर्स झुलाती अपने कमरे में दाखिल हुई। ए.सी. का बटन दबा, उन्होंने रूमाल से गरदन पर आए पसीने को पोंछते हुए धीरे-से कहा, "उफ, मैं तो मर गई।"

"बिजली को गए आधा घंटा से ज्यादा हो रहा है।" हाशिम ने पंखे का स्विच दबाया।

"इनवरटर न हो तो यह कमरा जहन्नुम की तरह गरम हो उठता है।" शकरआरा ड्रेसिंग रूप की तरफ बढ़ीं।

"पियो न...शरबत काहे नहीं पी रही हो? मैंने उसमें केवड़े की बूंद भी टपका दी है।" हाशिम इतना कह कमरे से बाहर निकला। राबिया की अम्मा उसकी तरफ

देखे बिना मेज पर पड़ी अंग्रेजी की मैगजीन के पन्ने पलटने लगीं, मगर दिल-ही-दिल में पेंचताव खाती हुई सोच रही थीं—'वह दिन दूर नहीं जब खस का शरबत तेरे हाथ से पिऊंगी...बस मुझे मौके की तलाश है।'

"और सुनाओ, राबिया की मां! कैसी कट रही है?" शकरआरा हलके कपड़े का फूलदार कफतान पहन ड्रेसिंगरूम से बाहर निकलती हुई बोलीं।

"सब आपकी दुआ और खुदा का करम है।"

"शरबत पियो वरना गरम हो जाएगा।" इतना कह वह सोफे से उठीं और सामने की अलमारी खोलकर, उसमें से एक पैकेट निकालकर लौटीं।

"पिछले दिनों चौक गई थी। वहां यह सूट राबिया के लिए पसंद आया तो मैंने खरीद लिया था। कहीं उसकी बात ठहरी?"

"न कहीं।" बुरा-सा मुंह बनाकर वह बोलीं।

"तुम्हारे मौलवी साहब क्या कर रहे हैं? कोई दुआ-तावीज लेती क्यों नहीं हो?" मजाक के स्वर में शकर ने कहा।

"मैं तो आपकी बहू-बेगम के लिए तावीज लिखवाना चाहती हूं।"

"न...न...यह सब न करना! इस घर में इन बातों पर किसी को यकीन नहीं है। ऊपरवाला सब देखता है। वही सब अंजाम देने वाला है।" शकर ने अपना जूड़ा खोला। बड़े-बड़े बाल खुलकर कमर के नीचे तक लहरा गए।

"मगर खुदा 'वसीला' भी तो लगाता है।" राबिया की मां मौलाना की जबान बोली।

"वह तो सब ठीक है, मगर राबिया की अम्मा! जब यकीन नहीं तो फिर बेअदबी करने से क्या फायदा? तावीज कोई पहनेगा नहीं। बड़े साहब के कानों तक बात पहुंची तो बेकार का हंगामा हो जाएगा, इसलिए हमें तो इन बातों से दूर रखो।" शकरआरा ने सख्त लहजे से कहा।

"जैसी आपकी मर्जी।" कहकर राबिया की मां ने पैकेट से कपड़ा निकाला।

"सलवार थोड़ी बड़ी है। राबिया काटकर अपने नाप की कर लेगी।" शकरआरा बोलीं।

"वाह! आपकी पसंद की तो दाद देनी चाहिए...मेरी तो आंखें ही फट गईं, बेगम साहिबा। यह कपड़ा तो सिल्क जान पड़ता है...ऊपर से यह काम? इतना म कपड़ा, वह भी उस यतीम लड़की के लिए...हम गरीबों का आप कितना खयाल रखती हैं।" राबिया की अम्मा चापलूसी-भरे स्वर में बोलीं।

"यह सब कहने की क्या जरूरत है।" शकरआरा ने उलझकर कहा।

राबिया की अम्मा की समझ में नहीं आ रहा था कि इतने शानदार कपड़े को पाने के बाद वह किसी मुंह से कमरे की बात करे? उस दिन भी कहते-कहते बात जबान पर आकर रुक गई थी और आज मौका नहीं मिल रहा है।

"कुछ परेशान-सी लग रही हो! सब खैरियत तो है?" शकरआरा ने उनके चेहरे पर बदलते भावों को देखकर पूछा।

"हां, हम गरीबों की क्या खैरियत पूछती हैं? मकान मालिक परेशान कर रहा है।" वह मुर्दा-से स्वर में बोली, फिर ठंडी आह भरी।

"मगर पहले तो ठीक था?" शकरआरा ने ताज्जुब से पूछा।

"मकान मालिक तो बेगम साहब, गिरगिटान की तरह रंग बदलते हैं...घड़ी में तोला, घड़ी में माशा...जवान लड़की का साथ है। बिना बाप की बच्ची है। जवान हुई नहीं कि हर मददगार हक जताने बैठ जाता है! अब क्या कहूं आपसे...मेरी राम-कहानी तो लंबी है, बस मुख्तसर कहूं तो बात इतनी कि घर की तलाश में हूं...शरीफों के पहलू में रहना चाहती हूं, ताकि यह बेवगी बेदाग कट जाए और लड़की की डोली उठ जाए।" बड़े दर्द-भरे स्वर में वह बोलीं।

"यह तो है।" शकरआरा का चेहरा उसकी बात सुन बदल गया।

"अब आप अगर अपने घर में ठिकाना दे देतीं तो हम मां-बेटी आपकी खिदमत कर उमर गुजार देते।" लोहा गरम देख राबिया की मां ने हथौड़ा मार दिया और आंखें झुका लीं।

कमरे में कुछ पल खामोशी छाई रही।

"मैं शर्मिंदा हूं। छोटा मुंह बड़ी बात कह गई।" लंबी खामोशी को खुद राबिया की अम्मा ने तोड़ते हुए कहा।

"नहीं, नहीं, मैं तुम्हारी परेशानी को लेकर ही सोच में पड़ गई थी। सर्वेंट क्वार्टर के नाम पर तीन ही कमरे हैं। एक में आया रहती है। दूसरे में हाशिम और तीसरे में कमाल का स्टोर है, जहां माली बेचारे की खाट भी पड़ी है। न स्टोर खाली हो सकता है और न ही हाशिम को बाहर रहने को कह सकती हूं। इसका बाप बचपन से हमारे साथ रहा है। अब ऊंचाहारवाले मकान की देखभाल के लिए वहां है। अब रहा आया का मामला तो वह मरते दम तक हमारे साथ रहेंगी। इस बुढ़ापे में उन्हें दर-बदर करना शराफत नहीं है। इसी सोच में थी कि तुम्हें ठिकाना दूं तो कहां दूं?" शकरआरा ने परेशान-सी हो कहा।

"वह जो कमरा मेहमानखाने के पास खाली है, वह..." अपने को रोक न पाई

राबिया की मां और दिल की बात कह डाली।

"वह कमरा...?" शकरआरा के चेहरे के तेवर बदल गए। उन्होंने बड़ी अजीब नजरों से राबिया की मां को घूरा।

राबिया की मां की जान निकल गई और धीरे से बोलीं, "मैंने तो बस..."

"हमारे यहां नौकरों को घर के अंदर रखने का रिवाज नहीं है, राबिया की अम्मा!" इतना कह शकरआरा अपनी जगह से उठीं और कमरे से बाहर निकलती हुई बोलीं, "अच्छा राबिया की मां, तुम चलो, मुझे जरा कुछ काम है।"

"जी बेगम साहिबा...आदाब।" राबिया की मां ने झोला उठाया और दुम दबाए-दबाए कमरे से बाहर निकलीं और पछताती-सी बरामदे की सीढ़ियां उतरते हुए सोचने लगीं—'सच कहा है किसी ने कि लालच बुरी बला है। मैं भी अपनी दीवानगी में कुछ ज्यादा बोल गई। बेगम साहिबा क्या सोचती होंगी कि फटे जूते की तरह मैंने पूरी जबान बाहर निकाल दी! अल्लाह मेरी तोबा!'

अभी लोहे का दरवाजा खोल राबिया की मां बाहर निकल ही रही थीं कि समीना की कार दरवाजे के पास पहुंच गई। उसकी नजर राबिया की मां पर जो पड़ी तो उसके दिमाग में घंटी बज उठी कि हो न हो, यह कमरे की तलाश में ही यहां आई होंगी। राबिया की मां ने झुककर आदाब किया और एक तरफ हटकर खड़ी हो गई। समीना ने उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया और कार लेकर अंदर बढ़ी।

राबिया की मां दो पल खड़ी रहीं, फिर लंबी सांस ले, वह झोला उठाए सड़क पारकर दूसरी तरफ खड़े रिक्शे की तरफ बढ़ीं।

हाशिम बाजार से कुछ खरीदकर लौट रहा था। राबिया की अम्मा पर जो नजर पड़ी तो शरारत सूझी। पास पहुंचकर बड़े गंभीर स्वर में बोला, "खाला, खाना खा के जातीं।"

"तू अपनी मां-बहिनी को जाकर खिला, मूंड़ीकटे!"

रिक्शेवाला कोसना सुनकर चौंका। उसने पहले हाशिम का फिर राबिया की अम्मा का मुंह देखकर कहा, "जाओ, अम्मा जाओ। आराम से खाना खाओ, तब तक हम यहां खड़े हैं।"

"तेरा दिमाग फिर गया है क्या? जाओ, अम्मा जाओ...जैसे वहां तेरे दावत-ए-वलीमा का दस्तरख्वान बिछा है...चल, हट सामने से निगोड़े।" राबिया की अम्मा बिना रिक्शा किए पैदल ही फुटपाथ पर चलती हुई आगे बढ़ने लगीं।

"भलाई का जमाना नहीं।" रिक्शेवाले ने पैडिल पर पैर मारा और तेजी से रिक्शा चलाता हुआ आगे बढ़ गया। हाशिम अपनी हँसी दबाए घर की तरफ बढ़ा मगर दरवाजे

में दाखिल हो वह राबिया की अम्मा की तरफ देखना नहीं भूला जो हवा में हाथ नचा-नचाकर कुछ बकती-झकती आगे बढ़ रही थीं।



समीना कपड़े बदल खाने की मेज पर बैठ चुकी थी। अब्बी एक हफ्ते के लिए मुस्तफाबाद गए हुए हैं। शकरआरा के आते ही समीना ने उन्हें टटोलती नजरों से देखा ताकि कहानी का शीर्षक पढ़ सके, मगर शकरआरा का चेहरा सपाट था। दोनों ने अपनी-अपनी प्लेटों में खाना निकाला और कौर तोड़ने लगीं।

समीना ने खाना खाते-खाते कहा, "अब्बी नहीं रहते तो खाने का मजा आधा हो जाता है, बड़ी अम्मी।"

"यह तो है। उनके लतीफों से घर गुल व गुलजार बना रहता है। फिर यही तो एक वक्त होता है जब सारा घर इकट्ठा मेज पर उन्हें नजर आता है।"

"इस बार जाड़े की छुट्टियों में मुस्तफाबाद होकर आते हैं।" समीना बोली।

"सोच तो मैं भी रही हूं। खासकर कमाल का जो मनसूबा है अस्पताल खोलने का, उस सिलसिले में मैं जायदाद का अंदाजा लगाना चाहती हूं।"

"मैं समझी नहीं, बड़ी अम्मी!" समीना ने सास को गौर से देखा।

"बेकार में खेत, बाग, तालाब पड़ा है। किसको फुरसत होगी वहां जाने की? मै जाती नहीं, तुम दोनों की दिलचस्पियां दूसरी हैं। जमाल भी कब तक इस तरह जाते रहेंगे? अच्छा है, उन पैसों से अस्पताल तामीर हो जाए!" लापरवाही से कंधे उचका शकरआरा बोलीं।

"मगर अम्मी, यह बात अब्बी को पसंद नहीं आएगी।" समीना के मुंह से निकल गया।

"उनको मेरी बहुत-सी बातें पसंद नहीं आती हैं, मगर बच्चों की ख्वाहिशों का तो उन्हें ध्यान रखना होगा।" शकरआरा का लहजा तेज था।

"जैसा आप मुनासिब समझें।" इतना कहकर समीना खामोश हो गई।

"हाशिम, रसीदें लेकर मेरी साड़ियां ड्राईक्लीनर के यहां से ले आना और जो तस्वीरें प्रिंट हो गई हों, वह भी..." शकरआरा ने हाथ धोते हुए कहा।

"जी!" हाशिम ने प्लेटें समेटीं।

"मैं लौटते वक्त उठाना ही भूल गई। चौक जाकर तो वैसे भी मैं घबरा जाती हूं। इतना शोर, भीड़, गरमी; पता नहीं लोग अपने घरों में इस हंगामे के साथ रहते कैसे हैं?" शकरआरा ने उलझते हुए कहा।

"सब आदत की बात है, बड़ी अम्मी।" धीमे-से समीना बोली।

"अच्छा, वह तुम्हारी ब्यूटीपार्लरवाली लड़की का क्या हुआ?" एकाएक शकरआरा पूछ बैठीं।

"क्यों?" समीना चौंकी।

"अरे, जब बात मुंह से निकली है तो उस बात को पूरा भी तो करना चाहिए।" शकरआरा ने सहज-सा उत्तर दिया।

"ठीक है।" समीना ने गिलास उठाते हुए सास का चेहरा देखा, मगर कुछ भी नहीं पकड़ पाई। जब नहीं रहा गया तो आखिर उसने पूछ ही लिया, "यह राबिया की मां क्यों आई थीं? कहीं राबिया बीमार तो नहीं पड़ गई?"

"अरे नहीं, वह मकान की तलाश में हैं।" शकरआरा ने टालते हुए कहा।

"यहां?" समीना ने कुरेदने के लिए पूछा।

"शायद..." शकरआरा बहू के चौंकने पर मुस्करा पड़ीं, फिर धीरे से बोलीं, "मुझे बड़ी अजीब लगी उसकी आज की बातें...खैर छोड़ो। तुम उस लड़की को फोन कर दो, ताकि वह भी आकर कमरा देख ले। जो सजावट करानी होगी उसका काम शुरू हो जाए।"

समीना ने उनकी मुस्कराहट से अंदाजा लगा लिया कि वह कुछ बताने वाली नहीं हैं, मगर क्या यह कम खुशी की बात थी कि राबिया की अम्मा का जादू उसकी सास पर इस बार नहीं चल पाया!

22

कमाल जिस मूड में घर से निकला था, उसने मन के तानपूरे के तारों को छेड़ दिया था। पानी की गिरती बूंदें और ठंडी बरसाती हवा उसके मन को लुभा रही थीं। सब कुछ अपना-अपना-सा लग रहा था। बस के शीशे के पार गिरती मूसलधार बारिश में नहाए पेड़ों को देखकर डॉ. जेवियर के मुंह से बार-बार निकल उठता था—

"फैंटास्टिक वेदर! व्हाट ए ब्यूटी! माई गुडनेस!" आम से लदे पेड़ को देखकर वह बच्चों की तरह उछल पड़ा।

'बेटा! यह सारी मस्ती तेरी कुछ देर में ही खत्म होने वाली है जब बाढ़ देखेगा।'—कमाल ने मन-ही-मन हँसते हुए कहा और बाहर के दृश्य के बहाने अपने अंदर गिरती बूंदों की बौछारों की लय को सुनने लगा।

उसे समीना का सांवला चेहरा बार-बार याद आ रहा था। उसकी दोनों जेबें खाली थीं। जिसके खालीपन को समीना ने दूर कर दिया था। वह एक वक्त में मां, बहन, पत्नी, महबूबा और दोस्त का किरदार कैसे निभा लेती है? अगर मैं अम्मी की जिद के आगे उस तय्यबा तितली से शादी कर लेता तो आज कहीं का न रहता। हमेशा जेब से खाली, मायूस और जिंदगी से तंग रहता, मगर समीना! उसका कोई जवाब नहीं है। वह मुझे अपना ही अक्स लगती है। उसने आंखें बंद कर लीं और बचपन की यादों में खो गया। अब बस का चिकनी सड़क पर फिसलना बंद हो गया था और वह ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर उछलती-कूदती आगे बढ़ रही थी।

"डॉ. कमाल!" धीरे से डॉ. जेवियर ने सोते कमाल को पुकारा।

"यस...यस मिस्टर जेवियर, व्हाट हैपेंड?" कमाल ने नींद में डूबी आंखें खोलीं।

"हम कहां जा रहे हैं?"

"बस कहीं और ले जा रही है क्या?" कमाल ने चौंकते हुए कहा और खिड़की से बाहर देखा। पुल के नीचे उछलता-कूदता बरसाती नाला बह रहा था।

"ओह! रेन वाटर स्ट्रीम!" इतना कह कमाल मुस्कराया और डॉ. जेवियर भी मुस्कराए।

उनका गोल-मटोल चेहरा देखकर कमाल दिल-ही-दिल में सोचने लगा कि इस जर्मन को भारत आने को किसने कहा था। चैन से खाना अब इन्हें हजम होना बंद हो गया है, तभी आराम छोड़ यहां भटकने आए हैं। देखेंगे क्या? फ्लड एरिया। निकालेंगे क्या उससे? पानी से फैलती बीमारियों का एक जगह से दूसरे जगह तक पलायन। अरे भाई, मंगा लेते डेटा और इनफरमेशन्स वरना इंटरनेट पर देख लो, मगर नहीं, इन्हें तो खुद जाकर अनुभव करना है। ठीक है देखो, बरसाती नाले को नदी समझो। सारे रास्ते मुझे इसके बेतुके सवालों का जवाब देना पड़ेगा। कितना अच्छा होता कि समीना भी मेरे साथ आ जाती और सोचती कि उसके क्लास में नया बच्चा दाखिल हुआ है। बड़े मन से डॉ. जेवियर के जिज्ञासु मन की प्यास बुझाती।

'माई डियर समीना।' कहते हुए उसने जेब से मोबाइल निकाला।

उधर से समीना की आवाज सुनाई दी—"हलो, कमाल! क्या बात है?"

"क्या बोलूं, बीरबहूटी! तुम्हें बहुत मिस कर रहा हूं।" कमाल की बात सुन उधर से समीना की सिर्फ खनकती हँसी सुनाई पड़ी।

कमाल ने मोबाइल ऑफ कर जेब में रखा और बाहर देखने लगा। बकरी और गायों के साथ लड़के बारिश से बचने के लिए पेड़ों के नीचे जगह-जगह बैठे थे। अमरूद के ढेर पर प्लास्टिक लगाकर बेचने वाले भी छाया में खड़े थे। खेतों के पौधे

झूम रहे थे। सारस और बगुले पानी में खड़े भीग रहे थे। आसमान अभी साफ नहीं हुआ था। सुरमई बादल बराबर बढ़ते चले आ रहे थे।

"चाय पी लें।" ड्राइवर ने एक बड़े ढाबे के पास ले जाकर बस रोकी और नीचे उतरते हुए बोला।

ढाबा काफी लंबा-चौड़ा था, जहां पर चारपाइयां लाइन से पड़ीं थीं, जिन्हें डॉ. जेवियर बड़े गौर से देख रहे थे। उस पर ड्राइवर को जाकर लेटते और कुछ सवारियों को बैठते देख उनसे नहीं रहा गया तो वह पूछ बैठे, "कंबाइंड बेडरूम?"

"नो मिस्टर जेवियर, दीज आर रेस्टिंग कोच...कम एंड हैव फन।" कमाल खुद एक चारपाई पर जाकर लेट गया और थोड़ा उचकते हुए बोला, "वेरी कंफर्टेबिल! प्लीज कम, ट्राई इंडियन बेड कम सोफा कम..." उससे पहले कमाल अभी कुछ और तूल देता अपनी बात को डॉ. जेवियर चारपाई पर लेट चुके थे। आंखें बंदकर वह धीरे से बोले—

"वेरी नाइस फीलिंग।"

"बाबूजी, क्या लेंगे?" लड़का पूछ रहा था।

"दो चाय!" कमाल ने कहा, फिर डॉ. जेवियर से बोला, "डॉ. जेवियर, डू यू वांट टू यूज ओपेन बाथरूम?"

"यस! व्हाई नाट!" डॉ. जेवियर ने आंखें खोल कहा। उनके चेहरे पर जिज्ञासा उभर आई थी। कमाल उन्हें लेकर आड़ में गया और बोला, "प्लीज यू गो फर्स्ट।"

"बट व्हेयर?" डॉ. जेवियर का गोल चेहरा हैरत के कारण और गोल हो गया।

"हियर।" कमाल मुस्कराया।

डॉ. जेवियर के चेहरे पर आश्चर्य उभरा जरूर, मगर ठहरा नहीं। उन्हें लग रहा था कि वह अब भारतीय गांव की जिंदगी में दाखिल हो चुके हैं। चाय उन्होंने छोटे-से मग में बड़े चाव से पी और चारों ओर बेचैन आंखें घुमा स्थिति का अवलोकन करने लगे।



बुआ बड़ी देर से बदलू को पुकार रही थीं, मगर बदलू का कहीं पता नहीं था। तभी उन्होंने देखा कि छत की सीढ़ियों से बदलू शोरबा बना उतर रहा है। उसे देखते ही बुआ का पारा चढ़ गया। खड़ी हो वह पहले उसे घूरती रहीं जो सीढ़ी के बीच डर से जमकर खड़ा हो गया था, फिर कमर पर हाथ रखकर बोलीं, "क्यों लाट साहब! तोहार बाबा कमाय के धर गए हैं कि जब बेटवा बीमार पड़े तो ओका इलाज हो।

उतरो...नीचे आओ! आज तोहार गधा-पच्चीसी छांट के न रखा तो हमार नाम रहमत की अम्मा नहीं...डरो न...आओ, हम तोहार अगवानी के लिए खड़े हैं न।" बुआ ने झुककर सींक की झाड़ू उठाई।

"जी!" बदलू डरता-डरता नीचे उतरा।

"देखत रहो, तोहार बदन का पानी आज कैसे सूतत हैं।" कहती हुई बुआ आगे बढ़ीं तभी खुरशीदआरा उनकी आवाज सुन दालान की तरफ मुड़ीं।

"क्या हुआ बुआ?" उन्होंने नजर घुमाई तो वहां बदलू को पानी से भीगा खड़े देखा। उसे देख उन्हें हँसी आ गई, मगर बुआ का लिहाज कर कुछ बोलीं नहीं।

"कहां गए रहे ऊपर? पतंग उड़ावे या बारात देखै...आप ही पूछें दुलहिन बी, इससे...हम आधा घंटे से एका सारे घर में हेरत-हेरत परेसान हैं कि आखिर गवा कहां।" बुआ ने हाथ की झाड़ू जमीन पर पटककर कहा।

"बदलू, ऊपर क्या करने गए थे?" खुरशीदआरा को पूछना पड़ा।

"जी हौदा देखने गए थे।" सहमी आवाज से बदलू बोला।

"झाड़ू फिरे! हौदा तो बरसात के पानी से उबलत होइये, फिर ओमा देखे की ऐसी का बात रही, जो अटारी चढ़ झांकत रहे?" बुआ जिरह पर उतर आईं।

"देख रहे थे कि कोई पानी पीने आया?" बदलू की आंखों से दो मोटे आंसू गालों पर ढुलक गए।

"हां, हां, काहे नहीं! ई आंधी-पानी मा गाय, भैंसिया, बकरी, मेमने सब-के-सब छाता लगाए, बरसाती पहन, पानी पीने आए रहे...जानवर की महोब्बत मा पगलाय गवा है पूरा-का-पूरा। अभी पांच दिन के बुखार से उठा है। घर-घर हैजा, पीलिया फैला है, मगर ई मुसटंडे को केहि बात का डर नहीं।" बुआ बड़बड़ाती चाय का पानी गैस पर रख अदरक कुचलने लगीं।

"जाओ, जल्दी से कपड़ा बदलो, वरना सर्दी लग जाएगी।" खुरशीदआरा ने अपनी मुस्कान दबाते हुए कहा और सिलाई की मशीन के सामने जाकर बैठ गईं। उन्हें बुआ की बातें कभी-कभी बड़ी मजेदार लगती हैं, जिन्हें सुनकर आदमी अपनी हँसी रोक नहीं सकता है।



बारिश इस बार देर में जरूर आई थी, मगर इस तरह बरसी थी कि प्रतापगढ़ से लेकर सुल्तानपर, जौनपुर, गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, बहराइच, उधर गोपालगंज, सिवान, मुंगेर, भागलपुर, दरभंगा सभी पानी में डूब चुके थे। गांव-के-गांव बह गए थे।

डॉ. जेवियर जैसे-जैसे जगहों को देख रहे थे, उनका गोल-मटोल चेहरा सिकुड़ता चला जा रहा था। उनका हँसना और सवाल पूछने की जिज्ञासा अब अहसास के धरातल पर गहरे सफर पर चल पड़ी थी। उनकी आंखें सवालों से भरी होतीं, जो अपने-आप जलती-बुझती थीं। कमाल को लग गया था कि डॉ. जेवियर की समझ में भारत अब काफी हद तक आने लगा है, इसलिए अब वह सवाल नहीं करते हैं। वे हालात को पूरी तरह महसूस करने में कामयाब हो चुके हैं।

पानी में डूबे पक्के घर, पानी के बहाव में बहते सामान, शव और जानवर, जिन पर कोई रोक नहीं लगा सकता था। उबलता, झूमता पानी का बहाव पेड़ों तक को उखाड़कर अपने साथ ले जा रहा था। घने, बड़े मजबूत पेड़ों पर पनाह लिए लोगों तक तैराकों का पहुंचना भी गैरमुमकिन हो चुका था। उजड़े लोगों के कैंप और रोते-चीखते लोगों को दिलासा देने, उनकी देख-रेख करने में जेवियर की आंखें फटी-फटी-सी रहतीं। उनका इलाज, उनकी देखभाल करते डॉ. जेवियर रात गए तक व्यस्त रहते थे। डायरिया फैल चुका था। हैजा फैल जाने का डर फिजां में लटका हुआ था। सब डॉक्टरों की खास हिदायत थी कि कोई भी गंदा पानी न पिए। बाढ़ के पानी में घर बचाने या फिर गांव से भागने में औरत-मर्दों के पैरों के पंजे बरसात के पानी में यात्रा कर-करके सड़ गए थे। पस पड़ने से जिनका अब चलना भी कठिन हो रहा था। पीलिया बड़ी तेजी से फैल रहा था।

उस दिन पानी में बहते दूधपीते बच्चे को जब कोई बचाकर डॉ. जेवियर के पास लाया तो वह उसका मुआयना करते-करते एकाएक बिलख-बिलखकर रोने लगे। कमाल किसी रोगी को इंजेक्शन लगा रहा था। उसने तेजी से मुड़कर डॉ. जेवियर को देखा और मन-ही-मन बोला—'हम अपनी हालत पर रोने के लिए काफी थे, अब यह नई मदर टेरेसा डॉ. जेवियर के रूप मे कहां से आ गई?'

उस बच्चे की हालत बहुत नाजुक थी। ग्रुप के बाकी डॉक्टर भी बच्चे के सुंदर मुखड़े को देख दुःखी हो उठे थे। डॉ. जेवियर ने चुनौती स्वीकार कर ली थी। बच्चे को बचाने के लिए उन्होंने रात-दिन एक कर दिया था। उसका कोई वारिस न था। उस लावारिस बच्चे को डॉ. जेवियर ने अपने साथ ले जाने का प्रण ले लिया था। कमाल डॉ. जेवियर को शुरू में जितना हलका ले रहा था, अब अपने को उनके उतना ही करीब पा रहा था। इंसानी जज्बात सरहदों में नहीं बांधे जा सकते। पंद्रह दिन का यह साथ दुनिया को और ज्यादा समझने में मददगार साबित हुआ, जब डॉ. जेवियर ने अफ्रीकी देशों के युद्धग्रस्त क्षेत्रों के अनुभव सुनाते हुए कहा :

"डॉक्टर शौक पाल लेते हैं। बड़े-बड़े सपने देखते हैं, फिर उन सपनों को पूरा करने में वे अपने प्रोफेशन को तबाह कर डालते हैं। तरह-तरह के समझौते, गैर-

मेडिकल व्यवहार...और वे धीरे-धीरे डॉक्टर से कुछ और बनने की दिशा में बढ़ने लगते हैं। मेरा अनुभव है कि डॉक्टर को केवल एक सपना देखने का हक है, वह है अधिक-से-अधिक मरीजों तक पहुंचना और उनको रोग मुक्त बनाना।''

पंद्रह दिन का यह कैंप बढ़कर महीने में बदल गया, मगर बाढ़ से उजड़े लोगों की समस्याएं समाप्त न हुई। रोगी बदन चंगा हुआ तो उन्हें अपने याद आए, जो उनसे दूर जा चुके थे। वह बसेरा याद आया, जहां रात बिताते थे। मन का घाव कोई दवा नहीं भर सकती थी। इसलिए ये डॉक्टर भी अपना कर्तव्य पूरा कर अपने-अपने ठिकानों को लौटने लगे थे। डॉ. जेवियर और कमाल इलाहाबाद अकेले ही लौटे। इस बार डॉ. जेवियर एक चहकते मासूम बच्चे की जगह एक अनुभवी मर्द लग रहे थे।

''आप अगर होटल की जगह मेरे घर ठहरें तो आपको ज्यादा अच्छा लगेगा।'' कमाल ने उनसे कहा।

''ठीक है।'' वे अपना सामान उठा कमाल के घर आ गए।

मेहमानखाना तैयार था। जमाल खां ने हर तरह की शराब का इंतजाम कर रखा था। समीना ने केक और शकरआरा ने रोस्ट बनाकर मेहमान के स्वागत का इतजाम कर लिया था। जब डॉ. जेवियर घर आए, सबसे परिचय हुआ। नहाने के बाद उन्हे कॉफी दी गई और खाने से पहले जब उनसे पूछा गया कि वह कौन-सी शराब लेना पसंद करेंगे तो वह जोर से हँसे और हिंदी में बोले, ''नींबू-पानी।''

डॉ. जेवियर खाने पर भी 'दाल-भात-सब्जी' का सेवन करते रहे। ये सारे शब्द यह बाढ़ के इलाके से महीना-भर में सीखकर आए थे। उनकी सादगी, उनके खयालात सुनकर शकरआरा को खासी निराशा हुई, मगर जमाल खां को बहुत दिनों बाद एक सच्चा-खरा इंसान बात करने को मिला था। दो दिन बाद डॉक्टर जेवियर दिल्ली चले गए। जहां से उन्हे जर्मनी के लिए फ्लाइट लेनी थी, मगर वे सबके दिलों में अपनी जगह बना गए।



दूसरे दिन कमाल जब क्लीनिक की तरफ मुड़ा तो उसे इस बात का कतई अंदाजा नहीं था कि उधर की गलियों का बारिश ने इतना बुरा हाल कर रखा होगा। वह कार पार्क कर सोचने लगा--क्या तरकीब भिड़ाई जाए जो वह इस कीचड़ से बिना सने क्लीनिक तक पहुंच सके। मगर उसे महसूस हुआ कि गाड़ी भी उधर ले जाना मुमकिन नहीं है। कंपाउंडर महोदय भी नहीं पहुंचे थे। इधर-उधर की दुकानें भी इक्का-दुक्का ही खुली थीं। पटरी और पेड़ के नीचे बैठने वाले दुकानदार भी अपने खोंमचों-ठेलों समेत गायब थे।

कल रात की बारिश ने नाली-नाबदानों का कूड़ा गलियों में इस तरह लाकर बिछा दिया था कि पहली नजर पड़ने पर महसूस होता था—यहां से वहां तक दलदल फैला हुआ है, जिसमें सुअर के बच्चे डूब-उतरा रहे हैं। कुछ देर तक कमाल खड़ा-खड़ा पूरे इलाके की गंदगी देखता रहा, फिर उसने कार मोड़ी और सड़क पर आ गया। दिल-ही-दिल में सोच रहा था कि रोज अखबार के पन्ने भरे होते हैं कि बरसात से पहले नालियों एवं नालों की सफाई न होने के कारण यह हालत है, मगर नगरपालिका के कानों पर जूं नहीं रेंगती। खबरों में चित्रों के साथ इलाके दिखाए जाते हैं, मगर नेता वही पुरानी बातें दोहरा देते हैं। उधर आम नागरिक का सिविक सेंस इतना बढ़ गया है कि नाले पाट उस पर मकान बनवा बैठे हैं। अपने घर का कूड़ा दूसरे के घर के सामने पटक देंगे...क्या किया जाए आखिर? यही नदियों का हाल है और यही हाल गलियों का है।

कमाल का मन खिन्न था। उसका मोबाइल बजा तो उसने फोन कानों पर लगाया। फोन कंपाउंडर का था। वह बता रहा था कि वह आज नहीं पहुंच सकता, क्योंकि उसके घर के ठीक सामने की गली धंस गई है और गड्ढा तालाब बन चुका है और उसकी तरह बाकी पड़ोसी भी अपने-अपने घरों में कैद हैं। यह फोन भी छत-छत जाकर वह किसी पड़ोसी के घर से कर रहा है। कमाल ने फोन बंद किया और यह सोचकर उसने म्यूजिक ऑन किया कि अब मूड खराब करने से कोई फायदा नहीं है। बेहतर यही है कि आज इस शहर के कुछ हिस्सों में ही टहल लिया जाए। उसने कार मोड़ी और आगे बढ़ गया।

बरसात ने शहर में काफी तोड़-फोड़ मचा रखी थी। कहीं-कहीं प्लास्टिक के नीचे भीगी जमीन पर उंकड़ू बैठे बच्चे फैली आंखों से सामने ताक रहे थे, जहां उनकी मां ईंटें जोड़, आग सुलगा कुछ पका रही थी। बरबाद झुग्गियों के निवासी पुल के नीचे जमा हो गए थे। कमाल ने देखा, सामने से अर्थी उठाए कुछ लोग तेजी से बढ़ रहे थे। उसने कार धीमी कर एक तरफ रोक दी। 'राम नाम सत्य है' की गूंज के साथ परेशान लोग आगे बढ़ गए, मगर पानी की बूंदों के एकाएक टपकने से वे सब घने वृक्षों के नीचे आन खड़े हुए कि कहीं शव खराब न हो जाए। प्लास्टिक न लाने या फिर और किसी उलझन के चलते वे बदहवास-से दिखे, जब बारिश ने एकाएक वेग पकड़ लिया। सबके चेहरों पर जो भाव आया, उसने कमाल को बेचैन कर दिया और उसे लगा कि नजीर अकबराबादी से बरसात का यह रुख देखना छूट गया था वरना अपनी नज्म 'क्या-क्या मची है यारो बरसात की बहारें' में यह सारे दृश्य वह जरूर शामिल करते।

"हलो, कपूर! क्या कर रहे हो? सिविल लाइंस की तरफ निकलो, यार! इस मौसम में घर में घुसे हो। बस मैं रास्ते से फोन कर रहा हूं। पांच मिनट में पहुंच

जाऊंगा।" कहकर कमाल ने फोन बंद किया और कार का रुख बदला। उसी के साथ बारिश भी थम गई। कमाल के चेहरे पर एक करुणामयी छाया-सी उभरी और उसने शीशे में पीछे छूट गई शवयात्रा को वापस अपनी कार के पीछे आते देख लंबी सास खींची।

जब वह कार से उतर रहा था। उसी लम्हे कपूर की कार आकर रुकी। दोनों साथ-साथ रेस्तरां में दाखिल हुए। कॉफी का ऑर्डर दे कपूर ने सिगरेट सुलगाई और लंबा कश खींचकर बोला, "आज छुट्टी है क्या क्लीनिक की?"

"नहीं, बरसात ने रास्ता बद कर रखा है।" कमाल ने कहा और कपूर के चेहरे पर नजरें जमा दीं जैसे कुछ तलाश कर रहा हो।

कपूर शांत रहा। कॉफी आ गई थी। दोनों ने सिप ली।

"कोमल ठीक है। उसने जिंदगी की सच्चाई से समझौता करना शुरू कर दिया है कि अब वह मां नहीं बन सकती है।" कपूर ने लंबी सास खींची, फिर उदास हँसी हँस पड़ा।

"तेरी हँसी इतनी जानदार है, यार कि भाभी को डिप्रेशन से निकलने में कोई ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।" कमाल ने मुस्कराते हुए कहा।

"शायद तेरा कहना सच हो।" कपूर ने कंधे झटके।

"वापस मुंबई कब जा रहे हो? कुछ तय किया?" कमाल ने पूछा।

"जाना तो है, कमाल। बस चिंता इस बात की है कि वहा कोमल घर में अकेली होगी और उदासी की तरफ लौटने का खतरा बढ जाएगा। यहां पूरा परिवार है। हरदम आगे-पीछे फिरता रहता है।"

"तो कोमल को छोड़ जाओ यहां कुछ दिनों के लिए, जब तक वह पूरी तरह ठीक नहीं हो जाती।"

"उसके लिए कोमल राजी नहीं है। खैर, तुम सुनाओ, समीना भाभी कैसी हैं?" कपूर ने कॉफी का घूंट भरा।

"समीना ठीक है।"

"लकी मैन।" कपूर ने प्यार से कमाल को देखा।

"पिछले दिनों यू.पी.-बिहार मेडिकल कैंप में गया था। हमारे साथ एक जर्मन डॉक्टर भी थे। उन्होंने वहां पूरे माह रात-दिन हमारे साथ राहत कैंपों में काम किया। जो सबसे अजीब बात लगी वह थी एक लावारिस बच्चे को, जो सिर्फ तीन महीने का था, उन्होंने गोद ले लिया। अभी बच्चा साथ नहीं ले गए हैं, क्योंकि वह बहुत कमजोर था और इंसेंटिव केयर में है।" इतना कहकर कमाल रुका फिर कुछ पल

बाद बोला, "यार कपूर, हम अपने बच्चे पालते हैं—सिर्फ अपने बच्चे। उनके लिए पूरी जिंदगी की प्लानिंग करते हैं, मगर गैर के बच्चों के लिए हमारे दिल प्यार से बिलकुल खाली रहते हैं।" कमाल ने धीरे-धीरे पूरा किस्सा बयान करते हुए कहा।

कपूर कमाल की बात बड़ी दिलचस्पी के साथ सुन रहा था। पूरी बात सुनकर वह सिर झुका किसी गहरी सोच में डूब गया। कमाल उसके एकाएक बुझ गए चेहरे को देखकर फिक्रमंद हो उठा। उसने बेचैन होकर पूछा, "मैंने कहीं अनजाने में तुम्हें हर्ट तो नहीं किया?"

"नहीं।" कपूर ने गरदन हिलाई।

"वैसे भी तुम मुझे आज कुछ सुस्त-से लग रहे हो! कोई खास बात तो नहीं है?" कमाल ने कुरेदा।

"है भी और नहीं भी।" कपूर ने हाथ उठा अंगड़ाई ली, फिर सिगरेट की डिब्बी जेब से निकाली।

"अगर तुम बताना चाहते हो तो बता सकते हो। मेरे पास सारी दोपहर खाली पड़ी है।" कमाल ने कहा।

उसकी बात सुनकर कपूर कुछ देर चुप रहा। सिगरेट के धुएं के बीच उसका चेहरा विभिन्न भावों से कभी भर उठता, कभी खाली हो उठता।

"मेरा अफेयर हो गया है।" काफी देर बाद कपूर ने जैसे इस सच को स्वीकारा।

"बम फोड़ रहे हो!" कमाल हँसा।

"नहीं, मैं बहुत ज्यादा सीरियस हूं।" कपूर ने कहा। उसकी आंखों की चमक एकाएक बढ़ गई।

"यही बात तुमने कोमल भाभी के समय भी कही थी और अब फिर वही जुमला दोहरा रहे हो।" कमाल ने उसको घूरते हुए कहा।

"यार कमाल! बुरा न मानना, मगर यह सब मेरे बस में बिलकुल नहीं रह गया था। तुम मुझे इल्जाम दे सकते हो, मगर मैं..." कपूर चुप हो गया।

"तुम बिलकुल मजबूर हो गए थे।" कमाल हँस पड़ा।

"मैं पहले से बहुत टेंशन में हूं, तुम्हारी इस तरह की हँसी मुझे और टेंशन देगी।" कपूर ने कुछ परेशान स्वर में कहा।

"ठीक है। मैं कुछ नहीं कहता...तुम बोलो, जो बोलना चाहते हो। मैं सुनूंगा।" कमाल ने कपूर का शाना थपथपाया।

"मैं खुद इस चक्रव्यूह से निकलने की कोशिश कर रहा हूं।" कपूर ने टुकड़ों

में कुछ बताया फिर कहा, "फुरसत में हो तो घर चलो। मैंने किसी को बारह बजे का वक्त दे रखा था। खाना साथ खाते हैं।"

"आज नहीं, फिर किसी दिन समीना के साथ आऊंगा।" कमाल ने भारी स्वर में कहा।

दोनों ने हाथ मिलाया और कमाल अपनी कार में बैठते हुए सोचने लगा कि "आज का दिन कैसा शुरू हुआ है, कहीं कीचड़ तो कहीं फिसलन! बेहतरी अब इसी में है कि सीधे घर जाया जाए और खाना खाकर, लंबी तानकर सोया जाए।

23

शहर में डेंगू, वायरल हेपेटाइटिस, इनसेफेलाइटिस, डायरिया जैसी बीमारियां फैली देख कमाल परेशान हो उठा था, खासकर मासूम बच्चों को, जो पौष्टिक खान-पान न मिलने के कारण बड़ी संख्या में हेपेटाइटिस के शिकार हो मर रहे थे! उनके मां-बाप को वह कैसे समझाए कि इन बच्चों की मौत में उनकी भी भागीदारी है और उस व्यवस्था को क्या कहें जो मल-मूत्र और सड़े पानी को मिश्रित होता देखकर भी नागरिकों को उस तरह की सुविधा प्रदान नहीं करता जिससे वह साफ पानी का सेवन कर सकें। कब बदलेगा इंसान की बुनियादी जरूरतों के हनन का यह काला समय?

दिमागी बुखार से पीड़ित लोग और उनके परिजनों का लापरवाह व्यवहार, जो रोटी की जरूरत के आगे हाड़-मांस के इस शरीर को साधन समझकर अपने ही शरीर पर सवारी गांठ भूल जाते हैं कि यह गाड़ी कहीं भी रुक सकती है। बीमारी पर पैसा खर्च करना और दवाई खाना जरूरी है, मगर वे बाबा आदम के समय के उपचारों को लेकर नई बीमारियों से ताल ठोंक लड़ने में अपने को सक्षम समझते हैं। दवा मुफ्त दो तो भी उससे इस तरह परहेज करेंगे जैसे वह उन्हें स्वस्थ बनाने के स्थान पर सदा के लिए निर्बल बना देगी। कमाल कभी-कभी सोचने लगता था कि अपने विषय की कठिनाइयां और लड़ाइयां लड़ना हर 'प्रोफेशनल' का कर्तव्य है, मगर यहां तो उससे संबंधित सारी परेशानियों से जूझना भी आपकी मजबूरी और कभी-कभी जरूरत बन जाता है।

"डॉक्टर साहब, एक औरत आई है। आपसे बात करना चाह रही है...भेजूं?" कंपाउंडर ने कमाल से पूछा।

"भेजो।" कमाल ने कहा और घड़ी देखी। क्लीनिक टाइम ओवर हो चुका था।

"क्या बात है, बहिनजी?" कमाल ने सामने खड़ी औरत को देखा, जो हाथ

जोड़े सामने खड़ी थी।

"डॉक्टर साहिब, अब आप ही ओका बचाए सकत हैं...आपकी सेवा हम जिंदगानी-भर करेंगे।" इतना कह वह कमाल के पैरों की तरफ लपकी।

"बस, बस, वहीं रुकिए...मरीज को हुआ क्या है?" कमाल ने उसका घिघियाना देख सख्ती से पूछा।

"अब हम का बताएं...आप खुद ही चलकर देख लें! चार बच्चों में यही एक बच्चा बचा है, बाकी तीन गुजर गए।" कह औरत सुबकने लगी। उसको यूं रोती देख कमाल समझ नहीं पा रहा था कि नर्सिंगहोम जाए या इस औरत के संग जाए? कुछ पल तनाव में गुजरे, फिर उसने नर्सिंगहोम में फोन मिला संदेश दिया कि उसे आने में कुछ देर हो जाएगी।

"चलो।" कमाल ने कहा और बाहर निकला। कंपाउंडर ने क्लीनिक बंद की और उस औरत को लेकर कार की तरफ बढ़ा। उसने अपने घर का जो पता बताया था, उसे सुन कंपाउंडर ने कमाल से कहा, "वहां तक कार का पहुंचना कठिन है, पता नहीं गली भी कैसी है।"

कार स्टार्ट कर कमाल सोच रहा था कि आज निर्मला कलहन के तेवर यह सुनकर खिंच जाएंगे कि डॉक्टर समय पर नर्सिंगहोम नहीं पहुंचा और वे इंतजार करती रहीं। होने दो गुस्सा...कमाल कार पार्क कर नीचे उतरा और उस औरत के पीछे-पीछे चलने लगा। कंपाउंडर परेशान था। गली में कीचड़, लोटते सुअर, कुत्ते, मुर्गी और सबसे बढ़कर केंचुए लाखों की तादाद में रेंग रहे थे। हवा बदबू से भरी थी। वह औरत तेजी से एक तंग कोठरी के सामने रुकी और बोली, "आवें, डॉक्टर साहब।"

कमाल अंदर दाखिल हुआ। चार साल का एक बच्चा गुदड़ी पर बेसुध पड़ा था। उसके पास एक मर्द हड्डियों का ढांचा बना बैठा, उसके चेहरे पर बैठी मक्खियों को उड़ा रहा था। कमाल को देख उसने चेहरा ऊपर उठाया तो कमाल को झटका-सा लगा। वे आंखें—जिंदगी की भीख मांगती आंखें इतनी मुखर थीं कि कमाल हिल गया। समझ नहीं पाया कि बाप को देखे या बच्चे को? बच्चे की हालत बहुत नाजुक थी। जो दवाएं उसको फौरन देनी चाहिए थीं वे बहुत महंगी थीं। वह पिला भी दी जातीं तो बच्चे के बचने की कोई उम्मीद न थी। वह एक ही शर्त पर बच सकता था यदि उसको फौरन ड्रिप चढ़ाई जाती और उसके साथ आक्सीजन भी, फिर बाकी इलाज किया जाता।

उसने कंपाउंडर से कहा, "इसको लेकर हमें फौरन नर्सिंगहोम भागना होगा।"

"हमार बेटवा बच जाएगा?" वह मुर्दा जैसे कब्र से बोला।

"हम पूरी कोशिश करेंगे...चलो, जल्दी करो।" कहता कमाल बाहर निकला

और तेजी से सड़क की तरफ बढ़ा। पीछे मां बेटे को पुरानी साड़ी में लपेटे भागी और उसके पीछे उसका पति और कंपाउंडर।

कमाल ने नर्सिंगहोम पहुंचते ही लड़के को दाखिल कराने के लिए कंपाउंडर को भेजा और खुद तेजी से अपने चैंबर की ओर भागा। वहां जाकर मालूम हुआ कि शुरू के दो पेशेंट किसी व्यक्तिगत कारण से आज नहीं आ रहे हैं। उन्हें नई तारीखें देनी होंगी। उसने कुर्सी पर बैठ राहत की सांस ली। अभी उसे बैठे कुल दस मिनट ही गुजरे थे कि कंपाउंडर पहुंच गया। लड़का दाखिल हो गया था। उसकी मां वहीं लड़के के पास थी। कमाल ने कंपाउंडर को वापस जाने को कहा और खुद सामने रखी फाइलों को उलटने-पलटने लगा।

"हलो!" बजता फोन कमाल ने उठाया।

"डॉक्टर कमाल! आपके लिए एक मेसेज था कि आप काउंटर पर एडवांस जमा करवा दें।"

"ठीक है।" कमाल ने फोन रख दिया।

पेशेंट देखने के बाद जब वह चिल्ड्रेन वार्ड में पहुंचा तो देखा, लड़का साफ बिस्तर पर लेटा था। ड्रिप लगी हुई थी। मां पास बैठी टकटकी लगाए बेटे का चेहरा ताक रही थी। कमाल को देख हड़बड़ाई-सी उठी और हाथ जोड़ दिए। कमाल ने पायताने लगी रिपोर्ट शीट देखी और मुस्कराकर बोला, "तुम्हारे बेटे में सुधार है। दो-तीन दिन बाद भला-चंगा हो जाएगा।"

"आपकी कृपा...परंतु इतना खर्चा..." औरत की आंखें भराभराकर फूट पड़ीं। वह इतना समझती थी कि यह खैराती अस्पताल नहीं, बल्कि प्राइवेट नर्सिंगहोम है जहां धनवान लोग आते हैं।

"उसकी चिंता छोड़ो। बस प्रार्थना करो कि बेटा तंदुरुस्त हो जाए।" इतना कह कमाल बाहर निकला।

कमाल ने एक डॉक्टर का कर्तव्य पूरा कर दिया था। इस फर्ज को निभाने में इस व्यवस्था ने उसकी जेब से एक भारी रकम झाड़ ली थी, मगर रकम उस औरत की ममता के आगे कुछ भी नहीं है, जिसने तीन बच्चों का मरा मुंह देखा था। उधर कमाल के दिमाग मे उस मर्द का चेहरा इस तरह जमकर रह गया था जैसे किसी फ्रेम में कोई तस्वीर जड़ दी जाती हो।



बरसात का मौसम धीरे-धीरे विदा हो रहा था। बारिश लगभग बंद-सी हो गई थी। सितंबर का महीना आ गया था। उमस-भरे दिनों से परेशान लोग अपने घरों और

सामानों को संभालने में लग गए थे। इस बार बरसात ने कुछ ज्यादा ही ऊधम मचाया था। बहुत-से पुराने तनावर दरख्त जगह-जगह जड़ों से उखड़े पड़े थे। टपकते घरों की मरम्मत शुरू हो गई थी। ऐसे मौसम में राबिया का दिल घर में उलझता रहता था। उसने बहुत सोचकर एक तरकीब निकाल ली थी। मां के घर से निकलते ही वह हमेशा की तरह बनाव-सिंगार कर रिक्शे पर बैठ सीधे सिविल लाइंस पहुंचती और सिनेमा का टिकट ले तीन घंटे वातानुकूलित हाल में बैठ पिक्चर देखती। फिर वहां से निकल रेस्तरां में बैठ कुछ पीती, फिर शाम को मां के पहुंचने से कुछ पहले वह घर पहुंच जाती। ऐसी दिनचर्या में अब उसे सौ रूपया रोज चाहिए था जो वह मां के छुपाए हुए रुपयों में से बक्सा खोल निकाल लेती थी।

उसको यूं अकेली फिरते देख कई लड़कों की नजर उस पर पड़ने लगी। कुछ को वह पसंद आई, कुछ ने यह सोच पेंग बढ़ानी चाही कि लड़की हलके किरदार की है, मजा उठाने और समय काटने के लिए बुरी नहीं है। अपने चारों तरफ मंडराते पतिंगों को देख राबिया की चाल बड़ी मस्तानी हो उठती और चेहरे पर एक दिलफरेब मुस्कान फैल जाती। आंखों में खुमार भर जाता। कुसूर उसका नहीं, उसकी उम्र का था, जिस पर बंदिश नहीं लगी थी, इसलिए राबिया ने पहली बार टिकट की खिड़की पर खड़े होने की जगह उस लंबे लड़के का बढ़ाया टिकट कुछ ना-नुकर कर अंत में कुबूल कर लिया। दोनों ने साथ-साथ फिल्म देखी फिर वह उसे उसी रेस्तरां में ले गया जहां राबिया ठंडा पीती थी। वहां भी राबिया ने हठ की, मगर बिल उसी लड़के ने अदा किया। उस दिन राबिया को लगा कि यह तो अच्छी दोस्ती हुई। उसके पैसे बच गए और वह अम्मा से मार खाने से भी बच गई, वरना यह भेद तो एक-न-एक दिन खुलना ही था।

लड़का पैसेवाले घर का था। नया-नया जवान हुआ था। उसे मोहब्बत का कोई तजुरबा न था। उसे कुछ दिनों से लड़कियां बहुत लुभाने लगी थीं, मगर उन तक पहुंचने से वह झिझकता था। राबिया उसे बड़ी आसानी से मिल गई। उसे घर जाने की जल्दी भी न होती, इसलिए अब उनका मिलना रेस्तरां और सिनेमा से बाहर भी पैर फैलाने लगा। कभी खुसरू बाग तो कभी कंपनी बाग तो कभी संगम और कभी हाथी पार्क जा वह किसी पेड़ के नीचे बैठ जाते थे। बदन दोनों के चाहत से भरे थे। अनुभव करना चाहते थे, मगर कहां और कैसे? एक-दूसरे को छूने और चूमने से वह अब आगे कदम बढ़ाने को तैयार थे।

राबिया की मां को बेटी में आया परिवर्तन दिख न रहा हो, ऐसी बात न थी, मगर वह उसको जवानी का निखार समझ रही थी। इस उम्र में तो गधी भी अच्छी लगने लगती है फिर यह तो उनकी औलाद थी। उसको सजावट का शौक था। उन्होंने जब पहले कभी नहीं टोका तो अब क्यों टोकतीं? बस, उनकी फिक्र बढ़ गई थी कि

कोई कायदे का खुशहाल घराना मिल जाता तो वह राबिया के हाथ पीले कर देतीं।

अचानक उस लड़के ने एक दिन दुःख से बताया कि उसके पापा का ट्रांसफर हो गया है और उसको उनके साथ जाना होगा। सुनकर राबिया की आंखों से आंसू गिरने लगे। दोनों रोते-पीटते एक-दूसरे से अलग हुए। कई हफ्तों तक राबिया उसे याद कर-करके रोती रही। बिना नहाए-धोए घर में पड़ी रहती। महीने-भर तक यह हाल रहा, फिर वह अपने पुराने रुटीन पर आ गई। पहली टकराहट भोलेपन में हुई थी, मगर अब वह स्वयं किसी से दोस्ती हो जाने की तलाश में थी, जो पहलेवाले की तरह हो और रोज कोई-न-कोई उपहार भेंट करे। उसकी आरजू जल्द ही पूरी हो गई। पतिंगे फिर शमा के चारों तरफ मंगराने लगे। जो गरीब आशिक थे, वे तो राबिया को दूर से देख आहें भरते और चले जाते। उन्हें पता था कि वह एक दिन के अलावा राबिया के रोज के नखरे उठाने के काबिल न थे। इसलिए जीता वही जिसके पास महंगा टिकट खरीदने का टका था। लड़का चालू था। उसने पहले भी कई लड़कियां पटाई थीं, इसलिए वह पहले दिन से ही राबिया को बेवकूफ बनाने के मनसूबे बनाने लगा।

राबिया के लिए अब यह शहर नया नहीं रह गया था। जी भरकर वह घूमी-फिरी और खाई-पियी थी। अब उसके दिमाग में यह बात उठ रही थी कि कोई ऐसा लड़का मिले जिससे बात शादी तक पहुंच सके। इस तरह जिंदगी ज्यादा दिनों तक चल नहीं सकती है। खासकर तब जब लड़का चंट हो। राबिया ने भांप लिया था कि यह लड़का टिकने वाला नहीं है और अपना मतलब जल्द-से-जल्द हल करना चाहता है। उसकी जोर-जबरदस्ती और वहशीपन को उसने चंद मुलाकातों में ही महसूस कर लिया था। वह पैसा खर्च करने में भी कंजूस था। राबिया अपनी मां की तरह ही चालाक थी, बहेलिया के जाल में क्यों फंसती? सो उसने तय कर लिया कि वह कुछ दिनों तक अपना सिविल लाइंस जाना बंद कर दे।

राबिया घर में पड़ी-पड़ी किसी अच्छे शौहर को पाने का मंसूबा बांधती रहती। तरह-तरह की तरकीबें सोचती। अपने को ज्यादा सुंदर और आकर्षक बनाने के लिए मुंह पर उबटन और क्रीम का लेप लगाती। उसे पता था कि उसके पास जवानी के अलावा ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे वह किसी अच्छे घर ब्याहे जाने की सोचे। इसलिए जो है, उसी के द्वारा उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचना है।



बरसात में अनेक बुराइयों के साथ एक खूबी का पहलू यह था कि वह बरसते-बहते पानी के साथ क़ाफी गंदगी बहा देती है, मगर जबसे बारिश का वेग कम हुआ था मच्छरों ने अपनी आबादी चौगुनी रफ्तार से बढ़ा ली थी। मलेरिया घर-घर फैलने लगा।

पानी से भरे बरसाती गड्ढे अभी पूरी तरह सूखे नहीं थे। इसके अलावा कूलरों में उनके छत्ते बने हुए थे। जब बाहर इतनी गंदगी हो तो घर की सफाई भी बेकार साबित हो जाती है। यह सब कमाल उन घरों में जाकर देख चुका था, जो उसके पुराने मरीज थे, जिनमें यह चेतना आ गई थी कि साफ पानी का प्रयोग उन्हें कई तरह के संक्रामक रोगों से मुक्ति दिला सकता है। उनके घरों में सफाई थी, सफाई से रहना रोगियों के चित्त को सदा प्रसन्न रखता है। मगर पूरी गली को वे कैसे संभालें, जब तक कि सबके विचारों में एकता न हो।

मलेरिया के चलते कमाल का क्लीनिक रोगियों से उबला रहता था। पांच रुपया फीस में अपना इलाज कराने कौन नहीं पहुंचता 'मसर्रत' दवाखाने में? इस वक्त भी मर्द, औरतें, बच्चे भरे हुए थे। कमाल को महसूस हो रहा था कि अब एक कंपाउंडर से काम चलने वाला नहीं है। दूसरा कौन ऐसा मिलेगा जो वास्तव में दयालु हो और तन-मन से काम करे। वैसे भी कमाल की क्लीनिक के बारे में सबको पता था। यहां लापरवाही या कामचोरी नहीं चलेगी, जो भी आएगा उसे बड़ी निष्ठा के साथ काम करना पड़ेगा। कमाल का दिमाग अब दूसरे कंपाउंडर में उलझकर रह गया था। एकाएक उसके जहन में बदलू का खयाल आया और उसे एकदम से राहत का अहसास हुआ। उसके पशु-प्रेम को वह देख ही चुका था।

इधर कई मास से कमाल को घर-बाहर कहीं आराम नहीं मिल पा रहा था। माली, हाशिम और आया एक के बाद एक बीमार पड़े थे। उधर बदलू, बुआ और छोटी अम्मी का बुरा हाल था। कमाल तीन कोणों में भागते-भागते अपने को बहुत थका महससू कर रहा था। ऐसे मौकों पर अपने साथ समीना का न होना उसे बहुत खलता था और वह सोचने लगता कि काश! वह भी डॉक्टर होती। फिर कह उठता, तब तो ठनठन गोपाल होता। अभी तो मैं पूरे अधिकार से उसका कमाया धन खर्च कर लेता हूं, तब तो...

जब वह घर पहुंचा तो समीना खाना खाकर आराम कर रही थी। जमाल खां अपने कमरे में आई डाक छांट रहे थे। अम्मी कहीं गई हुई थीं। उसने अपने जूते उतारे। दिल चाहा कि आया को पुकारकर कहे—एक प्याला कॉफी बना दे, मगर कुछ सोचकर चुप रह गया और तकिया पर सर रखते ही थकन के कारण सो गया। कितनी देर सोया उसको पता नहीं चल पाया।

"उठो कमाल, कॉफी ठंडी हो रही है।" समीना ने उसे झिंझोड़ा।

"सोने दो।" उसके इस तरह कहने पर समीना ने उसे गुदगुदाया। कमाल नींद के बावजूद खिलखिला उठा।

"लो, अब पियो न।" समीना की शरारत-भरी आवाज उभरी।

"मैंने दूध के डिब्बे और कुछ बिस्कुट वगैरह के पैकेटों के साथ पुरानी चादरें और कुछ खिलौने रख लिए हैं।" इतना कह वह खामोशी से घूंट भरने लगी। समीना खुद कमाल का यह हाल देखकर खुश नहीं थी। हरदम कमाल के साथ रहने वाली अब पूरा दिन स्कूल में गुजारती है, मगर नौकरी करना भी उसके लिए उतना ही जरूरी था जितना कमाल का हाथ बंटाना।

जब दोनों तैयार होकर बाहर निकले तो शकरआरा की कार बंगले में दाखिल हो रही थी। दोनों वहीं बरामदे की कुर्सियों पर बैठ मां का इंतजार करने लगे। शकरआरा बड़ी नफासत से साड़ी चुटकी से पकड़े सीढ़िया चढ़ ऊपर आई और मुस्कराकर बोलीं।

"मेरे चांद और सूरज यहां कैसे बैठे हैं?"

"बस, हम निकलने ही वाले थे। आपको देख रुक गए।" कमाल बोला।

"तुम्हारे क्लीनिक का टाइम भी तो हो रहा है?" शकरआरा ने दीवारघड़ी की ओर देख अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

"हां अम्मी, काम पूरा कर मैं क्लीनिक निकल जाऊंगा और समीना बाल संस्था 'मुस्कान' की ओर। फिर हम दोनों साथ ही लौटेंगे रात को।" कमाल बोला।

"वह सब तो ठीक है, मगर अपना भी ध्यान रखो। इस उम्र में आंखों के नीचे यह स्याह धब्बे मुझे अच्छे नहीं लगते। मुझे फिक्र होने लगती है।" शकरआरा ने बेटे को प्यार से देखा।

"अम्मी, आपका बेटा कोई गुड्डा थोड़ी है जो हरदम सजा-धजा हसीन लगे। अब यह सब देखना बंद कर दें।" कहता कमाल समीना के संग सीढ़ियां उतरा और जाकर कार में बैठ गया।

"बाय!" बड़ी नजाकत से उंगलियां हिला शकरआरा ने बेटे-बहू को खुदाहाफिज कहा और अंदर मुड़ीं।

बाहर आसमान पर डूबते सूरज के हस्ताक्षर कई रंगों में अंकित थे, जिसके सौंदर्य को निहारते कमाल और समीना उस संस्था की तरफ बढ़ रहे थे।



क्लीनिक में पहुंच कमाल ने कंपाउंडर को आगाह कर दिया कि वह आठ बजे किसी मीटिंग के लिए निकलने वाला है, इसलिए उन्हीं मरीजों को भेजना जिन्हें दवा की फौरी जरूरत हो। एक के बाद एक मरीज को कमाल निबटा रहा था तभी बुक्का मारकर किसी के रोने की आवाज आई। फिर कंपाउंडर का हँसी रोकता चेहरा नमूदार हुआ।

"क्या बात है?" कमाल ने पूछा।

"वह फूलपुर वाला लड़का आया है। आप ही बात कर ले।" कंपाउंडर ने कहा और दरवाजे की आड़ में खड़े लड़के को अंदर बुलाया।

"क्यों क्या बात है? रो क्यों रहे हो?" कमाल के पूछने पर तो वह और जोर से रोने लगा।

"यार! चुप कराओ।" कुछ झुंझलाकर कमाल ने कहा।

"चुप! चुप!" अंगुली होंठ पर रख कंपाउंडर ने धमकाया। लड़का खामोश हो गया फिर कुछ देर बाद बोला, "आप कहे रहे कि अम्मा का पखाना टेस्ट कराये का है सो हम भोर मां हांडी लेकर चले रहे। पता नहीं उ हांडी लेकर कउन ट्रेनवा से उतर गवा। हम बहुत ढूंढ़े, मगर..." वह फिर रोने लगा।

"ठीक है, कल फिर ले आना। अब जाओ।" कमाल बोला।

"मगर हंडिया में लेकर मत आना, वरना चमचम के धोखे में फिर कोई उतार ले जाई। यह लो माचिस की डिब्बी, नहीं तो साफ बोतल में जरा-सा लेकर आना।" कंपाउंडर ने बाहर निकल उस लड़के के सर पर तड़ी मारते हुए कहा।



आज डॉ. चित्तरंजन के घर बैठक जमी है। कुछ नए-पुराने डॉक्टरों का वहां जमावड़ा है। सब अपने-अपने दिल के फफोले फोड़ रहे थे। इस बहाने वे कुछ दिनों के लिए ही सही अपना इलाज स्वयं कर लेते हैं, फिर ताजादम हो आगे की लड़ाई लड़ने की ऊर्जा अपने में जमा कर लेते हैं।

"जरा गौर करें...बरसात ने सूखे नाले और छोटे तालाब पानी से जरूर भर दिए हैं। जिनमें संक्रामक रोगों के कीटाणु भी कुछ सप्ताह बाद भारी मात्रा में पनप उठे हैं। मक्खी-मच्छर के छत्तों से पटा पानी भैंसों के नहाने और सुअरों के फिसलकर गिरने से भी पीने के काबिल नहीं रह पाता, मगर मजबूरी के चलते लोग उसमें बरतन, कपड़ा धोते हैं और वहीं से शौच इत्यादि के लिए पानी लेते हैं। कहीं-कहीं तो कूड़ा हाथों से उलचकर, नीचे का पानी साफ समझ, घड़ा भरकर घर भी ले जाते हैं। ऐसी जल-सुविधा वह भी मुफ्त! इसको आप क्या कहेंगे?" आई स्पेशलिस्ट डॉ. बख्शी ने आंखें तरेरकर कहा।

"आप ठीक कहते हैं। इस तरह की रिपोर्ट पढ़कर हमारे डॉ. कमाल का सर अकसर भिन्ना उठता है। लोगों को यदि हम बताएं भी जाकर कि यह पानी तुम्हारे अंदर के सारे अंगों में फंगस फैला देगा, बाहर खाल पर दाने और जख्म पैदा कर देगा, तुम साठ वर्ष जीने की जगह सिर्फ बीस वर्ष जी पाओगे...यह सब बताकर,

एक भय देकर भी क्या मिलेगा, जब साफ पानी की कोई व्यवस्था उनके लिए दूर-दूर तक नहीं है? क्या हमारा ज्ञान देना, सूचना उन तक पहुंचाना ही इन बीमारियों से मुक्ति का उपाय है जो नए पैदा बच्चों में जन्मजात रोग की तरह पनप रही हैं? एच.आई.वी. के आतंक के साथ फंड जलप्रपात की तरह एनजीओज की झोली में गिर रहे हैं, मगर इस खामोश तबाही की तरफ किसी भी देश या संस्था का ध्यान क्यों नहीं जाता है कि एक आम आदमी को यह अधिकार मिलना चाहिए कि वह साफ पानी का सेवन कर सके!" कैंसर स्पेशलिस्ट डॉ. कुलकर्णी भी आपे से बाहर थे।

"जबसे मैंने उस जवान औरत और उसकी छह साल की लड़की के बदन का बुरा हाल देखा है तबसे मैं आक्रोश में हूं। बिहार-यू.पी. में बाढ़ के पानी के कारण लोगों के पैरों के पंजों में पस पड़ते देखा था, मगर जो पस आंतों के जरिये बदन पर फूटता है उसका इलाज मरहम और इंजेक्शन तक सीमित नहीं है। लंबे इलाज का खर्च उठाने की भी तो इनमें सकत नहीं है, तभी पति ने उस औरत को छोड़ दिया! ऐसी हालत में वह कब तक अपने को जिंदा रख पाएगी? मैंने उस औरत की थोड़ी-बहुत मदद कर भी दी तो और सब जो इस तरह की बीमारियों से रात-दिन जूझ रहे हैं उनका क्या होने वाला है? हमारी मेडिकल रिपोर्ट, सर्वे, इनवेस्टीगेशन—खतरे से आगाह करने की यह सारी सूचनाएं किस काम की, जब इनको पढ़कर-समझकर भी किसी के कानों पर जूं नहीं रेंगती। आजादी मिले अरसा हो गया है मगर स्वतंत्र भारत में स्वच्छ पानी सबको बराबर से नहीं मिला है, उलटा, जिस गुलामी को हमने कभी नकारा था अब जल-प्रयोजना के चलते हम फिर उस दासता को सहर्ष स्वीकार कर रहे हैं! बहुराष्ट्रीय कंपनियां किस तरह अपना उल्लू सीधा कर रही हैं! जब यह षड्यंत्र हमारी समझ में आ रहा है तो उनके समझ में क्यों नहीं आ रहा है, जो ऐसे अनुबंध पर हस्ताक्षर करते हैं?" कमाल ने तेज स्वर में कहा।

"मुनाफा यार!" डॉ. सिंह ने सब कुछ सुनकर कहा।

"वही मुनाफा जो हम डॉक्टर पैथालॉजी लैब से लेते हैं। देख नहीं रहे हो, मशरूम की तरह उगती यह पैथालॉजी लैब, सिटी स्कैन, एम.आर.आई. जैसे टेस्ट हम लिख तो देते हैं प्रिस्क्रिप्शन पर, मगर क्या वास्तव में जानते हैं कि इसकी जरूरत भी थी या नहीं...केवल मुनाफे के लिए हम शुगर टेस्ट, यूरीन टेस्ट, ब्लड टेस्ट, यह टेस्ट, वह टेस्ट आदि करवाते रहते हैं। बीमारी कुछ निकले या न निकले, मगर हमें मुनाफा चाहिए! जब डॉक्टर बेईमानी पर उतर आए हों तो नेताओं से शिकवा कैसा?" डॉ. चित्तरंजन ने मजा लेते हुए कहा।

"लानत है उन डॉक्टरों पर जो ऐसा करते हैं!" डॉ. खालदा ने नफरत से नाक सिकोड़ी।

"तभी तो कहते हैं कि डॉक्टर और वकील या कहो, अस्पताल और अदालत—जो इस चक्कर में पड़ गया, उसका पिंड मरकर ही छूटा है!" डॉ. सिंह ने कहकहा लगाते हुए कहा।

"मुझे तो इस बात की फिक्र है कि कल किसानों को भी इन कंपनियों से पानी खरीदना पड़ सकता है और जब हमारे जल-स्रोतों पर से आम इंसान का अधिकार छिन जाएगा, उस समय बेजबान चरिंद व परिंद का क्या हाल होगा! वह अपनी प्यास कैसे और कहां से बुझाएंगे?" कमाल ने अपनी बात पर लौटते हुए चिंता व्यक्त की।

"तुम उस अस्पताल के बारे में सोचो, यदि खुल गया तो हम पानी कहां से लाएंगे?" डॉ. चित्तरंजन ने चुटकी ली, फिर आंख मार शरारत से बोला, "यार, पहले हम एक एन.आर.आई. की मदद से एक नदी खरीदते हैं। जब हम जलपति बन जाएंगे तब अस्पताल खालेंगे ताकि कमरे बनने, छत पड़ने से लेकर अस्पताल की सफाई-सुथराई में न केवल आराम रहे बल्कि बाथरूम और गुस्लखानों में भी टेप से मोटी धार गिरा करेगी। कर्मचारी कामचोरी नहीं कर पाएंगे और हम बोतलबंद पानी का साइड व्यापार कर अस्पताल का खर्चा निकाल लिया करेंगे!" इतना कह चित्तरंजन हँसते-हँसते चुप हो गया क्योंकि उसके इस मजाक पर कोई नहीं हँसा। वह खिसियाकर कान खुजाने लगा। उसी के साथ लोग उठने लगे और महफिल बरखास्त हुई।



इधर कई दिनों से बारिश का वेग क्रम हुआ था, मगर इसका मतलब यह नहीं था कि नल ने साफ पानी की धार गिरानी शुरू कर दी हो। चंदन हलवाई पर मुसीबत आन पड़ी थी। आज सुबह किसी शादी में पांच मेल की मिठाई सप्लाई करनी थी। सारे बरतन जूठे पड़े थे। नल ऐन मौके पर धोखा देकर अब मुंह सूखा लटकाए खड़ा था। दोपहर को एक दूसरा ऑर्डर था। उसको कैसे पूरा किया जाए—इस पर विचार-विमर्श चल रहा था। तंग आकर चंदन ने भट्ठी सुलगवाई और जूठी कड़ाहियों को तपा-तपाकर वह पुरानी धोतियों के चीथड़ों से मल-मलकर साफ करने लगा। उसके चेहरे से चिंता की लकीरें एक-एक करके गायब होने लगीं। उसके दोनों काम करने वाले यह देख मगन हो अपने काम में लग गए! रोज का काम भी निपटाना था, सो जलेबी छनने लगी! कचौड़ियों के लिए आटा गूंधने के साथ ही मसाला बनने लगा।

ग्राहक दुकान पर जुटने लगे थे। रोज से कुछ अधिक! पानी की कमी के कारण सभी ने तय कर लिया हो जैसे कि आज दही-जलेबी और कचौड़ी का नाश्ता करेंगे। एक बार चाय बनाने के बाद दोबारा केतली भट्ठी पर नहीं चढ़ पाई, क्योंकि पानी कम था और ऑर्डर का काम पूरा करना था सो बहुतों ने चाय की जगह गरम-गरम

दूध का सेवन कुल्हड़ में किया और बिना नहाए-धोए मुंह पर छींटे मार, कपड़े बदल, ऑफिस, दुकान पर अपनी ड्यूटी बजाने निकल पड़े। चंदन की पत्नी अंदर परेशान थी। रात को बचे पानी में से दो बाल्टी चंदन ने लड़का भेज दुकान पर मंगवा लिया था। अब एक बाल्टी पानी में वह क्या गूंधे और क्या पकाए? बच्चे पानी-पानी कर रहे थे। बड़ा बेटा गुस्से में खाली बाल्टी पटक रहा था। अच्छा-खासा शांतिमय घर कई तरह के शोर से भर उठा था। चाय पीकर अब सब नाश्ते और लंच पैकेट के इंतजार में थे!

"हम न खाबय ई सब!" बड़े लड़के ने गुस्से में जलेबी और कचौड़ी को देखकर कहा और किताबों से भरा बस्ता ले बाहर की ओर निकला। उसकी देखा-देखी दोनों छोटी लड़कियों ने भी मुंह बिचकाया और भाई के पीछे चलीं। हलवाइन के अंदर दबा आक्रोश फूट निकला और उसने मझली लड़की की पीठ पर घूंसा जड़ते हुए कहा, "कहां जात हो महारानी, थाली को ठोकर मार? बइठ जा दोनों जनीं, और खा चुपचाप!"

"भैया को कुछ नहीं बोलीं तुम?" छोटी ने पैर पटका।

"ओका शाम को बतइबय! हाथ से इ समय निकल गवा तो का? मगर शाम को हमार जोला देखना! अरे, पानी का कष्ट केवल हमरे घर में नहीं फाट पड़ा है जो हमका कुसूरवार बनाइ गवा, सारी गलियन मा सूखा पड़ा है। इ सरकार तो जबसे आई केवल कष्ट-ही-कष्ट जनता को दय रही है। कभी पानी नहीं, तो कभी बिजली नहीं, तो कभी..."

वह अभी इतना ही कह पाई थी कि चंदन अंदर आया और इधर-उधर देखते हुए बोला, "कुछ पानी बचाए हो तो देव!"

"बस पानी पिए का बचा है।" हलवाइन होंठ चबाकर बोली।

"बड़ी मुसीबत है सुसरी!" कहता चंदन बाहर दुकान की तरफ बढ़ गया। पिता को परेशान देख दोनों लड़कियों का रूठा चेहरा सहज हो उठा।

"अब सारा दिन देखो कैसे कटिए?" हलवाइन दुःख-भरे स्वर में बोली। बिखरे घर को देख उसने लंबी सांस खींची और जूठे बर्तन उठा आंगन में लगे नल के नीचे रखे।

दोने में जलेबी-कचौड़ी वैसे ही पड़ी थी जैसा बेटा छोड़ गया था। छत की मुंडेर पर बैठा बंदर बड़ी देर से बदन खुजाता ताक में बैठा था। हलवाइन जैसे ही अंदर कोठरी में गई, वह तेजी से नीचे उतरा और दोने उठाकर भागा। ऊपर जा उसने कचौड़ी का टुकड़ा जैसे ही दांत से काटा वैसे ही बंदरिया सीने से बच्चा चिपकाए पहुंच गई। दोनों ने छत पर बैठ मजे से जलेबी और कचौड़ी खाई। उधर हलवाइन बाहर निकली इस ख़याल से कि कुछ खाकर वह भी पानी पी ले, मगर वहां से दोना गायब देखकर

कुछ पल चकराई खड़ी रही, फिर ऊपर नजर दौड़ाई, मगर वहां कोई न था। वह अंगनाई में आई तो उसके सर पर आकर कुछ गिरा जो सर से होता नाक पर चू गया। घबराकर हाथ लगाया तो दही थी। सामने दोना पड़ा था। उसने गुस्से में नजर उठाई तो बंदर को दांत निकाले बैठा देखा। बरबस उसके मुंह से निकला, "खाय रहे तो फिर यह दोना हमरे सर पर काहे औंधाए हो, हनुमानजी? तू तो हमार जान कभी-कभी सुलगाय देत हो।" उसने मुंह बना कपड़े से नाक और सर पोंछा और रसोई में जा सामान समेटने लगी। फिर दाल-चावल निकालते हुए बोली, "आज तो बस खिचड़ी ही पकाए का पड़िहे!"

24

सितंबर शुरू होते ही घुटन, उमस और तेज धूप की चिलचिलाहट दम घोटने लगी थी। कुछ ऐसा ही मौसम शकरआरा अपने अंदर फैलता महसूस कर रही थीं। पिछले कुछ दिनों से वह कमाल को लेकर काफी फिक्रमंद रहने लगी थीं कि वह जैसा चाहती थीं, वैसी जिंदगी बेटे को नहीं दे पा रही हैं। इसी चिंता में वह घुल रही थीं कि ऐसा क्या करें जिससे कमाल इस शहर में वह इज्जत-दौलत हासिल कर ले जो उसकी लगन और मेहनत का सिला हो।

इस बेचैनी की वजह से वह सारी-सारी रात जागती रह जातीं। करवटें बदल-बदलकर रात किसी तरह गुजारतीं और अंधेरे मुंह उठ, नंगे पैर घास पर टहलतीं। इससे उन्हें राहत नसीब होती। आज बगीचे में हवा बड़ी सुहावनी चल रही थी। उन्होंने नीम के दरख्त के नीचे खड़े हो लंबी-लंबी सांस ली, ताकि फेफड़ों में आक्सीजन भर लें, फिर वह लान में पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। उजाला फैल गया था। आया ने चाय लाकर रखी और वह धीरे-धीरे उसके घूंट भरने लगीं।

"हाशिम!" जमाल खां की आवाज गूंजी।

शकरआरा अपनी जगह से उठीं। लॉन का एक चक्कर लगाया। पौधों का मुआयना कर वह बेडरूम में गईं जहां वह अपने पति के साथ दूसरी चाय की प्याली पीती हैं। जमाल ने रेडियो खोल खबरें सुनना शुरू कर दी थीं। खबरें खत्म होते ही उन्होंने रेडियो बंद किया और शकरआरा ने टी.वी. खोल लिया। चाय आ गई थी। जमाल की नींद पूरी तरह जब टूट गई तो शकरआरा ने बात की शुरुआत की।

"कमाल से उसके अस्पताल को लेकर आपकी कोई बातचीत हुई?"

"इधर तो नहीं...क्यों?"

"जिस तरह से वह अपनी कमाई का आधे से ज्यादा हिस्सा दूसरे लोगों पर उड़ा देता है, मुझे नहीं लगता है कि वह अपने लिए कुछ बचा पाएगा!"

"बचत की उसे जरूरत भी क्या है?"

"अस्पताल के लिए..."

"ओ...हां...समझा।"

"उसका ख्वाब तब तक पूरा नहीं हो पाएगा जब तक हम उसमें शरीक नहीं होते हैं।"

"तो यह कौन-सी बड़ी बात है। कल की जगह आज ही हम शरीक हुए जाते हैं।"

"नाम लिखवाकर नहीं, बल्कि चेक काटकर।"

"इतना बड़ा एमाउंट तो मेरे बैंक में नहीं है, मगर हां, लहू लगाकर शहीदों में शरीक हो जाऊंगा।" जमाल खान ने कुछ सोचते हुए कहा।

"जिधर आपका इशारा है उस रुपये पर तो हमारा बुढ़ापा गुजरेगा। बच्चों के सहारे जीना मुझे तो पसंद नहीं। सारे रिश्ते बदल जाते हैं। मैं तो कुछ और कहने वाली थी, मगर डरती हूं, आप बुरा न मान जाएं।"

"देखो केतली में चाय हो तो एक प्याली और देना।" जमाल खां ने कहा।

"दूसरी बनवाती हूं। यह ठंडी हो गई है।" इतना कह उन्होंने घंटी बजा दूसरी चाय लाने को कहा, फिर चुपचाप बैठ अपने नाखूनों को देखने लगीं। दिल-ही-दिल में सोच रही थीं कि कहीं मैं तंदूर में हाथ डालने या ज्वालामुखी को छेड़ने तो नहीं जा रही हूं? अगर ऐसा हुआ तो बहुत बुरा होगा। घर का माहौल फिर एक 'ठंडी जंग' में बदल जाएगा। यह सब अब इस उम्र में झेलना मेरे बस की बात नहीं है।

जमाल खां पीठ के पीछे तकिया लगाए पत्नी के चेहरे पर बदलते भावों को आते-जाते देख रहे थे कि यह कैसा परिवर्तन आया है शकर में—वह अपनी बात कहने से पहले इतना सोच-विचार कर रही हैं! मामले को तौल रही हैं। बेजा कहने से झिझक रही हैं, जबकि पहले तो वह हथौड़ा चला या फिर मुगदर ही घुमाकर सर पर दे मारती थीं। उम्र भी क्या इतना फर्क मिजाज में ला सकती है?

"कुछ कहोगी या फिर यूं चुप का रोजा रखे बैठी रहोगी।"

"मुझे डर है कि आप कहीं मुझे गलत न समझ लें...हमारा एक ही तो बेटा है...बेटियां अपने घर खुश हैं। बेटे-बहू की खुशी में ही हमारी खुशी है।"

"इतनी बड़ी तमहीद काहे बांध रही हो? जो कहना है कहो, मेरा यकीन मानो कि मैं खफा होने वाला नहीं हूं! मगर हां, इतना बता देता हूं कि बात मानने वाली

हुई तो मानूंगा वरना नहीं।" जमाल खां ने फैसला सुना दिया जिसको सुनकर शकरआरा के चेहरे का रंग बदल गया। उदास स्वर में बोलीं–

"फिर अपनी बात कहने का फायदा क्या, जब उसका मान न रखा जाए?"

"ऐसी कौन-सी बात है जो तुम्हारा चमकता चेहरा उतर गया?" अजीब हँसी हँसे जमाल फिर उठते हुए बोले, 'पहेलियां न बुझाओ, जो कहना है, कहकर खत्म करो। कहने वाले में अपनी बात कहने की हिम्मत होनी चाहिए। अंजाम से डरने वाला खुद अपनी बात पर यकीन नहीं रखता। इसलिए जब तुम्हारा इरादा पुख्ता हो जाए तब कह देना।"

इतना कह जमाल कमरे से बाहर की तरफ बढ़े ही थे कि शकरआरा एकाएक बोल उठीं, "मुस्तफाबाद की जायदाद बेच नहीं सकते, आप?"

"क्या?" जमाल के बढ़ते कदम ठिठक गए।

"हां, उसकी कीमत से हम कमाल की मदद कर सकते हैं।"

"वह मौरूसी जमीन है?" जमाल खां की आंखों में भय-मिश्रित आश्चर्य था।

"जवाब, लिल्लाह, अभी न दें...सोचकर दें।" इतना कह तेजी से उठ शकरआरा कमरे से बाहर निकल गई।

जमाल खां कमरे में लौट आए और बिस्तर पर बैठकर सोचने लगे कि आखिर शकरआरा हर बार मेरे जज्बात का इम्तहान क्यों लेती हैं–कभी मां और अपने बीच रखकर तो कभी बेटे और खानदानी जमीन-जायदाद को बीच में लाकर?

हाशिम गरम चाय की ट्रे लेकर कमरे में दाखिल हुआ और चाय बना प्याली साइड टेबल पर रखकर चला गया। उन्होंने गहरी लंबी सांस ली और प्याली उठाकर चाय का घूंट भरा। मां का चेहरा आंखों के सामने कौंध गया। अब्बाजान के सालाना फातिहे में जब वह मुस्तफाबाद गए थे तो अम्मा ने चलते हुए कहा था–'जामुन बेटे! अपने जीते-जी यह जायदाद न बेचना, तुम्हारी बेगम को गांव में रहना पसंद नहीं, फिर अब तो माशाअल्लाह, सारी औलादें शहर में पढ़ रही हैं। लेकिन तुम अपना रिश्ता अपने बाप-दादा के गांव से न तोड़ना। तुम्हारा रिश्ता बना रहेगा तो मैं भी कब्र में चैन से रहूंगी कि तुम मेरी कब्र पर फातिहा पढ़ने आओगे। तुम्हारे बाद कमाल क्या करता है, वह मेरी उलझन नहीं है। तुम उसके बाप हो, तुम्हारा हक उस पर बनता है। मैं तो दादी हूं। कल वह जायदाद बेचे या बांटे, यह मेरे लिए कोई मसला नहीं है। अच्छे-अच्छे इस फानी दुनिया में फना हुए तो फिर मैं क्या और तुम क्या! मगर बेटे, तुम्हारे रहते-रहते यह सब उजड़ना नहीं चाहिए। यह वायदा मैंने तुम्हारे बाबा से किया था।'

जमाल खां की आंखों के कोर नम हो गए। अम्मा की कही बातों पर चलकर न चाहते हुए भी वह आम, अमरूद के बागों की देखरेख करते रहे। जब तक नौकरी रही, कभी-कभार जाना रहता और अब रिटायरमेंट के बाद कई-कई दिन वहां जाकर ठहर जाते थे। पहले जिन बातों से उन्हें सख्त चिढ़ होती थी वही बातें सुनने में उन्हें मजा आता है। उनके दादा क्या करते थे, क्या सोचते थे, कैसा लिबास पहनते और अब्बाजान का उनसे क्या रिश्ता था; अम्मा को ब्याहने में क्या-क्या अड़चनें आईं क्योंकि उनका खानदान शहर में पढ़ने वाले लड़के के साथ अपनी बेटी नहीं ब्याहना चाहता था...अजीब तरह की अफवाहें थीं, जैसे, पैंट-कोट पहनने वाले ईसाई हो जाते हैं। अंग्रेजी बोलने के साथ सुअर का गोश्त खाने लगते हैं। अंग्रेजों की गुलामी में उनसे उपजी नफरत की अनेक अभिव्यक्तियां थीं...पहले इधर खेत-ही-खेत थे। अब वहां स्कूल हैं। उधर एक बड़ा तालाब था। सूख गया तो सरकार ने उस पर कब्जा जमा लिया और दफ्तर खोल दिए। पहले बिजली न थी अब घर-घर टी.वी., पंखा, कूलर, टेलीफोन है...जमाल खां से लोगों का हौसला बना रहता है, वरना तो लड़के या तो बाहर शहरों में नौकरी कर रच-बस रहे है या फिर खेती से उनका दिल हट रहा है और वह विदेश जाकर रुपया कमाना चाहते हैं...ऐसी स्थिति में वह सब कुछ बेच दें! और...

जमाल को लगा कि उनका ब्लडप्रेशर बढ़ रहा है। सर में हलका दर्द शुरू हो गया था। चेहरे पर गरम-गरम-सी भाप उठती महसूस हुई और माथे पर पसीना छलक आया। उन्होंने साइड टेबल की दराज से दवा निकालकर खाई और बिस्तर पर आंखें बंद करके लेट गए। जितना वह पुरानी यादों से भागना चाह रहे थे उतना ही वह यादें उनके जहन में ऊधम मचा रही थीं। एकाएक उन्हें खयाल गुजरा—'क्या उन्हें उस जमीन-जायदाद से प्यार है या फिर उन यादों से, जो उस धरती से जुड़ी हैं?'

जमाल को इस सवाल का जवाब भी नहीं मिलता है। दोनों सवाल एक-दूसरे से गुंथकर एक हो जाते हैं और उस ख्वाहिश में बदल जाते हैं जो उनकी मां की थीं, जिनकी खिदमत उन्होंने उस तरह नहीं की जैसी उन्हें करनी चाहिए थी! हां उनकी देख-रेख में कोई कमी नहीं रखी। उनको पोतों-पोतियों से भरे घर की उस खुशी से महरूम रखा जो बुढ़ापे के लिए आब-ए-हयात होती है। वह आबाई घर में तनहा, नौकरों के संग रहती। बिरादरी की बहुओं और पड़ोसियों की औलादों में अपना प्यार बा्ंटती, उनसे उस सुख को पाती जो उन्हें शकरआरा दे सकती थीं, मगर शकरआरा को यह मंजूर न था। एक बार उन्होंने बहुत आजिज आकर मां के कदमों पर सर रखकर कहा था, 'अम्मी, मैं तलाक देने को राजी हूं। मुझसे आपके आंसू नहीं देखे जाते...'

उन्हें याद है—अम्मा ने उसके बाद शकरआरा के खिलाफ बोलना और शिकायत

करना बंद कर दिया था, फिर भी एकतरफा लड़ाई जारी रहती। शकरआरा मुझे पूरा हासिल करना चाहती थीं। मेरे हर पल पर काबिज होना चाहती थीं। जो मेरे लिए मुमकिन नहीं था, जिसके चलते वह तानों के तीर हवा में फेंकती थीं। जब मैं अम्मा के पास से आता तो वह अजीब खूंखार नजरों से घूरतीं और मैं अंदर से लहूलुहान हो जाता और अम्मा की उस पसंद पर गुस्सा हो उठता कि उन्होंने क्यों छोटी बहन की सीरत की जगह बड़ी बहन की सूरत को पसंद किया था? आज वह सूरत चांद की तरह शीतल चांदनी घर में नहीं बिखेरती, बल्कि एक सुलगता अलाव जलाए रखती है, जिसका नाम 'जलन' है। वह अम्मा के मुकाबले में क्यों आन खड़ी हो जाती है?

अम्मा की खामोशी दिन-ब-दिन गहरी होती चली गई। यहां तक कि बच्चों को उनके पास जाने की मनाही पर भी उन्होंने जबान न खोली। वह शकरआरा को खुला मैदान देकर एक किनारे हट गई थीं कि खेलो, जी भरकर खेलो। मुझे अपने बेटे की गृहस्थी नहीं उजाड़नी है। तलाक की लानत को बच्चों के सर नहीं डालना है, इसलिए खेलो। इस इबारत को जमाल खां ने अम्मा की बेबस आंखों में कई बार पढ़ा था और तड़पकर रह गए थे। उनके सामने अपने बच्चों का मसला था। जो उनके सख्त कदम उठाने पर बिना मां के हो जाएंगे। जब-जब उन्होंने शकरआरा को समझाने की कोशिश की तब-तब बात और बिगड़ी। वह जिद्दी थीं। मगरूर थीं। उनको अपनी बात ऊपर रखने का जुनून था, मगर एक बात बड़ी अजीब थी कि जब-जब वह किसी बात पर चिरागपा होतीं, चीखती-चिल्लातीं, बाद में पछतावे की आग में उसी शिद्दत से जलतीं, मगर उन्हें यह गवारा न था कि वह अपनी हार मान लें और माफ़ी मांग लें। इस ज्वालामुखी के धधकने और फिर शांत होने से अकसर शकरआरा पर गहरी उदासी के दौरे पड़ने लगे थे। यह एक नई मुसीबत थी जिसे अकेले जमाल खां को ही झेलना पड़ता था।

गांव में शादी पड़ी। अम्मा ने उसमें शिरकत की ख्वाहिश जाहिर की, मगर जमाल खां यह नहीं समझ पाए थे कि अम्मा हमेशा के लिए यह कोठी छोड़कर जा रही हैं, जो उन्होंने बड़े चाव से बनवाई थी। और अम्मा गईं तो फिर गांव से नहीं लौटीं। उस पुराने घर की मरम्मत करा जमाल खां ने मां के लिए उसे आरामदेह बना दिया था, मगर गांव और शहर का फर्क उन्हें मालूम था। खासकर उस मां के लिए जो महफिलें करने की शौकीन थीं, किसी-न-किसी बहाने मिलने-मिलाने का मौका ढूंढ़ निकालती थीं। इस शहर में उन्हें प्यार करने वालों की कमी न थी, मगर वही मां गांव के उस घर में कैद हो गई थीं। कुरान और खुदा के अलावा उनका कोई दूसरा साथी न था जिससे वह अपना दर्देदिल कहती हों।

जमाल का दिल जब कुछ संभला तो उठकर बाथरूम की तरफ गए, ताकि नहाने के बाद वह अपने को कुछ चुस्त-सा महसूस करें और एक चक्कर सिविल

लाइंस की तरफ लगा, दोस्तों के बीच बैठ दिल बहला सकें। कहने को यह बात बड़ी मामूली थी जो शकरआरा ने कही थी—चीजें खरीदी और बेची जाती हैं, मगर चीजों से बावस्ता जो यादें होती हैं उनके बीच से जो जख्मों की पगडंडियां डेल्टा में बदल जाती हैं, जो आपकी यादों के समुद्र का हिस्सा बन जाती हैं, जो आपकी जिंदगी को एक सुरक्षा प्रदान करती हैं, दरहकीकत सवाल उनका होता है। दीवार की एक ईट सरकने का अर्थ है—पूरी दीवार का कमजोर पड़ जाना। इंसान के जज्बात भी कुछ कम और ज्यादा होने से बेकाबू हो उठते हैं। उसी अहसास को काबू में करना है। उन यादों को एक ऐसी मंजिल तक ले जाना है, जहां उनका रास्ता नया हो न कि भूलभुलैया बन जाए, बल्कि वह उसका अगला पड़ाव हो, मगर यह कैसे संभव होगा?

जमाल खां खामोशी से नाश्ता करते रहे। शकरआरा ने भी मियां को छेड़ना मुनासिब नहीं समझा और सर झुकाकर चाय पीती रहीं। मियां के जाने के बाद उन्होंने आया को दोपहर के खाने के लिए बताया कि क्या पकेगा फिर वह गुस्लखाने में घुस गईं। काफी देर तक नहाती रहीं। जब जी हलका हुआ तो उन्होंने कपड़े पहने और खुरशीदआरा को फोन करने के बारे में सोचने लगीं। उनकी भी आबाई कोठी अब वीराने में बदल चुकी है। उसको बेच डालना ही मुनासिब है, मगर बिना खुरशीदआरा की मरजी लिए यह मुमकिन भी नहीं है। बात करने से पहले वह मजमून तलाश कर रही थीं, ताकि बहन को यह भी पता न चले कि पैसे की जरूरत के चलते बाप का मकान बेचने पर शकरआरा उतारू हो गई हैं। जबकि अपनी दौलत का बखान जब-तब करती रहती हैं। एक बार शान में आकर उन्होंने कह भी दिया था कि वह कोठी तुम्हें ही मुबारक हो। मुझे अब्बा की छोड़ी हुई चीजों का लालच कतई नहीं है। अपने पास तो ससुराल की जायदाद ही बहुतेरी है, फिर मायके का झंझट कौन पाले? ऐसी बातों के बाद अब उस कोठी का जिक्र कैसे करें? फोन पर तो मुमकिन नहीं। हां, आमने-सामने बैठ बातों से बात निकाली जा सकती है। यह लौट आएं तो शाम को एक चक्कर मैं खुरशीद के यहां का लगाके आती हूं। वह मेरे जाने से खुश हो जाएगी। है भी तो जज्बाती किस्म की।



शाम ढल रही थी। खुरशीद बैठी सब्जी काट रही थीं। दरवाजे की घंटी बजी। बुआ ने उठकर दरवाजा खोला। सामने शकरआरा को देखकर चौंकीं और खुशी से चीखीं।

"दुलहिन बी, देखो तो कौन आया?"

"अरे, आपा! आप? वाट अ सरप्राइज?" जल्दी से छुरी थाली पर रखकर खुरशीदआरा खड़ी हुईं और लपककर बहन के गले लगीं।

"मैंने सोचा, जब तुम्हें मेरा खयाल नहीं तो मुझे ही एकाएक जाकर तुम्हें चौंकाना चाहिए।" बड़ी अदा से शकरआरा बोलीं।

"ऐसा नहीं है, आपा। आप सबकी याद आती है मगर..." जज्बात ने आगे और कुछ कहने पर रोक लगा दी।

"तुम्हें आज सब्जी काटती देख अम्मा की याद आ गई। वह भी मरहूमा, उन्हें जन्नत नसीब हो, बिलकुल इसी तरह खाने की मेज पर सब्जी सजाकर बैठती थीं। याद है न?"

"हां, क्यों नहीं...मां की यादें तो उम्र के साथ गहरी होती जाती हैं। उन्हें भूलना बड़ा मुश्किल काम है।" खुरशीदआरा का सूना दिल इस तरह की बातों का भूखा था।

"और बुआ, आप कैसी हैं?" शकरआरा ने अपनी कीमती साड़ी का पल्लू संभाला।

"आपकी दुआ है...आज कई बरस बाद आपको इस घर में देखकर दिल खुश होय गवा, बड़ी बेगम।" बुआ ने खुशदिली से जवाब दिया।

"अब तुम्हीं फैसला करो बुआ, मैं बड़ी हूं रिश्ते में, ऊपर से घर की जिम्मेदारी मगर ईमान से कहना, खुरशीदआरा उम्र में छोटी, जिम्मेदारियों से आजाद तो इसको मुझे मिलने आना चाहिए न! मगर इसने तो तनहाई को अपने गले लगा लिया है। जिंदों को छोड़कर मुर्दों को सीने से चिपकाए है...बोलो बुआ! मैं क्या झूठ बोल रही हूं।" अपनेपन से शकरआरा बोलीं।

"नहीं बीबी! आप क्यों झूठ बोलने लगीं। दुलहिन बी को निकलना तो चाहिए।" कुछ उदासी-भरे स्वर में बुआ ने कहा और अजीब नजरों से उन्होंने खुरशीदआरा को देखा जिनका चेहरा धुआं-धुआं हो उठा था।

"देखा! एकदम अम्मा पर पड़ी हो। घर से निकलना गुनाह समझती हो।"

"आपा, आज आप उलटी बात कर रही हैं। आपको अम्मा पर और हमें अब्बा पर पड़ा कहा जाता था। तभी तो मैं अब्बा की तरह सांवली और खामोश तबीयत की हूं।" अपने पर काबू पा खुरशीद ने कहा।

"का बनावें, दुलहिन बी...शरबत, चाय या कॉफी?" बुआ ने मौका देखते ही पूछा।

"हां आपा, बताएं क्या पिएंगी?" खुरशीदआरा ने पूछा।

"कॉफी।" शकरआरा ने बड़े स्टाइल से कहा।

"अभी बनाती हूं।" कहती बुआ कमरे से बाहर निकलीं।

"घर तो तुमने खूब सजाकर रखा है। लगता है कि जमीर अब्बास बस, आने ही वाले हैं। जिंदगी से भरपूर घर इसी को कहते हैं।" इतना कहकर वह रुकीं फिर झट से बोल उठीं, "काश! हमारे बचपन का घर भी कोई इसी तरह संभालकर रखता! सुना है, पूरे बंगले का हाल बुरा है। चारों तरफ जंगली घास से भर गया है।"

"हां आपा, किसी भी जगह की खूबसूरती वहां के लोग होते हैं। जब रहने वाले ही चल बसे हों तो...आपने तो जबसे कागज यह कहकर रख लिए थे कि इस बंगले की देखभाल मैं करूंगी, तबसे मुझे इत्मीनान हो गया था।" खुरशीदआरा ने जैसे सफाई दी हो।

"हां, कहा तो था मैंने...बस रह ही गई जिम्मेदारी पूरी करनी...अब चाहती हूं कि कोताही को पूरा करूं। हम दोनों ही अब उम्र के उस दौर में हैं कि जिंदगी पर ज्यादा भरोसा नहीं कर सकते हैं। कई दिनों से अम्मी, अब्बा ख्वाब में आ रहे हैं। मैं परेशान थी कि आखिर बात क्या है? फातिहा दिलवाया, मगर कल रात जब वह फिर ख्वाब में आए तो मैंने सोचा कि तुमसे जाकर मिलूं और सलाह-मशवरा करूं कि हम को बंगले को लेकर करना क्या चाहिए?"

"मैं तो शुरू से कह रही हूं आपसे कि उस कोठी को उठाकर किसी अंजुमन को दे दें या फिर किसी स्कूल को..."

"तुम तो बदले वक्त का हाल जानती हो। मुफ्त का धन और दान की जायदाद का दर्द किसी के दिल में नहीं होता है और अखबार में खबरें तो पढ़ रही हो, कैसी धांधली चल रही है!"

"यह तो है, आपा। जमाल भाई से इस सिलसिले में बात की आपने?"

"नहीं, यह हमारा घर है। हम दोनों ही फैसला करेंगे।"

"फिर आपने कुछ सोचा?"

"मैं तो चाहती हूं, उसे बेच दिया जाए और जो रकम मिले उसे आधा-आधा बांट लें और जिस तरह चाहें, खर्च करें।" शकरआरा अपनी बात फर्राटे से कह गईं।

खुरशीद का चेहरा फक हो गया।

"मां-बाप का मकान बेचना...हिम्मत चाहिए।" फीकी हँसी के साथ खुरशीदआरा बोलीं।

"कल कोई राह-चलता उस पर कब्जा कर लेगा और उलटे-सीधे तरीके से उसका इस्तेमाल करेगा, तो यह सब सुनकर भी हमें रंज पहुंचेगा। घर किन्हीं अच्छे लोगों के हाथ बिका तो चहल-पहल होगी। शाम चिराग-बत्ती होगी, कम-से-कम भूत का डेरा बनकर तो नहीं रहेगा।" शकरआरा ने पासा पलटा।

"जैसी आपकी मर्जी। बरेली हममें से जाता भी कौन है? आपकी राय दुरुस्त है।" खुरशीदआरा ने हथियार डालते हुए कहा।

इसके बाद काफी देर शकरआरा बहन के साथ बैठी खानदानवालों को याद करती रहीं। कभी हँसती, कभी नम आंखें पोंछती बातों में मगन रहीं। चलते वक्त अपनी जीत की खुशी में उन्होंने बहन को लिपटकर प्यार किया और दोबारा आने को कहकर चली गईं। कच्ची सड़क से नजाकत से साड़ी उठाए उन्हें जाते खुरशीदआरा खिड़की से देखती रहीं।

कार में बैठने से पहले शकरआरा ने हाथ उठाकर हिलाया और बैठते हुए मन-ही-मन में कहा—'आधा तो मेरा होगा, मगर तुम्हारा आधा भी मेरे ही हिस्से में आएगा। आखिर कमाल तुम्हारा दामाद है। अपनी बेटी की खुशी के लिए तुम 'न' नहीं कर पाओगी, खुरशीदआरा।' शकरआरा मुस्कराई और पर्स से लिपस्टिक और आईना निकाल उन्होंने अपना मेकअप ठीक किया।

25

घर में एक खामोश संवाद की तनातनी को कमाल ने महसूस कर लिया था। यह सोचकर वह चुप रहा कि हमेशा की तरह अम्मी और अब्बी में किसी बात पर टकराहट हो गई है, जो कुछ दिनों बाद खुद-ब-खुद ठीक हो जाएगी, मगर आज पूरे दो हफ्ते गुजर चुके थे। अब्बी की उदासी में कमी नहीं आई थी। वह किसी गहरी सोच में डूबे रहते और खाने की मेज पर बड़ी बेदिली से खाना खाकर उठ जाते, फिर अपनी ईजी चेयर पर बैठकर किसी किताब में डूब जाते थे। आज कमाल से नहीं रहा गया तो उसने अम्मी से पूछ ही लिया—

"क्या बात है अम्मी, अब्बी बहुत बुझे-बुझे से रहते हैं! तबीयत तो ठीक है?"

"डॉक्टर होकर उनकी तबीयत का हाल मुझसे पूछ रहे हो?"

"मेरा इशारा आप समझ रही हैं...बात टालने की कोशिश न कीजिए। मैं कई दिनों से नोट कर रहा हूं कि उनमें और आपमें बातचीत नहीं हो रही है।"

"अब कितनी बातें करें, बेटा! सारी उम्र गुजर गई। आखिर बातों का जखीरा कभी तो खत्म होगा न?"

"आपने जरूर अपनी किसी बात से अब्बी को गहरी चोट पहुचाई है। बताइए न?"

"पता नहीं क्यों हर किसी के दिल पर लगी चोट का इल्जाम मुझ पर आ जाता है। कभी किसी ने सोचने की जहमत गवारा की है कि चोट खाने वाले की सोच और नजरिये में भी कोई खराबी हो सकती है?"

"मेरा अंदाजा सही निकला...अब बताइए न वरना मैं सारी रात यूं ही बैठा आपसे पूछता रहूंगा कि आपके बीच हुई 'कोल्डवार' की वजह क्या है?"

"अजीब हठ है तुम्हारा!" तुनक गई शकरआरा।

"तुम्हें कुछ पता है?" कमाल ने समीना से पूछा।

"नहीं कमाल! मैंने तो ऐसा कुछ महसूस नहीं किया!" समीना ने इस सिलसिले से अपना पल्ला झाड़ना ही मुनासिब समझा।

"आप यूं उठकर नहीं जा सकती हैं। आपको मेरे सर की कसम है, अम्मी!" कमाल के चेहरे पर गंभीरता फैल गई थी।

"ठीक है, बाहर बैठते हैं। आया, तीन कॉफी बनाना!" इतना कहकर शकरआरा ने उठकर सिंक पर हाथ धोया और खाने के कमरे से निकल बाहर बरामदे की तरफ बढ़ीं।

"मुझे कॉपी चेक करनी है, तुम चलो मैं कुछ देर बाद आती हूं।" इतना कह समीना किचन की तरफ बढ़ी और चार प्यालियों में कॉफी फेंटते हुए वह सोच रही थी कि अम्मी ने बेटे के चलते जो शर्त शौहर के सामने रख दी है, वह उनके लिए बहुत सख्त है।

"कॉफी, बड़े अब्बी!" समीना उनके सामने प्याला रख मुड़ी और तेजी से अपने कमरे की तरफ बढ़ी। उसे डर था कि वह कहीं कुछ पूछ न बैठें।

कमाल और शकरआरा आमने-सामने बैठे कॉफी का घूंट भरते रहे। कमाल मां के चेहरे पर बदलते भावों को गौर से देख रहा था। शकरआरा सामने बाग में फैले अंधेरे में शायद कुछ तलाश कर रही थीं, तभी टकटकी बांधे वह एकटक सामने नजरें गड़ाए थीं। कमाल बचपन से मां-बाप की झड़पें देखता आया था। घर में मचे कोहराम से वह कभी-कभी तंग आ जाता था। बड़ी-मंझली डर जातीं और कोने में दुबक जाती थीं। दादी के गांव जाने के बाद लड़ाई में कमी आई थी, मगर अम्मी को अब्बी का उन्हें देखने जाना कभी पसंद नहीं आया और तब से शीतयुद्ध की शुरुआत घर में चल पड़ी! अम्मी मुंह फुलाए रहतीं। अब्बी उन्हें मनाते और रिश्वत में तोहफे और उन्हें घुमाने ले जाने का प्रोग्राम बनाते। और तीसरी अवस्था यह कि अम्मी किसी हुक्मरां की तरह अपनी मर्जी चलाती घूमती रहतीं और अब्बी खामोशी ओढ़ घर में न रहने जैसी मुद्रा में आ जाते, मगर इस बार...

"हां, तो तुम अपने प्यारे अब्बी के लिए परेशान हो न?"

"जी।" कमाल ने दृढ़ स्वर में कहा।

"जानना चाहते हो कि वह हमसे अलग-थलग हो अपनी दुनिया में क्यों डूबे रहते हैं?"

"जी!"

"वह हमेशा से मुझे वैंप की तरह घर-बाहर पेश करते आए हैं। उन्होंने कभी मेरी मर्जी, मेरी राय की कद्र नहीं की, बस मेरे और अपनी मां के बीच में उन्होंने गहरी खाई खोदने का काम किया, जिसकी वजह से हम कभी नहीं मिल पाए। उन सारी बातों का खतावार मुझे ही समझा जाता है क्योंकि मैं बोल देती हूं। अपना गुस्सा, प्यार, झुंझलाहट दबाकर एक झूठा परपंच कायम नहीं करती हूं। जो सोचती हूं वह बिना किसी लाग-लपट के बयान कर देती हूं। इस साफगोई ने मुझे हमेशा सूली पर चढ़ाया है। बुरा बनकर जीना मुझे कभी अच्छा नहीं लगा!" इतना कहते-कहते शकरआरा की आवाज भर्रा गई।

"अम्मी!" कमाल ने हाथ बढ़ाकर मां की हथेलियां पकड़ लीं। उसने मां का यह कमजोर रूप जिंदगी में पहली बार देखा था।

"बचपन में हमेशा अम्मा-अब्बा ने मुझे मुजरिम करार दिया। स्कूल-कॉलेज में टीचर्स हमेशा मुझे नसीहत करतीं कि छोटी बहन खुरशीदआरा की तरह बनो! बड़ी बहन के लिए रात-दिन एक ही जुमला सुनते जाना कितना भारी पड़ता है, उस बेइज्जती का अंदाजा कभी किसी ने अपने को मेरी जगह रखकर नहीं किया। मेरे जुमले सबको याद रह जाते मगर दूसरों का कहा कभी किसी को याद नहीं रहता था कि जैसा सवाल होगा, जवाब वैसा ही तो निकलकर आएगा...खैर, यह सब छोड़ो।" इतना कह शकरआरा ने आंखों में भरे आंसुओं को पिया और कुछ देर अपने को सहज बनाने में चुप रहीं।

हाशिम जूठे प्याले उठाने आया।

"आप कॉफी और लेंगी!" कमाल ने उनकी हथेली दबाते हुए मुस्कराकर पूछा। उसकी इस अदा पर शकरआरा हँस पड़ीं।

"दो गरम कॉफी!" कमाल में बचपना उभर आया था।

"अब तुम्हें जो जानना है वह बताती हूं कि तुम्हारे अब्बी क्यों गुमसुम हैं! मैंने उनसे मुस्तफाबाद की जायदाद बेचने की बात कही थी, ताकि उनका इस तरह बार-बार गांव की तरफ जाना बंद हो। हर बार वहां के पानी से पेट खराब करके लौटते हैं, फिर उनकी उम्र, धीरे-धीरे ही सही, बढ़ तो रही है!"

"आप सब कुछ जानते हुए इतना मुश्किल फैसला करने की उम्मीद अब्बी से क्यों करती हैं, अम्मी?"

"इसलिए कि मैं चाहती हूं कि अस्पताल जल्द-से-जल्द खुले।"

"आप मेरे लिए...आखिर..." कमाल इस जवाब की उम्मीद नहीं कर रहा था। मां का हाथ छोड़ वह कुर्सी के पीछे पीठ लगाकर सीधे बैठ गया। उसके चेहरे पर उलझाव था। वह मां के इस प्यार से खुश हो या फिर अब्बी के जज्बात को गहरी ठेस लगने से नाखुश हो?

"अस्पताल बनेगा तो लाखों को फायदा होगा। तुम्हारे पुरखों की रूह भी खुश होगी, क्योंकि यह खैरात का नहीं बल्कि नेकी का काम है, जिसमें जरूरतमंदों की खिदमत शामिल है। मगर घर, खेत, बाग को देखना, थोड़ी-बहुत फसल को बांट देने से बात इतनी नहीं बनती है। आखिर मैंने भी तो बरेलीवाला मकान बेचने की बात शुरू कर दी है। खुरशीद राजी है! हम दो बहनें सारी कड़वाहट के बावजूद इस मुद्दे पर एक हैं कि उस घर को खाली रखकर क्या हासिल होगा, मगर तुम्हारे अब्बी अपनी सारी मोहब्बत और मेहरबानियों के बावजूद यह नुकता समझ नहीं पा रहे हैं और मेरी बात को दिल पर लगा बैठे हैं।" शकरआरा ने अपना एतराज दर्ज करते हुए बेटे से कहा।

"अम्मी, आप के खयालात सुनकर बहुत अच्छा लगा, मगर...आबाई जायदाद बेचकर अस्पताल खोलने की बात मुझे पसंद नहीं आई! अब्बी नहीं चाहते कि उनके जीते-जी उनका बचपन उनसे कट जाए; उनकी यादें उनसे छीन ली जाएं। यह उन पर जुल्म होगा! उनका गम में डूबना इसी बात की दलील है। अब, अम्मी, आपको मेरी जान की कसम है जो फिर अब्बी से आपने इस सिलसिले में बात की...आप किसी तरह यह बात खत्म करें...आप दोनों खुश रहते हैं, चहकते रहते हैं तो मैं अपने को अंदर से बहुत मजबूत पाता हूं। फिर अम्मी! आपको अपने बेटे पर भरोसा रखना चाहिए कि वह एक दिन अपनी कमाई से अपना ख्वाब पूरा करेगा!" इतना कहकर कमाल ने शकरआरा के दोनों गाल थपथपाए।

शकरआरा ने बेटे का हाथ चूमा और आंखों से लगाया।

"ठीक है, मैं तुमसे वायदा करती हूं।" शकरआरा के यह कहने पर कमाल ने घुटनों के बल बैठ अपना सर मां की गोद में रख दिया।

"गरम कॉफी!" कहती हुई समीना बरामदे में दाखिल हुई और ट्रे मेज पर रख उसने अखरोट के केक की प्लेट आगे बढ़ाई।

"यह कब बनाया?" शकरआरा ने हैरत से बहू को देखा।

"शाम को..." गुनगुनाकर समीना बोली!

"मैं तुम्हारे अब्बी को बुलाकर लाती हूं।" कभी न झुकने वाली शकरआरा का यूं उठकर जाना देख समीना का मुंह खुला-का-खुला रह गया और कमाल कई बार पलकें झपकाकर समीना को देखने लगा। फिर दोनों हलके से मुस्करा उठे!



खुरशीदआरा को बरेली के मकान का बिकना अच्छा नहीं लग रहा था। सारी रात वह करवटें बदलती रहीं। कमरे, आंगन, छत की अनेक छवियां उनकी आंखों के सामने से गुजर रही थीं। अम्मा-अब्बा का उठना-बैठना, अपना और शकरआरा का उछलना-कूदना और सबसे हटकर बड़े-से तोते का वह पिंजरा जो बाहर बरामदे में टंगा रहता था...आहट मिलते ही वह चीखने लगता था...

"मंजूर बेटे! दरवाजा खोलो! अब्दुल बेटे, दरवाजा खोलो!"

"खोलता हूं मेरे अब्बा!" मंजूर तोते को जवाब देता।

उस तोते को नानी ने उनके लिए आजमगढ़ से भेजा था। जब वह आया था तो जोर-जोर से चीखता था। शकरआरा...खुरशीदआरा, उठो...शकरआरा, खुरशीदआरा उठो! उसकी आवाज सुबह पांच बजे से घर में गूंजने लगती थी। नानी ने उसको सिखाकर भेजा था ताकि हम दोनों की सुबह उठने की आदत बन जाए, मगर उसके शोर से सबका सोना हराम हो जाता था। अगर उससे कोई खुश था तो दादीजान! नमाज पढ़कर जब वह उठतीं तो उसकी चिल्लाहट सुनकर उसे हरा मिर्चा देते हुए कहतीं, "अरे दीवाने! अभी घर में सोता पड़ा है, तू भी चुप हो जा! और घंटे-भर बाद चीखना, तब सब जागेंगे!"

खुरशीदआरा को बड़े मियां याद आए जो घर के पुराने नौकर थे। बुढ़ापे की वजह से उनसे अब काम नहीं होता था। वह हरदम हांफते रहते थे। उनका इलाज चल रहा था। वह बाग के पीछे गुलामगर्दिश की एक कोठरी में माली के संग रहते थे। अकसर जब उनको खांसी नहीं आती और खुश होते तो तरह-तरह की कहानियां सुनाते रहते थे। उन्होंने ही पहली बार हमको अंधेरे में चमकते जुगनू के बारे मे पहेलियां सिखाई थीं। अकसर वह पेड़ों में पानी देते हुए उनसे बात करते नजर आते। जब हम दोनों पूछते कि आप किससे बात कर रहे थे तो वह हँस पड़ते थे। उनके मुंह के सारे दांत गिर चुके थे। दादी रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े कर, उस पर गरम दाल डलवा उनका खाना मंजूर से भेजती थीं, जो जाते ही हांक लगाता था, "ओ बड़े मियां, तोहार मलीदा हाजिर है। आए के गरमागरम उड़ाओ!"

एक दिन मंजूर खाना रख आया था। बड़े मियां थे नहीं। बंगले का फाटक खुला रहने से कोई आवारा कुत्ता घुस आया था। उसने बड़े मियां का सारा खाना चट

कर लिया। जब बड़े मियां लौटे तो खाली रकाबी देख रोने लगे। बच्चों की तरह उनका रोना देख उस वक्त हम दोनों कितना हँसे थे...

मगर यह क्या...? आंखें नम कैसे हो गईं? खुरशीदआरा एकाएक यादों में डूबी मुस्कराते-मुस्कराते उदास हो गईं। दुपट्टे से आंखों की नमी पोंछ वह उठीं। सर झटककर अपने से कहने लगीं—'यादों में रहने की मैंने अजीब आदत-सी डाल ली है!' फिर ठंडी सांस लेकर सोचा—'अगर ऐसा न करूं तो यह जिंदगी मुझे डराने लगती है। इतने अकेलेपन में जीना पड़ेगा, यह तो मैंने कभी सोचा ही न था...'

खुरशीदआरा कमरे से बाहर निकलीं और बुआ की तरफ गई। वह आंगन में लाल मिर्च धूप में फैला रही थीं। वह कुछ देर उनको खड़ी देखती रहीं फिर जब वह मुड़ीं तो एकाएक उनके मुंह से निकला, "बुआ, कपड़े बदल लें। कुछ देर आपा के घर होकर आते हैं!"

"शकरआरा बीबी के घर?" बुआ को जैसे अपने कानों पर यकीन नहीं आया।

"हां, शाम ढलने से पहले लौट आएंगे।" इतना कह खुरशीद तैयार होने चली गई।

"चलो, कहीं तो निकलने का तोहार दिल चाहा, वरना तो कमरे से बावर्चीखाना, बस यही जिंदगानी होय गई है। न कहीं जाना, न किसी को बुलाना!" बड़बड़ाती बुआ अपना बक्सा खोल कपड़ा निकालने लगीं और बदलू से बोलीं, "दरवाजा अंदर से बंद कर समझदारी से रहियो और बिना पहचाने फटाक से दरवाजा खोल ओका अंदर आए का न्योता न दे बइठियो।"

"समीना, मैं थोड़ी देर के लिए आपा से मिलने जा रही हूं।" खुरशीदआरा ने बेटी को स्कूल में फोन कर बताया।

"कितनी देर में निकलेंगी?" समीना ने पूछा। उसे मां का वहां जाना अजीब लग रहा था।

"बस पांच मिनट बाद।" खुरशीदआरा ने जूड़े को बाएं हाथ से छूते हुए कहा।

"ठहरिए...मैं लेने आ रही हूं।"

"अरे बेटी! मैंने इसलिए फोन नहीं किया था कि तुम मुझे लेने आओ। फिर तुम्हारे साथ जाना ठीक नहीं है!" खुरशीदआरा बोलीं।

"क्यों ठीक नहीं है?" समीना नाराज हो बोली।

"मैं जो कह रही हूं, उसे समझने की कोशिश करो...जिद मत करो...अब मैं फोन रखती हूं और निकलती हूं।" खुरशीदआरा ने फोन रख दिया।

दोनो बूढ़ियां एक-दूसरे का सहारा बनी घर से निकलीं। बुआ आगे बढ़ गली

के नुक्कड़ पर जाकर रिक्शा तय करने लगीं। दोनों रिक्शे पर-बैठीं। रास्ते में फल मंडी पड़ी तो कुछ फल खरीदे गए! सड़क पर उछलता-कूदता रिक्शा घंटी बजाता घिसट रहा था। हर उछाल पर बुआ के मुंह से 'हाय' निकलती। उनका जोड़-जोड़ जख्मी हो गया था। रिक्शा जब चिकनी सड़क पर दौड़ने लगा तो उन्होंने राहत की सांस ली। खुरशीदआरा को बाहर निकलना अच्छा लग रहा था। उनके चेहरे पर खुशी-भरी ताजगी फैली हुई थी।



शकरआरा बरामदे के सामने लॉन में गार्डन एंबरैला की छाया मे बैठी थीं। गेट पर आकर रिक्शा रुका तो उन्हें लगा कि कहीं राबिया की अम्मा बोरिया-बिस्तरा उठाकर तो नहीं चली आईं? हाशिम ने उनके आगे संतरे के जूस का गिलास रखा और तेजी से बढ़कर गेट खोला।

'इस हाशिम को क्या हुआ है जो इस तरह भागा-भागा गेट खोलने पहुंच गया है?'—शकरआरा ने आंखों पर चश्मा लगाते हुए सोचा।

"सलाम छोटी बेगम, आइए! संभल के बुआ!" हाशिम की आवाज उभरी।

"कौन?" चौंक पड़ीं शकरआरा। हाथ में पकड़ी मैगजीन मेज पर रख खड़ी हुईं।

"आदाब, आपा!" पास पहुंचकर खुरशीदआरा ने बहन को सलाम किया।

"अरे नन्हीं!" कह शकरआरा ने आगे बढ़कर बहन को गले लगाया, फिर उन्हें ऊपर से नीचे तक देखकर बोलीं, "बहुत स्मार्ट लग रही हो। अरसे बाद तुम्हें साड़ी पहने और जूड़ा बांधे देखकर बहुत अच्छा लग रहा है।"

"आज, दिल ने जैसे कहा कि बस अभी चलकर आपसे मिलना है!" कहती हुई खुरशीदआरा कुर्सी पर बैठीं।

"और बुआ, तुम कैसी हो? यह फल वगैरह, कहां तकल्लुफ में पड़ गईं तुम भी, नन्हीं?" शकरआरा ने कहा।

बुआ ने फल का झोला हाशिम को थमाया और कमर पर हाथ रख, लॉन में घूमती, पेड़-पौधे का मुआयना करने में व्यस्त हो गईं। दोनों बहनें बातों में डूब गईं। हाशिम ने अंदर जमाल खां को इत्तला दी और फिर दो गिलास ताजे संतरे का जूस निकाल वह बाहर लाया। जमाल खां नहाकर अभी निकले थे। खुरशीद के आने की खबर सुन उनका दिल खुश हो गया। बरामदे से ही उन्होंने कहना शुरू कर दिया, "अरे साली साहिबा, आज हम बेगानों की याद आपको कैसे आ गई जो इधर का रास्ता भूल पड़ीं?"

"आदाब!" खुरशीदआरा ने खड़े होकर कहा।

"खुशआमदीद...! खुशआमदीद...जीती रहो और जल्द ही नवासे-नवासी खिलाने का मौका मिले।" कहते हुए जमाल खां धूप में आकर बैठ गए।

"कैसे हैं आप?" खुरशीदआरा ने पूछा।

"मैं तो ठीक हूं, मगर आज आप बहुत खिल रही हैं। आखिर बात क्या है? कोई अच्छी खबर सुनाने वाली हैं या फिर हमसे मिलने की खुशी में चेहरे पर यूं नूर बरस रहा है?" जमाल खां बोले।

"यही मैं कह रही थी!" शकरआरा ने रस का गिलास मियां को थमाया।

"मेरे बाग के संतरे हैं...तुमसे कितनी बार कहा कि चलो, मेरे साथ गांव की सैर कर लो, मगर सुनती नहीं हो।" बड़ी तरंग में जमाल खां ने कहा।

सुनकर खुरशीदआरा मुस्कराती रहीं।

"आया से कहो जाकर, हाशिम! खुरशीद को दो प्याजा और अरहर की दाल बहुत पसंद है, अच्छी तरह बनाएं। और हां, खड़े चावल की खीर भी।" शकरआरा बोलीं।

"अरे आपा, खाने पर न रोकें। बस, अब हम कुछ देर बाद चलेंगे।" खुरशीद ने पहलू बदलकर कहा!

"कैसे चलेंगे...क्या मां का खून इस कदर सफेद हो चुका है कि लड़की का मुंह देखे बिना जाने की बात करने लगी है?" जमाल खां ने साली पर फब्ती कसी।

"और नहीं तो क्या...बस दो-ढाई बजे तक समीना आ जाती है...अब शाम को जाना होगा तो जाना, वरना आराम से एक-दो दिन रहो!" शकरआरा ने कहा और बजते मोबाइल को उठाया!

"हलो...समीना...हां कहो! जल्दी आ रही हो...कुछ नहीं लाना है। आज कुदरत का खेल देखो कि चांद निकला है वह भी दिन में! तुम्हारी अम्मी आई हुई हैं...सीधे घर आओ, बाजार फिर किसी और दिन हो आना...ठीक है!" कहकर शकरआरा ने फोन रखा।

"हवाएं आपके आने की खबर चारों तरफ फैला रही हैं। इधर समीना आ रही है, उधर कमाल का फोन आया था कि वह भी घर पहुंच रहा है। आज सारा घर एक साथ दोपहर का खाना खाएगा। वाह भई वाह, क्या खूबसूरत इत्तफाक है!" जमाल खां ने कहा और मोबाइल उठाकर कोई नंबर डायल किया।

"आज मिलना कैंसिल...हां, बस कुछ मसरूफियत है। कल ग्यारह बजे का रखते हैं!"

"आप क्यों नाहक अपना प्रोग्राम बदल रहे हैं, मैं तो बस कुछ देर के लिए आई थी!" संकोच-भरे स्वर में खुरशीदआरा बोलीं।

"आप आई अपनी मर्जी से थीं, साली साहिबा, अब जाएंगी हमारी मर्जी से। हाशिम, मेहमानखाना खोल दो, जो जरूरी चीजें हैं उस कमरे में रख दो...आप कुछ दिन यहां ठहरेंगी, यह मेरा हुक्म है! आखिर रिश्ते में बड़ा हूं!" उनके इस तरह कहने पर दोनों बहनें हँसने लगीं।

तभी समीना की कार गेट में दाखिल हुई।

"आदाब अम्मी! कैसी हैं आप?" समीना ने मां को आदाब किया और गले लग गई। सामने उसे पेड़ के नीचे टहलती हुई बुआ दिखीं तो वह उधर बढ़ी और आहिस्ता-आहिस्ता जाकर पीछे-से जोर-से 'भौं' किया और बुआ के चौंकने पर खिलखिला पड़ी।

"बचपन अभी गवा नहीं।" कहकर बुआ ने उसकी बलाएं लीं।

"कैसी हैं, बुआ नानी?" समीना बिलकुल बच्ची की तरह खुश होती बोली।

"ठीक हूं, आज तो दुलहिन बी कमाल कर दीहिन। एकाएक बोलीं, चलो, बुआ कपड़ा बदलो, आपा के घर चलते हैं! सालों बाद तो हम अपनी गली-मोहल्ला देखा है और छुटकी बीबी की शादी मा आए का मौका ही न मिला, तबियतै खराब रही।" बुआ ने वर्षो को एक वाक्य में लपेटा।

"कुछ पिया, बुआ नानी, आपने?" समीना ने पूछा।

"हां, काहे नहीं, हाशिम दे गवा रहा।" बुआ ने वहीं पेड़ के नीचे पड़ी बेंच पर बैठते हुए कहा।

समीना को मां का इस तरह आना बहुत अच्छा लग रहा था। बस, अब बड़ी अम्मा की जबान काबू में रहे तो सब कुछ ठीक-ठाक गुजर जाएगा। उन्हीं के तेवर के चलते वह क्लास छोड़कर घर आई है, ताकि कुछ गड़बड़ न होने पाए, वरना बिना किसी त्योहार और खास मौकों के अम्मी आना पसंद नहीं करती हैं। उसने अंदर जाकर मेज सजाई। खाने को चखकर इत्मीनान किया, फिर कमरे में जाकर उसने मुंह-हाथ धोया। बाहर निकलकर वह ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठी हैंडलोशन लगा ही रही थी कि कमाल कमरे में दाखिल हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को ताज्जुब से देखा, एक साथ कहा, "तुम इस वक्त?"

"अब्बी को फोन कर दिया था। डॉ. जेवियर आने वाले थे। मैंने उन्हें घर पर ही सीधा बुला लिया।" कमाल ने सफाई दी।

"मेरा क्लास न था, इसलिए आ गई तो देखा अम्मी आई हुई हैं।" समीना

ने छोटा-सा जवाब दिया।

"छोटी अम्मी को देखकर मैं भी चौंक गया, मगर उनका यूं आना बहुत अच्छा लग रहा है। अम्मी भी बड़ी खुश नजर आ रही हैं।" कमाल का चेहरा खिल उठा था।

"हां।" समीना भी खुश थी।

"सुनो, डॉक्टर जेवियर के आते ही मैं निकल जाऊंगा। मेरे दो जोड़ी कपड़े बस बैग में रख दो।" कमाल ने घड़ी देखकर कहा।

"एकाएक प्रोग्राम चेंज कैसे हो गया?' समीना ने पूछा।

'बंगलौर का काम डॉ. जेवियर का एक दिन पहले खत्म हो गया सो उन्होंने सुबह फोन क्लीनिक पर किया तो मैंने कहा, सीधे घर आ जाओ।" कमाल ने बताया।

"लंच तो करोगे या वह भी नहीं?" समीना बोली।

"उनके आने पर तय होगा। अगर उन्होंने किसी को टाइम न दे रखा होगा तो..." कमाल कुछ उलझा-उलझा बोला। वह कुछ कागज संभालने में लगा था।

"सोच लो, दोप्याजा पका है।" समीना ने शरारत-भरे स्वर से कहा।

"तब तो तुम मुझे अभी यहीं ला दो।" यह सुनते ही कमाल फौरन खाना खाने पर राजी हो गया। घड़ी में अभी सवा बारह बजे थे। बाकी लोग डेढ़ बजे तक खाने की मेज पर बैठते, तब तक अपने पसंदीदा खाने का इंतजार करना कमाल के लिए जरा मुश्किल काम था।

कमाल ने उठकर अलमारी खोली और कपड़े निकाल खुद पैकिंग करने लगा। उसका मन हलका था! उसने गुनगुनाते हुए बैग बंद किया और सोफे पर बैठ खाने का इंतजार करने लगा। आज उसे अपना यह घर बड़ा चहकता और खुशी से भरपूर लग रहा था। बाहर किसी पेड़ की डाल पर बैठी कोई चिड़िया बड़ी मीठी आवाज में गा रही थी।



राबिया जिस जिंदगी की चाहत में भटक रही थी, वह इस तरह भटकने से हासिल नहीं हो सकती थी। उसे अपना पहला प्यार जाड़े की चोट की तरह टीसता था। उस लड़के के दिमाग से भी राबिया उतरी नहीं थी। एक बार वह इलाहाबाद आया था। टिकट की खिड़की, सिनेमाहाल, रेस्तरां में वह पागलों की तरह राबिया को ढूंढ़ता फिरा था, मगर राबिया उसे कहीं नहीं मिली। कभी उसका घर तो देखा नहीं था। उसका कोई अता-पता भी पास न था, सो शाम तक निराश भूखा-प्यासा वह लौट गया था।

यह वह समय था जब राबिया घर में उसके प्यार में जोगन बनी पड़ी रहती

थी। राबिया को पछतावा होता कि चलते वक्त मैंने न पता लिया और न...उस दुःख को गुजरे कई माह बीत गए थे। अब यह सवाल ज्यादा तीखा होकर सामने आन खड़ा था कि एक अच्छा शौहर वह कैसे हासिल करे! उसकी उम्र भी उन्नीसवां पार कर रही थी। इस उम्र के लड़के तो अपनी पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाते हैं। नौकरीवाला ढूंढ़ो तो आखिर कहां जाकर ढूंढ़ा जाए?



नानबाई बिस्कुटिया का लड़का था मखफूर, जिसे घर में सब प्यार से मग्गा कहते थे। इस साल उसने इंटर पास किया था। बापू का खोमचा पहले तख्त पर फैली छोटी-सी दुकान में बदला, फिर दीवार में जुड़े शो केस में और देखते-देखते पूरे चायखाने मे बदल गया था। उसका नाम भी नए चलन के हिसाब से 'वेलकम' रखा गया था। नए तर्ज का फर्नीचर और केक-पेस्टरी से सजे शो केस के पीछे खड़े बिस्कुटिया ने अपनी ढप भी बदल ली थी। लुंगी-बनियान की जगह फूलदार टी-शर्ट और पैंट ने ले ली थी। बेटे की पढ़ाई बंद करवा उसने 'वेलकम टी-हाउस' बेटे के हवाले कर उसको बिजनेस के दांव-पेंच सिखाना शुरू कर दिया था! टी-हाउस में काफी भीड़ रहती। कुछ जोड़े आते, कुछ लंडूरे आते, कुछ लोफर आते; गाना सुन, चाय-केक खा, इधर-उधर आंख सेंक चले जाते थे।

राबिया भी एक दिन सर को बड़े कायदे से दुपट्टे से ढककर बड़ी अदा से 'वेलकम टी-हाउस' पहुंची! उस वक्त वहां भीड़ काफी थी। वह कुछ देर चुपचाप खड़ी रही, फिर उसकी नजर मग्गा पर पड़ी—भोला चेहरा, सलीके से बाल सिमटे हुए, स्टाइलिश कपड़े और शर्मीली मुस्कान! राबिया का दिल एकाएक काउंटर पर खड़े उस लड़के की तरफ खिंच गया! उसके बारे में कुछ पता नहीं था। वह कौन है? यहां नौकर है या मालिक! बस वह तो आज बहुत दिनों बाद घर से निकली थी। रास्ते में नया खुला रेस्तरां दिखा तो वह बिना कुछ सोचे-समझे दाखिल हो गई। यहां का माहौल ही अलग था। जो गाना इस समय बज रहा था उसके रूमानी बोल राबिया को बेहद राहत पहुंचा रहे थे। उसके चेहरे पर एक रंग आ रहा था, दूसरा रंग जा रहा था। आंखें मखमूर हो उठी थीं।

भीड़ कुछ कम हुई तो मग्गा की नजर कोने में खड़ी एक बिलकुल अलग तरह की लड़की पर पड़ी। सर पर दुपट्टा रखना तो कब की लड़कियां भूल चुकी हैं। ऊपर से इस लड़की ने शॉल भी किस सलीके से बदन पर लपेट रखी है! जरूर यह किसी शरीफ घराने की लड़की लगती है। मग्गा ने इकलौते बैरा ताजदार से कहा, "जाओ, उन्हें उधरवाली खाली हुई मेज पर जाकर बिठाओ!"

"मेज पर या कुर्सी पर?" ताजदार ने कहा, फिर राबिया की तरफ तेजी से

बढ़ा! "मैडम! इधर बैठें!" यह कह उसने जूठे बरतन उठा, कंधे पर रखे अंगोछे से मेज साफ की, फिर बोला, "क्या लाऊं?"

"चाय!" राबिया ने धीरे से कहा।

राबिया बड़े घरों में मां के साथ जा-जाकर अच्छे शरीफ घरानों की बहू-बेटियों के तौर-तरीके देख चुकी थी और उन सारी नजाकतों की नकल करने में उसने महारत हासिल कर ली थी। सर पर से सरकते आंचल को ठीक करना, झुकी पलकों को धीरे-धीरे उठाना, आहिस्ता से बात करना, रूमाल से गरदन और माथे पर छलके पसीने पर नरमी से थपकी देना, फिर बड़ी अदा से अपने-आप मुस्करा पड़ना! मग्गा तो कॉलेज में इस तरह की किसी लड़की से नहीं मिला था। सड़क और रिश्तेदारी में भी सुंदर लड़कियां थीं, मगर यह अदाएं तो किसी में न थीं। वह चुपचाप खड़ा, नजरें इधर-उधर घुमा, फिर राबिया पर टिका देता था, जिसका अहसास चाय समाप्त करते-करते राबिया को हो गया था। एक बार उसने नजर चार होने पर अदा से होंठों पर मुस्कान ला, नजरें फौरन झुका ली थीं। राबिया इस समय यह सब जान-बूझकर नहीं कर रही थी, बल्कि उसके अंदर से एक नगमा-सा फूटता उसे महसूस हो रहा था, जिसे वह इस लड़के के लिए अपने हाव-भाव के द्वारा गुनगुना रही थी।

मग्गा रोज उस लड़की के आने का इंतजार करने लगा। उसकी आंखों में दिन-ब-दिन दीदार की प्यास बढ़ने लगी। उधर राबिया बहुत चाहने पर भी घर से बाहर नहीं निकल पा रही थी। मां बीमार थीं। बुखार में तप रही थीं। उन्हें ठंड लग गई थी। ऐसी हालत में वह उन्हें छोड़कर कैसे 'वेलकम टी-हाउस' जा सकती थी? उसकी आंखों के सामने हरदम उस लड़के का भोला चेहरा और मासूम आंखें नाचती रहती थीं। एक दिन राबिया ने रात को उसे ख्वाब में देखा जैसे वह उसे बुला रहा है। उसकी आंख खुल गई। सुबह हो रही थी। सुबह का सपना सच होता है। यह सोच राबिया लिहाफ मुंह तक ओढ़कर, आंखें बंद किए बिस्तर पर पड़ी रही और इस सुंदर सपने के नशे में डूबी रही। मां के खांसने की आवाज उसके कानों में पड़ रही थी, मगर उसका उठकर चाय बनाने का जरा भी मन न था।



कई दिनों बाद राबिया आखिर रेस्तरां जाने में कामयाब हो गई। उस दिन वाला लड़का आज वहां खड़ा नहीं दिखा तो उसने बैरा से पूछना तय किया। जब वह चाय रखकर जाने लगा तो उसने धीरे से कहा, "सुनो!"

"जी!" ताजदार मुड़ा।

"वह लड़का..." राबिया ने काउंटर की तरफ उंगली उठाकर जुमला अधूरा छोड़ दिया।

"मग्गा भैया? हां, वह कहीं काम से गए हैं।"

'मग्गा?' राबिया को बड़ा अजीब-सा लगा।

"मेरा नाम तो आपने पूछा नहीं?"

"सुनती तो रहती हूं, ताजदार।" कहकर राबिया मुस्करा पड़ी!

"हमरे मालिक बेटवा को प्यार से मग्गा पुकारते हैं। वही सबकी जबान पर चढ़ा है। उनका असली नाम मखफूरुल रहमान है! मालिक ने उनकी पढ़ाई बंद करा दी। अब उन्हें ही तो सब कुछ संभालना है आगे चलकर।" कहता ताजदार दूसरी मेज से जूठे बरतन उठाने लगा।

'वह इस रेस्तरां के मालिक का बेटा है! तो फिर खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो।'—राबिया होंठों-ही-होंठों में मुस्कराई और धीरे-धीरे चाय के घूंट के बहाने मग्गा का इंतजार करने लगी। लेकिन जब आधा घंटा गुजर गया तो उसे वहां अपना बैठना अटपटा-सा लगने लगा।

राबिया जब पैसे अदा कर बाहर निकलने लगी उसी वक्त मखफूरुल रेस्तरां में दाखिल हुआ। दोनों की नजरें मिलीं तो राबिया ने झुककर आदाब किया और तेजी से बाहर निकल गई। मखफूर एक नहीं, हजार जान से फिदा हो चुका था।

उधर राबिया ने रिक्शा किया और घर की तरफ जाते हुए सोचने लगी कि अब कई दिनों तक वह रेस्तरां नहीं जाएगी। इश्क की तपिश को बढ़ने देगी। बात अब मिलने-मिलाने पर नहीं, बल्कि सीधे शादी पर जाकर खत्म होनी चाहिए, इसलिए दूरी बहुत जरूरी है। उस रात उसने जाने कितने ख्वाबों के महल खड़े कर लिए थे।

राबिया ने इधर कुछ दिनों से नमाज पढ़ना शुरू कर दिया था। दुआ मांगते हुए वह गिड़गिड़ाकर खुदा से कहती कि उसका बेड़ा पार लग जाए। मखफूरुल रहमान खुद अपना पैगाम उसके घर भिजवाए। उसकी शादी शान और इज्जत से हो। उसका बदला चाल-चलन देख मां नाक पर उंगली रख आसमान की तरफ देखतीं।

'वाह रे तेरी कुदरत! अड़ियल घोड़ी जैसी लड़की की लगाम अपने-आप ही कस गई! शरीफ लड़कियों की तरह नमाज-रोजे का शौक हो गया। तेरे सदके जाऊं माबूद। जैसे लड़की सुधारी है वैसे ही कोई अच्छा-सा दूल्हा भी उसके लिए भेज दो ताकि मेरी पीठ भी कब्र में चैन से टिकी रहे!'



कई दिनों बाद राबिया ने यह सोचकर वेलकम टी-हाउस जाने का दिल बना लिया कि इस बीच लोहा तपकर वार के लिए तैयार होगा। मां के निकलते ही वह भी सज-धजकर घर से निकली। मौसम आज बड़ा सुहावना हो उठा था। बादल जाने

कहां से घिर आए थे। बारिश की आमद हवाओं में घुल गई थी।

राबिया हाथों में किताब पकड़े जब वेलकम टी-हाउस के सामने रिक्शे से उतरी तो मखफूरुल को दुकान के बाहर ही खड़ा पाया। उसे महसूस हुआ जैसे वह उसी की राह निहार रहा था। उसकी चमकती आंखों से जब राबिया की कजरारी आंखें मिलीं तो वहीं अटककर रह गई। राबिया का दिल जोर से धड़का। उसने घबराकर सलाम के लिए हाथ उठाया और अंदर जाकर कोनेवाली मेज पर बैठ गई। अंदर काउंटर पर आज मग्गा के बाप को उसने खड़ा नहीं पाया। उसने राहत की सांस ली। ताजदार उसे देखकर सलाम कर मुस्कराया।

"मैं यहां बैठ सकता हूं?" मग्गा ने करीब पहुंचकर राबिया से पूछा।

"जी...जी जरूर!"

"आपका नाम पूछ सकता हूं?"

"राबिया!"

"मेरा नाम मखफूरुल रहमान है। आप पढ़ती हैं?"

"जी नहीं, बस बहाने से निकली थी!"

"बहाने से...?"

"आपको देखने का...हाय अल्लाह!" कह राबिया ने दांत से होंठ काटा।

"मुझे भी आपको देखना बहुत भाता है!" मखफूरुल ने भोलेपन से कहा।

"फिर?" राबिया ने पूछा।

"पता नहीं?" मखफूरुल घबरा गया। दोनों चुपचाप बैठे कभी एक-दूसरे को देखते तो कभी मेज पर नजर जमा देते।

"भैया, कुछ लाएं?" ताजदार ने पूछा।

"हां, चाय और दो पेस्ट्री।" मखफूर ने कहा।

"मैं बहुत परेशान रही इन दिनों!"

"वह क्यों?"

"अम्मा मेरी शादी तय कर रही हैं।"

"ओह!" मखफूर का चेहरा उतर गया।

"मगर मैं राजी नहीं हूं!" राबिया के यह कहने पर मखफूर के चेहरे पर राहत का भाव उभरा।

"आप किसी को पसंद करती हैं?" मखफूर ने पूछा।

"जी...आपको!" इतना कह राबिया ने नजरें झुका लीं। उसका दिल जोरों से धड़क रहा था। हिम्मत कर उसने बेशर्मी ओढ़ ली थी, मगर अब अपनी जल्दबाजी से परेशान हो उठी थी कि कहीं मखफूर उसे चालू न समझ ले।

"आप मुझसे शादी करेंगी?" काफी देर बाद मखफूर ने कहा तो राबिया की सांस-में-सांस आई। खुशी के मारे उसका चेहरा लाल हो गया। वह चुप रही। चाय-पेस्ट्री आ गई थी। उसका दिमाग कई बुनियादी प्रश्नों में उलझ रहा था।

"मैं राजी हूं, मगर...हम बहुत गरीब हैं। अब्बा भी नहीं हैं। आपके अब्बा जाने यह रिश्ता पसंद करें या नहीं।" राबिया की आंखें सचमुच में भीग गई।

"यह तो मुझे भी पता नहीं! अम्मा से पहले बात करके देखता हूं!" इतना कह मखफूर ने पेस्ट्री का टुकड़ा मुंह में डाला।

राबिया ने दिल-ही-दिल में खुदा का शुक्र अदा किया और अपने को शाबाशी दी कि जज्बाती होने की जगह वह कायदे की बातें कर सकी।

जब वह चलने लगी तो मखफूर ने कहा, "अपने घर का पता तो बताइए।"

"जी, क्या बताऊं अब...फिर भी, यह जो नाका है न बड़े घूरेवाला, उसी के पास एक छोटा बाजार है, जो 'साईं के टोले' के नाम से जाना जाता है। उसी में कैसेट की एक दुकान है, उसी से मिली अंदर जाने वाली गली में हमारा गरीबखाना है। घर का नंबर 30/580 है!"

"वह मुर्गीवाली गली तो नहीं है?" मखफूर ने कुछ याद करते हुए कहा।

"हां, हां, वही मुर्गीवाली गली! आप कैसे जानते हैं?" राबिया ने पूछा।

"फिर बताऊंगा! अच्छा, अब आप कब आएंगी?"

"तभी, जब आप बारात लेकर आएंगे।" राबिया ने शरमाकर कहा।

"ठीक है!" मखफूर मुस्कराकर बोला।

उन्हें यूं मुस्कराता-शरमाता देख ताजदार धीरे-से बोला, "हाय रज्जा!"

मखफूर ने जाते रिक्शे को रोका और राबिया के बैठने के बाद उसका हुड उठाया। रिक्शे के चलते ही उसे लगा कि राबिया अपने साथ उसका दिल भी ले जा चुकी है। वह कुछ देर जाते रिक्शे को देखता रहा, फिर अंदर आकर काउंटर के पीछे खड़ा हो गया। चायखाने में भीड़ थी। गाना मद्धिम सुरों में बज रहा था। वह बेकरी से आया ताजा माल शो केसों में सजवाने में व्यस्त हो गया, फिर रसीदों पर लिखे टोटल को जोड़ने में। जब वह काम में व्यस्त था तभी नानबाई दुकान में दाखिल हुआ। बेटे की लगन देख उसने खीस निपोरी।

26

आज से पहले मुस्तफाबाद जमाल खां को कभी इतना खूबसूरत नहीं लगा था। दरअसल, आज वह उसे एक अजनबी की नजर से देख रहे थे। कल यह सब जब बिक जाएगा तो फिर उनका आना नहीं हो पाएगा! कब्रिस्तान के अलावा उनका अपना कुछ नहीं रह जाएगा। कब्रिस्तान भी पूरा उनका नहीं है, पूरे खानदान के साथ फाटक भीतरवालों की कब्रें भी हैं यहां, जो उनके रिश्तेदार हैं! एक तरफ दादा हैं तो उनके पास उनके दोनों बेटे, नीचे चचा और उनका खानदान। उन्हें भी तो यहीं दफन होना है और शकरआरा को भी, फिर इस जगह से नाता तोड़कर शहर में रह जाना कहां का इंसाफ है? क्या ख्वाब देखना और ख्वाहिश करना बुरी बात है? अगर हां, तो फिर ऐसी हालत में किसी भी इंसान का कोई व्यक्तित्व नहीं बन पाएगा और अगर जवाब है कि ख्वाहिश और ख्वाब हर इंसान के लिए बहुत जरूरी हैं तो उस दी गई आजादी से चली आ रही परंपराएं टूट क्यों जाती हैं? उसका अंग बनने की जगह वह अलग अपना संसार क्यों रचती हैं? क्या पुराने सिलसिले का टूटना ही नई शुरुआत का प्रारंभ होता है?

यही सब सोचते-सोचते वह बड़े से आंगन में टहलते रहे। हवा में खुनकी थी जो उन्हें बड़ी सुहावनी लग रही थी! ऊपर बड़ा-सा शरद पूर्णिमा का चांद था जिसका हाला बहुत दूर तक फैला था। इस खामोश घर में अब कोई नहीं रहता। हर कमरे और कोठरी में ताला झूल रहा है। बस बाहर की बैठक उनके लिए खुलती-बंद होती है। उसके पासवाले कमरे में वह ठहरते हैं! पास ही बड़ा-सा चबूतरा है, जहां पर कभी महफिलें जमती थीं। यह उन्हीं का किस्सा नहीं है, बल्कि हर उस खानदान का है जो शहर और गांव में बंटकर दो इकाई में बदल चुके हैं। बाप और बेटे के बीच नई तालीम ने एक ऐसी दूरी पैदा कर दी है कि दोनों अजनबी की तरह एक-दूसरे को देखते हैं। आखिर हुआ क्या ऐसा जो पीढ़ियां अब एक साथ रहने से घबराती हैं? जहां रहती भी हैं वहां उनके बीच दीवारें खड़ी हैं। आखिर क्यों?

"मियां, खाना लग गया है!" हाशिम के पिता हातिम ने आकर इत्तला दी।

"ठीक है।" जमाल खां ने कलाई पर बंधी घड़ी देखी और बाहर मर्दाने की तरफ बढ़े। चौकी पर दस्तरख्वान के ऊपर खाना चुना हुआ था। पड़ोस के दो साहेबान भी आ चुके थे। जमाल खां को अकेले खाना खाना पसंद नहीं था, इसलिए रोज किसी-न-किसी को उनके साथ खाने के लिए न्योता मिल जाता था। इससे एक फायदा तो समाचार मिलने का था, दूसरा फायदा मुर्दा पड़े रिश्तों में फिर से हरारत पैदा करने का था।

"आदाब अर्ज है, जनाब! कैसे मिजाज हैं? सुना आज सुबह ही तशरीफ लाए हैं?" मीर साहब ने अपने सर की टोपी उतार मसनद पर रखते हुए कहा।

"जी, सुबह आया मैं! आपकी सेहत कैसी है? घर में सब लोग कैसे हैं?" सलाम का जवाब हाथ उठाकर देते हुए जमाल खां बोले और हाथ धोने का इशारा किया।

"खाना आपके घर की तरह लजीज तो न होगा मीर साहब, मगर फिर भी..." जमाल खां बोले। तभी कल्लेखां भी दाखिल हुए और सलाम कर हाथ धो दस्तरख्वान पर बैठ गए।

"सुना, कल बलबीर यादव और रामसिंह बस्ती की तरफ आए हुए थे। क्या वे चुनाव में इस बार खड़े हो रहे हैं?" मीर साहब ने कल्लेखां से दरयाफ्त किया।

"कह तो वह यही रहे थे कि उन्हें टिकट मिलने की पूरी उम्मीद है!" कल्लेखां ने निवाला चबाते हुए कहा।

"बलबीर यादव पर तो फिर भी गांववालों का दबाव पड़ जाता है। एक-दो काम हो जाते हैं, मगर रामसिंह बड़ा ही नालायक है। सिवाय अपने रिश्तेदारों के किसी का कोई काम नहीं करता। इस बार ठाकुर समाज भी उससे बुरी तरह खार खाए बैठा है।" मीर साहब बोले।

"शोरबा तो लें, आप दोनों तो बहुत ही तकल्लुफ कर रहे हैं...बातों में कुछ लेना ही भूल जाते हैं! लीजिए, मैं ही निकालता हूं...आज कोफ्ता अरसे बाद हातिम ने ठीक-ठाक बनाया है!" जमाल खां ने दोनों की प्लेटें भरीं।

"बस, बस, मियां! बुढ़ापे में क्या गबरू जवान समझे हो?" मीर साहब हँसे।

"हां, जनाब! आप कुछ फरमा रहे थे।" जमाल खां बोले।

"रामसिंह की बहन जिस खानदान में ब्याही है वहां उसने कुछ नामाकूल हरकत कर दी है, जिससे ससुरालवाले परेशान हो उठे, मगर लड़की वालों ने उलटा उन पर धौंस गांठ दी, मीर साहब! दस-बारह लठैत ले पहुंच गए। जमकर लाठी चली। बहन के देवर का सर फटा। चौदह टांके लगे। वह बात इतनी बढ़ी कि ठाकुर समाज दो हिस्सों में बंट गया। ससुरालवाले एड़ी-चोटी का जोर लगाए हैं कि रामसिंह को टिकट न मिले। इधर बहन के मायके लौटा दिए जाने से रामसिंह खुन्नस खाए बैठे हैं कि उन लोगों की ओर से चुनाव में किसी भी उम्मीदवार को खड़े न होने देंगे, चाहे लाश बिछ जाए। आस-पास के लोग सहमे हुए हैं कि इन ठाकुरों के चलते गांव में खूनखराबा होगा, पुलिस आएगी, बेगुनाह पकड़े जाएंगे और पापी सदा की तरह बचा लिए जाएंगे।" कल्लेखां ने शालीनता से मगर आक्रोश-भरे स्वर में कहा।

"हालात हर जगह बहुत खराब हो रहे हैं। किसी को अपने ऊपर कंट्रोल ही नहीं रह गया है। सब्र, कुर्बानी, वजादारी, इंसानियत—ये सारी बातें तो जनाब, अब डिक्शनरी में ही कुछ दिनों बाद देखने को मिलेंगी!" मीर साहब ने कहा।

"बहुत खूब!" जमाल खां उनकी बात पर कहकहा लगा के हँस पड़े। कलक्टर रह चुके थे। इन जिलों के चप्पे-चप्पे से वाकिफ थे। सभी का अता-पता उन्हें मालूम था।

खाना खत्म हुआ। हाथ धोकर वे बड़े चबूतरे पर रखी कुर्सियों पर आकर बैठ गए। कुछ देर बाद कटोरियों में रसावल आ गया! चांदनी रात थी। अंगीठी की गरमी पैरों को ठंड से बचा रही थी। मुंह में रसावल घुल रहा था। जमाल खां को बेटे कमाल का ध्यान आया, जिसने पता नहीं कभी रसावल चखा भी या नहीं। वह इसका मजा कभी हमारी तरह ले भी पाएगा या नहीं? वह धीरे-से मुस्कराए और गरदन हिलाकर उन्होंने लंबी सांस ली।

"अच्छा जनाब, इजाजत दें। फिर मुलाकात होती है!" मीर साहब ने मफलर गरदन में लपेटते हुए सर पर रखी गरम टोपी ठीक की।

"दुआओं में याद रखिएगा...खुदाहाफिज!" जमाल खां ने उठकर उन दोनों बुजुर्गों को विदा किया फिर अपने कमरे में चले गए! अभी वह कपड़े बदल ही रहे थे कि फोन की घंटी बज उठी।

"हलो...शकर! कैसी हो? घर में सब खैरियत है?" जमाल खां खुश होकर बोले।

"हां...खाना खाने जा रही थी, सोचा कि आपको फोन करके पूछूं, आपने खाना खाया या नहीं? हातिम ने क्या पकाया था?"

"कोफ्ता बहुत अच्छा बना था। मीर साहब और कल्लेखां अमरूदवाले आए थे। अभी-अभी वे दोनों खाना खाकर गए हैं...कमाल लौटा?"

"दोनों आज मूवी देखने गए हैं। डिनर भी बाहर लेंगे।"

"इसका मतलब है कि तुम तनहा हो और खाना भी अकेली खाओगी!" जमाल खां कुछ फिक्रमंद हो बोले।

"नहीं, नहीं, आप क्या जानें! मैंने अपनी पसंदीदा फिल्म लगा रखी है!" शकर ने मियां की फिक्र दूर करने के लिए मीठा झूठ बोला।

"तो फिर ठीक है! अच्छा हुआ तुमने फोन कर लिया वरना मैं करने ही वाला था। अच्छा, बेगम! खुदाहाफिज। अपना खयाल रखना।" फोन रख जमाल खां ने तिपाई से नावेल उठाया और कल छोड़े हुए पन्नों पर नजर दौड़ाने लगे।



शकरआरा के बरेलीवाले मकान की कीमत अच्छी लग गई थी। उसकी वजह मकान से ज्यादा उसके आस-पास की खुली जमीन थी। यह खुशखबरी जब शकरआरा को जमाल खां के पुराने जानने वाले भूपेंद्रसिंह ने दी, जो इस सौदे को देख रहे थे तो शकरआरा ने इत्मीनान की सांस ली। हफ्ते-भर में कागजी कार्रवाई हो गई। मामला करने वाला खुद रुपये लेकर इलाहाबाद पहुंचने वाला था—चेक और नकद लेकर। शकरआरा ने खुरशीदआरा को इत्तला दे दी। साथ यह भी कह दिया कि वह उस आदमी को लेकर कल घर पहुंचने वाली हैं।

खुरशीदआरा क्या बोलतीं बड़ी बहन की बातें और हिदायतें सुनती रहीं।

"बुआ! कल आपा आने वाली हैं, उन्हें क्या खिलाया जाए?" खुरशीदआरा बोलीं।

"अब तो, दुलहिन बी, घर में बदलू है! ओका भेजकर कस्साब के यहां से कुछ भी मंगाय लो, हम पकाने को हाजिर हैं!" बुआ ने खुश होकर कहा और दिल-ही-दिल में सोचने लगीं कि शकरआरा बेगम में एकाएक यह कैसी तब्दीली आ रही है कि बहन के घर हर पंद्रह दिन बाद आना शुरू कर दिया है! अल्लाह में बड़ी ताकत है। उनके सख्त दिल में उसे नेकी डालते कितनी देर लगी होगी! दिमाग उठाकर पलट दिया हो। बुआ अपने दिल में आए शक व शुबहे को अच्छा रंग देती हुई सोच उठीं।

खुरशीदआरा ने कलम-कागज उठा सामान की फेहरिस्त बनाई और बदलू को रुपयों के साथ फेहरिस्त थमाती हुई बोलीं कि सामान सिर्फ कुरैशी, लाला तोंदूमल और रामप्यारी के यहां से लेना। बता देना, तुम कहां से आए हो। वह ताजा सामान तौलकर खुद झोले में रखवा देंगे। टोटल में लिखी रकम उन्हें अदा कर देना। बदलू पहली बार इतनी तरह की चीजें लेने घर से निकला था। कुछ-कुछ घबरा भी रहा था कि सौंपा काम ठीक-ठाक तरह में अंजाम दे दे, वरना बीबी तो कुछ न बोलेंगी। मगर बुआ अम्मा ताना मार-मारकर जीना हराम कर देंगी।

बदलू की समझ में बुआ अभी तक नहीं आई थीं कि कब वह दुलार करती हैं और कब गुस्सा। कभी-कभी उसे दोनों मिला-जुला लगता। बुरा उसे नहीं लगता था उनका डांटना-झिड़कना, क्योंकि वह उसके खाने-पीने का बहुत खयाल रखती थीं। दिन में कई-कई बार मुंह खुलवाकर देखतीं कि कहीं उसने गुटखा तो नहीं फांका है। बाजार से आने के बाद वह सीधे उसकी जेब में हाथ डाल तलाशी लेतीं और मुंह सूंघतीं फिर वह सामान की तरफ ध्यान देतीं। एक-एक का दाम पूछ पैसे का हिसाब लेतीं, फिर मुस्करा उठतीं!

यही सब सोचता बदलू सामान का थैला उठाए परचूनिया लाला तोंदूमल की दुकान पर खड़ा था। उसे बड़ी हैरत हुई, जब उसने एक दुबले-पतले अधेड़ को पगड़ी बांधे मसनद पर रुपये की संदूकची के पास बैठे देखा। उनकी तोंद तो दूर, पेट का पता नहीं चल पा रहा था कि वह अंदर कहां धंसा हुआ है।

दोपहर के खाने का इंतजाम बड़े शानदार तरीके से खुरशीदआरा ने किया था। बेंतवाला सोफासेट बाहर आंगन में निकलवा दिया था, जहां दो बजे तक धूप भरी रहती है। आजकल वैसे भी आंगन में पूरी रौनक हो गई थी। बदलू और बुआ ने मिलकर ऐसी बागबानी की थी कि क्यारियां रंगीन देसी फूलों से भर उठी थीं! पीली चमेली भी कहां तो मुरछाई-सी सुतली की तरह छज्जे पर पड़ी रहती थी, अब हरे पत्तों और पीले फूलों से लदी, झालर बन लटक रही थी! लाल चंपा में भी कस के फूल आए हुए थे। खुरशीद ने खाने से पहले पीने के लिए चिकन सूप बनाया था! उनके दिल में बाप के घर के बिकने का जो दुःख था वह तो अपनी जगह था, मगर इस बात की खुशी थी कि आज उनके शहर बरेली से कोई इतने साल बाद मिलने आ रहा है।

सुबह ग्यारह बजे शकरआरा सुल्तान बेग के साथ घर में दाखिल हुई। बदलू ने दरवाजा खोला और उन्हें बाहर आंगन में बिठाया, जहां मेज पर मौसमी फलों से भरा फलदान सजा हुआ था।

खुरशीदआरा कमरे से निकल बहन के पास पहुंचीं। दोनों गले मिलीं।

''यह सुल्तान बेग एडवोकेट हैं। आपने ही हमारा मकान खरीदा है। अब्बा जान के खास दोस्त मूनिस बेग के आप बड़े साहबजादे हैं।'' शकर ने तारूफ कराया।

''आदाब! तशरीफ रखें। सफर में कोई तकलीफ तो नहीं हुई?'' खुरशीद ने पूछा।

''तकलीफ कैसी? मुकदमे के सिलसिले से बराबर आना-जाना लगा रहता है, इसलिए सब तरह का आदी हो चुका हूं।'' सुल्तान बेग ने कहा।

''यह कागजात अपने साथ लाए हैं, उन्हें देख लो!''

शकर के कहने पर सुल्तान बेग ने ब्रीफकेस उठाया।

''अभी रहने दें। पहले कुछ खा-पी लें फिर कागजात देख लेंगे, इतनी जल्दी क्या है!'' खुरशीदआरा ने कहा।

''यह भी ठीक है!'' सुल्तान बेग ब्रीफकेस खोलते-खोलते रुक गए।

''लीजिए, चिकन सूप है; आपको पसंद आएगा!'' कहती हुई खुरशीदआरा ने उठकर बदलू की लाई ट्रे से प्याला उठाकर सुल्तान साहब के आगे रखा।

"वाह! क्या जायका है!" सुल्तान बेग कह उठे।

"तुम्हारे हाथ के इस सूप की तारीफ तो मरहूमा मेरी सास किया करती थीं। उन्हें बहुत पसंद था!" शकर ने घूंट भरते हुए कहा।

"नूशेजान।" खुरशीद ने आहिस्ता से कहा।

"यह लड़का कौन है? इसको मैंने पहले कभी देखा नहीं।" शकरआरा ने बदलू को जूठे प्याले उठाते हुए देखकर पूछा।

"हां आपा! यह हमारे यहां अभी कुछ महीनों से है। इसका नाम बदलू है।'

"है कहां का? बड़ा तमीजदार दिखता है!" शकर ने पूछा।

'मसजिदवाली गली में मौलाना साहब थे। अब उनका इंतकाल हो गया है। उन्हीं के पास था। आदाब, तौरतरीके और जबान उन्हीं की देन हैं, तभी आपको बच्चा कुछ अलग-सा दिख रहा होगा!" इतना कह खुरशीदआरा चुप हो गईं।

कुछ देर खामोशी छाई रही।

"और हमारा वतन बरेली कैसा है, सुल्तान साहब?" खुरशीद ने खासी बेकरारी से पूछा।

"आप कब से नहीं गई हैं?" सुल्तान बेग बोले।

"आखिरी बार अम्मा के इंतकाल में जाना हुआ था, मगर रिश्ता तो उस शहर से कब का टूट चुका था।" कहकर खुरशीद उदास हो गईं।

"हर शहर की तरह बरेली भी पहले से बहुत बदल गया है। शानदार इमारतें, नए-नए डिजाइन के घर, सिनेमाहाल, बड़ी-बड़ी दुकानें...मगर गली-कूचों का वही हाल है जो आपके सामने रहा होगा, बल्कि उससे बदतर। आखिर आबादी जिस तेजी से बढ़ रही है उस तेजी से गली-आंगन तो चौड़े हो नहीं रहे हैं। एक-एक घर में दस-दस बच्चे—ऊपर से बाप-चचा, दादा-दादी! शादी नहीं हुई तो बहनें भी। हमारा घर ऐसी ही गली में है। नातका बंद हो जाता है। सुबह से शाम तक वह चिल्ल-पों मची रहती है कि बस पूछिए मत। कभी वह शरीफों का मोहल्ला था। चंद बड़े-बड़े खुले मकान थे। इधर-उधर जगहें थीं। अब वह सब छिक गईं। इसीलिए हम वहां से निकलना चाहते थे। जैसे ही आपका बंगला देखा, फौरन सौदा हो गया। जब भूपेंद्र भाई से मिला तो अपना रिश्ता बताया। वह भी बोले, इससे बढ़कर क्या बात हो सकती है! आप उनके अजीज दोस्त के बेटे हैं..." इतना कह सुल्तान बेग ने ब्रीफकेस खोला और फाइल निकाली।

"पढ़ लें, इत्मीनान कर लें। दस्तखत तो होते रहेंगे।" कहकर सुल्तान बेग ने कागज बढ़ाए।

दोनों बहनों ने कागजात देखे। पढ़ने के बाद उन्होंने रख दिया और सुल्तान बेग से गरदन के इशारे से कहा—ठीक है। सुल्तान बेग ने चेक निकाला और पेन खोलकर बोले, "किसके नाम से काटूं?"

"आपा के नाम से!" खुरशीदआरा के मुंह से निकला।

"कितने का चेक काट रहे हैं?" शकरआरा ने झट पूछा।

"देखिए, जैसा आपने पढ़ा है। चार परसेंट का चेक बाकी छह परसेंट नकद।"

"नकद कहां है?" शकरआरा ने कुछ परेशान स्वर में पूछा।

"यह रहा!" सुल्तान बेग ने ब्रीफकेस का चोर हिस्सा खोला।

"इतना कैश! इसको कहां रखा जाएगा?" खुरशीदआरा सहमकर कह उठीं।

"बैंक में!" सुल्तान बेग बोले फिर मुस्करा उठे। तीनों के बीच खामोशी छाई रही फिर सुल्तान बेग बोले, "आप लोग अगर गुस्ताखी माफ करें तो मैं आपकी मदद कर सकता हूं। अगर आप चाहें! उस हालत में आपको बस, इतना मुझे बताना होगा कि इन रुपयों का आप, करेंगी क्या?"

"हमारे बीच बंट जाएगा। अब्बा की हम दोनों वारिस हैं!" शकरआरा ने कहा।

"फिर क्या दो चेक अलग-अलग काटूं?" सुल्तान बेग ने पूछा।

खुरशीदआरा ने शकरआरा को देखा जो कुछ सोच रही थीं। फिर उनके बीच खामोशी छा गई। शकरआरा के चेहरे से लग रहा था कि वह किसी फैसले पर पहुंच नहीं पा रही हैं।

"आप ऐसा करें कि आपा के नाम से चेक काटें और नकद भी उन्हें थमाएं। वह बड़ी हैं और इस जिम्मेदारी को पूरा करना उनका ही फर्ज है।" खुदशीदआरा ने कहा।

"ठीक है!" शकरआरा के कुछ न बोलने पर सुल्तान बेग ने कहा और चेक काटकर शकरआरा को दिया और फिर ब्रीफकेस खोल नोटों की गड्डियों को गिन पूरा ब्रीफकेस उन्हें थमा दिया! दोनों बहनों ने एक के बाद एक कागजात पर हस्ताक्षर किए और सुल्तान बेग को मुबारकबाद दी।

"खाना लग गया है।" खुरशीदआरा ने बुआ का इशारा देखकर दोनों से कहा और उठकर कमरे की तरफ बढ़ीं। दोनों पीछे-पीछे आए।

"पहले इसे तुम्हारी अलमारी में रख आऊं।" कहती शकरआरा बेडरूम की तरफ बढ़ गईं।

"आपने तो जनाब, पूरी दावत का इंतजाम कर रखा है!" सुल्तान बेग मेज

पर सजे व्यंजनों को देखकर बोले।

"आप हमारे शहर के हैं, फिर अब्बा के दोस्त के बेटे। इस नजर से तो आप हमारे लिए बहुत अहमियत रखते हैं!" कहती हुई खुरशीदआरा ने उनकी प्लेट में मुरगा निकाला।

"वाह, वाह! क्या बात है!" शकरआरा ने मेज पर नजर डालकर कहा।

खाना काफी लजीज पका था! सुल्तान बेग ने बेतकल्लुफी से खाया। शकरआरा को भी अरसे बाद अपने मायकेवाले खाने का जायका मिला था। वह बहुत खुश दिख रही थीं। बार-बार खुरशीदआरा की बचपन की बातें सुना-सुनाकर हँस रही थीं। दोनों बहनें मीठी यादों में गुम थीं। खाना खत्म हुआ तो सुल्तान बेग ने चलने की इजाजत मांगी, क्योंकि उनका एक क्लाइंट यहां भी रहता था, जिसका मुकदमा इलाहाबाद कोर्ट में चल रहा था। वह उससे चार बजे मिलने की जबान दे चुके थे। चलते हुए सुल्तान बेग ने दोनों बहनों का खुलूस देखकर कहा, "आप जब भी बरेली आएं, हमारे साथ ठहरें। वह घर हमेशा आप लोगों का ही रहेगा!" उनके इस तरह कहने पर खुरशीदआरा के साथ शकरआरा की भी आंखें भीग गईं।

सुल्तान बेग दोनों से खुदाहाफिज कर, शकरआरा की कार पर बैठ सिविल लाइंस की तरफ निकल गए। दोनों बहनें कमरे में आकर पलंग पर बैठ गईं। बुआ गरम-गरम कॉफी का प्याला लेकर आईं। वह जानती थीं कि शकरआरा खाने के बाद कॉफी पीना पसंद करती हैं। उनके हाथ से कॉफी का प्याला ले शकरआरा बोलीं, "बुआ, आपने मेरे दिल का हाल खूब जाना। इतने लजीज खाने के बादी कॉफी तो होनी चाहिए!"

"हम तुम दोनों बीबियों की आदत जानित हैं। तभी बदलू को पान वास्ते दौड़ावा है!"

दोनों बहनों ने कॉफी पी। पान का बीड़ा दबाया और पलंग पर लेट गईं। पुरानी यादों ने उन्हें एक बार फिर करीब ला दिया था। दोनों के चेहरे खिले हुए थे।

खुरशीदआरा ने एकाएक कहा, "आपा, पैसे यहां न छोड़िएगा, वरना मेरी रातों की नींद उड़ जाएगी!"

"इतना भी क्या डरना?" शकरआरा हँसीं फिर उठकर बैठ गईं। कुछ पल सोच में डूबी रहीं, फिर पर्स खोल चेकबुक निकाली और खुरशीदआरा से बोलीं, "उन्होंने हमारा मकान पचास में लिया है। मैं ऐसा करती हूं, नन्हीं कि तुम्हें दो चेक काटकर देती हूं—एक नकद दिए रुपये का आधा और दूसरा चेक का आधा। ठीक है?"

"नहीं आपा! आप रखें। जब मुझे जरूरत होगी तो आपसे ले लूंगी!" खुरशीद ने घबराकर कहा।

"तुमने कहा और मैंने मान लिया!" यह कहकर शकर ने कलम खोला।

"आपा, ठहरिए!" कहकर खुरशीदआरा कुछ देर चुप रहीं फिर बोलीं, "मेरी दौलत तो मेरे बच्चे हैं। आप एक चेक समीना और दूसरा चेक कमाल के नाम काट दीजिए।" इतना कह खुरशीद ने राहत की सांस ली।

"यह लो!" शकरआरा ने चेक बढ़ाया!

"मुझे क्यों दे रही हैं। दोनों चेक दोनों के हिसाब में डलवा दीजिए। आप जानती हैं दोनों को, मैं दूंगी तो वह कभी नहीं लेंगे और इसरार करेंगे कि मैं रखूं!" खुरशीद इतना कहकर उठीं और अलमारी खोल उन्होंने ब्रीफकेस निकाला।

"यह भी ठीक है!' कहकर शकरआरा ने पर्स बंद किया और कहा, 'अगर ड्राइवर ने खाना खा लिया हो तो अब्दुल से गाड़ी मोड़कर लगाने को कहें।"

"अब्दुल?" खुरशीदआरा ने ताज्जुब से दोहराया।

"मुझे पुराने घर के साथ पुराने नौकर भी याद आ गए!" शकरआरा ने गहरी सांस खींचकर कहा, फिर बहन को जोर से सीने से लगा उसका माथा चूमा और धीरे-से कहा, "अपना खयाल रखना, नन्हीं!"

बदलू ने आगे बढ़कर ब्रीफकेस उठाना चाहा तो शकरआरा ने मना कर दिया। खुद उसको उठा वह गली पार करने लगीं। बदलू उनके पीछे-पीछे गया। बुआ दरवाजे पर खड़ी रहीं। खुरशीदआरा ने कमरे में जाकर खिड़की खोली और बहन के हिलते हाथ का जवाब हाथ हिलाकर दिया।

27

दोनों बहनें शहर बरेली से अपना रिश्ता तोड़कर बिलकुल अलग-अलग तरह से पुरानी यादों में डूब-उतरा रही थीं। शकरआरा को इस बात पर ताज्जुब था कि एक माह के अंदर यह काम इतनी आसानी से निबट गया और उनके सोचे मनसूबे के मुताबिक, बल्कि उससे भी बेहतर तरीके से। उन्होंने कभी सोचा ही न था कि खुरशीदआरा अपने हिस्से के पच्चीस लाख रुपये बच्चों में बांट देगी। चाहती तो वह बहुत कुछ कर सकती थी, मगर उसने न रुपयों को, न चेक को हाथ लगाया। उन्हें जहां अपनी अक्ल की तेजी पर खुशी हो रही थी वहीं छोटी बहन पर प्यार आ रहा था। अब्बा सच कहते थे कि खुरशीद में कुरबानी का जज्बा बहुत है। आज शकर को लग रहा था कि खुरशीद ने हमेशा बड़ी बहन की खुशी में ही अपनी खुशी देखी है। उन्हें याद आया कि अब्बा दो कपड़े लाए थे—एक हरा और दूसरा गुलाबी। उसे खुरशीद का गुलाबी रंग ज्यादा पसंद आया।

"ठीक है आपा! बदल लो, मैं हरा पहन लूंगी।"

"मैं हरा तुम्हें कैसे दे सकती हूं, वह मेरे रंग पर ज्यादा खिलता है। तुम तो उस रंग को पहनकर और काली लगोगी!" शकरआरा ने दबंग हो कहा।

"ठीक है। आप दोनों कपड़े रख लें!" इतना कह खुरशीद होमवर्क में लग गई थी। इस बात को सुनकर अब्बा फिर खुरशीदआरा के लिए उससे भी अच्छा कपड़ा लाए थे।

जब कभी घर में दावत होती तो रात को बचे कबाब को बावर्चीखाने से उठाकर शकरआरा ही लाती थी। शकर को कबाब बहुत पसंद थे—यह सारा घर जानता था; मगर गायब हुए कबाबों का सारा इल्जाम खुरशीदआरा अपने ऊपर ले लेती थी। एक बार जब वह अपनी सहेली की सालगिरह की पार्टी में गई थी, तब खुरशीदआरा ने उसके कहने पर उसका सारा होमवर्क कर दिया था। यह अलग बात है कि हैंडराइटिंग बदली देख शकरआरा को बेंच पर खड़ा होना पड़ा था। जाने कितने किस्से थे, जो शकरआरा को याद आ रहे थे। उसने अपनी बहन के साथ बहुत ज्यादती की थी। उसका दिल पुरानी बात को सोच-सोचकर अब दुःख रहा था।

उधर खुरशीदआरा के दिल में इत्मीनान था कि आपा की ख्वाहिश थी मकान बेचने की, उन्होंने बेचा और अपने ही हाथों से उन्होंने वह रुपया बेटे-बहू को दे भी दिया। अब इस बुढ़ापे में इतनी बड़ी रकम लेकर मैं करती भी क्या? पहले तीन वक्त खाना खाती थी, अब दो वक्त खाती हूं। कल हो सकता है कि खाना घटकर एक वक्त हो जाए। अम्मा का आखिरी दिनों यही हाल तो हुआ था। भूख घटते-घटते बिलकुल खत्म हो गई थी। दवा की वजह से एक-दो लुकमा खुराक से पहले जबरदस्ती हलक से नीचे उतारती थीं। उसे भी खाकर वह घंटों डकारें लेती थीं।

अब सबसे बड़ा सवाल सामने था कि बंद घर के अंदर जो सामान भरा हुआ है, उसका क्या किया जाए? फर्नीचर तो छोड़ा जा सकता है। उसी तरह बर्तन भी, मगर अब्बा-अम्मा के कपड़े, कागज, किताबें—उनका क्या होगा? कौन लेने जाएगा? इस पर तो कोई बात ही नहीं हुई। कपड़े तो बांटे जा सकते हैं। किताबें लाइब्रेरी को दी जा सकती हैं। निजी चीजों को समेटने का मसला होगा। यह कोई गैर नहीं कर पाएगा। इस बात की तरफ सुल्तान बेग ने हलका-सा इशारा बातों-ही-बातों में खाने की मेज पर किया था। शायद आपा को भी अब ध्यान आया हो। उस वक्त तो एक साथ जैसे यादों का रेला दिल व दिमाग पर छा गया था। उसमें ऐसी बारीक बातों पर फैसला लेना मुश्किल था। अरे हां, हमारे बुजुर्गों की पुरानी तस्वीरें! वह तो संभालकर रखनी पड़ेंगी। वह तो सरमाया है हम बहनों का। जो सबसे कीमती शै थी, उसी को मैं भूली हुई थी!

खुरशीदआरा ने डायरी उठाई और मुनासिब यही समझा कि उस पर वह सब कुछ नोट करते जाना चाहिए जो उन्हें याद आता जाए! वह एक के बाद दूसरे कमरे में जहन दौड़ा रही थीं। कहां क्या चीज रखी थी? कौन-सी चीज पुरानी थी और कौन-सी चीज अम्मी ने खरीदी थी? इसी दौड़-भाग में खुरशीदआरा का जहन थक गया। वह डायरी बंदकर बिस्तर पर लेट गईं। पैरों पर गरम दोशाला डाल लिया। थका दिमाग सोते ही जाग उठा और जहन में ख्वाब की शक्ल में बरेली का बंगला उभरने लगा। सपना कुछ गडमड-सा था—नया पुराना सब मिला-जुला-सा दिखाई दे रहा था।

ड्राइंग रूम में सारा खानदान जमा है। दादी, अम्मी और अब्बा, सबके सब आपस में बातें कर रहे हैं तभी खुरशीदआरा दाखिल होती हैं, जो समीना के बचपन का फ्रॉक पहने हैं और अब्बा उसे 'खुशी...खुशी' कहकर पुकार रहे हैं। वह दौड़कर अब्बा के पास जाती हैं। अब्बा उन्हें कहानियों की किताब देते हैं। तभी कमाल पहुंच जाता है। वह जमीर अब्बास का कुरता-पाजामा पहने है और थोड़ी देर बाद समीना भी आ जाती है। वह छोटी लड़की फ्रॉकवाली—जो वह खुद हैं—बाहर निकलती है और पिंजड़ा खोलकर तोते को उड़ा देती है, फिर उसे आसमान पर दूर तक उड़ता देखती है। तभी दादी आ जाती हैं और कहती हैं—'खुशी बेटी! मेरा सर दबाना, बहुत दुःख रहा है।' वह अंदर जाती है। दीवारों पर लगी बड़ी-बड़ी तस्वीरें गायब हैं! अब्बा बिगड़ते घूम रहे हैं।

'अंधेर है! इतने लोगों के रहते बुजुर्गों की तस्वीरें चोरी चली गईं और तुम लोगों को पता भी न चला! अब्दुल...अब्दुल! पता नहीं यह भी बिना कहे कहां चला जाता है।' अब्बा गुस्से से बाहर निकलते हैं। वह भी उनके पीछे जाती हैं तो देखती हैं, अब्दुल अम्मी-अब्बू के कपड़े जमा कर रहा है और एक तरफ किताबों का ढेर है, जिसको कबाड़ीवाला अपने बोरे में डाल रहा है। यह देख वह तेजी से दौड़ती हैं और कबाड़ीवाले के हाथ से किताब छीनते हुए कहती हैं—

'खबरदार! जो एक भी किताब यहां से ले गए! मेरे अब्बा जज हैं, तुम्हें जेल भेज देंगे!'

'अरे! वह तो कब के मर-खप गए! कब की बात करत हो, बेबी?' कबाड़ीवाला यह कहकर जोर-जोर हँसता है। वह रोते हुए अंदर जाती हैं। अंदर घर में कोई नहीं है। सामने से नानीजान सफेद कपड़ा पहने, हाथ में तसबीह घुमाती आती हैं और उसके पास से हवा की तरह गुजर जाती हैं। वह उनके पीछे भागती हैं—'...नानी...नानी अम्मी!'

वह डर जाती हैं। सारा घर खाली पड़ा है! एक कमरे से दूसरे कमरे में दौड़ती हैं और पुकारती हैं—'अम्मी...अब्बू...दादी...' कोई जवाब नहीं आता। फिर वह घर

से बाहर निकलती हैं तो चारों तरफ पानी-ही-पानी भरा है। रास्ता डूब चुका है। वह ऊपर नजर उठाती हैं। आसमान पर तारे निकले हैं, जो झिलमिला रहे हैं। फिर बड़ा-सा चांद नजर आता है, उसकी रोशनी इतनी बढ़ जाती है कि चारों तरफ उजाला-ही-उजाला भर जाता है! एकाएक दृश्य बदल जाता है, वह सलवार-जंपर पहने खड़ी हैं! उनके हाथों में मेहंदी लगी है! जमीर अब्बास सामने से आते हैं। उनकी तरफ देखकर मुस्कराते हैं। वह उन्हें रोकना चाहती हैं, मगर वह नहीं रुकते। वह बड़े हौज में हाथ धोना चाहती हैं तो क्या देखती हैं कि वहां पानी बिलकुल सूख चुका है। हाथ की मेहंदी गायब है...फिर दृश्य बदल जाता है। शकरआरा ढेर सारी अगरबत्ती लेकर आती हैं. जिससे धुआं उठ रहा है और उन्हें पुकारती हैं—'नन्हीं...नन्हीं इधर आओ। इसे मेरी कब्र के सिरहाने लगा दो!'

'मगर आप तो जिंदा है, आपा!'

'पगली है तू...जो मैं कहती हूं वह सुन...थाम ठीक से...हर रोज अगरबत्ती अपने हाथों से जलाना समझी।' इतना कह आपा धुएं में कहीं घुल गईं। वह आंख फाड़-फाड़कर देखती हैं, मगर अगरबत्तियों का धुआं बढ़ता ही जाता है। वह घबराकर रोने लगती हैं और पुकारती हैं—

'...आपा! आपा! तुम कहां हो...कहां हो, आपा!'

घबराकर खुरशीदआरा की आंख खुल जाती है। वह परेशान-सी पहले चारों तरफ नजर दौड़ाती हैं। कुछ समझ नहीं पातीं कि वह हैं कहां? उठकर वह बिस्तर पर बैठ जाती हैं और धीरे से कहती हैं—"कितना भयानक ख्वाब था मेरे अल्लाह! आपा खैरियत से हों!" कहती हुई वह उठीं और बाथरूम जाकर आंखों पर छींटें मारीं। दिमाग अभी भी चकराया हुआ था।

"उठ गईं, दुलहिन बी?" बुआ ने कमरे में आकर कहा।

"बड़ा बुरा ख्वाब देखा मैंने, बुआ!" बाथरूम से निकल खुरशीदआरा ने कहा।

"बेवख्त सोये के कारण एही होत है। हम कमरा में आए, बत्ती तो जला गए थे।" बुआ ने कहा और चटाई पर दुलाई लपेट बैठ गई।

"अब्दुल कहां है?" खुरशीदआरा ने पूछा।

"अब्दुल तो इहां कउनो नहीं है!" बुआ चकराकर बोलीं।

"अरे, बदलू को पूछ रही थी!" झेंपते हुए खुरशीदआरा ने कहा और कनपटी दोनों हाथों की उंगलियों से दबाई।

"बैठा है!" इतना कहकर बुआ ने वहीं से बैठे-बैठे हांक लगाई, "बदलू... बदलू!"

"आज जरा तुम चाय बनाओ!" बदलू के आने पर खुरशीदआरा ने कहा।

"अरे, हमसे बोलतीं न!" बुआ उठने लगीं।

"नहीं बुआ! आप मेरे पास बैठिए। मेरा दिल घबरा-सा रहा है!" कहकर खुरशीदआरा ने शाल बदन पर लपेटी।

"जी तो हमार भी अच्छा नहीं है। सर बहुत पिरात है!" बुआ ने कुछ थके लहजे से कहा।

"देखें! कहीं आपको बुखार तो नहीं है?" कहकर खुरशीद ने बुआ का माथा छुआ। थोड़ा गरम था।

"लेटे का मन करत है!" सुस्त आवाज में बुआ बोलीं।

"आपका पलंग यहीं डलवा लेते हैं!" कहकर खुरशीद उठीं और होम्योपैथिक दवाओं का संदूक खोला। उसमें से एक शीशी निकालकर कुछ गोलियां बुआ के मुंह में डालीं।

बदलू चाय लेकर आ गया था। बड़े सलीके से उसने खुरशीदआरा की प्याली तिपाई पर रखी और बुआ का मग मय ट्रे के उनके पास जाकर रखा। उसका सलीका देख खुरशीदआरा चुप रहीं, मगर जब चाय चखी तो उनसे नहीं रहा गया और पूछ बैठीं, "तुम्हें चाय बनाना किसने सिखाया?"

"जी! मौलाना साहब जब रात-रात-भर वजीफा पढ़ते थे तो हम उन्हें चाय बनाकर देते थे। उन्होंने ही मुझे चाय बनाना सिखाया था!" कुछ देर वह चुप रहा, फिर धीरे से बोला, "मैं चावल उबालना भी जानता हूं। यहां आकर बुआ अम्मी को काम करते देख-देखकर मुझे सब काम समझ में आ गया है। अब मैं सब्जी और दाल भी पका सकता हूं!"

"हां, तोहरे पेट में तो पहले से दाढ़ी रही है!" बुआ ने बड़े अंदाज से मुस्कराकर कहा।

"अच्छा बदलू! बुआ की चारपाई और बिस्तर लाकर इसी कमरे में अलमारी के पास बिछा दो...अकेले तुम सोने में डरोगे तो नहीं?"

"नहीं, दुलहिन बी! हम मसजिद में बाबा साहब के गुजर जाने के बाद अकेले ही रहते थे।" बदलू ने शरमाते हुए कहा।

"रहन देव बीबी, अब हम यहां कहां सोवेंगे!" बुआ बोलीं।

"सुनो बदलू! तुम मुझे दुलहिन बी न कहा करो, बल्कि अम्मा कहा करो।" खुरशीदआरा बोलीं।

"जी!" कहकर बदलू खाली प्याली उठाकर चला गया। बुआ की चाय वैसी ही मग में भरी रखी थी।

बुआ कमरे में आने पर राजी न हुई, वहीं बावर्चीखाने के पासवाली अपनी कोठरी में जाकर बिस्तर पर लेट गई। बुखार बढ़ रहा था। खुरशीदआरा के चेहरे पर फिक्र की परछाइयां नाचने लगीं।

वह कोठरी से बाहर निकलीं और बावर्चीखाने में जाकर उन्होंने फ्रिज खोला। उसमें दोपहर का बचा काफी सामान रखा था। बदलू पीछे-पीछे जाकर खड़ा हो गया और धीरे से बोला, "अम्मा जान! समीना बीबी और कमाल भैया के लिए बुआ अम्मा ने खाना ड्राइवर के हाथ भिजवा दिया था!"

"अच्छा!" खुरशीदआरा ने कहा। उन्हें बदलू का 'अम्मा जान' पुकारना बहुत अच्छा लगा। उन्होंने फ्रिज बंद किया और बदलू से बोलीं, "रात को जो दिल चाहे, गरम करके खा लेना। मुझे भूख कतई नहीं है। बुआ को जब दूध गरम करके दूंगी तो खुद भी पी लूंगी!"

"जी!" बदलू इतना कहकर किचन का सामान इधर-उधर रखने लगा।



शकरआरा के यहां खाने की मेज पर जब खुरशीदआरा के हाथ का पका खाना चुना गया तो सबने यही समझकर खाना प्लेट में निकाला कि घर में पका होगा, मगर पहला निवाला मुंह में रखते ही कमाल बोला, "आया ने तो आज बिलकुल छोटी अम्मीवाला मुरगा बनाया है!"

"यू आर राइट!" जमाल खां ने मुंह चलाते हुए कहा।

"अच्छा! आज तो मुझे अजीबोगरीब बातें सुनने को मिल रही हैं!" शकरआरा धीरे से मुस्कराई। समीना चुपचाप खाती रही।

"यह शामी कबाब तो सो फीसदी साली साहिबा के हाथ का है!" जमाल खां ने कहा और शकरआरा को देखकर पूछा, "आखिर किस्सा क्या है?"

"किस्सा क्या होगा? आज मैं वहां गई थी। मुझे तो पता ही नहीं कि उसने इतना ढेर सारा खाना भी साथ कर दिया था!" शकरआरा ने मियां की प्लेट में दूसरा कबाब डालते हुए कहा।

"वही मैं कहूं कि हर जगह छोटी अम्मी क्यों नजर आ रही हैं!" कमाल ने मगन हो कहा।

"तुम्हें जरा भी शक नहीं गुजरा, समीना!" खुरशीदआरा बोलीं।

"मुझे तो, बड़ी अम्मी, लगा कि आपने पकाया है। आपके हाथ का जायका तो कोई नहीं भूल सकता है!" समीना ने कहा।

उसकी बात सुन शकरआरा का चेहरा पहले से भी ज्यादा खिल उठा।

"आज तुम कुछ ज्यादा ही खुश नजर आ रही हो!" जमाल खां बोले।

"यकीनन!" शकरआरा हँस पड़ीं।

समीना के दिल में उथल-पुथल मच गई थी कि बड़ी अम्मी के आने का कोई जिक्र अम्मी ने मुझसे क्यों नहीं किया? ऐसी क्या बात हुई कि बड़ी अम्मी जरूरत से ज्यादा खुश नजर आ रही हैं? कमाल भी चकराया हुआ था कि आखिर इन बहनों के संबंध इतने मधुर कैसे होते जा रहे हैं! जमाल खां दिल-ही-दिल में खुदा का शुक्र अदा कर रहे थे कि आज पहली बार बेगम ने बहन के लिए कोई जहरीला जुमला नहीं फेंका था। खुदा करे, बहन से मिलकर ऐसी खुशी हमेशा बनी रहे, ताकि समीना को यूं सहमकर अपनी बड़ी अम्मा की तारीफ न करनी पड़े। कभी-कभी वह समीना के सब्र और समझ की दाद देते थे कि यह लड़की कमाल की मोहब्बत में अपनी मां पर फेंके सारे तीर कलेजे पर सह लेती है, मगर उफ तक नहीं करती।

कॉफी पीते हुए शकरआरा बहन के फूलों से लदे आंगन का जिक्र करती रहीं। धूप में बैठकर चिकन सूप का अपना मजा लेना बताया। यह भी बताया कि बरेली से कोई आया था। उसे लेकर मैं खुरशीदआरा के घर गई थी। पलक झपकते दावत का इंतजाम वहां हो गया। एक काम करने वाला लड़का भी था। बड़ी साफ उर्दू बोलता है। मुझे तो वह बहुत भला लड़का दिखा...क्या तो नाम था उसका...अब्दुल... नहीं...याद आया बदलू! हां बदलू नाम था उसका।

तीनों शकरआरा के चेहरे पर नाचती खुशी को देख रहे थे। जैसे ही वह उठकर बरामदे से अंदर गई, जमाल खां ने कमाल की तरफ देखकर कहा, "अमां कमाल! तुम्हे दाल में कुछ काला नजर नहीं आ रहा है?"

"है तो कुछ घोटाला, अब्बी! मगर जो भी है, लग अच्छा रहा है!" कमाल ने मुस्कराकर हाथ ऊपर उठा अंगड़ाई लेते हुए कहा।

जमाल खां भी मुस्करा उठे। बुझा सिगार उन्होंने फिर से जलाया और एक लंबा कश खींचा। कमाल ने बाप का मुंह चूमा और शबखैर कह उठ गया। समीना पहले ही उठकर अंदर चली गई थी। घर फोन मिलाकर वह खुरशीदआरा से बात कर रही थी। उसने जान-बूझकर मां से आज की मुलाकात के बारे में नहीं पूछा। बुआ अम्मा के बुखार आ जाने की खबर देने के बाद वह खुद ही पूछने लगीं -

"खाना खा लिया?"

"हां, अम्मी! आपका ही भेजा खाना मेज पर लगा था। सबने बहुत सेर होकर खाया!" समीना ने बताया।

"तुम्हें तो सारी बातें आपा से मालूम पड़ ही गई होंगी। खुदा जो करता है, अच्छा ही करता है।" खुरशीदआरा ने ठंडी सांस भरकर कहा।

"बड़ी अम्मी, आपकी बहुत तारीफें कर रही थीं। उन्हें आज आपके साथ बिताई दोपहर बहुत अच्छी लगी!" समीना ने सिर्फ इतना कहा।

सुनकर खुरशीदआरा को महसूस हुआ कि इसका मतलब है, आपा ने अभी मकान की बात का जिक्र नहीं किया है। एकाएक कहना भी तो मुनासिब नहीं समझा होगा। कभी मौका देख बताएंगी। मेरे लिए यही क्या कम खुशखबरी है कि आपा को आज मेरे घर में बिताया वक्त बुरा नहीं लगा, वरना अरसे से वह हमारे यहा से हमेशा रूठकर ही जाती रही हैं।



खुरशीदआरा फोन रखकर बुआ की तरफ गई, जो मुंह ढककर लेटी थी। उन्होंने घड़ी की तरफ देखा, फिर होम्योपैथी की चद गोलिया कागज पर निकाल उनके पास गई ओर लिहाफ हटा, बुआ का सर हलके से सहलाते हुए कहा, "बुआ! अपना मुंह खोलिए जरा!"

बुआ के मुंह में दवा डाल खुरशीदआरा को यकीन हो गया कि वह कुछ देर बाद अच्छा महसूस करेंगी। बुखार भी उतर जाएगा। आज काम भी बहुत पड़ गया था उनको। बुढ़ापे मे हड्डियों पर जोर पड़ा होगा और थकान की वजह से बुखार आ गया। ऐसी बढ़िया दावत भी तो घर में अरसे से नहीं हुई थी। उम्दा खाना पकना इस घर में कब का बंद हो गया था। दाल, रोटी, सब्जी और चावल—यही रोज का खाना था। मीठा तो तभी बनता जब कमाल आता था। घड़ी देखी। दवा दिए आधा घंटा गुजर गया था। वह किचन मे जाकर दूध गरम करने लगीं। बदलू खाना खाकर सो गया था।

"बुआ! अब कैसी तबीयत हे?" उन्होंने बुआ के चेहरे पर आए पसीने को पोंछने हुए पूछा।

बुआ ने धीरे से सर हिलाया ओर उठकर बैठने लगीं। खुरशीदआरा ने उन्हें सहारा देकर उठाया और पलंग पर लिहाफ अच्छी तरह लपेटकर बिठा दिया।

"बाथरूम जाने का दिल हे तो ले चलूं?"

"नहीं, बीबी।" बुआ ने मद्धिम आवाज में कहा।

"अब थोड़ा दूध पी लेतीं।"

खुरशीदआरा के कहने पर बुआ ने इंकार किया।

"कमजोरी बढ़ जाएगी! मैंने भी कुछ खाया नहीं है। देखिए, अपने लिए भी दूध लाई हूं।" खुरशीद ने उन्हें मनाते हुए कहा।

बुआ को कुनकुना दूध घूंट-घूंट पिलाकर उन्हें लिटा दिया, फिर स्वयं दूध पीने लगीं। उनके दिमाग पर सपना अभी भी छाया हुआ था। अगरबत्ती का सुलगना याद कर वह बार-बार सिहर उठतीं, फिर दिल को समझातीं कि अपनों को सपने में मरा देखने का मतलब है, उनकी उम्र का बढ़ना। कहीं पर दूसरा डर दिमाग के चोरखाने में आन बैठता। बुआ का इस तरह आज ही बीमार पड़ना और ख्वाब का यूं दिखना किस बात की तरफ इशारा है...? खुदा करे, बुआ जल्द ठीक हो जाएं। दिल हौल रहा है।

खुरशीदआरा दूध खत्म कर कुछ देर सोच में डूबी बैठी रहीं, फिर जूठे प्याले उठा वह बावर्चीखाने की तरफ गईं। बदलू ख्वाब में बड़बड़ा रहा था। बातें तो कुछ समझ में आ नहीं रही थीं, मगर बार-बार 'बुआ अम्मा' शब्द दोहरा रहा था। जाते-जाते खुरशीदआरा ने झुककर उसकी गरदन सीधी की और जंगले पर लगे परदे को गिरा दिया। सीधी हवा दालान में आकर ठंड बढ़ा रही थी।

कमरे में आकर उन्होंने सोलाह सुराहः खोला और काफी देर तक पढ़ती रहीं। उसी बीच बुआ की कोठरी से आती आवाज कानों में पड़ी, शायद वह उठने की कोशिश कर रही होंगी। यह सोचकर उन्होंने जल्दी से दुआ मांगी और किताब को चूमकर, माथे पर लगा, सिरहाने रखा। बुआ बाथरूम जाना चाहती थीं। खुरशीदआरा उन्हें सहारा देकर ले गईं और फिर लाकर बिस्तर पर बिठा दिया।

"दुलहिन बी, अगर हमका कुछ होय गवा न, तो रहमत के हाथों मेरा कफन-दफन करवाना!" फिर कुछ देर रुककर बोलीं, "जो वह ड्यूटी पर हो, वक्त रहते न पहुंच सके, तो मेरी लाश मेरे गांव भिजवा देना।" बुआ इतना कह लेट गईं।

"बुआ! ऐसी बात न करिए!" खुरशीद ने प्यार से उन्हें थपथपाया।

"मैं अभी जायवाली नहीं हूं, दुलहिन बी! एक बात दिल में आई सो आगे के लिए कह दी!" बुआ हँसीं।

"मैं आपकी इस बात का खयाल रखूंगी।" खुरशीद के दिल पर घिरी घटा छंटी। कम-से-कम जिंदगी में पहली बार बुआ ने अपनी ख्वाहिश तो जाहिर की, वरना तो बस हमारी देखभाल करने में ही वक्त गुजार दिया।

खुरशीदआरा लेटने को बिस्तर पर लेट गई थीं, मगर लिहाफ में दुबकी पड़ी जाग रही थीं। दिल में तरह-तरह के खयाल आ-जा रहे थे। दिमाग में तनहाई का

खौफ उभरता। सुबह होते-होते नींद उनकी आंखों में तैर गई। कब तक सोती रही पता नहीं, मगर उनको गुनूदगी में लगा कि बुआ किसी से कुछ कह रही हैं। वह हड़बड़ाकर उठीं तो देखा कमाल और समीना उनकी पलंग के पायताने बेठे हैं और बुआ अपनी दुलाई लपेटे नीचे चटाई पर बैठी हैं।

"हम तो मरीज को देखने आए थे, छोटी अम्मी! मगर कनफ्यूजन यह है कि मरीज आप हैं या बुआ?" कमाल ने हाथ उठा आदाब करते हुए कहा।

"आप ठीक तो है, अम्मी!" समीना ने फिक्रमंद स्वर में पूछा और माथे-गले पर हाथ रखा।

"कल सारा खाना पकाइन दुलहिन बी अपने हाथ से...कोई सुल्तान बेग रहा मुआ! खूब चटखारा ले-लेकर खाना खाय रहा था जैसे बरसों से भूखा रहा। मुझे तो ओका खाना देख, ईमान से कहते हैं बिटिया, अपने गांव का कहार याद आय गवा। जब तक रोटी की दौरी सामने पड़ी रहती ओमा से रोटी निकाल-निकाल निगलत रहता, एक बार पूरी पतीली का भात अकेलय खाय गवा रहा। ओका भला-सा नाम पड़ गवा रहा...'भतहा सांड'। सो मोहल्ला, टोला, गांव मा एही नाम मसहूर होय गवा।" इतना कह बुआ हँसीं।

उनके साथ सब हँस पड़े तो बुआ बोल उठीं, "चलो, हमरी बात सुन तुम हँसीं तो, दुलहिन बी। वरना कल शाम से पता नहीं काहे परेसान-परेसान दिखत रहीं!" कहकर बुआ उठीं और चाय की जूठी प्याली उठा बाहर निकलीं।

"यह सुल्तान बेग हैं कौन?" कमाल हँसा।

"तुम्हारे नाना के दोस्त के बेटे, जिन्होंने मकान खरीदा है!" हँसते हुए खुरशीदआरा बोलीं।

"कौन-सा मकान? बरेलीवाला बंगला?" समीना का तेज दिमाग जाग गया।

"हां।" इतना कह खुरशीदआरा सन्नाटे में आ गई कि यह मैंने क्या कह दिया। कहीं आपा मेरे इस तरह इत्तला देने का कोई गलत मतलब न निकाल लें। खुरशीदआरा का चेहरा एकाएक बुझ गया।

"अच्छा, समीना! अब चलो देर हो रही है!" कमाल मौके की नजाकत देख बीच में बोल उठा और खड़ा हो गया।

"चलती हूं!" समीना ने कहा मगर वह समझ गई थी। कल शाम की पहेली उसके लिए हल हो चुकी थी। उसके दिल में अजीब-सा अहसास उभरा कि हमेशा अपनी बात मुझसे कहने वाली अम्मी अपने घर को लेकर आज एकाएक बहन के कितने नजदीक चली गई, जो सारा सिलसिला मुझसे छुपा रहा? सच कहा है बुजुर्गों

ने कि खून जब जोश मारता है तो अपनों की तरफ ही झुकता है।



रत्ना के दिल का कंवल खिल उठा, जब डॉक्टर ने बताया कि वह गर्भवती है। रमेश खुशी के मारे समझ नहीं पाया कि वह अपनी भावना को व्यक्त कैसे करे। दोनों रिक्शे पर बैठे, ठंडी हवा का मजा लेते घर लौट रहे थे। रमेश के मन में आया कि क्यों न रत्ना को उसकी मनपसंद एक साड़ी दिलवा दें। यह सोचकर उसने रिक्शेवाले को घंटाघर चलने को कहा। रत्ना ने रमेश को ताका, मगर कुछ पूछा नहीं। जब रिक्शा कपड़े की दुकानों के सामने रुका तो रमेश ने पहले उतर, रत्ना का हाथ पकड़ रिक्शे से उतारा और साड़ी की दुकान की सीढ़ी चढ़ा।

"क्या दिखाऊं, सेठजी?"

"कहां के सेठजी!" इतना कह रमेश हँसा और बैठते हुए बोला, "यह सेठानीजी जो कहें, वही दिखाएं!"

"उधरवाली।" रत्ना ने कुछ शरमाते हुए कहा। लड़के ने साड़ियों का इंद्रधनुष सामने फैला दिया। रत्ना को अपने दोनों कपोल जलते-से महसूस हुए। इस तरह की आवभगत तो उसकी रमेश ने विवाह की वर्षगांठ पर भी नहीं की थी। उसके दिल में जाने कब से यह हसरत अंगड़ाई ले रही थी। आज पांच साल बाद उसके सामने रंग-बिरंगी साड़ियां बिखरी थीं। उसने हल्के ऊदे रंग की साड़ी पसंद की, जिस पर गहरे गुलाबी रंग के फूल और हरी पत्तियां छपी थीं।

"पैक कर दीजिए!" रमेश ने कहा।

"दाम तो पूछो!" रत्ना ने रमेश को कोहनी मारी। मगर रमेश अपनी जगह से उठा और गद्दी पर बैठे लालाजी से रसीद ले, कीमत का भुगतान करने लगा।

साड़ी का पैकेट उठा रत्ना भाव-विभोर-सी दुकान से नीचे उतरी। दोनों टहलते हुए आगे बढ़े! रमेश ने मिठाई और फल खरीदे, फिर दोनों ठंडी हवा के बीच खिले गुलाब जैसा चेहरा लिए रिक्शे पर बैठे और घर की तरफ चल पड़े। दोनों अपने-अपने विचारों में मगन थे। रिक्शेवाला सड़क पर रिक्शा दौड़ा रहा था। चौराहा गुजर गया। दोनों कुछ नहीं बोले तो रिक्शेवाले ने पूछा, "मोहल्ला तो बताओ बाबूजी, जाना कहां है?"

"ओह! अंदरसेवाली गली में!" रमेश ने चौंककर कहा।

"लेव, अब बताओ! वह तो पिछय छूट गई!" कह रिक्शेवाले ने रिक्शा मोड़ा। रत्ना और रमेश की दबी-दबी हँसी उभरी।

घर पहुंचकर दोनों ने देखा कि मुकेश रसोई में आलू छील रहा था। ऑफिस

से आकर भूख लगी होगी। घर में भाभी को न देखकर मुकेश ने रसोइया बनने की कोशिश शुरू कर दी, जो वह अकसर करता है और उसमें कामयाब भी होता है। मगर इतने बरतन जूठे करता और सामान बिखेरता था कि रत्ना का काम दुगुना बढ़ जाता था। रमेश ने मुकेश को एक नजर देखा, फिर बड़े सहज भाव से बोला, "मुकेश! जरा तीन प्याला चाय बनाना!"

"भाभी आ गई हैं, वही बनाएंगी!" मुकेश ने आलू-चाकू झबिया में डालते हुए कहा।

"अब भाभी तुम्हें चाचा बनाने जा रही हैं, लो..." रमेश ने मिठाई का डिब्बा खोलते हुए कहा।

"अगर, भैया, यह मजाक नहीं है तो फिर मैं इस खुशी में डेगची-भर चाय बनाने को तैयार हूं।" मुकेश ने भाई के पास पहुंचकर कहा।

"मुंह मीठा करो!" रमेश ने कहा।

"नहीं भैया! पहले शिव मदिर जाकर आता हूं, फिर..." कह रमेश की दी बालूशाही उठा, सीधे आंगन पार करता दरवाजे के बाहर निकला।

"लेव, शिवभक्त तो गए प्रसाद चढ़ाने! अब यह मेरी तरफ से...बधाई!" रमेश ने बालूशाही उठा रत्ना की तरफ बढ़ा, उसके कान में धीरे-से कहा। रत्ना ने बालूशाही का छोटा-सा टुकड़ा कुतरा और बाकी बालूशाही रमेश के मुंह में ठूंस खिलखिला उठी।

"ऊपरवाले का लाख-लाख शुक्र कि उसने देर में सही, मगर हमें मां-बाप बनने का गौरव प्रदान किया!" रमेश ने कहा और रत्ना के सर पर हाथ रख उसे बड़े स्नेह से सहलाया, फिर कपड़े बदलने के लिए कमरे के दूसरे कोने पर बंधी अलगनी की तरफ बढ़ा।

घर का माहौल एक सूचना ने बदलकर रख दिया था। रत्ना का मन कर रहा था कि वह यह खबर सबसे पहले मां को दे। रत्ना ने पति और देवर के आफिस जाने के बाद मां को खत लिखा। कुछ दिनों के लिए उन्हें इलाहाबाद आने की बात भी लिखी। दूसरा खत उसने शमीमा को लिखा और तीसरा नाहीदा को। नाहीदा को जब खत लिखने बैठी तो उसकी भाभी खुरशीदआरा का खयाल आया। शमीमा ने चलते हुए कहा भी था कि तुम्हें भाभी बहुत पूछ रही थीं। उसने खत पूरा किया, लिफाफा बंद किया फिर फोन की डायरी पर्स से निकाल उसने नाहीदा की भाभी का नंबर ढूंढ़ा। नंबर मिल गया तो वह पल-भर नंबर देखती हुई कुछ सोचती रही, फिर अपने से कहने लगी—'उनसे फोन पर बात करना ठीक नहीं है। घर जाना चाहिए। यह खबर सुनकर वह मुझे आशीर्वाद जरूर देंगी!'



दूसरे दिन रत्ना ने घर का काम निबटाया। शाम के लिए भी कुछ तैयारी करके रखी ताकि देर हो जाए आने में तो आधा काम हुआ मिले। उसने कपड़े बदले। घर में ताला लगाया और गरम शॉल चारों तरफ अच्छी तरह लपेटकर वह गली के नुक्कड़ पर पहुंची और वहां खड़े रिक्शों में से एक को बुलाया, पता समझाया और हुड उठा बैठ गई। उसके जहन में स्कूल-कॉलेज के दिन उभरने लगे। यादों ने होंठों पर मुस्कान ला दी। आंखें चमक उठीं।

रिक्शेवाले ने गली में मुड़ते हुए कहा, "बकरीवाली गली आय गई!"

"बस-बस! इसी बड़े दरवाजे के पास रोक दो।" कहकर रत्ना उतरी और रिक्शेवाले को पैसा दे, उसने दरवाजे की घंटी बजाई।

बुआ पहली नजर में रत्ना को पहचान नहीं पाई! जब रत्ना हॅसी तो वह उसके सामने का दांत, जो नीला था, देख पहचान गई। बचपन में चोट लगने से उस दांत का रंग बदल गया था। बुआ ने दरवाजा पूरा खोला और रत्ना को लिपटाते हुए बोलीं, "आओ! आओ, बिटिया! आज आंख को ठंडक मिली...दुलहिन बी...दुलहिन बी...तुम यहां बैठो! वह नमाज पढ़ रही हैं। बदलू, ओ बदलू! बेटवा, चाय का पानी रखो तनिक। और हां इनका सलाम कियो?"

"आदाब।" बदलू ने कहा और चला गया।

"यह कौन है, बुआ?" रत्ना ने उसके सलाम का जवाब देने के बाद पूछा।

"हमार बेटवा है! रहमत से छोटा! गांव से बुलवा लिया है। अरे, कोई मर्द तो घर में रहन चाहिए हांके-पुकारे के वास्ते!" बुआ ने बताया।

"यह तो आप ठीक कहती हैं!" रत्ना ने कहा और उठकर कमरे में लगे चित्रों को देखने लगी।

"कौन आया है, बुआ?" खुरशीदआरा की आवाज सुनकर रत्ना तीर की तरह उनके कमरे में गई और हाथ जोड़कर बोली, "नमस्ते, भाभीजी!"

"अरे रत्ना? कैसी हो?"

"आशीर्वाद लेने आई हूं।" कहकर उसने झुककर खुरशीदआरा का पैर छुआ।

खुरशीदआरा को उसके चेहरे पर छाई लाली देख समझते देर नहीं लगी। उन्होंने फौरन कहा, "दूधो नहाओ, पूतो फलो! कौन-सा महीना चल रहा है?"

"तीसरा!" रत्ना ने शरमाकर कहा।

"बुआ...बुआ! अरे, रत्ना के पैर भारी हैं। गोदभराई का इंतजाम कीजिए! बदलू को बाजार भेज जरूरत की सारी चीजें मंगवा लीजिए!" कहकर खुरशीदआरा रत्ना

को पास बिठा, घर-परिवार की बातें पूछने लगीं।

सामान—फल-मिठाई-फूल सब आ गए थे। बुआ ने पटरे पर संदल घिस कटोरी में रखा। थोड़ा-सा अनाज बड़े कटोरे में निकालकर रखा। जब चौकी सज गई तो बुआ ने इत्तला दी। खुरशीद ने उठकर अलमारी खोली। लाल रंग का कपड़ा ढूंढ़ने लगीं। नए कोरे सूट की गठरी खोली और उसमें से गुलाबी सूट निकाला। उसका कामदानी का दुपट्टा रत्ना के सिर पर डाल, उसे चौकी पर बिठा, उसकी गोद में फैले आंचल में फल-फूल रख दिए। सदल की कटोरी उठा उन्होंने रत्ना की मांग भरी और साड़ी हटा, पेट पर लगा कहा, "मांग-कोख से ठंडी रहो!"

"अगली बार इस घर की चौखट पर जो आना तो बिना दूल्हा को साथ लिए न आना समझीं!" बुआ ने रत्ना के सिर पर से रुपया निछावर कर गोद में डाला, फिर दुपट्टे में डाले फलों की गठरी बना दी।

"ठंड बढ़ने से पहले घर पहुंचो, वरना बदली छाई है। पता नहीं कब बूंदें गिरने लगें!" खुरशीदआरा ने कहा।

"जाओ, नुक्कड़ से रिक्शा पकड़ लाओ।" बुआ ने बदलू से कहा और सबका मुंह मीठा कराया।

"भाभी! आपने दुपट्टा तो दिया, इसका सूट भी दे दीजिए!" रत्ना ने धीरे से कहा।

"तुझे बिलकुल फिट आएगा!" खुरशीदआरा खुश होकर बोलीं। गुलाबी के साथ उन्होंने पीले रंग का सिल्क का सूट भी थैले में डाल दिया।

रिक्शे पर फल-मिठाई और कपड़े रख दिए गए। रत्ना ने झुककर पैर छूना चाहा तो खुरशीदआरा ने उसे लिपटाकर कहा, "जीती रहो!"

रत्ना का मन प्यार और विश्वास से भर उठा था कि आगे सब अच्छा-ही-अच्छा होगा। बांझ होने का ताना ससुराल में सुन-सुनकर उसने सबसे मुंह छिपाना शुरू कर दिया था। इसीलिए वह खुरशीदआरा से मिलने नहीं आती थी कि वह भी तरह-तरह के सवाल पूछ हमदर्दी जताएंगी। वह खुद तो परेशान है ही दूसरों को भी सारी बातें बता परेशान करने से क्या फायदा? शमीमा जब कहती तो वह टाल जाती थी। आज शायद उसके मिलने की ललक के पीछे कोई कुंठा न थी, इसीलिए वह बड़े उन्मुक्त मन से नाहीदा की भाभी से मिलने चली आई थी।

रत्ना के जाने के बाद खुरशीदआरा सोचने लगीं कि समीना जाने कब यह खुशखबरी उन्हें सुनाएगी कि वह मां बनने वाली है! बुआ के दिल में भी रत्ना को देखकर ऐसी ही इच्छा उभरी, मगर वह जबान से कुछ नहीं बोलीं। खुरशीदआरा ने

कमरे में जाकर सूट की गठरी फिर से बांधी और अलमारी में रख दी। उन्हें रत्ना का सूट मांगना बहुत अच्छा लगा था। पहले सास, ननद, दोनों देवरों और समीना की इच्छाएं पूरी करती थीं। जब हाथ खुला था तो वह सारी चीजें आसानी से आ जाती थीं। जब जमीर नहीं रहे तो उसके लिए उन्हें खर्च आगे-पीछे करना पड़ता था, मगर जो ख़ुशी उन्हें यह सब करके मिलती थी वह उन्हें ताकत देती थी। अब अरसे से उनसे कुछ भी मांगने के लिए कोई हठ नहीं करता है। कुछ दे-दिला दिया तो देवर, ननद, देवरानी कह उठते हैं—

"भाभी इस तकल्लुफ की क्या जरूरत है! अब हमें आपको पहनाना-ओढ़ाना चाहिए कि उलटे आप हमारे लिए तोहफे खरीदती हैं!"

बात यहीं नहीं खत्म होती। अपनी जिद मनवाने वाली समीना भी कितनी बदल गई है। उनसे कुछ लेने को तैयार ही नहीं होती, उलटे क्रीम, तेल, शैंपू, सेंट और इसी तरह की जाने कितनी छोटी-मोटी जरूरतों की चीजें लाकर उन्हें हर दूसरे-तीसरे महीने देते हुए कहती है, "बाजार गई थी। आप और बड़ी अम्मी के लिए भी कुछ सामान खरीद लाई हूं!"

"यह सब क्यों करती हो?" खुरशीदआरा कहतीं।

"बस अम्मी! मेरा दिल चाहा सो खरीद लिया। यह सेंट तो मैं खरीद भी नहीं रही थी। कमाल ने आपके लिए खरीदा है।" कहकर समीना बुआ को भी कुछ-न-कुछ थमाती थी। एक बार गलती से उनके झोले में लिपस्टिक चली गई, जिसे देखकर बुआ हँसी के मारे लोटी जा रही थीं, जिस पर कमाल ने भी जुमला छोड़ दिया 'बुआ-नानी! हमसे निकाह के वक्त क्या सजोगी नहीं?'

परिवार—वह भी भरा-पूरा परिवार इंसान को कितनी खुशियां देता है! जब परिवार फल-फूल रहा होता है तो उसमें कितनी चहल-पहल, रौनक रहती है और फिर परिवार का ग्राफ नीचे गिरने लगता है पहले सब बिखरते हैं, अपने-अपने ठिकाने खोज लेते हैं, फिर इस दुनिया से बिदा होने लगते हैं। और यह समय सबसे बुरा होता है जब एक-एक करके अपना साथ अपने छोड़ने लग जाते हैं।

28

गरमी और बरसात और अब शरद ऋतु के गुजरने के साथ-साथ मास्टरजी की परेशानी लगातार बढ़ रही थी। उन्होंने जीवन का लक्ष्य बना रखा था कि जिससे भी वह मिलेंगे उससे घुमा-फिराकर पानी की समस्या पर चर्चा जरूर करेंगे। पानी को सहेजने और

बचाने के एक-दो नुस्खे भी बताएंगे, ताकि उनके घर का कलह शांत हो जाए ओर पानी की किच-किच से उपजा असंतोष उनका माथा गरम न कर सके। मगर उन्हें दुःख होता, जब कुछ लोग उनकी बात पर कान न धरते, कुछ मजाक में बात उड़ा देते, कुछ नगर महापालिका को कोसते और अपनी-अपनी राह चल देते। वे जो गरीब थे, झोपड़ों में रहते थे, तंग गलियों और घुटे घर में रहते थे, उनकी परेशानी मास्टरजी समझ सकते थे कि वह पानी संचय करें भी तो कैसे करें? न पास में ड्रम, न बड़ा बरतन रखने की कोई जगह, फिर बारिश का पानी जमा कैसे हो? मगर वे जो छतवाले हैं, बड़े फैले घरवाले हैं, उनकी ढिठाई देख वह दंग रह जाते कि इनके तो कानों पर जूं नहीं रेंगती है, फिर कैसे होगा पानी की कमी का समाधान? उनकी इस 'सनक' को लेकर लोगों ने उन्हें 'पानीवाले मास्टरजी' कहना शुरू कर दिया था।

मास्टरजी ने पूरी बरसात वर्षा का जल छत पर रखे कोलतार के ड्रमों में सहेज लिया था। अब उन्हें कपड़ा, बरतन, सफाई के लिए मई-जून में किसी का मुंह देखना नहीं पड़ेगा, चाहे नल दो दिन सूखा रहे या फिर सप्ताह-भर पानी न आए। पीने का पानी भी स्टील के पतले, लंबे टोंटीदार बरतनों में भरा रहता, जो सप्ताह-सप्ताह बदल दिया जाता था, ताकि किसी किस्म के कीटाणु उसमें अपनी पेठ न वना सकें। उनकी इस तरकीब में उनका सारा परिवार सहयोगी था। इस समय मास्टरजी फत्तू के चायखाने पर बैठे अखबार में डूबे हुए थे।

"साले निब्बू...कहां मर गए हो? नल चला जाई तब भरबो पानी?" फत्तू ने खाली टंकी को देखकर जोर से ढक्कन पटककर कहा।

"ओका नल की लाइन में खड़ा देखा रहा।" ननकू ने तहमत को दोहरा कर घुटनों के ऊपर कसा और दुकान के बाहर चबूतरे पर बैठ गया।

"सोय के जब उठेगा देरी से तो यही हाल होव्वे करेगा!" फत्तू चिड़चिड़ाकर बोला। उसके पास चाय बनाने के लिए अब पानी बचा नहीं था। उसने उबलते पानी में चाय की पुड़िया झाड़ी, फिर उसके उफान पर दूध डाल दिया। चाय बन गई थी। उसने धुली प्यालियां कतार से लगाईं और छन्नी उठा तेजी से प्यालियां भरने लगा। केतली अभी आधी भरी थी। सामने से चार-पांच लोग आते दिखे। उसने जल्दी-जल्दी बैठे ग्राहकों के आगे भरी प्यालियां रखीं और चिंता से गली की तरफ ताका।

'एके बाद न साफ बरतन बचा, न चाय के लिए पानी। अब फत्तू, तोहार दुकान बंद होय में कोई कोर-कसर बाकी नहीं बची। आवै देव नेब्बुआ को, आज जी भर-के निचूड़बे ओका...साला।'—मन-ही-मन कहते किचकिचाते फत्तू ने गिलास उठा लाइन से रखा और चाय छानी। अभी वह खाली केतली भट्ठी के चबूतरे पर रखने ही जा रहा था कि उसने निब्बुआ के कांखने की आवाज सुनी। भरी बाल्टी के बोझ

से उसका शरीर टेढ़ा हो गया था। उसने बाल्टी रख माथे पर आया पसीना अंगोछे से पोंछा। ननकू ने चबूतरे से उतर भरी बाल्टी टंकी में उलटी। नेब्बुआ की आंखों में धन्यवाद उभरा ओर वह खाली बाल्टी ले भागा। उसका यूं भागना देख फत्तू के चेहरे पर ममता-भरी मुस्कान उभरी, जो जल्द ही मुखड़े पर से गायब हो गई। धुएं से मुंदी आंखों से उसने केतली में पानी डाला। उसे भट्ठी पर चढ़ाकर वह जूठे प्याले उठा उसे धोने लगा।

"का छपा हे, मास्टरजी, समाचार पत्र मा?" ठेलेवाले ने अपने पैरों के घाव पर भिनकती मक्खियों को अंगोछे से भगाते हुए पूछा।

"चुनाव आ रहा है तो बड़े-बड़े वायदे हो रहे हैं!" मास्टरजी हँसे।

"वायदे ही सुनकर जियरा खुश कर लें, जरा बताओ तो?" ठेलेवाले ने कान में लगी बीड़ी सुलगाई।

"सब बेकार जवानों को नौकरी मिलेगी, महंगाई-भत्ता बढ़ेगा, जल-आपूर्ति की समस्या पर नई योजनाओं के लिए दस करोड़ रुपया सरकार देगी, और..."

"हम मजदूरन के बाबत भी कोई वायदा सरकार किए है?" बीच में ही ठेलेवाले ने उतावले स्वर में पूछा।

"नहीं...मगर..." उसके बुझे चेहरे को देख मास्टरजी कुछ कहने वाले थे कि ठेलेवाला बीच में ही बात काटकर बोला, "रहे देव मास्टरजी!" और उठकर चला गया।

उसकी निराशा मास्टरजी को हिलाने के लिए काफी थी। गरमी, जाड़ा, बरसात की मार खाते मजदूर जाने कब से बोझा ढोते चले आ रहे हैं। इनका जीवन-स्तर न बढ़ा है और न जीने का अंदाज बदला। मजदूरी बढ़ी तो महंगाई भी बढ़ी है। दोनों जुड़वां हैं—एक दूसरे के पूरक, तो फिर वातावरण बदले कैसे? दाल, प्याज, चावल, आटा खरीदने में ही इनकी पगार को ईटा-जुड़ा चूल्हा आधे से ज्यादा खींच लेता है, फिर इनसे आशा करना कि यह अपने बच्चों को शिक्षा दें, अच्छा नागरिक बनाएं और...

"गरीबी का ताना-बाना बहुत मजबूत है ई देश मा। ओहि ताने-बाने पर सरकार की गाड़ी चलत है। हम न होयं तो विश्वास करो, मास्टरजी, इनका रथ ठहर जाई!" ननकू ने कहा और उठ खड़ा हुआ।

फत्तू का चायखाना धीरे-धीरे खाली हो रहा था। नेब्बुआ का चक्कर खत्म नहीं हुआ था। पानी से भरे हर साइज के बरतन वह उठा-उठाकर अपने छोटे कमान जैसे कांपते शरीर के साथ बराबर लाए जा रहा था। टंकी भर गई थी! दो घड़े, तीन मटके और चार पीपे भी भर गए थे! छोटी भरी बाल्टी उसने पत्थर के पास रखी और फटाफट अंगोछा कमर में बांध अपना काला सूखा शरीर धोना शुरू कर दिया। साबुन मल

ही रहा था कि फत्तू की आवाज कान मे पड़ी, "तोहार ऑमलेट तैयार हे, बबुआ! स्नान करके जल्दी आओ!"

फत्तू की प्रेम-पगी गोहार सुन देगची के कबाबवाले ने सिर उठा फत्तू को ताका, फिर काम में लग अपने से धीरे से बोला—

"कौन के का पालत है, पता ही नहीं चलत है?"

नेब्बुआ का असली नाम सोनू है, मगर जब आया था तब उसके फूले-फूले गाल और गदबदे गोल बदन को देख सबका उसे प्यार से नोचने का दिल चाहता था। ननकू ने उसका नाम चिढ़ाने के लिए नेबू रखा था, जो सबको इतना भाया कि वह सोनू से नेबू और नेबू से नेब्बुआ हो गया था। बचपनेवाला गोल-मोलपना कब का खत्म हो चुका था। अब तो वह केवल हड्डी और चमड़ा रह गया था। सारे दिन फिरकी की तरह नाचता रहता था। फत्तू का व्यवहार उसके साथ बिना किसी लाग-लपेट का था, इसलिए लाड़-प्यार के साथ उसकी ठुकाई-पिटाई भी चलती रहती थी। घरवालों को कोई एतराज न था। महीने-महीने सात बच्चों के बाप के हाथ मे पाच सौ रुपया पहुंच जाता था। ग्यारह साल का नेबू—घर का बड़ा लड़का—पिछले चार साल से कमाने के लिए गांव से शहर आया है। खेलने-घूमने का समय नहीं, बस कुतिया के दिए पांच बच्चों में से एक चितकबरा पिल्ला वह एक दिन जाकर पासवाली गली से उठा लाया था। वही उसका दोस्त है, जिसे वह प्यार से 'पिल्लू' पुकारता है । काम के बीच में कभी उसको उठाकर प्यार करता या फिर दुलार मे भर कान खींचता और तुतलाकर पूछता, "मेले पिल्लू को बूक लदी है?" फिर केतली की बची चाय कतरा-कतरकर उसके बरतन में निचोड़ वह जूठे बरतन धोने बैठता और पिल्ला प्यार से कूं-कूं करता उसके पैर से लिपटता-चिमटता फिर जाकर चाय चाटने लगता।

मास्टरजी चायखाने से उठकर चौरसिया की दुकान पर जाकर खड़े हो गए। पान का बीड़ा मुंह में दबा वह शिव मंदिर की तरफ टहल लिए, जहां उन्होंने देखा, टूटे ताल की सफाई के बाद उसमें पानी भरा हुआ था। उन्हें खुशी हुई कि चलो, किसी ने तो उनकी बात पर कान धरा, अब इस ताल की मरम्मत हो, इस पर ढक्कन का भी जुगाड़ हो जाता तो कितना अच्छा होता। मगर यह तभी हो सकता था जब सभी लोग इस भले काम के लिए चदा दें। वह जाकर मदिर की सीढ़ी के पास लगे पीपल के पेड़ के नीचे बैठ गए। उनके दिमाग में राजस्थान के वे इलाके चक्कर लगा रहे थे जहां पानी का संकट शुरू से था। कोसों चलकर लोग एक गगरी भर, घर लौटते ताकि सभी को पीने का पानी मिल सके और कोई प्यासा न रहे। 120 से 180 फुट गहरे कुओं में पानी जाने कब समाप्त हो जाए, इस भय में जीते उस इलाके के लोगों को देखते कितने भाग्यशाली हैं हम कि दो नदियां जहां बहती हैं वहां रहते हैं, मगर

उनकी पूजा कर, उसे पावन कहकर भी हम उसकी उचित देख-रेख नहीं कर पाते हैं...कितने मतलबी हैं इस नगरी के लोग।

राह चलते लोग पेड़ के नीचे चुपचाप बैठे मास्टरजी को देखते और मन ही मन कहते कि मास्टरजी सठिया गए हैं। कुछ हँसकर कहते कि यह तो अपने को गौतमबुद्ध का अवतार समझ बैठे हैं, ज्ञान की प्राप्ति जरूर होगी! इस सारी चुहलबाजी से दूर पानीवाले मास्टरजी आने वाले संकट के बारे में सोचने में मगन थे। उन्हें लग रहा था कि घर-घर पानी की कमी से इंसानी जिंदगी दुश्वार हो चली थी। अब पानी लोगों का कार्यक्रम तय करने लगा है। पानी है तो नहाना हो सकता है, पानी नहीं है तो कपड़े नहीं धुल सकते है। पानी है तो पौधे सींचे जाएंगे, पानी नहीं है तो रसोई भी जूठी पड़ी रहेगी। सारा खेल पानी का है! जेब में पैसा है, मगर पानी मौजूद नहीं। कुआं है तो डोल नहीं कि डालकर पानी निकाल, चुल्लू लगा, गटर-गटरकर प्यास बुझा लें, क्योंकि वहां तो कूड़ा भरा है। बावली काई से भरी, सड़े पानी से गंधा रही है। नदियां मटमैली हो मैला ढोती बह रही हैं! क्या साफ पानी सपना बन जाएगा जो कभी कल-कल कर बहता था? हलक से उतर अंतड़ियों में पहुंच एक संतोष-भरी ठंड बदन में बिखेरता था? वैसा पानी पीने के लिए क्या गंगोत्री की यात्रा करनी पड़ेगी?

खालिस दूध नहीं मिलता—यह शिकायत तो पुरानी हो चुकी है, नई शिकायत है—खालिस पानी नहीं मिलता है देखने को, पीना तो दूर...खालिस शहद की तरह खालिस पानी भी लोग बोतल में बंद रखेंगे, ताकि उसकी एक-दो बूंद सूखे के समय चाटकर अमृत का स्वाद ले सके। ऐसा दौर जल्द ही आने वाला है जब हीरे के मोल पानी मिलेगा और पूंजीपति उसको अपनी तिजोरी में बंद कर रखेंगे। तब डकैतियां पानी की बोतल के लिए पड़ेंगी। बैंक के लॉकर टूटे मिलेंगे केवल खालिस पानी के लिए जिसकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में करोड़ों होगी! यह फेंटेसी नहीं, बल्कि आने वाले समय में पानी की दुर्लभता की पूर्वघोषणा है। यह मजाक नहीं, बल्कि पानी के बढ़ते महत्त्व का सच है। यह अतिशयोक्ति नहीं, बल्कि भविष्य का यथार्थ है।

'क्या तब इंसान महत्त्वपूर्ण नहीं हो जाएगा कि उसके शरीर में आंसू और पेशाब के रूप में जल-स्रोत छुपे हुए हैं?'

'नहीं, जब वह पानी नहीं पिएगा तो यह स्रोत भी सूख चुके होंगे।'

'फिर इंसान जिएगा कैसे?'

'टेबलेट खाकर। आखिर साइंस केवल एटम बम ही थोड़ी बनाती जाएगी। ऐसी गोलियों का भी आविष्कार होगा जब इंसान को खाने-पीने की जगह माह में केवल दो गोली खानी पड़ेगी!'

'हो सकता है तुम्हारे कथन में सच्चाई हो, क्योंकि तब तक खेती सूख चुकी होगी!'

'वनस्पति न उग सकने के कारण वारिश नहीं होगी और जब बारिश नहीं होगी तो पेड़ नहीं उगेंगे। घास भी न होगी जिसे हम चूस सकें, न ओस टपकेगी जिसे हम चाट सकें। हम सिर्फ गोली खाएंगे। तरक्की करेंगे। बेहतरीन मशीनें बनाएंगे—एक बटन से जमाने को बदल डालने वाली मशीनें।'

'मशीनें, जिन्हें हम चलाएंगे?'

'हम बनाएंगे जरूर उन्हें, मगर चलाएंगी वे हमें।'

'कैसे?'

'मतलब साफ है! उन मशीनों के हम मोहताज हो जाएंगे। जब वह ठप तो हम ठप!'

'तुम्हारा मतलब समझा कि आज जैसे पानी हमें चला रहा है, तब हमें हमारी बनाई मशीनें चलाएंगी!'

'बिलकुल! खुदा ने इंसान बनाया। इंसान ने मशीन!'

'मगर मशीन बच्चे नहीं जन पाएगी, तब यह आबादी?'

'जितने साल आबादी बढ़ने में लगे हैं उतने ही घटने में लगेंगे। इस बीच हम क्लोन की तरह मशीनों से बच्चा भी पैदा करवाने लगेंगे?'

'वह होंगे किसके बच्चे?'

'मशीन के!'

'तब मशीनें इंसान को महत्त्व देंगी केवल उसके दिमाग के चलते, जो बड़ा खुराफाती है। इसलिए मशीन की कैद में इंसान होगा, जिसका स्वामी मशीन होगी। यही हमारे विकास की आखिरी मंजिल होगी।'

'कितनी दहशत हो रही है मुझे भविष्य के बारे में सोचकर।'

'और वर्तमान? जहां खून पानी की तरह बह रहा है! यह देख तुम्हें दहशत नहीं होती?'

'होती है...सुकून छिन गया, आराम जाता रहा। भटकन है जो खत्म नहीं हो रही है।'

'होगी भी नहीं।'

'क्यों?'

'इंसान ने दिल के दरवाजे बंदकर दिमाग को खुला छोड़ दिया है। जब दिमाग तरक्की करेगा तो अपने खिलाफ खड़ा होगा ही।'

'दिल ने भी क्या दिया? आंसू, ठोकर, पिछड़ापन, ठहराव और...'

'उसने इंसान को जन्म दिया है, यह मत भूलो! जब दिल होगा तभी तो इंसान पैदा कर पाओगे? मशीनी क्रिया से इंसान नहीं, मशीन पैदा होती है। अति तक जाने का अपना बावलापन इंसान को खत्म करना पड़ेगा, वरना भरे जाम को और भरने की लालसा में उलटकर दूसरी ओर भरने की चाह में भरा जाम खाली हो जाता है!'

'मेरा सर दुःखने लगा है।'

'तो दिल के दरवाजे खोल दो और दुनिया की उन चीजों के बारे में सोचो जो सुंदर हैं, नरम हैं, मुलायम हैं! जो भावनाओं को विस्तार देती हैं।'

'इससे क्या होगा?'

'जब तुम समझ ही नहीं सकते हो तो बेहतर है—बम बनाओ, मिसाइल बनाओ, बाजार सामानों से भर दो और पैसा कमाने के लिए खूबसूरत पैकिंग में जहर बेचो, जो इंसान की जिंदगी से खेल सकें।'

'इस तरह की बेहूदा बातें मुझसे क्यों कर रहे हो?'

'क्योंकि तुमने बेहूदगी को जन्म दिया है।'

'मैंने?'

'हां, तुमने!'

'वह कैसे?'

'वह इस तरह से कि तुम्हें कुदरत ने जो उपहार दिए थे उसे माले मुफ्त दिले बेरहम की तरह तुमने इस्तेमाल किया है! जाओ देखो उन घने जंगलों को जो तुमने काट दिए। जाओ ढूंढ़ो उन जीवों को जो तुम्हारी गोली से नापैद होते जा रहे हैं। जाओ देखो उस जमीन को जिसके स्तनों को तुमने निचोड़ लिया और अपनी सत्ता दिखाने के लिए उस पर परमाणु बमों का प्रयोग किया। जाओ देखो उसकी तपती परतों को और उसकी सौजिश का अंदाजा लगाओ कि वह किस तकलीफ से दो-चार है। उन पर्वतों को देखो जिन्हें तोड़कर, उड़ाकर तुमने अपनी इच्छाएं पूरी कीं। उन हिमशिखरों को देखो जिन्होंने अपने वजूद को पिघला तुम्हें नदियां दीं और तुमने उन्हें बरबाद कर दिया। यही नदियां थीं जिनके किनारे तुम आकर बसे थे, आज तुम उनसे मुंह मोड़ चुके हो। तुम बहुत स्वार्थी हो!'

'बस-बस अपनी जबान बंद रखो! बहुत हो चुका। इस धरती को रहने के काबिल हमने बनाया। सुंदरता दी, शब्द दिए, कलम दिया, जीवन-स्तर दिया और...'

'और फिर उसी की बरबादी में लग गए?'

'तुमसे बहस बेकार है। रौद्र रूप प्रकृति भी दिखाती है, फिर इंसान पर यह आरोप क्यों?'

'इसलिए कि वह अब खुद अपने कारनामों से थक रहा है। परेशान है। सुकून की उसे तलाश है। एक तरफ सुरक्षा-शांति की दोहाई दे रहा है, मगर उसके लिए दिल नहीं खोल रहा है, बल्कि बंदूक उठा आतंक फैला रहा है।'

'तो इसमें बुराई क्या है?'

'बस जरा-सी, चुटकी-भर! वह शांति की खोज मे अशांति फैला रहा है। वह सुरक्षा की चिंता में अधिक असुरक्षित हो रहा है। वह उन्नति की दीवानगी में ज्यादा पिछड़ रहा है और...'

'बस, चलता हूं। तुम्हारे पास कोई ठोस तर्क नही है।'

'तुम बुजदिल इंसान यूं पीठ दिखाकर जाओगे, मुझे पता था, क्योंकि इन जिंदा प्रश्नों का कोई जवाब तुम्हारे पास नहीं है। अरे कायर इंसान! तूने अपने सुख के लिए प्रकृति की स्वभाविकता को नष्ट किया। उसी प्रकृति को, जिसकी गोद में तू कल जनमा था! आज तू उस धरती को दूसरे आने वाले इंसानों के लिए दूभर बना रहा है। ठहर तो! यू पीठ दिखाकर मैं तुझे जाने नहीं दूंगा...मैं तेरा पीछा तब तक करता रहूंगा जब तक तू अपने हाथ इस विनाशकारी गतिविधियों से खींच नहीं लेता है...मैं आ रहा हू तेरे पीछे!'



मास्टरजी तेजी से उठे और अजीब बेचैनी के साथ उन्होंने इधर-उधर देखा। फिर उसी तरह सोच में डूबे वह घर की तरफ बढ़े। आसपास की चहल-पहल उनके चिंतन में बाधा नहीं डाल रही थी। जब वह घर की तरफ बढ़े तो रमजानी और ननकू रिक्शेवाले के बीच होती छेड़खानी पहले की तरह जारी थी, जबकि रमजानी ननकू से उम्र में काफी बड़ी थी। उसकी इस छेड़छाड़ से बाकी लोग भी रस लेते थे, इसलिए जान-बूझकर दोनों को उकसाते और मजा लूटते थे। रमजानी अपनी कोठगी किराये पर दे अब पन्ना सुनार के यहां ही रहने लगी थी। मालती सुनारिन फिर पेट से थी। रमजानी का मन भी इन दोनों से मिल गया था। अब तो वह मालती को भौजी और पन्ना को भाईजी कहने लगी थी। वह सौदा लेने जब निकलती तो अपनी कोठरी की खोज-खबर भी एक मिनट ठहरकर, किरायेदार से बोल-बतिया के ले लेती थी, तभी ननकू से भिड़ंत हो जाती थी।

"अरे रमजानी, तोहार भैया-भौजी कब तोहार डोली उठवइहैं?" ननकू सुरती

हथेली पर चूने के संग मलते हुए कहता।

"जब तोहार अर्थी उठिहै!" रमजानी जलबलाकर कहती!

"राम! राम! तब तो तुम हमार विधवा कहलइयो!" ननकू सुरती फांक मुस्कराता।

"ब्याह भया नहीं और अपनी विधवा होय का दावा ठोकत है!" रमजानी मुस्कराती।

"तो कर लेव न! कहत-कहत जबान थक गई। अब का मूड़ी कटवाय के तोहारे चरण में रख दें!" रमजानी की कटाक्ष-भरी मुस्कान देखकर उसकी हिम्मत और बढ़ जाती।

"बइठे रहो, हमार बला से!" रमजानी ननकू की बेशरमी से चिढ़, उसे अंगूठा दिखा यह जा-वह जा हो जाती और ननकू रिक्शा चमकाते हुए गाना गाने लगता—'ओ, जाने वाली रुक जा, आदमी बुरा नहीं हूं दिल का...'

"का मिलत है तोका, उस बेचारी को छेड़कर?" मोची ने जूता गांठते-गांठते पूछ ही लिया।

"ओही रस मिलता है, जो बचपन मा आम तोड़कर रखवाले को छकाए मा आवत रहा, चाचा!" ननकू रिक्शे की घंटी चेक करता हुआ बोला।

"यह नीक बात नाय है—राह चलत मेहररुअन से छेड़छाड़। आगे तोहार मर्जी।" मोची इतना कह चुप हो गया।

ननकू ने मोची की बात का कोई जवाब नहीं दिया। इस तरह की हँसी-दिल्लगी में कोई बुरा विचार मन में नहीं होता है। बस, एक खिलंदड़ापन है—यह सारा मोहल्ला जानता था, इसलिए मोची की सीख का किसी ने समर्थन नहीं किया। रोज की किच-किच के बीच आदमी हँसे-बोले न तो फिर जिए कैसे? गली में आने वाली इमली मेहतरानी से क्या कम छेड़छाड़ चलती थी! मगर वह मैले का टोकरा लिए मटकती- मुस्कराती जवाब देती रहती थी। इस मजाक के पीछे शायद अपना मैला उठवाने का पाप और मैला उठाने वाले का त्याग दोनों ही कहीं पर मुखर हो उठता था। उन दिनों क्या चहल-पहल इन गलियों में होती थी! जब इमली आलता-सजे पैरों में चांदी की बिछिया-तोड़ा पहने, भर-भर हाथों चूड़ियां, कमरकसी करधन और नाक में लाल रंग की कील, माथे पर बिंदी और मांग में सिंदूर भरे झाड़ू लगाती दाखिल होती तो सभी के चेहरे खिल उठते थे।

अब उसे मरे कई वर्ष गुजर गए हैं। उसकी बीमारी में गलीवालों ने बड़ा साथ दिया था। उसके बेटे को नगरपालिका में लगवाने का काम भी पीले घरवाले पंडितजी

ने किया था। अब न इमली की तरह कोई मोहब्बती रह गया था, न घरों में इस तरह का हिसाब-किताब ही बचा था। वह संबंध-गाथा भी समाज के आधुनिकीकरण में अतीत की भूल-भुलैया में दफन हो गई है।



सफिया के पैर भारी होने की खबर सुन शकरआरा का दिल फौरन ही बेटी के पास पहुंचने का चाहने लगा, मगर अभी घर से कदम वह नहीं निकाल सकती थीं। दिल मसोसकर रह गई। उनका दिल्ली न जाना कमाल को हैरत में डाल रहा था। उधर जमाल खां पकड़ नहीं पा रहे थे कि आखिर शकर में किस तरह का बदलाव आ रहा है, जिसे समझना उनके लिए दुश्वार होता जा रहा है!

बाजार जा वह सफिया के लिए गहने, कपड़े और दूसरी चीजें खरीद लाई थीं। बेटी से बातें भी फोन पर कई बार हो चुकी थीं। उसके इसरार पर कि जाड़े की तो शुरूआत हो चुकी है, अम्मी, आइए! मगर वह सही वजह न बता पातीं और सफिया इस खयाल से अपने को कोसती कि नाहक मम्मी को कहा कि यहां पानी की किल्लत है। अब मौसम भी अच्छा हो गया था। अक्तूबर के बाद तो वैसे भी दिल्ली का मौसम खुशगवार ही रहता है।

सफिया के घर सास-ससुर और दादी पहुंच गई थीं। उनके पहुंचने के दूसरे दिन जमाल खां फल-फूल, मिठाई, कपड़े के साथ लदे-फंदे दिल्ली पहुंच गए। उनकी आंखें नवासे की आमद से चमक रही थीं। तीन कमरों का फ्लैट लोगों से भर उठा। दादी की नमाज की चौकी का भी इंतजाम हो गया था। वह पहली बार ट्रेन में बैठी थीं। काफी घबरा रही थीं। रास्ते-भर दिल्ली का फैलाव और भीड़भाड़ देख परेशान हो उठीं। वह काफी थक चुकी थीं। नहा-धोकर जब वह बिस्तर पर लेटीं तो धीरे-से बोलीं, ''निगोड़ी गाड़ी ने तो हिल-हिलकर मेरी चूलें हिला दी हैं।''

''अब आप थोड़ा सो लीजिए!'' बहू ने कहा।

''तुम दोनों मियां-बीवी ने तो सारी रात खर्राटे लिए हैं।'' दादी बोलीं, फिर धीरे से कहने लगीं, ''मुई बिजली की यह गर्मी हलक सुखा देती है। मगर जमाना बदल रहा है, तभी सूखे गालों पर क्रीम रात-दिन मलते रहते हैं लोग।''

''सफिया को सीने से लगाकर जमाल खां को सुकून मिला। रात के खाने पर उन्होंने बच्चे की पैदाइश इलाहाबाद में होने की ख्वाहिश जाहिर की, जिस पर ससुर ने कहा कि ठीक है, वहां घर में ही डॉक्टर हैं, मगर दिल्ली की बात अलग है। फर्म सारा खर्च उठा रही है। हम भी आ गए हैं! फिर यह सब पुरानी रवायतें हैं। इनको हमें ही बदलना चाहिए।

जमाल खां चुप हो गए। किसके भरोसे जिद करते? शकरआरा साथ होतीं तो बड़ी खूबी से सब कुछ संभाल लेतीं। बेटी के साथ दो दिन गुजार वह लौट आए।

पिता के जाने के बाद दो-तीन दिन तक सफिया उदास-सी रही, फिर जिम्मेदारियों में डूब गई। कुछ काम तो ऐसे थे कि जिसका कोई अंदाजा सास को नहीं था, जैसे पानी का इंतजाम। दादी सुबह तीन-चार बजे उठ जातीं। बाथरूम में जा मुंह-हाथ धो वजू करतीं और वाशबेसिन का नल बंद करना भूल जातीं। चंद घंटों में बहता पानी ऊपर टंकी खाली कर देता। आंख खुलते ही इस परेशानी का सामना करना पड़ता। जब सास कहती कि रात को कम से कम बाल्टी भर लेनी चाहिए थी, तब सफिया जबान नहीं खोल पाती थी कि दादी ने नल खुला छोड़ दिया था। जितनी बार रात को बाथरूम जाती हैं बाल्टी में भरे पानी से पैर गोता कर बाहर निकलतीं। ऐसी हालत में सफिया के मियां का मूड ऑफ हो जाता। जब तक पानी की टंकी फोन करने पर आती तब तक उसके ऑफिस जाने का समय हो जाता था। रोज-रोज के इस तनाव से सफिया को ब्लडप्रेशर हो गया था, जो काफी चिंता की बात थी। सबकी फिक्र सुन-सुनकर सफिया झुंझलाई-सी रहती। मियां के आने के बाद बनावटी मुस्कान वह चेहरे से उतार फेंकती और बंद दरवाजे वाले कमरे में उदास चेहरा और डबडबाई आंखों के साथ बैठ जाती। बेटा खुद मां-बाप के आने से जहां खुश था, वहीं कुछ व्यावहारिक मुद्‌दों पर बेहद परेशान। सफिया को वह दिलासा देता, मगर कुछ दिनों से वह भी खिसिया उठता, जब उसे सुबह को नहाने के लिए पानी न मिलता।

बच्चे के दुनिया में आने में अभी काफी देर थी। पूरे छह माह कैसे गुजरेंगे! इस फिक्र में सफिया घुली जा रही थी। देर में नहाने की आदत के चलते आराम से सब नल जाने के बाद स्नान के लिए उठते और बाल्टियों में भरा पानी खर्च कर डालते। दोपहर तक किचन का पानी भी समाप्त हो जाता और बरतन धोने वाली जूठे बरतन छोड़ चली जाती। इससे किचन में मक्खी और कॉकरोच बढ़ रहे थे। दवा स्प्रे करो तो दादी को उसकी तेज गंध चक्कर और उलटी जैसी कैफियत में ले आती थी। कपड़े बेधुले ढेर हो जाते, पानी की कमी से वाशिंग मशीन भी नहीं चल पाती थी। इधर बिजली-कटौती के चलते कभी दोपहर में तो कभी रात में तीन-चार घंटे बिजली नहीं आती थी। बड़े आंगन और खुले दालानों में बड़े-बड़े पेड़ों के संग रहने वालों को इस दरबे में घुटन लगने लगती थी। सास को अकसर सर में दर्द रहता जिससे सफिया को उनके माथे पर बाम मलना पड़ता था।

शादी के बाद मियां-बीवी ने अकेले घर में हर तरह की मस्ती-भरी जिंदगी जी थी, अब प्यार-मोहब्बत की बातों पर भी उन्हें पाबंदी-सी लगती। कहीं की झुंझलाहट कहीं निकलने लगी। कभी न लड़ने वाले मियां-बीवी आपस में चोंच लड़ाने लगे।

उस दिन तो खासा महाभारत मच गया जब बिजली न रहने पर, बेटे के पानी मांगने पर मां ने उठकर फ्रिज खोला, पानी की बोतल नदारद थी। सादा पानी ढूंढ़ा, उसकी बोतलें भी खाली थीं। उन्होंने सामने रखी बोतल देखी तो लपककर गिलास भरा और बेटे को थमा दिया। सफिया बाथरूम में थी! बेटे ने घूंट भरा तो उसका सूखा गला कांटों से भर उठा। उसने घबराकर वॉशबेसिन में कुल्ली कर, गला साफ कर कड़वा मजा थूका।

"क्या हुआ?" मां ने घबराकर पूछा।

"आपने पानी की जगह मुझे लाकर क्या दे दिया है, अम्मी! सफिया...सफिया कहां हो तुम?"

"देखूं तो।" मां ने शमा की रोशनी में गिलास उठाया—पानी साफ था!

"क्या हुआ?" सफिया ने आकर पूछा।

"यह पानी..." सास ने सफिया को देख कहा।

"अम्मी! यह तो सफेद सिरका है!" सफिया ने पानी सूंघकर कहा।

मां का चेहरा उतर गया।

"तुम रोज-ब-रोज लापरवाह होती जा रही हो! क्यों सफेद सिरका पानी की बोतलों में रखा?" बेटा आज ताव खा गया था।

"मैंने कहां रखा? पता नहीं अम्मी के हाथ कैसे लग गया। यह तो मसाले की कैबिनेट के ऊपर रखा रहता है।" सफिया ने झुंझलाए मगर ताज्जुब-भरे स्वर में कहा।

"तुम कहना क्या चाहती हो कि अम्मी ने जान-बूझकर मुझे सिरका पीने को दिया?"

"यह मैंने कब कहा?" अपमान से सफिया का गला रुंध गया।

"जाने दो, गलती मेरी थी। मैंने कभी सफेद सिरका इस्तेमाल नहीं किया, इसलिए उसे पानी समझने की गलती कर ली।" उन्होंने बहू की डबडबाई आंखें देख जल्दी से कहा।

"क्या जाने दो, अम्मी! ऑफिस जाते हुए पानी नहीं। आकर देखो तो नहाने का पानी नहीं। आज तो कमाल हो गया, घर में पीने का पानी नहीं! अरे, रामलाल को फोन कर देतीं, पानी की बोतल तो पहुंच जाती।" बेटा गुस्से में अंदर कमरे में चला गया।

सफिया बहुत रोकने पर भी आंखों से गिरने वाले आंसुओं को नहीं रोक पाई।

ससुर चुपचाप सारे हंगामे को मूक दर्शक की तरह बैठे-बैठे देखते रहे, फिर किसी सोच में डूब गए। कुछ मिनटों बाद बिजली आ गई। पानी जाने में अभी आधा घंटा बाकी था। सफिया और सास ने मिलकर बाल्टी-बोतल भरनी शुरू की तभी बरतन धोने नौकरानी आ गई। फैली रसोई सिमट गई। अंदर बेटा नहाकर बिस्तर पर लेटा अपनी हरकत पर शर्मिंदा हो रहा था कि पता नहीं, अम्मी-अब्बा और दादी मेरे बारे में क्या सोच रहे होंगे। मैं सफिया का कहना मान लेता और उन्हें किसी बहाने दिल्ली आने से रोक देता तो बदमजगी न होती। मगर अब यह सब सोचने से कोई फायदा नहीं है।

रात को ससुर ने अपनी सोची हुई बात अपनी बेगम से कही। उनको भी समझते देर नहीं लगी। दोनों ने प्लान बनाया कि किसी बहाने से हफ्ते-भर बाद लखनऊ लौट जाना चाहिए, फिर बच्चे की पैदाइश की दी तारीख के पंद्रह दिन पहले दोबारा आना चाहिए।

दूसरे दिन घर का माहौल हलका था। नल के रहते-रहते सब नहा-धो लिए। पानी की बहुतायत देख नौकरानी ने भी किचन की जमकर सफाई कर फर्श धो डाला था। घर में सबके चेहरों पर चमक थी।

सफिया ने दिल-ही-दिल में अल्लाह का शुक्र अदा किया कि एक माह बाद ही सही, यह बात अम्मी-अब्बा को समझ में आ गई कि इस शहर का रहन-सहन कुछ अलग किस्म का है।

29

अब हेमंत ऋतु की धूप किसी चंचल बाला की तरह शहर के गली-कूचों में कूदती-फांदती घूम रही थी। तंग घरों में रहने वाले धूप के इस खेल के साथ अपने खटोले इधर-से-उधर घसीटते, उसे पकड़ने की चाह में सारा दिन गुजार देते थे। भीगे पोतड़ों को उठाए नई बनीं माएं धूप की तलाश में परकोटों तक चढ़ जाती थीं। इस सबके बावजूद जाड़ा जब भी आता है, खुशी लेकर आता है। यह मौसम तो इंसान को इंसान से जोड़ने वाला है। आग के अलाव को घेरा बना तापते लोग हों या रसोई में बैठे गरम-गरम फुलके खाते परिवार के सदस्य हों या फिर एक रजाई में घुसकर लेटने वाले नन्हें-मुन्ने भाई-बहन हों—सभी गरमी की तलाश में एक-दूसरे के नजदीक होने लगते हैं। गोरे रंग अनार की तरह लाल हो उठते हैं और सांवले रंग चंपा की तरह खिल उठते हैं। काले रंगवाले मुखड़े चिकना उठते हैं।

ऐसी ही जाड़े की एक सुबह अपने सूरज के थाल के साथ नीले आसमान पर उगी थी। उसकी मुलायम नारंगी गरमी पेड़ों से फूटती हरी घास पर फैल रही थी। चिड़ियों ने ताजा हवा में पंख फड़फड़ा उड़ना और चहकना शुरू कर दिया था। शकरआरा अपने को गरम दोशाले में लपेटे, फूलों की क्यारी के पास पड़ी कुर्सी पर बैठी गरम चाय के घूंट भर रही थीं। उनकी खूबसूरत सीप-सी बड़ी-बड़ी आंखों में खुशी झील बन चमक रही थी। वह दिल-ही-दिल में सोच रही थीं कि सुबह उठना और आसमान-जमीन के हुस्न को देखना कितनी बड़ी दौलत है, मगर जमाल पड़े खर्राटे लेते रहते हैं! कमाल और समीना का भी वही हाल है। सात-साढ़े सात तक उठेंगे। कसमसाते हुए बिस्तर पर चाय पिएंगे और तब कहीं किसी फोन की घंटी के घनघनाने से मजबूरन उठेंगे। उस वक्त तक कुदरत का यह हुस्न गायब हो जाता है और वहां बस, कार, रिक्शा और मर्द-औरत-बच्चों की आवाज में सरगोशी करती कायनात गूंगी हो उठती है। दुनिया का कारोबार शुरू हो जाता है और इंसान अपने वजूद पर इतराने लगता है कि इस मशीनी दुनिया को संवारने वाला मैं हूं मैं!

शकरआरा ने गर्म दुशाला अपने चारों तरफ लपेटा और आसमान की तरफ नजरें उठाई। सूरज का गोला अपने आने की इत्तला नारंगी रंग बिखेरकर देने लगा था। वह उठीं और बंगले की सीढ़ियां चढ़ती अंदर पहुंचीं। कमरे में पहुंचते ही उनकी नजर अपनी अलमारी पर पड़ी तो उनके चेहरे का रंग बदल गया। वास्तव में शकरआरा के लिए मकान का मिला रुपया बैठे-बिठाए एक बड़ी चिंता का कारण बन बैठा। उनका बनाया प्लान तो कामयाब रहा, मगर पचास लाख की यह रकम अब उनके गले की हड्डी बन चुकी थी कि आंखिर किस तरह से यह बात जमाल खां को बताई जाए और आधा रुपया समीना और कमाल के नाम कर दिया जाए? चेक तो वह अपने नाम का अपने बैंक खाते में डाल आई थीं। वह भी कब तक अपने पास रखे रहतीं! मगर रुपये? इतना कैश घर में रखना किसी तरह मुनासिब नहीं है।

कुछ दिन पहले मुस्तफाबाद की मौरूसी जायदाद को लेकर उनके और जमाल खां के बीच तनाव आया था। उसको उन्होंने कमाल को अपने सर की कसम देने के चलते खत्म करने की कोशिश की थी। अब फिर जब समीना को उसके ननिहाल का घर बिकने की बात मालूम होगी तो वह पता नहीं कैसे बरताव करे? माना कि घर हमारे बाप-दादा का था, हमने उठाकर बेच दिया, मगर वे इनके भी तो कुछ लगते थे—इससे तो हम दोनों बहनें इंकार नहीं कर सकती हैं! रात-दिन की यह सोच शकरआरा को बेचैन किए रहती थी। इस बात को घर में सभी ने महसूस किया कि कोई दुःख है, जो अंदर-अंदर शकरआरा को अपनी तरह मथ रहा है। जमाल खां ने कई बार महसूस किया कि शकर पास लेटे-लेटे किसी सोच में डूब जाती हैं फिर

ठंडी आह भर, आंखें मूंदकर, माथे पर कोहनी मोड़ रख लेती हैं! कई बार उन्होंने पूछा भी मगर शकरआरा ने बच्चियों से दूरी, उनकी याद आना, अपने को तनहा बताकर चुप्पी साध ली।

समीना को सच के एक अंश का पता चल गया था, मगर उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि जब सब कुछ उनकी मर्जी से हुआ है तो फिर यह उदासी, परेशानी क्यों? उनका दिल व दिमाग बार-बार कहां भटक जाता है? आजकल उनका क्लब जाना, किटी पार्टी की गॉसिप सुनाना, शॉपिंग करना—सब छूट गया था। ब्यूटी पार्लर गए कई हफ्ते गुजर गए थे।

एक दिन समीना ने उनसे पूछा भी, "बड़ी अम्मी, मुझे आइब्रो बनवाने जाना है, आपको तो नहीं चलना है?"

"नहीं, तुम जाओ। मेरा दिल नहीं चाह रहा है।"

"आप इस तरह बुझी-बुझी क्यों रहती हैं? किसी लेडी डॉक्टर से मिलना चाहती हों तो टाइम ले लूं।" समीना ने पूछा।

"अरे नहीं चांद! ऐसी कोई बात नहीं है!" शकरआरा हँस पड़ीं।

"कुछ दिन आप और अब्बी सफिया के घर क्यों नहीं हो आते? जाड़े में उसने आपको बुलाया भी था।"

"हां, खुद कहकर नहीं आई। दिल्ली जाकर तो ऐसा मगन हुई कि बस...मैं अभी जाना नहीं चाहती!" शकरआरा ने कहा।

"तो एक चाय पार्टी ही घर में दे डालें। मुझे आपका यूं गुमसुम रहना अच्छा नहीं लगता, बड़ी अम्मी!" समीना ने लाड से कहा।

"तू तो मेरी नमक की डली है! कलेजे की ठंडक! तेरी बातों को सुनकर ही मुझे सारे जहां की खुशियां मिल जाती हैं। तू मेरी फिक्र न कर, लाडो! इस उम्र में उदासी के दौरे औरतों पर पड़ते हैं। हारमोंस बदलते हैं। इंसान हमेशा जवान थोड़ी रहता है।" शकरआरा ने समीना का चेहरा सहला उसके माथे का चुंबन लिया।

"ठीक है, फिर मैं होकर आती हूं।" कहकर समीना दीवान पर से उठी।

जाड़े की धूप लॉन में फैल गई थी। कंधों पर शॉल डाल शकरआरा बरामदे की सीढ़ी उतरती सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गईं! हाशिम ने गरम कॉफी का प्याला रखा और छतरी का रुख तिरछा किया, ताकि बड़ी बेगम के चेहरे पर धूप न पड़े। शकरआरा ने कॉफी का घूंट भरा और सामने क्यारी में खिले गुलाबों पर अपनी नजर गाड़ दी। उनका दिमाग फिर सेफ में रखे रुपयों की तरफ भटक गया।

'मैं कमाल और समीना की नजरों में गिरना नहीं चाहती हूं कि उनमें कभी

यह अहसास जागे कि मैंने चालाकी से सारे रुपये मार दिए...ऐसे मैं चाहती तो यही थी कि वे रुपये कमाल के काम आएं, मगर कमाल बड़ा गैरतदार लड़का है। उसे अगर बात चुभ गई तो फिर वह इन रुपयों को हाथ नहीं लगाएगा और रुपये सेफ में पड़े-पड़े गल जाएंगे।'

आसमान शफ्फाफ था। उसका नीला रंग और उस पर सफेद बादलों के गुच्छे जहां-तहां अटककर हवा की ताजगी का इशारा कर रहे थे। चिड़ियां फुदक रही थीं। बॉटल ब्रश की शाख पर बैठी नन्हीं, चमकीली नीली चिड़िया रह-रहकर गा उठती थी। हाशिम एक प्लेट में अमरूद के गोल-गोल कटे टुकड़ों पर मिर्च व नमक छिड़ककर ले आया था।

"कल वाले अमरूद हैं जो गांव के बाग से आए थे।"

"उनमें से दस-बारह अच्छे गदराए अमरूद और दस बारह पके हुए मुलायम अमरूद छांटकर एक थैले में रख देना। साहब जैसे ही लौटकर आते हैं, तुम मेज पर खाना लगा देना। मैं खाने के बाद जरा चौक की तरफ जाऊंगी!" शकरआरा ने बड़ी नजाकत से गोल कटे टुकड़े का एक किनारा कुतरा।

"जी!" हाशिम इतना कहकर अंदर गया और मेज पर खाने की प्लेटें सजाने लगा। घड़ी बारह बजा रही थी। आया को उसने वहीं से हांक लगाई।

"आया रानी! हाथ तेजी से चलाओ, खाना जल्दी लगेगा मेज पर!"

"देख हाशिम, तू मेरे पोते का हमउम्र है। मोसे इस तरह रानी-रानी कहकर तू जो बात करने लगा है, मुझे जरा भी नहीं भावत है! ऐसा न हो कि मुझे बेगम साहब से कहना पड़े।" आया ने बड़े दुःखी स्वर से कहा।

"माफ करना, आया! साथ-साथ काम करते हैं तो कभी-कभार जबान हलकी पड़ जाती है, मगर..." हाशिम एकाएक गंभीर हो हाथ जोड़ उठा।

"अब ई सब करे की जरूरत नहीं है।" आया ने कहा और हंडिया भूनने लगीं।

सारा दिन अदब-आदाब से रहते-रहते हाशिम का मन ऊबने लगता है। तू-तड़ाक, गाली-गलौज करके आदमी का जी हलका हो जाता है और चुस्त-दुरुस्त हो वह काम में फिर लग जाता है। यहां बाहर जाने की इजाजत नहीं है। घर में कोई हमजोली नहीं। ले-देके माली है तो वह कुछ सनकी मिजाज का है। बात कुछ करो, जवाब कुछ देता है। इसी वजह से आया के साथ हाशिम शरारत कर बैठता है, मगर आज आया ने भी खुलकर उसे बता दिया कि उसमें और राबिया की मां में फर्क है।



शकरआरा जब अमरूद और खेत से ताजा-ताजा साग-सब्जी से भरा थैला ले खुरशीदआरा के घर पहुंचीं तो खुरशीदआरा को बहुत अच्छा लगा। दोनों बहनें हीटर के सामने बैठी बातों में डूब गईं। बदलू भागकर चंदन हलवाई की दुकान से गरमागरम गजरैला तौलवा लाया। बुआ ने तब तक हरी मटर छील उसको तल लिया। जब ट्रे में सजाकर, कमरे में नाश्ता लेकर बुआ दाखिल हुई तो दोनों बहनों का बहनापा देख उनकी बूढ़ी आंखों को राहत-सी मिली।

"अरे बुआ! यह क्या? अभी तो खाना खाकर आई थी!" शकरआरा ने दो भरे डोंगों को देखकर कहा।

"सरदी के दिन हैं। शाम की चाय में तो मौसम की बहार रहे चाही, बेगम साहब।" बुआ बोलीं!

"नन्हीं! तुम्हारी बुआ बातें खूब लच्छेदार करती हैं!"

"हां, आपा! इनके डायलॉग सुनने में तो तब मजा आता है जब यह बदलू से बात कर रही हों!" खुरशीदआरा ने प्याले में हलवा निकाल बहन की तरफ बढ़ाते हुए कहा।

"हमारी आया भी बोलती है, मगर कम!" शकरआरा ने कहा और हलवे से भरा चमचा मुंह में डाला। "वाह! बड़े मजे का बना है!"

"चंदन चीजें अच्छी बनाता है। दुकान भी बड़ी साफ रखता है।" खुरशीदआरा ने कहा।

"हरे मटर के साथ यह रही मसालेदार चाय!" बुआ ने भाप उड़ाती दो प्यालियां उनके सामने लाकर रखीं और साथ ही टीकोजी-लगी केतली भी। तली हरी मटर कटोरी में निकाल उन्होंने आगे बढ़ाया। शकरआरा ने मजा लेते हुए तारीफ की।

"वाह! मटर तो लाजवाब बनी है!"

"बेगम साहब! आपके ही खेत की है!" बुआ बोलीं और कमरे से बाहर निकल गईं। दोनों बहनें चाय पीने और बातें करने में मसरूफ हो गईं।

"मैंने अभी चेक बच्चों को दिए नहीं है, नन्हीं!" चलते वक्त शकरआरा ने धीरे-से खुरशीदआरा से कहा।

"कोई खास वजह, आपा?"

"बस, पता नहीं क्यों मुझे खौफ है कि दोनों कुबूल भी करते हैं या नहीं या फिर इसके चलते कोई नया बखेड़ा न घर में शुरू हो जाए।"

"समझती हूं, आपा! बेहतर है आप इसे अपने हिसाब में डलवा दें। मौका

देखकर फिर कभी ट्रांसफर करवा दीजिएगा। घर की बात है, इसमें परेशान होने की वजह तो कुछ समझ में नहीं आती है।" खुरशीद ने हैरत-भरी नजरों से बहन का चेहरा ताकते हुए कहा।

"हां, मगर मैं नाहक में परेशान होती रहती हूं।" शकरआरा ने उलझे स्वर में कहा।

"आपा, कैसी नादानी-भरी बातें आज आप कर रही हैं? इतनी कमजोर तो आप कभी न थीं?" खुरशीदआरा हँस पड़ीं।

"ठीक कह रही हो, नन्हीं!" इतना कह शकरआरा भी हँस पड़ीं।

शकरआरा बहन से मिलकर अपने को बेहद हलका महसूस कर रही थीं। उनको सचमुच महसूस होने लगा कि वह गैरजरूरी तरीके से कमजोर पड़ रही हैं। पता नहीं, जुर्म करने का अहसास उन्होंने अपने अंदर क्यों पाल लिया है। ठीक तो कहती है नन्हीं, मुझे यह रुपये अपने एकाउंट में डलवाकर चैन की बंसी बजाना चाहिए। जब जरूरत होगी, बात निकलेगी, तब की तब देखी जाएगी। अभी से बखेड़ा खड़ा करने की क्या जरूरत है कि काजीजी दुबले क्यों शहर के अंदेशे से...



शाम को घर में सबने देखा, शकरआरा पहले की तरह चहक रही हैं। गजरैला रात के खाने पर रखा देख जमाल खां से नहीं रहा गया तो वह बोल उठे, "शकर! बहन को कुछ दिनों के लिए अपने पास बुला क्यों नहीं लेती हो?"

"नहीं जमाल! मैं सोच रही हूं, जाड़ा कम हो तो हम, आप और नन्हीं अजमेर जाकर ख्वाजा साहब की जियारत कर आएं।"

"बड़ी अम्मी, यह हुई न काम की बात!" समीना चहक उठी।

"अरे भाई, मैं तो कब से कह रहा हूं कि बाहर चलें। कहां तो मैं हमेशा दौरों पर रहता था, कहां अब इस शहर में कैद होकर रह गया हूं। बहुत हुआ तो मुस्तफाबाद यानी कि मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक!" जमाल खां बोले।

"हम दोनों फिर काहे यहां अकेले रहेंगे? सब साथ चलते हैं! ख्वाजा साहब की चौखट पर अपना माथ रगड़ अपनी मुराद उनके दर पर रखूंगा कि ऐ मेरे पीर, सबके दिल की लगी पूरा करने वाले! मेरी शरीक-ए-जिंदगी की गोद भर दे, मेरे माबूद!" कमाल ने गजरैला खाते-खाते एकाएक रुककर ऐसे दर्दनाक अंदाज से कहा कि समीना के साथ सब खिलखिलाकर हँस पड़े।

"क्या पता, तुम्हारा यह मजाक हकीकत बन जाए!" शकरआरा बोल उठीं।

"मैं तो कहता हूं कि बुआ, आया, हाशिम और बदलू को भी साथ ले चलना चाहिए! इनकी आउटिंग ही नहीं होती है।" कमाल ने बड़ी संजीदगी से कहा।

"नॉट अ बैड आइडिया!" जमाल खां कह उठे।

"या अल्लाह, एक प्रोग्राम क्या बनाया कि हर आदमी मेरे साथ जाने को तैयार हो उठा।" शकरआरा कह उठीं।

शकरआरा उस रात घोड़े बेच सोईं। कई रातों से जागी हुई थीं, सुबह देर तक पड़ी सोती रहीं। जब उठीं तो खासा दिन निकल आया था। चाय पीकर वह नहाईं फिर तैयार हो उन्होंने बैंक फोन किया, फिर ब्रीफकेस में गिने रुपये रखे और सिविल लाइंस की तरफ चल पड़ीं। मैनेजर इंतजार में थे। केबिन में बैठ जब तक चाय पीतीं तब तक रुपये बचत खाते में डाल रसीद उनके हवाले कर दी गई। मैनेजर को बेगम साहिबा का आना बहुत भाता था। इस उम्र में ऐसी ग्रेसफुल औरतें देखने को मिलती ही कहां हैं? अपने देश में तो पचास के बाद औरत अपने को रिजेक्टेड माल की तरह ट्रीट करने लगती है। नया कुछ न बात करने को बचता है उनके पास, न परिवार के कुएं से वह बाहर निकल पाती हैं।

शकरआरा बैंक से निकलकर परवेज के घर चली गईं। कई बार उसने अपनी छत पर 'बनावटी बारिश' और घास का उगाया मखमली लॉन दिखाने की बात की थी, मगर कुछ-न-कुछ हो जाता था, उसके घर जाना टल जाता था। परवेज बहुत अच्छा आर्किटेक्ट था। शकरआरा को देख वह बहुत खुश हुआ। उनके मना करने के बावजूद दोनों मियां-बीवी ने खाने का इंतजाम कर दिया तो शकरआरा को मुंह खोलकर कहना ही पड़ा, "तो फिर अपने अंकल को भी बुला लो, मैं फोन मिलाती हूं। वह यहीं सिविल लाइंस में हैं।" यह कह उन्होंने मोबाइल पर नंबर मिलाया।

खाना खाने के बाद परवेज खान दोनों को फर्स्ट फ्लोर पर ले गया। वाकई गदबदा हरा लॉन वहां मौजूद था! परवेज ने पानी चालू करते हुए कहा, "बच्चे जब छोटे थे तो उन दिनों पानी की इतनी किल्लत थी कि पूछिए मत। जब पानी जमा करने की सारी तैयारी कर ली, पानी स्टोर होने लगा तो बच्चे बड़े हो गए और अब दोनों विदेश में हैं!"

शकरआरा को बनावटी बारिश देख हँसी आ गई। वह परवेज के दिमाग की तेजी की तो कायल हमेशा से थीं। उसने जो भी इमारतें बनाई थीं वह अपने डिजाइन में अलग-सी दिखती थीं।

खाने के बाद जमाल खां घर लौट गए और शकरआरा ब्यूटी पार्लर की तरफ बढ़ गईं। आज उनका काफी लंबा-चौड़ा प्रोग्राम था। जमाल खां उनको देखकर मुतमईन

थे कि वह अपने पुराने रंग में आ चुकी हैं!



शकरआरा गहरी नींद में डूबी थीं...बरेलीवाला मकान कोहरे में छिपा हुआ है। धीरे-धीरे कोहरा छंटता है और उन्हें बंगला साफ नजर आने लगता है। वह बरामदे में खड़ी हैं। दर पर लटका पिंजड़ा गिलाफ से ढका है। वह आगे बढ़कर उसका परदा हटाती हैं। अंदर तोते की जगह वह गिद्ध को बैठा देख डरकर पीछे हट जाती हैं और घबराकर शीशे का दरवाजा खोल अंदर जाती हैं और बेकरारी से पुकारती हैं, "अम्मी! अम्मी! आप कहां हैं?"

"मैं यहां हूं, शक्कू!" मां की आवाज उन्हें सुनाई पड़ती है। वह कमरे-दर-कमरे होती, उन्हें ढूंढ़ती बाहर किचन गॉर्डन के हाते में खड़ा देखती हैं।

"अम्मी, बाहर पिंजड़े में..." कहती-कहती शकरआरा मां को यूं खड़ा देख ठिठक उठती हैं।

"मुझे तुम्हारा ही इंतजार था, शक्कू!" मां सफेद कपड़ा पहने, बाल खोले, बायां हाथ कमर पर रखे खड़ी बड़ी नफरत-भरी नजरों से उसे घूर रही थीं!

"जी, मैं...मैं..." शकरआरा ने जबान खोली, मगर मां की क्रोध से सुलगती लाल डोरेवाली आंखें देख आवाज गले में फंस गई।

"खूब निभाया बेटी, तुमने हमसे रिश्ता? क्या कमी की थी मैंने तुम दोनों को पालने-पोसने में? घर पर मौलवी रख दीनी तालीम दिलवाई। अंग्रेजी स्कूल भेज नया इल्म सिखाया, मगर किस काम का? बराबर से पालने के बावजूद क्या लड़की लड़का हो सकती है? कभी नहीं! तुमने यह साबित करके दिखा दिया कि हमने तुम्हें लड़कों की तरह पाला, मगर तुम हमारी वारिस न बन सकीं। ससुराल गई तो मियां की होकर रह गई! बोलो! तुम्हें बनाने में, आगे बढ़ाने में, पालने में हमने कोई कसर छोड़ी थी? बस, तलवार चलाना, बंदूक उठाना-भर नहीं सिखाया, यह सोचकर कि तुम्हें इसकी क्या जरूरत होगी! मगर शकरआरा, तुमने तो हमारे ऊपर दोधारी शमशीर चला दी। सब कुछ काटकर रख दिया!"

"अम्मी! आप यह क्या कह रही हैं?" शकरआरा ने घबराकर पूछा।

"गुनाह करके मासूम बन रही हो? इतनी खुदगर्ज निकलोगी तुम, मुझे इसका गुमान भी न था!"

"मैंने कौन-सी खता की है, अम्मी?" शकरआरा ने पलकें झपकाई।

"यह घर जिसमें आज भी हमारी रूहें रहती हैं, उसको उठाकर उस आदमी के हाथों बेच दिया जो ऊपर से नीचे तक झूठ और हराम की कमाई से लबरेज है!

हमारे तलावत मे गूंजती आयतें, हमारी इबादत की बरकत, हमारी नेकियां, हमारी कुरबानियां, हमारा नजरिया—सब कुछ तुमने चंद नोटों की गड्डियों के चलते भुला दिया? माना कि तुम किसी घर की बहू, बीवी, मां हो, मगर क्या जरूरी है यह सब बनने के लिए तुम उस मां को भुला दो जिसने तुम्हें नौ माह पेट में रखा? उस बाप को फरामोश कर दो जिसने अपनी मेहनत की कमाई तुम पर लुटाई? तुम्हारा फर्ज अपने मां-बाप के लिए कुछ बनता था, जिसके खून-खाल का मुजस्मा बनी तुम एक बेहिस औलाद की तरह आज मेरे सामने खड़ी हो! काश! ऐ काश! मैंने आंख बंद करने से पहले तुम्हारा दूध माफ न किया होता...''

''नहीं अम्मी, यूं न कहिए! आप तो जानती हैं, मैं हमेशा से कमअक्ल रही हूं, नहीं समझ पाई!'' शकरआरा घुटनों के बल बैठ, हाथों से मुंह छिपा बिलख उठीं!

''अरे नादान! यह अक्ल नहीं, अहसास की बात थी कि मां के मरने के बाद इस घर से नाता जोड़े रखतीं, जहां तुम्हारा बचपन गुजरा है। एक बार यह घर खुलवाकर हफ्ता-भर रह जातीं। पुराने मिलने-जुलनेवालों की सुध लेतीं। कुछ अपनी कहतीं, कुछ उनकी सुनतीं, मगर तुम बेमुरव्वत निकलीं। तुम्हारा खून ही सफेद नहीं हुआ, बल्कि तुम्हारे दीदों का पानी भी मर चुका है। बस मियां के ओहदे और खानदानी इज्जत पर इतराहट! यह छिछोरापन तुम में आया कहां से, शकरआरा! इस घर में धन-दौलत, इज्जत-वकार और एकतेदार की कमी थी क्या? तुम्हारे दादा कौन थे, यह भूल गईं? इंसाफ उनका मशहूर था। जज की कुर्सी पर बैठ उन्होंने कभी न भुलाने वाले फैसले दिए हैं। उस इंसान की पोती होकर तुमने जुर्म किया!''

''अम्मी, हो सके तो मुझे माफ कर दीजिए!'' शकरआरा ने हिचकियों के बीच बमुश्किल कहा।

''मैं माफ कर भी दूं तो क्या इस दुनिया के आकिल-फाजिल नेक बंदे तुम्हें माफ कर पाएंगे? बाप-दादा का कफन बेचने वाले को इस दुनिया ने कभी इज्जत नहीं दी, शकरआरा!''

''या अल्लाह! मैंने औलाद की मोहब्बत में यह क्या कर डाला?'' शकरआरा ने दोनों मुट्ठियों को जोर से सीने पर मारते हुए कहा।

''अपने को धोखा मत दो, शकरआरा! औलाद तुम्हारी फाका नहीं कर रही थी। वह अपनी रोजी खुद कमा रही थी, फिर उसे नसीहत करने, मेहनत और ईमानदारी सिखाने की जगह तुम उसके ख्वाब पर हक जमाने चली थीं? यह कहो कि यह तुम्हारा गुरूर, तुम्हारा तकब्बुर है जो तुम्हें उकसाता रहता है कि दूसरों के सामने ऐसा कुछ कर डालो जो वह तुम्हारी बरतरी माने! क्यों नहीं तुम अपने को जिम्मेदार समझती हो? तुमने हमेशा दूसरों को दुःख दिया है! बहन को तुमने कभी नहीं बख्शा। सास

की तुमने कभी दिलजोई नहीं की, कभी गरीबों के फैले हाथ पर बंद मुट्ठी नहीं रखी, बल्कि हमेशा चापलूसों के बीच शान बघारती रहीं...सोचो, तुमने कभी कोई नेक काम अंजाम दिया है?"

"बस, अम्मी बस!" कहती हुई शकरआरा वहीं जमीन पर गिर बेहोश हो गईं!

जमाल खां शकरआरा के रोने-चीखने से जाग उठे। उन्होंने बेड लाइट जलाई और शकरआरा की तरफ देखा—चेहरा आंसुओं से भरा था! उन्होंने शकरआरा का बाजू हिला उन्हें हलके से पुकारा, मगर शकरआरा उसी तरह पड़ी रहीं। जमाल खां घबरा उठे। पत्नी का चेहरा पोंछ उसे सीने से लगाते हुए बोले, "शकर, आंखें खोलो...कुछ बोलो, शकर!"

जब शकर उसी तरह आखें बंद किए, ढीले बदन के साथ उनकी बाहों में पड़ी रहीं तो वह एकाएक किसी खयाल के आने से घबराकर उठे और तेजी से कमाल के कमरे की तरफ लपके। उन्होंने दरवाजा नॉक किया। मगर जब कोई जवाब न मिला तो वह परेशानी में दरवाजा जोर-जोर थपथपाने लगे। समीना की नींद टूटी। समझ नहीं पाई कि आखिर किस वजह से उसकी नींद टूटी, तभी अब्बी की घबराई आवाज सुनाई पड़ी, "कमाल...कमाल!"

समीना उछलकर बिस्तर से उठी और लपककर दरवाजा खोला। सामने जमाल खां परेशान खड़े थे। उन्होंने कहा, "जल्दी कमाल को भेजो, शकर की तबीयत ठीक नहीं लगती!"

"जी...जी!" समीना ने फौरन कमाल को जगाया।

कमाल मां को बेहोश देखकर सावधान हो उठा। उसने जल्दी से मां का चेकअप किया और एंबुलेंस को फोन कर वह कपड़े बदलने चला गया। एंबुलेंस का नाम सुनकर जमाल खां के पैरों-तले से जमीन निकल गई। उन्होंने शकर का चेहरा देखा। आंखों में आंसू भर आए। उठकर उन्होंने गरम कपड़े पहने—समझ गए कि मामला सीरियस है।

"अब्बी, अम्मी को लेकर फौरन निकलना होगा! एंबुलेंस की राह देखना बेकार है!" कमाल तेजी से कार निकालने पहुंचा। तीनों ने मिलकर शकरआरा को कार में डाला। घंटी बजा हाशिम को जगाया और अस्पताल की तरफ भागे।



मैसिव हार्ट अटैक हुआ था। शकरआरा मौत और जिंदगी के बीच झूल रही थीं। शहर के बेहतरीन डॉक्टर पहुंच चुके थे। कमाल अंदर कमरे में था। बाहर जमाल खां और समीना का बुरा हाल था। किसी के कुछ पल्ले नहीं पड़ रहा था कि कई दिनों से

खुश व खुर्रम शकरआरा को एकदम से दिल का दौरा कैसे पड़ गया? छरहरा वदन, खाने-पीने में संतुलित, कभी न बीमार पड़ने वाली शकरआरा एकाएक मौत के दहाने पर कैसे पहुंच गई?

"अब्बी, अम्मी को फोन कर देते हैं!" समीना ने कहा।

"फोन...? नहीं, मैं तो यहां हूं। तुम उन्हें खुद जाकर बताओ और अपने साथ ही यहां ले आओ।" जमाल खां ने कुछ सोचते हुए कहा।

"आपको अकेला छोड़कर मैं नहीं जाऊंगी।" कहकर समीना ने पर्स से मोबाइल निकालकर फोन किया।

"अम्मी! बड़ी अम्मी की तबीयत अचानक बिगड़ गई है...हां, हम सब अस्पताल में हैं। आप बस घर में दुआ पढ़ें, यहां हम लोग हैं! बड़ी अम्मी को इस वक्त दवा, दुआ दोनों की सख्त जरूरत है...परेशानी की कोई बात नहीं है!" कह समीना ने फोन बंद किया और जलते लाल बल्ब वाले बंद कमरे पर अपनी नजर गाड़ दी।

एक घंटे बाद एक डॉक्टर ने आकर बताया कि शकरआरा होश में आ गई हैं, मगर हालत में सुधार नहीं है। डॉ. कमाल ने कहलवाया है कि आप लोग घर जाएं। वह आपको फोन पर इत्तला देते रहेंगे।

"हम यहीं ठीक हैं!" जमाल खां बोले।

"सर, यहां किसी को भी ठहरने की इजाजत नहीं है। सुबह होते ही यहां भीड़ जमा होने लगती है। बड़ी मुश्किल से उन्हें हटाना पड़ता है। आपको यहां यूं खड़ा देखेंगे तो हमारी पोजीशन आकवर्ड हो जाएगी!" डॉक्टर ने अनुरोध-भरे स्वर से कहा।

"चलिए अब्बी! कुछ देर बाद फिर आ जाएंगे।" समीना ने कहा।

"तो फिर खुरशीदआरा के पास चलते हैं!" जमाल खां ने कहा और समीना ने डॉक्टर से अनुरोध किया कि वह कमाल से बता दें कि वह उसे मोबाइल पर फोन कर लेगा।

समीना का दिल बहुत घबरा रहा था। उसे मकान वाला भेद और गहराता लग रहा था। पता नहीं क्यों उसका दिल कह रहा था कि बड़ी अम्मी किसी गहरी उलझन से दो-चार थीं। जब वह गमजदा थीं तब भी और इधर जब खुश नजर आ रही थीं तो भी उनका बरताव नॉर्मल नहीं लग रहा था। खासकर उनकी आंखों में कोई दर्द था जो तड़पता हुआ अकसर दिख जाता था।

समीना और जमाल खां जब बकरीवाली गली में पहुंचे तो सुबह नमूदार हो चुकी थी। खुरशीदआरा मुसल्ले पर बैठी थीं। बुआ मुंह धो रही थीं।

"बदलू, जल्दी से चाय का पानी रखो!" समीना यह कह जमाल खां को कमरे

के अंदर ले गई, फिर धुला तौलिया देते हुए बोली, "अब्बी! फ्रेश हो लीजिए, तब तक मैं चाय बनाती हूं।"

चाय के साथ उसने कुछ बिस्कुट भी मेज पर सजा दिए और खुद मुंह-हाथ धोने बाथरूम की तरफ बढ़ी। बुआ ने जो बड़े दामाद को घर आया देखा तो उन्होंने रोगनी टिकिया का आटा भुने जीरे, नमक, लाल मिर्चे और मलाई के साथ गूंथने को बदलू को दिया और खुद आलू के कतलेवाली सब्जी बनाने में लग गई। घर में आवाजें उभरती सुन, खुरशीदआरा ने पारा खत्म कर दुआ मांगी और मुसल्ला खोलती बहनोई की तरफ बढ़ीं।

"आदाब, भाईजान! आपा की तबीयत अचानक कैसे बिगड़ गई?"

"मैं खुद कुछ नहीं समझ पाया। सोते में रो रही थीं। 'अम्मी-अम्मी' कहकर चीख रही थीं। मैं उठा तो वह बेहोश थीं। डॉक्टर का कहना है, हार्ट अटैक हुआ है!" इतना कहते-कहते जमाल खां का नीचे का होंठ काप गया।

खुरशीदआरा की आंखें छलक पड़ीं।

"अम्मी, इतनी बेहौसला न हों! उन्हें होश आ गया है।" समीना ने मां के आंसू पोंछते हुए कहा।

कुछ देर तक चिंता-भरी चुप्पी छाई रही। चाय बदलू ने लाकर मेज पर रखी। समीना ने सबके प्याले भरे। अभी वह चाय खत्म भी नहीं कर पाए थे कि दरवाजे की घंटी बज उठी। कमाल अंदर दाखिल हुआ। उसका चेहरा स्याह हो रहा था। सबकी परेशान आंखें उसके चेहरे पर जम गई।

"कैसी है, शकरआरा?" जमाल खां ने बेकरारी से पूछा।

"अब्बी!" कमाल बाप का चेहरा देख एकाएक हँसा—उदास, फीकी हँसी, फिर कुर्सी पर बैठते हुए बोला, "अम्मी कोमा में चली गई हैं!"

"क्या?" एक साथ सबके मुंह से निकला। इस 'क्या' में जाने ऐसा क्या था कि कमाल के सीने पर चोट मार गया। देखते-ही-देखते वह बिलखकर रो पड़ा। उसका यूं रोना देख सबके हाथ-पैर फूल गए और यह समझते देर न लगी कि शकरआरा की हालत सुधरने की जगह और...

खुरशीदआरा ने बड़ी मुश्किलों से अपने को संभाला। वह उम्मीद-भरी बातें कर उन सबका दिल बहलाने लगीं और जबरदस्ती सबको थोड़ा-बहुत नाश्ता कराने में कामयाब हो गई। नाश्ते के बाद जमाल और कमाल घर लौट गए। समीना मां के पास रुक गई। वह उलझी गुत्थी आज सुलझाना चाहती थी। मां जब बड़ी बहन की बातें बता-बताकर रो रही थीं, उसी मौके पर एकाएक समीना ने पूछ लिया—

"अम्मी, बरेलीवाले मकान का पेमेंट पूरा कर दिया था सुल्तान साहब ने?"

"हां, नकद और चेक में। आपा तो मान नही रही थीं, मगर मैंने उन्हीं के नाम का चेक कटवाया और नकद उन्हीं को अपने पास रखने को कहा। बड़ी मुश्किल से रखने को तैयार हुई थीं!" खुरशीद फिर रो पड़ीं।

"रुपए रखे कहां?" समीना ने जैसे अपने से पूछा हो।

"बैंक में। अपने हिसाब में डलवाया था। पूरे पचास लाख मे गया था बंगला, पच्चीस लाख अपना हिस्सा मैंने उन्हें देते हुए कहा था कि यह कमाल और समीना में आधा-आधा बांट दीजिएगा। मेरी बात सुनकर आपा बहुत खुश हुई थी। इधर वह मुझे बहुत प्यार करने लगी थीं। उनके इसी दुलार की मैं भूखी थी। अब जब सब ठीक-ठाक चल रहा था तो आपा..."

"बस, अम्मी बस। इतना मत रोइए कि अपनी तबीयत खराब कर डालिए!" समीना ने मां को लिपटाते हुए कहा।

"अरे, दुलहिन बी! उठो और दुआ मांगो। अल्लाह ने चाहा तो बड़ी बेगम ठीक हो जाएंगी। तुम तो बेकार दिल छोटा करती हो। एक दिन हमका बुखार आय गवा तो सारी रात सोई नहीं!" बुआ ने कहा।

"अम्मी, बुआ ठीक कह रहीं हैं। यह वक्त दुआ मागने का है।" समीना ने कहा।

'हां' कहती हुई खुरशीद ने आंखें खुश्क कीं और ठंडी आह भरती हुई वह खड़ी हुई।

समीना की समझ में नहीं आ रहा था कि वह यहां ठहरे, घर जाए या फिर कमाल के साथ अस्पताल जाए? थोड़ी देर वह यूं ही बैठी रही। उसकी समझ में यह बात अब भी नहीं आ रही थी कि सारा प्लान बड़ी अम्मी का था, रुपया भी उन्हीं के पास था, फिर उन्हें तकलीफ किस बात की थी?



शकरआरा को कोमा में गए पंद्रह दिन गुजर चुके थे। उनके जिंदा रहने पर भी सबको उनके बिना रहने की जैसे-तैसे आदत पड़ती जा रही थी। यह अलग बात थी कि जो घर हमेशा चहकता रहता था, वह वीरान-वीरान लगने लगा था। शहर के सभी मिलने-जुलने वाले घर-अस्पताल का चक्कर लगा अपना दुःख व्यक्त कर चुके थे। एक डॉक्टर के नाते कमाल की छटपटाहट बड़ी कष्टदायक थी। वह सारी सहूलियतें और खुद डॉक्टर होने के बावजूद, अपनी मां को कोमा में जाने से नहीं रोक पाया।

बैठे-बैठे वह एकाएक जोर से मुट्ठी मेज पर दे मारता और सर के बालों को उंगलियों में फंसा घसीटता। समीना उसकी बेकरारी समझ सकती थी।

जमाल खां बेटे के बिलकुल उलट थे। वे गहरी खामोशी में डूबने लगे थे। खाना-पीना छूटता जा रहा था। सिविल लाइंस जाना भूल गए। बस अस्पताल और घर के बीच उनकी दुनिया सिमट गई थी। कमाल जरूर क्लीनिक दोनों समय जाता। अस्पताल भी सुबह-शाम चक्कर लगाता। उसकी यह दीवानगी देख समीना को हरदम यह डर सताता रहता था कि कहीं कमाल बीमार न पड़ जाए। जाड़े का मौसम ऊपर से यह भाग-दौड़, न आराम, न चैन से सोना—आखिर बदन कब तक सही-सालिम अपने को घसीटता रहेगा?

इस बीच डॉक्टर चित्तरंजन को अमेरिका और डॉ. खालदा को कुवैत जाने का मौका मिला। वह न उनसे मिलने जा सका, न स्टेशन छोड़ने गया। वे दोनों खुद घर पर मिलने आए तो वह घर में मौजूद न था। समीना उसकी सारी जिम्मेदारी बड़ी समझदारी से निभा रही थी। इन सबके बावजूद वह खुद दिमागी उलझन से जूझ रही थी।



राबिया की मां ठीक तो हो गई थीं मगर कमजोरी आ गई थी। रिक्शे पर बैठ आज पूरे बीस दिन बाद वह घर से निकली थीं। जाड़े का जोर कम हो गया था, मगर कमजोर बदन के लिए जरा-सी ठंडी हवा भी नुकसान पहुंचा सकती थी। खूब पहन-ओढ़कर वह बड़ी बेगम से मिलने पहुंचीं। रिक्शे से उतर उन्होंने किराया अदा किया और लोहे का गेट खोल अंदर दाखिल हुई। बाग में खाली कुर्सियां पड़ी थीं। हाशिम बरामदे की सीढ़ी पर उदास बैठा सामने देख रहा था, जहां माली मुरझाए गुलाबों को ताजा खिले फूलों के बीच से काट-काटकर नीचे क्यारी में गिरा रहा था।

दरवाजे के खुलने-बंद होने की आवाज से चौंककर हाशिम ने निगाहें घुमाई। राबिया की अम्मा को देख उसकी सारी उदासी झड़ गई। फुर्ती से उठा और वहीं से हांक लगाई, "सलाम! कहां रहीं खाला! बहुत दिन बाद हमारी याद आई?"

'क्या बात है, आज हाशिम बड़े तमीज से बात कर रहा है? कुछ देर पहले कैसा मुंह लटकाए बैठा था।'—उन्होंने मन-ही-मन कहा और कराहती हुई आगे बढ़ीं।

"नाराज हो क्या, खाला अम्मा?" हाशिम ने छेड़ा मगर राबिया की अम्मा ने उसे मुंह नहीं लगाया। जब वह सीढ़ी चढ़ने लगीं तो अंदर से समीना की आवाज सुनाई पड़ी, "हाशिम!"

हाशिम तेजी से अंदर भागा। समीना गैलरी में खड़ी थी। उसके तेवर खिंचे

हुए थे। उसने हाशिम को घूरा और सख्त लहजे में कहा, "इस औरत को मैं दोबारा यहां न देखूं। इससे जाकर कहो कि बेगम साहिबा छोटी बिटिया के पास दिल्ली गई हुई हैं, जाओ!"

हाशिम ने समीना के ऐसे तेवर पहले कभी नहीं देखे थे। वह थोड़ा सहम-सा गया। तेजी से वह मुड़ा और राबिया की अम्मा को लगभग झिड़कते हुए बोला, "मुंह उठाए कहां चली आ रही हो?"

"तुमसे मतलब?" गुर्राकर राबिया की मां बोलीं।

"देखो, यह गुस्सा-पित्ता किसी और को दिखाना। बड़ी बेगम दिल्ली गई हुई हैं--छोटी बिटिया के पास...अब चलो, फूटो तो हम गेट जाकर बंद करें!"

"तू कभी-कभी जुलाहे-बेहनों से भी गया-गुजरा मुझे लगने लगता है। न बड़ों से बात करने की तमीज, न उम्र का लिहाज!" राबिया की मां पर वाकई गुस्से का भूत चढ़ गया था।

"मैं जात का कसाई हूं और अपना खानदानी पेशा भूला भी नहीं हूं! चली आई जात-मजहब की बात करने वाली, जैसे खुद मुगलानी हो।" हाशिम ने गुस्से से कहा।

"जाती हूं, और अब फोन करके आऊंगी ताकि तुझ जैसे खिदमतगार को बड़ी बेगम मेरे आने पर गेट खोलने का हुक्म दें। खुदा की शान! जिसे बड़ी बेगम इज्जत देती हों, उसे यह गुलाम बच्चा कुत्ते-बिल्ली की तरह दुत्कार रहा है!" जरा तेज आवाज में राबिया की अम्मा ने कहा और तेजी से सीढ़ियां उतरने लगीं। तभी दुपट्टे में पैर उलझा और वह गिर पड़ीं।

"दूसरों के लिए गड्ढा खोदने वाला खुद उसमें पहले गिरता है!" हाशिम इतना कह ताली बजाकर हँस पड़ा।

"यह बेजा बात है तोहरी, हाशिम! आओ अम्मा, चलो तोका पहुंचाई देई।" माली हाथ की कैंची घास पर रख आगे बढ़ा। उसने इस घर में इससे पहले इस तरह की तकरार कभी किसी के बीच होती न देखी थी, न सुनी थी। उसे लग रहा था कि बड़ी बेगम के जाने के बाद हाशिम छुट्टा सांड होता जा रहा है।



जमाल खां के अंदर की दुनिया खिजां की तरफ बढ़ रही थी। कमाल ने तीनों बहनों को खबर दे दी थी। सफिया तो हवाई जहाज से दूसरे दिन ही पहुंच गई, मगर बड़ी-मझली को वीजा, टिकट, छुट्टी के इंतजाम में देर लगी तो भी दोनों बहनें रोज फोन पर बात कर लेती थीं। सफिया मां की हालत देख रोए चली जा रही थी। समीना उसे जितना समझाती, उसका रोना उतनी ही शिद्दत अख्तियार कर लेता। यह देख

समीना केवल उसकी पीठ सहलाती या फिर हाथ।

खुरशीदआरा का दिल न घर में लग रहा था, न अस्पताल में वह रुक पा रही थीं। जमाल खां से उन्होंने इतना जरूर कहा था कि भाईजान! आज आपा को कोमा में गए पच्चीस दिन हो गए हैं। अगर वह घर ले आई जा सकें तो कम-से-कम हम उनके साथ कुछ दिन और बिता सकते हैं। उनकी यह बात जमाल खां को मुनासिब लगी। अब शकरआरा के ठीक होने की कोई उम्मीद नहीं बाकी बची थी। मगर डॉक्टर अपनी तई पूरी कोशिश में लगे हुए थे। जमाल खां ने मौका देख दबी जबान कमाल से कहा—

"अगर घर पर इंतजाम हो सके तो शकर का आखिरी दिनों हमारे पास ही रहना ठीक होगा!"

"जी अब्बी!" इतना कह कमाल चुप हो गया। उसको पहली बार जिंदगी में शिकस्त का अहसास हो रहा था। वह मां को अस्पताल में रखकर घरवालों को उनकी आने वाली मौत से आगाह करना चाह रहा था। इस सच को घरवालों ने स्वीकार कर लिया था कि अब शकरआरा की जुदाई यकीनी है। डॉक्टर होने के नाते यह यह बात समझ चुका था। सच पूछा जाए तो वह पहले दिन ही मां को खो चुका था। मगर ताज्जुब उसे इस बात पर था कि कोमा का यह वक्त इतना लंबा क्यों खिंच रहा है!

शकरआरा घर लाई गई। दोनों बेटियां और दामाद पहुंच गए थे। खुरशीदआरा भी आ गई थीं। घर में आंसू और आहों के बाद भी जैसे रौनक लौट आई थी। शकरआरा घर की रोशनी थीं। उनका वजूद पूरे घर को रोशन किए रहता था। सारे दिन इबादत का सिलसिला चलता रहता। अगरबत्ती की गंध मुसलसल कमरों में लहराती रहती थी। सफिया का मियां भी आज सुबह आ गया था। जमाल खां को लगा कि खुरशीदआरा की सलाह बहुत मुनासिब थी।

पांचवें दिन जब सारे बच्चे, शौहर और बहन चारों तरफ बैठे थे, उस समय शकरआरा ने आखिरी हिचकी ली! पूरे माह की खामोशी के बाद नब्ज भी साकित हो गई। घर में एकाएक कोहराम मच गया। रोने की विभिन्न आवाजों में कोई और आवाज जमाल खां को सुनाई नहीं दे रही थी। कमाल उनके माथे पर अपना गाल रख लगातार कहे जा रहा था, "अम्मी! आप का डॉक्टर बेटा मौत से हार



जमाल खां ने तय कर लिया था कि वह लाश लेकर मुस्तफाबाद जाएंगे और वहीं गुस्ल और कफन की रस्म अदा होगी। कारों और एंबुलेंस का इंतजाम हो गया। यह

काफिला दो घंटे बाद मुस्तफाबाद में दाखिल हो चुका था। आज फरवरी की दो तारीख थी। इसी महीने वह ख्वाजा साहब की दरगाह अजमेर जाना चाहती थीं! सारा घर नौकर-चाकर साथ थे। दोनों घरों की हिफाजत के लिए सिक्योरिटी गार्ड का इंतजाम कर दिया गया था। आबाई घर, जहां शकरआरा को आना पसंद न था, उसी घर के दालान में उनकी लाश रखी गई। पूरा गांव जैसे-जैसे खबर मिलती गई, खाली पड़े घर में सिमटता चला गया।

शाम से पहले दफनाने का फर्ज पूरा होना था। कोरे मटकों में कुएं का पानी जमा होने लगा। मुस्तफाबाद की दुकानों में मनमर्जी का कपड़ा न पाकर जमाल खां लौटकर इलाहाबाद गए और खुद कपड़ा पसंद कर कफन लाए। जिस औरत को खुरदरी चादर तक बेचैन कर देती थी और बदन पर निशान पड़ जाते थे, उस औरत का आखिरी लिबास भी तो मुलायम होना चाहिए। कमाल खुद यह काम अंजाम देना चाहता था, मगर जमाल खां नहीं माने। उन्होंने जिंदगी-भर शकरआरा के लिए एक-से-एक बेहतरीन कपड़े खरीदे थे। उनकी पसंद इतनी शानदार होती थी कि वह शकर के बदन पर जा इस तरह खिल उठता कि देखने वाले तारीफ किए बिना नहीं रह पाते थे।

लड़कियां गांव पहुंचकर जैसे खामोश-सी हो गईं। पुरानी यादें चोर दरवाजे से जहन की कुंडी खटखटाने लगीं। दादी के साथ बिताए दिन उनकी नजरों के सामने घूम रहे थे। कस्बे की औरतें पुरसा देने तो शकरआरा को आई थीं, मगर याद करके दादी को रो रही थीं। जब नाइन मुर्दा नहलाने के लिए उठी तो हफ्तों के रुके आंसू समीना की आंखों से उबल पड़े। जिम्मेदारी के बोझ से वह गम मनाना भूल-सी गई थी। अब आंसू थे कि रुक नहीं रहे थे। उसका यूं रोना देख औरतों ने अपने दांतों-तले उंगली दबा ली थी। खुरशीदआरा दूर बैठी बेटी को देख रही थीं जो रोते-रोते बेहोश हो गई थी।

सेवुम तक सभी वहां रुके रहे। चौथे दिन जब सब चलने को हुए तो जमाल खां ने चालीसवें तक यहीं मुस्तफाबाद में रहने की बात की, जिसको कमाल ने पसंद नहीं किया, मगर कुछ बोला भी नहीं। दोनों बड़ी बहनों ने भी यह देख इलाहाबाद जाने से इनकार कर दिया कि अम्मी को यूं अकेला छोड़ना इस हालत में ठीक नहीं है। कुछ दिन हम रह लेते हैं, फिर सफिया और समीना आ जाएंगी। दोनों के मियां अलबत्ता लौट गए। खुरशीदआरा जाना नहीं चाहती थीं, मगर किसी को खयाल ही नहीं आया कि उनसे पूछता। बहन के ससुराल में बिना किसी के कहे उन्हें रुकना गैरमुनासिब-सा लगा। मन मारकर वह बुआ और बदलू के साथ कार में बैठ गईं। उनके दिल पर उस वक्त क्या बीती यह तो वही जानती हैं, जब रास्ते में पड़ते कब्रिस्तान

में रुककर उन्होंने बहन के सिरहाने अगरबत्ती जलाकर कब्र पर खोंसी! हफ्तों पहले का ख्वाब उन्हें बार-बार याद आ रहा था, जब आपा उनसे पूछ रही थीं—

"क्यों नन्हीं! मेरी कब्र पर तुम अगरबत्ती जलाने आओगी न?"

रास्ते भर उनकी आंखों से आंसू गिरते रहे। उनके मायके का सिलसिला आज पूरी तरह खत्म हो गया था। अब सिर्फ यादें बची थीं।



कमाल और समीना पर अभी काफी जिम्मेदारियां थीं। घर मेहमानों से भरा रहता था। पुरसा देने वाले अपनी सहूलियत के हिसाब से आ-जा रहे थे। पहली बार रत्ना और रमेश भी खुरशीदआरा की बहन के पुरसे के लिए टैगोर टाउन पहुंचे थे। वहां की हालत और माहौल देखकर रत्ना का मन कर रहा था कि वह समीना के पास रुक जाए और उसका गम बांट ले। मन की बात झिझक के चलते होठों तक आकर रुक गई। यह सच था कि समीना और सफिया का घर संभालते, मेहमानों का स्वागत करते-करते बुरा हाल था। समीना की समझ में नहीं आ रहा था कि अम्मी को बुलाए या नहीं। वह आएंगी भी या नहीं? लेकिन उनके आने से सबसे बड़ा फर्क यह पड़ेगा कि वह आराम से स्कूल के लिए निकल सकती है। सफिया भी घड़ी-दो-घड़ी चैन से उठ-बैठ सकती है। कमाल एक दिन खुद जाकर खुरशीदआरा को ले आए। तय यह पाया कि वह सुबह आएंगी, सारा दिन गुजारकर रात को वापस चली जाएंगी। इस प्रोग्राम से खुरशीदआरा को बड़ी राहत मिली थी। इसी बहाने बहन की खुशबू को महसूस तो कर सकती हैं! आखिरी दिनों में दिए गए बेलौस खुलूस ने पुराने जख्मों के निशान मिटा दिए थे।

बड़की-मझली पांच दिन गांव में गुजारकर आ गई थीं। जमाल खां के जरूरत के सामान लेकर अब सफिया और समीना को जाना था, मगर कमाल ने समीना को रोक उसकी जगह छोटी अम्मी को भेजने को कहा। अगले हफ्ते वह खुद समीना के साथ शनिवार-इतवार वहां गुजारना चाह रहा था। इस बीच रत्ना ने दोपहर में आने की बात कह सबके दिलों से फिक्र कम कर दी और खुरशीदआरा सफिया के साथ पांच-छह दिन के लिए गांव की तरफ चल पड़ीं। सफिया का मियां जा चुका था। वह चालीसवें में फिर आने और सफिया को अपने साथ ले जाने की बात तय कर गया था। बड़की-मझली भी चालीसवें के बाद ही जाने वाली थीं। फिलहाल वह अपनी ससुराल गई हुई थीं। एक-एक करके सब अपने पुराने ठिकाने को छोड़ नए ठिकानों की तरफ उड़ने वाले थे।



चालीसवें में जितनी खैरात कर सकते थे, जमाल खां ने की, और बेगम का आकबती जोड़ा भी दुल्हनवाला खरीदा, ताकि जिस लावारिस, यतीम जरूरतमंद लड़की को दिया जाए उसका रोयां-रोयां शकरआरा को दुआ दे। यह सारा आडंबर दिल के सुकून के लिए था। गम को कम करने के लिए था। चालीसवें के दिन आई भीड़ दूसरे दिन रुखसत हो गई। बेटे ने जमाल खां से चलने को कहा तो वह कुछ देर सर झुकाए बैठे रहे। फिर उन्होंने चेहरा ऊपर उठा बेटे को ताका। उनकी आंखों में बेबसी थी। कमाल कुछ समझ नहीं पाया।

कुछ पल खामोशी में गुजरे, फिर जमाल खां ने लंबी सांस खींची और बोले, "बेटे! अब मैंने मुस्तफाबाद में रहने का फैसला कर लिया हे! अम्मा और शकर यहीं दफन हैं। शकर के बगैर अब मैं उस घर में नहीं रह पाऊंगा।"

उनकी बात सुन कमाल के आंसू निकल आए। बाप से लिपटकर बोला, "आपका जो दिल चाहे आप वैसा करें, अब्बी! आपकी खुशी में हमारी खुशी है।" इतना कह वह बाप से अलग हुआ और रूमाल से आंखें और चेहरा अच्छी तरह पोंछकर मुस्करा उठा और धीरे-से बोला, "हेव ए नाइस टाइम!"

"थेंक्स!" इतना ही कह पाए जमाल खां। बाकी जुमले उनके गले में ही फंसकर रह गए।

जब वह और शकर कहीं घूमने जाते थे तो वचपन से आज तक कमाल हमेशा यह जुमला कहता था। आज भी उसके कहे लफ्जों का वह मतलब समझ गए हैं—शकर की याद होगी और रोज उसकी कब्र का दीदार होगा। इससे उन्हें जो सुकून मिलेगा वह और कहीं मिलने वाला नहीं है। अम्मा की जुदाई ने क्या कम तड़पाया है? आंसुओं को पीकर मुस्कराना उन्होंने तभी सीखा था! शकर उनकी शरीक-ए-हयात थी! उसकी जिम्मेदारी उठाना, उसे खुश रखना भी उनका फर्ज था। वह सब कुछ छोड़कर मां के पहलू में आकर नहीं बैठ सकते थे, मगर अब वह आजाद हैं। उनके कंधे पर किसी औलाद की जिम्मेदारी का बोझ नहीं है। वह अब अपनी मर्जी के साथ, अम्मा और शकर के संग एक साथ यहां रह सकते हैं।

30

ननदों, खासकर सफिया के चले जाने के बाद सन्नाटे पड़े घर में समीना की शाम बड़ी मुश्किल से कटती थी। उसका कमाल के साथ बाहर निकलना हो नहीं पाता था। आजकल उलटे खुरशीदआरा ही उसका हालचाल और घर की खैरियत लेने हर

चौथे-पांचवें आ जाती थीं। कभी-कभी रत्ना भी उनके साथ होती। बहनोई को उस घर में देखने की आदी आंखें उन्हें वहां न पाकर बेचैन हो उठती थीं, मगर बहन से उनकी मोहब्बत को भी समझती थीं। कमाल को एक कॉनफ्रेंस के सिलसिले में पांच दिन के लिए बंगलौर जाना था। उसने छोटी अम्मी से तय कर लिया था कि वह उन दिनों समीना के पास आकर रह जाएं। बहन की मौत की खबर सुन मझले-छोटे देवरों ने आकर चालीसवें में शिरकत की थी। नाहीदा का भी फोन आया था। उसका दुबई से फिलहाल निकलना मुश्किल था, इसलिए उसने एक खत ताजियत का जमाल खां को भेज दिया था।

इस सारी भाग-दौड़ में डेढ़-दो महीने कैसे गुजर गए, किसी को पता ही न चला। एक दिन समीना जब चकराकर गिरी तो कमाल को लगा कि उसने कुछ ज्यादा ही बोझ समीना पर डाल दिया है। बंगलौर जाना टाल नहीं सकता था। उसके जाने के बाद समीना की तबीयत खराब रही।

डॉक्टर ने समीना की नब्ज देखी तो मुस्करा पड़ीं—"मुबारक हो समीना! लेकिन श्योर होने के लिए वाटर टेस्ट जरूरी है।"

"मतलब?" समीना चकरा उठी।



वाटर टेस्ट की रिपोर्ट भी दो दिन बाद मिल गई—समीना प्रेगनेंट थी। एक खुशी की लहर सारे बदन में फैल गई। उसने रिपोर्ट खामोशी से मां की तरफ बढ़ा दी। खुरशीदआरा की आंखें चमक उठीं। बेटी का माथा चूम बोलीं, "फौरन भाईजान को फोन मिलाओ, ताकि मैं यह खुशखबरी उन्हें दूं!" समीना ने मुस्तफाबाद फोन मिलाया, जज्बात से कांपती आवाज से खुरशीदआरा बोलीं, "भाईजान! मुबारक हो! आप दादा बनने वाले हैं।"

"क्या वाकई? आज का दिन तो हमेशा याद रहेगा। आपको भी मुबारक हो साली साहेबा, आप नानी बनने वाली हैं। कमाल बंगलौर से अभी लौटा नहीं होगा? रात को बात करूंगा, अभी जरा यह खबर मैं अम्मा और शकर को देकर आता हूं।" कहकर जमाल खां ने रिसीवर रखा।

ईद-बकरीद नमाज पढ़ने वाले जमाल खां ने आज पहले मस्जिद में जाकर शुक्राने की दो रकत नमाज पढ़ी, फिर टहलते हुए कब्रिस्तान की तरफ बढ़े। उनका दिल खुशी से झूम रहा था। उनको खौफ लगा रहता था कि फेमिली प्लानिंग के चक्कर में कहीं कुछ...कई केस उन्होंने सुन रखे थे कि औरतें अकसर मां नहीं बन पाती हैं। उस खतरे को समीना ने पार कर लिया था। उनकी परेशानी दूर हो चुकी थी।

वह अपने को बहुत हलका महसूस कर रहे थे। कब्रिस्तान पहुंच उन्होंने दोनों कब्रों पर रोज की तरह फातेहा पढ़ा, फिर वहीं दादा की पक्की कब्र के नीचे बने बड़े चबूतरे पर बैठ गए।

जाड़े की धूप गायब हो चुकी थी। रोशनी अभी बाकी थी। परिंदे बसेरा लेने अपने घोंसलों को लौटने लगे थे। आसमान पर फीका चांद दिखने लगा था। आज शायद चौदह तारीख है, तभी चांद पूरा-का-पूरा नीम के दरख्त के पीछे उगा नजर आ रहा है। आज मेरी खुशी, फूलों की चादर बन कब्रों पर डलेगी। हवा में ठंड थी। उन्होंने शाल को कंधे पर से उठा अपने चारों तरफ लपेट लिया। झुटपुटा धीरे-धीरे बढ़ रहा था। उन्होंने कब्र पर अगरबत्ती और शमा जलाई, फिर वहीं कब्रों के बीच टहलने लगे।

आसमान पर फीके चांद में सुनहरेपन ने धीरे-धीरे रंग भरना शुरू कर दिया था। टिमटिम करते तारों से भरा आसमान उनके सर पर छा गया। दूर गांव में बत्तियां जल गई थीं। कहीं लाउडस्पीकर पर भाषण दिया जा रहा था, जिसकी आवाज बीच-बीच में हवा उन तक पहुंचा रही थी। मुझे चांदनी के फैलने तक यहीं रुकना है। चांद की पहली किरण जैसे ही शकरआरा की कब्र को चूमेगी, मैं उस रोशनी के हवाले शकर को कर, घर लौट जाऊंगा। उन्होंने चांद की तरफ देखा। वह पूरा का पूरा तारों के बीच घिरा दमक रहा था। उसकी मद्धिम रोशनी इठलाती हुई आसमान से सफर करती जमीन की तरफ बढ़ रही थी। उन्होंने आंखें बंद कर लीं। कुछ देर चुपचाप बैठे रहे, फिर आंखें खोलीं। तेज दूधिया चांदनी कब्रिस्तान में फैल चुकी थी। कब्र पर जलती शमा पिघलकर मोम का ढेर बन चुकी थी। उन्होंने मुस्कराकर शकरआरा की कब्र को देखा और उठ खड़े हुए। अभी वह कब्रिस्तान से बाहर निकलने ही वाले थे कि हातिम टॉर्च हाथ में पकड़े पहुंच गया।

"मियां! बंगलौर से कमाल भैया का कई बार फोन आय चुका है...और अब लाइट जाय का भी टेम होय वाला है!" उसके इस कहने के साथ ही चारों तरफ अंधेरा छा गया, मगर क्षण-भर बाद ही चांदनी में नहाए रास्ते आंखों को साफ नजर आने लगे थे। हातिम ने टॉर्च बुझाई और कमाल खां के पीछे-पीछे चलने लगा। जहां गलियां पतली थीं वहां बकरी, बत्तख, मुर्गी को वह हाथ में पकड़ी डंडी से हंकाता जा रहा था और मुंह-ही-मुंह में बड़बड़ा रहा था।

"कोई न अपने थान पर बैठता है, न दरबे में...सारे दिन दौड़ा-दौड़ी! अब रात होय गई है तो भी दिन की तरह हुड़दंगबाजी मचाए हैं।"



इस बीच कमाल और समीना खर्च को लेकर खासे परेशान थे। अम्मी थीं तो सारे

घर का खर्च संभाले रहती थीं। कमाल और समीना को बस अपना खर्च उठाना पड़ता था। जब कमाल का हाथ तंग होता तो समीना अपने एकाउंट से निकालकर दे देती थी, मगर अब उसके पास धेला नहीं था। कई कर्जे भी चढ़ गए थे। उसकी तनख्वाह से बिजली और फोन का बिल अदा हो गया था। कमाल न अब्बी से और न समीना अम्मी से रुपये मांग सकती थी। कमाल के जाने के बाद समीना ने अलमारी की दराज, पर्स, किताबें झाड़ीं ताकि कहीं तो कोई भूला-लिपटा नोट उसे नजर आ जाए।

"देख, आज कुछ न बोलियो! बेगम साहब से टाइम लेकर आई हूं!" राबिया की अम्मा ने तेवरी पर बल डालकर कहा।

"अच्छा!" हाशिम ने आती हँसी को होंठों पर हाथ रख छुपाया।

"हट सामने से, रास्ता दे।" राबिया की मां ने झिड़का।

"उनका गुजरे, खाला, बहुत समय बीत गवा है।" हाशिम ने गंभीर होकर कहा।

"क्या कहा तुमने? फिर से तो दोहराना?" राबिया की अम्मा के बदन में आग लग गई।

"ठीक तो कह रहे हैं कि उनका मरे आज ढाई माह होय वाले हैं!"

"तेरी यह मजाल! कल शाम को मेरी उनसे बात हुई हे और तू..." इतना कह राबिया की अम्मा ने वहीं से आवाज दी, "बड़ी बेगम साहिबा! बड़ी बेगम साहिबा! मैं राबिया की मां आई हूं।"

"क्या बात है?" समीना को अंदर से निकल बाहर बरामदे में आना पड़ा।

"सलाम, छोटी बेगम! यह मरदूद पता नहीं क्या बक रहा है? मैंने खुद उनसे बात की है। आज उन्होंने बुलाया था!" राबिया की अम्मा ने कहा।

"बड़ी अम्मी का इंतकाल हो गया है!" समीना ने सारा माजरा समझ धीरे-से कहा।

"हाय मेरे मौला! कैसी कयामत टूटी है मुझ बेवा पर!" दोहत्थड़ सर और सीने पर मार राबिया की मां बिलख उठीं और रोते-रोते वहीं खंभे से टिक बैठ गई। समीना भी चुपचाप बरामदे में पड़ी कुर्सी पर बैठ गई और उसने हाशिम को इशारा किया।

"बस, खाला बस! लेव पानी पियो!" हाशिम ने गिलास आगे बढ़ाया।

"अरे, मेरा तो सब लुट गया। कैसी उम्मीद लेकर आई थी। जवान बेटी का बोझ सर पर है। या खुदा! तूने मुझे दोबारा बेवा बना दिया!" राबिया की मां वाकई बड़े दुःख से रो रही थीं।

समीना के दिल में पहली बार उसके लिए हमदर्दी उभरी।

"खाला! तुम्हार रोए से बड़ी बेगम की रूह को तकलीफ पहुंची। अब अपने को संभालो। लेव दुइ घूंट पानी पियो तो जी हल्का होई।" हाशिम ने इतना कह जबरदस्ती उनके हाथों में गिलास थमाया और एक तरफ खड़ा हो गया।

पानी का घूंट भर सुबकती राबिया की मां ने मुंह धोया और बटुआ खोल लोंग-इलायची फांकी, फिर धीरे-से बोलीं, "राबिया की जान की कसम, छोटी बेगम! कल मैंने उनसे बात की थी। मेरा नाम सुन बोली थीं, 'अल्लाह, अल्लाह! कहां थीं राबिया की मां तुम? अरसे बाद तुम्हारी आवाज सुन रही हूं। अब पूछना क्या है? आ जाओ जब दिल चाहे?' अगर वह बड़ी बेगम नहीं थीं तो फिर कौन थीं?" चुनौटी से चूना निकाल उन्होंने चाटा।

समीना और हाशिम ने एक-दूसरे का मुंह देखा और सोचने लगे कि कौन हो सकता है? एकाएक हाशिम बोल उठा, "शायद..." फिर चुप हो गया इस डर से कि कहीं समीना डांट न दे।

उसके शायद कहने से समीना समझ गई और राबिया की मां से बोली, "वह मेरी अम्मी थीं। बड़ी अम्मा और उनकी आवाजें आपस में बहुत मिलती हैं।"

"तभी तो कहूं मैं..." राबिया की अम्मा ने गहरी ठंडी सांस भरी, फिर धीरे-से बोली, "मैं तो बहूरानी! उन्हें खुशखबरी देने आई थी कि राबिया की बात एक जगह चल रही है। खुदा ने चाहा तो पक्की भी हो जाएगी। वह हमेशा मेरी मदद करती थीं। उन्हीं ने मुझे इस काबिल बनाया कि अच्छा खा-पी रही हूं। साहब ने राबिया के अब्बा को नौकरी दिलवाई। मोटर से दबकर उसकी मौत न हुई होती तो आज मैं भी चैन से रहती। फिर भी खुदा का शुक्र है कि खर्चा ऊपरवाला पूरा कर देता है।"

समीना राबिया की अम्मा के कहने का मतलब समझ गई थी। घर में फूटी, कौड़ी न थी। बड़ी अम्मा की मुंह-लगी थी। उनके मरने के बाद इसे खाली हाथ भेजना ठीक नहीं है। उसका दिमाग चकरा-सा गया। कुछ सोचकर बोली, "हाशिम! बुआ से कहकर राबिया की मां के लिए चाय बनवाओ!" इतना कह समीना उठ गई।

अंदर कमरे में जाकर वह परेशानी में टहलने लगी, फिर कुछ सोचकर उसने अलमारी खोली और शादी की अपनी साड़ियों में से एक शोख रंग की साड़ी घसीटी और दराज खोलकर ढेरों उलटे-सीधे पड़े डिब्बों को देखने लगी। उसको उपहार के रूप में बेशुमार सोने के छोटे-छोटे जेवर मिले थे। उनमें से एक लटकनिया उसने पसंद किया और उसे साड़ी पर रख वह कुछ देर खड़ी जाने क्या सोचती रही, फिर बाहर आई।

राबिया की मां चाय पी चुकी थीं, "चलती हूं, बहू बेगम!" कहकर वह उठीं।

"यह हमारी तरफ से राबिया को दीजिएगा!" समीना ने कहा।

"अरे, अभी से! शादी में बुलाने आऊंगी, बिना आप लोगों की सरपरस्ती के इस जिम्मेदारी से कैसे निबटूंगी!" राबिया की मां ने साड़ी और सोने के बुंदे लेते हुए कहा।

"आपसे एक बात कहनी है। बुरा नहीं मानिएगा। अब बड़ी अम्मी हमारे बीच नहीं रह गई हैं। मुनासिब यही होगा कि आप फिर यहां आने की तकलीफ न करें, वरना बेकार में आपको रंज पहुंचेगा कि आपकी आवभगत पहले की तरह नहीं होती है! अच्छा, खुदाहाफिज!" कहकर समीना अंदर चली गई।

उसकी इस अदा पर राबिया की अम्मा का मुंह खुला-का-खुला रह गया। एक तरफ सोने के बुंदे और रेशमी साड़ी, जिसे देख उन्हें अपनी उम्मीदें फिर से बहाल होती महसूस हुई थीं, दूसरी तरफ यह बेगानगी? उन्होंने डबडबाई आंखों से साड़ी तह कर झोले में रखी और दिल-ही-दिल में कहने लगी कि बहूरानी ने बात तो कड़वी कही, मगर सच यही है। आज वह न आतीं तो हाशिम जाने मेरी क्या गत बनाता। पिछली बार की अपनी बेइज्जती भूली नहीं थी। वह सर झुकाए चुपचाप अपनी जगह से उठीं और सीढ़ियां उतरने लगीं।

माली, जो बहाने-बहाने से क्यारी गोड़ता बरामदे की सीढ़ी तक पहुंच गया था, खुरपी चलाता सब कुछ सुन रहा था। वह तय कर चुका था कि आज वह हाशिम पर सवार गधा-पचीसी की शिकायत बिटिया से करके रहेगा, मगर बिटिया के व्यवहार के आगे वह कुछ बोल नहीं पाया। राबिया की अम्मा जब दरवाजे की तरफ थके कदमों से बढ़ने लगीं तो माली ने धीरे-से कहा, "राम, राम, अम्मा!"

"राम, राम, बेटा!" रुआंसी आवाज से राबिया की मां बोलीं और दुपट्टे से आंखों में भर आए आंसू पोंछने लगीं! इस भरी-पूरी दुनिया में अब वह निपट अकेली थीं।

'चलो, बड़ी बेगम की बात को बहूरानी निभाये दीन!' मन-ही-मन कहता माली हाथ धोती में झाड़ हथेली पर खैनी रख उसे मलने लगा।



जमाल खां को गोदभराई की रस्म के लिए इलाहाबाद जाना था। उनका दिल तो यह था कि वह बहू को यहीं बुलाते, मगर जाने क्या सोचकर उन्होंने फैसला लिया कि इलाहाबाद मे ही ठीक रहेगा, वरना बच्चों के दिल में शकर की तरह यह बात बैठ न जाए कि मैं उन पर मुस्तफाबाद को जबरदस्ती थोप रहा हूं! हातिम को सब कुछ समझाकर वह सुबह पांच बजे इलाहाबाद के लिए निकल गए।



दरवाजे के गेट पर हॉर्न की आवाज सुन समीना तीर की तरह चाय की केतली मेज पर रख बाहर की तरफ दौड़ी। माली ने भागकर गेट खोला। साहब को देख वह हाथ जोड़ खड़ा हो गया। कार से उतरते हुए जमाल खां के दिल में कुछ चिटखा। सामने तेजी से सीढ़ी उतरती समीना को देख वह दोनों बांहें फैला आगे बढ़े। समीना, 'अब्बी' कहती हुई उनकी छाती पर सर रख सुबक पड़ी। जमाल खां की आंखें भर आई थीं। उन्होंने बड़ी मुश्किल से जब्त किया और समीना का माथा चूम, उसे थपकते हुए आगे बढ़े। माली ने सर झुका अंगोछे से आंखें पोंछीं।

—हमका तो अब काम करे में कोई मजा नहीं आवत। सुबह आए के नंगे पैर घास में टहलत रहीं। चाय पीकर बतियावत रहीं। हमरे काम से बहुत खुश थीं। उनके आने के स्वागत मा फूल-पत्ती संभाले का अपना चाव रहा। अब कौन हमरे बाग की तरफ आवत है!—यही सब सोचता माली सफाई करने लगा।

जमाल खां के आते ही घर में मुर्दा पड़े बदन में जान पड़ गई। कमाल आंखें मलता बाप से लिपट गया। आया ने बड़े दिनों बाद दिल से चाय दम दी। हाशिम उनका कमरा झाड़ने-पोंछने लगा। दीवान पर बैठ, गावतकिये का सहारा ले उन्होंने चाय खत्म की, फिर खुरशीदआरा को फोन मिलाया।

"साली साहिबा! गोदभराई की रस्म होनी है या नहीं? अरे, हम गांव से चलकर पहुंचे हैं, आप तो यहीं हैं। उस मोहल्ले से इस मोहल्ले तक का सफर तय कर डालिए!"

जमाल खां ने शकरआरा की डायरी से कुछ जरूरी नंबर ले सबको फोन कर दिया। परसों शाम के प्रोग्राम की इत्तला कुछ करीबी दोस्तों को दी और फिर नहाने चले गए। नाश्ते के बाद वह बरामदे में अपना सिगार सुलगा बैठ गए। कमाल और समीना जा चुके थे। ढलते जाड़े की धूप चहचहाती-सी बाग में फैल चुकी थी। उनकी आंखों के सामने शकर के साथ बिताए लमहे बादलों के टुकड़ों की तरह तैरते गुजर रहे थे। कुछ देर और वह यूं ही बैठे रहते, अगर सामान के ऑर्डर एक के बाद एक पहुंचने न लगते।

हाशिम उन्हें चेक करके अंदर ले जा रहा था। हिसाब की परची देख वह बार-बार चौंक रहे थे कि हर परचे पर दो महीने की बकाया रकम भी दर्ज थी। उनको सब कुछ समझते देर न लगी। उन्होंने एक के बाद एक चेक काटने शुरू किए, फिर दराज खोल अपनी पासबुक देखी, फिर शकरआरा की अलमारी खोल उसके बैंक के सारे कागजात बाहर निकाले।

—अपनी रौ में बहकर मैंने बच्चों का ध्यान ही नहीं रखा! समीना को किस तनाव से गुजरना पड़ा होगा! इसका पूरा इंतजाम आज ही करता हूं, वरना कल... यह क्या...मैं सही पढ़ रहा हूं? इतनी भारी रकम शकरआरा के हिसाब में? इतनी

तो मेरी जमा-पूंजी नहीं है, फिर...फिर यह आई कहां से? जमा की गई रकम की तारीख जनवरी की है यानी कि मरने से कुछ दिन पहले की...कुछ गलती हुई है क्या?—सोच उन्होंने फोन की तरफ हाथ बढ़ाया, फिर कुछ सोचकर रुक गए। कुछ देर आंखें बंद किए बैठे रहे, फिर उठकर बाहर निकले।



बैंक मैनेजर उनको देख बेगम साहिबा की मौत पर अफसोस जाहिर करते हुए उनसे अपनी आखिरी मुलाकात का जिक्र तफसील से बताने लगे। चाय के घूंट के साथ पचास लाख का भेद भी अपने-आप खुलने लगा। उन्हें अब शकर की बेचैनी, बेकरारी और उदासी की गुत्थी सुलझती दिखी! उन्होंने अपने खाते का चेक लिख मैनेजर के हवाले किया और रुपये ले वह घर लौटे।

—तो शकर ने मुझे तकलीफ से बचाने के लिए अपना बरेलीवाला मकान बेच दिया!

जमाल खां के अंदर की दुनिया में एक हलचल मच गई थी। शकर धीरे-धीरे करके कितना बदल रही थी। उसकी जबान का जहर शांत हो रहा था। अपनी छोटी बहन से वह खुलूस से मिलने लगी थी। बच्चों में उसकी सबसे अजीज औलाद कमाल था। उसकी जिद के आगे उसने घुटने टेक दिए थे, वरना यह शादी मुमकिन न थी। समीना को शादी के बाद वह कितना चाहने लगी थी! सबकुछ अच्छा चल रहा था, फिर एकाएक...

—काश! कुछ महीने तुम, शकर, और जी लेतीं तो समीना की गोदभराई की रस्म आज तुम खुद अदा करतीं!

जमाल खां अपनी सोच में डूब-उतरा रहे थे। अपने अंदर यात्रा करने की उनकी यह पुरानी आदत थी। पिता के मरने के बाद अम्मा और अब शकरआरा की याद में वह गुजरी जिंदगी को हर रोज दोहराते हैं।

जब जमाल खां बैंक से होकर घर लौटे तो कोठी की सजावट शुरू हो चुकी थी। लॉन में कुर्सियां लग रही थीं! खुरशीदआरा आ चुकी थीं।

कार से उतरते-उतरते जमाल खां ने अपने जज्बात पर काबू पा लिया था। खिला चेहरा लिए घर में दाखिल होते हुए बोले, "अरे भाई! हमारी इकलौती साली साहिबा कहां हैं?"

"आदाब, भाईजान!" खुरशीदआरा हँसती हुई बहनोई के पास पहुंचीं।

"देखिए समधिन साहिबा, मैंने जो इंतजाम किया है उसमें कुछ छूट गया हो तो आप जोड़ दीजिए।"

"आपने मेरे लिए छोड़ा क्या है?" खुरशीदआरा बोलीं।

"आप दोनों की सोहबत में रहकर थोड़ा-बहुत इंतजाम करना सीख गया हूं!"

मौत के घर में सोग साल-भर तक मनाया जाता है, मगर जमाल खां ने उस पुरानी रस्म को तोड़ दिया। जो गम पूरी जिंदगी का साथ निभाने वाला हो उसके लिए खुशी आखिर कब तक रोकी जा सकती है? जमाल खां की मुंहबोली बहन सीमा पुरोहित का फोन था कि चौक सदा की तरह वह पूरेंगी। बीच लॉन में चौकी रखवा दी गई थी। समीना स्कूल से बैंक पहुंची। लॉकर से उसने जेवर निकाले। आज वह पहनेगी। उसी तरह सजेगी जैसी बड़ी अम्मी की ख्वाहिश रही है! समीना के दिल में मां बनने की आरजू कई बार अंगड़ाई लेती थी, मगर कमाल की मर्जी के खिलाफ जाकर तो वह कुछ पा नहीं सकती थी। यह तो महज इत्तफाक रहा जो यह खुशी अचानक उसकी गोद में आन गिरी।

पूरी कोठी हरे रंग की झालर से जगमगा रही थी। लॉन के बड़े-छोटे पेड़ भी पीले कुमकुमों से सजे हुए थे। मेहमान धीरे-धीरे लॉन में पड़ी कुर्सियों पर बैठ शरबत, कॉफी, चाय के घूंट भर रहे थे। सबको जमाल खां का यह कदम सराहनीय लग रहा था कि दुःख को उन्होंने घर में अपनी जड़ें नहीं जमाने दीं। पांच बजे के करीब सीमा पुरोहित ने चौक पूरा। नेग लेने में उनके और जमाल खां के बीच खूब-खूब नोक-झोंक चली, जिसे सुनकर कहकहे फूट रहे थे। रत्ना समीना को लेकर जब सीढ़ी से उतरी तो एक साथ सबकी आंखें फैल गईं। समीना कहीं से भी समीना नहीं लग रही थी—एक ऐसी रूपवती जिसके चेहरे के ओज पर किसी की भी नजर देर तक नहीं टिक सकती थी!

रस्म शुरू हुई। फोटोग्राफर ने कैमरा संभाला। पता नहीं कैसे बहुत रोकने पर भी समीना की आंखों से दो मोटे-मोटे आंसू उसके दमकते गालों पर लुढ़क पड़े। उसे बड़ी अम्मी की आवाज सुनाई पड़ रही थी।

"मेरी चांद! पूरी हीरे की कनी लग रही है! असली हीरे की मेरी जान!"

उसकी यह हालत देख बहुतों की आंखें भर आईं, मगर सबने जब्त से काम लिया कि यह कोई आंसू बहाने का मौका नहीं है। जमाल खां आंसू-भरी आंखें लिए कहकहे पर कहकहे लगा रहे थे। दिखा ऐसा रहे थे कि हँसी की शिद्दत से आंसू आंखों के कोरों को भिगो रहे हैं। फलों से समीना की गोद भरी गई। उसकी मांग और कोख में चंदन लगा सीमा पुरोहित ने सभी औरत की मांग और पेट पर चंदन लगाया, मगर खुरशीदआरा ने उनका हाथ पकड़ मांग में संदल भरने से मना किया। सीमा ने तुरंत हँसते हुए उनके पेट पर चंदन लगा उन्हें गले लगाया। खुरशीदआरा को जमीर की याद आज सुबह से आ रही थी। काश! आज वह जिंदा होते।

रस्म के बाद खाना-पीना शुरू हुआ। हँसी-मजाक, दुआओं-बधाई के साथ सब बिदा हुए। उस रात जमाल खां ने अपने से एक वायदा लिया कि वे हर माह एक-दो हफ्ते इलाहाबाद में आकर जरूर रहेंगे। अभी बच्चों को उनकी जरूरत है। वह सारी रात बिस्तर पर करवटें बदलते रहे। शकर की खाली जगह पर हाथ फेरते रहे, जहां से उठती फ्रांसीसी इत्र की भीनी-भीनी महक उन्हें सदा अपने नथनों में महसूस होती रही, आज वही गंध सिरे से गायब थी। अब इस आग में जलने की उन्हें आदत डालनी पड़ेगी। इससे घबराकर भागना बेकार है। बच्चों के लिए उन्हें यह सोजिश झेलनी पड़ेगी। सारी रात अंगारों के बिस्तर पर लेट उन्होंने सुबह की और फ्रेश हो मुंह-अंधेरे ही बाग में जाकर टहलने लगे। शकरआरा की तरह ही उन्होंने टहलते-टहलते पेड़ों के तनों को प्यार से थपका, पत्तियों को सहलाया, फूलों को निहारा और कुर्सी पर बैठ आसमान ताकने लगे। सफेद आसमान धीरे-धीरे कर नीलाहट की तरफ बढ़ रहा था। चिड़ियों की चहकार के साथ उषा की लाली फैल गई थी।

'अरे, सुबह उठकर कुदरत का हुस्न भी कभी-कभी देख लिया कीजिए, जमाल!' शकर की आवाज हवा अपने साथ बहा लाई।

'अब मैं कुदरत के हर मंजर में, शकर, तुम्हीं को ढूंढ़ता और पाता हूं।'

जमाल खां आंख बंद किए सुबह की आहटों को सुन रहे थे, जो किसी सितार के तारों से कम दिलकश नहीं थी। माली ने साहब को यूं बैठा देखा तो आश्चर्य में पड़ गया। हाशिम के क्वार्टर का दरवाजा हलके से थपथपाकर बोला, "उठो! साहब जग गए हैं!" मगर हाशिम उसी तरह घोड़े बेच सोता रहा। कल रात एक बजे तो सोया था। आया अलबत्ता अपनी कोठरी का दरवाजा बंद कर रही थी। खुरशीदआरा ने नमाज खत्म कर जब हाल का दरवाजा खोलना चाहा तो वह पहले से खुला मिला। उन्हें ताज्जुब हुआ। बाहर निकलीं तो देखा, जमाल खां आंख बंद किए कुर्सी पर बैठे हैं। वह चुपचाप लौटीं और चाय का पानी गैस पर रखने लगीं! आया आ गई थी। रात के धुले बरतन वह जा-ब-जा लगाने लगी। खुरशीदआरा को मालूम था कि सुबह की चाय बुआ नहीं, समीना बनाती है सो उन्होंने चाय दम दी और आया का मग भर वह ट्रे लेकर बाहर की तरफ बढ़ीं। कमाल और समीना अभी सो रहे थे! कदमों की आहट सीढ़ी पर सुन जमाल खां ने आंखें खोलीं।

"सुबहाखैर!" खुरशीदआरा ने कहते हुए ट्रे मेज पर रखी।

"सुबहाखैर!" जमाल खां हँसे।

"रात ठीक से सोए आप?"

"मैं तो घोड़े बेचकर सोया। पार्टी भी शानदार रही। अरसे बाद दोस्तों से मिल-मिलाकर जी खुश हो गया।" जमाल खां ने कहा और प्याली पकड़ी।

"हां, सब कुछ खैरियत से गुजरा।" खुरशीदआरा मुस्कराई।

"यह बरेली का मकान कब बिका?" कल से घुमड़ता सवाल एकाएक बड़े सपाट तरीके से जमाल खां के मुंह से निकल पड़ा।

"आपको आपा ने नहीं बताया था?" एकदम से यह सवाल खुरशीदआरा को सिटपिटा गया। आपा ने भाईजान से यह बात छुपाई क्यों?

"नहीं, मुझे खुद हैरत हो रही है...शायद बताना चाह रही हों तो जिंदगी ने मोहलत नहीं दी।" जमाल खां ने लंबी सांस खींची।

"हो सकता है। वह कह भी रही थीं कि मौका देखकर मैं कहूंगी। तभी उन्होंने बच्चों को उनके नाम के चेक भी नहीं दिए थे!" खुरशीदआरा ने दूसरी प्याली बनाते हुए कहा।

"पूरी बात जरा खुलकर बताइए, साली साहिबा!" जमाल खां ने चाय की चुस्की ले गंभीर स्वर में कहा।

खुरशीदआरा ने सारी बातें शुरू से आखिर तक बता दीं, फिर उसी रात अपना देखा हुआ ख्वाब भी बताते-बताते वह रोने लगीं।

जमाल खां खामोश रहे। उन्होंने साली को दिलासा देने के लिए मुंह भी नहीं खोला। वह किसी गहरी सोच में डूब चुके थे। प्याले की चाय ठंडी हो गई थी। कब खुरशीदआरा उठकर अंदर चली गई, उन्हें पता नहीं चला।

31

दिल्ली से जयपुर के रास्ते की टोपोग्राफी इस बार बदली हुई थी। खेजड़ी के पेड़ ठूंठ बने अपनी नंगी शाखों के साथ नहीं खड़े थे। उनका सर हरी पत्तियों से भरा हुआ था, जिन्हें देख कमाल को हैरत हुई। ऊंट भी पत्तियां खाते नजर नहीं आ रहे थे। कार तेजी से मैदान, खेत, पहाड़ पार करती शहर जयपुर में दाखिल हो गई।

"लगता है, इस बार बारिश अच्छी होने के कारण खेजड़ी हरा-भरा है!" कमाल के मुंह से निकला।

"खेजड़ी का इस तरह पत्तों से लदना संकेत है सूखे का...खबरें तो बता ही रही हैं कि राजस्थान के अनेक इलाके सूखाग्रस्त हो गए हैं।" पास बैठे मोहताजी बोले।

"अजीब बात है जब कभी मैं...कहूं, एक-दो बार ही...दिल्ली-जयपुर के रास्ते

से गुजरा, मुझे पत्तों से खाली खड़े खेजड़ी के पेड़ों ने हमेशा अपनी तरफ खींचा। यह रास्ता मुझे बेहद खूबसूरत लगता था, मगर आज वह बात न थी।'' कमाल ने मन की शंका व्यक्त करते हुए कहा।

''खेजड़ी ऐसा पेड़ है जिसको सिंचाई की आवश्यकता नहीं है। यह धरती से पानी खींच अपनी प्यास स्वयं बुझा लेता है। कहते हैं, इस पेड़ की पौध नहीं लगती मगर अभी कुछ समय पहले पटवाजी ने भीनासर में मीठे पानी के कुएं के पास आठवीं कक्षा के बच्चों के छोटे-छोटे हाथों से नन्हें-नन्हें पौधे लगवाए थे। अब वहां हजारों लाखों खेजड़ी के वृक्षों की नर्सरी पनप उठी है।'' कहते-कहते मोहताजी मुस्करा उठे।

''अगर कुदरत से इंसान दोस्ती रखे तो वह अपना पूरा सहयोग देती है। कठिन से कठिन काम अंजाम दिए जा सकते हैं।'' कमाल उनकी गहरी मुस्कान में छुपे सुख को महसूस करते हुए बोला।

''जगह की भी बात होती है। सारी दुनिया में बीकानेरी पापड़-भुजिया की धूम मची है। इनका मसाला सदा बीकानेर के कुओं के पानी से गूंधा जाता था, जिसमें कुदरती नमक की अपनी विशेष मात्रा होती है। जब यही काम आसानी के चलते नहर के पानी से करना शुरू हुआ तो स्वाद जाता रहा। यह देख नहर के पानी वाली टंकी में कुएं का पानी मिलाया गया तो भी बात बनी नहीं और मजबूरन भुजिया का आटा गूंधने के लिए कुएं के पानी की तरफ लौटना पड़ा।'' मोहताजी ने जमीन का सच बताया।

''दूसरी तरफ, यही पानी इंसान के बदन में पहुंच हम डाक्टरों की आमदनी भी बढ़ा देता है।'' कमाल इतना कह हँस पड़ा।

मोहताजी उसके मजाक पर दिल खोलकर हँसे फिर गंभीर हो बोले, ''यह बात तो आपकी सही है। अतिसार, हैजा, कृमि रोग, पेचिश, मोतीझारा, पीलिया, जुकाम, चर्मरोग, अंधापन, आंत्रशोथ, लकवा, नारू, अमीबोवाइसिस एवं पेट-संबंधी अनेक रोग अशुद्ध जल पीने की देन हैं तो दूसरी ओर, हमारे देश के पंद्रह राज्यों एवं राजस्थान प्रदेश के लगभग आधे से अधिक जिलों में फ्लोरोसिस की समस्या है। आप तो जानते ही हैं, डाक्टर साहब, यह रोग अत्यधिक फ्लोराइडयुक्त जल का सेवन करने से होता है। हवा, भोजन, पानी सभी में फ्लोराइड की मात्रा मिलती है। अब हम अपने को कहां तक बचाएं?'' मोहताजी चिंतित स्वर में बोले।

''हां, तभी तो रीढ़ की हड्डी, शरीर के जोड़ एवं कूल्हे की हड्डियां में दर्द व अकड़न का होना, लचीलापन समाप्त हो जाना, कुबड़ापन आ जाना, संज्ञाशून्य होना एवं उदास रहना, भूख कम लगना, प्यास ज्यादा लगना, हाथ व पैरों की उंगलियों एवं पंजों का कंपकंपाना, कम उम्र में दांतों का गिरना, सफेद की अपेक्षा भूरे-काले

दांत हो जाना, जल्दी बूढ़ा दिखाई देना, डायरिया, सिर व पेट का दर्द, इन व्याधियों से पीड़ित है हमारा इलाका, डाक्टर साहब।" बड़ी देर से खामोश बैठे श्यामजी ने लंबी सांस लेकर कहा।

"आपने पता नहीं गौर किया या नहीं...हमारी तरफ पान के पत्ते के संग चूना देने का रिवाज नहीं है, मगर भोपाल में मैंने देखा है!" मोहताजी बोले।

"इलाहाबाद में भी है...अक्सर लोग तो चूना उंगली में लगा बीच-बीच में चाटते रहते हैं। रिक्शेवाले तो हैंडिल पर चूना लगा पान का पत्ता फेंक देते हैं और रिक्शा खींचते, पान चबाते, चूना चाटते नजर आते हैं।" कमाल ने हां में हां मिलाते हुए कहा और दिल ही दिल में सोचा कि इतना सब कुछ जानकर इनका आम इंसान को जागरूकता देने का अर्थ है कि समस्याओं पर किसी हद तक काबू किया जा सकता है।

"गेस्ट हाउस पहुंच गए। ग्यारह बजे मीटिंग है। आज ही बीकानेर चल पड़ेंगे। अब आप फ्रेश हो लें। व्यासजी आपको लेने आएंगे...अच्छा जी, नमस्ते।" मोहताजी कमरे में कमाल को पहुंचाकर विदा हुए।



मीटिंग में एक छोटी-सी डाकूमेंटरी भी दिखाई गई थी। बीकानेर से सत्तर किलोमीटर उत्तर की तरफ और गंगानगर से एक सौ तीस किलोमीटर की दूरी पर लूणकरनसर स्थित था, जिसका पानी खारा था। पीने के काबिल बिलकुल न था। इस स्थिति के कारण राजा साहब ने विशेष ट्रेन चलवा बीकानेर से मीठे पानी का इंतजाम किया था, ताकि प्रत्येक परिवार को मीठे पानी से भरा एक-एक घड़ा दिया जाए। सरदार शहर के बारे में भी सूचना थी कि वहां के पानी में फ्लोराइड पाए जाने के कारण जन-जीवन कैसा है। सबसे रोचक तथ्य जो उसमें था, वह राजस्थानी लोक-काव्य 'ढोलामारू रा दूहा' में मारवाड़-निंदा प्रकरण था। जिसमें मालवणी अपने पिता से कहती है—

बाबा म देइस मारूवां, वर कुंआरी रहेसि।
हाथि कचोजउ सिर घड़उ, सीचति य मरेसि।

अर्थात्—'हे पिता! मुझे भारू देश (राजस्थान) में मत ब्याहना, चाहे कुंवारी रह जाऊं। वहां हाथों में कटोरा (जिससे घड़े में पानी भरा जाता है) और सिर पर घड़ा, इस प्रकार पानी ढोते-ढोते मैं तो मर जाऊंगी।'

आगे वह कहती है कि :

पहिरण ओढया कंबला साठे पुरिसे नीर!

अर्थात्—'यहां के लोगों के पास पहनने-ओढ़ने के लिए कंबल होते हैं और पानी यहां साठ पुरुष नीचे यानी करीब 300 से 400 फुट गहरे मिलता है।'

आगे बताया गया था कि मरुभूमि में जहां पानी मिलता था वहीं आबादी बस जाती थी। इसी कारण थार के मरुस्थल के गांवों के नाम के साथ 'सर' जुड़ा है, जो इस बात का संकेत है कि वहां जलस्रोत किसी न किसी रूप में मौजूद है। धीरे-धीरे तालाबों को लेकर समाज का दृष्टिकोण बदला, जिससे उनकी स्थिति पहले जैसी देख-रेख की नहीं रही। तो भी 500 वर्ष पुरानी तालाब-निर्माण परंपरा का बोलबाला रहा।

आभानेरी बावड़ी का सौंदर्य देख कमाल चकित रह गया। इंसान में कितना शौर्य, धैर्य, शक्ति, कला, भावना, निष्ठा और जाने क्या-क्या छुपा हुआ है! आभानेरी के वीरानी में नाचते मोर किस उत्सव की कल्पना को साकार कर खुशियां मना रहे थे—उस अंतरधारा को पकड़ना कमाल के बस की बात नहीं थी। यह तो उस धरती पर रहने वालों की गहरी समझ थी जो संवेदना की कंपन बन उनके विचारों में डूबती-उतराती 'पंगली' को भी मंगलमय बनाने का दम रखती है। तभी तो भीनासर में गहरा और मीठे पानी का कुआं है, जिसके लिए कहा जाता है कि उसका जल पीकर रोगी तक निरोग हो जाता है। खारे जल के बीच भीनासर एक रूपक की तरह है जो राजस्थानियों की आत्मा की गहराई में बैठे उनके मानवीय सरोकारों का रूप धरता है।

कमाल उस डाकूमेंटरी फिल्म को देखकर लौटा तो कमरे में लेटा-लेटा प्रकृति के सौंदर्य के अनेक अर्थों को समझता रहा। जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, नागौर, चुरू और श्रीगंगानगर में रेत के बड़े-बड़े टीले हैं। गर्मी में चलने वाले अंधड़ों से यह टीले एक जगह से चल दूसरी जगह पहुंच जाते हैं। यही नहीं, रेत की आंधी रेल की पटरियों, छोटी-बड़ी सड़कों और नेशनल हाईवे को भी ढक लेती है। यही वह जगह है जहां तीन-चार सौ फुट गहरा पानी मिलता है, जो स्वाद में सब से अधिक खारा है।

कमाल के दिमाग में एकाएक अमराई की ठंडी छांव, नदी का मीठा पानी और नर्म हवा, कुएं की जगत की चहल-पहल उभरी। उसी के साथ अयोध्या का घाट 'राम की पौड़ी' याद आया जहां राम ने जलसमाधि ली थी। उस घाट की जो दशा थी उसे देख कमाल को गहरा धक्का लगा था। सीढ़ियों पर गोबर और सरयू नदी के जल पर मच्छरों का जाल...तब राममंदिर बनाने की हठ चरम पर थी, परंतु...पानी का होना और न होना दोनों स्थितियां कमाल की आंखों के सामने विभिन्न दृश्यों के रूप में नाच रही थीं।



समीना का दिल बहुत उदास था। इस बार कमाल का अकेला जाना उसे अच्छा नहीं लगा था। सच बात तो यह थी कि वह स्वयं कमाल के साथ जाना चाहती थी जो कि मुमकिन नहीं था। उसके पैरों में सूजन आ गई थी। थकन से वह बेहाल थी। ऊपर से बड़ी अम्मी की कमी उसे खल रही थी। उसका दिल किसी काम में नहीं लग रहा था। बच्चों की जिस संस्था से वह जुड़ी थी, उधर भी जाना नहीं हो पाया था। उसने बेचैन हो मोबाइल उठाया और कमाल का नंबर मिलाया। घंटी जाती रही, फोन नहीं उठा। झुंझलाकर उसने फोन बंद किया। घड़ी पर नजर डाली तो रात के दो बज रहे थे। उसके चेहरे पर मुस्कान तैर गई। कमाल की गहरी नींद का यही समय है—एक से पांच बजे सुबह तक, जब कान के पास ड्रम बजाने से भी वह नहीं उठता। समीना ने कमरे की बत्ती बुझाई और आंखें बंदकर सोने की कोशिश में करवट पर करवट बदलती रही।

उधर कमाल जयपुर से बीकानेर जाने वाली ट्रेन पर बेखबर सोया पड़ा था। सारा दिन व्यस्त रहा, ऊपर से लगातार यात्रा, पहले ट्रेन से इलाहाबाद से दिल्ली, फिर दिल्ली से जयपुर कार से और फिर मीटिंग और उसके बाद जयपुर-भ्रमण। अन्य लोग जो दूसरे प्रदेशों से आए थे, वह खरीदारी में भी रुचि रखते थे, सो थोड़ा-बहुत बाजार का चक्कर लगा। फिर खाना खाने के बाद स्टेशन पहुंचा। गाड़ी में बैठने तक उसे याद था कि उसे समीना को फोन करना है, मगर सारे दिन की तरह फिर मौका हाथ से निकल गया। बिस्तर पर लेटते ही उसे गहरी नींद ने दबोच लिया था। नींद में डूबा वह गंगा की मचलती लहरों को देख रहा था। बहती गंगा के इठलाते बदन पर माघ मेले का नहान जारी था। औरतें, मर्द, बूढ़े, बच्चे जलधारा में डुबकियों पर डुबकियां लगा रहे थे। सपने में कमाल अभी कुछ और देखता कि अटेंडेंट ने आकर जगा दिया—ट्रेन स्टेशन पर पहुंचने ही वाली है।



"कौन विश्वास करेगा कि यह रेत का समुद्र कभी जलसागर था?" तिवाड़ीजी बोले।

"विश्वास तो करना पड़ेगा, मगर यह जानना हमारे लिए अधिक तर्कसंगत होगा कि आखिर किन कारणों ने जल को रेत में बदला?" व्यासजी हँसे।

"हां, बरसों गुजर गए मगर जनमानस की यादों में किसी पूर्वकथा की तरह सागर आज भी लहराता है! और लहराए भी क्यों न? उसके कुछ अवशेष आज भी रेत के बीच में खारे पानी के संग छुपे जो हैं। इंसान के दुःख-सुख की तरह। तभी वह बार-बार अतीत के उन नामों को दोहराता है जो उसने कभी समुद्र को देख रखे थे; जैसे—हाकड़ो, आच, ऊप्रह, देधाण, वडनीर, वारहर सफरा, भंडार। इन संबोधनों में एक विचित्र नाम 'हेल' भी है जिसका अर्थ समुद्र के साथ उदारता और विशालता

का भी लिया जाता है। मारवाड़ के पश्चिम में लाखों बरस पहले रहे 'हाकड़ो' के इस मरुस्थल पर प्रकृति बड़ी कंजूसी से वर्षा का जल बरसाती है। तो भी हमें प्रकृति से कोई शिकायत नहीं, उसने हमें जो भी दिया, सुंदर दिया।'' मोहताजी ने गंभीर स्वर में दूर तक फैले रेत के टीलों को देखकर कहा। उनकी बात में कुछ ऐसा था कि वहां उपस्थित सभी जन कई पल तक शांत खड़े रहे। उनकी आंखें दूर क्षितिज में कुछ टटोलती-सी अटकी रहीं।

कमाल इन सरल, सहज और बुद्धिमान राजस्थानियों के बीच खड़ा सोच रहा था कि दुनिया के ऐसे कितने मरुस्थल होंगे जो बिना पानी के बसे होंगे और पानी को संजोने के लिए नए से नए उपाय ढूंढ़ने और अपनाने के लिए लालायित होंगे और रंग की चटखीली छटा में कला और संवेदना का अनूठा एवं उत्कृष्ट उपहार देने में सदा आगे ही आगे होंगे? यही नहीं, बल्कि व्यापार में भी अपना वर्चस्व बनाए रखे होंगे। यह सब तभी संभव हुआ जब अपने होने या न होने वाले स्रोतों को संजोने का जीवट था। जहां पानी इफरात से बह रहा है, वहां लोगों ने उस जलधन को कैसे मिट्टी में मिलाया? दो नदियों का शहर मेरा इलाहाबाद आज साफ पानी की कमी को झेलता नजर आता है।

''डॉक्टर कमाल, आपको राजस्थानी मिजाज को समझना होगा, तभी आप यहां की जलसंचय-प्रणाली को भी समझ पाएंगे।'' मिश्रजी ने कहा।

''डाक्टर साहब तो भरे-पूरे इलाके के हैं। उन्हें वैसे भी हमारी व्यवस्था को समझने में कठिनाई हो रही होगी।'' मोहताजी हँसे।

''वहां की कठिनाई अलग तरह की है। उन समस्याओं से आप अनजान होंगे।'' कमाल ने धीरे-से कहा।

''उत्तुंग ऋषि ने कृष्ण से वर के स्थान पर प्रार्थना की थी कि यदि मेरे कुछ पुण्य हैं तो भगवान, इस क्षेत्र में कहीं जल का अभाव न रहे...यह घटना उस समय की है जब महाभारत समाप्त हो जाने के बाद श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्र से अर्जुन को साथ लेकर वापस द्वारिका इसी रास्ते से लौटे थे। जैसलमेर के पास त्रिकूट पर्वत पर उन्हें ऋषि तपस्या में लीन मिले थे। श्रीकृष्ण के 'तथास्तु' कहने के बाद हम 'उस वरदान भरोसे नहीं रहे, बल्कि अपनी इस 'कमी' को अनेक तरह से आजमाकर पानी के भंडार भरने का संघर्ष जारी रखा। वर्षा का जल तक सहेजकर रखने की रीति बनाई।'' मिश्रजी ने कहा।

''यह बात तो गर्व करने लायक है कि जल संजोने की परंपरा हमारे अलावा और किसी प्रांत में देखने को नहीं मिलती। माना कि यह हमारी जरूरत है, मगर जरूरत को कला का रूप मरुभूमि ने दिया है तभी रीति के लिए हमारे यहां पुराना

शब्द 'वोज' है। मिश्रजी ने अपनी पुस्तक में इसकी चर्चा करते हुए लिखा भी है—"वोज यानी रचना, युक्ति और उपाय तो है ही, सामर्थ्य, विवेक और विनम्रता के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होता रहा है। वर्षा की बूंदों को सहेज लेने का वोज विवेक के साथ रहा है और विनम्रता के लिए भी। यहां के समाज ने वर्षा को इंच या सेंटीमीटर में नहीं, अंगुलों या बित्तों में भी नहीं, बूंदों में मापा होगा। उसने इन बूंदों को करोड़ों रजत-बूंदों की तरह देखा और बहुत ही सजग ढंग से, वोज से इस तरल रजत की बूंदों को संजोकर पानी की अपनी जरूरत को पूरा करने की एक ऐसी भव्य परंपरा बना ली, जिसकी जलधारा इतिहास से निकलकर वर्तमान तक बहती है और वर्तमान को भी इतिहास बनाने का वोज रखती है।"

व्यासजी ने झोले से पुस्तक निकाल उसका एक अंश कमाल के लिए पढ़ा।

"अपनी पुस्तक की प्रति आपको भेंट करूंगा, डाक्टर साहब! आपसे कहना चाहूंगा कि कभी नीचे धरती पर क्षितिज तक पसरा हाकड़ो ऊपर आकाश में बादलों के रूप में उड़ने लगा होगा। ये बादल कम ही होंगे, मगर समाज ने इनमें समाए जल को इंच या सेंटीमीटर में न देख अनुमानित बूंदों की तरह ही छिटके टाकों, कुंड-कुंडियों, बोरियों, जोहड़ों, नाडियों, तालाबों, बावड़ियों, कुएं-कुंइयों और पार में भरकर उड़ने वाले समुद्र को, अखंड हाकड़ों को खंड-खंड नीचे उतार लिया है। उसे आप देखें...हमारे जल संजोने की उस परंपरा को जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारे साथ चली आ रही है और आज के संदर्भ में तो बहुत महत्त्वपूर्ण हो गई है।" मिश्रजी ने कमाल से कहा।

"कुछ सीखने, समझने और देखने के लिए ही आपके बीच आया हूं।" कमाल ने गहरी आवाज में कहा।

"कमाल करते हैं, डाक्टर साहब, आप भी।" व्यासजी ने विनम्र हँसी-हँसते हुए कुछ झेंपे अंदाज से कहा। तिवाड़ीजी और मेहताजी के चेहरे पर प्यार का भाव धूल की परत की तरह छा गया। दोनों ने कमाल को वात्सल्य-भरी आंखों से ताका। अब वे सब जलवाली गांव में पहुंच गए थे।

"यहां पर हर एक के नाम या जाति से कुंआ हुआ करता था। 'सूंघा' और कुंआ खोदने वाले मंगलवार को छोड़कर सभी दिन खुदाई करते थे। उनका विश्वास है कि रामजी को बचाने हनुमानजी पाताल में गए थे।" मोहताजी ने एक टूटी कुंइयां के पास ठहरते हुए कहा।

"कुआं पुलिंग है, कुईं स्त्रीलिंग। कुईं केवल अपने व्यास में छोटी होती है मगर गहराई में नहीं। हां, इनकी गहराई कम और ज्यादा अलग-अलग स्थानों पर भिन्न-भिन्न होती हैं। कुईं एक अर्थ में कुएं से बिलकुल अलग है। कुआं भूजल तक पहुंचने

या पाने के लिए बनता है, पर कुई भूजल से ठीक वैसे नहीं जुड़ती है जैसे कुंआ, बल्कि कुईं वर्षा के जल को बड़े विचित्र ढंग से समेटती और संजोती है। तब भी जब वर्षा ही नहीं होती। यानी कुई में न तो सतह पर बहने वाला पानी है न भूजल है। यह तो 'नेति-नेति' जैसा कुछ पेचीदा मसला है।'' मिश्रजी ने कहा।

उनकी बात सुनकर तिवाड़ीजी बोल उठे, ''क्या ही अच्छा होता जो हम आपकी पुस्तक डाक्टर कमाल को पहले ही इलाहाबाद भेज देते। उसको पढ़कर डाक्टर साहब इन जगहों से जल्दी परिचित हो जाते।''

''अभी कौन-से अजनबी हैं...'' इतना कह अनुपमजी ने कहा, ''यह सारे जल-भंडार कुईं टाके सफेद रंग में रंगे आपको दिखेंगे, क्योंकि सूरज की किरणों को सफेद रंग वापस भेज देता है। अब आप इस कुई को देखें। इतनी संकरी और गहरी कैसे खोदी गई होगी। यह केवल एक आदमी का काम होता था जो ठीक प्रकार से उंकडू भी नहीं बैठ पाता था। सर पर कोई बर्तन उलटा रख वह बसौली से खोदता था। अंदर की दमघोट घुटन से उसे बचाने के लिए ऊपर से मुट्ठी-भर रेत पूरी शक्ति से नीचे फेंकी जाती जो अंदर की गर्म हवा को ऊपर फेंक नीचे ताजा हवा ले जाती। चेलबाजी यानी चेजारो—जो चिनाई करने वाले कहलाते थे—ऊपर से डाली बाल्टी में नीचे का मलबा भर देते और रस्सी द्वारा उसे खींचा जाता। ऐसी हालत में कभी मलबा नीचे गिरता तो चेजारो का सर बर्तन के कारण बचा रहता था। जहां कुएं का पानी खारा होता है वहीं कुई बनाई जाती है।'' मिश्रजी इतना कहकर रुके।

कमाल ने टूटी कुई में झांकना चाहा।

''बरसी बूंद-बूंद रेत में समाकर नमी में बदल जाती है। जब कुई ऐसी जगह पर बनती है तो उसका पेट, उसकी खाली जगह चारों तरफ रेत में समाई नमी को फिर से बूंदों में बदलती है। बूंद-बूंद रिसती है ओर कुई में पानी जमा होने लगता है...खारे पानी के सागर में अमृत जैसा मीठा पानी।'' यह कहते-कहते मिश्रजी के चेहरे पर मीठी मुस्कान फैली।

''जरूरत ईजाद की मां है।'' कमाल ने कहा।

''बिलकुल सही बात है! इस अमृत को पाने के लिए राजस्थानी समाज ने बड़ा मंथन किया है। एक शास्त्र विकसित किया जिसने पानी को तीन रूपों में बांटा—पहला 'पालर' पानी, जो सीधे बरसात से मिलता है। नदी-तालाब में इसे रोका जाता है। दूसरा रूप 'पाताल' पानी जो कुंओं से निकाला जाता है और तीसरा रूप है 'रेजाणी' पानी। धरातल से नीचे उतरा लेकिन पाताल में नहीं मिल पाया पानी। उसी को 'रेजाणी' कहते हैं। इस विशिष्ट रेजाणी पानी को समेट सकने वाली कुई बनाना सचमुच एक विशिष्ट कला है। इसमें जान का खतरा है। कुई धंसी या धसकी नहीं कि चिनाई

करने वाले चेजों की जान पर बन आई। पहले दिन कुईं खोदने के साथ-साथ 'खींप' नाम घास का ढेर जमा कर लिया जाता है। चेजारो खुदाई करते है और बाकी लोग खींप घास से कोई तीन अंगुल मोटा रस्सा बटने लगते हैं। जब कुई दस हाथ गहरी हो जाती है तो उसकी गोलाई वाले तल से मिला रस्सा सांप की कुंडली की तरह लपेटा या बिछाया जाता है। फिर उसके ऊपर दूसरा, तीसरा, चौथा खींप का खुरदुरा रस्सा एक-दूसरे से जुड़ता नीचे होता जाता है और बटी रस्सी का सिरा ऊपर। रस्से की कुंडली को टिकाए रखने के कारण कहीं-कहीं चिनाई भी चलती है। कहीं कहीं न तो ज्यादा पत्थर मिलता है और न खींप ही। लेकिन रेजाणी पानी है तो वहां भी कुइयां जरूर बनती है। ऐसी जगहों पर भीतर की चिनाई लकड़ी के लंबे लट्ठों से की जाती है। नीचे खुदाई और चिनाई का काम कर रहे चेलवाजी को मिट्टी की खूब परख होती है। खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही सारा काम रुक जाता है। इस क्षण नीचे धार लग जाती है। चेजारो ऊपर आ जाते हैं।" मिश्रजी रुके।

"अभी तक पानी से तेल निकालने का मुहावरा सुना था, मगर भीगी रेत से कुईं का भरना पहली बार सुन रहा हूं।" कमाल ने धीरे-से कहा।

"कुई की सफलता यानी सजलता उत्सव का अवसर बन जाती है। काम करने वालों का ध्यान तो रखे जाने की परंपरा थी, मगर चेलवाजी की बिदाई के समय उन्हें तरह-तरह की भेंट और विशेष भोज का आयोजन भी जरूरी होता। जैसलमेर के अनेक गांवों में पालीवाल ब्राह्मणों और मेघवालों (अब अनुसूचित जाती कहलाती है) के हाथों से सौ-दो सौ बरस पहले बनी पार या कुइयां आज भी बिना थके पानी जुटा रही है। जहां खड़िया पत्थर की पट्टी एक बड़े भाग से गुजरती है, वहां एक के बाद दूसरी कुईं बनती चली जाती है। ऐसे क्षेत्र में एक बड़े साफ-सुथरे मैदान में तीस-चालीस कुइयां भी एक साथ मिल जाती हैं। हर परिवार की एक कुईं और परिवार बड़ा हो तो एक से अधिक भी। कुई से दिन-भर में सिर्फ दो या तीन घड़ा पानी ही निकल पाता है। इसके मुंह को घासफूस से ढंकने का रिवाज था। अब तो ढक्कने के साथ ताला भी पड़ा देखने को मिलता है।" मिश्रजी कहते रहे। बाकी लोग ध्यान से उनको सुनते रहे।

"रेत के नीचे सब जगह खड़िया की पट्टी नहीं। इसलिए कुई भी पूरे राजस्थान में नहीं मिलेगी। चुरू, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर के कई स्रोतों में यह पट्टी चलती है और इसी कारण वहां गांव-गांव में कुइयां ही कुइयां हैं। जैसलमेर जिले के एक गांव 'खडेरों की ढाणी' में तो एक सौ बीस कुइयां थीं। लोग उस क्षेत्र को छ-बीसी (छह गुणा बीस) के नाम से जानते थे। कहीं-कहीं कुइयां को पार भी कहते हैं। इसी पर नाम भी गांव के पड़ जाते हैं, जैसे—'जानरे आलोपार' और 'सिरगु आलोपार।' दिन-भर में दो-तीन घड़ा पानी देने वाली कुइयों का पूर गांव गोधूलि के समय इनके

चारों ओर जमा होता है। पानी निकाला जाता है। कुइयां के ढक्कन बंद किए जाते हैं ताकि रात-भर और अगले दिन-भर कुइयां आराम करेगी।'' मिश्रजी ने बात समाप्त की।

सुनकर कमाल बोल उठा, ''आराम कहां? इस बीच रेत का कण-कण अपने जिगर से पानी निचोड़ेगा और खारे पानी के बीच बनी कुई मीठा जल अपने अंदर दूसरों के लिए जमा करेगी।''

कमाल के अंदर अहसास की पर्तें अजीब तरह कांप रही थीं। जमीन की संवेदना, कुदरत की दरियादिली उसके दिल व दिमाग को ओस की बूंद की तरह परदर्शी बना रही थीं।

फाग की लकड़ियों से ढकी कुंडियां--पक्के चबूतरेनुमा कुंडियां, टांका, बावड़ी, खडीन, तालाब, नहर--इनमें से कुछ देखा, कुछ के बारे में सुना और ज्यादा जानने और देखने की ललक लिए कमाल सोचने लगा कि यह उम्र कितनी कम है सब कुछ समझने और देखने के लिए! राजस्थान को जानने के लिए यहां पैदा होना भी जरूरी है, वरना इन बारीक बातों को जो हवा में सरसराती हैं, केवल देखा नहीं जा सकता, बल्कि उसे महसूस कर उसके साथ जीना पड़ता है।

खाने पर हल्की-फुल्की बातों का दौर चल पड़ा। एकाएक मोहताजी ने कहा, ''मैं एक मजेदार मगर सच्चा किस्सा आप लोगों को सुनाता हूं।''

''हां, जरूर सुनाइए।'' व्यासजी बोले।

कमाल ने नजरें उठाई।

''बीकानेर से जब सेठ रामगोपालजी मोहता कराची पहुंचे तो अपना काम ऐसा जमाया कि धन-दौलत दोनों हाथों कमाया। एक बड़ी-सी कोठी फौव्वारों के साथ खड़ी कर ली। उस कोठी को 'हवा बंदरगाह' और 'मोहता पैलेस' के नाम से जाना जाता था। यह वही कोठी थी जो कि बाद में जिन्ना साहब ने ली और बदले में मुंबई की कोठी मोहताजी को दी थी, मगर पंडित नेहरू ने कहा कि यह तो राष्ट्र की धरोहर है और उन्हें दूसरी जगह दे दी...तो मैं जो बताने जा रहा हूं वह बड़ी दिलचस्प बात है कि कैसे हम भाव से अभाव और अभाव से भाव की तरफ बढ़ते हैं। हुआ यूं कि सेठजी के छोटे भाई कन्हैयालाल मोहता करांची पहुंचे। कोठी में पानी की इतनी इफरात देख परेशान हो उठे। सुबह उठ उनका एक ही काम होता कि चलते पानी के फौव्वारों को बंद करते हुए बड़बड़ाते कि यह कैसा जल का अपव्यय है! बेटा-बहू उनकी इस आदत को देख तंग होते सो उन्होंने तय किया कि इनको बीकानेर वापस भेजना ही ठीक रहेगा, जहां एक घड़े पानी में नहाना, धोना, पीना, रींधना, सब कुछ निपटा दिया जाता है। इस तरह वो बिचारे लौट आए।'' इतना कह मेहताजी हँसे।

"अपने यहां, मुझे याद है—बचपन में, बाराती या कहो, जिन्हें भोज पर बुलाया जाता था, अपनी थाली-कटोरी-गिलास लेकर पहुंचते और खा-पीकर वहीं रेत में मांज अपने साथ वापस ले आते।" व्यासजी ने भी हँसते-हँसते बताया।

"मनों रेत-मिट्टी तो हम भोजन के साथ खा चुके होंगे बचपन से अब तक! सुबह उठता सोकर बिस्तर-तकिया छोड़, बालों में रेत भरी होती। दूर नहाने जाते तो लौटते समय वही रेत उड़कर हमारा स्वागत करती। जैसे जाते, वैसे ही लौटते।" मोहताजी बोले।

"पानी भी स्वच्छ मिलता हो तो भी..." कुछ कहते-कहते मिश्रजी रुक गए।

"आपने तालाबों पर काम किया। और लोग भी कर रहे हैं, मगर कुओं पर काम किसी ने क्यों नहीं किया? या मुझे ही इसकी सूचना नहीं है?" कमाल बोला।

उसकी बात पर तीनों महाशयों ने सर हिलाया।

"पानी और शरीर का आपसी रिश्ता बड़ा गहरा है। साफ पीने के पानी की बढ़ती कमी हमें अनेक खतरनाक बीमारियों की ओर ले जाएगी जो पुरानी बीमारियों से हटकर होंगी, जिनका उपचार और निदान जब तक नए शोध द्वारा सामने आएंगे तब तक नई बीमारियां इंसानी शरीर को क्षति पहुंचा चुकी होंगी और पीढ़ियां गुजर जाएंगी।" कमाल ने कहा।

"यह बात तो जमीन की हालत देखकर समझी जा सकती है। न तो हम शरीर का, न जमीन का उचित खयाल रख पाते हैं। कभी अज्ञानता, तो कभी हमारी मजबूरी आड़े आती है। यहां मूगफली की खेती कुछ इलाकों में जमकर हुई फिर लूनकरण सर...वाटर लॉगिंग की समस्या ने सब कुछ खत्म कर दिया। सेम आ गई। पानी भर गया।" मोहताजी के चमकते चेहरे पर दुःख की छाया आकर गुजर गई।

कमाल का जहन मोहताजी के वाक्य में अटककर रह गया था। बार-बार वही पंक्ति 'भाव से अभाव और अभाव से भाव की ओर' गूंज रही थी। उसे अपने शहर की पानी से लबालब भरी नदियां याद आ रही थीं, जहां पानी ही पानी था, मगर पीने के पानी का अभाव फिर भी लोग झेल रहे थे। नाप-तौलकर उन्हें पानी मिल रहा था ठीक दवा की खुराक की तरह।



समीना ने तन्हाई का फायदा उठाते हुए नई योजनाओं पर अपना दिमाग दौड़ाया जो वह खुद करने की तमन्ना रखती थी। उसने सोच रखा था कि जैसे ही कमाल के पैरों के नीचे मजबूत जमीन आएगी, वह अपना बच्चों वाला प्लान सामने रखेगी। स्कूल के जरिये बच्चों से जुड़कर उसकी यह इच्छा दिन-प्रतिदिन प्रबल होती जा रही

थी कि मां-बाप बिना इस चीज का खयाल किए कि उनके आपसी संबंधों और संवादों का कितना बुरा असर बच्चों की मानसिकता पर पड़ता है, स्वतंत्र हो वह सब कुछ कह जाते हैं जो उन्हें मासूम बच्चों के सामने नहीं करना चाहिए। यह उम्र उनके सीखने की होती है और वे अच्छा-बुरा समझे बिना हर वह चीज सीख लेते हैं जो उन्हें नहीं सीखनी चाहिए।

समीना कई दिनों से देख रही थी कि एक बच्चा काला रंग उठा पेंटिंग बुक पर केवल एक निशान बनाता था। आखिर समीना को पूछना पड़ा कि वह रोज एक-सा चित्र क्यों बनाता है और इस चित्र द्वारा वह क्या बनाना चाहता है? उसका जवाब सुन समीना सन्नाटे में आ गई। बच्चा काले रंग से सफेद कागज पर निशान लगाता हुआ बोला, "यह चाकू है, मैं पापा को ऐसे मार डालूंगा। वह मां को मारते हैं, मैं भी..."

सुनकर समीना सन्नाटे में आ गई। उस घटना को गुजरे कई माह गुजर चुके हैं। मगर समीना जब भी उस लड़के को देखती है, उसका कहा वाक्य उसे याद आ जाता है और वह सोचती है कि इस नन्हे दिमाग में आक्रोश का कितना धधकता ज्वालामुखी छुपा है!

समीना ने कागज पर कुछ पाइंट लिखे और उसको एक छोटे लेख का रूप दे उसने फाइल में वह पन्ना लगा दिया और कुछ पल चुपचाप बैठी रही, फिर यह सोचकर उठी कि इस बार कमाल के साथ बैठ इसकी पूरी रूपरेखा बनाएगी।



बीकानेर छोड़ने से पहले भ्रमण का भी कार्यक्रम रखा गया था। माता करणी का मंदिर देख कमाल चकित था। पूरे मंदिर में चूहे लड्डू खाते दौड़ रहे थे मगर न कहीं गंध थी, न बीमारी। शगुन का सफेद चूहा भी उसने भूरे चूहों की फौज में देख लिया था। भांडिशाह मंदिर जाकर जहां चित्रशैली देखी वहीं छत पर चढ़कर बीकानेर शहर का नजारा भी किया। शाम को संगीत की एक बैठक रखी गई थी।

रात काफी ठंडी थी। रेत के उस फैले मैदान में पूरे चांद के उगने के बावजूद दूर-दूर तक अंधेरा फैला हुआ था। अलाव के चारों तरफ लोग बैठे थे। ढाढ़ियों को बुलाया गया था, जिन्होंने दर्दीली आवाज में विरहा गाना शुरू किया। आवाज जमी से उठ आसमान से टकरा रही थी। कमाल के बदन में स्पंदन की नई भाषा शिराओं से गुजर उसे अर्द्धमूर्च्छित अवस्था में ले जा रही थी। बीकानेर आकर वह इन चार दिनों में अपना व्यक्तिगत गम भूलकर यहां की जमीन में खो चुका था। इस समय तनाव उसके बदन से उतर किसी सर्प की तरह रेत में जाने कहां रेंग गया था। बदन के रोएं खड़े थे और भाषा न जानने के बावजूद भावना उद्वेलित हो रही थी। बदन

का खून चेहरे पर जमा हो लवें गर्म कर रहा था, तभी गाना रुका और किसी ने बताया—

"'सोरठ और मांड' राजस्थान के सुप्रसिद्ध राग हैं। ढोला-मारू में जिस दोहे का प्रयोग किया गया है, उसे 'सोरठियो दूहो' कहते हैं। मारवाड़ में यह प्रसिद्ध है कि—

सोरठियो दूहो भलो, भल मरवण री बात।
जोबण छाई धण भली, तारां छाई रात।।

अर्थात्—'सोरठिया दोहा अच्छा होता है। मारवण की कहानी अच्छी होती है। इस तरह यौवनवती स्त्री तथा तारों-भरी रात सुहावनी होती है।

"सज्जनो! ढोला-मारू दूहा का रचनाकाल संवत् 1000 माना जाता है। लेकिन इसका वर्तमान स्वरूप संवत् 1530 के लगभग प्रतीत होता है। यह राजस्थान की श्रेष्ठ प्रेमकथा है। इसको लिखने वाले कवि कुशल लाभ हैं। इसकी रचना दोहों में हुई है। इसमें नरवरगढ़ के राजकुमार ढोला तथा पूगल की राजकुमारी मारू या मारवणी की प्रेम कथा है। इन दोनों का विवाह बचपन में ही हो जाता है, लेकिन मारवणी का गौना नहीं होता। ढोला जवान होता है। वह किसी कार्यवश मालवा जाता है। वहां वह मालवा की राजकुमारी मालवणी के प्रेमपाश में बंध जाता है। उधर मारवणी को जब ये पता चलता है, तब वह ढोला से मिलने के लिए उत्कंठित हो जाती है। वह ढाढ़ियों के माध्यम से अपनी विरह-व्यथा निवेदित करने के लिए उन्हें मालवा भेजती है।

"ढाढ़ी वहां पहुंच आधी रात को सोरठ और माड राग में दोहों के गायन से ढोला को मारवणी की स्मृति कराते हैं। ढोला मारवणी के मिलने के लिए पूगल की ओर ऊंट पर बैठकर रवाना हो जाता हे। रास्ते में ऊमरा-सूमरा के साथ उसकी भिड़ंत होती है, लेकिन वह सभी बाधाओं को पार कर मारवणी को लेकर अपने नगर पहुंच जाता है। शेष जीवन आनंद के साथ व्यतीत होता है।"

इतना बताकर बोलने वाला मच पर बैठ गया। गान शुरू हुआ।

ढाढ़ियों की आवाजें समुंदर में उठते ज्वार-भाटे की तरह मरुस्थल के रेतीले टीलों पर से उठती-गिरती क्षितिज तक उड़ान भर रही थीं। कमाल को लगा, जैसे आवाज नदी है जो पानी की तरह बहती-फिसलती आगे और आगे बढ़ती जा रही है और उन्हीं के पीछे उसकी भावनाएं भी जैसे अपने नन्हें कदमों के डग भरती दौड़ रही हैं। कहानी में अर्थ भरकर उसे और ऊर्जावान बना दिया था। चांद का हाला आसमान पर बड़ा हो गया था। चांदनी ने रेत पर अपना दुशाला बिछा दिया था। अंगारे जब राख की चादर में छुपने लगे तो ढाढ़ियों ने अपनी आवाज की नदियों पर बांध कसे।

दाल-बाटी चूरमा परोसा जाने लगा था। कमाल को समीना की याद बुरी तरह सता रही थी। ढोला-मारू की कथा की चर्चा अभी भी कुछ लोगों के बीच चल रही

थी। वहां लगे तंबुओं में रात को सोने का इंतजाम था। सुबह होते-होते जब कमाल ने तकिया पर सर रखा तो सन्नाटे को बेधती राग सोरठ की प्रतिध्वनियां उसके जहन में गूंजने लगी। आंखें भर आईं। सितारों-भरा आसमान तंबू की छत पर झिलमिला उठा। जाने कहां से अब्बी का उदास चेहरा उभर आया।

32

खुरशीदआरा मझले देवर का खत पढ़ सन्नाटे में आ गईं। उनकी समझ में नहीं आया कि वह देवर को क्या जवाब लिखें? मकान से मिली रकम अब उनके लिए सिर-दर्द बन गई थी! उन्होंने तो किसी से मकान के बिकने का जिक्र नहीं किया, मगर बात बरेली से होती हुई रामपुर तक पहुंच गई थी। कई रातें सोते-जागते, उलझते-सुलझते कट गईं। आखिर मझले देवर का फोन आया।

"भाभी, आपको मेरा खत मिला?"

"हां, मिला था!" खुरशीदआरा ने कहा और पूछा, "घर में सब कैसे हैं? बच्चे और..."

"सब खैरियत से हैं, भाभी!" बीच में ही देवर ने बात काटकर कहा। फिर जल्दी से बोला, "आपने क्या सोचा है?"

"सोचना क्या था? अगर पास में रुपया होता तो फौरन चेक भेज देती, मगर यहां तुम्हारे भैया की पेंशन के अलावा तो कुछ है नहीं। मैं खुद शर्मिंदा थी कि क्या जवाब दूं?"

"वह मकान की रकम...?"

"बड़ी बहन के रहते मैं तो कोई फैसला ले नहीं सकती थी। उन्हीं के पास सारी रकम गई, जिसमें मेरा हिस्सा उन्होंने अपने बेटे-बहू को दे दिया। मैं भी यह समझकर कुछ नहीं बोली कि माशाअल्लाह, तुम लोग खाते-पीते खुशहाल हो। अब पछतावा हो रहा है कि..."

"नहीं भाभी, इस तरह मत सोचिए। उस पर तो समीना का हक बनता है, उसकी नानी का घर था। मैंने तो बस पूछ लिया था कि इस बहाने सूद देने से बच जाऊंगा। आप तो जानती हैं, गजाला की शादी का भी चक्कर है। मकान भी पूरा कराना चाह रहा था। खैर, फिर बात होगी। अपना खयाल रखिएगा। समीना को मेरी तरफ से दुआएं!"

"खुदाहाफिज।" इतना कह खुरशीदआरा ने फोन रखा और इत्मीनान की सांस ली, मगर एक बात उन्हें चुभ गई थी कि मझला अपना घर, ससुराल रामपुर में बनवा रहा था!

खुरशीदआरा ने अपनी तरफ से समझ लिया था कि बात बड़ी खूबसूरती से खत्म हुई, मगर ऐसा नहीं हुआ था, बल्कि बात एक नई दिशा की तरफ मुड़ गई थी—इस झड़प के अलावा जो मझले देवर और उसकी बीवी के बीच में हुई।

"मैंने मना किया था न?" जरीना ने आंखें तरेरीं!

"तो?"

"तो क्या! टका-सा जवाब मिल गया? जिस पैसे पर आपका हक नहीं उसे मांगने पहुंच गए? खुद अपनी जबान से कहते हैं कि भाई-भाभी की मोहब्बत और अहसानों का कर्जा मैं कभी उतार नहीं पाऊंगा, मगर उनके हाथ में कुछ रखने के बजाय मांगने की पुरानी आदत अभी गई नहीं है।" जरीना ने मुंह बिचकाकर कहा।

"जरीना बेगम! कभी-कभी आप अपनी हद पार कर जाती हैं।"

"हक पर बोलना हद पार करना नहीं होता है।"

"अच्छा, बस। आप जीतीं मैं हारा!" कहकर मझला कमरे से बाहर निकल गया।

ऑफिस से अब कर्जा ले नहीं सकता। मकान बड़े नाजुक मोड़ पर है, उसे अधूरा नहीं छोड़ा जा सकता है। जरीना बेगम ने तो मुझे बरगलाकर जमीन खरीदवा दी थी। उनके झांसे में आकर मैंने अपनी गर्दन फंसवा ली।

कई दिन दिमागी उलझन से गुजरने के बाद उसने छोटे भाई से सलाह-मशवरा किया तो उसने भी बताया कि वह भी इसी तरह की उलझन में गिरफ्तार है और इस परेशानी से निकलने की सिर्फ एक राह है कि इलाहाबादवाला घर बेच दिया जाए और उससे मिली रकम के चार हिस्से कर दिए जाएं। भाभी को अब एक दिन बेटी के साथ जाकर रहना ही पड़ेगा। घर में ताला डलेगा। उस मुकाम तक पहुंचने से पहले ही हम फैसला लें तो पैसे की तंगी से भी हमें छुटकारा मिलेगा।

"मगर भाभी मकान बेचने पर राजी होंगी?" मझला बोला।

"दिल से न भी हों तो क्या? हमारी बात तो टाल नहीं सकती हैं। अब्बा के असली वारिस तो हम हैं, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने अपने बाप का मकान बेचने में बहन का साथ दिया क्योंकि वारिस वे दोनों थीं। आप बेफिक्र रहिए। बस, करना यह होगा कि हमको एक रात के लिए इलाहाबाद जाना होगा ताकि भाभी से जबानी बात हो सके और हम उनको अपनी बात ठीक से समझा सकें, वरना वह भी किसी

गलतफहमी का शिकार हो सकती हैं।" छोटे देवर ने कहा।

"ठीक है। मैं तब तक इलाहाबाद के प्रॉपर्टी डीलर से दाम का अंदाजा लेता हूं।" मझले ने फोन रख दिया।

मंझला एक फिक्र से छूट दूसरे तरह की फिक्र में उलझ गया—आसमान से गिरे और खजूर पे अटके! अब उस पर यादों का भूत सवार हो गया। उस घर में बीता बचपन, अब्बा की मौत, अम्मा के आंसू, भाई की मेहनत और भाभी का दुलार! उसका मन दो-चित्ते में पड़ गया। दिल कहता, यह गलत है जो तुम करने जा रहे हो; और दिमाग सलाह देता कि यही सही फैसला है, जो तुम लेने जा रहे हो। इससे दो फायदे होंगे—पहला, रुपया हाथ आएगा; दूसरे, तुम्हारी भाभी की तन्हाई खत्म होगी। उन्हें अपनी बेटी और भानजे के साथ रहने का मौका मिलेगा। मझले के सर में यह सारी बातें इतना चक्कर लगा चुकी थीं कि उसके सर में हरदम दर्द बना रहता था। कभी गोली निगलता तो कभी बेटी से सर दबवाता, मगर दिमाग दुखना बंद नहीं हुआ। कहते हैं, जिस परेशानी को आप हल नहीं कर पाते हैं वह समय गुजरने के साथ खुद-ब-खुद या तो हल हो जाती है या फिर खत्म हो जाती है। कुछ ऐसा ही अंजाम मझले की उलझन का हुआ।

छोटे देवर को किसी काम से बनारस जाना पड़ा तो वह समय निकालकर इलाहाबाद की तरफ भी मुड़ गया। खुरशीदआरा उसे देखकर निहाल हो उठीं। जब वह ब्याह के आई थीं उस समय यह छठी क्लास में पढ़ रहा था। खुरशीद ने उसे अपना छोटा भाई समझकर पाला था। दोनों में दोस्ती भी बहुत थी। अपने दिल की बात बिना झिझक के वह भाभी से कह लेता था।

रात के खाने के बाद जब दालान में भाभी-देवर की पलंग बिछी तो सोने से पहले जाने कहां-कहां की बातें याद कर वे दोनों हँसते रहे, फिर एकाएक छोटे देवर ने बातों का रुख बदल दिया।

"भाभी! यह मकान उठा के बेच डालते हैं। सबका हिस्सा सबको तकसीम कर देते हैं। आप अच्छा-सा दो कमरे का मकान लेकर समीना के बंगले के पास रहें। सच, भाभीजान! ऐश ही ऐश रहेगा। दरवाजा खोला नहीं कि समीना का होने वाला लड़का लॉन में दौड़ता नजर आएगा। उधर भैया का अधूरा घर पूरा हो जाएगा और गजाला की डोली भी शान से उठ जाएगी। और मेरा क्या है? आप हिस्सा दें या न दें, आपका जो भी है आखिर वह मेरा ही तो होगा, आपका बड़ा बेटा जो ठहरा!"

"बड़ी बकवास करने लगे हो तुम!" खुरशीदआरा उसकी बात मजाक समझ हँसती रहीं!

"आपको पता है न, मैं सुबह जाने वाला हूं?" एकाएक छोटे देवर ने पूछा।

"हां, क्यों?" खुरशीदआरा ने पूछा।

"यही कि मुझे सुबह पांच बजे जगा दीजिएगा, गंगा-जमुना पकड़नी है।"

"ठीक है।"

"शब-बखैर भाभी!" छोटे देवर ने कहा।

खुरशीदआरा को भी करवट बदलते-बदलते आखिर नींद आ ही गई। पांच की जगह चार बजे ही उनकी आंखें खुल गई। वजू कर उन्होंने नमाज अदा की फिर बावर्चीखाने में जाकर सूजी भूनने लगीं। छोटे देवर को उनके हाथ का हलवा बहुत पसंद है। एक तरफ आलू उबल रहे थे। उन्होंने मसाला भून रसेदार आलू बना लिया। जब वह किचन से निकलीं तो पांच बचने में सात मिनट कम थे। बुआ उठ चुकी थीं।

खुशीदआरा ने दूसरी तरफ जा देवर को जगाया।

"उठो, पांच बज गए हैं।"

"बस, बस दो मिनट और..." कह छोटा देवर फिर सो गया।

"बुआ! पूरी बना लीजिए, मगर आटा जरा सख्त गुंधवाइएगा।" कहकर खुरशीद ने चाय की भरी केतली उठाई और सबके प्याले में चाय डालने लगीं। बदलू भी उठ गया था। आंगन में खड़ा मंजन कर रहा था।

"अब उठ भी जाओ! ज्यादा नखरे न करो, चाय लाई हू...उठो, उठो, शाबाश! यह हुई न बात!" खुरशीद ने कहा और पलंग पर बैठ चाय के घूंट भरने लगीं।

"रात, भाभी, बड़े सुकून की नींद आई जैसे दुनिया की कोई फिक्र ही न हो।" छोटा देवर बोला और खाली प्याली रख वह गुस्लखाने की तरफ बढ़ा। जब वह नहाकर निकला तब तक गरम-गरम पूरी छनना शुरू हो गई थी।

"भाभी, कुछ जानी-पहचानी खुशबू घर में फैली हुई है?"

"अब कपड़ा बदलो और उन जानी-पहचानी चीजों को चखकर देखो!" खुरशीदआरा ने कहा और मेज पर बरतन सलीके से आगे-पीछे कर सजा दिए।

"यह हुई न कुछ बात!" कहकर छोटे देवर ने बड़े चाव से नाश्ता किया और चलने की तैयारी में एक-दो बिखरा सामान ब्रीफकेस में रखा।

"अब कब आओगे?" खुरशीदआरा ने बड़ी उम्मीद से पूछा।

"जल्दी...और हां भाभी! रात को जो मैंने बातें कही थीं, उन पर गौर कीजिएगा। वह मैं मजाक में नहीं, बल्कि संजीदा होकर कह रहा था। आपको अपनी और भैया की मर्जी बता दी है, मगर यकीन जानिए, अगर आप यह नहीं चाहेंगी तो हम आपकी

ख्वाहिश के खिलाफ हरगिज नहीं जाएंगे!'' एकाएक छोटा देवर पूरा मर्द बन सामने खड़ा था।



छोटा देवर जो बम फोड़कर गया था, उससे खुरशीदआरा का पूरा वजूद लहूलुहान हो गया था। उन्हें लगा कि वह जिस छत को अपने ऊपर साया समझ रही थीं, वह तो कभी उनकी थी ही नहीं! सच तो है, पूरी जिंदगी लू-धूप, जाड़ा-बरसात सहते-सहते निकल गई। इस घर को बनाते-संवारते उम्र गुजर गई और जब जनाजा निकलने का वक्त आया तो चौखट ही अपनी न रही!

जिंदगी के उतार-चढ़ाव किसकी जिंदगी में नहीं आते, मगर इतनी फिसलन और इतनी चढ़ाई कि मैं पूरी जिंदगी हांफती ही रही! मैं तो कहीं की नहीं रही, न मायका न ससुराल। इनके घरों में जाकर क्या रहूंगी जब दोनों देवरानियों ने न कभी उन्हें लेने भेजा, न कभी खुद बुलाने आई। उन्हें कभी बुरा नहीं लगा यह सोचकर कि वे दोनों जानते हैं कि मैं उनके इसरार पर भी यह घर छोड़कर नहीं जा सकती हूं। और आज उसी घर को मुझसे छीनने का पूरा मनसूबा बना लिया! मेरी किस्मत अल्लाह, तूने किस कलम से लिखी थी, जिसकी नोक से कभी मेरे लिए सुकून और इत्मीनान नहीं निकला! बेवगी के बाद मुझे एक दिन भी खुशी का नहीं मिला। बेटे छीन लिए, शौहर भरी जवानी में उठा लिया और अब...

खुरशीदआरा के जब कुछ समझ में नहीं आया तो उन्होंने जमाल खां को फोन पर अपनी विपदा कह सुनाई। जमाल खां जिंदगी के इस मोड़ के बारे में सुनकर सन्नाटे में आ गए। उन्होंने यह कहकर फोन रख दिया कि वह किसी अच्छे वकील से सलाह करते हैं कि यह मसला कैसे सुलझाया जा सकता है। वह बड़ी देर तक बेचैन-से बरामदे में टहलते रहे।

—इस वक्त उनसे यह कहना कि यह घर आपका है, रहिए आकर, उनको एक और सदमा देना होगा। वह बड़ी गैरतदार खातून हैं, वह इस हालत में मेरी बात कभी नहीं मानेंगी। फिर करना क्या चाहिए?

''क्या बात है, अब्बी?'' कमाल क्लीनिक से लौटा तो बाप को परेशान देखा।

''परेशानी है, मगर एमरजेंसी नहीं है। समीना को न बताना...मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। तुम फ्रेश हो लो, और हां कॉफी को कह देना।''

''जी।'' कमाल को बड़े जोरों से भूख लग रही थी, मगर बाप की बात सुन वह गायब हो गई और कई तरह के खदशे उसे डराने लगे।

जमाल खां सोचते रहे। उन्हें याद आया कि खुरशीदआरा के पूरे पच्चीस लाख

हमारे पास हैं। क्यों न वह मकान खरीद लिया जाए? उसकी कीमत बहुत ज्यादा हुई तो बीस लाख...एकमंजिली है। कमरे भी कुल छह हैं। दो बड़े दालान हैं, आंगन है। इमारत भी लगभग सौ साल पुरानी तो होगी ही, जमीन का घेरा भी बमुश्किल तीन-सवा तीन सौ गज होना चाहिए। चलो लगा लेते हैं तीस लाख। तो पड़ा सबके हिस्से में जाकर, लगभग सवा सात लाख, साली साहिबा पच्चीस मिला लेंगी। इस खयाल के आते ही उनका टहलना बंद हो गया।

"जी, अब्बी! बताइए क्या बात है?" कमाल ने फिक्रमंद आंखों से पूछा।

"हल हो गई मुश्किल, कमाल। जिस उलझन से मैं पूरे पांच घंटे से जूझ रहा था, तुम्हारे आते ही हल हो गई।"

"अब्बी! कट शॉर्ट!" कमाल के सब्र का पैमाना लबरेज हो चुका था।

"तो सुनो!"

उन्होंने खुरशीदआरा से फोन पर हुई बातें सुनाई जिसको सुनते हुए कमाल का चेहरा उतरता चला गया, फिर उसे नानी के बरेलीवाले मकान की खबर मिली। सुनकर वह चौंक गया और बोला, "घर में इतना कुछ गुजर गया और मुझे पता ही न चला?"

"मुझे भी मकान बिकने की बात यहां आकर पता चली। अब सुनो, मैंने पहेली हल कैसे की?" यह कह जमाल खां ने प्लान बताया और जबरदस्त कहकहा लगाया, जिसे सुनकर कमाल भी हँस पड़ा। उसके चेहरे की चमक लौट आई थी।

"मेरा एक पेशेंट प्रॉपर्टी डीलर है, अभी फोन मिलाता हूं।" कहकर कमाल ने फोन मिलाया।

"क्या बात है, डॉक्टर साहब! इस मकान के बारे में आपसे पहले दो लोग और पूछ चुके हैं—बनारस और रामपुर से। जो मैंने उनको बताया है, वही आपसे कह रहा हूं। इस इलाके की प्रॉपर्टी के दाम अच्छे नहीं लगेंगे, बहुत गया तो बीस से पच्चीस तक...अब पैसे वाले या तो सिविल लाइंस या फिर करेली की तरफ जाना पसंद करते हैं।"

कमाल ने फोन बंद किया, "यू आर वंडरफुल, अब्बी! काम बन गया—बीस से पच्चीस लाख! नोन लगा न फिटकरी और रंग चोखा...आप बात करें छोटी अम्मी से और मैं चला खाना खाने!" कहता कमाल उठा और बच्चों की तरह दौड़कर बरामदे की सीढ़ियां चढ़ता अंदर भागा।



सुबह नाश्ते की मेज पर जब जमाल खां आकर बैठे थे तो कमाल ने उनके चेहरे

को गौर से देखा। उस पर सोच के निशान गहरे थे। आंखें भी लाल थीं। उसने टोस्ट कुतरना शुरू कर दिया। उसे समीना के स्कूल जाने का इंतजार था। नाश्ता वह कर चुकी थी। पर्स उठाकर जब वह बॉय कह जाने लगी तो कमाल ने पहलू बदला और धीरे-से पूछा, "अब्बी, रात को छोटी अम्मी से बात कर ली थी?"

"नहीं!"

"क्यों?"

"बरखुरदार, जमाल खां डॉक्टर नहीं है कि दर्द से तड़पने वाले को फौरन पेनकिलर दे दे या चीरा लगा दे!" इतना कह जमाल खां मुस्कराए।

"तो फिर कलक्टर जमाल खां क्या करने वाले हैं?"

"मैं सिटी मजिस्ट्रेट भी रह चुका हूं। अदालत में जज की कुर्सी पर बैठ फैसले भी सुनाए हैं!"

"वंडरफुल!"

"इसलिए पूरी छानबीन के बाद फाइनल केस की सुनवाई पर मैं अपना फैसला दूंगा! तुम एक काम करो, कलवाले प्रॉपर्टी डीलर से फोन मिलाकर टाइम लो। मैं उसे ले जाकर मकान दिखाऊंगा। सही तखमीना लूंगा नक्शा दिखाकर, फिर तुम्हारी छोटी अम्मी से फैसला लिखाऊंगा।" जमाल खां ने उबला अंडा बीच से काटते हुए कहा।

"आपको पता है। आपके लिए अंडा खाना नुकसानदेह है।"

"हां, तभी तो जर्दी निकालकर सफेदी खाने जा रहा हूं।"

"आपका पूरा चेकअप कराके तब मैं आपको मुस्तफाबाद जाने दूंगा!"

"ठीक है, बरखुरदार! तुम जो कहोगे मैं मानूंगा। अब तुम बच्चे थोड़ी रह गए हो। एक अदद औलाद के बाप बनने वाले हो। तुम्हारा लिहाज तो करना पड़ेगा।" जमाल खां हॅसे। उनका पुराना लौटा मूड देख कमाल ने राहत की सांस ली।

उसने डीलर को फोन मिलाया। टाइम तय किया, फिर जमाल खां को बताया कि वह दस बजे खुद घर पहुंच जाएगा। 'अब मैं चल रहा हूं' कहता हुआ—वह उठा और कमरे में जा अपना ब्रीफकेस उठाया। तभी फोन की घंटी बज उठी। उसने रिसीवर उठाया। फोन कट गया। जब वह बरामदे में पहुंचा तो फोन की घंटी घनघना उठी। इस बार हाशिम ने उठाया और उसे आकर बताया—"मनीष कपूर का फोन है।"

"उनसे कहो, मैं क्लीनिक पहुंचकर फोन कर लूंगा।" कहता हुआ कमाल कार में बैठा और बंगले से बाहर निकला।



फत्तू के चाय-ढाबे पर खासी भीड़ थी। उसकी वजह भी थी—अरसे बाद हीरा पहलवान दंगल लड़ने अखाड़े में उतर रहे थे। शहर की दीवारों पर उनकी वही पुरानी तस्वीर मछलियों से भरी भुजाओं और तिरछी गरदन के साथ छपी थी, जिसमें उनके माथे पर कुमकुम का टीका था और आंखों में कुछ कर गुजरने का जोशीला तूफान। उसी तूफान के बारे में चायखाने पर चर्चा चल रही थी।

"हीरा पहलवान पूरे पांच साल बाद कुश्ती लड़ने वाले हैं।"

"अरे, बीमार थे भाई!"

"अबकी स्वर्ण पदक लेंगे।"

"अरे, कुछ नहीं, सब बकवास है। प्रचार है साला! दस वर्ष पहले की फोटो छपवाय के दंगल का प्रचार करत हैं। सब पैसा कमाए का धंधा।"

"चुप रह यार। लंगड़ी मारना तो तेरा पेशा होय गवा है।"

"देख लेना।"

"टिकटवा तो काफी बिकत है।"

"बिकेगा ही, पुराना गुरु दंगल में उतर रहा है। कोई मामूली बात है?"

"चलो, पहलवानजी को एक नजर देख तो आएं।"

"चल बे, चल।"

इस तरह की चर्चा फत्तू की चाय-झुग्गी पर ही नहीं, बल्कि सुखिया पानवाले के खोखे पर, चदन हलवाई की दुकान पर, गली के कोने में, सड़क पर फिरने वाले आवारा लड़कों और दंगल के शौकीन लोगों के बीच खूब जमकर हो रही थी।

सड़क के किनारे जब कमाल ने पोस्टर देखा तो उसके मुंह से निकला—

'वाह गुरु वाह! कल तक घास पर लेटे थे, आज चुनौती दे रहे हो!'

क्लीनिक पहुंचकर उसने कपूर को फोन मिलाया। उसके साथ लंच तय कर उसने मेज का मुआयना किया। इस बीच कंपाउंडर साहब कई बार खंखार चुके थे। कमाल ने फाइल बंद कर उनकी तरफ आंखें घुमाई।

"क्यों? आप कुछ कहना चाह रहे हैं?"

"डॉक्टर साहब। आप दो रुपये के कार्ड से पांच रुपये पर आए हैं। दो साल हो. गए हैं। अब जरा कार्ड बनवाने की फीस दस रुपया कर दीजिए!"

"गरीबों को लूट लूं?"

"यह कौन-से गरीब हैं? चालीस-पचासवाली बोतल चढ़ा जाते हैं। फिल्म का टिकट तीस-पैंतीस का खरीद लेते हैं, दिन-भर में गुटखा-पान बीस रुपये का चबा

जाते हैं, मगर यहीं आकर इलाज के समय वह गरीब बनाने का नाटक करते हैं।"

"बात सीधी कहो, मीटर बढ़ रहा है!"

"अब क्या कहें?"

"चलो, इस महीने से गरीबी भत्ता तुम्हारा बढ़ा दिया।"

'लंबे रास्ते से घूमकर आने पर यह लाभ मिलता है।'—कंपाउंडर धीरे-से हँसाकर मन-ही-मन बोला, फिर खुश हो कहने लगा, "बच्चे दुआ देंगे, बीवी लड़ेगी कम!"

"ठीक है, अब जरा चाय मंगवाओ।" कमाल ने कहा और दोबारा फाइल पर झुक गया। मरीज आने में अभी पंद्रह मिनट बाकी थे। उसने तेजी से टाइप मैटर पढ़ना शुरू किया और महत्त्वपूर्ण जगहों पर पीले पेन से निशान लगाता रहा। उसको दो दिन के लिए पटना जाना था।



प्रॉपर्टी डीलर कमलेश साहू के साथ जमाल खां जब बकरीवाली गली में पहुंचे तो कमलेश घर को बाहर ही खड़ा कुछ देर देखता रहा, फिर वे आगे बढ़े। दरवाजे की घंटी बजाई! बदलू ने दरवाजा खोला और आदाब कर एक तरफ खड़ा हो गया। जमाल खां आंगन, फिर छत की तरफ चले गए। फिर दोनों दालान, किचन, खाने का कमरा दिखाकर वह ड्राइंगरूम के खुले दरवाजे की तरफ बढ़ रहे थे कि खुरशीदआरा आ गई।

"यह प्रॉपर्टी डीलर कमलेश साहू हैं। मैं जरा घर दिखाने लगा था।" कहकर जमाल खां ने कमरे दिखाए फिर वापस लौट ड्राइंगरूम में बैठ गए।

"आप नक्शा निकालें, खुरशीद बीबी!" जमाल खां ने कहा फिर डीलर की तरफ मुड़े।

"तो आपका क्या खयाल है?"

"तीस तक निकल जाएगा, मगर इससे ज्यादा नहीं। बात गली की है। कार दरवाजे तक जब आ नहीं सकती है तो..."

"हां, यह हैं कागजात!" खुरशीदआरा की बढ़ाई फाइल को जमाल खां ने साहू की तरफ बढ़ाया।

"कागजात तो सारे ठीक हैं।" कुछ देर बाद कमलेश साहू बोला।

"इनके पास मझले और छोटे का फोन आ चुका है।" जमाल खां ने कहा।

"जी!" खुरशीदआरा बुरी तरह से चौंकीं।

"जी, हां! वह दोनों भाई फैसला करके आप तक पहुंचे थे!" जमाल खां बोले।

खुरशीदआरा का चेहरा यह सुनकर स्याह पड़ गया। आंखें झुक गईं।

"तो फिर मैं चलूं?" साहू बोला।

"आप चलें, मैं अभी कुछ देर यहां ठहरूंगा।" जमाल ने कहा।

कमलेश साहू के जाने के बाद खुरशीदआरा के रुके आंसू बह निकले। दुःख और अपमान से उनका दिल जख्मी हो उठा था। जमाल खां चुपचाप बैठे रहे।

जब खुरशीदआरा जी भरकर रो लीं तो आंसू पोंछ भर्राई आवाज में बोलीं, "भाईजान! इन बच्चों को मैंने अपना भाई-बहन समझा। पता नहीं यह सब किसलिए हो रहा है? मैं कल रात सिर्फ यही सोचती रही कि उन्होंने मेरे बारे में भी फैसला ले लिया। मेरी मर्जी की कोई कद्र ही न की...कितनी जिंदगी बची थी मेरी...बहुत जीती और दस साल!"

"अकसर जिंदगी की सच्चाइयां इंसान को काबिल-ए-कुबूल नहीं होतीं, मगर हमारी समझदारी इसी में है कि जो भी अचानक हमारे सामने आए, उसे हम बड़ी खंदापेशानी से लें!"

"हां, जब नदी-पोखर सूख जाते हैं तो इंसान के जज्बात सूखने में कितनी देर लगती है!" खुरशीदआरा इतना कह तल्ख हँसी हँस पड़ीं।

"इसी तरह अपने जख्मों पर हँसना इंसान की अजमत का एलान होता है। आखिर वह इंसान ही क्या जिसे दर्द दबोच ले!" जमाल खां ने कहकहा लगाया।

"आपने इस बाबत क्या सोचा है?" खुरशीदआरा ने अपने को जल्द ही संभाल लिया।

"हां, अब हुई कोई कायदे की बात! देखिए, साली साहिबा! आपकी इज्जत और बुरदबारी इसी में है कि आप मझले देवर को खत लिखें कि वह इस मकान को बेचने के लिए आजाद है! कमलेश साहू उनके फोन का जवाब दे कि वह खरीदार तय करेगा। उसने तीस लाख लगाई है कीमत। आपके पास अपने पच्चीस लाख हैं, आपके अपने हिस्से के पैसे डाल तीस का एमाउंट पूरा हो जाएगा। बाकी रुपये उठाकर बैंक में डालें। मकान आपका!" जमाल खां ने बेहद मुलायम स्वर में धीरे-धीरे कहा।

"शुक्र है!" कहकर खुरशीदआरा मुस्कराईं। दिल-ही-दिल में वह बहनोई की अक्ल की दाद देने लगीं। फिर धीरे-से बोलीं, "भाईजान! आपने मेरी लाज रख ली, वरना..."

"देखिए, साली साहिबा! किसी बंदे की क्या हैसियत है किसी की लाज रखने की, ऊपरवाला है मददगार! आपका एक बेटा, चार लड़कियां हैं। मुझ जैसा बड़ा भाई है। आपकी आंखों में आंसू आने की कोई खास वजह समझ में नहीं आती है। अब

जरा कुछ मीठा खिलाइए और चलिए सबको लेकर मेरे साथ।''-जमाल खां ने कहा।

''अभी लाई।'' खुरशीदआरा कमरे से बाहर निकलीं। साली के जाते ही जमाल खां गंभीर हो उठे। चेहरे पर उदासी तैर गई। अकेले कमरे में बैठे-बैठे वह सोच रहे थे कि एक इंसान अपनी पूरी जिंदगी में कितने उतार-चढ़ाव देखता है। हर धक्के पर लगता है कि बस अब वह मर जाएगा, जी नहीं पाएगा, मगर वह पहले से ज्यादा मजबूत हो जिंदगी के मैदान में फिर से जूझने के लिए कूद पड़ता है। राहत से दो पल थकान उतारने बैठा नहीं कि नए मोर्चे का बिगुल बज उठता है।

''लीजिए, भाईजान! बुआ ने पहले ही सेंवई बना रखी थी।'' खुरशीदआरा ने प्याला बहनोई की तरफ बढ़ाया।

''मैं अभी पुरोहित के यहां जा रहा हूं, तब तक आप लोग तैयार हों। ड्राइवर आप लोगों को घर छोड़कर मुझे लेने आ जाएगा।'' जमाल खां सेंवई खाते हुए बोले।

''भाईजान! आज रहने दें। इस तूफान के आने और इस तरह से चले जाने से मैं पूरी तरह हिली हुई हूं। मैं दिमाग की इस अफरा-तफरी को सुलझाना चाहती हूं। मझले को खत भी लिखना है। ताजादम होकर इंशाल्लाह कल सुबह आऊंगी।'' खुरशीदआरा ने चाय बनाते हुए कहा।

''देखो, खुरशीद बीबी! नसीहत करना मेरा काम नहीं, मगर फिर भी यह जरूर कहना चाहूंगा कि उन लड़कों की तरफ़ से दिल में शिकवा न पालना। मां हमेशा देती है। बच्चों से पाने की उम्मीद नहीं करती है। मुझे तो खुशी है कि उनकी सोच खासी पुख्ता है, जिसकी बदौलत आज़ तुम जमीर अब्बास की विरासत की तनहा मालिक व काबिज होने जा रही हो। अब जो चाहो करो...फिर जितना मैंने तुम्हें देखा है, तुम बीबी, समंदर हो! तुमने कभी समंदर के सूखने की बात सुनी है! कभी नहीं न? बस तुममें और समंदर में एक ही फर्क है कि उसका पानी खारा है, इंसान पी नहीं सकता और तुम्हारे अंदर का पानी मीठा है, क्योंकि उसमें ममता की घुलावट है। समंदर खारा सही तो भी इंसान को बहुत कुछ देता है। अपने आगोश में क्या-क्या नहीं छुपाए रखता—मछली, केकड़े, मोती, घोंघे, सीप और हमारी नदियों की लाई गलाजत। और जरा देखो, हम उसके सीने को चीरते एक मुल्क से दूसरे मुल्क तक जाते हैं! इसलिए ममता का समंदर इंसान के अंदर कभी नहीं सूखता...'' इतना कह वह हँस पड़े। बोले, ''काफी बोल लिया। अरसे बाद स्टेज मिला तो मौके से फायदा उठाया!'' उन्होंने कहकहा लगाया, फिर कहा, ''अच्छा मैं चलता हूं, फिर कल मुलाकात होती है!''

खुरशीदआरा बहनोई की बातें सुन रही थीं। उन्हें लगा कि उनका हर लफ्ज़ उनके अंदर एक नई रूह, नई कुव्वत, नई ताज़गी भर रहा है। उनके दिल व दिमाग

पर छाया गम का गिलाफ खुलकर गिर गया है। वह एक बाहिम्मत इंसान का रूप धर चुकी हैं, जिसके लिए कोई भी हादसा अब बड़े सदमे में नहीं बदल सकता, न कोई दुःख उन्हें तोड़ सकता है।

बहनोई के जाने के बाद उन्होंने एक कमरे से दूसरे कमरे में चक्कर लगाया और अपने कमरे में आ खुदा के आगे सिजदे में गिरीं कि उनकी बेबसी, बेकसी, बेचारगी को रब्बुलआलमीन ने किस तरह गहरे यकीन में बदल दिया! यह दुनिया खूबसूरत है और इंसान को उसे और दिलनशीन बनाना है, ताकि आकबत की राह आसान बने।



जमाल खां पूरे रास्ते गहरी सोच में डूबे रहे। पुरोहित के बंगले के गेट में गाड़ी जैसे ही दाखिल हुई, उनका मूड बदल गया। दोनों मियां-बीवी बरामदे में हरे-भरे गमलों के बीच बैठे कबूतर-कबूतरी की तरह गुटरगूं-गुटरगूं कर रहे थे। दोनों की नजर एक साथ गाड़ी पर पड़ी तो खुशी से दोनों खड़े हो गए।

"अरे वाह, भाई साहब! आपकी उम्र बहुत लंबी है। अभी हम दोनों आपकी ही चर्चा कर रहे थे।" सीमा हँसकर बोली।

"शैतान को याद करें और मैं हाजिर न हूं, यह जमाल खां की रीत के खिलाफ है।" जमाल ने कहकहा लगाया।

"आज इधर कैसे? कल तो कह रहे थे कि फोन करूंगा।" पुरोहित बोले।

"यार पुरोहित, आजकल यहां का मेयर कौन है?"

"कश्यप, अपना यार है। इलाहाबादी है। क्यों? कोई काम आन पड़ा?"

"हां, बात खुरशीदआरा के घर की है। उनके मकान के सामने पहले सड़क हुआ करती थी, मगर इतनी चौड़ी नहीं जितनी आज है! नक्शा बताता है कि सामने, मेरा मतलब है, मकान के सामने नूर अब्बास साहब की अपनी जमीन थी, जो इस खयाल से छोड़ी गई थी कि पतला-सा बगीचा बनाया जाएगा। वहां रिक्शे का खटाल शुरू हो गया। नूर अब्बास साहब मर-खप गए। जमीर अब्बास आर्मी में थे और मैं दौरों पर। उस वक्त किसी ने इधर ध्यान नहीं दिया। और जब सड़क चौड़ी हुई, फुटपाथ बना तो कभी ट्रक चढ़ गया। शोर मचा तो नगरपालिका ने सुरक्षा के लिए दीवार खींच दी और पतली गली, समझो, मुर्गे की गर्दन की तरह, जाकर खुले पार्कवाले हिस्से में जोड़ दी। पूरे घर का शो खराब हो गया। कार-रिक्शा घर के फाटक तक पहुंच नहीं पाते हैं...वगैरह-वगैरह!"

"यह बताओ मुझे, बाएं हाथ भी खुला इलाका है?"

"हां! पता नहीं किस अहमक का फैसला था दीवार खिंचवाने का। उस वक्त किसी ने ध्यान नहीं दिया या हो सकता है, जमीर अब्बास कुछ करना चाहते हों तो उम्र ने वफा नहीं की। मैं नक्शे की बिना पर वह दीवार हटवाना चाहता हूं!" जमाल खां बोले।

"यह इतनी बड़ी बात तो है नहीं कि मेयर से कही जाए! अपना एक चेला कौंसलर है, वही यह काम अंजाम दे देगा। तुम बेफिक्र रहो!" पुरोहित ने कहा।

जमाल खां दोपहर के खाने पर वहीं रुक गए। अरसे बाद जमकर गप्पें हांकी गई। बातों-बातों में तय यह पाया कि इस बार पुरोहित भी दो-तीन दिन के लिए गांव साथ चलेंगे और हो सका तो दूसरे दोनों को भी नेवता देंगे, यदि वे चलते हैं तो ठीक, वरना हम दोनों काफी हैं!



बहनोई के जाने के बाद खुरशीदआरा मियां की तस्वीर सीने से लगा बड़ी देर तक रोती रहीं। जिस बात का अहसास उन्हें अपनी बीस साल की बेवगी में नहीं हुआ था कि वह लावारिस हो चुकी हैं, वह इन दो दिनों में करा दिया गया था कि मर्द के बिना औरत उठवल चूल्हा करार दे दी जाती है! उनका सारा मान देवरों ने बहनोई के सामने चूर-चूर कर डाला था।

इस बीच बुआ कई बार कमरे में झांक चुकी थीं। दो रोज से इस घर में क्या चल रहा है, वह उनकी कुछ-कुछ समझ में आ रहा है, मगर पूरी तरह साफ नहीं था। छोटे मियां आए तो हमसे बोलना-चालना तो दूर, भतीजी से मिलने तक नहीं गए, न फोन किया? आज नौशा मियां आए तो साथ लाए उस गैर आदमी को सारा घर दिखा डाला और अब यह आंसू...? पूछें तो क्या पूछें? बुआ आंगन में जा क्यारियों की गुड़ाई में लग गई! उनका दिल व दिमाग भी भटक-सा गया था! पुराना घर आंखों के सामने उभर रहा था, जब यह तीनों भाई-बहन छोटे थे। कैसे सबको पाल-पोसकर बड़ा किया, मगर अब कोई पलटकर नहीं आता। चार-पांच साल बाद कोई आया भी तो जाने ऐसा क्या कह गया कि घर का चैन ही छिन गया।

खुरशीदआरा का दिल जी-भर के रो लेने के बाद जब हलका हुआ तो उन्होंने मियां की तस्वीर आतशदान पर रखी और आंखें खुश्क कर वहीं सोफे पर लेट गईं। उन्हें लगा, जैसे जाड़े की जमा बर्फ पहाड़ों की चोटी से पिघल चुकी है! जो भी होना था, अब हो गया। अब जिंदगी की जिस नई नदी का फुटाव हुआ है, उसको अपनी दिशा लेने दो। यही नदी अपने किनारे कुछ नई बस्तियां बसाएगी। कुछ नए चेहरे उभरेंगे। कुछ नए इंसान टकराएंगे। इसलिए जिंदगी के इस सर्द अध्याय को यहीं खत्म कर देना मेरे लिए बेहतर होगा। जो गुजर गया, अच्छा या बुरा, उसको पलटकर

मैं किसी धुनके की तरह रात-दिन धुनूंगी नहीं! बस, अब बहुत हो चुका।

उन्होंने कमरे में आकर कलम उठाया और मझले देवर को पत्र लिखने बैठ गईं। हमेशा की तरह वही प्यार-भरा संबोधन था। वही दरियादिल अभिव्यक्तियां थीं जिसमें साफ शब्दों में लिखा था कि मैं अपने दोनों देवरों की मर्जी से अलग नहीं हूं! जिसमें तुम्हारी खुशी उसी में मेरी खुशी है। मकान तो ईंट-गारे से बनता है, उससे मोह क्या? असली घर तो रिश्तों का होता है, उसे खत्म नहीं होना चाहिए। खत मिलते ही मुझे फोन करना ताकि मुझे इत्मीनान हो जाए। और तुम मकान बेचने के लिए किसी से भी कह दो।

लिफाफा बंद कर उन्होंने उस पर पता लिखा और बदलू को पुकार उसको पोस्ट करने को कहा। कुछ देर तकिया से टेक लगाए, आंख बंद किए बैठी रहीं, फिर सर झटककर उन्होंने आंखें खोलीं और तिपाई से रिमोट उठा उन्होंने टी.वी. चालू किया! कोई फिल्म आ रही थी। वह उसे देखने में डूब गईं।



राबिया की कही बात मखफूर की समझ में आ गई थी। वह शाम ढले जब घर पहुंचा तो अम्मा हमेशा की तरह बाल नोच बहनों को सलवातें सुना रही थीं और जाने किस पड़ोसी को उंगलियां चिटखा-चिटखा कोस रही थीं! मखफूर का दिमाग भिन्ना उठा। बहनें भी भाई को देख आगे बढ़ीं। मखफूर ने धीरे-से पूछा, "क्या बात है?"

"कुछ नहीं भैया! अम्मा को हमारा पढ़ना-लिखना पसंद नहीं, पड़ोसवाली आंटी मिलने आई थीं। उन्होंने कहीं पढ़ाई की तारीफ में कुछ बोल दिया, बस अम्मा का पारा तब से चढ़ा है।"

"वही रोज की किच-किच!" इतना कह मखफूर चुप हो गया। उसे महसूस हुआ कि राबिया जैसी कमसुखन और मीठा बोलने वाली लड़की इस घर को बदलकर रख देगी। तब बहनों की शादियां भी अच्छे घरानों में होने की उम्मीद बढ़ सकती है।

—'ई औरत का अगर हम महल मा भी जाकर बैठाइ दें तो यह अपनी औकात कभी न भूलिए! वही चों-चों, कभी मेहतरानी से, कभी मोहल्ले-टोलेवालन से। आखिर हम का करें? ऐका छोड़ आवें का ओई मुर्गीवाली गली मां?'—नानबाई बिस्कुटिया जैसे ही घर में दाखिल हुआ, उसको बीवी का ताशा बजता सुनाई पड़ गया था। दिल कड़वाहट से भर गया।

"आय गए?" नानबाइन ने साड़ी का पल्लू कमर में खोंसते हुए जरा आवाज नरम कर मियां का स्वागत किया।

"कहो तो फिर चले जाएं? आखिर मर्द बाहर से थका-हारा अपने घर ही तो लौटेगा?" नानबाई ने कड़वाहट से कहा, जिसका कोई असर उस मोटे दिमागवाली औरत पर नहीं पड़ा।

"साली हमेशा तंदूर बनी रहत है। दिल करत है कि एक रोज लात मारकर भट्ठी ही तोड़ दें।" मुंह-ही-मुंह में नानबाई बड़बड़ाया और अलगनी पर लटकी तहमत और बनियान उठा परदे के पीछे गया। इस बीच लड़कियों ने बाप का पारा कम करने के लिए बड़े सलीके से ट्रे में चाय और नमकीन लगा तख्त पर रखा। अंदर कमरे में बैठा मखफूर भी आकर तख्त पर बैठ गया। तीनों भाई-बहन बाप के आने के बाद चहकते हुए चाय-नाश्ता करने लगे। नानबाइन इन बातों से बेनियाज, पैर फैलाए बीच में रखे तसले में तरकारी काट रही थी। मखफूर को लगा कि अम्मा से कहीं अच्छा रहेगा अब्बा से बात करना।

तभी नानबाई ने कहा, "मग्गा बेटे, मौलाना असलम आए रहे तोहरे ब्याह के लिए एक लड़की का पैगाम लेके! जेकी बिटिया है ओके बाप का हम जानित रहे। बहुत तारीफ करत रहे कि लड़की सलीकामंद और दीन-मजहब की पाबंद है। यतीम है। ओका देख लें चल के...पसंद आएगी तो हां, नहीं तो पूरा सहर भरा है लड़कियन से..." नानबाई ने बड़े प्यार-भरे स्वर में कहा फिर धीरे से बोला, "हम अपनी हैसियत से तुम सबका पढ़ाय-लिखाय दिया है। चाहत हैं कि इस घर मा भी पढ़े-लिखोंवाला माहौल बने, मगर हमार इच्छा पूरी होब मुस्किल लगत है!" नानबाई ने बड़ी हसरत से कहा और अपनी बीवी की तरफ देखा जो अपनी ही दुनिया में डूबी थी।

तीनों भाई-बहनों के हँसते चेहरे कुम्हला उठे।



हफ्ते-भर बाद कमलेश साहू जमाल खां से मिलने आया। इस बीच वह अकेला ही एक-दो खरीदारों को लेकर बकरीवाली गली हो आया था। रामपुर में भी उसने मझले से सिलसिला जमा रखा था।

"दोनों चचाओं ने भी हद कर दी!" कमाल ने धीरे-से कहा।

"और जब वह सुनेंगे इस डीलिंग के बारे में तो हमारी समझदारी को चालाकी का नाम देंगे। इसलिए बेहतर है इस मामले में हम 'नो कमेंट्स' की पॉलिसी अपना लें।" इतना कह जमाल खां ड्राइंगरूम की तरफ बढ़े।

"नमस्ते अंकल!"

"जीते रहो! क्या खबर है?"

"सर...आपसे मैंने तीस कह दिया था, मगर जो पांच-छह लोग रुचि दिखा

रहे हैं, उनमें से कोई पंद्रह-बीस से आगे नहीं बढ़ रहा है। घर में प्लास्टर खराब हो चुका है। वही हाल वायरिंग का है। खरीदनेवाला सेकंड हैंड माल में और बहुत-सी बुराइयां निकाल लेता है, मगर रामपुरवाले क्लाइंट बीस में राजी हैं...अब आप जैसा कहें। कुछ दिन रुक जाते हैं, शायद ग्राहक अच्छा मिल जाए, मगर रामपुरवाली पार्टी को बहुत जल्दी है। वह तो कल की जगह आज ही डीलिंग खत्म कर डालना चाहती है।" कमलेश साहू ने खुलासा दिया।

"हूं।" इतना कह जमाल खां काफी देर खामोश रहे, फिर धीरे से बोले, "हमें इसमें क्या एतराज हो सकता है जब मालिक राजी हैं। आप उन्हें फोन करके बुला लें, कागज तैयार करें, मगर खरीदार का नाम मैं दूंगा?"

"जी?" रमेश साहू चौंका जरूर मगर कुछ बोला नहीं।

"हां, आपका हिस्सा महफूज रहेगा, घबराइए नहीं! खरीदार बस मेरा अपना होगा!" जमाल खां मुस्कराए।

"तो फिर अभी लो, अंकल!" इतना कह कमलेश साहू ने मोबाइल पर नंबर मिलाया। मझले लड़के से बात की और कागज तैयार करने की बात तय कर उसने फोन बंद किया। फिर बोला, "सर, ये दोनों भाई कल सुबह आने वाले हैं और चाहते हैं, शाम को ही वापस चले जाएं!"

"वेरी फास्ट!" जमाल खां ने कहकहा लगाया फिर बोले, "बेटे! एडवांस में कितना देना-दिलाना है—मेरा मतलब बयाना?"

"कमाल है, अंकल! जब डीलिंग कल है तो कल ही सारा भुगतान पार्टी को करा दीजिएगा! इतनी फास्ट तो मेरी पहली डीलिंग है, वरना खरीदार और मालिक में कई मुलाकातों के बाद भी बात नहीं बन पाती है। यह सब आपका आशीर्वाद है।" रमेश साहू ने हाथ जोड़कर कहा।

"तो फिर चलो, शाम को सारे कागज मुझे दिखा देना, मैं बैंक से नकद निकलवाता हूं और..."

जमाल की बात काट बीच में ही रमेश बोल उठा, "वही चालीस और साठ प्रतिशत के हिसाब से!"

"ठीक! बाकी रजिस्ट्रेशन और..." जमाल ने कहा और उठ खड़े हुए।

"फिर चलता हूं।" साहू इतना कहता हुआ बाहर निकला।

जमाल खां ने अपने-आपसे कहा—'अब समीना को सारी बात बताने का मौका आ गया है। सवाल यह है कि किसका बताना मुनासिब रहेगा—मेरा, कमाल का या फिर खुरशीद बीबी का? कुछ देर वह सोच में डूबे रहे फिर खुरशीदआरा को फोन

मिलकर सारी इत्तला दे, आखिर में बोले, "अब समीना को सब कुछ बता दें, ताकि उसे शिकायत न रहे।" यह कहकर उन्होंने फोन रखा और जोर का कहकहा लगाया। दूसरे ही पल उदास हो उन्होंने कमरे के चारों तरफ नजर डाली और एक गहरी सांस ले उठ खड़े हुए, ताकि बैंक का काम समय रहते पूरा कर लें।

33

राबिया और मखफूर को अपनी जबान खोलनी ही नहीं पड़ी और ऊपरवाले ने उन्हें मिला दिया। दोनों ने सर झुकाकर अपनी किस्मत का फैसला मां-बाप पर यह कहकर छोड़ दिया कि आप बड़े हैं। जो करेंगे, हमारी बेहतरी देखकर करेंगे। मगर अंदर-अंदर वे दोनों अपने मुकद्दर पर नाज कर रहे थे। शादी की तारीख तय हो गई थी। राबिया की अम्मा ने बंद ताले खोल सारे कीमती कपड़े और सामान निकाल पलंग पर फैला दिए—चांदी-सोने के जेवर भी। उन्हें देखकर राबिया ने मन-ही-मन राहत की सांस ली, फिर दबी जबान से बोली, "अम्मा! यह पैसेवाले लोग हैं...तुम बुरा न मानो तो कुछ कहूं?"

"बुरा क्यों मानूंगी, बोलो!" मां ने कहा।

"देखो अम्मा, बरात इस गली में...अगर शादी से पहले हम महीने-भर के लिए अच्छा घर ले लेते तो..." राबिया इतना कह चुप हो गई।

"उसके लिए घर क्या लेना? अरे! शादी-घर तो मिलते ही हैं किराये पर।" राबिया की अम्मा जोड़ा अलग करते हुए बोलीं।

"अम्मा! रस्में हैं...उनके रिश्तेदार फिर एक-से-एक मिलने वाले आएंगे। कहां बिठाओगी?" राबिया कुछ इस तरह बोली कि मां हाथ का सामान रख सोच में डूब गई। कुछ देर वैसे ही बैठी रहीं फिर धीरे से बोलीं—"कहती तो ठीक हो!"

राबिया जिस गरीबी को अपनी कमी समझ रही थी उसकी कोई अहमियत मखफूर और मखफूर के बाप को न थी। वे खुद नाबदान से निकले थे। उन्हें गरीबी की बेबसी और संघर्ष का पसीना आज भी याद है, मगर नानबाइन को न राबिया, न उसकी अम्मा फूटी आंख भाई, सो घर आकर, वह रेशमी साड़ी उतारकर पलंग पर फेंकते हुए बोली, "मां सेर तो बिटिया सवा सेर! लिपुड़ी-चुपड़ी तो दोनों ऐसा करत रहीं कि कुटनी भी इनके आगे पानी-पानी हो जाए! अपनी जात-बिरादरी छोड़ उल्टा लौटे हैं मुरगीवाली गली मा।"

"चुप रहियो कि नहीं?" नानबाई को इस समय अपनी पत्नी की ठोंक-पीट

बिलकुल नहीं भाई। लड़कियां तो मां की कनस्तर पीटने वाली आवाज की आदी हो चुकी थीं तो भी उन्हें मां की यह खटर-पटर इस समय बेहद नागवार गुजरी। मखफूर खुश था। उसे मां का पल्ला हमेशा की तरह इस सिलसिले में भी हलका लगा, इसलिए वह मगन हो कमरे में जा लेट गया। बाहर अम्मा का बड़बड़ाना जारी था।

"दोनों मां-बेटी के लच्छन मोको तनिक न भाए...बात तो ऐसा लहटाए वाली करत रहीं जैसे कोठे..."

"बस, अपनी जबान बंद कर लेव पिटारा मा, वरना सांप का जहर निकालत हमका देर न लगिहै!" नानबाई सारी तमीज-तहजीब छोड़ उतर आया नंगई पर और खूनी नजरो से पत्नी को घूरा।

"ठीक है। अबसे पिटारा बंद!" मियां की ललकार सुन नानबाइन पटकती-झटकती चूल्हे के पास जाकर खड़ी हो गई। उसके बदन पर मार के गहरे निशान अभी मिटे नहीं हैं। जवान बेटा-बेटियों के सामने वह पुराना गुजरा दोहरवाना नहीं चाहती थी। इसलिए लहू के घूंट पीकर रह गई, वरना तो वह अभी सारा घर उलटकर रख देती, तब पता चलता कि गधे की दोलत्ती का क्या अंजाम होता है। आखिर कद-काठी में वह मियां से दुगुनी थी। अपने नाटे कद के कारण ही नानबाई बिस्कुटिया कहलाने लगा था।

लड़कियां भाई के कमरे में चली गई और शादी की सजावट, कपड़े, खाने-पीने की बातों में लग गई। टी.वी. देख-देखकर उनके पास दुनिया-भर के फैशन और बाजार की सूचनाएं थीं। घर में पैसा था। बाप का दिल अरमानों से भरा था, इसलिए उनको खुली छूट थी कि वह घर की पहली खुशी जैसे चाहें, मनाएं। उधर चारपाई पर लेटा-लेटा नानबाई सोच रहा था कि एक छोटे-से घर को दोनों मां-बेटी ने कैसा सजाकर रखा है। साफ-सुथरा ऐसा जैसे हवा धूल-मिट्टी लाती ही न हो। जो चीज थी वह चमक रही थी। लड़की भी कैसा संभल के उठ-बैठ रही थी। दस्तरख्वान पर नाश्ता चुना गया तो ईमान से लगा, मिर्जा रहमतउल्लाह बेग के घर की दावत है। अच्छे घरवाले अपनी खानदानीपन गरीबी की गुदड़ी में भी नहीं छुपा पाते हैं। अल्लाह का शुक्र है जो इस मछली बाजार में ऐसी लड़की भेज रहा है, जिसके आने से घर कंपनी बाग की तरह महकेगा! नानबाई यही सब सोचते-सोचते ऊंघ गया।



मखफूर की शादी की तैयारियां दोनों तरफ से चल रही थीं। चढ़ावे के जेवर और बगी के इक्यावन जोड़े देख नानबाइन ने अपने बाल नोच, मुंह पर थप्पड़ लगाए।

"लुटाय दो घर! जब अपनी लौंडियन के हाथ पीले करे का समय आई तो बगल झांकना। सुना है, मां बड़ी कंकालिन है—जब ओकी लौंडिया सारा सोना-चांदी

बांध रफूचक्कर होय लेगी, तब कहना—मग्गा की महतारी का कहत रही!''

''तोका बीमारी है का रंग में भंग डाले की? अरे हम कमावा है, हम लुटाइत है, तोसे मतलब?'' नानबाई जलबला उठा!

''मतलब है, यह अकेली तोरी कमाई नहीं जो दुइ-दुइ हाथ से उड़ावत हो! एमा हमरा जांगर भी लगा है, तभई नानखताईवाला खोंचा छोड़, आज फैसनवाला होटल जमा पाए हो। हमरी कमाई लुटे और हम न बोलें, वाह रे तोहार भभकी! हम डरे वाले नहीं हैं। अब समय रहत हाथ खींच लेव, वरना बहू को ब्याह के घर में लावइ न देबय हां।'' नानबाइन पर मरघट की चुड़ैल चढ़ गई थी—आंखें लाल और सर के बाल बिखर गए थे।

''ठीक है, हाथ खींच लिया। बस होय गई तोहार मनमानी!'' नानबाई समझ गया कि पत्नी का क्रोध अपनी अंतिम डिग्री पर पहुंच चुका है। इसके बाद अगर ताप थर्मामीटर को तोड़ बैठा तो फिर इस कालीमाई को कोई काबू नहीं कर पाएगा।

तूफान के बाद जो सुकून नजर आता है वह घर में छा गया था। कल बरात जानी थी। हजार तरह के काम थे। इंतजाम बड़ा था सो उसकी नोक-पलक भी देखनी थी। उधर, राबिया की अम्मा ने पांच हजार महीने पर एक माह के लिए नया बना मकान किराये पर ले लिया था। बेटी का दहेज भी वहीं सज गया था। पलंग-सोफा तो मखफूर ने मौके की नजाकत देख अपनी पसंद का खरीदकर पहले ही भेज दिया था। इधर कुछ बर्तन और सजावट का सामान भी उनके घर पहुंच गया था। इस शादी के चर्चे नए-पुराने जानने वालों में चल रहे थे।

बरात खूब ठाठ-बाट से चौकी और हाथी के साथ सजकर पहुंची। राबिया की अम्मा को जैसे अपनी आंखों पर यकीन नहीं हो रहा था कि उनका देखा बरसों पुराना सपना सचमुच सजकर उनकी चौखट पर खड़ा है! बरी देखकर तो उनकी आंखें चकाचौंध हो गईं। यतीम लड़की की ऐसी किस्मत खुलेगी? काश! हमारी बड़ी बेगम साहिबा जिंदा होतीं तो यह सब देखकर कितना खुश होतीं!

राबिया की अम्मा की तरफ से भी इंतजाम बढ़िया था। मखफूर ने मां को खुश करने के लिए पहले से कुछ तोहफे राबिया के हवाले कर दिए थे।

समधिनों को गावतकिये के सहारे कालीन-बिछे तख्त पर बिठा राबिया की अम्मा ने ठंडाई का गिलास उन्हें अपने हाथों थमाया। हार पहने, केवड़े के छिड़काव से महकी नानबाइन ने अपने सोने की चूड़ियों-भरे हाथों से गिलास ले, दांत पीस मन-ही-मन कहा—'फकीरिन, तोहार ई किराये की सान हम सब सादी के बाद अच्छी तरह झड़बय, का धोबी अपनी लादी पीटत है।' मगर ऊपर से बनावटी बेजान मुस्कान होंठ फैलाकर दिखा दी।

आव-भगत से कुछ चैन मिला तो सेनी में सोने का सेट और जरी की साड़ी सजा राबिया की अम्मा ने समधिन को भेंट किया और बहनों को उनके जोड़े दिए। यह सब देखकर नानबाइन बड़ी हिकारत से बोली, ''कहने को विधवा, मगर सामान ऐसा गाड़े रही कि...'' बाकी उनकी बात बड़ी लड़की ने उनकी उंगली जोर-से मरोड़कर रोक दी। गाने की आवाज में उनकी इस बड़बड़ाहट को किसी ने सुना भी नहीं।

राबिया की अम्मा तो वैसे ही बौखलाई हुई थीं। बेटी के निकाह के बाद उनके उड़े होश वापस लौटे। उन्हें अपनी तकदीर की दरियादिली पर यकीन आ गया। बाहर से भी मुबारक-सलामत की आवाज आनी शुरू हो गई थी। खाना लगना शुरू हो गया था। सुबह चार बजे रुखसती थी। मेहमानों के जाते-जाते रात के एक बज गए थे। करीबी रिश्तेदार व दोस्त बचे थे।

रुखसती का इंतजाम शुरू हो गया। राबिया की अम्मा की पुरानी सहेलियां जमा थीं। उसमें रमजानी नाइन भी आई हुई थी। आखिर बरसों का साथ था! पेट पालने के लिए राबिया की अम्मा ने कौन-सा पेशा था जो नहीं अपनाया था। नाइन, आया, खाना पकानेवाली बुआ, दरजिन—जिस घर में जिस काम की जरूरत पड़ी वही पेशा कर मेहनत की कमाई खाई, मगर हराम का एक पैसा न कमाया, न हरामकारी की। उनकी यही एक खूबी थी जिसके चलते उनके सौ गुनाह माफ थे। बीवियों को भी उन्हें अपना घर सौंपते कभी डर नहीं लगा कि उनकी राह व रस्म उनकी मियांओं से बन जाएगी। उलटे किसी मर्द के बेजा मजाक पर वह उसे धूल चटाना भी जानती थीं। इसलिए आज उनकी किस्मत के चमकने पर सबके मुंह से एक ही बात निकल रही थी कि राबिया की अम्मा की नेकी उसके काम आई!

राबिया गहनों से सजी-धजी रुखसत हो गई। पीछे मां को रोता छोड़ गई। थका बदन था। वहीं तख्त पर सेते-रोते सो गईं। सपने में देखा, जैसे, मियां आया है और शेरवानी-साफा पहने खड़ा है। अपनी आंख के आंसू रूमाल से पोंछकर पत्नी को सीने से लगा बोला—'राबिया की अम्मा, तुमने आज मेरा फर्ज पूरा कर दिया है!'

पट से राबिया की अम्मा की आंख खुल गई। सुबह का उजाला फूट गया था। उन्होंने दुआ पढ़ मुंह पर फेरा और बड़े विश्वास से उठ वह चाय बनाने लगीं। अभी उनकी सहेलियां उलटी-सुलटी लेटी खर्राटे भर रही थीं!



महीने-भर बाद ही बकरीवाली गली का वजूद मिट गया। जहां सारे दिन में-में करती थनदार बकरियां मेंगनी बिखेरतीं और उनके बच्चे कुलांचें भरते मां के आगे-पीछे दौड़ते हमेशा नजर आते थे, जिसके कारण यह गली बकरीवाली गली कहलाने लगी थी, अब दीवार टूटने के बाद वह अपने पुराने पते के साथ नूरमंजिल नजर आने लगी

थी। यह मोहल्ला, जहां खुरशीदआरा का घर था, पहले कभी राजा का बाग कहलाता था। अब सड़क से गुजरने वाले चाहे मोटर-रिक्शावाले हों या पैदल, वे इस घर पर उचटती-सी नजर डालना नहीं भूलते थे, जिसके सदर दरवाजे पर पत्थर की नक्काशी के बारीक बेल-बूटे बने हुए थे। दरवाजे पर एक बड़ी-सी लोहे की भारी कुडी लटक रही थी, जो कभी खींचकर ऊपर चौखट में लगा, ताला बंद करने के काम में आती थी और आने वाला जिसे पीटकर अपने आगमन की इत्तला भी देता था। वहां अब एक बिजली की घंटी का बटन चौखट के पास लगा नजर आ रहा था। उसी के नीचे नाम का पत्थर लगा था।

खुरशीदआरा की जिंदगी पर छाए बादल कभी इतने स्याह न हो पाते अगर उनकी बड़ी बहन शकरआरा की जबान डंकदार न होती। जमाल खां आज की तरह उनकी हर उलझन चुटकियों में रफा-दफा कर सकते थे, मगर उनके चाहने से क्या हो सकता था! जब उनकी पत्नी उनकी मां को नहीं बख्शती थीं तो यह तो बड़ा नाजुक रिश्ता था—साली और बहनोई का। खासकर तब जब साली बेचारी विधवा के साथ जवान भी हो। इस सच को सब जानते थे कि खुरशीदआरा का दुःख इतना बड़ा नहीं है, जो बांटा न जा सके, मगर जब कोई चाहे तब न। इसलिए घर में सब ने जबान बंद रखी। कभी आंखें बोल भी उठीं तो उन पर झट पलकों की चिलमन गिरा दी, ताकि संदेशा पढ़ न लिया जाए।

गली खुलने और दीवार टूटने से खुरशीदआरा से कहीं ज्यादा खुशी समीना को हुई थी, जिसका पूरा बचपन इस गली की बुराइयां सुनते गुजरा था। यह गली एक लानत की तरह उसके जहन पर जम-सी गई थी। उसका वजूद खत्म होते ही जैसे दिमाग पर चिपकी वह जोंक भी कहीं गायब हो गई थी। मकान के सामनेवाली जमीन को नपवाकर वहां लोहे की जाली लगवा दी गई थी, जिसमें फूल-पौधे लगाने का भी काम माली ने शुरू कर दिया था। समीना की गाड़ी भी अब फुटपाथ के बीच से हो ठीक घर के सामने पार्क होने लगी थी। इस बदलाव का मजा सबसे ज्यादा बदलू को आता था। वह फुरसत के समय घर की सीढियों पर आ बैठता और चुपचाप सामने से गुजरने वाली गाड़ियों को ताकता रहता था। उसका हौदा इस पूरे बदलाव में वहीं अपनी पुरानी जगह पर जमा रहा, जहां अब जानवरों को आने की आदत-सी पड़ चुकी थी।

बदलू अच्छा खाना-पीना मिलने और नहाने-धोने, साफ-सुथरे कपड़े पहनने का आदी हो चुका था। उसके नैन-नक्श सुबुक थे। गाल भर गए थे। बोलचाल तो पहले से अच्छी थी। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह खुरशीदआरा का बेटा नहीं, बल्कि नौकर है। एक दिन उससे खुरशीदआरा ने पता नहीं किस झोंक में पूछ लिया कि मौलवी साहब ने उसे कुरान और नमाज पढ़ना भी सिखाया या नहीं? तब

उसने सर झुकाकर जवाब दिया था, "अम्मीजान! मैं हाफिज-ए-कुरान हूं!"

"क्या?" खुरशीदआरा ने सिलाई की मशीन पर से नजरें हटा उसे घूरा था। उन्हें लगा कि इस उम्र में बच्चों को झूठ बोलने में भी मजा आता है।

उनकी आंखों में तैरते अविश्वास को देख बदलू ने उसी तरह सहजता से कहा था, "मैंने बड़ी बेगम साहिबा के सैवुम के दिन पूरे तीस पारे सुबह से रात तक पढ़कर खत्म किए थे। गांव के मौलाना साहब ने मेरी पीठ ठोंककर कहा था—शाबाश, मेरे शेर!" उसका चेहरा इतना कहते-कहते गुलनार हो गया।

"अच्छा, मगर यहां..."

"मैं यहां भी नमाज पढ़ता हूं और कुरान भी जबानी दोहरा लेता हूं।"

इस जवाब पर चुपचाप सिर झुकाकर खुरशीदआरा ने मशीन चलाना शुरू कर दी! उनका दिल कह रहा था कि हाफिज-ए-कुरान से उन्होंने घर में झाड़ू लगवाई, जूठे बरतन धुलवाए! अल्लाह उनकी इस खता को माफ करे। अजीब गफलत हुई उनसे। अगर यह पढ़-लिख जाए तो यह नौकरी कर सकता है। कमाल के क्लीनिक में लग सकता है। आखिर कब तक वह मेरे यहां घरेलू नौकर बनकर पड़ा रहेगा!

"तुम्हारा नाम बदलू किसने रखा था?" खुरशीदआरा ने पूछा।

"मेरा नाम तो अब्दुल्ला है, मगर मस्जिद में आने वाले एक बुजुर्ग हमेशा मुझे देखकर कहते कि तेरे दिन ही इमाम साहब ने फेर दिए, तू तो बदलू है, बदलू। उनका प्यार से पुकारा नाम धीरे-धीरे सब लेने लगे, मौलाना साहब के टोकने के बावजूद।" इतना कह बदलू ने आंखों में आई नमी को पलकें झपकाकर उड़ा दिया।

शाम को खुरशीदआरा ने अलमारी से कुरान और एक जानमाज निकालकर बदलू को दी और कहा कि वह दालान की चौकी पर नमाज अदा कर कुरान पढ़ा करे। उसे छुपकर यह सब करने की जरूरत नहीं है। बदलू हमेशा की तरह सर झुका के मुस्कराया और दोनों चीजें अदब से पकड़, माथे पर लगा, जाकर तख्त पर रख आया।



बुआ चुपचाप पीढ़े पर बैठी लौकी छील रही थीं। उनके दिमाग में पुरानी यादें आ-जा रही थीं। एकाएक उन्हें सलमा बीबी याद आ गईं जिनके नकाब में बकरी की सींग फंस गई और वह अपने साथ बीबी का ऊपरी नकाब भी लेती चली गई थी। सलमा बीबी अकबकाई-सी बिचारी खड़ी रह गईं। उस मुई चुड़ैल की सींगें भी बहुत लंबी थीं। वह तो कहो कि सींग कट गई वरना जाने कितने बच्चों को, कुरैशी के लड़के की तरह, सींग मार उनका पेट फाड़ देती! तब से जब कभी घर में कोई जलसा या

त्योहार होता, कोई-न-कोई बाहर खड़ा हो जाता था, ताकि आने-जाने वाले बकरियों की घुड़दौड़ की लपेट में आकर गिर-गिरा न जाएं। इन सारी आफतों के बावजूद किसी को यह दीवार हटाने का खयाल नहीं आया। जो खयाल आया वह मकान वेचने का, पुरखों की बैठक छोड़ बीवी के पहलू में बैठने का—अरे, आज तुमने किया कल तुम्हारे बेटे तुम्हारा घर बेंचेंगे, जैसी करनी वैसी भरनी। बुआ हवा में उड़ रही थीं।



समीना कई दिनों से स्कूल नहीं जा रही थी। उलटी करते-करते उसकी आंतें दुःखने-सी लगी थीं। वह सारे दिन बेदम-सी बिस्तर पर पड़ी रहती। उसका यह हाल देख कमाल शकरआरा को याद करता कि अम्मी होतीं तो समीना को शबनम की तरह संभालकर रखतीं, मगर...अब्बी पुरोहित अंकल के साथ मुस्तफाबाद जा चुके हैं और छोटी अम्मी अपने घर में हैं। बार-बार उन्हें बुलाते अच्छा नहीं लगता है। उसने फोन सफिया को मिलाया ताकि वही कुछ दिन आकर भाभी के पास रह जाए।

"आज हमारी कैसे याद आ गई, भैया?" सफिया भाई का फोन पा खुशी से चहकी।

"याद इसलिए आई कि गोदभराई के वक्त तो तुम बहाना कर गई, मगर फूफी तो तुम्हीं कहलाने वाली हो, इसलिए आकर जरा बड़ी भाभी की खिदमत करो।" कमाल ने बहन को छेड़ा।

"अच्छा! तो सिर्फ इसलिए बहन की याद आई थी?" सफिया बोली।

"मुसीबत में अपने ही तो याद आते हैं...अच्छा यह बताओ, कब आ रही हो?" कमाल ने पूछा।

"यह कहना मुश्किल है, मगर आज इनसे बात कर मैं आपको फोन पर बता दूंगी। अब्बी कैसे हैं, भैया?" सफिया के स्वर की शोखी गायब हो गई।

"अच्छे हैं। पुरोहित अंकल के साथ मुस्तफाबाद में पिकनिक मना रहे हैं!" कमाल ने हँसकर कहा।

"खाला अम्मी कैसी हैं, भैया? मेरा दिल चाहता है कि अब वह आपके पास आकर रहें। आपा बता रही थीं कि दादी अकसर कहा करती थीं—'मां मरे मौसी जिए!' फिर वह क्यों हमसे अलग रह रही हैं?" सफिया ने भावुक स्वर में कहा।

"पता नहीं क्यों, सफिया! बचपन का डर इस तरह दिल व दिमाग में जमकर रह गया है कि आज भी छोटी अम्मी के घर आने पर खुशी के साथ एक धड़का लगा रहता है कि कुछ होने वाला है, कुछ घटने वाला है!" कमाल ने बहन के सामने दिल खोला।

"भैया, यह सब हमारे दिमाग का फितूर हे। अम्मी तो रहीं नहीं जो एतराज करेंगी, वह भी मरहूमा जाने क्यों खाला अम्मी को लेकर...मगर दादी के साथ भी...खैर भैया, जो गुजर गया उसे अम्मी के साथ दफन कीजिए और इस बात पर सोचें कि खाला अम्मी को कैसे अपने साथ रहने पर राजी करें...आप मेरा हाल तो जानते हैं, कहीं आपकी जहमत बढ़ा न दूं आकर...वरना मैं खुद आकर भाभी की खिदमत करती।" इतना कह अर्थपूर्ण हँसी हँस दी साफिया।

"अच्छा मेरी चीनी की गुड़िया, अपना ध्यान रखना।" कमाल ने कहा।

"अच्छा भैया, सबको हमारा आदाब। अपना खयाल रखिएगा।"

"हमारी तरफ से अपने मियां को प्यार कर लेना।" कमाल ने भारी आवाज में कह फोन रखा और मां की तस्वीर की तरफ नजरें उठाकर बोला, "अम्मी! आपको इतनी जल्दी क्या थी जाने की?"



जबसे जमाल खां दिल्ली से लौटे हैं तबसे उनके दिमाग में एक बात चक्कर लगा रही है कि खुरशीदआरा को कैसे राजी करें कि वह आकर इस घर में रहने लगें। दामाद या बहन के घर रहने की पुरानी मनाही को कैसे तोड़ा जाए, ताकि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। दूसरी बात उन्हें कमाल से करनी थी। इस बार पुरोहित ने एक बात सुझाई है कि गेहूं के खेतवाली जमीन पर एक अस्पताल तामीर करा दो। इससे वढकर कोई और खिदमत तुम्हारी नहीं हो सकती है। माना कि रायबरेली, लखनऊ, इलाहाबाद में सहूलियतें हैं, मगर इसका मतलब यह नहीं है कि गांव में अच्छा अस्पताल न हो। फिर आबोहवा भी खुली है! मरीजों के लिए संजीवनी का काम करेगी।

कमाल कल ही दो दिन बाद बाहर से लौटा है! थोड़ा थकन उतार ले तो मैं उससे बात करूं कि आजकल मेडिकल टूरिज्म पर बहुत बातें हो रही हैं। विदेशों से रोगियों का रेला आना शुरू होने वाला है। उस समय का पूरा लाभ कमाल को उठाना चाहिए ताकि उसका सपना भी पूरा हो और अस्पताल का नाम भी हो। अब तो किसी बात की कमी नहीं है। नकद रुपया भी उनके नाम का पड़ा है। जमीन .मुफ्त मिल रही है। कंस्ट्रक्शन के लिए जरूर लोन लेना पड़ेगा। उनका सिगार पहली बार पूरा सुलगकर खत्म हुआ था। वह कई घंटे से बरामदे में टहल रहे थे। हाशिम उनकी बेचैनी को देखकर कई बार चाय, पानी, शरबत को पूछ चुका था। समीना अभी स्कूल से लौटी नहीं थी। आया बावर्चीखाने में खाना पकाने में व्यस्त थी। माली हमेशा की तरह मनघुन्ना उसकी हर बात का जवाब खामोशी से देता था।

कभी-कभी हाशिम को लगता कि उसकी शादी का खयाल जाने क्यों किसी को नहीं आता, न अब्बा को न साहब को।



कमाल दोपहर में जब घर पहुंचा तो उसे अब्बी को देखकर महसूस हुआ कि वह किसी खास तनाव से गुजर रहे हैं। आंखों के पपोटे भारी और मुंह फूला-फूला-सा नजर आ रहा था। इस इतवार को उन्हें मुस्तफाबाद जाना था, मगर उन्होंने जाना टाल दिया। ऐसी क्या बात है जो उन्हें अंदर-ही-अंदर मथ रही है? समीना भी स्कूल से लौट आई थी और खाना खा कमरे में लेटी अब सुस्ता रही थी। उसने अब्बी के कमरे का दरवाजा नॉक किया और अंदर दाखिल हुआ। अब्बी टहलते-टहलते रुक गए।

"आपके पास थोड़ी देर बैठ सकता हूं?" कमाल ने जान-बूझकर यह जुमला कह बाप को छेड़ा।

जमाल खां उसकी इस बात पर हँस पड़े।

"बैठो, बेठो मियां। मसरूफ तुम रहते हो और पूछ मुझ बेकार-से रहे हो।"

"आज आप सिविल लाइंस की तरफ भी नहीं गए शायद?" कमाल ने पूछा।

"हां, बस कुछ सोचने लगा तो सोचता ही चला गया। वक्त कब गुजर गया, पता ही नहीं चला।"

"मगर अब्बी, सोच तो किसी नतीजे पर पहुंची होगी?"

"हां, सोचता हूं एक अस्पताल खोलूं।" जमाल खां बोले।

"अच्छा।" कमाल ने कटाक्ष-भरे आश्चर्य से कहा।

"और चाहता हूं कि यह अस्पताल मुस्तफाबाद में खोलूं। हमारा जो खेत है वह इसके लिए बड़ी मौजूं जगह है और उसमें..."

"तुमको नौकरी दे दूं!" कमाल बीच में ही उनकी बात काटकर बोला।

"हलके में मत लो मेरी बात को, बरखुरदार!" जमाल खां गंभीर हो बोले।

"अस्पताल खोलना कोई यतीमखाना खोलने की तरह आसान नहीं है। मैंने भी कभी सोचा था। जब प्लान था तो साथी न थे। जब प्लान और साथी डॉक्टर मिले तो पूंजी नहीं थी। इसलिए अब क्लीनिक ही मेरे लिए काफी है।" कमाल कुछ उदास स्वर में बोला।

"देखो! यह क्लीनिक बेच दो और दो अस्पताल खोलने का प्रोग्राम बनाओ—एक गांव में, एक इलाहाबाद में। इलाहाबादवाला तुम देखो, गांववाला मैं मैनेज करूंगा। अपनी बाकी जिंदगी मैं इबादत में नहीं, खिदमत में गुजारने वाला हूं। इस सिलसिले

में बहुत सीरियस हूं। चाहता हूं कि तुम कुछ वक्त मेरे साथ गुजारो ताकि हम कुछ प्लान बना सकें।'' जमाल खां कह उठे।

''रात को खाने के बाद बैठते हैं, अब्बी! अभी जरा समीना को जाकर देखूं। सुबह उससे मुलाकात ही नहीं हो पाई थी।''

''अमां, बैठो। वह सो रही होगी। जाओगे तो तुम्हारी खटपट से वह जाग जाएगी।'' जमाल खां ने कहा।

''ठीक है, पहले आपके दिमाग में जो भी है, कह डालिए। फिर काट-छांट बाद में हो जाएगी।'' कमाल ने कहते हुए जूता खोला और डबलबेड पर लेट गया। जमाल खां भी जाकर बेटे के पास लेट गए।

''मेरे दिल में एक बात है कि खुरशीद बीबी की नूरमंजिल उनसे किराये पर ले ली जाए और वहां अस्पताल खोला जाए। इससे यह होगा कि वह अकेले रहने की जगह यहां आकर रहेंगी, जिससे तुम दोनों को इत्मीनान होगा और उनके हाथ में हर माह रुपये भी आएंगे। रहा डॉक्टर का मसला तो एक-से-एक डॉक्टर तुम्हें मिल जाएंगे, जो सचमुच इंसानों का इलाज करना चाहते हैं! मैं दोनों मकानों को छोड़कर बाकी सब अस्पताल को दे देना चाहता हूं, ताकि लोगों की मदद बड़े पैमाने पर हो और...''

जमाल खां जाने क्या-क्या बोल रहे थे, कमाल को नहीं सुनाई पड़ रहा था। वह दीवार पर मां की लगी तस्वीर पर नजर गाड़े शकरआरा की बातों को याद कर रहा था कि कैसे अम्मी अपनी ख्वाहिश को बताते हुए कह रही थीं—'मुझे वैंप बनाकर रख दिया गया है। मैं अच्छा भी सोचती हूं या भलाई की बात कहती हूं तो वह भी बुराई के खाते में चली जाती है! मेरी इतनी ही गलती है न कि मैं जो सोचती हूं वह पूरी ईमानदारी से कह देती हूं, इसलिए सबकी बुरी बन जाती हूं...' आज अब्बी वही बात अपनी मर्जी से कह रहे हैं। उस मौरूसी जायदाद को दान में देने और बेचने की बात कर रहे हैं।

''तो कमाल, ठीक है न?'' जमाल खां अंत में बोले।

''जी अब्बी, इस प्लान पर काम किया जा सकता है!'' कहकर कमाल ने करवट बदली और गहरी नींद में डूब गया। यादों में पड़ी बातें ख्वाब का रूप धरने लगीं। जमाल खां ने बेटे का चेहरा देखा जिस पर बला की मासूमियत छाई थी। वह छोटा-सा कमाल लग रहा था जो मां के साथ सोने की जिद करता था और इसी तरह घुटना पेट की तरफ मोड़कर सोता था। जमाल खां ने बेटे के सर पर हाथ फेरा फिर एक गहरी सांस ले आंखें बंदकर लीं।

कमाल सोते में देख रहा था कि अब्बी अम्मी के पीछे-पीछे घूम रहे हैं और

अम्मी ऊपर से नीचे तक काला कपड़ा पहने, बाल खोले घूम रही हैं!

सफिया परदे के पीछे डरी खड़ी है। बड़ी और मझली चुपचाप अपने कमरे में बैठी हैं। अब्बी फिर अपनी बात दोहराते हैं, 'खुदारा शकर। ईद के दिन यह भेस मत बनाओ! तुम मुझसे गुस्सा हो न, मैं कान पकड़ता हूं, जो अब खुरशीद बीबी के घर जाने या बुलाने की बात करूं। नमाज के बाद मेरे साथ सारे लोग आएंगे, वह तुम्हारा यह हुलिया देखकर क्या कहेंगे?'

'आपकी तरह मैं नहीं हूं। मेरा दिल जब जल रहा है तो वही रंग तो पहनूंगी जो दिल पर बीत रहा है?' शकरआरा गुस्से में कहती हैं।

'ठीक है! जो तुम्हारी मर्जी, मैं खुद बच्चों को तैयार करता हूं। उनको आज के दिन मातमी लिबास नहीं पहनने दूंगा!' जमाल खां के अंदर का जमाल जाग गया था। 'शराफत की भी इंतहा होती है। बहनों में इतनी दुश्मनी मैंने पहले कभी नहीं देखी?' इतना कहकर वह गोद में सफिया को उठा, सीने से लगा उसे नहलाने के लिए गुस्लखाने की तरफ ले जाते हैं।

'अम्मी...मान जाओ न!' कमाल रोता हुआ पीछे से उनका दुपट्टा खींचता है।

'न...न मेरे लाल, त्योहार के दिन रोएं तुम्हारे दुश्मन!' इतना कह शकरआरा मुड़ती हैं और कमाल के गाल पर बहे आंसू पोंछती हैं।

'छोटी अम्मी गंदी हैं?' कमाल पूछता है।

'नहीं मेरे बेटे, ऐसे नहीं कहते।' शकर बहन के लिए कमाल के मुंह से यह सवाल सुन तड़प उठती हैं। और धीरे-से कहती हैं, 'तुझे कैसे बताऊं मेरे लाल, कभी-कभी मैं अपना आपा खो बैठती हूं।'

'हम उनसे नहीं बोलेंगे, अब्बी को भी मना कर देंगे...ठीक है?' कहकर कमाल उनका मुंह चूमता है फिर धीरे-से कहता है, 'मगर अम्मी, समीना अच्छी है न?'

'बहुत!', कहकर शकरआरा उसे गोद में उठाती हैं—'चलो, तैयार होकर नमाज पढ़ने जाओ, फिर चले जाना अपनी छोटी अम्मी के घर और समीना को साथ लेकर आना। ठीक है?'

'अम्मी, आप कित्ती अच्छी हैं! जानती हैं, समीना क्या कहती है...कहती है, तुम्हारी अम्मी परी हैं—दूधिया परी!' कमाल हँसकर मां का गाल चूमता है।

एकाएक सपना बदल जाता है। शकरआरा सफेद कफन में लिपटी लेटी हैं और कमाल उनके चेहरे पर झुककर कह रहा है, 'अम्मी! आंखें खोलें, अम्मी...' वह बिलख-बिलखकर रोने लगता है। तकिया भीग जाता है। कमाल की आंखें खुल जाती हैं। सर में शदीद दर्द हो रहा था। वह पलकें झपकाता है। सपने के खुमार से निकलना

चाहता है। आंसू पोंछ दूसरी तरफ करवट लेता हुआ कहता है—'बचपन के इस 'नाइटमेयर' से मुझे कब छुट्टी मिलेगी!'

34

राबिया का चौथी चाला भी साथ खैरियत के गुजर गया। राबिया की अम्मा फिर मुर्गीवाली गली के मकान में आकर रहने लगीं। बेटी की शान देख आई थीं। दिल में वरसों बाद जलते अंगारों पर छीटें पड़ी थीं। छुनमुन कर अंगारे बुझे तो उसके साथ उनकी सारी फिक्र भी राख हो गई। मौलाना असलम की वह मुरीद बन चुकी थीं। उन्हीं के असर में अब उन्होंने बाकायदा कुरान, नमाज पढ़ना शुरू कर दिया था। उनका यह रुझान देख मौलाना ने लड़कियों का एक-दो ट्यूशन दिलवा दिया, सो बड़े मजे से उनकी कट रही थी।

उधर राबिया सास के तेवर समझ गई थी। सारे दिन उन्हीं के साथ अकेले रहना था। दरिया में रह मगरमच्छ से बैर रखना उसे कोई अक्लमंदी की बात नहीं लगी सो उसने भी सास के अंदर जलबलाती चंडी को पूरी तरह राम करने का प्रण लें लिया! मियां, ससुर और ननदों के जाते ही वह रेशमी कपड़े और जेवर उतार सूती छींट का मामूली सूट पहन, हाथ में झाड़ू उठा घर की नौकरानी के साथ सफाई में जुट जाती, फिर गुस्लखाने में कपड़े रख सास को नहाने के लिए कहती। उसका यह रूप देख नानबाइन टेढ़ा होंठ कर मुस्करा उठती।

'कुत्ते की दुम सात बरस भी गाड़ियो तो वह निकलेगी टेढ़ी की टेढ़ी! नाइन की लौंडिया का जाने रेशम-सोना? हमका भी का पड़ी है जो बोलें? जरखरीद लौंडी है, करने दो काम मेहतरानी की तरह!'

दोपहर का खाना पककर कब मेज पर चुन दिया जाता, नानबाइन को पता न चलता। वह तो नहा-धोकर निकलती। उलझे झोंटे में नोच-नोचकर कंघी करती, यह देख राबिया उसके न-न करने पर भी मोटे दानेवाले ब्रश से बाल सुलझा, उनके हाथ-पैर में खुशबूदार क्रीम लगा देती, फिर बड़े फुसलानेवाली आवाज में कहती, "अम्मा, थोड़ा चेहरे पर भी मल लें।"

"हम कभी मले हैं इ कीचड़ का जो अब मलयं?" झिझकती नानबाइन कह उठती।

साढ़े बारह बजे तक उनका पसंदीदा खाना—अरहर की दाल-भात, प्याज के कचूमर और हरी मिर्चे के साथ उनके आगे लग जाता। वह खा-पीकर चारपाई पर

लेट जाती और कुछ देर बाद लंबे-लंबे खर्राटे लेने लगती। उसे घर की कोई खबर न रहती कि कपड़े धुले? इस्त्री के लिए धोबी को गए? सब्जी-गोश्त आया? कब मखफूर के अब्बा खाना खाकर सो गए? उसकी जब आंख चार बजे के करीब खुलती तब तक लड़कियां स्कूल से आकर खाना खा रही होतीं और जगमगाते घर मे राबिया बनी-ठनी रात के खाने के इंतजाम में जुटी होती।

नानबाइन काफी दिनों तक राबिया को छकाने के मनसूबे बांधती रही, मगर जो भी वह करने उठती, वह शुरू होने से पहले ही टांय-टांय फिस हो जाता था। नानबाई को जरूर महसूस होने लगा था कि उसकी पत्नी का रंग-रूप निखरने के साथ उसके उजड्डपने में भी कमी आ रही थी—साफ-सुथरा कपड़ा, सलीके से कंघी किए बाल, सुरमा-लगी आंखों ने उसकी शख्सियत में एक ठहराव-सा ला दिया था। लड़ना, चीखना, सामान पटकना, पड़ोसियों को कोसना, दरवाजे के बाहर जा, चबूतरे पर बैठ गली में आते-जाते लोगों को ताकना बंद तो नहीं, मगर कम जरूर हो गया था। वह जिस इज्जत की प्यासी रही उसकी तरफ मियां और बच्चो ने कभी ध्यान नहीं दिया, सिवाए उसकी आलोचना और अपमान करने के, जिसके कारण वह हर समय कुढ़ी रहती। अब राबिया उसकी कड़वी बात का भी जवाब मिठास से देती। उसकी हर जरूरत का ध्यान रखती। यह देख उसके अंदर की कुंठा कम होने लगी थी, मगर कभी-कभी दिमाग फिर जाता। आज दोपहर की मिसाल सामने थी—

"ई सब का अल्लम-गल्लम खरीद लाई हो?"

"सब काम की चीजें है, अम्मा!" धीरे-से राबिया बोली और खरीदा सामान सलीके से लगाने लगी।

"एके बिना भी घर चलत रहा, बहू! हाथ संभाल के खर्च करो, माना कि तोहार घर में खुला पइसा नहीं रहा, मगर इतना हउका भी ठीक नहीं है। बड़ी मेहनत की कमाई है हमरी!" नानबाइन चिढ़कर बोली।

"जी!" राबिया धीरे से बोली और काम में लगी रही। नानबाइन को यह खामोशी अखर गई। हर बात का जवाब—हां, जी हां, अच्छा, बहुत अच्छा! आखिर यह नदीदी हमार मसखरी उड़ावत है का? जब देखो, मुंह मा घुघुनी डाले बैठी है हरामखोरनी। नानबाइन को अंदर-ही-अंदर तैश आ रहा था। दस दिन गुजर गए थे। किसी के साथ झोंटा-झोंटी तो दूर, तू-तू मैं-मैं तक नहीं हुई कि अंदर उबलता लावा कोसने, काटने, चीखने, चिल्लाने से निकल जाता। सब कुछ भूलकर वह एकाएक उठी और लाया सामान एक-एक करके आंगन की तरफ उछालने लगी। उसका यह रूप देख राबिया डर गई। नौकरानी होंठ दबा हँस पड़ी। उसके चेहरे पर नाचती शरारत देख राबिया की आंखें अपमान से भर आईं। मगर वह आंसू बड़ी मुश्किल से पीकर दूसरे

काम मे यह सोचकर लग गई कि सास का पारा कुछ पल बाद गिर जाएगा।

"दिमाग तो देखो, हम जो कह रहे हैं, ओका ठेंगे पर उड़ाए रही है। जबसे आई है, अपने को मालकिनी समझत है! अरे, अभी हम जिंदा हैं। तोहार मां के दफनाए का समय आय गवा है जो हज्जिन बनी फिरत है...नौ सौ चूहे खाय के..." नानबाइन की जबान की पतंग छुड़इया ले खुले आकाश की तरफ बढ़ रही थी।

राबिया सन्नाटे में आ गई थी। उसका दिल घबराहट के मारे जोर-जोर से धड़कने लगा था कि कहीं लंबी-चौड़ी सास उठकर उसे पीटने न लगे। पिछले मंगल को वह उसके रौद्र रूप की हल्की-सी झांकी देख चुकी थी, जब उसने छोटी ननद के गाल पर चांटा जड़ दिया था कि वह क्यों दोस्तों के साथ सिनेमा देखने गई थी।

"बहू आई है या हमारी सौतन! अरे अपने मियां को बस में करे के साथ ससुर पर भी डोरे डालत है...सेठानी बने का शौक जो है...रुपया, कुंजी हमरे जीते-जी संभाल रही है...लुटाओ घर...जी भरकर लुटाओ...वह दिन दूर नहीं कि हम तोरी चुटइया पकड़ सीधे मुरगीवाली गली में टापे के नीचे दबाए अइबे...करियो वहां मां के साथ कुट-कुट!" नानबाइन बोले जा रही थी।

नौकरानी हँसना भूल गई थी।

अंदर कमरे में राबिया फफक-फफककर रो रही थी। तभी जाने किस काम से नानबाई घर आ गया। उसने पत्नी की चिंघाड़ घर के बाहर ही सुन ली थी। माथा गरम हो गया था। अपने को ऊपर से ठंडा बनाए वह अंदर दाखिल हुआ–देखा, आंगन में सारा सामान बिखरा है! वह चुपचाप आगे बढ़ा। नानबाइन मियां की आमद से बेखबर अपना लाउडस्पीकर उसी रफ्तार से थोड़ी-थोड़ी देर बाद दम ले, चालू किए थी। नौकरानी भी डर के मारे अंदर जा उन्हें नहीं बता पाई कि बाबू आए हैं, कोई और नहीं।

"लड़कियन के दीदे का पानी तो सूख रहा है। ऊपर से आय गई है यह फितना! ई बनाय के उनका छोड़ेगी पतुरिया, जैसे खुद है! लटका-झटका दिखाय के रिझाय लीस मग्गा का...बुढ़िया महतारी मग्गा के बाप को लपझाय लीस है..."

"बिलकुल सही कहत हो खमीरा!" नानबाई अंदर कमरे में जा बड़े संयत स्वर में बोला, फिर जोर से पुकारा–"राबिया बिट्टो..."

"ऐ, तुम कब आए?" चौंककर डरी आवाज से नानबाइन बोली।

"पंद्रह मिनट पहले...काहे पूछत हो?"

"जी!" एकाएक राबिया फूली आंखों को नीचे किए चौखट पर आ खड़ी हुई। उसकी आवाज के भर्राएपन से चौंककर नानबाई ने नजरें उठा बहू को देखा, जिसका

चेहरा उतरा हुआ था। बदन पर कपड़े सादे और गले, कान से जेवर गायब थे। उसको बड़े जोर का झटका लगा। पल-भर वह समझ नहीं पाया कि वह क्या देख रहा है। दूसरे पल उसे महसूस हुआ कि यह नाटक रोज इस समय खेला जाता है, जब घर पर कोई नहीं रहता है। वह कुछ समझ नहीं पाया कि इस पुराने रोग का इलाज कैसे किया जाए फिर धीरे से बोला, "जरा बेटी, चाय बनाना!"

नानबाइन मियां के इस स्वभाव से परिचित नहीं थी। उसे लात-घूंसों की न सही मगर जोरदार फटकार की उम्मीद जरूर लग रही थी। नानबाई ने अलमारी खोल कुछ कागज निकाले फिर बैग में रख वह चुपचाप पलंग पर आंख बंद कर लेट गया। वह अपने अंदर उठते-उफनते लावे को शांत कर रहा था। पराई लड़की के सामने कोई सीन नहीं पेश करना चाह रहा था, मगर हां, पत्नी को कोई दमदार सबक जरूर सिखाना चाह रहा था। कुछ देर ताने-बाने में उलझा रहा, फिर चाय आने पर उठकर उसने चाय पी। राबिया से कुछ नहीं पूछा, न नानबाइन से कुछ कहा, बस, खाली प्याली रख घर से बाहर चला गया।

उसके जाने के बाद राबिया ने बिखरा सामान उठाया। सास के नहाने के लिए गुस्लखाने में तौलिया रख रोज की तरह आकर बोली, "अम्माजी! उठकर नहा लें, मैं कपड़े निकाल रही हूं।" इतना कह उसने बक्स खोला और इकलाई छापेवाली धोती और आधे कुरतानुमा ब्लाउज निकाल उसने अलगनी पर फैला, पेटीकोट उतारा और कमरे से निकलने लगी।

"तोहार अम्मा मर गई हैं, जो आंख सुजायें लिए हो?"

"अब आप ही मेरी मां हैं। अपने को यूं न कोसिए! मैं अपनी गलती मानती हूं, अब आपसे पूछकर ही सामान लाऊंगी। अब नहा लीजिए।" इतना कह राबिया बाहर निकल गई।

घमंड मे भरी नानबाइन कमरे से निकल गुस्लखाने की तरफ बढ़ी। राबिया ने भीगी दाल जल्दी से प्रेशरकुकर में चढ़ाई और नौकरानी से कहा कि वह चावल धोकर फौरन प्याज का कचूमर बना ले। राबिया को सास की बातें गहरे चुभी थीं, मगर नौकरानी का अंदाज उसे बहुत बुरा लगा था। उसने तय कर लिया कि इस औरत को अब मुंह नहीं लगाना है, वरना वह इस तरह की घटना से तफरीह के साथ फायदा भी उठाने लगेगी।

अंदर नहाते समय नानबाइन की समझ में नहीं आ रहा था कि आज मग्गा के अब्बा ने अपनी जबान बंद क्यों रखी? बहू भी इतनी कड़वी-कसैली सुन चुप रही। इधर कई दिनों से देख रही हूं कि दोनों छोकरियां भी मेरी डांट-फटकार पर पहले की तरह जबान नहीं लड़ाती हैं! मग्गा तो खैर, पहले भी चुप रहता था, अब तो और भी

कम बोलने लगा है। उसे लगा कि सब मिलकर उसकी खिल्ली उड़ा रहे हैं। बता रहे हैं कि वह कितनी कजड़िन, देहातिन और फूहड़नी है। अगर यह बात है तो मैं भी इन सबके दांत खट्टे करती हूं। हमारे घर में यह बंटवारा नहीं चलेगा कि हम टाट-बाहर और सब इकट्ठा!

नहाकर निकली तो भीगे बालो में कंघी मारने लगी। इंतजार में थी कि रोज की तरह राबिया भागी आएगी। मगर उसका आना तो दूर, आज खाना भी नौकरानी लेकर आई। सेनी में दाल गिरी, प्लेट में ऊपर तक चावल का टीला बना। नानबाइन की आंखों को अखरा, मगर क्या कहती। खाना खाकर जब हाथ धोने उठी तो उससे नहीं रह गया; जूठे बरतन उठाती नौकरानी से पूछ बैठी—

"बहू कहां है?"

"के करत है। दुइ बार तबसे उलटी होय चुकी है!" इतना कह नौकरानी चली गई और नानबाइन को दोचित्ते में डाल गई कि वह जाए राबिया के पास या नहीं? बावर्चीखाने में नौकरानी सब्जी बघार रही है या नहीं? कुछ देर उसी उलझन में रही फिर उसे नींद आ गई और वह सो गई। आज लड़ी थी। थककर सोई तो देर से उठी। घड़ी में पांच बज रहे थे। दोनों लड़कियां स्कूल से आकर राबिया के कमरे में थीं। नौकरानी पड़ी सो रही थी। मेज पर जूठे बरतन पड़े थे। कुरसियां भी उलटी-सीधी थीं। नल से पानी गिर रहा था। जूठे बरतनों के सिंक में पड़े रहने से छेद बंद हो गया सो पानी सिंक से उबल सारे फर्श पर फैल रहा था। आगे बढ़कर उसने नल बंद किया, फिर सोती नौकरानी पर दो हत्थड़ जमा उसे उठाया और लगभग चीखकर पुकारा—"रूबीना!"

"क्या है, अम्मा? इस तरह चीख काहे रही हो?" रूबीना से छोटी बहन नूरी ने आकर मां से पूछा।

"घर की ई हालत बनाय के आखिर राबिया गई कहां?" नानबाइन ने कुछ झुंझलाकर पूछा।

"अम्मा, भाभी को बहुत तेज बुखार चढ़ा है!" नूरी बोली।

"बुखार? सुबह तो अच्छी-भली रही?" नानबाइन ने कटाक्ष-भरे स्वर में कहा।

"बुखार नापा तो एक सौ तीन है! सर अलग दर्द कर रहा है!" नूरी इतना कहकर मुड़ने लगी।

"चलो, चलकर देखत हैं, आखिर भवा का है?" कहती नानबाइन साड़ी का आंचल सीने पर ठीक से जमाती आगे बढ़ी।

राबिया का गंदुमी रंग बुखार की तेजी से तपकर सुर्ख हो रहा था। रूबीना भाभी

के सिरहाने बैठी उसका सर दबा रही थी। नानबाइन ने जाकर राबिया का गाल छुआ और तेजी से हाथ हटाया। फिर गरदन और हाथ-पैर छुआ। सारा बदन बुखार से तप रहा था। वह घबरा गई। मियां दोपहर का कांड देख चुके थे। अब...

कुछ ठहरकर बोली, "मग्गा को फोन करो कि डॉक्टर लेकर आए!"

"कर दिया है, अम्मा!" रूबीना धीरे से बोली।

बेटियों ने ऐसी सेवा मां की कभी नहीं की थी। भाभी के चारों तरफ भौंरा बनी दोनों घूम रही हैं! मग्गा तो बीबी पर लट्टू है ही, ऊपर से ससुर भी बहू को बेटी से बढ़कर समझते हैं। आज उसकी शामत है—वह सोचने लगी—"अगर हमसे कोई तू-तड़ाक करिहे न, तो हम भी ईट का जवाब पत्थर से देबय, चाहे सर फुटव्वल मा हमरी जान चली जाए।"

डॉक्टर को लेकर मग्गा पंद्रह मिनट में पहुंच गया था। डॉक्टर ने बुखार नापा, नब्ज देखी, फिर दवा लिखकर चला गया।

रात के खाने के वक्त तक राबिया का बुखार उतर गया था, मगर नानबाइन को बुखार चढ़ रहा था कि अब उसकी पेशी हुई कि तब उसकी पेशी हुई। मगर किसी ने कुछ नहीं कहा। खाना मेज पर लगा तो सबको महसूस हुआ कि खाने में कोई स्वाद नहीं है। खुद नानबाइन को अपने हाथ का पकाया खाना बदमजा लगा। चंद घंटों में ही घर की रौनक फीकेपन में बदल गई थी। शाम से लेकर रात के ग्यारह बजे तक चहकते घर की चहल-पहल नौ बजे ही सन्नाटे में बदल गई। सभी महसूस कर रहे थे कि राबिया के बीमार पड़ने से सब कुछ सूना-सूना हो गया था।

दूसरे दिन राबिया भी ठीक-ठाक महसूस कर रही थी। उसके बुखार का कारण किसी को पता चला या नहीं, मगर नानबाई को पता था कि इतने गंदे और सख्त ताने सुनकर कोई भी जवान लड़की बीमार पड़ सकती है। रात को जब सब सो गए तो नानबाई ने खखारकर गला साफ किया और धीरे-से पुकारा—

"खमीरा! सो गई क्या? उठो, हमें तुमसे बात करनी है!"

"उठत हैं।" मुंह फाड़ जम्हाई लेते हुए नानबाइन बोली।

"गांव भेजेंगे तो जाओगी?" बड़े प्यार-भरे स्वर में नानबाई ने पूछा।

"काहे? हुआं का धरा है?" नानबाइन ने ताज्जुब से पूछा।

"तोहरे भाई का घर!" नानबाइन ने भवें ऊपर कर कहा।

"कब के मर-खप गए। अब तो वही निखट्टू लड़का और ओकी लड़ाकू जोरू बची है!" घृणा से नाक सिकोड़ नानबाइन बोली।

"तोहार खून है! पट्टीदारी खूब जमिहे...लौंडवा एक कहिए तो चार सुनइयो!

बहू मुंह खोलय तो मूसल मा धर चाप दिया। बोलो, कब टिकट कटवाएं!"

नानबाई के स्वर में ऐसा कुछ था जिसको सुनकर नानबाइन चौकन्ना हो उठी और तड़ से बोली—"हम अपना घर छोड़ काहे जाएं?"

"ई घर मा तो सौत डेरा डालकर बैठ गई है। अब हम ओकी सुनबय की तोका चारा डलबय? अब उठाओ अपनी डोली-डंडी और चल देव अपने पीहर! जो चाहो तो तलाक लेके जाओ, समझीं! जेमा तोहरी खुशी, वही कर देबय।" बहुत गुस्से-भरे स्वर में दांत पीसकर नानबाई बोला।

सकते में पड़ी नानबाइन पति का मुंह आंख-फाड़े देखती रही, फिर जोर से मुंह खोल बैन करने वाली ही थी कि नानबाई उचककर अपनी चारपाई से उठा और पत्नी का गला दोनों हाथ-से दबोचकर बोला, "चुप साली! आवाज निकली तो टेंटा दबाए देब!"

"छोड़ो...छोड़व तो सही।" किसी तरह नानबाइन बोली।

"तोहरे जबान के चलते बहुत सहा हमने। अब सीधे सामान बांधो और यहां से चलती बनो!"

"ई उमर मा काहे हमरे झोंटा में आग लगा अपना मुंह काला करत हो?" नानबाइन की आवाज रुआंसी हो उठी।

"ई मारे कि अब बची जिंदगानी चैन से कटे। मेहनत का पसीना सुखाय के हम भी दो रोटी घी-चुपड़ी खाय लें।" नानबाई के स्वर में भी दुःख का पुट था।

कुछ देर दोनों के बीच खामोशी रही।

नानबाइन खतरे की बू सूंघ चुकी थी। उसके चेहरे पर एक अनजान-सा भय नजर आ रहा था।

नानबाई का चेहरा दुःख से तमतमाया था, जिस पर अंतिम फैसले की निर्णय-रेखा खिंची हुई थी। कुछ देर बाद वह सपाट स्वर में बोला, "खर्चा-पानी हम भेजेंगे!"

"जो हम न जाएं तो?" भारी आवाज उभरी।

"तो...तो जैसा पिक्चर में देखत हो न, ऊ हाल करिबय, डॉक्टर की मुट्ठी गरमकर कोई इंजेक्शन लगवाइ देबय, उम्र-भर खाट पर जिंदा रहकर भी मुर्दा पड़ी रहियो या पागल बनाय के पागलखाना भेज देबय। सलाखन पर सर पटकियो या फिर केहू को सुपाड़ी दे तोहार गरदन रेतवाइ देबय! राम नाम सत है यही तोहार गत है!" कहकर नानबाई ने गहरी सांस ली।

"तोहार आगे हाथ जोड़त हैं...लेव, पैर पकड़त हैं...देखो, हमरे साथ यह सब न करो...हम तोहार बहुत साथ दिए हैं...कामकाज से लेकर लड़कन-बालन

तक...'' नानबाइन रो पडी।

जब वह अच्छी तरह रो ली तो नानबाई बोला, ''एकै चानस और देबय। कल से भलीमानस की तरह रहो। बहू को बेटी समझो और बेटियन को इंसान। बकरी समझ के हरदम उनकी गरदन में रस्सी न कसो, वरना जो तोहरी शिकायत हो जाए तो समझो जेल मा चक्की पीसे का पड़ी, तब याद करिहै कि चारपाई पर बिठा कौन दाल-भात खिलावत रहा।'' गरम लोहा देख नानबाई ने दिल की भड़ास निकाली।

''मोको सब मंजूर है, मग्गा के अब्बा। हमार आंख खोल दियो...अब हम तोहरे खिलाफ एक पग भी न उठइबे, अल्लाह पाक की कसम। लेव, तौबा करत हैं।'' उसने अपने गाल पर तड़-तड़ चांटे मारे।

''ठीक है। अब सो जाओ।'' नानबाई ने चैन की सांस ली और खुदा से दुआ मांगी कि इस औरत को सुधार दे। मेरे दिन फेर दे।

कुछ देर अंधेरे में नानबाइन की सिसकी सुनाई देती रही। फिर जाने कब सुबकते-सुबकते उसे नींद आ गई, मगर नानबाई की आंखों से नींद उड़ चुकी थी। उसको अपनी दोनों बेटियों की चिंता रात-दिन खाए जा रही थी। पैगाम कहीं से आ नहीं रहा था। दोनों ब्याहने के लायक हो रही थीं। घर का माहौल ठीक हो तो आदमी मेल-जोल बढ़ाए। अच्छे घरों के ग्राहक अब चायखाने पर आने लगे हैं, मगर इस रावण की बहना के चलते तो कुछ नहीं हो पाएगा...कुछ नहीं हो पाएगा। नानबाई ने व्याकुलता से करवट बदली। जिस घर में रोज महाभारत बात-बेबात छिड जाए, उसके घर की लड़की कौन अपनाएगा? वह मोहल्ला छोड़ा यह सोचकर कि यहां नई पहचान बनाएंगे, मगर यहा भी पड़ोसी जान गए हैं कि खमीरा झगड़ालू औरत है।



सुबह अजान की आवाज सुन नानबाई ने बिस्तर छोड़ दिया और नहा-धोकर मस्जिद की तरफ बढ़ा, ताकि नमाज पढ़ना न जानने के बावजूद खुदा के घर में सिजदा कर, अपनी जहालत की माफी मांग, लड़कियों के लिए नेक अच्छा दूल्हा पाने की फरियाद कर सके। नानबाई ने खमीरा के साथ इतना कुछ सहा था कि उसने मन-ही-मन सौगंध खाई थी कि चाहे एक वक्त खाना खाना पड़े, मगर बच्चों को पढ़ाएगा जरूर और इस गंदे गटरवाले जीवन से निकल ताजा हवावाले माहौल मे सांस लेगा। यही सब सोचता हुआ वह मसजिद की तरफ बढ़ रहा था।

मियां की खटर-पटर से नानबाइन जाग गई थी। सुबह उठने की आदी थी, किंतु चार बजे सुबह नहीं। मगर आज वह जिंदगी नए तरह से शुरू करने वाली थी, इसलिए पैर फैला पलंग पर पड़ी नहीं रही, बल्कि उठकर बैठ गई। बच्चों को

उसके हाथ के बने लच्छेदार परांठे और जीरा-आलू बहुत पसंद हैं। आज वह नाश्ता बनाएगी। उसने नहा-धोकर कपड़े बदले। कंघी-चोटी कर उसने राबिया की तरह चाय दम कर केतली पर टीकोजी लगाई फिर दोनों बेटियों को एक के बाद एक पुकार वह आलू कतरने बैठ गई। नौकरानी उठ गई थी। नल पर बैठी मंजन कर रही थी। उसको आज की सुबह बड़ी अटपटी-सी लग रही थी। दुल्हन सो रही थी और बीबी सब्जी काट रही थीं। लड़कियां जो कमरे से आंख मलती निकलीं तो खाने की मेज पर मां को बैठा देख चौंक पड़ीं—वह भी चिड़िया के घोंसले की तरह सर पर उलझे बालों के गुच्छे की जगह तेल लगे सिमटे बाल और साफ इस्त्री की हुई साड़ी देख।

"रूबीना! बेटी भाभी-भाई को चाय बनाकर दे आओ और पूछना राबिया से कि अब ओकी तबीयत कैसी है?" मीठे स्वर में नानबाइन बोली।

"अभी बनाती हूं, अम्मा!" रूबीना चहककर बोली।

नूरी ने ब्रश पर मंजन लगाते हुए मां को ताज्जुब से देखा।

अपने कमरे में चाय की ट्रे लिए रूबीना को देख दोनों मियां-बीबी हड़बड़ाकर उठ बैठे। जाग तो वह रहे थे, मगर बिस्तर पर पड़े लोट रहे थे! रूबीना ने धीरे से भाई की तरफ झुककर कहा, "भैया, बाहर निकलकर देखो, दुनिया बदल गई है—पहली बार जमीन और मंगल बराबर की दूरी हैं, पूरे छब्बीस सौ वर्ष बाद!"

"यानी?"

"मेरे बताने से नहीं समझ पाओगे!" रूबीना इतना कह, ट्रे रख बाहर निकल गई।

उसके जाने के बाद मखफूर ने छलांग लगाई और कमरे से बाहर झपटा। अम्मा अब्बा को चाय बनाकर दे रही थीं। मेज उसी तरह सजी हुई थी जैसे राबिया सजाती है। उसे उठा देखकर नानबाइन बोली, "बाबू उठ गए हो तो आओ, गरम-गरम लच्छेदार परांठा सेंकत हैं!"

"आया अम्मा!" कहकर मखफूर अपने कमरे की तरफ वापस भागा।

चमत्कार! चमत्कार! इसी को कहते हैं चमत्कार! मगर यह सब कैसे हुआ? कल रात ही तो अम्मा आंख तरेरती राबिया को घूर रही थीं। और आज? उसने अपने सर के बाल दोनों हाथों की उंगलियों से जोर से खींचे ताकि दिमाग इस बदले दृश्य के लिए जगह बना सके।



कुछ ऐसा हो गया कि कमाल दिमागी तौर से उलझकर रह गया था। एक तरफ समीना की सेहत को लेकर चिंतित था। डॉक्टर ने उसे बेडरेस्ट बताया था, क्योंकि उसके

पेट में जुड़वां बच्चे थे। दूसरी तरफ जमाल खां ने पूरे जोश-खरोश से अस्पताल का ब्लू प्रिंट बनाना शुरू कर दिया था। तीसरी तरफ उसकी क्लीनिक थी, जहां मरीजों का सिलसिला थमता न था। चौथी तरफ वे कैंप थे, जिनमें उसे पंद्रह दिनों के लिए उन इलाकों का दौरा कर उन मरीजों का इलाज करना था जो मौसम के अत्याचार का शिकार हुए हैं। पांचवीं तरफ उसकी सबसे बड़ी शक्ति का स्रोत समीना इस सारी व्यस्तता में उससे दूर चली गई थी, जो पिछले कई वर्षो से हर पल साथ रही थी! शायद उसकी उलझन की यही बुनियादी वजह थी, वरना उसे तो कठिनाइयों के बीच यात्रा करना पसंद था।

समीना का पाचवां महीना शुरू हो गया था। अब उसका उठना-बैठना मुश्किल था। पतले छरहरे बदन पर इतना बड़ा पेट संभालना उसके लिए बहुत कठिन हो गया था। बेटी की यह हालत देख खुरशीदआरा हौल उठी थीं। अभी तो बेचारी समीना यह बोझ अकेले उठा रही थी। मगर बाद में दो बच्चों को पालने में तो वह...तब मुझे उसकी मदद के लिए हमेशा उसके साथ रहना पड़ेगा। बच्चों की परवरिश का काम किसी आया और नर्स पर नहीं छोड़ा जा सकता है। पिछले दो दिनों से जब से यह खबर उन्हें मिली है, वह बेहद परेशान हैं।

''समीना को अपने पास बुलाती हूं तो कमाल वहां अकेला रह जाएगा; वहां जाकर रहती हूं तो...''

इस 'तो' में अटककर बार-बार खुरशीदआरा उलझ-उलझ जाती थीं। यह उलझन केवल उन्हें ही नश्तर नहीं लगा रही थी, बल्कि जमाल खां और कमाल भी पुराने भय की जंजीरों को तोड़कर आजाद नहीं हो पा रहे थे। कौन-सी ताकत थी जो उनके मुंह पर ताला और जहन में खौफ भर देती थी, पता नहीं। वे दोनों अब किसी के सामने जवाबदेह नहीं थे, मगर फिर भी...इंसान अपने अतीत से मुक्त नहीं हो पाता है और यही विडंबना इन तीनों को जलते अंगारों के अलाव पर आहिस्ता-आहिस्ता जब-तब सेंकती रहती थी।

यह सोजिश उस दिन खुरशीदआरा की ममता को नहीं रोक पाई, जब समीना का पैर फिसला और वह जमीन पर गिरते-गिरते बच गई, मगर उसकी दाहिनी एड़ी में मोच आ गई जिससे उसका चलना भी कुछ दिनों के लिए मना हो गया। सुबह यह हादसा हुआ और दोपहर को खुरशीदआरा जरूरत का सामान अटैची में रख बेटी के पास पहुंच गई थीं।

समीना अपने बदन के इस बदलाव से परेशान थी। उसे किसी कल करार नहीं मिल पा रहा था। लेटे रहने से कभी-कभी पेट में गैस भी बनने लगती थी। भूख मर-सी गई थी। कुछ खा लेने के बाद खट्टी डकारें आना शुरू हो जाती थीं। जरा-सी

आंख लगती तो छत पर होती खटपट से आंख खुल जाती। खुरशीदआरा को बेटी का यूं अपने अंदर तड़पना बेचैन कर गया।

'मैंने बहुत अच्छा किया जो आ गई, वरना तो...' उन्होंने दिल-ही-दिल में कहा और इत्मीनान की सांस भरी।

कमाल ने जब रात को जमाल खां को फोन कर सारी बातों की सूचना दी तो उनके परेशान दिल को संतोष मिला, वरना वह कई रातों से बड़े ऊटपटांग सपने देख रहे थे। उनको परेशानी महसूस हो रही थी। अब जाकर उनकी फिक्र दूर हुई कि आखिर कमाल की छोटी अम्मी उसके पास हैं। वह दोनों बच्चों का खयाल अब उनसे कहीं ज्यादा करेंगी! उन्होंने फोन रख मुस्कराकर ऊपर देखा और दिल-ही-दिल में कहा—'देर है मगर अंधेर नहीं। ऊपरवाला जो करता है वह बहुत सोच-समझकर करता है!'

कमाल ने जमाल खां के इस कदम को बहुत व्यावहारिक माना, जो उन्होंने ऊपर पड़ी लंबी-चौड़ी छत पर ढाल बनवा बरसात के पानी को जमा करने के लिए नीचे एक बड़ा हौज बनवाने की योजना रखी थी, जिसका पानी पेड़ों की सिंचाई और जरूरत से ज्यादा होने पर बाथरूम के फ्लश में प्रयोग किया जा सकता है। उसी की खटपट जारी थी। लगभग पंद्रह मजदूर और तीन गिस्त्री लगे हुए थे। कुछ इसी तरह के पानी का इंतजाम उनके हर मिलने वाले के यहां शुरू हो गया था। दूसरी ओर, वे सब बड़ी रचनात्मकता के साथ उन दोनों अस्पतालों में भी बंदोबस्त करने वाले थे। रोज कहीं-न-कहीं उनकी मीटिंग होती, कभी इलाहाबाद तो कभी लखनऊ तो कभी दिल्ली और कभी किसी और शहर में। उनके सभी रिटायर मित्रों को काम का यह झुनझुना मिल गया था, जिसको बजाकर वे सब खुश थे। उन सबके पास अपने-अपने कार्यक्षेत्र का अनुभव था। सबके अपने संबंध थे, जो मंत्रालय से होते हुए शोधकर्ताओं से गुजरते, आम लोगों तक फैले हुए थे। जिसकी रिपोर्टें सुन-सुनकर कमाल सोचने लगता था—'पुराना इसीलिए कीमती होता है, क्योंकि उसने जिंदगी के हर मौसम को सहा होता है और तभी उनके पास एक गहरी और बारीक नजर होती है!'

कमाल छोटी अम्मी के घर में आने से चिंतामुक्त हो गया था। अब वह आंध्र प्रदेश की तरफ जा सकता था। पंद्रह दिन का यह कैंप रायल सीमा में लगने वाला था, जहां पानी की बूंद भी पिछली बरसात में नहीं बरसी थी और अब सूखे का शिकार वह इलाका कई तरह की बीमारियों का अड्डा बन चुका था। इंदिरा गांधी कनाल ने राजस्थान के रेगिस्तान को हरियाली में बदल डाला था, लेकिन कुछ जिले जैसे बाड़मेर, जालौर, नागौर अभी भी सूखा झेल रहे हैं। उधर मेघालय, नागालैंड, मिजोरम

आदि सारे उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में जबरदस्त बारिश होने के बावजूद पानी की बहुत कमी है। गुजरात के सौराष्ट्र और कच्छ का इलाका बिना बारिश के अछूता ही रह जाता है, मगर हरियाणा का माहौल सारी कमियों के बाद बदल जाता है जब वहां सतलज, चेनाब नदियों से निकली कनाल पानी से भरी पहुंची। उधर ठंडा रेगिस्तान लद्दाख बर्फ से भरे पर्वतों के बावजूद पानी की कमी झेल रहा है! कमाल ने कंप्यूटर पर भारत के रंगीन नक्शे पर नजर जमाते हुए सोचा—'इंसान की आंखों में आया आंसू और सूखी धरती पर बहता पानी आपसी रिश्तों को कैसा बदलकर रख देता है?'

रात के बारह बज गए थे। कमाल खाना-पीना छोड़, कंप्यूटर पर आंखें गाड़े, जाने क्या टाइप किए जा रहा था। खुरशीदआरा कई बार कमरे में आकर झांक चुकी थीं। समीना खाना खाकर उनकी पलंग पर लेटी टी.वी. देखते-देखते सो चुकी थी। आया और हाशिम हॉटकेस में खाना रख, किचन साफ कर अपने-अपने क्वार्टरों की तरफ जा चुके थे। इस बीच खुरशीदआरा दुआ की पूरी किताब खत्म कर चुकी थीं। कमाल के इंतजार में उन्होंने भी खाना नहीं खाया था। कमाल को अपने काम में डूबा देख वह दबे पांव लॉबी में लौट आई और आंख बंद कर लेट गईं। रात के सन्नाटे में उनके कानों में कई तरह का शोर गूंजने लगा। आंखों के सामने बहन का चेहरा घूम गया...

'अरे नन्हीं, इस बड़ी को तो पकड़ो, कभी बाल नोचती है तो कभी गले में पड़ा हार खींचती है...अरे छोड़ो तो!' हँसती शकरआरा बेटी की मुट्ठी से गरदन में पड़ी जंजीर छुड़ाती है जिसे वह पकड़ अब चूसने के लिए मुंह में डालने वाली थी।

'अरे पाजी!' खुरशीदआरा ने हँसते हुए कहा और जंजीर बड़ी मुश्किल से उसके मुंह से अलग की।

'अरे, खाला की गोद में तो जा! मैं छुटकी को गोद में लूं। उसका फीडिंग टाइम हो रहा है!' शकर ने किसी तरह बड़ी को नन्हीं के हवाले कर पहले बाल दुरुस्त किए फिर कान सहलाया और थूक से भीगी जंजीर को दुपट्टे के कोने से पोंछ, वह पलंग पर पलथी मार, छोटी को गोदी में ले दूध पिलाने लगीं।

'मेरी गुड़िया!' खुरशीदआरा भानजी को सीने से चिपका उसके गालों पर चटाचट प्यार करने लगीं।

'बहन के बच्चे खिलाने में बड़ा लुत्फ ले रही हो, मगर जब अपने होंगे तो पता चलेगा कि अरे, यह क्या! कल तक तो मैं ही छोटी थी!' शकरआरा बहन का दुलार देख बोलीं।

'मेरी चंदा है तू!' झेंपकर खुरशीदआरा ने बहन को देखा फिर बड़ी का मुंह प्यार से सहलाया।

'सही कह रही हूं। मेरी तरह बच्चे की झंझट में इतनी जल्दी न पड़ना! शादी के बाद एक-दो साल घूमो-फिरो, फिर बच्चे का आना अच्छा लगता है, मगर मैं तो पहली रात ही फंस गई।' इतना कहते-कहते शकरआरा का चेहरा लाल हो गया।

'अरे आपा! शादी को तो छह माह गुजर गए!' खुरशीदआरा धीरे-से बोलीं।

'तभी तो कह रही हूं कि तुम हर बात में मुझसे चंट हो।' इतना कह शकरआरा ने छोटी को गोद से उठा गद्दे पर लिटाया।

खुरशीदआरा बहन की बात का कुछ जवाब न दे सकी। क्या कहती कि पहली रात वे दोनों बातों में लगे रहे और दूसरे दिन फूफी के इंतकाल की खबर मिलते ही जमीर उन्नाव ही तरफ मां के साथ चले गए थे। तीसरे दिन आते ही उन्हें ड्यूटी पर जाना था। शादी की छुट्टी उन्हें हफ्ता-भर की मिली थी। अब जब वे लौटे तो...खुरशीदआरा का सांवला चेहरा गुलाबी हो उठा था। होंठों के ऊपर नन्हीं-नन्हीं पसीने की बूंदें छलक उठी थीं।

खुरशीदआरा अपना ही जवान चेहरा देख मुस्करा उठीं। इंसान बुढ़ापे में एक अलग इंसान हो जाता है, जिसकी शक्ल उसकी जवानी से कितनी अलग हो जाती है? उन्होने करवट बदली। घड़ी की तरफ देखा, साढ़े बारह बज गए थे। उन्होंने खाली कमरे में एक नजर फिराई फिर आंखें बंद कर लीं। इस बार एक-दूसरे किस्म का शोर था। दो बच्चों के आपस में खिलखिलाने और दौड़ने का...वे दोनों चेहरे कमाल और समीना के थे। उस समय उनकी उम्र होगी कोई पाच-छह वर्ष की। कमरों में एक-दूसरे के पीछे भागते दोनों बरामदे में तो कभी लॉन की तरफ जाते हैं और फूलों की क्यारियों के चारों तरफ चक्कर लगा अमलतास के पेड़ के नीचे बैठ जाते हैं।

'तुम्हारा नाम समीना क्यों है?' कमाल पूछता है।

'जैसे तुम्हारा नाम कमाल है!' समीना भोलेपन से कहती है।

'मगर तुम मुझे समीना नहीं लगती हो!' कमाल धीरे-से उसके चेहरे को देखते हुए कहता है।

'फिर क्या लगती हूं?' समीना की आंखों में ताज्जुब है।

'तुम मुझे तितली लगती हो?' कमाल कहता है।

'पागल हो! लड़की कभी तितली लग सकती है?' समीना हॅस पड़ती है।

'तुम पीली फ्रॉक जब भी पहनती हो तो मुझे तितली लगती हो...चलो, दौड़ो, मैं तुम्हें पकडूं!' कमाल ने उठते हुए कहा।

'जो आसमान में उड़ गई तो?' समीना ने कमाल को चिढ़ाया।

'तो मैं हवाई जहाज पर बैठ तुम्हें पकड़ लाऊंगा।' कमाल ने गंभीर हो कहा।

'तब ठीक है।' समीना ने कहा और एक-दूसरे के पीछे दौड़ने का खेल फिर शुरू हो गया।

इस तरह की जाने कितनी चाहतों से भरी यादें थीं, जो दिमाग में अकसर तैर जाती हैं। जब वे दोनों जवान हुए थे तो एक बार खुरशीदआरा ने कमाल को समीना का चेहरा चूमते हुए देखा था। यह दृश्य उन्हें परेशान कर गया था कि कैसे दोनों को समझाएं? इस सोच-विचार में दो-तीन साल गुजर गए और यह बात सब पर खुल गई कि कमाल और समीना एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते हैं...

''छोटी अम्मी! इस तरह टकटकी लगा छत में क्या ढूंढ़ रही हैं?'' एकाएक कमाल ने कमरे में दाखिल हो खुरशीदआरा से पूछा।

''अरे! तुम कब आए? काम खत्म हुआ?'' खुरशीदआरा ने उठते हुए कहा।

''हां, और अब लगी है जोरदार भूख!'' कहता कमाल मेज की तरफ बढ़ा।

''यहां दो प्लेटें क्यों लगी हैं? क्या समीना ने अभी तक खाना नहीं खाया है?'' कुछ फिक्रमंद हो कमाल ने पूछा।

''वह खाना खा चुकी है। मैं इंतजार कर रही थी, मगर अब एक बज रहा है। खाना खाया तो हजम कब होगा?''

''छोटी अम्मी, यह बेईमानी है! खाना मैं अकेले नहीं खाऊंगा!'' कमाल बोला।

''डॉक्टर होकर तुम इस तरह की लापरवाही बरतते हो?''

''काहे का डॉक्टर? मैं इंसान पहले हूं, डॉक्टर बाद में...थोड़ी-बहुत गलतियां, लापरवाही और शरारतें जिसने नहीं कीं, छोटी अम्मी, वह खाक जिंदगी जिया?''

''यह सब्जी तो लो!'' खुरशीदआरा ने हॉटकेस खोला!

''लेता हूं, जरा दम तो ले लूं...आप अगर इसी तरह मजेदार खाना खिलाती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब डॉक्टर कमाल का वजन डबल हो जाएगा!''

''इतना दौड़ते-भागते हो सब हज्म हो जाएगा!'' सब्जी प्लेट में डालते हुए खुरशीदआरा बोलीं।

''हां, खाने की मेज से उठे, कंप्यूटर के सामने बैठ गए। वहां से उठे तो गाड़ी में जाकर बैठ गए। कार से उतरे तो क्लीनिक में डॉक्टर की कुर्सी पर बैठ गए। वाकई बड़ी दौड़-धूप है!'' कमाल ने कटाक्ष-भरे स्वर में कहा, जिसे सुन खुरशीदआरा हँस पड़ीं।

''पहले टेनिस खेलने जाते थे, मगर आजकल तो...'' खुरशीदआरा इतना ही बोल पाई थीं कि कमाल बीच में ही बोल पड़ा—

"जाऊं कैसे? समीना तो...डॉक्टर की बीवी होकर नादानी...जानती है कि हिंदुस्तान की आबादी इतनी बढ़ी हुई है–मगर एक नहीं दो बच्चे, माई गुडनेस!" कमाल ने गरदन हिलाई।

ख़ुरशीदआरा उसकी शरारत पर हलके से मुस्कराई फिर पानी का जग उठा गिलास भरते हुए बोलीं–

"अक्लमंद है। दो बच्चे इकट्ठा हो जाएंगे। फेमिली कंप्लीट। बार-बार के झंझट से तो अच्छा है।"

"हां, छोटी अम्मी! मगर पालना, उन्हें बड़ा करना...मुझे तो सोच-सोचकर परेशानी होती है कि समीना..." इतना कह कमाल हाथ धोने उठ गया।

खुरशीदआरा कमाल की चिंता समझ गई थीं कि कमाल को यह खौफ ज्यादा परेशान कर रहा है कि समीना बच्चों में खोकर उसे समय नहीं दे पाएगी, मगर मैं ऐसा नहीं होने दूंगी। आखिर अब मुझे काम ही क्या है? रात-दिन दोनों को मैं संभालूंगी। फिर बरतन समेट मेज पोंछते हुए बोलीं, "या अल्लाह! जब तूने जुड़वां दिए हैं तो एक लड़का और एक लड़की देना ताकि, मां-बाप की प्यास बुझ जाए!"

कमाल समीना को देखने छोटी अम्मी के कमरे में गया तो देखा कि समीना जाग रही है। शायद उनकी बातें सुन उसकी नींद टूट गई थी। उसने समीना के पास बैठते हुए उसका सर सहलाया फिर शकरआरा के लहजे में बोला, "मेरी चांद! मेरी नमक की ढेली। उठो अपने कमरे में चलो!"

"तुम्हें हर वक्त मजाक क्यों सूझता है?" समीना हल्के-से मुस्कराई।

"जैसे तुम्हें मुस्कराना! अब उठो! ताकि छोटी अम्मी रात को आराम से सो सकें। तुम्हारी नर्सिंग के लिए मैं मौजूद हूं।" कहता हुआ कमाल समीना को सहारा दे अपने कमरे की तरफ ले गया।



जमाल खां को एक बार फिर जीने का मजा आने लगा। रिटायरमेंट के बाद जैसे उनकी जिंदगी का मकसद समाप्त हो चुका था, मगर अब सामने एक लक्ष्य था। उनके पास अनुभव की कमी न थी, न किसी का दबाव था, इसलिए काम बड़ी दिलचस्पी के साथ अपनी मर्जी के मुताबिक किया जा रहा था। शकरआरा की मौत के बाद उनका रंग झौंस गया था। आंखों के पपोटे भारी और चाल-ढाल में थकन उतर आई थी। अब वह कैफियत जाती रही और वही पुरानी अफसराना चुस्ती लौट आई थी।

मुस्तफाबाद में भी जो ठहराव वर्षों से पुरानी बस्तीवालों में आ गया था, उसमें एक नई स्फूर्ति-सी आ गई थी। चौपाल, खलिहान, बाजार, घर, मसजिद, नहर, स्टेशन,

खेत, पोस्ट ऑफिस, स्कूल—जहां देखो वहीं अस्पताल खुलने की बात चलती रहती थी। सबके अरमान जाग उठे थे। उमंगे मौज मारने लगी थीं। खासकर तब जब कच्ची गलियों की मरम्मत और नई गलियों ने अपना रूप ले आने-जाने में सहूलियत पैदा कर दी थी। नाली-नाबदान का भी हिसाब बिना किसी लड़ाई-झगड़े के निपट गया था। कहने को यह बातें मामूली थीं, मगर इन चंद छोटे, लेकिन बुनियादी कामों ने वहां के लोगों की मानसिकता बदलकर रख दी थी। मोहल्ले अपने ऊपरी रूप में साफ-सुथरे दिखने लगे थे—यह एक बहुत बड़ा बदलाव था।

इस गांव की तारीख गवाह है कि जो भी पढ़ गया वह दूसरे शहरों में जा कमाने-खाने लगा। नाम पैदा किया। धन कमाया। कुछ वर्षो तक गांव से नाता बना रहा फिर धीरे-धीरे कर वे सब देहाती से शहराती हो गए। सबने अच्छे घर दूसरे शहर में बनवाए। तिजारत में पूंजी लगाई तो वहीं लगाई। कुछ बड़ा काम किया तो वहीं किया। यहां उनके घर उजाड़ होते चले गए। ऐसी हालत में जब समाज का ताना-बाना ही ढीला हो जाए तो उसमें आगे बढ़ने की शक्ति आएगी कहां से? धीरे-धीरे इस बस्ती का भी यही हाल हुआ। लोग मरते गए। नए लड़के सगे-संबंधियों के लिए अजनबी बनते गए। वर्तमान जब संघर्षमय हो तो अतीत को कब तक याद कर जिया जा सकता है? यही सब इस गांव में भी घटा कि जब कुछ नया खुला तो भरती भी बाहरवालों की हुई और अपने गांव के हाईस्कूल और मैट्रिक पास लड़के मुंह ताकते रह गए।

उस निराश स्थिति में जमाल खां एक आशा की तरह दाखिल हुए। हर छोटा-बड़ा 'कलक्टर साहिबजी' से सलाम-दुआ, सलाह-मशवरा करने पहुंचने लगा। उनका उत्साह और ख़ुलूस़ जमाल खां को बहुत ताकत देता था। उनके दिल व दिमाग पर छाया जुर्म, वह अहसास जो हमेशा उन्हें सजावार बनाने पर तुला रहता था, उसकी शिद्दत कम होते-होते एकदम से गायब हो चुकी थी। और वहां पर कुछ कर गुजरने का वलवला खौलते पानी की तरह उबलता रहता था। मुख्यमंत्री से लेकर आई.जी. पुलिस, आई.एस. ऑफिसर से लेकर व्यापारी, टेक्नीशियन से लेकर वास्तुविद, ठेकेदार से लेकर ईट के भट्ठेवाल—हर तरह के लोगों से मिलना-जुलना था। बड़े-बड़े लोगों का चाय-पानी भी होने लगा, जिसने वहां के वासियों के थके मनोबल में ताजगी-सी भर दी थी।

एक वीरान-सा सरकारी अस्पताल था वहां, जहां पर डॉ. त्रिपाठी की निष्ठा के कारण मरीज कुछ दिन और जी जाते थे, बाकी हालात बहुत बेहतर नहीं थे। प्राइवेट डॉक्टर थे, मगर कोई बड़ी मुसीबत पड़ने पर सब रायबरेली और लखनऊ की तरफ ही भागते थे! वैसे भी गांव में जरा-जरा-सी बात पर लोग डॉक्टर-हकीम के पास भागने से बेहतर घर की दवा का ही इस्तेमाल करते हैं और उसी पर उन्हें विश्वास भी है, मगर जब पानी सर से ऊंचा उठ जाता है तो घर की दवाएं बेअसर हो उठती हैं।

अब वह जमाना भी नहीं रहा कि झाड़-फूंक, ओझा, चुड़ैल, भूत पर लोगों का यकीन पहले की तरह पुख्ता हो। ऐसी हालत में यह खबर सर-चढ़े जादू की तरह पूरे इलाके में गश्त लगा रही थी कि नया अस्पताल खुल रहा है—सरकारी नहीं प्राइवेट, जहां गरीबों का सस्ता और लावारिसों का मुफ्त इलाज होगा।

35

पतझड़ का मौसम शुरू हो गया था। पेड़ों ने पुराने पत्ते गिराने शुरू कर दिए थे। एक उदासी पूरे शहर में फैली थी। जिसके बीच टहलते पानीवाले मास्टरजी परेशान-से नजर आते थे। उनका संतोष छिन चुका था। परिवार को वह भूल चुके थे। दिमाग में पानी और उसकी समस्या हरदम गरदन-कटे परिंदे की तरह फड़फड़ाती रहती थी।

इस समय वह बाजार की चहल-पहल के बीच सिपाही के खाली चबूतरे पर खड़े भाषण दे रहे थे, बिमा इसकी परवाह किए कि कौन सुन रहा है और कौन उनका मखौल उड़ा रहा है। उन्होंने अपने को समय का ईसा बना लिया था। लोगों ने न सही, मगर स्वयं उन्होंने अपने को सलीब पर जड़ लिया था। बोलते-बोलते इस समय वह चौराहे पर खड़े भाषण दे रहे थे। उनके मुंह से झाग निकलने लगा था, मगर वह अपने रौ में कहे जा रहे थे :

"यकीन जानिए, यह सारे प्रश्न पूरे हिंदुस्तान में फैले हैं। एक स्थान की कहानी वास्तव में पूरे भारत की गाथा है। याद करें...दिमाग पर जोर डालें—हरे-भरे वृक्षों, मखमली घास और तंदुरुस्त गायों के बीच खड़े कृष्ण मुरारी अब केवल अतीत बनकर रह गए हैं। ये दृश्य अब प्राचीन कलाकृतियों में कैद होकर रह गए हैं...फिलहाल तो कृष्ण की तस्वीरें अब दूसरे रूप में नजर आती हैं—ढेरों जेवर पहने राधा मैया के साथ खड़े हैं! न बंसी न गायें, न मक्खन...पर्यावरण के बदलते दृश्यों के साथ बाजार ने भक्ति और भगवान का परिवेश भी बदल डाला है। आपके दिमागों से हरियाली को मिटाने की साजिश है। मेरी बात पर विश्वास करें कि कल वे सब चित्र बहुमूल्य समझे जाएंगे। जिनमें गिरते झरने, बहती नदियां, पनघट, पोखर, ताल, तलैया दिखाए गए होंगे...सरस्वती की तरह हमारी ये दो बड़ी नदियां भी हमारे शहर से लुप्त हो जाएंगी। तब इंसान पुराने ग्रंथ पलटेगा, शोध करेगा और जानेगा कि उसकी लोलुपता ने, कारखानों से निकले मलबों ने नदियों की जगह टीलों की शृंखला में बदल डाला है, जिससे हवा बोझिल और बदबूदार हो उठी है...पेड़ थके और अपने टेढ़े-मेढ़े तने और ठिठुरी शाखाओं के साथ मुरझाई पत्तियों के संग उदास खड़े हैं...तब 'मेघदूत' को लेकर कोई कालिदास अपनी कल्पना के द्वार नहीं खोल पाएगा..."

"मास्टर जी, बहुत होय गवा, अब हमका ड्यूटी करे देव!" जवान सिपाही ने कहा, मगर मास्टरजी तो किसी और दुनिया में थे।

"...सावन में कजरी और वर्षा की काली रात में कोई बिरहा न गाएगा, लेखकों-कवियों की रचनाओं से रस नहीं टपकेगा। नई पीढ़ी पहली बारिश की झड़ी से उठती सोंधी-सोंधी गंध से वंचित रह जाएगी उनका अनुभव संसार..." अभी मास्टरजी जुम्ला पूरा नहीं कर पाए थे कि सिपाही ने हाथ ऊपर उठा ताली बजाई ताकि वे चेत जाएं। उसकी इस हरकत को देख कुछ पल आसपास के लोग चुप रहे, फिर कुछ समझकर सबने जोर-जोर से ताली बजानी शुरू कर दी और वाह-वाह के शोर के साथ सिपाही ने उन्हें मंच से उतारा और चबूतरे पर चढ़ जोर से सीटी बजाई। चलते रिक्शे रुके, जाते राहगीरों ने मुड़कर देखा, दुकानदार मुस्कराए और मास्टरजी ने इस ठंड में भी माथे का पसीना शाल से पोंछा।

मोहल्ले के लड़कों को मास्टरजी की इस हालत पर तरस आ गया। वे मास्टरजी को बड़े आदर से टी-स्टाल ले गए और उन्हें घेरकर बैठ गए। यह देख पानीवाले मास्टरजी के चेहरे पर संतोष फैला और आंखों में गर्व, जो कभी पढ़ाकू विद्यार्थियों को देख उभरा करता था। उन्होंने पास बैठे लड़के का कंधा प्यार से थपथपाया। दूसरे लड़के ने पानी से भरा गिलास उनकी तरफ बढ़ाया। मास्टरजी ने गला तर किया और बोल पड़े, "जब बर्फ गिरना बंद हो जाएगी, हिमशिखर सफेद से गहरे कत्थई रंग का वस्त्र धारणकर लेंगे, उस समय शोधकर्त्ता, सिंधु और हड़प्पा की खुदाई में पाए जाने वाली वस्तुओं की तरह ही पानी के पाए जाने वाले स्थानों पर शोध करेंगे, तब सूखी घाटियां अपना इतिहास स्वयं बताएंगी...देशों में पानी के बंटवारे को लेकर युद्ध की संभावनाएं दम तोड़ जाएंगी। चारों ओर शांति होगी—नो पेट्रोल, नो वाटर!" तभी चाय आ गई। मास्टरजी ने लड़कों को वात्सल्य छलकाती आंखों से देखा।

"आज की तरह जनजाति, धर्म, भाषा के बंटवारे की जगह तब वर्गीकरण होगा एक विशेष नदी से पानी पीने वालों का दूसरे नदियों से अलग कर उनकी विशेषताओं की विवेचना की जाएगी और कभी पानी के समय जीने वाले मानव-कंकाल को ठीक डायनासोर की तरह अजायबघर में रख दिया जाएगा, जिसे देखकर स्कूल के बच्चे दांतों-तले उंगली दबाएंगे कि हमारे पूर्वज अपना कितना समय नहाने, धोने, पानी पीने में खर्च करते थे।"

जवान बेकार लड़के उनकी बातें गंभीरता से सुनते हुए सोच रहे थे कि इस देश में चिंतन और विचार की कमी नहीं है मगर लोगों में—विशेषकर योजना बनाने वालों में निष्ठा की कमी के कारण योजनाएं आगे नहीं बढ़ती हैं। हम सब बेकार हैं। इतना पढ़ने के बाद भी हम कुछ कमा नहीं पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में मास्टरजी

की यह जुनूनी कैफियत, गहरे आहत मन की अभिव्यक्ति उन्हें अपनी-सी लगती



बदलू दूसरे दिन से ही कमाल के साथ क्लीनिक जाने लगा था। उसका दिल जल्दी ही चरिंद-परिंद के प्यार से निकल इंसानी मोहजाल में फंस चुका था। रोते बच्चों को बहलाने का काम, बूढ़े मरीजों की दिलजोई, औरतों का खयाल रखना उसकी आदत में शामिल होता जा रहा था। उसके बरताव को देखकर कमाल ने सोच लिया था कि भविष्य में बदलू एक बहुत अच्छा मर्द नर्स साबित होगा। उस में औरतों की वे सारी खूबियां मौजूद हैं जो 'ममता' शब्द में सिमट जाती हैं।

कल तक जमाल खां का जोश उफान पर था। उन्हें यकीन था कि पचास लाख में अपनी तरफ से पांच लाख डालकर वह अस्पताल खड़ा कर लेंगे, मगर उन्हें गहरा धक्का लगा यह जानकर कि जांच की मशीनों की कीमतें आसमान छू रही थीं। यह रकम तो ऊंट के मुंह में जीरे की तरह है। खाली बिल्डिंग खड़ी कर लेना तो उनका लक्ष्य है नहीं! दोस्तों ने राय दी—सरकार से अनुरोध किया जा सकता है या फिर कर्जा ले इस योजना को अंजाम तक पहुंचाया जा सकता है। यह बात जब कमाल को पता लगी तो वह भड़क गया।

"देखिए, मेरे सब्र का इम्तहान मत लें। पहले तो आप बिनबुलाए मेहमान की तरह मेरे डिसिपलिन में टांग अड़ाने चले आए, फिर अब कर्जे और सरकारी इमदाद के चक्कर में फंसने की तमन्ना पाल रहे हैं। मेरी समझ में नहीं आता है कि हर कोई मुझे पालना-पोसना क्यों चाहता है!"

"अस्पताल खोलने की तुम्हारी ही ख्वाहिश थी!" जमाल खां ने ताज्जुब से बेटे को देखा।

"ख्वाहिश का मतलब यह थोड़ी है कि गलत रास्तों से गुजरा जाए। जब कमाऊंगा, तब देखा जाएगा। मेहरबानी करके, अब्बी! आप अपने लिए कोई और हॉबी तलाश करें!" कमाल ने तुनककर कहा।

"जैसे?" जमाल खां ने बड़े धैर्य-से पूछा। उन्हें आज पहली बार बेटे के लहजे में शकरआरा की झलक महसूस हुई थी।

"अब मैं क्या बता सकता हूं?" इतना कह कमाल एकाएक मुस्करा उठा! चेहरे-से गुस्सा गायब हो गया और शरारत-भरे शोख लहजे में बोला, "अब्बी! आप आज भी बड़े स्मार्ट लगते हैं, एक आध..."

"खूब! भई खूब! आपके राय देने से हम बातों को समझेंगे...मिलवाया नहीं

तो तुम्हें लगा मेरी जिंदगी मे कोई है नहीं।'' जमाल खां ने बड़े संयत स्वर में कहा।

''अच्छा।'' कमाल ने ताज्जुब से बाप को देखा। उसने रौ में गैरजरूरी बात कह तो दी थी और उसे डांट का इंतजार था, मगर अब्बी...गहरे आहत हुए हैं।

जमाल खां चुपचाप पाइप पीते रहे।

कमाल कुछ देर अनमना-सा खड़ा रहा, फिर खामोशी से चला गया।

जमाल खां बड़ी परेशानी में पड़ गए थे। पैदावार खत्म कर उन्होंने खेत में नींव खुदवा डाली थी। रोज तीस मजदूर-मिस्त्री काम में जुटे थे। पूरे गांव में उल्लास बिखरा पड़ा था। उन सबकी आशाएं उन्हें प्रोत्साहित करती रही हैं और अब वे सब कुछ बीच मैदान में छोड़कर पंजे झाड़ लें? अस्पताल अब सांप के मुंह की छछूंदर होकर रह गया था जो न उगला जा सकता था, न निगला जा सकता था। वे बेचैन हो सोच रहे थे कि अस्पताल न खुले, यह तो किसी तरह उचित नहीं होगा। और जो खुलेगा तो...कर्जा किसके भरोसे लें? रही सरकारी सहायता की बात तो वह इतनी बुरी बात नहीं है जितना अस्पताल को मंझधार में छोड़ देना। इस परेशानी ने उनका ब्लडप्रेशर बढ़ाकर रख दिया। वह चुपचाप आंखें बंद किए बिस्तर पर लेटे-लेटे संभावना तलाश करते रहे। उन्हें पूरा विश्वास था कि वह कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेंगे।



कमाल गहरी फिक्र में डूबा था। उसका हाथ रोज-ब-रोज तंग होता जा रहा था। समीना की नौकरी अभी पक्की तो हुई नहीं थी जो तनख्वाह के साथ उसे लंबी छुट्टी मिलती। नर्सिंगहोम से जरूर बड़ी रकम मिल रही थी, वह फिलहाल, समीना पर खर्च हो रही थी। इस बाबत जमाल खां ने बेटे को बाप का फर्ज समझाया भी, मगर कमाल ने यह कहकर बात टाल दी कि डॉक्टर कमाल को ही समीना का कर्तव्य निभाने दीजिए। कमाल ने पिछले माह से सेमिनारों में बाहर जाना लगभग बंद-सा कर दिया था। बुआ नानी की मौत के बाद से छोटी अम्मी की सेहत में भी गिरावट आई थी। उनको लो ब्लडप्रेशर की शिकायत थी। कभी कभी खतरनाक हद तक वह नीचे चला जाता था। कमाल दो किनारों के बीच हरदम चौकन्ना रहता कि खाला और अब्बी किसी तरह के हादसे का शिकार न हो पाएं। आया को खास हिदायतें दे रखी थीं कि वह खाने-पीने की चीजों में जरा भी लापरवाही न बरते, मगर होने वाली बात तो होकर रहती है।

रात को किसी पहर जमाल खां को पैरालेटिक अटैक हो गया था। बाई तरफ का मुंह टेढ़ा हो गया और हाथ-पैर ऐंठ-से गए थे। जबान लड़खड़ा रही थी। कोशिश के बावजूद वह बोल नहीं पा रहे थे। कमाल को जिस बात का डर हरदम सताता रहता था, आज वह हो गया। उम्मीद केवल इतनी थी कि यह फालिज ठहरने वाला

नहीं था। पांच-छः दिन बाद पहले वाली स्थिति वापस आ सकती है। कमाल ने इस हादसे का बड़ी हिम्मत से सामना किया। देसी-अंग्रेजी जो भी दवा कारगर साबित हो सकती थी, वे सारे नुस्खे आजमाए जाने लगे थे! खुरशीदआरा ने बहनोई की खिदमत में कोई कसर नहीं छोड़ी। जमाल खां की बीमारी को सुन तीनों लड़कियां तड़पकर रह गईं। दो लड़कियां तो मजबूरी के चलते निकल न पाईं, मगर बड़ी बेटी बीमारी के पांचवें दिन बाप के पास पहुंच गई। उसके आने से घर का माहौल बदला। जमाल खां में भी जल्द अच्छा होने की उमंग जागी।



गई रात को जब कमाल क्लीनिक से लौटा तो समीना को अपना इंतजार करता पाया। उसका दिल भी कब से समीना से बात करने के लिए तरस गया था। घर की परेशानी और व्यस्तता ने कमाल के पैर में पहिए बांध दिए थे। कपड़े बदल कमाल जब समीना के पास आकर बैठा तो समीना ने बेचैन हो कमाल का हाथ अपने गाल पर रखते हुए कहा, "हमारे घर में एक के बाद एक हादसे हो रहे हैं!"

"हादसे तो सबके साथ होते हैं, हम दूसरों से अलग थोड़ी हैं, समीना!"

"मगर हमारे घर तो..."

"पगली! इस खयाल को दिमाग से झटक दो! सबको अपना हिस्सा मिलता है, देर-सबेर...तुममें तो बहुत सब्र है। सब ठीक हो जाएगा!" कमाल ने समीना के गाल थपथपाए और लंबी सांस ले मन-ही-मन कहा–'पतझड़ और बसंत ऋतुएं इंसान की जिंदगी में आए दुःख-सुख की हमशक्ल हैं, जो साथ-साथ चलकर भी एक-दूसरे से कितनी अलग-अलग हैं!'

"क्या सोच रहे हो कमाल?" समीना ने कमाल के चेहरे पर दिल की कैफियत पढ़ते हुए पूछा।

"कुछ नहीं।" कमाल ने लंबी सांस ली।

"परेशान हो?" समीना ने भर्राई आवाज से पूछा।

"तुम्हारे रहते कभी मैं परेशान हो सकता हूं, बीरबहूटी?" इतना कह कमाल बच्चों की तरह समीना के दोनों हाथ पकड़ फफक पड़ा। समीना ने उसके झुके सर को चूमते हुए अपनी आंखों में आए आंसू को पीकर धीरे-से कहा–

"बस कुछ माह की बात है, कमाल! तुम्हारी पीली तितली तुम्हारे साथ ही उड़ेगी।" इतना कहकर समीना भी अंदर से आती रुलाई को रोक न पाई। दोनों रोते हुए एक दूसरे से लिपट गए।



रोने से समीना थक गई थी। कमाल के दिल पर छाया बोझ कम हो गया था, मगर सर उसका भी दुख रहा था। दोनों उसी हाल में बिना खाए-पिए सो गए। कमाल जब तक जागता रहा, समीना का बदन सहलाता रहा।

समीना ने ख्वाब में देखा कि वह कमाल को ढूंढ़ने निकली है। सड़क से होती गली-दर-गली उसे तलाश रही है, मगर उसका कहीं पता नहीं है। वह चलते-चलते शहर से बाहर निकल जाती है और एक घने जंगल में दाखिल होती है। जोर-जोर से कमाल को पुकारती है। उसकी आवाज सुन परिंदे घोंसलों में फड़फड़ाने लगते हैं। शाखाएं वेग से हिलने लगती हैं। पत्तियां देखते ही देखते पेड़ों से झर-झर गिरने लगती हैं और देखते-ही-देखते जंगल सूख जाता है। पत्तियां रहित शाखों पर बैठे परिंदे गा नहीं, बल्कि डर से चीख रहे हैं। उनका शोर इतना बढ़ जाता है कि वह कमाल को आवाज नहीं दे पाती है। हैरान-सी आगे बढ़ती है तो देखती है—नीचे गहरी घाटी है। नदी उछलती-कूदती बह रही है, फिर वह भी बहते-बहते सहसा सूख जाती है! किनारों पर खड़े, पानी पीने आए चौपाए—हाथी, नील गाय, बारहसिंगा—अपनी-अपनी बोली में 'प्यास...प्यास' चिल्ला रहे हैं। छोटी-बड़ी मछलियां तड़प-तड़पकर पत्थरों पर सर पटकने लगती हैं! तभी सामने से कमाल आता दिखता है। उसकी दाढ़ी और बाल बढ़े हुए हैं। कपड़े फटकर तार-तार हो चुके हैं। वह बेकरार हो ऊपर से उसे पुकारती है—'कमाल! कमाल!' मगर कमाल आगे फैले पथरीले पहाड़ों की मोड़ों में चलता हुआ कभी गुम हो जाता, कभी फिर दिखता है। वह बार-बार एक ही बात दोहरा रहा है...'यहां भी पानी नहीं है... जहां मैं जाता हूं वहां सब सूखा मिलता है। कुएं-कुइयां, पोखर-तालाब, नदी-नाले...' कमाल थककर बैठ जाता है। समीना जाने कैसे उस तक पहुंच जाती है और कहती है—

'अब क्या होगा, कमाल? सब इंसान मर गए...अब यह परिंदे और जानवर भी मर जाएंगे!'

'नहीं समीना, नहीं! हम जिंदा हैं! इंसान जिंदा है। पानी को हम ढूंढ़कर रहेंगे। तुम आ गई, बहुत अच्छा किया। चलो मेरे साथ, हम दोनों पानी को ढूंढ़ेंगे...' कमाल उसके कंधे पर हाथ रखता है और वह कमाल की कमर को अपने हाथों के घेरे में लेती है! दोनों कदम मिलाकर उन मोड़दार पहाड़ों पर चढ़ते-उतरते रहते हैं, जो हरे से कत्थई रंग में बदलते चले जा रहे हैं। तभी बादल गरजने लगते हैं। बिजली चमकने लगती है। समीना प्रकृति का यह रौद्र रूप देख डरकर चीख उठती है!

'डरो मत! इंसान अभी जिंदा है! वह पानी तलाश करके रहेगा!' कमाल इतना कहकर समीना को प्यार से थपकता है। और आकाश के गुस्सैल चेहरे को अपनी सूखी आंखों से ताकता है।

बादल की गरज और बिजली की चमक बढ़ती ही चली जाती है। रास्तों में सूखी झाड़ियों में बार-बार उनके कपड़े फंस जाते हैं। पैरों में कांटे चुभ रहे हैं, मगर वह लगातार चलते जा रहे हैं। अब पहाड़ खत्म हो गए। सामने खुला मैदान है। समीना का हाथ पकड़ कमाल सामने दौड़ता चला जाता है और विशालकाय गड्ढे के पास पहुंचकर थम जाता है। दोनों की सांस फूल रही है। गौर से नीचे देखने पर समीना और कमाल को पता चलता है कि वह गड्ढा नहीं, बावली है!

'यहां जरूर पानी होगा!' कहता कमाल तेजी से बावली की सीढ़ियां उतरता चला जाता है। समीना उसके पीछे भागती है। बादल अब भी गुर्रा रहे हैं। अब उनका रंग सुरमई से काला हो गया है, जिनके बीच बिजली चमक रही है। समीना को लगता है कि कुछ होने वाला है। अंधेरे में उसे कमाल नजर नहीं आता। तभी तेज बिजली चमकती है। समीना को कमाल दिखता है, जो नीचे झुककर बावली को तलहटी में कुछ टटोल रहा है और दोनों हाथों के चुल्लू में भर खुशी से चीखता है—'पानी... पानी...'

'कहां?' समीना आगे बढ़ती है, ताकि वह भी पानी देख सके।

'यह तो रेत है रेत, समीना!' कमाल का निराशा से भरा स्वर बावली में गूंजता है और उसी के साथ उसकी आंखों से आंसू की बूंद ढलककर बावली के तल में जज्ब हो जाती हैं। एक सूखा बीज बूंद के छू जाते ही कल्ला फोड़ देता है और वह कल्ला देखते-ही-देखते दरख्त बन जाता है। उसकी फैली शाखाएं ऊंचे तने पर दाएं-बाएं फैल जाती हैं। कुछ देर बाद आसमान का गुर्राना गड़गड़ाहट की ध्वनि में बदल जाता है और देखते-देखते टप-टप की तेज आवाज गूंजने लगती हैं। मूसलधार बारिश शुरू हो जाती है। कमाल और समीना बूंदों को चेहरे पर गिरता-फिसलता महसूस कर मुंह खोल देते हैं। सूखी जबान से होता पानी हलक को तर करता पेट में पहुंचता है...

बावली धीरे-धीरे बारिश के पानी से भरने लगती है। कमाल की कमर तक जब पानी पहुंच जाता है तो वह समीना का हाथ पकड़ सीढ़ियां चढ़ने लगता है। बावली का तेजी से बढ़ता पानी एक-एक करके सीढ़ियां निगल रहा है। कमाल और समीना बावली के किनारे खड़े होकर देख रहे हैं कि बावली लबालब भर चुकी है—ठीक इंसान की डबडबाई आंख की तरह।

'मैंने कहा था न, इंसान अभी जिंदा है!' कमाल ने दोनों हाथ फैला खुशी में कहा और समीना का हाथ पकड़कर आगे बढ़ा।

बारिश अभी रुकी नहीं है। सूखी धरती पानी पी सोंधी महक से गमक उठी है। वे जहां-जहां जाते, वहां-वहां धरती अपना रंग बदल लेती है! हरे-भरे जंगल, पहाड़,

मैदान चारों तरफ फैल गए हैं। झरने का पानी नीचे आवाज करता गिर रहा था—कल, कल, कल...

एकाएक तेज शोर से समीना की आंख खुल गई। बारिश होने की आवाज अभी भी कानों में आ रही थी। वह चुपचाप लेटी आवाज सुनती रही। जब उसका खुमार कम हुआ तो उसने घबराकर चादर हटाई और बिस्तर से नीचे उतरी। बिजली जलाई। सचमुच बाहर बारिश हो रही है! छत की नाली का पानी पीछे गली में पड़े किसी पीपे पर गिरकर तेज शोर कर रहा है। समीना के बदन में ठंडी झुरझुरी-सी दौड़ी। बत्ती बुझा, चादर में घुस, कमाल से लिपट उसने अपना सर उसके सीने पर रख दिया। कमाल की मुलायम सांस चल रही है। समीना की नींद आंखों से उड़ गई। अजीबोगरीब ख्वाब का खुमार दिमाग पर छाया रहा।

36

जमाल खां की बीमारी की खबर जब मुस्तफाबाद पहुंची तो सारा गांव सकते में आ गया। मजदूरों ने फावड़े-कन्नी रख मसाले के तसले औंधा दिए और इलाहाबाद जाने वाली बस पकड़ने चल दिए। कुछ ने चंदा कर मारुति कर ली। कुछ ने रेल पकड़ी। आधे से ज्यादा गांव इलाहाबाद की तरफ चल पड़ा। जब यह मजमा जमाल खां के घर जत्थे की शक्ल में पहुंचा तो मोहल्लेवाले समझे, कुछ अनहोनी घट गई है। बड़े दालान में बाहर सब बैठ गए थे। इतनी भीड़ देख घर में खलबली मच गई। खाना, चाय, शरबत, पानी सबका इंतजाम करना था। कमाल को क्लीनिक में इत्तला दी गई।

कमाल आने वालों के सामने जमाल खां की बेबस काया दिखाकर न उनकी हमदर्दी बटोरना चाह रहा था, न उनके जज्बात को ठेस पहुंचाना चाह रहा था, इसलिए दिल कड़ाकर उसने सबसे क्षमा मांगते हुए कहा कि डाक्टर ने उनको पूरा आराम बताया है, इसलिए आप उनसे अभी मिल नहीं पाएंगे! सुनकर कुछ ने सर हिलाया। कुछ ने हाथ जोड़ सर नवाया। कुछ ठंडी सांस भरकर रह गए। खा-पीकर वे सब उल्टे पैर गांव की तरफ लौट गए, मगर दूसरे जो बाहैसियत लोग थे वे जिद करने लगे कि बिना जमालखां के मिले वह नहीं जाएंगे। तो कमाल झुंझला-सा गया। कुछ सख्त बात कहने ही वाला था कि बड़ी बहन कामनी ने आकर बात संभाल ली।

बाद में वह कमाल से कहने लगी—

"तुम्हें गुस्सा कब से आने लगा है? अपना ब्लडप्रेशर चेक करवाया है?" बहन

की बात सुन कमाल कुछ नहीं बोला और एक लंबी सांस ले बाग को देखने लगा, जहां लगे फूल अब मुरझाने लगे थे। माली क्यारियों से पौधों को उखाड़ रहा था। कमाल ने उधर से अपनी आंखें फेर लीं और जमाल खां के कमरे की तरफ बढ़ा।

जमाल खां घसिट-घसिटकर हाशिम के सहारे बाथरूम की तरफ जा रहे थे। मुंह खुला था, जिससे राल बह रही थी। कमाल ने लपककर रूमाल से उनका मुंह पोंछा और खुद उन्हें संभाला। मगर जमाल खां ने इशारे से मना किया और हाशिम के सहारे बाथरूम गए।

'तीर की तरह सीधा चलने वाले अब्बू आज लंगड़ा रहे हैं...पता नहीं क्यों बूढ़े और मरीज मां-बाप को बच्चे इस हालत में नहीं देख पाते हैं! उनकी गैरत पर गहरी चोट क्यों लगती है? क्यों नहीं समझ पाते हैं कि उन्हें पालकर बड़ा करने वाले मां-बाप सदा जवान कैसे रह सकते हैं?'

कमाल यही सब सोचता कमरे में टहलता रहा। उसके अंदर की बेचैनी रोज-ब-रोज बढ़ रही थी। उसने बहन को बताया नहीं कि वह आने वाले किसी भी हादसे की भनक पा लेता है और लगातार अनजाने भय में जीता है। जमाल खां को लेकर कमाल के मन में गुस्सा भी था कि मस्त मौला अब्बू बेकार में अस्पताल का प्रोजेक्ट उठा बैठे। ख्वाब मेरा और पूरा वह करने लगे खुद—बिना जाने-बूझे कि अस्पताल को खड़ा करना हँसी-खेल नहीं है। बैठे-बिठाए तनाव का शिकार हो गए।

जमाल खां बाथरूम से निकल आए थे। वह कमाल से कुछ कहना चाह रहे थे, मगर तुतलाने के अलावा कोई शब्द जबान से साफ नहीं अदा हो रहा था। कमाल कुछ देर खड़ा उनकी हालत देखता रहा फिर आगे बढ़कर उसने कलम-कागज उनकी तरफ बढ़ाया, यह जानते हुए भी कि वह गलती कर रहा है—इस आसानी से जबान अपनी कोशिश करना ही बंद कर देगी, मगर वह बाप की यह छटपटाहट नहीं सहन कर पाया।

"मैं मुस्तफाबाद जाना चाहता हूं।" जमाल खां ने लिखा।

"इस हालत में? आप क्या चाहते हैं?" कमाल न चाहने के बाद भी झुंझला उठा।

"मैं वहां जाकर ठीक हो जाऊंगा, मेरा यकीन करो, कमाल!" इतना लिखकर जमाल खां ने बड़ी बेबसी से कमाल की तरफ देखा और दोनों हाथ जोड़ दिए। कमाल का पूरा वजूद पिता की इस दयनीय मुद्रा को देख हिल गया। यह नया रूप वह बाप का देख रहा था। जान रहा था कि यह बीमारी का हिस्सा है, तो भी यह दृश्य उसके लिए असहनीय था।

"ठीक है, अब्बी! एक-दो दिन में ले चलूंगा। आप परेशान न हों!" कमाल

ने बड़े धैर्य-भरे स्वर से कहा और उनके जोड़े हाथ अपने हाथों मे ले उनको हलके-हलके सहलाने लगा! कुछ पल बाप-बेटे खामोश बैठे रहे। फिर जमाल खां रोने लगे, मुंह खुल गया था, मगर आंसू गायब थे। कमाल ने उठकर उन्हें छाती से लगा लिया और उनकी पीठ थपकने लगा। उसके अंदर कुछ टूटकर पिघल रहा था। दिमाग कह रहा था कि अब्बी, अब बाकी जिंदगी करमकल्ला बनकर गुजारेंगे, मगर दिल कह रहा था कि नहीं—कभी नहीं...वह ठीक होकर रहेंगे!



रात को जब घर में सन्नाटा हुआ तो कमाल छोटी अम्मी के कमरे में गया। वह बिस्तर पर लेट चुकी थीं। हाथों में तस्बीह घूम रही थी। कमाल उनके पास जाकर बैठ गया। वह उठीं। दाने को चूम दुआ मांगी, फिर दामाद की तरफ मुखातिब हुईं। कमाल उनकी गोद में सर रख लेट गया। वह उसके सर को सहलाने लगीं। दोनों में से कोई कुछ नहीं बोला। उनके अंदर बहुत कुछ चल रहा था। कुछ देर बाद कमाल सो गया। खुरशीदआरा ने झुककर उसका माथा चूमा और दिल-ही-दिल में कहा—'बच्चा किस कदर दबाव में है!'

"छोटी अम्मी!" कमाल जाग गया। उसने खाला की कलाई पकड़ उनकी हथेली को चूमा, फिर भर्राए स्वर में बोला, "छोटी अम्मी! अब्बी मुस्तफाबाद जाने की ठान चुके हैं।"

"इस हालत में? वहां उन्हें कौन देखेगा?"

"आप...छोटी अम्मी, आप!"

"मेरा वहां जाना किसी भी तरह मुनासिब न होगा, आखिर वह आपा का ससुराल है। दूसरे, मैं चली भी गई तो डाक्टरी सहूलियतें वहां कहां मिलेंगी?" खुरशीदआरा ताज्जुब-भरे स्वर में बोलीं। उन्हें बहनोई की इस जिद का कोई सर-पैर समझ में नहीं आ रहा था।

"जानता हूं, मगर डरता भी हूं, कहीं अब्बी की यह आखिरी ख्वाहिश न हो जिसके पूरा न कर सकने का मलाल सारी जिंदगी मुझे कचोटता रहे।" कमाल ने गहरी सांस ली।

"समीना की हालत..." इतना कह खुरशीदआरा चुप हो गईं।

कमाल भी चुपचाप खाला की उंगलियों से खेलता रहा, फिर भारी आवाज में बोला, "आप समीना के पास रहें, मैं हाशिम को लेकर जाता हूं। वैसे डॉ. त्रिपाठी काबिल डाक्टर हैं और अब्बी को शायद ही इमरजेंसी की वहां जरूरत पड़े...या तो वह एक हफ्ते में ठीक हो जाएंगे या फिर इसी हालत में जिएंगे..." इतना कह कमाल

तेजी से उठा और अपने कमरे की तरफ बढ़ा।

खुरशीदआरा कुछ देर उसी तरह बैठी रह गई जैसे बैठी थीं। फिर उठकर उन्होंने बत्ती जलाई और कुरान पढ़ने लगीं। दिल को समझाने का यही एक तरीका उनके पास था।



जमाल खां को गांव गए दो हफ्ता होने को आया था। बदलू उनके साथ गया था। वहां जाकर उनकी तबियत में बड़ा मामूली-सा सुधार हुआ था। उनके जाने से जो सबसे अच्छी बात हुई थी वह थी वहां के लोगों में विश्वास का न मरना। आपस में बात करते हुए गांव के सभी जन कहते थे—

"बाबू के बीमार पड़े से अस्पताल का काम रुक गवा है, मगर उनके ठीक होत दोबारा चालू हो जाई।"

अस्पताल की नींव पड़ चुकी थी। कुछ कमरों की दीवारें भी उठ गई थीं, मगर उन पर छतें नहीं पड़ी थीं। गांव के लड़कों ने वहां छुट्टी के दिन क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया था। इसकी शिकायत जब गांववालों ने कमाल से की तो वह हँसकर बोला, "बेकार पड़ा है। किसी के काम आ रहा है तो इसमें बुराई क्या है?"

दिन बड़ी तेजी से गुजर रहे थे। मगर हालात ठहर-से गए थे। कुछ करने के अरमान की जगह अब कर्तव्य की अदायगी ने ले लिया था। भाग-दौड़ में राहत के लम्हे लगभग खत्म-से हो गए थे। कमाल को महसूस होता कि वह जैसे हँसना ही भूल गया है। जिनके साथ वह चुहल और शोखी करता था, वे दोनों तो अपने बदन से मजबूर हो चुके हैं।

"कितने बजे निकलोगे, कमाल?" समीना ने उसे तैयार होते देखकर पूछा।

"बस कोई आधे घंटे बाद।" कमाल ने घड़ी देखते हुए कहा।

"मैं भी चलूं? अब्बी से मिले पूरे पंद्रह दिन गुजर गए।" समीना ने बड़ी हसरत से कहा।

कमाल उसके मासूम चेहरे को ताकने लगा, फिर बड़े प्यार से बोला, "चलो।"

"मजाक तो नहीं कर रहे हो?" समीना ने शंका भरे स्वर में पूछा।

"नहीं यार! तुम तैयार हो, गाड़ी धीरे चलाऊंगा। दो घंटे की जगह हम तीन घंटे में पहुंचेंगे, तो भी क्या फर्क पड़ता है! आज छुट्टी का दिन है और क्लीनिक बंद।" कमाल ने कुछ इस तरह कहा कि समीना को हँसी आ गई।



समीना को अस्पताल की साइट देख बहुत दुःख पहुंचा था। अब्बी की अधूरी अभिलाषा का अंजाम यदि उनकी बीमारी में पूर्ण हुआ है तो इसमें ताज्जुब की क्या बात है! कोई भी संवेदनशील इंसान इतना बड़ा सदमा नहीं झेल सकता है—विशेषकर तब जब सरकारी योजनाएं उसके एक हस्ताक्षर से पूरी होती रही हों और व्यक्तिगत काम में वह हजारों इंसानों की आशाओं पर पानी फेर नाकाम साबित हो रहा हो। समीना का मन घर पहुंचने से पहले ही कसैला हो गया। काश! वह पीछे की सीट पर लेटी रहती और 'साइट' देखने की इच्छा व्यक्त न करती।

जब वे बस्ती में पहुंचे तो जमाल खां छड़ी के सहारे घर के सामने खड़े नजर आए। शायद हार्न की आवाज उनके कानों तक पहुंच गई थी। समीना को देख वह जज्बाती हो गए। एक साथ रोने और हँसने की स्थिति में उनके खुले मुख से राल टपकने लगी। उनकी यह हालत देख समीना की आंख भर आई। अपना मुंह पोंछने के बहाने उसने आंखें खुश्क कीं और मुस्कराती हुई जमाल खां के सीने से लग गई।

"अच्छा किया न अब्बी, जो समीना को ले आया!" कमाल ने बाप के गाल का चुंबन लेकर कहा।

"झूठा! मैं खुद आई हूं, अब्बी।" समीना गुनगुनाई।

"हां, हां, क्यों नहीं...ड्राइव आप ही कर रही थीं शायद?" कमाल ने कहा।

बदलू तीनों के चेहरे पर नाचती खुशी को देख सोच रहा था कि अरसे बाद सब पुराने मूड में लौटे हैं!

समीना से मिलने आने वाली औरतों का ताता बंधा था। कमाल अंदर ही अंदर उलझ रहा था कि समीना का इतनी देर बैठना ठीक नहीं, आखिर जब उससे नहीं रहा गया तो उसने हातिम को बुलाकर कहा कि अंदर जनाने में कहो कि समीना को लिटा दें और जो भी आए उससे कह दें कि समीना सो रही है!

"जी!" हातिम ने अपनी बीवी को ड्योढ़ी की कुंडी बजा बुलाया और समझाते हुए अपनी बात कही, मगर उस बहरी के पल्ले न पड़ी। जोर से कहता तो अंदर तक आवाज जाती और गांव की औरतें बुरा मान बैठतीं। अंत में हातिम अपना माथा पीटकर मुड़ा ही था कि बदलू ने हाथ के इशारे से उसे समझाया और जनानखाने के दरवाजे पर जाकर कहा—

"पर्दा कर लो, डाक्टर साहब सूई लगाने आने वाले हैं।"

बदलू का तीर निशाने पर बैठ गया। औरतें खुद समीना की बेकली अपनी आंखों से देख रही थीं। यह सुनते ही एक-एक कर उठने लगीं। दोपहर के खाने का वक्त भी हो रहा था। समीना को खट्टी डकार आना शुरू हो गई थी। नाश्ता हज्म नहीं हुआ था। पेट में गैस बन गई थी। कमाल ने उसकी पीठ सहला उसे आराम

पहुंचाया फिर धीरे से बोला, "अब न उठना। यहां से हम जरा जल्दी ही निकलेंगे।"

"और कब्रिस्तान?" समीना ने पूछा।

"चलेंगे, धूप तो ढलने दो।" कमाल ने उसके बाल सहलाए।



गांव से लौटते हुए कमाल खुश था। समीना उसके साथ थी। उसने गजल का कैसेट ऑन कर दिया। समीना भी तकियों के सहारे पिछली सीट पर लेटी-लेटी सोच रही थी कि उसके यह दोनों बच्चे जब दुनिया में आएंगे तो सब कुछ बदल जाएगा! यह उदासी, जो घर में हरदम छाई रहती है, उसकी जगह खुशियां आ जाएंगी। सब पहले की तरह हो जाएगा। कमाल को बच्चे पसंद हैं। वह उनके साथ खेलकर सारी परेशानियां भूल जाएगा। अम्मी बच्चों को देख लेंगी और मैं पहले वाले रुटीन पर आ जाऊंगी। सुबह स्कूल और शाम कमाल के साथ मोहल्ले-मोहल्ले घूमना। रात को दोनों बच्चों को कलेजे से लगाकर सोना...वह धीरे-से मुस्कराई।

उन दोनों की शक्लें कैसी होंगी? कमाल और मेरी तरह? या फिर मिली-जुली? उनके साथ लॉन में दौड़ने में कितना मजा आएगा! उनको मैं क्या कहकर पुकारूंगी?—यही सब सोचते हुए समीना की आंख लग गई। कार कब रुकी, कब कमाल ने पीछे का दरवाजा खोला, उसे पता नहीं। उसे यूं सोता देख कमाल समझ नहीं पाया कि समीना को कच्ची नींद से जगाए या नहीं, फिर कुछ सोचकर बदलू से बोला—

"तुम चलो, मैं जरा कंपनी बाग तक एक चक्कर लगाकर आता हूं।" उसने यह कहकर पीछे का दरवाजा आहिस्ता से बंद किया और अगली सीट पर बैठ कार स्टार्ट की। सड़क किनारे खड़े अनेक पेड़ों ने अपनी पत्तियां गिरा दी थीं। सूरज डूब गया था, मगर हल्की-सी सफेदी बाकी थी। कमाल ने कैसेट बदला और कंपनी बाग से वह यूनिवर्सिटी रोड की तरफ मुड़ा। छुट्टी के कारण सड़क लगभग खाली थी। समीना गहरी नींद में डूबी थी। उसने कार की गति पहले से भी धीमी कर दी। खुली खिड़की से मुलायम हवा समीना के माथे पर बाल बिखेर रही थी। कमाल ने धीरे-धीरे गुनगुनाना शुरू कर दिया, फिर एक घने पेड़ के नीचे सड़क किनारे कार रोक दी। अंधेरा घिर गया था। दोनों ओर के पेड़ों की कतारें जहां एक हो गई थीं, वहां से चांद उगा—सफेद, फीका, पूरी थाली जैसा! फिर धीरे-धीरे कर उसने रंग बदलना शुरू कर दिया। सफेदी में पीलाहट घुली फिर सुनहरा रंग दमक उठा। उस गोलाई में कमाल को समीना का चेहरा उभरता नजर आया।

"डाक्टर कमाल! गाड़ी खराब हो गई क्या?" पास में आकर दूसरी कार कब रुकी, कमाल को पता न चला।

"नहीं, बस यू ही।" कमाल हँसा। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दे।

"अगर कोई बात हो तो बताइए, मुझे कोई जल्दी नहीं है।" एडवोकेट अस्थाना ने पूछा।

"अरे नहीं, अस्थाना साहब।" कमाल की आवाज से समीना की नींद टूटी और उसने जम्हाई ले उठने की कोशिश करते हुए पूछा, "कमाल, हम पहुंच गए क्या?"

"लीजिए, वह भी उठ गई हैं, जिनके लिए इतनी दूर आया था।" कमाल ने कहा।

अस्थाना ने दोनों हाथ जोड़ समीना को नमस्ते कहा और अपने ड्राइवर को गाड़ी स्टार्ट करने का इशारा कर हँसने लगे।

समीना और कमाल जब घर पहुंचे तो बेहद खुश थे। उनके चेहरों पर खिली चांदनी देख खुरशीदआरा हँस पड़ीं। बेटी का मुंह चूम उन्होंने दोनों की सलामती की दुआ मांगी और बावर्चीखाने से चाय की ट्राली धकेलती स्वयं लाबी में आई। दोनों की आंखें चमक उठीं। कमाल ने बेसब्री से डोंगे का ढक्कन हटाया और बोला, "देखा समीना, तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं, मगर मेरे लिए बेसन का हलवा...छोटी अम्मी, आप मुझे ज्यादा प्यार करती हैं न?"

"अम्मी! कह दीजिए, आप मुझे ज्यादा प्यार करती हैं।" समीना हमेशा की तरह जलकर बोली।

"साफ बात तो यह है कि मैं पूरी तरह कनफ्यूज हो चुकी हूं कि तुममें से किसे ज्यादा चाहती हूं।" खुरशीदआरा ने हँसकर कहा।

"साफ बेईमानी है।" कमाल बोला।

"तुम दोनों अब मेरे लिए अलग-अलग नहीं, बल्कि एक हो!" खुरशीदआरा ने हलवा निकालते हुए कहा।

"छोटी अम्मी! आप तो डिप्लोमेट हो गई हैं। कहते डरती हैं कि मुझे ज्यादा प्यार करती हैं।" कमाल ने कहा और पहला चमचा हलवे से भरा समीना के मुंह में डाला।

37

बदलू का दिल घर और क्लीनिक में पूरी तरह रम चुका था। इस बीच कमाल ने उसे ब्लडप्रेशर लेना, एनिमा और इंजेक्शन लगाना सिखा दिया था। सुबह को एक

मास्टर पास के मोहल्ले से आकर बदलू को हिंदी, अंग्रेजी पढ़ा जाता था। उसका लिबास भी कुर्ता-पायजामा की जगह कमीज-पतलून हो गया था। चेहरे पर चमक तो पहले से ही थी, अब जवानी के आसार भी नमूदार हो रहे थे। होठों पर सुनहरे बाल नजर आने लगे थे, जिसे देखकर कमाल ने एक दिन उसके कंधे पर धौल जमाकर कहा था, "क्यों! मिट्ठू मियां, जवान हो रहे हो?" उसका चेहरा-मोहरा कुछ ऐसा निखरा था कि अनजाना आदमी उसे डॉ. कमाल का छोटा भाई समझ 'छोटे डाक्टर' साहब कह उठता, तब कंपाउंडर का पारा गर्म हो जाता। पुराना आदमी था। उसे यह कैसे बरदाश्त होता कि कोई उसकी सीनियारिटी को चुनौती दे। सो वह चिढ़कर बदलू के काम में ऐब निकालता। अक्सर कमाल से घुमा-फिराकर शिकायत करता तो कमाल हल्के लहजे में कह उठता, "लगा देव जोरदार झापड़।"

"सलाह तो आप खूब दे रहे हैं मुझे, जबकि सीनियर आप हैं। शिकायत मैं कर रहा हूं।" मुंहचढ़ा कंपाउंडर कह उठता।

"अमां, गांधीजी को याद करो।" कमाल इतना कह अपने काम में व्यस्त हो जाता और कंपाउंडर का मन हलका हो जाता। उसे बदलू से खुन्नस नहीं थी, मगर वह भी इंसान था, कुछ न कुछ बुरा लग ही जाता था।

एक मर्द बदहवास-सा, रोता लड़का गोद में उठाए कलीनिक में घुसा। उसके बेटे को बंदर ने काट लिया था। बच्चा काफी भयभीत लग रहा था। कंपाउंडर ने जल्दी से डिटोल से जख्म साफ किया और बोला, "अभी तक तो हम ही एक-दूसरे के पीछे पड़े थे, अब हमारे पुरखे भी नोच-खसोट में शामिल हो गए हैं।"

"भैया, डाक्टर साहब से कहो, पहले इसे देख लें।" उस मर्द ने परेशान हो कहा।

"जाओ!" कहकर कंपाउंडर ने कमरे की तरफ इशारा किया जहां से एक औरत कांखती निकल रही थी, फिर बदलू से बोला, "सीरिंज तैयार करो, टिटनेस का इंजेक्शन देना होगा!"



"बंदर को मुंह चिढ़ाया था क्या?" कमाल ने रोते लड़के से पूछा। कमाल की बात सुन लड़का चुप हो गया। फिर सिसकते हुए उसने गर्दन 'हां' में हिलाई।

"देखें तो बंदर के दांत कितने हैं?" कमाल ने इतना कह जख्म साफ किया फिर बदलू से बोला, "जरा बंदर को लगाने वाली सूई तो देना।" लड़के का सुबकना बंद नहीं हुआ था। अब वह मुस्कराती आखों से कमाल को देख रहा था।

"इस तरह बंदर को काटना नहीं चाहिए था। उधर खिड़की से बाहर तो देखना!

पेड़ पर कहीं बंदर हो तो पकड़कर लाओ, उसको ऐसे सूई लगाऊंगा।'' लड़का पेड़ की तरफ देखने लगा और मौका देख कंपाउंडर ने सुई लगा दी।

तभी फोन की घंटी घनघना उठी। कमाल ने फोन उठाया। फोन खुरशीदआरा का था—'समीना को लेकर हस्पताल जाना होगा!' कमाल ने फोन रख कंपाउंडर को जरूरी हिदायतें दीं और कमरे से बदलू को लेकर तेजी से निकला। एक-दो मरीज उसे जाते देखकर उठे तो कमाल ने हाथ उठाकर कहा—'शाम को' और बाहर निकल गया। उसने कार का दरवाजा खोला और कार स्ट्रार्ट करते हुए दिल ही दिल में बोला, 'इस वक्त समीना को मेरी सबसे ज्यादा जरूरत है।'

हवा के घोड़े पर सवार कमाल तेजी से टैगोर टाउन की तरफ बढ़ रहा था। अब बस चौड़ी सड़क पर फर्राटे भरना था। खुरशीदआरा तैयार बैठी थीं, मगर उन्हें कमाल के इतनी जल्दी पहुंचने की उम्मीद कतई नहीं थी। ड्राइवर को भी छुट्टी पर आज के दिन ही जाना था—सोच-सोचकर खुरशीदआरा परेशान थीं। दामाद को देख उन्होंने राहत की सांस ली।

''मैं ठीक हूं, कमाल!'' कमाल का घबराया चेहरा देख समीना हॅस पड़ी मगर चेहरे पर दर्द की उठती लकीरों को नहीं छुपा पाई।

जमाल खां भी बेचैन-से बरामदे में बैठे थे। उनके चेहरे पर छाई बेबसी साफ झलक रही थी। उनके कंधे पर हाथ रख कमाल ने उनके गाल का चुंबन लेते हुए कहा, ''बस अब्बी! गुड न्यूज का इंतजार करिए।''

जब तक कमाल की कार बंगले से बाहर नहीं निकली तब तक जमाल खां बरामदे के दर पर खड़े रहे, फिर आकर कुर्सी पर बैठ गए। नाना तो वह कई बार बन चुके थे। माह-भर पहले सफिया ने उन्हें चांद-सी नवासी दी थी। अब बारी दादा बनने की थी। वह पहली बार दादा बनने वाले थे, इस खयाल से जहां वह खुश हो रहे थे। वहीं पर उन्हें समीना की फिक्र परेशान कर रही थी। साली साहिबा साथ गई हैं। काश! शकरआरा आज के दिन जिंदा होतीं तो...उनकी आंखें गीली हो उठीं।

''कॉफी!'' हाशिम ने प्याली मेज पर रखी।

''कितने बजे हैं?''

''एक बजने वाला है, साहब।''

''अभी तक कोई फोन नहीं आया!''

''पंद्रह मिनट पहले ही तो बीबी गई हैं।''

''अच्छा!'' कह जमाल खां ने कॉफी का घूंट भरा। उन्हें कमाल की पैदाइश का दिन याद आ रहा था। शकरआरा दो लड़कियों के बाद लड़के को पाकर बहुत

खुश हुई थी। कमाल शकर की आंखों का तारा था। आज वह बाप बनने वाला है। पता नहीं दोनों पोते होंगे या पोतियां या फिर...

"साहब! खाना लगाएं?" आया पूछ रही थी। जमाल खां उसी तरह कॉफी का घूंट भरते सामने देखते रहे। हाशिम ने आया को इशारे से जाने को कहा और खुद एक तरफ जा खड़ा हो गया।

"अब तो काफी देर हो गई है, क्या बजा है?" खाली प्याली प्रिच पर रख जमाल खां बोले।

"सवा बजा है, साहब। खाना लगवाएं? आया पूछने आई थी।" हाशिम खाली प्याली उठाते हुए बोला।

"नहीं...मुझे भूख कतई नहीं है...तुम दोनों खा लो। पता नहीं क्या जरूरत पड़ जाए।" जमालखां ने कहा और बेकरारी से इधर-उधर देखा। चंद लम्हे खामोशी में कट गए। मोबाइल पर उचटती नजर डाल वह सामने झूमते पेड़ को देखने लगे। ड्राइवर होता तो वह खुद अस्पताल पहुंच जाते, मगर...एक-एक लम्हा पहाड़ बनकर गुजर रहा है—ऐसी हालत तो मेरी कमाल की पैदाइश के वक्त भी नहीं हुई थी। मैं इतना परेशान क्यों हूं? कमाल खुद डाक्टर है। डाक्टरों से उसकी जान-पहचान है। डॉ. बजाज तो खुद काबिल डाक्टर हैं, फिर फिक्र कैसी? उन्होंने आंखें बंद कर लीं। दिल चाहता कि कमाल को फोन कर पूछ लें। फिर दिल को समझाते कि इतनी बेकली ठीक नहीं है, सब ठीक रहेगा। अभी इसी उधेड़बुन में थे कि मोबाइल बज उठा।

"मुबारक हो! आप ददा बन गए...पोती और पोता दोनों सही सलामत हैं और समीना भी ठीक है।" खुरशीदआरा की चहकती आवाज सुनकर जमाल एकाएक फफक उठे, फिर आंसू पोंछ बहुत साफ आवाज में बोले, "साली साहिबा! आपको भी नानी बनना मुबारक हो!" उधर खुरशीदआरा भी रो पड़ीं। खुशी के मौकों पर हमेशा अपने याद आते हैं, जो बिछड़ जाते हैं और ऐसी खुशियों में शरीक नहीं हो पाते हैं।

"हाशिम!" जमाल खां की तेज आवाज गूंजी।

"जी साहब!" हाशिम के मुंह का निवाला हलक में अटक गया। ऐसी जानदार आवाज साहब की अरसे बाद उसने सुनी थी। वह गिरता-पड़ता भागता हुआ आया।

"मेरी फोन वाली डायरी लाओ...मैं दादा बन गया हूं!" जमाल खां की आवाज बिलकुल साफ निकल रही थी।

"साहब, मुबारक हो..." कहता हुआ हाशिम कमरे की तरफ भागा और आया के पास पहुंचकर बोला, "कमाल बाबा...डैडी बन गए!" फिर फोन की किताब उठा वह जमाल की तरफ भागा।

जमाल खां ने पहले अपनी मुंहबोली बहन सीमा पुरोहित को इत्तला दी, फिर धड़ाधड़ तीनों बेटियों को उनके फूफी बनने की मुबारकबाद दी। कुछ सोचकर उन्होंने खुरशीदआरा के देवरों यानी समीना के दोनों चाचाओं को भी यह खुशखबरी सुना दी। फिर हाशिम को बुला उन्होंने मिठाई का ऑर्डर दिया। फिर कुछ सोचकर हँसे और बोले, "ठहरो! खुरशीदआरा से पूछते हैं लड्डू चंदन हलवाई के हाथ का बंटवाना है या लकी स्वीट्स से रसमलाई और चमचम..."

अभी यह बाते चल ही रही थी कि कमाल की कार का हार्न सुनाई पड़ा। हाशिम दौड़ा। कार अंदर दाखिल हुई। कमाल कार से निकल दौड़ता-सा जमाल खां से लिपट गया और बोला, "चलिए, अस्पताल चलिए!"

"तो बरखुरदार, आज बाप बनने की इजाजत परवरदिगार ने तुम्हें बख्श दी! जीते रहो...दोनों औलादों का तुम्हें सुख मिले!" कहते-कहते जमालखां की आवाज भर्रा गई।

"आपका बेटा हूं, अब्बी! आपसे आगे ही रहूंगा।" गीली मगर शरारत से भरी आवाज में कमाल ने कहा और मन ही मन शकरआरा को याद किया।

दोनों बाप-बेटे अस्पताल की तरफ जब जाने लगे तो काम करता माली हाशिम को पास आ पूछने लगा, "सब कुशल-मंगल तो है?"

"हां, सब कुशल-मंगल है...अब जंगल में मंगल ही मंगल होगा! अपने बगीचे की साज-सजावट करो। पोता भवा है। इस बार की पार्टी तगड़ी होइये और हमरी ब्याह की बात भी।" हाशिम नाचता-सा गेट की तरफ बढ़ा और कुंडा लगा, उसी तरह कमर मटकाता वापस आया। माली हथेली पर खैनी मलते हुए हँसने लगा।



कमाल ने बेडरूम को अस्पताल में बदल डाला था। साफ-सफाई का इतना ज्यादा खयाल, सो हर चीज बदलकर रख दी थी। परिवार के हर सदस्य को हिदायतें दे रहा था कि बच्चों की हर चीज साफ, धुले हाथों से छुई जाए। इनके कमरे में न कोई बाहर का जाए, न जूते पहन कोई दाखिल हो। उसकी इस उछल-कूद को देख खुरशीदआरा को कहना पड़ा—'बेटे! हमें भी थोड़ा बहुत बच्चे पालने का तजुर्बा है!'

समीना घर लौटी तो उसकी डायट से लेकर उसके आराम की हर छोटी-मोटी चीज का खयाल रखता। यहां तक कि तीन दिन से वह न क्लीनिक गया, न ही नर्सिंग होम। आखिर चौथे दिन समीना को टोकना पड़ा, "कमाल, तुम्हारे मरीज तुम्हारी राह देख रहे होंगे! प्लीज गो।"

"आज छठी है! शाम को मेहमान ही मेहमान आएंगे। ऐसे मौके पर मेरी गैरहाजरी

क्या अच्छी लगेगी?'' कमाल ने जवाब दिया।

सुनकर समीना ने दिल ही दिल में शरारत का प्लान बनाया और अपने मोबाइल से लैंड लाइन पर फोन किया। फोन हाशिम ने उठाया।

''जी, हलो!''

''डा. कमाल से कहना, झारखंड से फोन है। परसों नदियों के मिलाने पर एक मीटिंग रखी गई है। उनका पहुंचना बहुत जरूरी है।'' इतना कह फोन समीना ने बंद कर दिया।

''किसका फोन था?'' कमाल की आवाज गूंजी।

''छोटे साहब, आपका फोन था। कोई थीं जो कह रही थीं कि झारखंड पहुंचना जरूरी है। मीटिंग है नदी पर।'' हाशिम ने बताया।

''अब आए तो उनका फोन नंबर ले लेना।'' कहता हुआ कमाल सीधे बेडरूम में पहुंचा और समीना का गाल खींचता हुआ बोला, ''शरारत से बाज नहीं आओगी!''

सुनकर समीना खिलखिला उठी और कमाल उसे गोद में उठा बोला, ''मेरी बीरबहूटी! सुख के ये दिन मुझे जीने दो...यदि मैं शायर होता तो इन दो नन्हें इंसानों पर अच्छी प्यारी-प्यारी-सी नज्में लिखता। पेंटर होता तो इनकी पेंटिंग बनाता, मूर्तिकार होता तो इनका मुजस्मा बनाता...मगर समीना, मैं डाक्टर हूं, मुझे इनकी देखभाल करने दो। अभी इनको मेरी जरूरत है।'' कमाल ने समीना के चेहरे पर चुंबनों की बौछार करते हुए कहा।



घर के माहौल में खुशी का रंग घुल गया था। रोज कोई न कोई बधाई देने पहुंच जाता था। मिठाई के डिब्बे, उपहारों के पैकेट, फूलों के गुलदस्ते, चेक का लिफाफा और सदके की रेजगारियां हर दिन बढ़ती ही जा रही थीं। खाने-पीने का सामान तो मेहमानों की आवभगत में खर्च हो जाता और मिठाई के डिब्बे कभी-कभार क्लीनिक पहुंच जाते हैं। बच्चों में मिठाई बांट दी जाती थी। बदलू क्लीनिक से आए दिन गायब रहने लगा था। एक दिन कमाल को टोकना पड़ा—

''छोटी अम्मी! किसी 'आया' का इंतजाम कर लें! बदलू की कमी क्लीनिक में खलती है।''

''मैं कब रोकती हूं जाने से उसे? वह तो जैसे बच्चों को देख बौरा गया है। एक पल के लिए भी उनसे अलग नहीं होना चाहता। अब उसका दिया नाम भी धीरे-धीरे कर सबकी जबान पर चढ़ रहा है—पराग और पंखुड़ी!'' हँसते हुए खुरशीद बोलीं।

"अरे, मैं तो एका छुटकी महतारी कहत हूं।" आया बोल उठी।

"मियां मिट्ठू! मैं क्या सुन रहा हूं? कल से आपको मेरे साथ क्लीनिक चलना है। जानते हो, खेलोगे-कूदोगे तो होगे खराब, पढ़ोगे-लिखोगे तो बनोगे नवाब! इस लिए छोटे-मोटे कामों की जगह आप जरा बड़े काम अंजाम दें, तो बेहतर होगा।" कमाल ने जरा सख्त लहजे में कहा, जिसे सुनकर बदलू के चेहरे का रंग उड़ गया।

समीना को आज सुबह से अपने सर में अजीब बेआरामी-सी लग रही थी। बदन भी थका-थका था। यह सुनकर खुरशीदआरा को मौका मिल गया, सो उन्होंने समीना से फिर अपनी बात दोहराई, "सोहर में बदन की मालिश जरूरी चीज है। सर में तेल लगने से औरत के दिमाग को राहत मिलती है, मगर तुम्हें तो बचपन से यह सब अच्छा नहीं लगता। मेरी मानो तो आज सर में तेल लगवा लो।"

"छोटी अम्मी। समीना को छोड़िए, आप मुझे लगा दीजिए।" कमाल अखबार फेंक तेजी से उठा।

"अगर यह बात है, अम्मी। तो मैं सर में तेल लगाने को राजी हूं।" कहती हुई समीना पास बैठी मां के पास खिसक गई और कंधों तक झूलते घुंघराले बाल जो आजकल बच्चों की खातिर चोटी में बंधे रहते थे, उन्हें खोलने लगी।

"ठीक है!" कमाल ने पाला छोड़ दिया और अपनी जगह पर वापस जा बैठा। उसे महसूस हो रहा था कि समीना दो बच्चों के बीच सारी रात जागती रह जाती है—कभी किसी का फीडिंग टाइम है, तो कभी किसी की नैपी गीली हुई है। ब्रेस्ट फीडिंग मां-बच्चे दोनों के लिए फायदेमंद है। उसकी जगह बॉटल फीडिंग शुरू करना केवल मां की भरपूर नींद की खातिर—यह भी दुरुस्त नहीं है। बस कुछ दिनों की ही तो बात है। उसके बाद समीना पहले की तरह घोड़े बेचकर सोएगी।

"आप मसाजवाली को बुला दीजिए, छोटी अम्मी! समीना ने अगर सर में तेल लगवा लिया है तो वह मसाज भी करवा लेगी। आखिर मां बनी है और माएं तो कुर्बानी देने के लिए ही बनती हैं।" कमाल से ज्यादा देर चुप नहीं बैठा गया तो बोल पड़ा।

"करवाऊंगी, मगर तेल से नहीं, क्रीम से!" कुछ सोच समीना बोल उठी। उसकी बात पर न केवल खुरशीदआरा बल्कि वहां बैठे बाकी लोग भी खिल-खिलाकर हॅस पड़े। समीना की समझ में नहीं आया कि उसकी बात में ऐसा क्या था।

"नाश्ते में क्या बनाएं?" आया ने अपना सवाल दोहराया।

हाशिम कमरे से बदलू के साथ बच्चों का बिस्तर और कपड़े लेकर बाहर निकला, ताकि उन्हें वाशिंगमशीन में डाल दे और कुछ को धूप में।

"मैं तुर्री नहीं पिऊंगी, न हल्दी का हलवा!" समीना ने कहा।

"यार समीना! तुम हर बात में 'न-न' क्यों कर रही हो?" कमाल बोल उठा।

"आज मेरी तबीयत कुछ अजीब-सी लग रही है!" समीना ने फिक्रमंद स्वर में कहा।

"नाश्ते के बाद कुछ देर सो लेना, वरना चलो, मेरे साथ एक बार डा. बजाज तुम्हारा सारा चेकअप कर लेंगी।" कमाल ने समीना की नब्ज पकड़कर कहा।

"अब ऐसी भी मेरी हालत नहीं है जो डाक्टर के यहां जाऊं, मगर हां, तुम अपना पटना जाना कैंसिल कर दो!" समीना ने आखिरी वाक्य अजीब अंदाज से कहा।

"कर देते हैं...आज जो-जो कैंसिल कराना है, बोलती जाओ, मैं सब कुछ रद्द करता जाऊंगा।" कमाल ने उठकर छोटी अम्मी की गोद में सर रख उनका हाथ अपने सर पर रखा—इशारा तेल लगवाने का था।

"तुम समीना की बातों में मत आओ। अपने काम में लगो। अभी बच्चों की पैदाइश के दिन ही कितने हुए हैं! महीना भी तो नहीं पूरा हुआ। तबीयत कुछ नरम-गरम ही चलेगी।" खुरशीदआरा ने हँसते हुए कहा।

"लीजिए।" कमाल ने समीना की तरफ इशारा किया जो तकिया पर सर रखे आराम से नींद में डूब चुकी थी।

"पटना के लिए कब निकलोगे?" खुरशीदआरा ने पूछा।

"आज रात दिल्ली के लिए प्रयागराज पकड़ूंगा, कल सुबह प्लेन से पटना पहुंच जाऊंगा।" कमाल ने कहा और आंखें बंद कर लीं। उसे भी ऊंघता देख खुरशीदआरा ने धीरे-से कमाल का सर उठा तकिया पर रखा और बिस्तर से नीचे उतरीं। पराग और पंखुड़ी भी गहरी नींद में डूबे थे।

38

कमाल जब ट्रेन पर बैठा तो उसका दिल बुझा-बुझा-सा था। शायद समीना के जुम्ले का असर हो—यह सोचकर उसने अपना बिस्तर लगाया और आंख बंद कर लेट गया। मगर नींद का कोसों पता न था। सारी रात करवटें बदलता रहा। अजीब-सी बेचैनी उसे घेरे रही। आंखों के सामने पंखुड़ी और पराग के चेहरे बार-बार कौंधते और दिमाग में यह सवाल कि अब से पहले तो कभी समीना ने उसे रोका नहीं, फिर आज क्यों? अब मेरी जिम्मेदारी बढ़ गई है। बाप बन गए हैं, यही सोचकर उसने कह दिया होगा।

इस तर्क के जहन में आते ही उसकी पलकें मुंदने लगीं।

दिल्ली पहुंच सबसे पहले कमाल ने समीना से बात कर बच्चों की खैरियत ली। उसे समीना की आवाज में थकन-सी महसूस हुई। शायद बच्चों ने रात-भर जगाया हो। उसे भी अब बच्चों की देखभाल में समीना का हाथ बंटाना चाहिए, ताकि वह पूरी रात चैन से सो सके। पूरी उड़ान-भर वह समीना और बच्चों के बारे में ही सोचता रहा। पटना हवाई अड्डे पर उसे रिसीव करने वाले आए हुए थे। सेमिनार के दोस्त थे। कल वैशाली की ओर एकरारा, अबीरपुर और सिरसा बीरन गांव की ओर जाना था।

पटना में गंगा का फैला पाट देखकर कमाल को महसूस हुआ, जैसे वह समुद्र देख रहा हो। गांधी सेतु के नीचे हाजीपुर की ओर केले के बागान मीलों तक फैले हुए थे। नीले फीके आसमान और खिली धूप में हरे-हरे पत्तों वाले पेड़ बड़ी सुंदर अनोखी छटा बिखेर रहे थे। पुल भी शैतान की आंत की तरह लंबा था, जो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। कमाल बार-बार अपनी कलाईघड़ी की बढ़ती सूइयों को देखकर सोच रहा था कि सीधा सेमिनार हाल में जाना ही ठीक होगा, मगर तब तक कार होटल के गेट में दाखिल हो चुकी थी।

सेमिनार हाल में पहुंच वह सब कुछ भूल गया। वहां कुछ और समस्याएं थीं जो दिल के मामले से कहीं ज्यादा गहरी और गंभीर थीं। सेमिनार के पहले सत्र का शीर्षक था—मध्य बिहार में आहर-पइन सिंचाई प्रणाली। सत्र के प्रारंभ में पढ़े गए आलेख में बिहार की भौगोलिक बनावट पर छोटी-सी टिप्पणी थी, जिसके हिसाब से बिहार को तीन भागों में बांटा गया था—उत्तर बिहार का मैदानी इलाका, दक्षिण बिहार का मैदानी भाग और छोटा नागपुर या पठारी क्षेत्र। पहला हिस्सा जो नदियों के साथ आई मिट्टी से बना है और नेपाल के तराई वाले इलाकों से लेकर गंगा के उत्तरी किनारे तक आता है। यहां की जमीन उर्वरा और घनी आबादी वाली है। दक्षिण का मैदानी इलाका गंगा के दक्षिणी तट से लेकर छोटा नागपुर के पठारों के बीच स्थित है। यहां सोन, पुनपुन, मोरहर, मुहाने, गामिनी नदियां है जो गंगा में जाकर मिलती हैं। बरसात में सारी नदियां उफनने लगती हैं। गंगा के मैदानी इलाके दक्षिणी भाग में पुराना पटना, गया और शाहाबाद जिलों तथा दक्षिणी मुंगेर और दक्षिणी भागलपुर आता है, जहां की जमीन में नमी बनाए रखने की क्षमता कम है। यहां भूजल का स्तर बहुत कम है। गंगा के किनारे के इलाके को छोड़ कहीं भी कुआं या नलकूप खोदना असंभव है। यह भू-भाग दक्षिण से उत्तर की ओर तेज ढलान वाला है, जिसके कारण धरती पर पानी का टिकना मोहाल है सो जलवायु खेती के अनुकूल नहीं; परंतु विचित्र तथ्य है कि यही इलाका ठीक नदियों के किनारे की तरह प्राचीन सभ्यता

का केंद्र रहा है। आखिर क्यों और कैसे? यह सवाल दिमागों में उठ सकता है तो इसका श्रेय हम आहर-पइन को देंगे जो न केवल हमारी भारतीय सिंचाई-प्रणाली थी बल्कि इलाके की आवश्यकता के अनुसार उसका निर्माण वजूद में आया था। वह हमारी जमीन की बनावट से निकाली गई इंसानी उपलब्धियां थीं।

लेख के साथ स्लाइडों द्वारा आहर-पइन के पुराने चित्रों एवं नए रेखाचित्रों की भी एक शृंखला थी, जो विवरण के साथ दिखाई जा रही थी कि इस इलाके में ढलान चूंकि प्रति किलोमीटर एक मीटर पड़ती है, सो उसी बनावट को हमारे पूर्वजों ने इस्तेमाल कर एक या दो मीटर ऊंचे बांधों के जरिये पोखर बनाए जिन्हें स्थानीय भाषा में आहर कहते हैं। बड़े बांध के दोनों छोर से दो छोटे बाध भी निकाले जाते थे जो ऊंचाई की तरफ होते थे। इस तरह से आहर जल को तीन तरफ से घेरने की व्यवस्था बनाई जाती थी। तालाबों की तरह इनकी तलहटी की खुदाई संभव नहीं थी। यह पोखर कभी-कभी पइनों और स्रोतों के नीचे इस विचार से भी घेरे जाते थे, ताकि इनमें लगातार पानी इन दोनों स्रोतों से भी आकर भरा रहे। यह कितने कारामद होते थे, इसका अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि एक लंबे आहर से बड़े आराम से 400 हेक्टेयर से कुछ अधिक जमीन की सिंचाई हो जाती थी। तालाबों का यहां चलन था नहीं। छोटे आहरों की संख्या कुछ ज्यादा रही।

इसी तरह पहाड़ी नदियों से खेतों तक पानी पहुंचाने के लिए पइनों का प्रयोग किया जाता था। यह पइन 20-30 किलोमीटर तक लंबे होते थे और प्रशाखों में बंटकर सो से भी अधिक ज्यादा गांवों के खेतों की सिंचाई करते थे। दक्षिण की नदियां गर्मी में सूखी और बरसात में उफनती थीं सो उनका बढ़ा पानी बाढ़ की जगह ढाल से बह पइनों एवं आहरों में भर अपनी राह बना लेता था। आज हम विकल्पों की ओर भागते हैं और अपनी व्यवस्था से मुंह मोड़ लेते हैं। आहर-पईन प्रणाली जातक युग से ही हमारी सिंचाई-व्यवस्था में शामिल रही है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 'आहरोदक-सेतु' से सिंचाई का जिक्र है। मेगास्थनीज के यात्रा-विवरण में भी बिहार की बंद मुंह वाली नहरों से सिंचाई का उल्लेख मिलता है। हम नए से नए विकल्प ढूंढ़ने के स्थान पर अपनी पुरानी प्रणाली की तरफ ध्यान दें, क्योंकि वह हमारे इलाके की भोगोलिक बनावट के अनुकूल थी, वरना आप सब जानते हैं कि इन आहरों-पइनों से मुख मोड़कर हम कहां पहुंचे। इस बार मध्य बिहार में पहली धान की बुआई हुई नहीं। वर्षा भी कम हुई और अब दूसरा धान रोपा भी जाएगा, या फिर चुनाव की गहमागहमी में हम सब भूल जाएंगे और राजस्थान की तरह सूखे और भुखमरी की तरफ बढ़ेंगे!

पहले लेख की समाप्ति पर सवाल करने वाले बेचैन थे, मगर तय यही पाया

कि दूसरा लेख भी चूंकि पोखर-नहर प्रणाली की बहाली पर है, इस कारण बेहतर होगा कि सवाल इकट्ठा सामने रखे जाएं। दूसरा आलेख भी अनेक सूचनाओ से भरा हुआ था। उसमें भी सारा आरोप अपनी स्वयं की व्यवस्था से विमुख हो नित नए प्रयोगो की विफलता पर था। विमलजी का आलेख प्रारभ हुआ :

''घोषजी ने जहां अपनी बात एक ज्वलंत प्रश्न पर समाप्त की है, वहीं से मे उठाना चाहूंगा। गया जिले की बाढ़ सलाहकार कमेटी ने कई दशक पहले 1949 में अपनी रिपोर्ट में लिखा था : 'कमेटी की राय है कि जिले में बाढ़ का असली कारण पारपरिक सिंचाई-प्रणालियों में आई गिरावट है। जमीन ढलवां है और नदियां उत्तर की तरफ कमोबेश समांतर दिशा में बहती हैं। मिट्टी बहुत पानी सोखने लायक नहीं है। अभी तक चलने वाली सिंचाई-व्यवस्था पूरे जिले में शतरंज के मोहरो की तरह बिछी थीं ओर ये पानी के प्रवाह पर रोक-टोक लगाती थीं।' मेरा अपना विचार है कि बाहर से दिखने में आहर-पइन व्यवस्था भले ही बदरूप और कच्ची लगे, पर यह एकदम मुश्किल प्राकृतिक स्थितियों में पानी की सर्वोतम उपयोग की अद्‌भुत देसी प्रणाली है।''

तीसरा आलेख कालियाजी का था। उनका समर्थन भी आहर ओर पइन के लिए था। अपने लेख का आरंभ 'एन एकाउंट आफ द डिस्ट्रिक आफ भागलपुर' लिखने वाले ब्रिटिश पर्यवेक्षक एफ-बुकानन के इस कथन से शुरू किया . ''आहरो ओर पइनो में इतना पानी रहता है कि किसान सिर्फ धान की फसल ही नही लेते, बल्कि सर्दियों में गेहू और जौ उगाने के लिए भी उसका प्रयोग कर लेते हैं। पानी को ढेकुली ओर पनदौरी जेसी कई व्यवस्थाओं से ऊपर लाकर खेतों तक पहुचाया जाता था।'' कलियाजी लेख पढ़ते-पढते रुके ओर बोले, ''यह वही अंग्रेज सज्जन थे जो आहर-पइन प्रणाली को कमखर्च समझने के बावजूद सिंचाई के लिए तलाब को पसद करते थे। मगर जेसे-जेसे वे भागलपुर से गया की तरफ बढ़े उनकी राय बदलती गई, क्योकि उन्होने यथार्थ को अपनी आंखों से जाकर देखा। आहर आम तोर पर गांव के दक्षिणी ओर ऊंचे भाग में होते थे ओर उनसे सिचित होने वाले खेत गांव के उत्तर में होते थे। पूरा का पूरा दक्षिण बिहार ही ऐसी ढलानवाला मैदान है। हर गाव मे धनहर ओर भीत खेत हैं।

''आहर और पइन का उपयोग सामूहिक रूप से होता था और सभी किसानों को मिल-जुलकर खेती करनी होती थी। आहर-पइन व्यवस्था कितनी उपयोगी और विश्वसनीय थी, इसका पता इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि पूरे देश का प्रायः हर इलाका निरंतर अकालों की चपेट में आता रहा, मगर गया जिला इससे अछूता रहा। इस सिंचाई-व्यवस्था में गिरावट के साथ मजबूती भी जाती रही। कहां तो उसे अकाल राहत की जरूरत 1896-97 में नहीं पड़ी थी और कहां 1966 में गया जिले

पर भी सूखे व अकाल की मार पड़ी। इस व्यवस्था से वाट के पानी पर भी रोक थी। मगर इधर देखने में आ रहा है कि वह संतुलन भी जाता रहा।

"अब इसी सिलसिले में जरा हम अपनी भव्य परियोजनाओं पर दृष्टि डालें। दक्षिण बिहार के 'सुखाड़ क्षेत्र' में सिंचाई-सुविधा के नाम पर चल रही है स्वर्ण-रखा परियोजना। सिंहभूमि जिले में चल रही दो बड़े डैम, दो बराज एवं सात नहरों वाली इस परियोजना में विश्व बैंक आर्थिक मदद कर रहा है। 1977 में इसकी लागत 179 करोड़ रुपये थी। आज उसकी लागत बढ़कर करीब 1285 करोड़ रुपये हो गइ है। इस परियोजना की बाबत सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए आकड़ों एवं गैरसरकारी सर्वेक्षण के अनुसार इससे चांडिल और इंचा के इलाके मे करीब 182 गांवों में पानी भर जाएगा। इनमें से 44 गांव तो पूर्णतया जलमग्न हो जाएंगे। कुल मिलाकर एक लाख लोग, जिनमें अधिकतर आदिवासी हैं, विस्थापित हो जाएंगे। उन्हें भी बसाने के पहले की तरह के वायदे किए गए। जैसे सरदार सरोवर डैम पेनल निर्माण के समय उनकी जमीन लेते हुए वायदे किए गए थे, मगर वे कहां बसेंगे—इसका पता न उजड़ने वालों को होगा न उजाड़ने वालों को। हमारी सरकारें हमारी नहीं, विदेशी हित की बाते सोचती हैं। मेधाजी को विकास-विरोधी बताकर नर्मदा बांध से डूबने ओर विस्थापित होने वाले आदिवासियों की कोई चिंता नही की जाती! इसलिए विदेशी चंगुल से छुटकारे का एक ही रास्ता हे कि हम अपने जल, जमीन तक सीमित रहे ओर विकास अपने साधनों से करें, न कि विश्व बैंक से ऋण लेकर एक नई गुलामी स्वीकार करें।"

आलेख की समाप्ति पर कुछ पल खामोशी छाई रही, फिर प्रश्न आमंत्रित किए जाने की घोषणा हुई। प्रश्न तो शायद किसी के मन-मस्तिष्क में नहीं उभर रहे थे, मगर कई अन्य तरह के आक्रोश लोग पाले बैठे थे, सो एक सज्जन आवेश मे उठे और बोले, "आप पुरानी सिंचाई-प्रणाली आहर व पइन के छिन-भिन्न होने पर दुःखी हैं, मगर मेरे सामने अनेक प्रश्न पानी से भरे पोखरों को लेकर हैं। जेसे, स्वतत्रता के पूर्व मछली, मखाना जेसी पोखर से पाई जाने वाली वस्तुएं किसी बाजार मे खरीद-बिक्री के लिए प्रायः नहीं भेजी जाती थीं। जो पोखर में उपलब्ध होता, उसे गांव वाले प्रयोग में लाते थे। पोखर हमारे रीति-रिवाजों में आज भी मौजूद है। जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के पश्चात बिहार सरकार द्वारा भू-सर्वेक्षण आरंभ कराया गया। सर्वेक्षण में पूर्व का गैरमजरुआ आम पोखर बिहार सरकार के पोखर के रूप में दर्ज किया गया। साथ ही मछली और मखाना का बाजार भी उपलब्ध हो गया। इस काम के लिए तालाब लीज पर दिया जाने लगा। गांव के लिए पोखर के पानी पर पाबंदी लगी और सिंचाई के लिए पानी लेने पर भी रोक लग गई। सिंचाई के पानी लेने से पानी घटेगा, मछलियां मरेंगी और तालाब सरकारी लीज पर नहीं मिलेगा। आम

आदमी का जो भावनात्मक संबंध देख-रेख और उपयोग को लेकर तलाब-पोखर से था, वह निराशा और उदासीनता में बदला। क्या इसमें सरकार और बाजार का बेजा हस्तक्षेप नहीं है, जिसने स्थानीय लोगों से उनका सहज जीवन और उसका प्रवाह छीन लिया?''

उनके बैठते ही दूसरे सज्जन उठे और उन्होंने श्रोताओं के सामने अपनी बात रखी—

''संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कवि बाण अपनी कृति कादंबरी (सातवीं शताब्दी) में पोखर-सरोवर खुदवाने को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे। लोक-कल्याण हेतु इस प्रकार के खुदवाए गए जलकोष को चार वर्गों में विभाजित किया गया है—(1) कूप जिसका व्यास 7 फीट से 75 फीट हो सकता है और जिससे पानी डोल-डोरी से निकाला जाए, (2) वापी, छोटा चौकोर पोखर, लंबाई 75 से 150 फीट हो और जिसमें जलस्तर तक पांव के सहारे पहुंचा जा सके, (3) पुष्करणी, छोटा पोखर, गोलाकार, जिसका व्यास 150 से 300 फीट तक हो, (4) तड़ाग पोखर, चौकोर, जिसकी लंबाई 300 से 450 फीट तक हो। कहने का अर्थ केवल यह है कि हमारे भारतीय समाज में पोखर केवल भौगोलिक मजबूरी नहीं, बल्कि परंपरा रही है। हमारी सोच का हिस्सा रही है। पोखर की चर्चा ऋग्वेद में भी है। जबसे गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र की रचना-संकलन प्रारंभ हुआ (800 से 300 ई. पू. की अवधि में) तब से इसे धार्मिक मान्यता और संरक्षण प्राप्त है। इन सूत्रों के अनुसार, किसी भी वर्ग या जाति का कोई भी व्यक्ति, पुरुष या स्त्री पोखर खुदवा सकता है और यज्ञ करवाकर समाज के सभी प्राणियों के कल्याण-हेतु उसका उत्सर्ग कर सकता है। आज भी यह काम पुण्य कमाने का समझा जाता है! मगर जो इस तरह के काम करने के लायक हैं वे अब धन इन जन-कल्याणकारी कार्यों में नहीं खर्च करते हैं...ऐसी मानसिकता के समय में मध्य बिहार की पपड़ियाई जमीन क्या कुछ नहीं झेल रही है, इसको शब्दों में बयान करना मेरे लिए कठिन है।''

उनकी बात खत्म होते ही एक और सज्जन खड़े हुए।

''आपके लिए कठिन होगा, क्योंकि शोर मचाने से भी क्या लाभ? हम अपनी मछलियों के रहते आंध्र की मछली खाते हैं। यहां तो हाल यह है कि मुहाने नदी का मुंह बंद कर सुखाड़ की स्थिति पैदा कर दी गई है। आदमी बैठा है फाल्गू की रेत पर और औरतें बैठी हैं पटना की सड़कों पर। याद होगा कि सिंचाई योजना बनाई गई थी उसको लोहे के शटर से हमेशा के लिए बंद कर दिया गया। उससे जो थोड़ी बहुत सिंचाई होती थी वह भी हाथ से गई। उसके चलते इस्लामपुर के 105 गांव, एकंगरसराय के 119 गांव, हिलसा के 133 गांव, परवलपुर के 136 गांव, चंडी के

103 गांव, थरथरी के 139 गांव, नगरनामा के 104 गांव, नहरनौसा के 104 गांव, जहानाबाद-घोसी के 153 गांव आदि प्रखंडों की लाखों हेक्टेयर भूमि पूरी तरह सूख गई। जब यह शटर बंद नहीं था तो 365 पइन थे। पैंतीस वर्ष से वह योजना यूं ही बंद पड़ी है। आखिर क्यों? जिस परियोजना के चलते मुहाने नदी बंद की गई, उसका क्या हुआ? हां, इससे लाखों किसान प्रभावित हुए और दूसरी ओर, बंद पानी से बाढ़ की स्थिति बन गई। बिहार के बंटवारे के बाद इधर के लोग केवल खेती पर निर्भर होकर रह गए हैं। वे सब गरीबी रेखा के नीचे वाले लोग हैं। आखिर यह परियोजना कब तक ठप रखी जाएगी? मुहाने नदी को लेकर 11 अक्तूबर 2002 से संघर्ष चल रहा है। लोग सत्याग्रह पर बैठे हैं। यह कोई दो-चार एकड़ की बात नहीं है। किसी एक जिले की बात भी नहीं है, बल्कि गया, नालंदा, जहानाबाद, पटना जिलों की है, जहां भूमि सुखाड़ की चपेट में है और किसान भूखे मर रहे हैं।''

बात समाप्त होते ही कई लोगों ने जोर से मेज थपथपाकर अपने आक्रोश का इजहार किया। संयोजक घड़ी देख रहे थे। तीन बजने वाले थे। लंच का समय तेजी से शाम की चाय की ओर बढ़ रहा था। बीच में टोकने का मौका ही नहीं था। एक अजीब तरह की गरमाहट हाल में फैल गई थी। इस बार जो सज्जन बोलने खड़े हुए उनका चेहरा भावना एवं क्रोध से तमतमाया हुआ था।

''क्या सरकार है? क्या न्याय है? एक तरफ सूखा, दूसरी ओर बाढ़। जल, जमीन, जानवर की समस्या की जगह हमने जातिवाद और धर्म के नाम पर समाज को बांटने का काम किया है। स्वतंत्रता के पश्चात्त आज तक किसी भी सरकार ने किसानों की समस्या को गंभीरता से नहीं लिया है। एक खास छोटे पइन में पानी गया, बाकी सब सूखे। पहले क्या था इस मुहाने, मनोदरी नदी से सैकड़ों पइन निकलते। 1965 से पहले तक वहां के किसान खुशहाल थे। इन पइनों में सरकार का कोई सहयोग न था। यह सब ऑटोमेटिक था। छोटी-छोटी नाली से किसानों का पटवन होता था। मगर अब तो पानी का स्तर ही नीचे चला गया है। धन खर्च हुआ, योजना बनी, मगर किसान परेशान। यह मध्य बिहार और दक्षिण बिहार का सबसे ज्यादा धनहर एरिया है, धान का इलाका है! सिंचाई के बिना काम कैसे चल सकता है? मुहाने नदी दक्षिण और मध्य बिहार के बीच से निकलती है। सरकार को चाहिए कि अपने विशेषज्ञों को लेकर इस पुरानी समस्या का निदान करे, ताकि बाढ़ और सूखड़ से दोनों ओर के किसानों को मुक्ति मिले। वैसे तो हमारे नेता एक तरफ कहते हैं कि बिहार का पानी बाहर नहीं जाएगा। मगर दुःख तो इस बात का है कि बिहार का अपना पानी स्वयं बिहारियों को ही उपलब्ध नहीं होता! मैं तो कहूंगा कि जब आधुनिक तकनीक के आधार पर नहर, वीयर और स्लूइस की व्यवस्था के द्वारा सिंचाई देने का साधन यहां दिया जा रहा है, उसके बदले में उस नदी को प्राकृतिक रूप

से छोड़ देना चाहिए, ताकि आहर-पइन आदि के माध्यम से—जो हमारे प्राकृतिक माध्यम भी रहे हे—उनसे सिचाई का एक सिलसिला बना रहे।"

एक सज्जन जाते-जाते कमाल से बोले, "डाक्टर साहब, सच तो यह है कि आहर-पइन को कौन पूछेगा, जब नदी के नाम पर धन मिलता है। 1985-86 में गंगा-प्रदूपण के लिए एक अरब रुपया केंद्र सरकार से यहां आया। सरकार ने एक बोर्ड बनाया, जिसका नाम विश्वास बोर्ड रखा गया। बोर्ड बनने के बाद सोचा गया कि गंगा का प्रदूषण रोकने के लिए क्या करना चाहिए? सो दो प्रमुख विषय लिए गए—जो मुर्दा जलाया जाता था वह अकसर अधजला ही गंगा में फेंक दिया जाता था। इससे प्रदूषण बढ़ता। उसको रोकने के लिए बिजली के शवदाह-गृह बनें। इसके लिए चार जिलों को चुना गया—पटना, छपरा मुंगेर और भागलपुर। पटना को पंद्रह करोड़ रुपया दिया गया। दो बिजली शवदाह-गृह बने, जिसमें से एक खराब पड़ा हे। दूसरे में कोई ज्यादा आता नहीं। यही हाल दूसरी जगह का है। सब जाते हैं उसी परंपरागत बासघाट श्मशान में, क्योंकि उनका विचार हे कि इसी दाहकर्म में मुक्ति है...इस तरह से गया लाखों रुपया पानी में..."

"बिलकुल उचित बात की है आपने...यह सब वातानुकूलित कमरे की बातें हे। फील्ड में जाएं तो सच्चाई कुछ ओर होगी। आहर-पइन, आहर-पइन की गोहार लगाने से यह नहीं पता चलता कि मुहाना में जहां पानी है वहां के आहर-पइन भर जाते हैं या भर जाते थे। वहां स्थानीय लोगों ने क्या किया? तालाब पाटकर घर-द्वार बना लिए। यही सत्य आहर-पइन के सिलसिले में भी हे। गंदे नाले तक पाटकर लोगों ने मकान खडे कर लिए हैं, तो बाढ़ भी आएगी, सूखा भी खेतों में होगा। जब तुम बहते पानी के बीच में आन खड़े होगे।" पास से गुजरते एक सज्जन जाते-जाते धोती की लांग पकड़ खड़े हो बतियाने लगे।

"जनसंख्या की भरमार है। मार्क बागलो पर्यावरण विशेषज्ञ हैं। उनका कहना है कि प्रति 20 वर्षो में भूमंडलीय जल का उपयोग दुगना हो जाता है। कुछ जनसंख्या की गति से दो बराबर है! क्यों, डा. कमाल, मैं कुछ गलत कह रहा हूं? पानी की किल्लत के पीछे बहुत बड़ा कारण हमारी जनसंख्या का है। अगर उद्योगीकरण की दौड़ ने अपनी रासायनिक गंदगी नदी-नालों में डाल प्रदूषण फैलाया तो जनसंख्या की अधिकता ने भी जलपूर्ति के संतुलन को गड़बड़ाया है। फिर रोगों का प्रकोप! दूषित जल से शरीर में क्या-क्या विकार उत्पन्न होते हैं, इसका ब्यौरा मुझसे अच्छी तरह डाक्टर साहब दे सकते हैं।" तीसरे सज्जन बोले।

दूसरे सत्र के आरंभ की घोषणा के साथ सभी तेजी से हाल की तरह बढ़े। कुछ लोग जरूरी काम के चलते क्षमा मांग बीच में ही विदा हुए।

दूसरा सत्र 'नहर और बांध : मानवीय त्रासदी के विकास-स्तंभ' शीर्षक पर था। सत्र के आरंभ में इस बात पर चिंता प्रकट की गई कि कोसी नदी तटबंध के वीच आठ लाख लोग विस्थापित होंगे, मगर उनके लिए कोई शोर मचाने वाला नहीं, सबका ध्यान मेधाजी के कारण 'नर्मदा बचाओ' की ओर है। अब तो यह विकास और उन्नति की बात मानी जाती है कि नदी को बांधो और विकास और उन्नति की बातें करो, चाहे विस्थापित लोगों का जो भी हाल हो! भौगोलिक परिवर्तन के चलते पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इसकी अवहेलना करना, इंसान, जीव-जंतुओं को कष्ट देना! आखिर ये किस तरह की प्रगति की बातें हैं?

दूसरे लेख में कुछ और तथ्य उजागर हुए, जैसे :

"नहर ने जहां अनेक स्थानों का जीवन बदला है, हरियाली आई, खेती पनपी है, वहीं पर रिसाव के चलते कई जगहों पर धरती दलदल में परिवर्तित हो गई है। छोटी-छोटी जगहों में इस तरह के परिवर्तन ने लोगों के खेत बर्बाद कर दिए हैं। दशकों पहले कोसी नदी पर एक बराज, दो तटबंध और हजारों किलोमीटर लंबी सिंचाई नहर का निर्माण हुआ और उसका शिकार वहां के स्थानीय लोग हुए। यही हाल महाकाली और गंडक बेसिन में हो रहा है। भारत को अपने पड़ोसियों से लोकतांत्रिक तरीके से व्यवहार करते हुए बाढ़ और बांध की समस्या को देखना होगा। 1937 में 10 से 12 नवंबर तक पटना स्थित सिन्हा लाइब्रेरी में एक बैठक हुई थी। श्री राजेंद्र प्रसादजी की कोशिशों से तत्कालीन गर्वनर हेलेट द्वारा आयोजित सम्मेलन में बाढ़ से बर्बादी और नियंत्रण के वैकल्पिक उपायों पर खुलकर तीखी बहस हुई थी। उस बैठक में शामिल अभियंताओं, अंग्रेज प्रशासकों से लेकर भारतीय राजनेताओं की एक ही राय थी कि बाढ़ की विभीषिका पर नियंत्रण के लिए नदियों को 'बांधना' नहीं बल्कि उनको 'स्वतंत्र' रखना ही उचित होगा। इसके पीछे की सोच बहुत साफ थी। भारत कृषिप्रधान देश है। कई सूखे इलाके इस बाढ़ के बहते पानी से न केवल सिंचित होते हैं, बल्कि ताल-तलैया, खेत, मैदान पानी से भरते हैं। इससे जल-स्तर भी भूमि के नीचे नहीं गिरता है, परंतु यही बाढ़ खतरनाक रूप धर लोगों की जानमाल को तबाह करे—इस स्थिति पर काबू पाना जरूरी है। उसके लिए उचित व्यवस्था बहुत जरूरी है। परंतु तटबंध के चलते लाभ कम, हानि ज्यादा है।

"श्री हेलेट ने तटबंध का विरोध किया। बंगाल के तत्कालीन अभियंता कैप्टन हाल ने सभी निर्मित तटबंधों को ध्वस्त करने की अपील की थी। यह विचित्र स्थिति है कि कहां तो गुलाम भारत नदियों की मुक्ति की बात कर रहा था और आज स्वतंत्र भारत नदियों को बांधने में हर तरह की समस्या का समाधान देख रहा है!

"इसी सिलसिले में पहले चरण दामोदर घाटी परियोजना और कोसी परियोजना

के रूप में हम देखते हैं कि किस तरह हम अंग्रेजों के जाने के बाद वैज्ञानिक शैली व आधुनिक विचारों की ओर बिना अपनी जमीन और जल का यथार्थ समझे—उनसे कम न दिखने के लिए—आधुनिक बनने की अंधी दौड़ में शामिल हो गए और आज उसका नतीजा हम भुगत रहे हैं।"

लेख समाप्त होते-होते कुछ लोग ऊंघ गए थे। वैसे ही हाल में लोग कम बचे थे। अब दो-तीन सज्जन और उठ गए तो हाल खाली-सा लगने लगा था। लेख पढ़ने वाले दूसरे सज्जन जब खड़े हुए तो उन्होंने मुस्कान के साथ कटाक्ष भी किया, "लंच के बाद अकसर ऐसा ही होता है।"

"व्यस्त लोग हैं...जो गंभीर हैं, वे आपको सुनने के लिए बैठे हुए हैं। उनकी उपस्थिति महत्त्वपूर्ण है।" एक ने हौसला बढ़ाया।

और लेख पढ़ना आरंभ हुआ। जिसका सारांश था—

"सिंचाई मंत्री कई बार संकेत दे चुके हैं कि बिहार की जलनीति ठीक नहीं है और यह तब तक ठीक नहीं हो सकती जब तक हम नेपाल के साथ बैठकर बात नहीं कर सकते हैं। केंद्र कहता है कि बात हो रही है, मगर नतीजा कुछ नहीं निकलता है। वहां से जो पानी आता है वह हमारे लिए काम का न होकर डिवास्टेशन का कारण बनता है। के.एल. राव की टिप्पणी को मैं यहां उद्‌घृत करना चाहूंगा कि कुछ न ज्यादा, तीन या चार वर्षा हो गई और सिल्टिंग जिस रफ्तार से उत्तर बिहार में हो रही है, उससे ऐसी स्थिति आ रही है या आ जाएगी कि कुछ घंटों में ही पूरा उत्तर बिहार बंगाल की खाड़ी में चला जाएगा। हो सकता है कि कलकत्ता भी तबाही से बच न सके। हम तबाही के बाद चौकेंगे। अभी केवल बातें हो रही हैं। एक बार रूस में लेनिन ने जलस्रोतों के बारे में कहा था कि वे प्रकृति की देन हैं, लेकिन पानी को नदियों के रूप में हमारी मर्जी से बहना होगा। जब हम पहाड़ पर चढ़ने को कहेंगे तो उसे पहाड़ पर चढ़ना होगा, जब उतरने को कहेंगे तो उसे नीचे उतरना पड़ेगा। ऐसी उनकी जलनीति थी। ऐसा उन्होंने प्रबंध किया था। उनकी कही बात में छुपे अर्थ को समझकर हमें यह देखना होगा कि हमारे पहाड़-पहाड़ियों पर बरसा पानी बह जाता है, जबकि हम उसे संचित कर सकते हैं। उसे काम में ला सकते हैं। मगर हमारा ध्यान नहरों और बांधों ने उलझा रखा है। गंदा पानी पीने के लोग इतने आदी हो चुके हैं कि रोग तक उन्हें छू नहीं पाते हैं और वह मरने की जगह वर्षों उसी पानी को पीकर जीवित रहते हैं! हमारी सरकार राहत-रसद पर जितना धन खर्च करती है यदि उसी को मिलाकर एक जलनीति बना, उस पर धन व्यय करे तो इस बेकार जाते पानी से हम कई तरह से लाभ उठा सकते हैं।"

लेख समाप्त हुआ। प्रश्न नहीं हुए मगर एक सज्जन ने खड़े हो बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कही—

"हमको अंधाधुंध तरक्की की दौड़ से बचना होगा। जहां जरूरी हो, बांध बने, मगर बांध इसलिए न बनाया जाए कि कुछ लोगों को अपने तिनमंजिले घर खड़े करने हैं। देश के सारे बांध अभी तक सुखाड़ और बाढ़ के नाम पर बने हैं, मगर एक बांध ने भी अपना लक्ष्य पूरा नहीं किया है। इसलिए हमें व्यावहारिक हो, अपने जल और जमीन को समझना पड़ेगा। किसी की नकल से हमारी मुक्ति नहीं हो सकती है। हमारी नदियां चाहे गंगा हों या ब्रह्मपुत्र भराव से बाढ़ में उबर जाती हैं, मगर जहां समाज और उसके लोग सचेत थे, वहां सूखी नदियां फिर मे भर उठीं। 'रूपारेल' और 'अरवरी' नामक नदियां इसका अपवाद हैं। इन नदियों का बेसिन सुखाड़-बाढ़मुक्त बन गया है। यहां 1995-96 में अधिक वर्षा के बावजूद बाढ़ नहीं आई और 1998 में बारिश की कमी में सुखाड़ नहीं हुआ। यह सामाजिक चेतना थी जो जलाशय को लेकर सचेत थी कि ये नदियां हैं तो हम सुखी हैं। ये नदियां साफ-सुथरी बहेंगी तो हम भी स्वस्थ व निरोग रहेंगे।"

सत्र की समाप्ति पर कमाल ने बाहर निकल समीना को फोन मिलाया। खुरशीदआरा ने कहा, "समीना की तबियत कुछ गिरी-गिरी-सी है। अभी थोड़ा सोई है। जगाना ठीक नहीं है। कहीं सिर में दर्द न हो जाए, क्योंकि दोपहर से कह रही थी कि मुझे बड़ा अजीब-सा लग रहा है। समझ में नहीं आ रहा है, क्या करूं! तुम कब लौट रहे हो?"

इतना सुनना था कि कमाल के मुंह से निकला—"अभी इसी समय।" आयोजकों ने विनती की—"गांव का सारा कार्यक्रम आपके न जाने से विफल हो जाएगा। दूर-दूर के गांव से लोग आपका—'वक्तव्य दूषित जल और हमारा शरीर' सुनने पहुंचे होंगे, बस एक रात ही की तो बात है!" मगर अब कमाल के लिए पल-भर भी पटना में रुकना असंभव था। दिल कह रहा था—'समीना बीमार है। उसे तुम्हारी जरूरत है।' और दिल के आगे अब उसे कुछ भी न अच्छा लग रहा था, न महत्त्वपूर्ण।

39

कमाल आखिर इलाहाबाद पहुंच ही गया। बंगले में घुसते ही उसके कानों में बच्चों के रोने की आवाज सुनाई पड़ी, शायद उनकी मालिश चल रही थी। वह तेज कदम बढ़ाता हुआ बेडरूम की तरफ बढ़ा। समीना बिस्तर पर सुस्त पड़ी थी। कमाल को देखकर मुस्कराई और उठकर बैठ गई।

"क्यों...क्या हुआ मेरी लिल्ली घोड़ी को? बच्चों ने तंग कर दिया है क्या मम्मी

को? इन्हें रात को बॉटलफीडिंग पर डाल देते है। ठीक है।'' कमाल ने बेकरारी से समीना को सीने से लिपटाते हुए कहा। फिर उसके कान में फुसफुसाते हुए बोला, ''तुमसे ज्यादा कीमती दुनिया में मेरे लिए कुछ भी नहीं हे, सुम्मो! तुम ठीक रहती हो तो मैं अपने को बड़ा मजबूत पाता हूं, वरना...''

''तुम नाहक इतना परेशान हो रहे हो...मैं ठीक तो हू।'' समीना ने इतना कह कमाल के गालों का चुंबन लिया और उसके सीने पर अपना सर रख दिया।

कमाल समीना को हल्के-हल्के सहलाता रहा। कुछ पल यूं ही गुजर गए, फिर समीना को सोया जान कमाल ने उसे लिटाना चाहा तो उसे समीना का बदन सहज नहीं लगा—आंखें अधखुली, मगर नजरें ठहरी हुई-सी! उसने समीना की नब्ज देखी। नाक के पास हाथ लगाया, फिर तेजी से चीखा, ''छोटी अम्मी...अब्बी! देखिए तो समीना को क्या हो गया है?''

कमाल डाक्टर होकर भी स्थिति को स्वीकार करने की हिम्मत अपने में नहीं जुटा पा रहा था। वह समझ गया था कि समीना मेडिकली मर चुकी है, तो भी वह समीना के माथे पर चुंबन ले उसे जगाने की कोशिश कर रहा था।

खुरशीदआरा को तो जेसे सांप सूंघ गया था। वह कमरे में घुमते ही ठिठककर जहां खड़ी थीं वहीं खड़ी रह गई। जमाल खां को पूरी स्थिति अजीब लगी। तो भी हाजिरदिमागी से उन्होंने काम लिया और फौरन ही टेलीफोन कर डॉ. बजाज को इत्तला दी कि वह फौरन घर पहुंचें। समीना की हालत ठीक नहीं है।

डॉ. बजाज ने समीना की अधखुली आखों को बंद कर उसके बदन पर सफेद चादर उढ़ा दी।

इस सदमे से कोई उबर नहीं पा रहा था। किसी को यकीन नही आ रहा था कि समीना मर भी सकती हे। वह भी चटपट! न कोई बीमारी, न कोई दुर्घटना! फिर यह हादसा क्योंकर हुआ? बदन का परिंदा बिना किसी आवाज के किस दिशा मे उड़ गया?



समीना को दफनाने के लिए मुस्तफावाद ले जाना था। जमाल खां पूरी तरह टूट चुके थे। शायद उन पर दूसरा अटैक हुआ था। कमाल ने बहनों को फोन पर इत्तला दे दी थी। सफिया रायबरेली से पहुंच गई और कमाल से लिपटकर शिकवा करने लगी।

''भैया, तुम तो डाक्टर थे! क्यों नहीं मेरी भाभी को बचा पाए! बोलो भैया...जवाब दो...'' उसके इस तरह लड़ने से कमाल अपने को मुजरिम समझने लगा, मगर वह कर भी क्या सकता था!

वह मजबूर था।

"मौत एक सच है, बेटी। उसे कुबूल करने में ही समझदारी है।" किसी ने सफिया को समझाने के लिए कहा।

"मैं नहीं जानती...मुझे मेरी भाभी चाहिए...मैं उनके बिना नहीं रह सकती।" सफिया ने जिद करते हुए कहा।

"तुम्हारी भाभी को 'ब्रेन इनफ्राक्ट' हुआ था! कभी-कभी डिलीवरी के बाद एकदम से हारमोंस चेंजेज आते हैं, जिससे खून में जबर्दस्त तबदीली आ जाती है, जो ब्रेनहैमरेज की वजह बन जाती है। चूंकि इस बीमारी का कोई भी लक्षण पहले से नहीं नजर आता, इसलिए इस मर्ज को पकड़ा भी नहीं जा सकता है...समझ रही हो न? पहले से डॉक्टर इस बीमारी को प्रिडिक्ट नहीं कर सकते। टेक्नीकली इसका कोई सिस्टम भी हम पहले से समझ नहीं पाते हैं और न ही कुछ गेस ही कर सकते हैं। यहां तक कि इसका कोई ट्रीटमेंट भी मौजूद नहीं है। तुम अंदाजा कर सकती हो कि ऐसी मौतों पर डॉक्टर अपने को कितना बेबस पाता होगा?" डॉ. बजाज ने सफिया को समझाते हुए कहा।

"हमारे हाथ में कुछ भी होता तो हम समीना को बचाने में वह सारी रेमिडी और नॉलेज लगा देते, मगर अफसोस! अभी हम इस बीमारी का इलाज नहीं खोज पाए है।" डॉ. बजाज ने फिर अपनी सफाई देते हुए अपनी बात दोहराई।

सफिया के शिकवे बंद हो गए मगर आंखों का बरसना नहीं रुका।

गांववालों के भी इस जवान मौत पर अनेक सवाल थे, जिसका जवाब खुरशीदआरा के पास केवल इतना-सा था—किस्मत! कहना तो वह चाहती थीं, बदनसीबी, मगर इस शब्द से वह डरने लगी थीं कि कहीं यह उनकी जिंदगी का सच अनजाने में बच्चों का सच न बना दिया जाए! यह हादसा ऐसा दर्दनाक था, जिसने दुश्मनों के दिल भी पिघला दिए थे। जो सुनता वह अफसोस करता। यहां तक कि कमाल से चिढ़ने वाले डाक्टर भी इस मौके पर अपने को रोक नहीं पाए और दुःख प्रकट करने पहुंचे। सारी रस्में पूरी हो गईं। बच्चों की तरफ से मां से दूध बरख्शवाने की रीत भी पूरी हुई और जब कब्र में उतारने से पहले अपनों के लिए समीना का चेहरा खोला गया तो कमाल को चक्कर-सा आ गया। कब्र में मुट्ठी पर मिट्टी डाल उसने धीरे-से कहा—"खुदाहाफिज—बीरबहूटी।"



पंखुड़ी और पराग की आदत मां का दूध पीने की थी, इसलिए दोनों बोतल के निपल में मुंह ही न लगाते थे। कई घंटों की भूख और उनकी रुलाई देख सब परेशान थे। शहद और पानी से गला कब तक तर किया जाता? समीना को दफन होने के बाद

शायद कुदरत ने बच्चो को सब्र का पहला पाठ पढ़ाया और उन्होने भूख से बिलबिलाते हुए बोतल में मुंह लगाया। पहली फीडिग के चद घंटे बाद बच्चो को डायरिया हो गया। यह देख कमाल के हाथ-पैर फूल गए। मन आशका से थरथराने लगा कि कही ये दोनो मासूम...इतने छोटे बच्चो को दवा देना या ड्रिप पर डालना भी खतरनाक था। खुरशीदआरा को अब अपनी बदनसीबी पर गुस्सा आने लगा।

बच्चे समीना की गोद की गर्मी और सीने की खुशबू को तलाश कर किसी की गोद मे नहीं रुक रहे थे। उनकी बेचैनी सब को बेहाल बना रही थी। डॉ. वजाज इलाहाबाद वापस जा चुकी थीं। बच्चो का यह हाल देख कमाल समझ नही पा रहा था कि वह बच्चो को लेकर इलाहाबाद जाए या समीना के पास रुके, अभी उसके कब्र की मिट्टी सूखी भी न थी। तग आकर उसने सब कुछ हालात पर छोड़ दिया।



समीना को गुजरे आज तीसरा दिन था। सेवुम की तेयारी चल रही थी।

राबिया, मखफूर और राबिया की अम्मा पुरसा देने मुस्तफाबाद पहुचे थे। चंदन हलवाई ओर पन्ना सुनार भी आए थे। जाने कितने लोग थे जिन्हे न कमाल पहचानता था, न खुरशीदआरा। वे रोडवेज की बस से लगातार पुरसा देने पहुच रहे थे। कमाल और समीना को जानने वालो का कोई अत न था। उनका रिश्ता सबसे इंसानियत का जो था। जो आता वह समीना की तारीफे करता। कमाल के एहसान गिनवा रहा था।

"बीबी! हमारा तो आखिरी सहारा भी जाता रहा। मना किया था हमे छोटी दुल्हन बेगम ने आने को, मगर यह दिलासा तो था कि हमारा एक घर मौजूद है। वाह रे किस्मत! इन बूढ़े हाथों से जो भी खिदमत होगी, राबिया की मा इन मासूमो की अजाम देगी।" राबिया की मा ने रोते हुए कहा। यह आसू उसके दिल की गहराइयों से निकलकर टपक रहे थे। राबिया के जेहन में चार चांद लगाने वाले जोड़े इसी घर से मिले थे। मियां की कमाई का सुख इसी घर ने उसे दिया था। आज वह घर बर्बाद हो गया। मासूम शीरख्वार बच्चे बिना मां के, दूध की बोतल मुंह से लगाए हैं। हजार तरह की बातें राबिया की मां का दिल छलनी कर रहे थे। राबिया की मां को लिहाज न होता तो वह वहीं टिक जातीं, मगर न चाहने पर भी उठीं और खुरशीदआरा को सलाम कर दामाद की कार में आ बैठीं। कब्रिस्तान के पास से होकर गुजरीं तो वह बिलबिलाकर रो उठीं।

"बड़ी बेगम! काश, आप जिंदा होतीं तो मेरी यह शान देख आप जरूर खुश होतीं, मगर वाह रे किस्मत!"



सेवुम के दूसरे दिन कमाल का इलाहाबाद लौटना जरूरी था। जमाल खां अस्पताल में थे। वैसे तो खतरे की कोई बात न थी। अटैक भी मामूली-सा था, मगर डाक्टर ने यह जरूर चेतावनी दे दी थी कि तीसरे अटैक में कुछ भी घट सकता है। कमाल के लिए दुनिया सूनी हो चुकी थी। समीना का न रहना और उसके वजूद का छाया रहना—दोनों कमाल को बेकरार किए हुए थे।

बच्चे जब कभी समीना के लिए हुड़कते तो घर में कोहराम-सा मच जाता था। किसी तरह बहलाए नहीं बहलते थे। बदलू को आखिर एक तरकीब सूझी। उसने समीना के दुपट्टे को अपने सीने के चारों ओर लपेटा और रोते पराग को गोद में उठाया। पराग रोते-रोते चुप हो गया और दूध पीने के लिए बदलू के सीने पर मुंह रगड़ने लगा। पहले तो बदलू उसकी बेचैनी समझ नहीं पाया, जब बार-बार वह मुंह मारने लगा तो बदलू की आंखें भर आई। उसने बेकरार हो पराग को सीने से लिपटाया और माथा चूमा, फिर अपने सीने से बोतल लगा पराग के मुंह में निप्पल डाला। बरसों से भूखा जैसे खाने पर टूटता है, कुछ वैसा ही हाल पराग का था।

दूध पीकर पराग सो गया। बदलू ने उसे गोद से उठा गद्दे पर लिटाया और रोती पंखुड़ी को लेने खुरशीदआरा के कमरे की तरफ बढ़ा। खुरशीदआरा को बदलू का हुलिया अजीब लगा। इससे पहले कि वह कुछ समझतीं, बदलू ने बड़े विश्वास से पंखुडी को गोद में उठाया और छाती से लगा थपकने लगा। मां की खोई खुशबू पाकर पंखुड़ी का भी हाल पराग जैसा हुआ। उसके चुप होते ही वह कमरे में लौटा और बाटलवार्मर से दूध की बोतल निकाल निप्पल पंखुड़ी के मुंह में डाला। पंखुड़ी सुबक रही थी। मगर उसने निप्पल मुंह में थामा और दूध पीने लगी। बदलू के पीछे-पीछे आई खुरशीदआरा बदलू की हरकतें देख सकते में थीं।

"अम्मा जान! दोनों सो गए हैं। अब आप जाकर नाश्ता कर लें। मैं इनके पास बैठा हूं।" बदलू ने खुरशीदआरा को चुपचाप खड़ी देख कहा।

"तुमने भी तो सुबह से कुछ नहीं खाया है। पहले तुम नाश्ता कर लो, मैं जरा ठहरकर करूंगी।" इतना कह खुरशीदआरा बच्चों के पास पलंग पर लेट गईं। उनके बदन में आराम-भरी सनसनाहट-सी दौड़ रही थी। बदलू ने उन्हें आज बेमोल खरीद लिया था, जिसकी कीमत वह इस जिंदगी में तो अदा करने से रहीं। उनका दिल रोने को चाह रहा था...बदलू को सीने से लगाकर अपने मरे बेटों को याद करने का चाह रहा था। इंसानी जज्बा किसी रिश्ते का मोहताज नहीं होता, वरना बदलू की जगह दोनों चची का इस मुसीबत की घड़ी में होना कितना जरूरी था!



वक्त तेजी से गुजर रहा था। इसके बावजूद कमाल को घर के हर कोने में समीना

बसी हुई महसूस होती। बाग में, कमरों में, छत और सड़कों पर। इस भरे-पूरे घर मे पहले अम्मी के जाने से उदासी आई और अब समीना के चले जाने से सन्नाटा छा गया है। बच्चों की तरफ जब नजरें उठाकर कमाल देखता तो उसका दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाता कि यह कैसा इंसाफ है ऊपरवाले का, जो इस उम्र में मां का साया सर से उठा दिया! क्या बताऊंगा इन्हें...इनकी मा क्या थीं। ममता जो वह दूसरों पर लुटाती थी, वह अपने ही तन के टुकड़ों को न दे पाई।

—मैं मां और बाप दोनों का प्यार दूंगा इन्हें। मैं रातों को जागूंगा। इन्हें किसी तरह की कमी नहीं होने दूगा...समीना, तुम्हारा शुक्रिया जो तुमने जाते-जाते इतने प्यारे तोहफे दिए हैं। वरना आज मैं किसके सहारे जीता...

कमाल जज्बात की रौ में बहुत कुछ सोचता कमरे में अकेला बैठा रहता। क्लीनिक भी अकसर देर में पहुंचता और जल्द उठकर चला आता। उसका मन उचटा-उचटा-सा रहता। उसकी यह हालत देख आखिर कंपाउंडर को कहना पड़ा कि मरीज परेशान हैं। आज जब फिर कपाउंडर का फोन आया तो उसे अपनी हरकत पर शर्मिंदगी हुई और वह सीधा बच्चों के कमरे में पहुंचा। वहां बदलू दोनों को कपड़ा पहना रहा था। कुछ देर वह छोटी अम्मा का हाथ बंटाते हुए बदलू को देखता रहा। फिर धीरे-से बोला, "छोटी अम्मी, बदलू को क्लीनिक में अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है।"

"लेते जाओ आज इसको अपने साथ।" खुरशीदआरा बेमन से बोलीं।

"चलो, तैयार हो जाओ।" इतना कह कमाल पराग को हुमकते देख उसके साथ खेलने लगा।

बदलू वहीं खड़ा रहा। फिर बड़े दृढ़ स्वर में धीरे-से बोला, "अम्मा जान, मैं अब पराग और पंखुड़ी को छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा।" कमाल चौंक पड़ा।

"तो मिट्ठू मिया, जवान होने के साथ-साथ आप नाफरमाबरदार भी हो रहे हैं?"

"इनसे दूर जाने के लिए मुझे मजबूर मत करिए। मुझे इन्ही के पास रहने दें।" कहते-कहते बदलू ने हाथ जोड़ दिए और उसकी आंखें भर आई।

खुरशीदआरा सर झुकाए रहीं, जैसे उन्होंने न कुछ देखा, न सुना।

कमाल ने उसे गहरी नजरों से देखा और लंबी सांस ले गर्दन हिलाई, फिर कमरे से निकल बाहर की तरफ बढ़ा। रास्ते-भर वह बदलू के बारे में सोचता गया। अनेक दृश्य थे जो उसकी आंखों के सामने नाच रहे थे—उसका दरवाजे पर भूखा-प्यासा खड़ा होना, जानवरों को पानी देना, मरीजों को बातों से बहलाना और अब मां बनकर पराग और पंखुड़ी की परवरिश की हठ बांध लेना। इस लावारिस लड़के के मां-बाप कौन

होंगे? उनके अंदर की अच्छाई इस लड़के में किस खूबसूरती से अपनी शाखें फोड़ रही है। जीते रहो बदलू...इसी तरह इंसान बने रहना, यार!



जमाल खां के पास पुरोहित और सीमा पुरोहित रोज आकर बैठते या फिर उन्हें अपने साथ हवाखोरी के लिए ले जाते। कुछ देर संगम के किनारे बहते पानी को निहारते, कंपनी बाग में टहलते या खुसरूबाग में मकबरे के पत्थर पर बैठ आसमान, पेड़ और जमीन को ताकते। बीच-बीच में कुछ दिलचस्प चुटकला सुनाते या पुरानी कोई बात याद दिला उन्हें हँसाने की कोशिश करते। जमाल खां को समीना की मौत ने तोड़कर रख दिया था। घर जो उन्हें जन्नत लगा करता था, अब जहन्नुम की तरह उन्हें यादों की आग में भूनता रहता था। जितनी देर घर से दूर रहते, उन्हें राहत मिलती। घर में घुसते ही दोनों बच्चों का रोना उनका दिल चीरकर रख देता। दिल चाहता, चीख-चीखकर रोएं और खुदावंद से पूछे कि आखिर यह सारा एताब किस लिए इस घर पर गिरा है? हमारा गुनाह क्या था जो हमसे हमारी खुशियां तूने छीन लीं?

घर का हर फर्द अपने अंदर यात्रा कर रहा था। नौकर भी परेशान थे। आया, हाशिम, उधर उसका पिता हातिम और मां, चारों अपनी-अपनी जगह सोचते कि ऐसा कौन-सा काम अंजाम दें कि घरवाले खुश रहने लगें। साहब की सेवा कैसे करें जो वह पहले की तरह अंदर-बाहर, गांव-शहर का फासला नापते उसी तरह सबसे हँसी-मजाक करें। इस घर के सहारे उनकी अपनी खुशियों ने पख फड़फड़ाना सीखा था। दुःख-सुख के समय अपने सर पर उनका साया पाया था। आज उनके मालिक टूट गए हैं तो उनके पास उन्हें होसला देने के लिए कोई शब्द ही नहीं बचे हैं! कहां से लाएं वह मरहम जिसके लेप से उनका घाव भर सके?

एक दिन दोपहर को रत्ना अपने बेटे को गोद में लेकर मिलने आई। उसे देखकर ख़ुरशीदआरा का सब्र का दामन छूट गया और वह उससे गले मिलकर जी भरकर रोई। जब दिल का गुबार कुछ हल्का हुआ तो चेहरा पोंछ एकाएक सोते बच्चे को देखकर हंस पड़ीं।

"बच्चे भी कैसा इंसानों को जोड़ने का काम करते हैं। एक बच्चा आता है ओर दर्जन-भर रिश्तों को जन्म देता है। अब देखो पराग और पंखुड़ी की मैं नानी हूं और रमेश के रिश्ते से तुम्हारे बेटे की दादी। क्या नाम रखा है इसका?"

"सुरेश कुमार...मगर प्यार से कोई गुड्डू, मुनुवा कुछ भी पुकार लेता है।"

इतना कह रत्ना भी हँस पड़ी।

"शमीमा भी समीना के चालीसवें में आई थी। लखनऊ से तीन घंटे की दूरी पर है मुस्तफाबाद। इलाहाबाद आने को कह रही थी।" खुरशीदआरा बोलीं।

"हा, अब तो वह मेरे बच्चो की मौसी और पराग-पखुडी की बुआ बनी है। आना तो पडेगा।" रत्ना इतना कहकर जोर से हँसी। खुरशीदआरा को रत्ना कुछ भरे-भरे बदन और खिले चेहरे की लगी। मा बनने की मलाहत उसके चेहरे पर दगदगा रही थी।

"रमेश कैसा है?"

"ठीक है। वही छोडकर गए है। टू व्हीलर ले लिया है। लेने आएगे तब देखिएगा। सब कहते है, कुछ कुछ मोटे हो गए है।" रत्ना बात-बात पर हँस रही थी।

खुरशीदआरा ने बच्चो की बोतल बनाई। उधर रत्ना ने आचल की आड मे बेटे को दूध पिलाना शुरू किया।

"बुआ का छोटा लडका भी आपका होकर रह गया है। यह अच्छी बात है।" रत्ना बोली।

"कौन?" चौक पडी खुरशीदआरा, फिर कुछ समझकर हँस पडी और बोली, "यह तो मेरा बेटा है।"

हाशिम ने चाय-नाश्ते की मेज सजा दी थी। रमेश भी बडा ख़ुश नजर आ रहा था। उन दोनो से मिलकर खुरशीदआरा को बहुत अच्छा लगा। अरसे बाद हल्की-फुल्की बाते हुई थी, जिससे दिल भी हल्का हुआ था। उन्हे अपना घर याद आया। अपना कमरा, फिर बुआ। बुआ का बेटा रहमत भी समीना के चालीसवे मे बहू-बेटा को लेकर आया था। एक दिन वह लोग ठहरे भी थे। खुरशीदआरा के सीने की गहराई से एक दर्द-भरी आह निकली, जिसमे समीना के नाम की प्रतिध्वनिया ही प्रतिध्वनिया थी।

40

कमाल के सर मे कई दिनो से दर्द था। इधर उसने बाहर शहरो की यात्रा पर निकलना लगभग छोड दिया था। सब उसकी स्थिति जान चुके थे, तो भी सेमिनार और गोष्ठी की इत्तला बराबर उसे देते थे। इधर इलाहाबाद के गाधी प्रतिष्ठान ने जब 'नदियो का जुडना एक महत्त्वाकाक्षी परियोजना' पर एक दिन का सेमिनार रखा तो वह अपने को नही रोक पाया। सार्क देश के भी कुछ विद्वान आए हुए थे। गोष्ठी के आरभ मे एक सक्षिप्त-सा भाषण था

"उपस्थित विद्वानो, समाजसेवियो, पत्रकारो और सभागार मे उपस्थित सभी

श्रोताओं को एक बार फिर मैं याद दिलाना चाहता हूं कि नदियों को जोड़ने की परियोजना पर भारतवर्ष को 56 जागरूक नागरिकों ने भूतपूर्व प्रधानमंत्री के नाम एक मेमोरंडम जारी किया है। इनमें हमारे वैज्ञानिक, समाजशास्त्री, बुद्धिजीवी, भूगर्भशास्त्री, जन-आंदोलनों के नेता, विश्वविद्यालय के अध्यापक शामिल हैं। उन्होंने अपनी गहरी चिंता व्यक्त करते हुए निर्भीक हो अपने विचार रखे हैं, जो इस परियोजना के पक्ष में न होकर इसकी कटु आलोचना में हैं। यदि हमने जन-स्तर पर इस योजना को रद्द करने का आंदोलन नहीं चलाया तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी ही नदियों के चुल्लू-भर पानी के लिए तरस जाएंगे। ईस्ट इंडिया कंपनी के बहाने जिस तरह पहले व्यापार की आड़ ले हमें गुलाम बनाया गया था, उसी तरह फिर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अधीन हो हम सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्तर पर एक सुनहरी गुलामी की जंजीरों में जकड़े जाएंगे। इसलिए आज हमें सचेत रहने की जरूरत है! कुछ वर्षो पहले भी इसी तरह की योजनाओं का स्वागत हमने नहीं किया था। बतौर मिसाल, जब बड़े बांधों का निर्माण प्रगति के नाम पर तेजी से हो रहा था, उस समय कैप्टन दस्तूर की 'गारलैंड कैनाल' योजना को ठुकरा दिया गया था। मैं उनकी बुद्धिमानी पर प्रश्नचिह्न नहीं लगाना चाहता हूं। वह पायलेट थे, कितने व्यावहारिक थे, मगर मेरा निवेदन है कि नदियों को जोड़ना—वह भी भारत जैसे विराट देश में जहां की न भौगोलिक स्थिति एक समान है न टोपोग्राफी उचित नहीं है! पानी भी अपने अंदर 'जीवन-तरंग' रखता है। हर स्थान पर वह वही व्यवहार नहीं करेगा जैसे अपने पुराने तल पर करता था। और न ही भूमि भी वही सहनशक्ति का प्रदर्शन करेगी जो बरसों से पानी के नीचे दबी या सूखी पड़ी रहने की स्थिति में करती आई है। ऐसी हालत में नदियों को जोड़कर देश का क्या हाल होगा? जहां राजनीतिक विचार सहिष्णुता का पालन नहीं कर पाते हैं, वहां पानी का बंटवारा संतुलन एवं धैर्य का प्रदर्शन कर पाएगा? यह भारत-विरोधी परियोजना है, जो भारतीय दिमाग की उपज नहीं, बल्कि विदेशी षड्यंत्र की चाल है। यह हमारी जरूरत नहीं, बल्कि विदेशी कब्जा नीति है। इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा अपने देशवासियों को जल के प्रति जागरूक करना होगा। यदि मैं यह कहूं कि हमारी लापरवाही से ही हमारी जलराशि इस स्थिति में पहुंची है•तो बुरा न होगा। बकौल किसी ज्ञानी के :

धोबिया जल बिच मरत पियासा

जल में ठार पियत नहीं मूरख

अच्छा जल है खाता..."

इसी के साथ हाल में हँसी गूंजी। वह सज्जन बैठ गए।

"आपकी बातों से हम सहमत हैं, दूबेजी। इसमें कोई शक नहीं है कि हमने

अपनी नदियों को दूषित किया। पोखरो, तालाबो, नालों को पाटा, कुएं को छोड़ा और वाटरवर्क्स की दया पर अपने को छोड़ा। यदि मैं कहू कि इराक पर हमला केवल तेल के लिए नहीं, बल्कि पानी के लिए भी हुआ है, तो गलत न होगा। इस्राइल को पानी से भरी दजला, फरात भी चाहिए यह वही दो नदियों का इराक है जहां चौदह सौ वर्षो पहले कर्बला युद्ध हुआ और पानी हुसैन के परिवार के लिए बंद किया गया था। जाने कितने देश हैं जहां से एक ही नदी गुजरती है। आप बंगलादेश और पाकिस्तान को लें। उधर नेपाल को लें। कैसी अजीब स्थिति बन जाती है?" सार्क देश संगठन के अध्यक्ष राव बोल उठे।

अभी उनकी बात खत्म भी नहीं हो पाई थी कि बांग्लादेश से आए जलबचाव इंजियो के कार्यकर्ता बोल उठे–

"देखिए जो आने वाला खतरा है। उसका अनुमान हम पुराने अनुभवों की कसौटी पर कर सकते हैं। मामला आपका है आपस मे नदियों से जोड़ने का, परंतु हम उस सारी उखाड़-पछाड से प्रभावित होगे। फरक्का बांध बना। बनाया इसलिए गया था कि कोलकाता के बंदरगाह को पर्याप्त जल मिल सके। मगर यह बांध भी उस बंदरगाह को नहीं बचा पाया। दूसरी ओर, इस बांध ने बांगलादेश को जो हानि पहुंचाई है, उसका जिक्र जरूर करना चाहूंगा। इस बराज के बनने से बाग्लादेश के कुष्टिया सहित सात आठ जिलों में जल-स्तर काफी नीचे चला गया। जिसके कारण पेड़-पौधों पर बहुत बुरा असर पड़ा। जमीन का लवण भी जल के साथ नीचे गया। सुंदरी पेड़, जिसकी हमारे यहां बहुतायत थी, जिसके कारण जगल का नाम सुदरवन पड़ा, वह पेड़ अब खोजने से ही नजर आते है। वही हाल मछलियो का हुआ। प्रवासी पक्षियों के आवागमन पर असर हुआ। कई नदियां सूख गई है। यह सारा बदलाव 1960 से शुरू होता है। हमे पता है कि नदियों के जुड़ने से बाग्लादेश पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ने वाला है। जो पानी हमको गगा से मिलता है वह दक्षिण भारत भेज दिया जाएगा और हमारी खेती सूख जाएगी। हमारा कोई मतभेद भारत से नहीं है। उसी के कारण हमें स्वतत्रता मिली। आगे भी हम सबध मधुर बनाकर रखना चाहते है, मगर जब हमे व्यावहारिक एव बुनियादी जरूरतो से टकराना पडेगा तो हम चाहेंगे कि ऐसी योजना लागू करने से पहले भारत अपने पडोसी देशो की ओर भी देखे।"

"बिलकुल देखना पड़ेगा। हम नेपाल से आए है। यदि भारत नदियों को जोड़ता है तो भारत नेपाल की बड़ी नदियां, महाकाली, करनाली, कोसी एवं गंडक के जल को इस्तेमाल करेगा। जिसके कारण वर्षा ऋतु में नेपाल के निचले इलाके में बाढ़ की सभावना बढ़ जाएगी।" नेपाल से आए महाशय बोल उठे।

उनकी बात समाप्त होने पर भारतीय विद्वान प्रो. मोहंती ने बोलना प्रारंभ किया :

''अभी योजना शुरू नहीं हुई, मगर वाद-विवाद चल पड़े। देखिए, लालूजी ने अबसे पहले गंगा का जल प्रदेश से बाहर देने पर मनाही लगाई। अब दूसरे प्रदेशों को देखते हैं। केरल में पंबा-अचनकोविल-वैप्पार नदी जोड़ का विरोध है। उधर केन-बेतवा नदी जोड़ योजना का विरोध बुंदेलखंड में हो रहा है। वहां भी किसानों एवं विशेषज्ञों ने 'केन बचाओ' मंच से इस विचार को खारिज किया। उधर केरल के मुख्यमंत्री ने विरोध प्रकट करते हुए कहा है कि यदि ऐसा होता है तो ट्रावनकोर क्षेत्र की हजारों एकड़ वनभूमि डूब जाएगी एवं कोट्टायम, अलपूझा एवं पठासीमिट्ठा जिले सूखे की चपेट में आ जाएंगे। समुद्री जल के प्रवेश के मद्देनजर कुट्टानाद इलाका बुरी तरह प्रभावित होगा। यही हाल बंगाल और आंध्रप्रदेश का है। संक्षेप में सुखाड़, बाढ़, पर्यावरण के अलावा यह परियोजना ऋण का बोझा हमारे कंधों पर धोबी की लादी की तरह लाद देगा और उसके बाद का जो हाल होगा वह वही जो गधे के दोनों पैर बांधकर धोबी करता है। प्रकृति ने जो हमें दिउ हैं उन स्रोतों को हम सहेजें न कि नई तकनीक का ओछा प्रयोग करने की ललक में कान को गाल पर लगा दें और आंख को सर के पीछे और कहें कि यह हमारी मेडिकल उपलब्धियां हैं। बात इंसान की मुक्ति की है, उसे पूज्य बनाने की नहीं। इसलिए इस धरती की देख-रेख हम उचित तरीके से करें, न कि उसे अपनी इच्छाओं की प्रयोगशाला बना उसका सत्यानाश कर डालें।'' इतना कह मोहंतीजी बैठे। कुछ लोग मुस्कराए।

''जहां पानी नहीं है, वहां सूखा झेल रहे लोगों लिए नदी का उनके गांव-कस्बे आकर अचानक बहने लगना एक रोमांचकारी सपना हो सकता है और उसी को भुनाने की कोशिश में वे लोग एकजुट हो चुके हैं, जिन्हें न यथार्थ से कुछ लेना-देना है और न ही उन्हें नदी के तंत्र, अंतर बेसिन स्थानांतरण, बड़ी-बड़ी नदीघाटी और अंतर बेसिन परियोजनाओं का कोई ज्ञान है। कुछ तो ऐसे हैं इनमें, जिन्हें जल राजनीति एवं अर्थनीति की तनिक भी सूझ-बूझ नहीं। वे केवल बड़े ओहदेदारों के नाम तथा पद से प्रभावित हो उनकी बातें दोहरा रहे हैं—यह जाने बिना कि यह सारे लोग उनके नहीं, बल्कि किसी और के प्रति वफादार हैं। यहां रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या हल ही नहीं हो पा रही है और हम करोड़ों का बजट बना रहे हैं! आप जानते हैं और यह भी जानते हैं कि आपके शहर में बहने वाली गंगा-जमुना का हाल क्या है। इसका पानी बाहर भेजकर हमारे पास क्या बचेगा? यही गंगा हमारे ही शहर में कहीं-कहीं गंदगी से भर पतली सुतली में बदल गई है। तब वह क्या होगी जब उसके पानी को दक्षिण भेज दिया जाएगा?'' स्थानीय कार्यकर्ता ने अपने विचार रखे। उसका शरीर दबे आक्रोश से कांप रहा था।

''नदियों को जोड़ने की जो चर्चा अभी भारत में चल रही है, मेरा विचार है कि वह कोसी नदी के संदर्भ में संभव नहीं है। कोसी नदी का पानी इस्तेमाल करने

में सबसे बड़ी समस्या है उसके जल में बालू-मिट्टी की अधिकता। आज कोसी बराज, दोनों बाढ़ सुरक्षा तटबंधों के बीच का इलाका, पूर्वी कोसी नहर और कटैया पनबिजली उत्पादन-गृह आदि सब बालू से पट गया है और लगभग बेकार होने के कगार पर पहुंच गया है। ऐसी स्थिति में यह सपना बहुत कड़वे यथार्थ तक ले जाकर हमें पटकेगा।" नेपाली महोदय बोल पड़े।

आयोजकों में से एक ने माइक संभाला और कहा, "हमारा देश धार्मिक निष्ठा रखने वालों का देश है, तो भी गंगा का यह हाल है! कहते हैं, पांच हजार साल बाद गंगा विलुप्त हो जाएगी—इसके लक्षण झलक रहे हैं। राजापुर में मेरा घर है। वहां से गंगा हम पैदल पार हो जाते हैं। अब गंगा के अंदर पानी कम, बालू ज्यादा है। जहां गंगा में प्रवाह है, वहां भी सिल्ट और मिट्टी जमा हो गई है—यह घोर चिंता का विषय है। हमारे बीच हमारे डाक्टर कमाल उपस्थित हैं। वे हमारे विशेष अनुरोध पर पधारे हें।

आयोजक के खामोश होते ही कमाल ने सबको अभिवादन कर माइक संभाला और अपनी बात कहनी शुरू की, "योजना-परियोजना के बीच हम स्वास्थ्य को नकार देते हैं। यह सोचकर कि जल-जमीन-जानवर से शरीर का क्या संबंध? जल और शरीर का संबंध इतना गहरा है, जिसकी आप कल्पना नहीं कर सकते है। विश्व बैंक के एक आकलन के अनुसार, भारत में जल-प्रदूषण से स्वास्थ्य पर आने वाला खर्च देश के सकल घरेलू उत्पाद का तीन प्रतिशत है। भारतीय नदियां तो पहले से ही प्रदूषित हैं, ऊपर से उनको जोड़ने से इस लागत में यकीनन बढ़ोतरी के इमकान हैं। पृथ्वी पर जो परिवर्तन आएगा, उससे मानव-शरीर कैसे बच सकता है? इसलिए हम अपनी किसी भी योजना को बनाते समय स्वास्थ्य को भी नजर में रख सकें तो अनेक कठिनाइयों से बच सकते हैं। नदियों का जोड़ना संभव हो सकता है—आज के दौर में कुछ भी असंभव नहीं है, मगर जो नदियां गंदगी का जखीरा बन चुकी हैं, वे आपस में जुड़ने के बाद अपने साथ क्या कुछ नहीं लाएंगी। इन कीटाणुओं की रोकथाम का क्या बंदोबस्त सरकार करने वाली है? अभी तो हम एक नदी को साफ नहीं कर पा रहे हैं, तब अनेक नदियों की देखरेख का क्या होगा? तब उसका बजट क्या होगा? वह कहां से आएगा? यानी कि भारी-भरकम ऋण का एक ओर बोझ हम पर।

"हम सब इस तथ्य को जानते हैं कि नदियों का मिलाना एक रोमांटिक खामखयाली है, जो व्यावहारिक नहीं। यहां भ्रम ही भ्रम है। हम यह भी जानते हैं कि जल-परियोजनाओं के संदर्भ में अंतर नदी बेसिन प्रबंध की चर्चा नैशनल इंटर नेशनल- कानूनों में है। दस्तूरजी की योजना पर की गई टिप्पणी भी आप सबको याद होगी। उसे अव्यावहारिक बताया गया था। यदि हम कुछ और पीछे जाएं लगभग 1750 में तो हमें याद आएगा कि नदियों को जोड़ने का अनुभव लखनऊ के

गाजीउद्दीन हैदर ने सबसे पहले गंगा-गोमती को लेकर किया था, जो व्यावहारिक न होने से विफल रहा। पहला तो यह कि गंगा का तल निचाई और गोमती का ऊंचाई पर था। हैदर कनाल खुद गई। उसमें पानी भी आया मगर बरसात के दिनों में, जबकि कनाल का उद्देश्य था कि गर्मी में वह गंगा के पानी से जल की कमी को पूरा करेगी, जो टोपोग्राफी के कारण संभव न हो सका और आज वह नहर शहर का गंदा पानी गोमती में फेंकने के काम में आ रही है। इस नहर के पास लाख से ज्यादा आबादी भी बस गई है। मेरा कहने का अर्थ केवल इतना है कि सपने और यथार्थ, योजना और व्यावहारिकता में फर्क है! कोई अंतर्दृष्टि न होने के कारण हमारा श्रम, धन, समय—सब व्यर्थ गए। आज हममें पहले से कहीं अधिक सामर्थ्य है। हम चीजों को बेहतर तरीके से देख सकते हैं।" इतना कह कमाल रुका, फिर अपनी बात आगे बढ़ाई।

"हमारे पास मसौदा है जो बताता है कि देश में कुल 16 लेक होंगे जो आगे नहरों से जुड़ेंगे। आस्ट्रिया के जल-विज्ञानी शाबर्गर के 'जीवंत जल सिद्धांत' के आधार को देखें। शाबर्गर को एक पहाड़ी नदी में यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वहां मछलियां प्रवाह के उल्टी दिशा में तेजी से तैर रही हैं। उनके अनुसार, पहाड़ी नदी चट्टानों से टकराती टेढ़ी-मेढ़ी होकर बहने के दौरान अपने साथ लाई गंदगी को चट्टानों के साथ छोड़ती आगे बढ़ती जाती है। शुद्धीकरण की यह प्रक्रिया उसको प्रकृति ने दे रखी है। उसी वैज्ञानिक का कहना था कि इस नदी के साथ छेड़छाड़ विस्फोटक हो सकता है। मानी बात है—जब हम अपनी नदियों का बहाव जोर-जबरदस्ती से दूसरी ओर मोड़ेंगे तो हम उसके कुदरती बहाव में हस्तक्षेप कर, उसे समुद्र में मिलने से भी रोक बैठेंगे! और फिर जाने क्या हाल हो! इतने बड़े हिंदुस्तान में प्रत्येक स्थान की मिट्टी को समझना बहुत बड़ा काम है। मेरी समझ में नहीं आता कि जिस योजना में गरीबों का हित न हो, धन का गैरजरूरी अपव्यय हो, शोध का काम पूरा न हो, उस योजना को अपाने का क्या लाभ? उस पर तो सोचना भी मुझे गुनाह लगता है। उससे तो अच्छा है कि हम अपनी नदियों को निर्मल बनाने और जल के महत्त्व को समझने व समझाने की दिशा में जागरूकता लाने की कोशिश करें, ताकि हम अपने जल को पीने के काबिल बना सकें। वरना विदेशी हमारे ही पानी को लेकर हमें गुलाम बनाने की रणनीति में सफल होंगे! क्या नदियों को जोड़ने से सबको पीने का पानी मिलेगा? छत्तीसगढ में शिवनाथ नदी का निजीकरण हुआ तो और वहां के ठेकेदारों ने वहां के लोगों को पानी लेने पर रोक लगा दी है! ऐसी स्थिति में विदेशी ऋण लेकर हम अपने को कहां ले जा रहे हैं?"

कमाल धाराप्रवाह बोल रहा था। गोष्ठी अपने समाप्त होने के समय से काफी आगे खिंच रही थी। कमाल की ओर किसी ने पर्चा बढ़ाना चाहा तो दूसरे ने गर्दन

हिला मना किया और तन्मयता से कमाल को सुनने में डूब गया। बाकी लोग भी ध्यान से कमाल को सुन रहे थे। उसका चेहरा लाल हो रहा था। माथे की रग फूल गई थी।

"हम नदी से नदी जोड़ने की बात करते हैं यानी कि पानी जहां है वहां पानी ले जाने की बात हो रही है, मगर जहां नदियां सूख गई हैं वहां क्या होगा? जहां नदियों में गंदगी भर जाने से बाढ़ आ जाती है और हम समझ लेते हैं कि वहां पानी ज्यादा है, उन नदियों का क्या होगा? या फिर उन राजनेताओं का क्या होगा जो पानी लेने से इंकार कर रहे हैं। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री गोदावरी का पानी देने से इंकार कर रहे हैं। उड़ीसा की महानदी का पानी आंध्रप्रदेश भेजा गया है। उड़ीसा की सरकार का कहना है कि महानदी में हमारे अपने राज्य की जरूरतों से ज्यादा पानी नहीं है जो हम बाहर दे सकें। हमारे यह वाद-विवाद एक ऐसे गृहयुद्ध की तरफ हमें ले जाएंगे, जिसका निबटारा असंभव-सा दिखता है। हम स्वयं कल्पना कर सकते हैं कि जब एक बांध बनाने से कई लाख लोग विस्थापित हो जाते हैं तो नदियों के जोड़ने से कितने लाख गांव उजड़ेंगे? उसके रास्ते में आने वाले कितने ही जंगल काटे जाएंगे, जिससे चरिंद व परिंद तो बेघर होंगे ही, हमारे मौसमों का क्या हाल होगा? इन्हीं ऋतुओं का आदी हमारा शरीर अधिक गर्मी, और कम वर्षा के कारण किन रोगों से ग्रसित होगा? क्या हमारे फल और सब्जियां अपने मौलिक रूप में स्थिर रह पाएंगी? जमीन का क्या हाल होगा?" कमाल कुछ देर के लिए रुका। सर पर हाथ फेरा, फिर अपने को संभाल उसने बोलना शुरू किया :

"बदलते मौसम में एलर्जी से कुछ लोग परेशान हो उठते हैं। सूखी खांसी उन्हें परेशान करती है और..." इतना कहते-कहते कमाल का सर लुढ़क-सा गया और जुमला अधूरा छोड़ वह मूर्च्छित हो गिर पड़ा।

कमाल का यह हाल देख पहले तो सब सकते में आ गए, फिर आगे बढ़कर उसे उठाया गया। किसी के कुछ समझ में नहीं आया। सभी परेशान हो उठे। आसपास कोई डॉक्टर भी उपलब्ध नहीं था। वे कार में कमाल को नर्सिंगहोम ले गए, जहां उसकी हालत देख फौरन गहन चिकित्सा कक्ष में ले जाया गया। उपस्थित डाक्टरों से जब पूछा गया कि क्या कमाल को हार्टअटैक हुआ था? उसका जवाब केवल इतना था कि ब्लडप्रेशर खतरे का निशान पार कर गया है। अभी हम कुछ कह नहीं सकते हैं। किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि एकाएक डॉ. कमाल को हो क्या गया है?



बाहर परेशान लोग टहल रहे थे। घर में इत्तला दे दी गई थी। घर का हाल सबको

पता था। उस ट्रेजडी से तो डॉ. कमाल बाहर निकल आए थे, किंतु अंदर ही अंदर उन्हें कौन-सी चिंता खाए जा रही थी! उधर कमाल के दिमाग में बसा तनाव शोर में बदल रहा था। विभिन्न आवाजें उसे हंडिया में पड़ी जामुनों की तरह बघार रही थीं। ठंडे कमरे में सफेद चादर ओढ़े लेटा उसे कोई देखता तो यही समझता कि डॉ. कमाल चेन की नींद सो रहे हैं, मगर उनकी दिमागी कैफियत को समझना मुश्किल था, जहां ज्वालामुखी खदबदा रहा था! कोई चीख रहा था...

'पानी की बॉटलिंग का धंधा अंततः पानी से वंचित करने का साधन बनता जा रहा है।'

'नदियां जोड़ने की यह योजना तकनीकी, आर्थिक, सामाजिक—हर दृष्टि से अव्यावहारिक है...यदि यह योजना पूरी हुई तो पानी जैसा प्राकृतिक संसाधन पूजीपतियों के हाथों चला जाएगा। इसे रोकने के हर संभव प्रयास होने चाहिए!"

'बड़े बांध बनने से एक करोड़ सत्तर लाख लोग बेघर हो गए, जिनमें अस्सी लाख आदिवासी थे...'

'बड़े बांध परियोजना और वैकल्पिक पद्धतियों का लक्ष्य विकास, उत्पादन, बेहतर जीवन आदि है, मगर दूसरी ओर, वह एक स्थानीय संस्कृति एवं जीवन को नष्ट कर नई उन्नति, नई संस्कृति की बात करता है, जबकि वैकल्पिक या समूह के रूप में जल-संरक्षण का उद्देश्य स्थानीय परिवेश को जीवित रखते हुए बराबरी की बात करता है।'

'डॉक्टर साहब, हमारा बच्चा बच तो जाएगा न...?'

'कमाल, समीना को लेकर इस आंधी तूफान में कहां जा रहे हो?'

'दादी, मत रो, मत रो! मेरा सर दुख रहा है!'

'झारखंड के कई इलाकों में प्यासे जानवर जंगल से गांव की ओर निकल आए और मनुष्य और पशु के बीच जल को लेकर रोज युद्ध होता है...'

'सब झूठ! इंडिया में पानी की कमी नहीं, कहो व्यवस्था खराब है। इलाहाबाद इसका उदाहरण है—गंदा पानी भरा है, मगर साफ...नदारद!'

'सरकार द्वारा लगाए गए नलकूपों से पानी के साथ गंदगी भी आती है। डाक्टर साहब, अब साफ पानी लेने कहां जाएं?'

'तालाब और कुआं गांव के सभी लोगों के लिए जल-स्रोत बनाते हैं। वह लोगों को उजाड़ते नहीं...'

'सारे कुएं सूख गए, कहीं पानी नहीं है...'

'बुआ नानी, तुम कहां जा रही हो? सुनो...सुनो तो! मुझे बहुत गर्मी लग रही

है। मुझे कुइयां के पानी से नहला दो...खूब नहला दो। सारा बदन तप रहा है। बुआ नानी, मत जाओ।'

कमाल अपने को छोटी अम्मी के घर पाता है, जहां वह उनके आंगन में बने कुए में झांकता है। उसका सारा बदन, यहां तक कि चेहरा भी अंधौरियों से भरा है। समीना उसे 'लीची' 'लीची' कहकर चिढ़ा रही है। तभी बुआ ने आकर उसे गोद में उठाया और धीरे-से बोलीं, 'ले चलत हैं तोका अपनी गुइयां के पास...ओके पास जादू हे।'

इतना कह बुआ ने आंगन के किनारे बने कुएं की जगत के पास खड़ा कर उसके कपड़े उतारे, फिर हॅसकर कुएं में बाल्टी डाल, बोलीं :

गुइयां रे गुइयां,
ओय, मेरी प्यारी कुंइयां!
अपने खजनवा से
दे दो मोको पनिया

गुइया रे गुइया
रुठो, न मेरी बहनिया
कान्हा है मोरा नटखट
रखता है मोको झटपट
बिसारा, है न मैंने तोको
अब मान भी जाओ गुजरिया
दे दो मुझे पनिया
ओ मेरी गुइयां...

इतना कहती हुई बुआ ने ठंडे पानी की बाल्टी धीरे-धीरे कर कमाल के सर पर डालनी शुरू की, फिर धीरे से बोलीं, 'यह हमरी गुइयां 'कुइयां रानी' है! यह हमरी जान है, बेटवा! जाड़े में गरम और गरमी में ठंडा पानी दे हमें निहाल कर देत है!'

'बुआ जब यह तुम्हारी जान है तो इसका नाम रख दो, कुइयांजान!' कमाल ने धीरे-से कहा। पांच-छः बाल्टी ठंडा पानी जो उसके बदन पर गिरा तो अंदर तक एक ताजगी फैल गई। बुआ ने पटरे पर संदल घिस उसका लेप उसके चेहरे के साथ पीठ पर भी लगाया।

'कमाल...उठो अभी तक सो क्यों रहे हो?'

'उठता हूं, अम्मी!'

कमाल के पास खड़ी नर्स ने झुककर कमाल को पुकारा। कमाल ने अपनी लाल-लाल आंखें खोल नर्स को देखा और करवट बदलकर फिर सो गया। नर्स ने ब्लडप्रेशर रीड किया जो लगभग नार्मल हो चुका था। कमाल खतरे से बाहर था!

41

कमाल हफ्ते-भर बाद जब नर्सिंग होम से वापस लौटा तो उसे अपनी जिंदगी का नक्शा बहुत साफ नजर आया। सच को स्वीकार करने में ही अक्लमंदी लगी। दो छोटे बच्चे सामने थे। दो बुजुर्ग इस संसार से बिदा लेने के लिए पक्के आम की तरह डाल से लटक रहे थे। दोनों पक्षों को उसकी देखरेख की सख्त जरूरत थी। उसके ठहरने का अर्थ था—कश्ती का डूब जाना, जो उसे मंजूर न था। इस टूटी नाव को उसे अकेले ही खेकर पार ले जाना है, इसलिए इन दो हाथों को पतवार बनाना पड़ेगा।

डाक छांटते हुए कमाल को डॉ. जेवियर का खत हाथ लगा। लिफाफा खोल खत निकाला। लिखा था :

'डियर कमाल!

'तुम्हारे साथ हुए हादसे का अफसोस है मगर सोचता हूं कि यही जिदगी हैं। समीना मरी कहां है? वह तो तुम्हारे बच्चों में जिंदा है और हर उस इंसान के आंसू में जिंदा है जिस तक तुम पहुंचना चाहते हो' वह हमारे लक्ष्य में मौजूद है। वह हमारी शक्ति है, कमाल!

'अपने बेटे क्रिस्टोफर की तस्वीर भेज रहा हूं। उसके दूसरे जन्मदिन पर मैंने खुद खींची थी। जल्द ही मिलूंगा। समीना का प्रोजेक्ट मैंने देख लिया है। उसे शीघ्र शुरू करना चाहिए। मिलने पर विस्तार से बातें होंगी। मैं जर्मनी से बाहर था, इसलिए जवाब देर से दे रहा हूं। दोनों बच्चों को ढेर सारे चुंबन...

तुम्हारा

जेवियर'

कमाल ने ने खत कई बार पढ़ा। बच्चे की तस्वीर देखी। उस हँसते चेहरे के पीछे वह चेहरा कौंध गया जो बहते बच्चे का था। जिसे कोई उठाकर लाया था और जिसे देखकर डॉ. जेवियर फूट-फूटकर रोया था। क्रिस्टोफर की तस्वीर उसने सामने लगी पराग और पंखुड़ी की तस्वीर के फ्रेम के कोने में खोंस दी1 तीनों को एक साथ देखकर कमाल मुस्करा उठा।

इस बीच सफिया के फोन बार-बार आ रहे कि भैया और अब्बी कुछ दिनो रायबरेली आकर रह जाएं, जोकि मुमकिन नहीं था। नवासी के मुडन की तारीख जब तय हो गई तो फिर दोनो को जाना ही पडा। खयाल था, रस्मे कर रात तक लौट आएंगे। जब कमाल और जमाल खां रायबरेली पहुचे तो समधी को देख सफिया के ससुर बाग-बाग हो उठे। शाम को दावत का इंतजाम था, जिसमे शहर के जाने-माने लोग मौजूद थे। हर तरह की गुफ्तगू का दौर गर्म था। एकाएक एक साहब बोल उठे, "जनाब समधी साहब, आपका इलाहाबाद अगर सगम, अक्षयवट और यूनिवर्सिटी के लिए मशहूर है तो खाकसार का शहर भी तीन चीजो के लिए जाना जाता है।" इतना कह वह चुप हो गए!

"आगे तो कहिए?" उनकी खामोशी देख दूसरे साहब बोले।

"बगैर पानी का बड़ा कुआं, बिना पेड़ों का ऐशबाग, बिना घड़ी का घंटाघर।" उनका इतना कहना था कि कहकहों के गोलगप्पे फूटने लगे।

"बड़े कुआं का कहना क्या...रिवायत है कि एक बार बड़े कुएं का पानी ऊपर तक आया। पानी ऐसा छलका कि शहर में बाढ़ आ गई। आखिर लोहे का तवा कुए में डलवाना पड़ा, तब कहीं जाकर पानी का उफान कम हुआ।"

हँसी का जोर जब कम हुआ तो एक-दूसरे साहब बोल पड़े, "बाप रे बाप! इतना लंबा-चौड़ा तवा बनाया किस लोहार ने था?" तीसरे ने शोशा छोड़ा।

"बात तो सोचने वाली है! बड़े-बड़े कुएं देखे गए होंगे, जनाब, और होंगे भी, मगर कभी तलाब के आकार वाले व्यास का कुआं आपने नहीं देखा होगा। मैं तो दावे से कह सकता हूं कि आज भी वह ऊपर तक भर जाए तो गंगा का पाट नजर आएगा।" पहले साहब ने कहा।

"इसमें तो कोई शक नहीं है। पचास-साठ फुट बड़े व्यास का कोई कुआं दूसरा नहीं होगा। चंद साल पहले एक गाय उसमें गिर गई थी। उसे निकालने में दांतों पसीना आ गया था।" तीसरे साहब बोल पड़े।

"हजार तरह की बातें प्रचलित हैं कि कुएं में समुद्र का सोता मिल गया था। अंदर सुरंगें भी हैं। फौजियों के पीने के लिए कुआं बनाया गया था। अब तो जनाब, उसका भराव मुश्किल है। कूड़ा-करकट डाला जाता है, मगर गहराई तो अभी भी बहुत है।" पहले साहब ने बताया।

"आप सब जब अपने अपने शहर की खूबियां गिनवा रहे हैं तो जरा मेरी भी सुनिए! मैं स्टेशन ऊंचाहार, गांव मुस्तफाबाद का रहने वाला हूं। मेरे मोहल्ले में एक मीठे पानी का कुआं है, जो 'खरउवा कुआं' के नाम से मशहूर है। आज तक समझ नहीं पाया कि किसलिए उसका नाम खारा पानी वाला कुआं पड़ा!" वह साहब यह बात कहकर हँसे।

"आप वहा रहते हैं, यह क्या कम है?" जमाल खां ने चुटकी ली।

"इसी को कहते हैं बद अच्छा है, बदनाम बुरा।" सफिया के ससुर बोल पड़े फिर पास बैठे सज्जन से बोले, "शुक्लाजी, आपकी खामोशी कुछ अखर रही है।"

"हां, सोच तो रहा था कि जब बात कुएं की चल रही है तो तालाब को क्यों छोड़ा जाए...होगी बात कोई बीस-पच्चीस साल पुरानी। तिलोई का जिक्र कर रहा हूं। तालाब में सिंघाड़े लगे थे। बंदरों का एक झुंड अंदर पानी में जाती तालाब की मिट्टी सर पर थोपता और उसमें पांच-छह सिंघाड़े खोंस बाहर आता और स्वाद ले लेकर खाता...आज बंदर ऐसी हरकतें नहीं करेंगे।" शुक्लाजी ने बड़ा मजा लेकर सुनाया।

"इससे भी दिलचस्प हरकतें करते होंगे, शुक्लाजी! मगर हमारे पास समय कहां उनको निहारने का? पर्यावरण की भी हमने ऐसी-तैसी कर दी है। बस अब तो धूल, धुआं और धूप है।" इतना कह मुस्तफाबाद वाले सज्जन जोर से हँसे।

"साहब, खाना लग गया है।" नौकर ने आकर आहिस्ता से इतला दी, धीरे-धीरे करके लोग उठे और खाना खाने में व्यस्त हो गए।

कमाल वापस इलाहाबाद लोटना चाहता था, मगर रात काफी हो गई थी। सफिया का भी इसरार था कि वे एक-दो दिन रुककर जाते। कमाल के दिल में 'बड़ा कुआ' नाम के उस अजूबा को देखने की इच्छा जाग उठी थी। सई नदी का भी वह दर्शन करना चाहता, जिसको दूसरे जलियांवाला बाग के नाम से याद किया जाता है। जिसके पुल के नीचे 7 जनवरी 1921 को किसानों के पहले आंदोलन पर गोलियां बरसाई गई थीं। उसको देखने की ललक में वह रुकने को राजी हो गया।

देर रात तक महफिल जमी रही। जमाल खां को नींद आई या नहीं, मगर कमाल सारी रात करवटें बदलता रहा।

सुबह अभी नमूदार ही हुई थी कि कमाल ने बिस्तर छोड़ दिया। पहले वह बड़ा कुआं पहुंचा और फिर हरदोई से निकली उन्नाव, प्रतापगढ़, रायबरेली से गुजर जौनपुर में गोमती में मिलने वाली नदी सई को देखने पहुंच गया। नाले की तरह दिखने वाली पतली-सी नदी का रूप अनोखा था। बड़ी देर तक पुल पर खड़ा कमाल उसकी बलखाती काया को देखता रहा। उसके आईने जैसी सतह पर पेड़ों को झूमता निहारता रहा। आंखों के सामने वह किसानों के जुलूस को नारे लगाता महसूस करने लगा। फिर उनकी चीखें, खून और बाबा रामचंद्र की निराशा...जिसकी छाया पूरी सदी पर छा गई और आज किसान उस घुटन में स्वयं आत्महत्या करने पर उतारू हो गए। कमाल ने लंबी सांस खींची और सई के पानी को छूने की अपनी इच्छा को नहीं रोक पाया। पुल से उतर वह ढाल पर आया और नदी किनारे बैठ उसने दोनों चुल्लुओं

में पानी भर मुंह धोया।

"हरदोई में बच्चा एका पानी बहुत स्वच्छ है, मगर रायबरेली में तो यह कहीं कहीं गंधाती है।" ऊपर खड़ा साधुनुमा आदमी दातौन करता उसे चेतावनी दे रहा था, ताकि कमाल मुंह धोने के साथ पानी पी न ले। कमाल उसकी तरफ हाथ उठाकर हँसा और सई की बलखाती काया के साथ चलने लगा।

जाने क्यों हमने जलस्रोतों कहीं भी निर्मल नहीं रहने दिया!

कमाल जब घूमकर लौटा तो धूप निकल आई थी। घर में उसका इंतजार नाश्ते पर हो रहा था। इस बीच सफिया और अब्बी के बीच जाने क्या बात हुई कि जमाल खां एकाएक प्रोग्राम बदल इलाहाबाद की जगह मुस्तफाबाद जाने का इरादा बना बैठे। आधे घंटे की दूरी थी रायबरेली और मुस्तफाबाद में। सफिया रोज अब्बी से मिलने मुस्तफाबाद जा सकती थी। कमाल को क्या एतराज हो सकता था! अब्बी खुश रहें यही उसकी कोशिश रहती' अब तो वह भी अब्बी के प्यारे मुस्तफाबाद को देखने-समझने की ठान चुका था। इलाहाबाद फोन कर उसने छोटी अम्मी को इत्तला दे दी कि वह कल शाम तक पहुंचेगा। उसे अब्बी के साथ मुस्तफाबाद जाना है।



मुस्तफाबाद—उसके पुरखों का गांव—किसी कुरुक्षेत्र की तरह उसके जेहन में बसा हुआ था। दादी और अम्मी के बीच की तनतनाहट, फिर गांव की जायदाद का मसला और अब उसकी मां ओर शरीकेजिंदगी की आरामगाह। कब्रिस्तान के पीछे बड़ा तालाब और खेतों का सिलसिला है तालाब। जो गंदगी से भरते-भरते अब सिंघाड़ा बोने के काबिल भी नहीं बचा है। कुछ वर्ष पहले कुम्हारों का पट्टा खत्म हुआ है। अब तालाब की देख-रेख का जिम्मा तहसील का है। देखें क्या होता है। दीवान तालाब जो दर्जियों को सरकार ने चकबंदी में दिया था, उसे पाटकर मकान बन गए। यही दो तालाब बचे थे, जिनका हाल सामने है।

हातिम के संग टहलते हुए कमाल यह सब सुन रहा था। आज उसे यह सूचनाएं बड़ी महत्त्वपूर्ण और दिलचस्प लग रही थीं। पूरे गांव में खारे और मीठे पानी के कुएं बिखरे हैं। ऐसा क्यों है—यह कहानी तो अंदर जमीन की है, मगर बड़े अब्बा के मकान के सामने बड़ा कुआं मीठे पानी का और दस हाथ की दूरी पर दूसरा कुआं खारे पानी का है। लोगों का खयाल है कि इसका व्यास छोटा है। सूरज की किरणें अंदर नहीं पहुंचतीं, सो पानी खारा है। अब लोग की बतकही है, विश्वास भी उनका है। तभी बीबी का कुआं जो एक तरफ से ढह गया था सफाई कराते वक्त मजबूरन पाट दिया गया, अब वहां मकान खड़ा हो गया, मगर कहा जाता है कि उसमें कोई गिरता था तो पानी की सतह उठ जाती। एक बार चूड़िहार का तीन साल का बेटा गिरा और

बच गया। मगर कर्बला के पास वाला कुआं ज्यादा ऊंचाई पर था। कहते हैं उसकी भी यही खूबी थी मगर उसमें गिरा जीव डूब जाता था। कुआं कभी नष्ट नहीं होता, इस खयाल के चलते कई इलाकों में लोग अपनी लड़कियों का विवाह पहले कुएं से करते थे, ताकि उनका सुहाग अखंड रहे' सुनकर कमाल मुस्कराया। हातिम बोले जा रहा था, "अब तालाब-कुएं पट गए। नलकूप भी गर्मी में सूख जाते हैं। एक गंदा नाला है जो शारदा कनाल से निकाला गया हे। वह भी सिंचाई के लिए पूरा नहीं पड़ता। यह पानी का स्तर कहीं पैंतीस है तो कहीं पैंतालिस। कभी फाटक के भीतर फलों के पेड़ों की और चमन में देसी फूलों के पौधों व बेलों की भरमार थी। मगर अब सब खत्म हो गया है। चंद पेड़ नीम बचे हैं। अपने लोग गांव छोड़ शहर में बसने लगे। वहीं रौनक लगा बैठे।"

कमाल मोहल्ले-दर-मोहल्ले घूमता सारी बातें सुन रहा था। जो सबसे अजीब बात उसे लगी, वह यह थी कि कोई भी हुनरमंद अपने आबाई पेशे से नहीं जुड़ा था। तालाब में सिंघाड़ा बोने वाले तालाबों के पट जाने और नल लग जाने के कारण, अब घर-घर पानी पहुंचाने की जगह रेडीमेड कपड़ों की रेड़ी लगाने लगे थे। कहार और कुम्हार कटाई-बोआई में लग गए थे। दर्जियों की हालत थोड़ी बेहतर थी। मगर उनके लड़कों का रुझान पीसीओ और केबिल की दुकान खोलने की तरफ लगा था। मिस्त्री और प्लंबर मध्यपूर्वी देशों में काम ढूंढ़ रहे थे। सारा निजाम तितर-बितर नजर आ रहा था। समस्या पेट की थी, खानदानी हुनर की नहीं। जहां जिसको कमाई नजर आती, वह वहीं रहने लगता।

"क्यों भाई साहब! गांव घूम रहे हैं?" सामने खड़े फिरोज ने कमाल से पूछा।

"हां, बस यूं ही!" कमाल हँसा।

"अगर बस यूं ही है तो जाकर कोटरा बहादुरगंज में वह पक्का घाट भी देख आइए जो गंगा के रास्ता बदलने से इसी साल रेत के अंदर से निकला है। वह सचमुच देखने की चीज है।" फिरोज ने गंभीर हो कमाल से कहा।

"कोटरा यहां से कितनी दूर होगा?" कमाल ने पूछा।

"जितनी भी दूर सही, हम आपको दिखाकर लाते हैं। कब चलिएगा?" फिरोज ने पूछा।

"यार, मैं तो खाली हूं...अभी और कभी भी चल सकता हूं।" कमाल ने हँसते हुए कहा।

"आप मेन रोड पर आइए, मैं घर पर इत्तला और यह फैक्स करके आता हूं।" फिरोज ने कहा और दूसरी ओर मुड़ गया।



कोटरा बहादुरगंज का रास्ता बडा खूबसूरत था। फिरोज कहने को पत्रकार था, मगर उसकी इस इलाके के बारे मे मालूमात इतनी गहरी औरं व्यापक थीं कि कभी-कभी लगने लगता था, जैसे वह यहां का इब्नेबतूता हो। हर जगह घूमा-फिरा। चप्पे-चप्पे से वाफिक।

"कुछ लोगों का खयाल है। यह घाट, हो सकता है, महापरवर ने बनवाया हो। महापरवर औरंगजेब की साली थी और हमारे गांव के नज्मुद्दीन साहब पर आशिक हो गई, शादी हुई। गांव का बड़ा इमामबाड़ा उन्हीं के ससुर अब्दुल खालिक ने बनवाया था—यह गजेटियर में मौजूद है। महापरवर और नमुद्दीन की मोहब्बत की कहानी भी अजीब थी। एक वक्त में दो ताजमहल बन रहे थे। एक शाहजहां का और दूसरा महापरवर के लिए...कहते हैं कि नज्मुद्दीन साहब में इतना हौसला न था कि वह महापरवर को लेकर वालिद के सामने आते। इसलिए रात की नमाज के बाद वह महापरवर से मिलने जाते और सुबह ही सुबह वहां से चल पड़ते, ताकि बाप के साथ वह सुबह की नमाज में शरीक हो जाएं। वह शिकारगाह कहां गई? वह जंगल कट गए। कहानियां अलबत्ता गांववालों की जुबान पर हैं। लीजिए हम पहुच गए।" फिरोज के इस तरह कहने से कमाल ने नजरें उठाकर देखा।

खिली धूप में बहते पानी पर पिघली चांदी को देखते वे दोनो कार से उतर, पैदल चलते हुए घाट पर जाकर बैठ गए। कमाल गंगा के बहते पानी को देखकर सोच रहा था कि अपना ही छोड़ा रास्ता गंगा भूली नही थी। लौटी तो समय की जमा रेत को अपने साथ बहा ले गई और यह सीढ़ियां गंगा के पानी के अदर से निकल आई। कितनी होंगी? पानी घटेगा तो पता चलेगा। कमाल के अदर इन सीढियो और बहती गंगा की लहरों को देखकर एक बंद दरवाजा जैसे खुल रहा हो। कोहरा छट रहा था। उसे एकाएक महसूस हुआ, जैसे उसके अदर बहती नदी ने भी अपना रास्ता बदल लिया हो और सामने की मंजिल उसे साफ दिख रही थी—जहां उसे जाना है। जाने क्या सोचकर वह उठा और गगा का बहता पानी चुल्लू में उठा खिलखिलाकर हॅस पड़ा।

"क्या हुआ?" फिरोज अचभे में पड़ बोला।

"कुछ नहीं..." कमाल ने धीरे-से कहा।

"फिर यह हॅसी?" वह भी कमाल को आसानी से छोड़ने वाला न था।

"बचपन से आदत-सी है कुआं देख उसमें झांकना, बहता पानी देख उसे मुट्ठी में पकड़ना और यह हॅसी...खुशी की हॅसी...मेरे हाथों मे आज पहली बार पानी के साथ मोती आ गया—जिदंगी का मोती!" कमाल इतना कह चुप हो गया।

उसके चेहरे पर नाचते भावों को देख फिरोज ने चुप रहना ही मुनासिब समझा।



इलाहाबाद लौट आने के बाद से कमाल को सर उठाने की फुर्सत नहीं मिली। उसके बदन में अनजानी-सी स्फूर्ति दौड़ती रहती थी। आंखों में चमक लौट आई थी। एक-दो मिनट जब वह आंखें बंद कर आराम की सांस लेता तो लहरों का बहाव सीढ़ियों से टकराता नजर आता। कोटरा बहादुरगंज का वह घाट उसके जहन में जमकर रह गया था। अकसर वह सोचता कि जब नदियां अपनी चाल यूं बदलती हैं और नए-नए अनुभव कर फिर अपने पुराने रास्तों पर लौट आती हैं, ऐसी हालत में 'नदियों के जोड़ने' वाली परियोजना का क्या होगा? जिन रास्तों पर उन्हें जबरदस्ती बहाया जाएगा, क्या वह उस पर दम साधे बहती रहेंगी? अपने ऊपर लगे अंकुश को अपनी प्रकृति के विरुद्ध सहनकर अपना रास्ता बदलना भूल जाएंगी? जल की शक्ति को या तो हम जानते नहीं या फिर हमें अपनी योग्यता पर गहरा विश्वास है कि हम इस ठंडे पड़ गए आग के गोले को किसी बुझे कोयले की तरह काबू करके, जैसा चाहेंगे वैसा सुलूक उसके साथ कर लेंगे। इस बात को भूलकर कि जब ज्वालामुखी फटता है और भूकंप आता है तब धरती की इस रौद्र अभिव्यक्ति के आगे इंसान निरीह होकर जाता है...यह परियोजना कितने बड़े खतरे को बुलावा दे रही है!



अब पराग और पंखुड़ी तीन महीने के हो गए थे। उनके साथ खेलना और बातें करना कमाल को असीम सुख की अनुभूति देता था। जीवन एक बार फिर अपने दुःख के बोसीदा लिबास को उतार सुख के नए कपड़े पहने की तैयारी में लगा था। जो गुजर गए थे, उनकी याद जहन में मौजूद थी। जो जिंदा थे, उनके साथ दिल जीने की उमंग से हुमकने लगा था। इंसान भी विचित्र प्राणी है। जो राग उसे मृत्यु के रूप में दुःख देता है, वही राग जीवन के रूप में सुख देता है। इंसान सब कुछ भूलकर उसमें डूबने लगता है। आखिर नरक और स्वर्ग का अनुभव वह इसी दुनिया में जीवन जीते हुए करता है!



इतवार की सुबह जब कमाल मुस्तफाबाद की तरफ निकला तो उसके दिल में उमंग थी किसी के पास जाने की। उसने अपनी बेचैन आंखें रास्ते पर गाड़ दीं, जिसके दोनों तरफ खड़े दरख्तों में नई पत्तियां आनी शुरू हो गई थीं। उसने लंबी सांस ली और दिल ही दिल में दोहराया—'कमाल, अब कहीं रुकना नहीं है, यार! दो बच्चों के बाप हो, कुछ संजीदा बनो।'

गांव पहुंचकर उसने कब्रिस्तान जा, कब्रों पर अगरबत्ती जला फातिहा पढ़ा, फिर

घर में घुसते ही उसने हातिम से कुछ कहा और तेज कदमों से चलता हुआ अब्बी के कमरे में आकर बैठ गया। हातिम ने चाय की ट्रे-सामने रख उसे इत्तला दी, जिसे सुन उसने सर हिलाया! जमाल खां से इधर-उधर की बातें कर वह चाय खत्म कर उठा और बाहर चबूतरे पर रखी कुर्सी पर जाकर बैठ गया। जहां मेज पर उसका ब्रीफ केस रखा था। सामने एक स्टूल पड़ा था। कुछ देर के इंतजार के बाद गांव से मरीजों ने आना शुरू कर दिया। दोपहर के दो बजे वह मरीजों को निबटाकर उठा तो उसे जोरों की भूख लग रही थी। खाना लग गया था। दोनों बाप-बेटे दस्तरखान पर बैठे।

"कहां थे?" जमाल ने इशारे से पूछा।

"मरीजों को देख रहा था।" कमाल बोला।

उसका जवाब सुन जमाल खां ने अजीब नजरों से बेटे को घूरा।

"अरे अब्बी, अगर अस्पताल नहीं बन पाया तो क्या, डॉक्टर तो उन तक पहुंच गया!" कमाल ने हँसते हुए कहा।

बेटे का जवाब सुन जमाल खां की आंखें भर आई।

कमाल ने चलते हुए हातिम से कहा कि वह अगले इतवार को फिर आएगा। तब तक यहां पर 'शकरआरा दवाखाना' के नाम से एक बोर्ड लग जाना चाहिए, ताकि लोगों को पता चले कि डॉक्टर के बैठने का समय कब से कब तक रहेगा।

हातिम ने गरदन हिला हामी भर ली।

कमाल ने कार स्टार्ट की और गली से सड़क पर आ गया। पांच बजे से पहले वह घर पहुंचना चाहता था। डॉ. जेवियर आने वाले हैं, जिनके साथ उसे दो दिन के लिए मद्रास जाना है, जहां से आने वाली खबरें पानी को लेकर बहुत परेशान करने वाली हैं। उस हालत में बीमारी का तो कहना ही क्या!

कमाल के सधे हाथ स्टेयरिंग पर थे। नजरें सड़क पर जमी थीं और दिमाग में भविष्य की योजनाएं बन-बिगड़ रही थीं, जिसको कार्यान्वित करने के लिए उसे बिना सुस्ताए आगे बढ़ते जाना था...

●●●